अर्थात्) अनुष्टुप छंदवडे यजन करवुं. बृहति छंदवडे गान करवुं अने गायत्री छंदवडे स्तुति करवी इत्यादि.

धार्मिक दृष्टिये जोतां छंदोनुं गौरव अने माहात्म्य आटलुं बधुं छे तेथी ए शास्त्रनुं थोडुंक पण ज्ञान प्रत्येक मनुष्य माटे परमावश्यक छे एम मानवामां बाध नथी. आपणा ऋषिवरोए जेटला ग्रंथ निर्माण कर्या छे ते सघळा प्रायः छंदोबद्ध छे. वेद, स्मृति, पुराण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, शिल्पशास्त्र, वैद्यक इत्यादि ग्रंथो छंदोबद्ध ज जोवामां आवेछे. ते जो छंदोगौरव एवडुं बधुं न होत तो आपणा महर्षिओए एने माटे आवडो बधो परिश्रम उठाव्यो होत नहि.

धार्मिक दृष्टिने एक बाजु राखी लौकिक नजरे जोवा जतां पण छंदोगौरवमां कशो न्यूनता नहि जोवामां आवे. छंदस्* जेने आपणे हाल सामान्य कविताना नामथी ओळखिये छिये ते "बाह्य सत्यरूपी जीवनरनी खरेखरी प्रतिमा छे." एक महान् कवि ते द्वारा कोइपण वस्तु, सृष्टिसौंदर्य वा जनस्वभावनुं वर्णन करतां जे विचारो प्रकट करेछे ते, ते वेळा जे कारणथी उत्पन्न थया होयछे ते कारण नष्ट थइ गया पछी पण, आश्चर्य उपजावे तेवी रीते त्यांना त्यां, तेवीज एटले तेनी मूळ स्थितिमां ज जडाया-रोपाया रहेछे. जो कवितानुं अस्तित्व न होत अने तेनी खरी खूबी जन समाजना मनमा न रोपायली होत, तो रामायणादि महा काव्योनी प्रसादी जे हाल आपणे महत् प्रेमथी प्राशिये छिये ते पामवानो समय आवत नहि; अने वाल्मिकि, कालिदास, भवभूति, भारवि, पतंजली, शंकराचार्य अने बीजां महान् काव्य करनाराओनां नाम आपणा श्रवणपर पण आववा पामत नहि. परंतु स्थिति तेथी उलटी छे. मनुष्य मन प्राचीन काळथी

* Poetry is the very image of life in its external truth

कविता भणी दोरायलुं छे. अने तेने दैवी अने लौकिक शक्तिना उत्तेजक रूपे आत्माने आनंद आपनार मानेछे. अने तेटला माटे ए संबंधी ज्ञान आपनार शास्त्रने छंदःशास्त्र एटले चित्तने आनंद आपनार वाणी गोठववाना नियमवाळुं शास्त्र केहेछे.

छंदःशास्त्रना मूळ योजक कोण अने ए क्यारे अने क्यां योजायुं ए हजु स्पष्टपणे जाणवामां आव्युं नथी. आपणा महर्षियो तेने वेदनुं अंग मानेछे अने वेद रचना बहुधा छंदोमय छे तेथी ते वेदकाळथी पेहेलां हशे एम कल्पी शकायछे. प्राचीन ग्रंथोमां आ शास्त्रनी परंपरा जोवा जइये छिये तो तेना मुख्य आचार्य महादेव छे. तेमनी पासेथी देवताना पति इन्द्रदेवे शीख्या छे. इन्द्र पासेथी च्यवनमुनि शीख्या अने तेमनी पासेथी बृहस्पतिए. बृहस्पति पासेथी मांडव्यऋषिये छंदोज्ञान मेळव्युं छे. मांडव्य पासेथी सैतव ऋषिये अने सैतव पासेथी यास्क मुनिये अने तेमनी पासेथी पिंगलाचार्ये ए शास्त्रनुं अध्ययन कर्युं छे. अने तेमनी पासेथी अन्याचार्योए ए ज्ञान प्राप्त कर्युं. ए प्रमाणे श्रीमान् रामानुजाचार्यना गुरु, छंदःसूत्रपरनी पोतानी यादव-प्रकाश नामनी टीकामां जणावेछे.[1]

आ उपरथी एटलुं तो नक्की थायछे के, पिंगलाचार्य पेहेलां-ना गमे ते छंदःशास्त्रकारो होय परंतु तेमना ग्रंथो पिंगल मुनिना ग्रंथ जेटला आ देशमां प्रवर्त्त्या नथी. लौकिक छंद अने वैदिक छंदनुं विवरण प्राचीन आचार्योमां जेवुं महर्षि पिंगले कर्युं छे तेवुं अन्याचार्ये करेलुं नथी; तेथी तेमने छंदशास्त्रना मूळ प्रवर्त्तक मान्या छे. पिंगलमुनि कोण हता, क्यारे अने

[1] छन्दोज्ञानमिदं भवाद्भगवतो लेभे सुराणां पतिः
तस्माद्दुश्च्यवनस्ततः सुरगुरुर्माण्डव्यनामा ततः ।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्यास्कस्ततः पिंगलः
तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्यास्मदाद्यैः क्रमात् ॥

थया थइ गया अने तेमने छंद शास्त्र शा माटे बनाववु पड्यु ए संबंधमा एक दंतकथा चालेछे ते वाचनारने रमुज आपशे एम जाणी अत्र आपिये छिये.

छंदशास्त्रनु बीजु नाम पिंगलनाग छे. ए पिंगलनाग पोता पर केटली मुद्दत रही छे ते जोवानी इच्छा थवा रूपान्तरे ब्राह्मणनो वेश लइ सृष्टिपर तेनु सौंदर्य जोता जोता विचरवा लाग्या. आ वात गरुडना जाणवामा आवता तेमने तेमनी साथे प्रसिद्ध वेर होवा तेने मारी खावानी इच्छाथी तेनी पूठ पकडी. ब्राह्मणना रूपमा नाग आगळ अने गरुड पाछळ एम दोडवा लाग्या. गरुड छेक पासे आवी गयो अने ते तरत ज मारी खाशे एवु ज्यारे तेने जणायु त्यारे ते उभो रह्यो, अने मोतमांथी बचवा माटे कंइ उपाय सुझी आव्यो होय एम डोळ करी गरुडने विनववा लाग्यो के, हे नागारि! हु कवि छु, मारु कौशल्य जुओ. जे हु एक वखत लखीश ते फरीने लखीश नहि. लखाइ गयेल अंक पूरो आपना जोवामा आवे तो मने सुखथी खाइ जवो. गरुडने आ वात रुची तेथी तेम करवा तेणे पिंगलने सूचना करी. एटले ब्राह्मणना वेशमा रहेला पिंगलनागे एक अक्षरथी आर भी छवीश अक्षर पर्यंतना, प्रस्तारमा जेटला जेटला भेद थता हता ते सघळा लखतो गइ छेवट समुद्रना किनारा पासे ते जइ पोहोंच्यो. दरियो पासेज अने ते मार्गे गरुडना पजा माथी बची जवाशे एम तेने नक्की जणायाथी छेवटे एक वृत्त करी पाणीमा पेशी गयो. ज्यामा पेसता नाग जे छेल्लु वृत्त बोल्यो ते वृत्त एटला माटे भुजंगप्रयात नामे ओळखाय छे.

केटलाएक एम कहे छे के, लौकिक छंद शास्त्रना मूळप्रव र्तक पिंगलाचार्य के हेवाय छे. एमना बीजा नाम पिंगलनाग, पिंगलमुनि छे. वळी केटलाक एम पण कहे छे के, वेदना महा भाष्यना रचनार पतंजलि हता, तेनु बीजु नाम पिंगलाचार्य,

हतुं. वळी केटलाएक एम पण केहेछे के, पिंगलनागनो उपासक कोइ समर्थ छंदोज्ञान धरावनार ब्राह्मण हतो, तेणे शंभु नामना पोताना गुरु पासथी ए शास्त्र शीखी पोताना उपास्य देवनी प्रशस्ति माटे छंदःशास्त्रने पिंगलनुं नाम आप्युं छे, ने त्यारथी ते नाम जगत्मां प्रवर्त्युं छे. वळी केटलाक एम केहेछे के पिंगल ए नाम कल्पित छे. ए नामनो कोइ मनुष्य नथी थइ गयो, परंतु (पिं=पिंड, ग=गुरु, ल=लघु) गुरू अने लघुना पिंडनुं जेमां व्याख्यान छे एवो ए शब्दनो अर्थ थायछे. गमे तेम हो; तोपण ए पिंगलसूत्र पछी छंदःशास्त्रपर जे जे ग्रंथो रचाया छे ते सघळा सामान्य रीते पिंगलनामे ओळखायछे तेथी एम तो कल्पना थायछे के ए नाम तेवा नामना कोइ छंदःशास्त्रकार परथी प्रवर्त्युं होय, वा सूत्र ग्रंथकार गूढार्थ दर्शक पिंगळ एवुं तेने नाम आप्युं होय अने तेथी तेनी प्रवृत्ति थइ होय एम मानी लेवामां कशुं बाधकारक नथी. तक्षक (ताक) वंशमा उत्पन्न थयेला नागराजने केटलाक पिंगळ तरीके मानेछे ए योग्य नथी. पिंगल अने नागराज ए भिन्न भिन्न होवा जोइये. पण नागकुळ अने ताककुळ एकज होय तो ए वंशमा उत्पन्न थयेल कोइ तेनो मूळ पुरुष ए नामे थयो होय ते पिंगलाचार्य होय एम संभवे खरुं.*

गीर्वाणवाणीमां अने भाषामा पिंगलाचार्यआदि घणा आचार्यो अने कविओए छंदःशास्त्र विषे घणा ग्रंथो रच्या छे, तो आ ग्रंथनी शी अगत्य हती, एम कोइ प्रश्न करे, तो तेना उत्तरमां मारे जणाववुं जोइये के, आपणी मातृभाषा सांप्रत का-

---

* ताक वंशना राजाओ काश्मिर, सिंध अने पंजाबपर जूना वखतमां राज चलावी गया छे तेमा काश्मिरना राजाओ तो नागना पूजको पण हता तेथी पिंगलने ए वंशमां उत्पन्न थएल मानवामां आव नो ए ग्रंथ ए देशमां प्हेलो रचायो होय एम मानी शकाय

ळमा गुजराती छे, एटले अन्य भाषामा रचायला ग्रंथो ए भाषा बोलनारने एटला सरखा उपयोगी नथी वळी गूर्जर गिरामा जे थोडा पण ग्रंथ रचाया छे, तेथी छंद शास्त्रनु आद्योपान्त यथा विधि ज्ञान थतु नथी, तेम ज ते अपूर्ण होवाना कारणथी बहु उपयोगी थता नथी अने प्राचीन आचार्योए जे सूत्रद्वारा सक्षेपमा जणाव्यु छे, ने जेमा ते पछीना विद्वानोये अनेक विध विवृत्ति करी वृद्धि करी छे, ते सघळु एक ग्रंथ परथी जाणी शकाय एम न होवाथी छंद शास्त्रना प्रवर्त्तक पिंगळाचार्य थी आरभी आजपुधी थइ गयेला संस्कृत, प्राकृत अने व्रजभाषाना कविना उपलब्ध ग्रंथोपरथी छंद शास्त्रसारना दोहनरूप एक ग्रंथ होय, तो आ शास्त्रना जिज्ञासुने बहु लाभ थाय एवु समजी आ उद्योगमा लखनारनो मन उत्साह थयो छे अने छंद शास्त्रना ग्रंथोने पिंगळ एवु नाम आपवानो प्रचार पूर्वथी प्रचलित छे ते लोपवो मने योग्य न लागवाथी में पण आ ग्रंथने रणपिंगल एवु नाम आप्यु छे

वेदकाळथी छंद अने गान पृथक् छे अने तेना नियमो पण भिन्न छे, तेथी आ छंद शास्त्रमा केवळ छंदोच्चार थवाना नियम आपेला छे, अने गान अथवा गीत, संगीत, पद्य इत्यादिक जूदा जूदा ताळ अने लयथी थयेल छंदोनु रूपान्तर छे, छता ते केम योजवा ए नियम अगत्यना होता तेनो पृथक् ग्रंथ रचाय तो सारू एवी इच्छा राखुछु

आ ग्रंथना मुख्य पाच भाग पाडवामा आव्या छे प्रवेशक वैदिकछंद, मात्रामेळजाति, वर्णमेळछंद अने त्रिविध प्रस्तारादि प्रक्रिया

प्रवेशक प्रकरणमा छंद शास्त्रोपयोगी सघळा प्रकारनी सज्ञाओ अने पारिभाषिक शब्दोनी बहु समत व्याख्याओ अने उदाहरण आप्या छे

वैदिक छंद प्रकरणमां चार वेदमां जे जे छंदो वपरायला छे तेमना बंधारणना नियमो, उदाहरण अने तेपर जोइती टीका वांचनारने बराबर समजाय ए माटे आपवामां आवेल छे. वैदिक छंदोनां जे उदाहरण आप्यां छे तेनो गूजराती अर्थ पण ते साथे आपेल छे. आ भाग जूदो प्रसिद्ध करवामां आवशे

मात्रामेळ छंदोना समजाति, दंडक, अर्द्ध समजाति, शिखा-जाति, आर्या, प्रचुर्णगीति अने विषम जाति, मात्रासमक, वैतालीय, अने मल्लितक एवा पेटाभेद पाडेला छे.

वर्णमेळ छंदना पेटा विभागमां क्रमे समवृत्त, दंडक, अर्द्ध समवृत्त, संकीर्ण, विषमवृत्त, संकीर्ण असंकीर्ण अने अनुष्टुप् वाचादि भेद छे.

विदेशी छंदोनुं ज्ञान आपणने केटलीक वेळा घणा संसर्गमां आव्याथी जाणवानुं मन थायछे तेथी दक्षिण भणीना केटलाक छंद आपणी गूजराती भाषामां प्रचलित थया छे तेनुं माप अने उदाहरण केटलाक मराठी ग्रंथोना आधारे लइने दाखल करेलुं छे.

छेल्लो भाग प्रस्तारादि प्रकरणनो छे तेमां मात्रा, वर्ण अने तज्जन्य गणनो प्रस्तार शी रीते करवो तेनी पृथक् पृथक् रीतिओ, उदाहरणो अने कोष्टको तेमां आपवामां आव्यां छे; अने आर्या, दुहा तथा अनुष्टुप्नां प्रस्तारादि प्रकरण केटलाक प्राचीन पिंगलशास्त्रकारोए पृथक् पृथक् पाडेलां छे तेथी तेमने तेवांज रूपमां गणप्रस्तारना उदाहरणमां मूकवामां आव्यां छे.

मारी आ विषय संकलना प्राचीन छंदःशास्त्रकारोथी केटलेक अंशे भिन्न छे, एम जोतांवांत वांचनारने जाणवामां आवशे; तेथी तेम करवानुं प्रयोजन अत्र जणाववानुं ठीक पडशे एवुं जाणी आपुंछुं.

छंदःप्रस्तारादि प्राचीन ग्रंथोमां प्रथम वैदिकछंद अने तेना पाछळ क्रमे गणछंद, मात्राछंद अने वर्णछंद अने प्रस्तारादि

क्रिया आपवामां आवेल छे. ते क्रममां गणछंद मात्राछंद (जाति) ना पेटाभेद होतां क्रमवार मात्राछंदोमां तेनी गणना करवी सारी लागवाथी में मात्रिकगण छंदने मात्रामेळ जातिना प्रकरणमां भेळवी दीधां छे, अने कया छंद पछी कया छंद अथवा जातिनुं माप अने उदाहरण मूकवां एवो खास नियम न होतां पांचमात्राथी आरंभी १२० मात्रा सुधीमां क्रमवार जे जूदा जूदा छंद अने जातिओ बनेछे अने जेनां नाम पूर्व छंद शास्त्रकारोए नक्की करेल छे ते विषयवार आपेल छे. तेथी कोइ पण मरजीनी मात्रा अथवा वर्णनो छंद बनाववानो विधि अथवा उदाहरण ग्रंथमां कये स्थळे छे ए तुरत ज मळी आवशे.

अमुक मात्राना छंदनुं ग्रंथांतरोमां कयुं नाम छे; अथवा ते नामना बीजा छंदोमां शो शो तफावत छे; ए पिंगळना अभ्यासीने जाणवुं अगत्यनुं होतां घणाखरा प्रत्येक छंदनी नीचे फूटनोटमां तेमनां नामो अने तेमना तफावतनां विवरण साथे तेमा योजक अथवा ग्रंथनां नाम साथे आपवामां आवेल छे.

छंद शास्त्र जेम सरल होय तेम लाभदायक छे. अने जेटलुं कठिन होय तेटलुं संशयात्मक थइ पडे; कारण के, जो छंदोनियम कठिन होय अथवा तेमां गडबड होय तो तेथी ते विद्याना अनुरागियो अने अभ्यासियोने मुश्केली पडेछे माटे क्लिष्टता दूर करी, छंदोरचना सुलभ थाय अने ते साथे ग्रंथरचना पण उदाहरण टीका अने विवरणने लीधे अति विस्तारवाळी थइ न जाय, एवी संभाळ राखी प्रत्येक जाति, वृत्त अने छंदना नियम आपवामां में नीचे प्रमाणे गोठवण राखी छे.

प्रत्येक जाति अथवा छंदना नामनी जोडे ग्रंथान्तरोमां तेनां क्यां नाम छे, ते केटली मात्रा अथवा वर्णनो छे, ते जणाववामां आवेल छे. ते तळे ताळना नियमसर ज्यां ज्यां तेना टुकडा

पाडवानी जरुर जणाइछे अने जेने माटे पूर्वाचार्योना नक्की करेल नियमो मळी आव्या छे ते दाखल करेल छे. ते तळे जरुर जोग स्पष्टीकरण होयछे तो ते अपाया बाद, प्रत्येक छंदनी रचनानो नियम ते छंद अथवा जातिना एक पादने माटे अपेल छे अने ते आपतां नियम अने उदाहरण साथे आवी जाय अने ग्रंथनो वृथा विस्तार न थाय, तेनी संभाळ राखवामां आवी छे. प्रत्येक जाति अथवा छंदना नियम माटे उदाहरण रूपे आपवामां आवेल जात्यादिनां प्रत्येक पद छंदने लगती मात्रा अथवा वर्णना प्रस्तारजन्य केटलामां रूपने लगतां छे, तेनी संख्या प्रत्येक छंदना प्रतिपादनी साथे लखवामां आवेल छे.

मात्रिक सम अने विषम मात्रिक, एम पृथक् पृथक् भेद पाडी ए वर्गना छंदोनुं कोइ पण पूर्वाचार्योए जूदुं वर्णन कर्युं नथी, ते अमे पिंगल शास्त्रना अभ्यासिओनी सुगमता माटे खास विस्तृत करी, क्रमवार आ ग्रंथमां दाखल करेल छे. तेम करवामां तदन्तर्गत आर्या अने वैतालीय छंदनुं ते ते नाम तळेना प्रकरणमां तेना भिन्न भिन्न जेटला भेद पडेछे, ते सहित विस्तार पूर्वक वर्णन करेल छे.

वैदिक छंदोने बाजुए मूकतां बाकीना वर्णमेळ छंदोमांना घणाखरा लौकिक वर्णमेळ छंदो गणबद्ध छे. छंदोरचनानो नियम आपतां अमुक गण अमुक स्थळे लाववो, एम केहवामां इष्टगणनुं आखुं नाम आपवा जतां, नियम अने उदाहरण एक ज चरणमां आवी शके नहि; एटला माटे पिंगलादि आचार्योए पूर्वथी प्रणालिका पाडी छे, ते प्रमाणे ते ते गणना आद्याक्षरोने ज ते ते गण सूचववा माटे लक्षणमां आपवामां आवेल छे.

मात्रिकजाति प्रकरणमां जरुर जोग स्थळे टगणादि प्राचीन मात्रिक गणोनो उपयोग कर्यो छे अने ज्यां तेनी गणनानी जरुर नथी जणाइ, त्यां उदाहरणना उपर अने छंदना

नामनी नीचे केटली केटली मात्राना टुकडा लाववा तेनी सख्या मूकवामां आवेल छे. मात्रिक छंदमां अमुक ताल अमुक मात्राए लाववो अने ते लाववामां अमुक मात्रा तेनी साथे न आवी जाय एम केटलेक ठेकाणे खास जरुर जणायाथी लखवामां आवेल छे. आ विधि सर्वत्र योजायाथी सघळा प्रकारनी तालबद्ध छंदोरचना थाय तेम छे अने टगणादिथी नवा नियमे लक्षणो बांधी शकाय तेम छे; तेथी आ कार्य पूर्ण थतां ज मात्रिक गणबद्ध नविन रचना करवानी में धारणा राखी छे.

कवित अने मनहरने घणा लोको एकज मानता आवेछे अने तेनी रचना बधा वर्णमेळ छंदने अनुसरीने करवामां आवेछे. आम करवामा तेओ केटले दरज्जे भूलावामा पडेछे, ते आ मथाळाना छंदतळे आपेला लांबा लेखथी वांचनारने स्पष्ट जाणवामां आवशे. अने कवितमां पण तालादि नियम जाळवया माटे केटली काळजी राखवानी अगत्यछे, ते पण स्पष्ट जणाइ रेहेशे.

मात्रिक प्रकरणमां कोइ पण गुजराती पिंगलमां न आवेल एवा गलितक अने शिखाजातिना भेद अने वृत्त प्रकरणमां अर्द्धसम अने विषम वृत्तना संकीर्ण अने असंकीर्ण एवा छंदना जेटला छंदो थायछे तेनुं विगतवार वर्णन क्रमवार आपवामां आव्युं छे.

मात्रा प्रकरणमां एकथी आरंभी अनेक मात्रा पर्यंतना छंदोना केटला भेद अथवा वृत्ति थइ शकेछे, ते तथा अमुक संख्यानी वृत्ति अथवा भेद क्रमवार केटला गुरु अथवा लघु वर्णनो थाय, ए तरत समजाय अने तेवो छंद रचवामा कविने सुगमता मळे; एटला माटे संख्या, प्रस्तार, सूची, नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, पताका, अने मर्कटी आदि प्रकरणो पाडी ते केम मागवा, अने तेनो उपयोग केम करवो, एनी रीति, उदाहरणो

अने ए माटे जोइतां कोष्टको विगेरे आ रणपिंगलना बीजा भागमां आपवामां आव्यां छे.

जे छंदनुं नाम पिंगलमां न मळे, ते छंदने गाथा कहेवी एम पूर्वाचार्योनो आदेश छे ने ते श्रीमद्भागवतमां तेवा छंदो वापरी केटलेक अंशे प्राचीन कविओए चाल्यो पण छे; तोपण प्रस्तार विधिये केटलाक नवीन छंद बनेछे तेमने ए प्रमाणे सामान्य गाथा नाम आपवानी अगत्य सर्व कवियोए गणी नथी, अने नवा छंदने नवां नाम आप्यां छे; तेथी में पण मारा मनना वलणने वश थइ केटलाक छंदने रणशूर, खेंगारवृत्त, मनसुख इत्यादि मनगमतां नामो आपेल छे अने बाकीनां नामो पूर्वाचार्योए जे कल्पेलां छे ते ज स्वीकार्यां छे.

आ रणपिंगल तैयार करवामां जे जे संस्कृत, हिन्दी अने गूजराती ग्रंथोनो आश्रय लेवामां आव्यो छे ते ग्रंथो कया कया छे ए छंदःशास्त्रना अभ्यासीने जाणवानी अगत्य होतां तेमनुं नामवार लिष्ट आ नीचे आपीये छिये.

रणपिंगळ तैयार करवा माटे जोवामां आवेला ग्रंथोनी यादी.

१ यजुर्वेद, महीधरभाष्योपेत.
२ यजुर्वेद सर्वानुक्रमणिसूत्र. कात्यायन.
३ ऋग्वेद सायणभाष्योपेत.
४ वेदार्थयत्न मासिक.
५ सामवेद आर्चिक.
६ ऋग्वेद सर्वानुक्रमसूत्र. शौनक.
७ अथर्ववेद सायणभाष्य.
८ अथर्ववेद सर्वानुक्रमसूत्र.
९ सुवृत्ततिलक. प्रकाशेन्द्र पुत्र क्षेमेन्द्र.
१० शब्दकल्पद्रुम.

११ वृत्तप्रदीप. जनार्दन.
१२ वाग्वल्लभ. दुःखभंजन.
१३ वृत्तरत्नाकर. केदारभट्ट.
१४ ,, ,, टीका हरिभास्कर. सं. १७३२.
१५ छंदोमंजरी. गंगादास पंडित.
१६ भावप्रदीपिका.
१७ छंदःशास्त्र. पिंगलाचार्य.
१८ छंदोवृत्ति. भट्टहलायुध, सोमचंद्र. सं. १३२९.
१९ वृत्तमौक्तिक. चन्द्रशेखर, लक्ष्मीनाथ. सं. १६७१.
२० छंद.कामदुघावतंस. गुमानीद.
२१ प्राकृतपिंगलसूत्र. } टीकाकार रामभट्ट पुत्र लक्ष्मीनाथ.
२२ पिंगलप्रदीपटीकोपेत. }
२३ नागपिंगल मागधी.
२४ मंदारमरंदचंपू. } कृष्णकवि.
माधुर्यरंजनीव्याख्योपेत. }
२५ छंदोवृत्तमुक्तावली. कृष्णकवि.
२६ श्रुतबोध. कालिदास.
२७ वाणीभूषण. मैथिल दामोदरमिश्र.
२८ वृत्तरत्नावली. गौडवंशज भट्टाचार्य शतावधान पुत्रः
२९ छंदोलता. वसंत.
३० भास्करीयसेतु भास्कर.
३१ नागराजपिंगल. पिंगलाचार्य.
३२ छंदकोश. रत्नशेखरसूरी.
३३ मागधी पिंगल. टी चित्रसेन.
३४ ,, ,, मुनि सुंदर सूरी.
३५ चूडामणि. नागराज पिंगलाचार्य.

३६ छंदोनुशासन.	हेमचंद्र.
३७ हरिजशपिंगल(मारवाडी) हमीर कवि.	
३८ छंदःशतक.	चंद्रकीर्तिसूरि शिष्य-हरिकीर्तिसूरि.
३९ छंदतरंगिणी.	प्रेमरसिक कवि.
४० छंदोबोध (भाषा)	श्री हृषीकेश शर्मा.
४१ चिन्तामणि पिंगल.	चिन्तामणि.
४२ रूपमदीप.	जयकृष्ण भवानीदास.
४३ छंदरत्नावली.	साधु हरिरामदास निरंजनी.
४४ शृंगार पिंगल.	कवि सिहूचिरचित.
४५ प्रवीणसागर.	आ-ग्रंथमां आवेला
४६ रामचंद्रिका.	सर्व छंद
४७ वृत्तसारावली.	
४८ छंद प्रभाकर.	बाबु जगन्नाथ प्रसाद.
४९ भाषा छंदोमंजरी.	कवि पद्माकर पौत्र गजाधर.
५० लखपतजशसिंधु.	कवि हमीरजी.
५१ भगवत्पिंगल.	स्वामरना कवि उन्नडजी. सं० १८६ .
५२ छंद-शृंगार.	कविसिंध सेवक (भोजक) सं० १८५३
५३ काव्य सुधाकर.	महत जानकीप्रशाद.
५४ गणप्रस्तारप्रकाश.	बाबा रामदास.
५५ छंदोमालिका.	मिश्र केशवराम कवि.
५६ काव्य रसायन	कवि देवदत्त.
५७ काव्यार्णव	कवि संग्रामसिंह.
५८ नामार्णव.	राजा रणधीरसिंह.
५९ साहित्यानंद.	कवि गोपालकृत.

६० लखपतपिंगल. कुंवरकुशलजी.
६१ गोडपिंगल ,,
६२ श्रीधरपिंगल. श्रीधरमुरलीधर.
६३ छंदःसार. नारायणवैष्णव. सं. १८२९.
६४ छंदःसार. सूरतमिश्र.
६५ छंदोर्णव. भीखारीदास कवि.
६६ वृत्तदर्पण.(मराठी). परशुरामपंत गोडबोले.
६७ संस्कृत प्रोसडी.
६८ छंदःप्रदीप. भाषा. पंडित कनीयालाल.
६९ छंदोदीपिका. भाषा पंडित बंसीधर.
७० पिंगल. सुखदेवमिश्र. सं. १६३२.
७१ छंदःकौस्तुभसभाष्य. राधादामोदर.
७२ छंदःपीयूष. कवि जगन्नाथ.
७३ छंदोदीपिका. कुमारमणिभट्ट. सं. १७६०
७४ छंदोमुक्तावली काश्यपगोत्री शंभुराम सीताराम.
७५ वृत्तरत्नाकर टीका. क्षेम; हंस; जगन्नाथमिश्र श्रीकंठ रामचंद्र
७६ वृत्तालंकारमंजरी.
७७ पद्यमरोद्धार.
७८ प्रस्तारप्रभाकर.
७९ गीतनियम.
८० छंदःशतक. हर्षकीर्त्ति.
८१ हरिसदापिंगल. महासिंह.
८२ भाषापिंगल. चिन्तामणि.
८३ कविकुलकंठाभरण. दुर्लभराम.

८४ मात्रा परिच्छेद.
८५ आर्या प्रस्तारोदाहरण.
८६ वर्णभेद.
८७ काव्यकल्पलता. अमरचंद्र.
८८ कविकल्पलता.
८९ रघुनाथरूपक.
९० बुद्धिविलास.
९१ छंदोहृदयप्रकाश.
९२ छंदोलघुविवेक.
९३ छंदःशुद्धिचिल्लेहरी.
९४ कर्णशंभेप. मु० दु० ल.
९५ पिंगलवृत्तान्त हिन्दी. चिन्तामणि.
९६ प्राकृतछंदःकोप.
९७ वृत्तमुक्तावली. वैद्यगोपालदास.

आ सिवाय छंदःशास्त्रपरना बीजा जे ग्रंथोनां नाम अमने मळेलां पण प्रति मेळववामां नहि आवेली ते ग्रंथोनी टीप पण आपी छे; ते उपरथी छंदो विद्याना उत्सुकोने शोध करवानो लाभ थशे. अने कोइ छंद नवो हशे तो आ ग्रंथ साथे तुलना करवा जतां तरी आवशे, अने ते जो अमने जणाववामां आवशे तो आभार साथे स्वीकारी द्वितीय संस्करणमां तेनो उपयोग करवामा आवशे.

आ छंदःशास्त्ररुपी समुद्र तरी न शकाय तेवो छे. तेमां जेम जेम डुबकी मारवामां आवेछे; अने जेम जेम वधारे नीचे पोहोंचायछे तेम तेम अमुल्य रत्न डुबकी मारनार मेळववा पामे

छे. प्रस्तार विधिथी अनेक विध छंदो बनेछे; अने तेमने सत्कवियो पोताना मन तेवां नाम आपेछे, ए सर्वने आदर करवा योग्य छे. केवळ पात्र मनुष्योने नवा छंद रची नवां नाम आपवानो अधिकार छे बीजाओने नथी. अधिकारी जन पण तेज छे के जे छंदनां लक्षण सारी रीते समजेछे. पोते भणेछे अने ते बीजाने भणावी शकेछे. एक छंदने एक कवियें एक जातनुं नाम आपी दीधुं होय तेने नाम ते पछीना बीजा कवियें तेज छंदने वा बीजा छंदने न आपवुं, अथवा नामने बदलावी बीजुं नाम न घुसाडवुं, एवी पूर्वेनी प्रथा छे तेनो त्याग न करवो. एम करवाथी नवा वांचनारने भ्रम उत्पन्न थायछे, अने तेने पोताने कशा प्रकारनो लाभ थतो नथी.

वर्णवृत्त करता मात्रिक जाति अथवा छंदनो विषय विशेष विचारवा जेवो छे; एटला माटे मात्रिक छंदनी श्रेणीमां जो कोइ चारे पदमां वर्णक्रम अने संख्या समान जोवामां आवे, तो सत्कविये तेने मात्रिक छंद न मानतां जेटला वर्णनो ते छंद होय, तेटला वर्णना छंदना भेदमां ते आवी जतो होय तो ठीक नहिकर तेने तेना इतर भेद तरीके गणवो जोइये.

आ सृष्टिमा जेटली भाषा प्रचलित छे, तेमनुं खरु सौंदर्य तेमनी कवितामा जोवामां आवेछे; ज्यां सुधी छंदोज्ञान यथाविधि थतुं नथी त्यां सुधी मातृभाषा पण सारी रीते जाणी शकाती नथी. मातृभाषाथी अजाण मनुष्य बीजी विद्यानी खूबी शी रीते जाणी शके? मातृभाषानुं सौंदर्य वधारवा अथवा एमां रहेलुं सौंदर्य जाणवा माटे प्रत्येक मनुष्ये छंदोज्ञान सुविधिये मेळववुं जोइये.

जोवानां पुस्तकोनीदीप.

पुस्तकनुं नाम.	कर्त्तानुं नाम.	विशेषहकीकत.
१ छन्द कल्पलता.	मथुरानाथ.	अलाहबादमां प्रकटथयएल वायव्यप्रान्तनी खानगी लायब्रेरीना हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकनी सूची जुओ. १२६
२ छन्द कौस्तुभ.	विद्याभूषण.	,,
३ छन्द प्रकाश.	शेषचिन्तामणि	एफ किल्होर्नकृत मध्यमान्तोनां हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकोनी सूची ९४.
४ छन्द श्लोक.		गुस्तव ओपर्टनी संस्कृत पुस्तकोनी सूची १८२८.
५ छन्दसंख्या.		जी. बुलर साहेबनी मुंबइ इलाकानां पुस्तकोनी सूची ३. ६०.
६ छन्द संग्रह.		स. १८६४नी ब्राइब्लोथेटीकानी संस्कृत पुस्तकोनी सूची ९९
७ छन्द सुधाकर.	कृष्णाराम	बनारस कोलेज लायब्रेरीनी सू. ३३
८ छन्दश्चूडामणि.	हेमचन्द्र	जुवो छन्द संग्रह. २११अ
९ छन्दस्.	भास्करराय	जुवो छन्द प्रकाश. ९४
१० छन्दोगोविन्द.	गंगादास.	जुवो छन्द संग्रह. १९८ब
११ छन्दोदर्पण.	गोविन्द.	,, छन्द सुधाकर. ३२
१२ छन्दोदीपिका.	कृष्णाराम.	,, छन्द कल्पलता. ११६
१३ छन्दोनुक्रमणि.	सद्गुरुशिष्य.	सद्गुरुशिष्य-सूची.
१४ छन्दोनुशासन.	वाग्भट.	किल्होर्नकृत मुंबइ इलाकानां संस्कृत पुस्तकोना रिपोर्ट.

१५	छंदोमंजरी.		राजेन्द्रलालमित्रनी संस्कृत पुस्तको संबंधी नोटीस ८७७. ए. सी. बर्नेल टान्जोर लायब्रेरी सं. पु. सूची ३ ब.
१६	छन्दोमांग	सितांबर.	वृत्तरत्नाकरादर्शमां आ ग्रंथोनां नाम छे.
१७	छन्दोमार्तण्ड.		
१८	छन्दोमाला.	करंगभर.	
१९	छन्दोऽश्रुति.		ओपर्टनी सूची. ५५१
२०	छन्दोरत्न.	हलायुध.	„ ३१३१
२१	छन्दोरत्नाकर.		जुवो छन्दःप्रकाश.२०१अ
२२	छन्दोरत्नावली.	अमरचन्द्र.	„ ओपर्ट सूची. ४५९२
२३	छन्दोलक्षण.		„
२४	छन्दोलक्ष्यलक्षण.		बर्नेल सूची. ५३. ब
२५	छन्दोलघुविवेक.		बीकानेर महाराजाना पुस्तकालयमां.
२६	छन्दोलंकरण.		सूची.
२७	छन्दोविचय.		पीटरसन साहेबनी सूची. १८५
२८	छन्दोविचार.		बर्नेल सूची. ५३. ब
२९	छन्दोविचिति.	पतंजलि.	ओपर्ट सूची. १८२९.
३०	छन्दोविलास.		पेरीसनाएसमन्कनी सू. १२५ अ
३१	छन्दोविवेक.		ओपर्ट सूची. ४६३७
३२	छन्दोवृत्तरत्नं.		सूची.
३३	छन्दोष्टादशक.	रुपगोस्वामी.	राजेन्द्रलालमि. नो.२१२५
३४	पिंगलार्या.		ओपर्टसूची ३४२२
३५	पिंगलसार.	हरिप्रसाद.	राजेन्द्रलालमि. नो. २९१२
३६	वृत्तकल्पद्रुम.	जयगोविंद.	एफ. किल्होर्न सूची. ९४
३७	वृत्तकौतुक.	विश्वनाथ.	„ २२६

३८ वृत्तकौमुदी.	जगद्गुरु.	अयोध्याप्रांत सूची. १८
३९ वृत्तचंद्रिका.	रामदयालु.	,, २-१८-३०
४० वृत्तचंद्रोदय.	भास्कर.	किल्होर्न सूची. बनारस कोलेज पुस्तकालय. ३२
४१ वृत्ततरंगिणी.		दिल्लीप्रान्तनां पुस्तकोनी सू. काशीनाथ कुन्ते.
४२ वृत्तदर्पण.	गंगाधर.	अयोध्याप्रांत सं. पु. सू. १९-९८
४३ वृत्तदोपव्याख्यान.		राइसकृत सूची. २८
४४ वृत्तदीपिका	कृष्ण.	दक्षिण मुंबइ इलाकानी सू. ९०
४५ वृत्तद्युमणि.	यशवन्त.	ओपर्ट सूची. १०३१
४६ वृत्तप्रत्यय.	शंकरदयालु	अ. प्रा. सं. पु. सू. ८,१०
४७ वृत्तप्रत्ययकौमुदी.	पिंगल.	काशी. कु. कृ. दि.ना पु. रि.
४८ वृत्तप्रदीप.	जनार्दनविबुध.	बर्नेलसूची ५३. व भान्डारकर री.
४९ वृत्तमाणिकोश.	,,	,,
५० वृत्तमाणिक्यमाला.	सुसेन.	अयोध्या. स. पु. सूची. १०,१०
५१ वृत्तमाला.	वल्लभजी.	भाडारकरनो रीपोर्ट.
५२ वृत्तमुक्तावली.	कृष्णाराम.	वायव्यप्रांत सं.पु सूची. ६१८
५३ ,,	मल्लारी	किल्होर्न सूची. ९४
५४ वृत्तरामायण.		अयोध्या सं. पु. सूची. १०
५५ वृत्तलक्षण	,,	ओपर्टसूची. २५५२.
५६ वृत्तवार्तिक.	उमापति	,, ३२१८.
५७ वृत्तविनोद.	फतेहगिरि.	अयोध्याप्रान्त. सं. पु. सूची १०
५८ वृत्तविवेचन.	दुर्गासहाय.	बनारस कोलेज पुस्तकालय सू. ३२
५९ वृत्तशतक.	मार्तण्डवल्लभ.	प्रो. पीटरसन सूची. २ १३१
६० वृत्तसुबोदय.	मथुरानाथ.	वायव्यप्रान्त सं पु. सूची. ६०४
६१ वृत्तार्क.		राइससाहेबनी सूची. २८.

प्रवेशक.

संज्ञाप्रकरण.

वेदनां छ अंग गणवामां आव्याछे; तेमांनुं एक अंग आ छंदःशास्त्र[1] छे; केटलाक तेना मूळ योजक पिंगलाचार्यना नामपरथी तेने पिंगल पण केहेछे. तेमां मनने आल्हाद आपे एवी छान्दस् वाणीना विविध प्रयोगो करवाना नियम आपवामां आवेला छे.

छंद बे प्रकारना छे, [1]वैदिक (अलौकिक) अने [2]लौकिक.

वेदमां वपरायला छंद वैदिक, अने लोकमां प्रवर्त्तता लौकिक छंद केहेवायछे.

लौकिकछंदना[3] बे भेद छे;

१ मात्रामेळ अने २ वर्णमेळ.

मात्रामेळ अथवा मात्रिक छंदना बे पेटा पडेछे,

[1] मात्रिक गणबद्ध अने [2] मात्राबद्ध.

---

१ छंद =चदि आल्हादने, ते उपरथी तेने असुन् उणादि प्रत्यय लगतां च स्थाने छ थइ छद शब्द सिद्ध थायछे अने तेनो अर्थ आनंद उपजावनार-आल्हादकारक, एवो थायछे. अथवा छदि=आच्छादने, एटले, जे मापे करीने आच्छादित अथवा मर्यादामां रहेल ते, एवो अर्थ पण थाय

२ आ प्रकरण नोखु छपावानु छे.

३ एकदेशे स्थिरा जाति कृत्स्न गुरुलघुस्थिरम,
आदौ तावद् गणच्छदो मात्राच्छंदस्ततः परम.
तृतीयमक्षरच्छद छदस्त्रेधातु लौकिकम्.॥
तेन प्राक्तन लौकिक छदोजात जातिरित्युच्यते.

मात्रिकगणबद्धने पद्य[1] केहेछे. अने मात्राबद्धने वृत्ति अथवा जाति केहेछे.

वर्णमेळथी जेनी रचना करवामां आवेछे एवा अक्षरबद्ध छंदनी अनेक वृत्तिओ थायछे, तेथी ते वृत्त केहेवायछे.

जाति अने वृत्तना मुख्य त्रण भेद पडेछे.

१ सम, २ अर्धसम अने ३ विषम.

जेनां चारे चरण समान मापनां होय ते सम केहेवायछे. जेनुं पेहेलुं तथा त्रीजुं चरण समान मापनुं होय ते अर्धसम केहेवायछे; अने जेनां सर्व चरण विषम मापनां होय ते विषम केहेवायछे.

समजाति अने वृत्तना बे भेद छे.

१ सामान्य सम अने २ दंडक.

प्रत्येक चरणमां ३२ मात्राथी वधारे मात्रावाळां जे जातिनां चरण होय ते जातिदंडक अथवा मात्रिकदंडक गणायछे.

तेमज २६ अक्षरथी वधारे वर्णनां चरणवाळां वृत्त वर्णदंडक केहेवायछे.

विशेष समजुती माटे जुवो पृ. २२ मानुं छंदोवृत्त.

---

३ अर्थ. एक देशमा (भागमा) 'स्थिरा एटले नियमित लक्षण होय ते जाति केहेवाय. जेमा 'गुरू लघु नियमित होय ते वृत्त केहेवाय. प्रथम गणछद, बीजा मात्राछद, अने त्रीजा वर्णछद. ए प्रमाणे लौकिकछद त्रण प्रकारना छे. प्राकृत अने लौकिकछंदना समूहने जाति केहेछे

1. पद्य गणानांमं संवेत् (वाग्वल्लभ)

- वैदिकछंद
- लौकिकछंद
  - मात्रामेळजाति
    - पद्य
    - जाति
      - समजाति
        - समजाति
        - दंडक
      - अर्धसमजाति
      - विषमजाति
  - वर्णवृत्त
    - समवृत्त
      - समवृत्त
      - दंडक
    - अर्द्धसमवृत्त
    - विषमवृत्त

अ, आ इत्यादि स्वर अने ते सहित क, ख, आदि व्यंजन ए वर्ण अथवा अक्षर केहेवायछे. तेमना बे प्रकारछे. १ दिर्घ अथवा गुरु अने २ ह्रस्व अथवा लघु. ए संक्षेपे बताववाने गुरुने माटे ग अने लघुने माटे ल मूकवामां आवेछे.

(दुहा)

बे अणु द्रुत के'वायछे, बे द्रुत लघु लेखाय,
बे लघु ते गुरु जाणवो, त्रण लघु प्लुत भेखाय.
गुरु-लघुने गल कवि कहे, गल रेखा आकार–
कुटिल फणाकारे (ऽ) गुरू, लघु छे (।) दंडाकार.

लघु वर्णनी एक मात्रा, अने गुरू वर्णनी बे मात्रा गणायछे. लघुनी मात्रा सूचववा माटे । चिन्ह अने गुरुनी बे मात्रा अथवा गुरु वर्ण सूचववा माटे ऽ आवुं वक्रचिन्ह मूकायछे.

शुद्ध जोडणीवाळा शब्दोमां ज्यां ह्रस्व इ, उ अथवा ऋ होय त्यां दीर्घ गणवा जेवुं होय अने ज्यां दीर्घ होय त्यां ह्रस्व गणवा जेवुं होय तो ते अक्षर उपर – ⏑ आवां चिन्ह अनुक्रमे मूकवामां आवेछे. जेमके जुवो रणपिंगल पृ.. १९.

जाति जयक्करी जुगते करो.

उपर प्रमाणे छूट लेवी ए सशास्त्रनथी पण गूजराती भाषामां बोलाय तेवुं लखवानो परिचय पडी जवाथी एवी छूट लेवामां आवीछे; तथापि बनता सुधी तेम न थवा देवुं ए सारू छे.

मात्राने केटलाक कला पण केहेछे.

लघुवर्णनां पारिभाषिक अन्य नाम नीचे प्रमाणे छेः—

कनक, शंखलता, रवि, मेरु, दंड अने तेमना पर्याय; पुष्प, (कुसुम, फूल) रुप, रस, गंध, काहण, रेखा, कल्हार, शर (शल्य, बाण) अने तेमना पर्याय, एक मात्र इत्यादि.

गुरुवर्णनां नाम.

धवलकमल	माजी	अलि	आहार	कुन्द	अंच
शारग	अंठ	गगल	हृत्य	चंद्रन	अजा
चक्र	गरुड	अतुल	गमर	गुजर	मेंढो
सुर	कपोत	गगार	गीत	शरीर	नाराच
शशी	कमल	नीर	मंगल	कश	द्विमात्र
जलहर	वैकास	निधुर	गउड	कुंभक	चामर
धेनु	वरह	भासुर	माल	सिंधिकिरण	हार
घस	वल्लभ	सार	कुल	गुर्व	ताडका

आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ, आः ए अने तेमनी साथे संयुक्त थयेला व्यंजनो गुरुवर्ण केहेवाय ए सिवायना स्वर अने तेमनी साथे जोडायला व्यंजन लघु वर्ण केहेवायछे.

गुरुवर्ण. आ, औ, गौ, गा, या, इत्यादि.

लघुवर्ण अ, इ, उ, क, ख, गि, नि, इत्यादि.

लघुवर्ण जोडाक्षरनी पेहेलां आवेलो होय अने ते बोलतां थडकतो होय तो गुरु गणायछे.

जेमके "मध्य" आ शब्दमां जोडाक्षर "ध्य" छे तेनी पेहेलां "म" छे तेनो उच्चार करतां थडकेछे माटे म ए लघु छे छता गुरु गणाशे. पश्चिम, दक्षिण, भक्त, दृश, ए शब्दोमा क्रमे प, द, भ, द ए लघु वर्ण छे ते गुरुवर्ण गणायछे.

गूजरानी क्रियापदोमां अल्प यकारयुक्त भूतकाळनां रूप थायछे तेमां यकार लखवानो परिचय छे.

गळ्यो, मळ्यो, रळ्यो, भळ्यो, सळ्यो, ढळ्यो, जळ्यो, आ शब्दोमांना जोडाक्षर क्योनी पेहेलांनो वर्ण उच्चार करतां थडकतो नथी माटे गुरु नहि गणाय.

कोइ कोइ स्थळे समपदनी अन्ते रहेलो लघुवर्ण गुरु गणायछे, तेमज कोइ कोइ स्थळे विषम पदनी अंते रहेलो लघु क्वचित् गुरु[1] गणवामां आवेछे.

गुरुवर्ण होय अने तेनो उच्चार दीर्घ थतो न होय तो ते गुरु छतां लघु गणवो. जेम के "अरेरे कृष्ण" आ वाक्यमां "रे रे" ए दीर्घ वर्ण छे तेनो उच्चार लघु समान थायछे माटे तेमने लघु गणवा. तेमज इग मग आ चार मात्रा छे पण उच्चार करतां तेमांना ग हल बोलायछे माटे तेनी बे मात्रा गणवी.

सघळा मळीने ३४ व्यंजन छे; तेना फळ परत्वे नीचे जणावेला त्रण भेद पाडवामां आव्या छे. शुभवर्ण, अशुभवर्ण अने दग्धवर्ण अथवा दग्धाक्षर. क, ख, ग, घ, च, छ, ज, ड, द, ध, न, य, श, स, अने क्ष ए शुभवर्ण केहेवायछे. ङ, झ, ञ, ट, ठ, ढ, ण, त, थ, प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, . ष, अने ह. अशुभवर्ण केहेवायछे झ. ह, र, भ, अने ष, ए दग्धवर्ण केहेवायछे. केटलाक तेने शुभ मानेछे अने ब, घ, अने नने

---

[1] सस्तसमां नाचेनो नियम पण लागु पडेछे.

क्यारेक सयुक्त जोडाक्षर 'ह्र अने प्र" नी पेहेलानो लघु वर्ण विकल्पे गुरु गणवामा आवेछे. जेमके जयतिप्रद्रापित ए शब्दमा प्रनी पेहेलांनो ति विकल्पे गुरु गणायछे तेमज मानसह्रदि आमा ह्रनी पेहेलनो स पण विकल्पे गुरु गणायछे.

अशुभ मानेछे; अने ख, अने न, ने केटलाक दग्धाक्षर मानेछे, पण आ विषे घणा विद्वानोनी संमत्ति नथी.

दग्धवर्ण अथवा अशुभ वर्णने आरंभमां मूकी कोइ पण, लौकिक छंदनी रचना करवी नहि एम कवियोनुं मानवुं छे. वैदिक छंदने ए अपवाद लागु पडतो नथी. वळी अशुभ वर्णने छंदना आद्य भागमां न चालते मूकवा; पण दग्ध वर्णनो कोइ पण छंदना आद्य भागमां उपयोग न करवो एम पण केटलाकनुं केहेवुं छे.

दग्धाक्षर दीर्घ होय अथवा तेनो प्रयोग मंगलवाचक शब्दमां अथवा कोइ देववाचक शब्दमां थयो होय तो ते अशुभ नथी गणातो. तेमज तेवा ज शब्दना गणमां ए अक्षर आवेलो होय ने ते गण जो कोइ छंदमां वर्ज्य गणातो होय तो ते पण ग्राह्य बनेछे, अर्थात् ए दोषथी मुक्त थायछे. जेमकेः—

"रघुपति प्रजा प्रेमवश देखी,
सदयहृदय दुखी थया विशेखी॥"

उपरना रघुपति शब्दमां र दग्धाक्षर छे परंतु रामना वर्णन मां ए दोषमुक्त थायछे.

म्लेच्छ, चाण्डाल अने इतर कनिष्ट जातिनी कवितामां घ, र, भ अने खनो दग्धाक्षर दोष रहेतो नथी.

ब्राह्मण अथवा द्विजना वर्णननी कवितामां न अने ज वर्ण थी शिरु थता शब्दो प्रारंभमां आवे तो दोष गणातो नथी.

वैश्यना वर्णननी कविता होय तो तेना शब्दना आरंभमां ख. र. ष, वर्ण आववा देवा नहि.

रचवा धारेलो छंद कोइपण स्त्री संबंधी होय तो तेना आद्यमां ह, झ. अने घ, थी शिरु थता शब्दनो प्रयोग करवोनहि.

दग्धाक्षरनो प्रयोग छंदना आद्य भागमां करवाथी नीचे प्रमाणे वर्ण परत्वे फळ थवानुं केटलाक कविवरो जणावेछे.

कविताना प्रारंभमां ह होय तो हानि करे; झ होय तो झगडो करावे; न होय तो पीर करावे; ख होय तो खलता करावे; भ होय तो भय उपजावे; थ होय तो धननी हानी करावे; अने र होय तो अहित करे.

वळी केटलाक कविवरो[1] मातृकाक्षरोनां शुभाशुभ फळ नीचे प्रमाणे थवानुं कहेछे. ऋ अने ऌ सिवायना सघळा स्वरो संपत्तिकारक छे; क, ख, ग, घ संपत्करेछे, ङ अपकीर्तिकर्त्ता छे, च सुख आपेछे; छ प्रेमनो वधारो करेछे. ज मित्रलाभ करावे छे; झ भय उपजावेछे; ञ मरण निपजावेछे; ट, ठ दुःख आपे छे; ड शोभामां वधारो करेछे; ढ शोभा घटाडेछे; ण श्रम करावेछे, त सुख आपेछे; थ झगडो करावेछे; द सुख आपेछे, ध अने न संतोष उपजावेछे; प सुख आपेछे; फ भय उपजावेछे, ब मरण निपजावेछे; भ क्लेश करावेछे; म दुःख आपेछे; य लक्ष्मीनो वधारो करेछे; ल अने व व्यसनी बनावेछे; र दाह पेदा करेछे; श सुख आपेछे; ष ह खेद करावेछे; अने स सुख तथा क्ष समृद्धि आपेछे.

गण.

छंद शास्त्रनो आ पारिभाषिक शब्द छे तेनो अक्षरार्थ "समूह" थायछे; परंतु प्रकृत प्रकरणमां मात्रा अथवा वर्णनो समूह एवे अर्थे ए वपरायछे; तेना भेद बे छे; मात्रिक गण, अने वर्ण-गण.

---

१ वृत्तरत्नाकरना टीकाकार नारायण प्रभृति

मात्राना समूहथी उत्पन्न थयेला गण मात्रिक गण केहेवायछे अने वर्ण समूहजन्य गणने वर्णगण केहेछे.

मात्रिकगण पांच छे अने वर्णगण आठ छे.

मात्रिकगणनां नाम.—टगण, ठगण, डगण, ढगण अने णगण छे. केटलाक ए नामने बदले छगण, पगण, चगण, तगण अने दगण एवां नाम पण वापरेछे, कारण के ए नामथी जे गण केहेवायछे तेनो आद्याक्षर ते गणनी मात्रासंख्या सूचवेछे

गण बिम्ब

गणनु नाम	मात्रा संख्या	भेद
ट अथवा छ	६	१३
ठ अथवा प	५	८
ड अथवा च	४	५
ढ अथवा त	३	३
ण अथवा द	२	२

मात्रिकगणनां जूदां जूदां रुप थवाथी तेना भेद पाडवामा आवेछे. जे गण जेटली मात्रानो होय तेना मात्रा प्रस्तार विधिये जेटला भेद थता होय तेटला ते गणना रूप थायछे.

टगणादि गणना भेदजन्य रूपनुं दर्शन नीचेना बिम्ब परथी स्पष्ट समजाशे.

टगणना १३ भेद अने तेनां रूप.

१. SSS. २. IISS. ३. ISIS. ४. SIIS. ५. IIIIS. ६. ISSI. ७. SISI. ८. IIISI. ९. SSII. १०. IISII. ११. ISIII. १२. SIIII. १३. IIIIII.

ठगणना ८ भेद अने तेनां रूप.

१. ISS. २. SIS. ३. IIIS. ४. SSI. ५. IISI. ६. ISII. ७. SIII. ८. IIIII.

डगणना ५ भेद अने तेनां रूप.

१. SS. २. IIS. ३. ISI. ४. SII. ५. IIII.

ढ गणना ३ भेद अने तेनां रूप.

१. IS. २. SI. ३. III.

ण गणना २ भेद अने तेनां रूप.

१. S. २. II.

केटलाक छंद-शास्त्रवेत्ता टगणादि गणनां भेदजन्य रूपनां नीचे जणाव्या प्रमाणे नाम आपेछे:—

टगण.

क्रमाङ्क	स्वरूप चिन्ह	नाम अने तेना पर्याय
१	ऽऽऽ	शिव, हर, शंकर इत्यादि.
२	।।ऽऽ	शशि, इन्दु इत्यादि.
३	।ऽ।ऽ	दिनपति, सूर्य, रवि, इत्यादि.
४	ऽ।।ऽ	शक्र, इन्द्र, मघवा इत्यादि.
५	।।।।ऽ	शेष इत्यादि.
६	।ऽऽ।	अहि, कृष्ण, हरि इत्यादि.
७	ऽ।ऽ।	सरोज, कमल, पद्म इत्यादि.
८	।।।ऽ।	ब्रह्मा, धाता, विरंचि इत्यादि.
९	ऽऽ।।	कलि, किण इत्यादि
१०	।।ऽ।।	कमठ, कामठुं, बन्धु‡, चन्द्र इत्यादि.
११	।ऽ।।।	ध्रुव,
१२	ऽ।।।।	धर्म,
१३	।।।।।।	शालिवर, शाली, शालिकर, सालूरो इत्यादि.

‡ बन्धु, चद्र नाम प्राकृत पिंगलनी एक टीकामां आप्यां छे; तेमज प्राकृत पिंगल सूत्र पृ ८ मां चन्द्र नाम छे माटे बीजा रूपनां शशि, इन्दु नाम छे तेना पर्याय चद्र, बन्धु ने दशमा रूपनां नाम छे ते साथे भेळवी देवां नहि.

पांचमात्राना गणने ठगण केहेछे. तेनां सघळां मळीने ८ रूप थायछे ते नीचे मुजबः—

ठगण.

क्रमाङ्क	स्वरुप	नाम अने तेना पर्याय
१	।SS	इन्द्रासन, इन्द्रगण, तारापति, ऐरावत, अहिक, हय, सुरेन्द्र, सुरनरेन्द्र, कुंजर, मेघ, गजवर, ग्रह, गज, वाजी, दंत, गगन, दंती, नरेन्द्र, वसंत, सुरगज, रद, वीर, धीर, मयंक, किरण, वेयाल, केसरी, भ्रमर, इत्यादि.
२	S।S	अन्यसूर, सूर्य, वीर, बीर, विहग, पक्षी, बिडाल, सिंह, सुधा, केकी, मृगेन्द्र, अमृतवीणा, सर्प, यक्ष, गरूड, पक्षीन्द्र, पन्नगासन, जोहलक, विराट, सुपर्ण, अहि इ०.
३	।।।S	चाप, धनुष् इ०.
४	SS।	हीर, हारु, हीरु, नभ इ०.
५	।।S।	शेखर, केसरी, सेहर, सेहरु, इ०.
६	।S।।	कुसुम, कनक इ०
७	S।।।	अहिगण, ऐरावत इत्यादि. केटलाक कुसुमना नामथी पण आने ओळखावेछे.
८	।।।।।	पापगण, पत्तु, पत्तणो, बान इ०.

डगण. आ गण ४ मात्रानो छे, तेनां सघळां मळीने ५ रुप थायछे, ते नीचे प्रमाणे छे.

डगण.

क्रमाङ्क	स्वरूप	नाम अने तेना पर्याय
१	ऽऽ	कर्ण, कर्णिका, गुरुयुग, सुरतलता, रसिक, रसल्म लंवित, सुमति, सुरतनय, मनहरण, कुंतिजाया कुन्तयलु, कुंतिपुत्र, लहलहित, आभरण, तरणि यंदो, कर अने भुज वाचक सघळां नाम इत्यादि. केटलाक आने प्रहरणना नामथी ओळखावेछे.
२	।।ऽ	करतल, करयल, केटलाक कविना मत प्रमाणे ह्यथ, पाणि, कमल, हस्त, भुजा, हथियार, शृंगार, भुजदड, बाहु, गजाभरण, वाहक, वज्र, रत्न. प्रहरण, अशनि, प्रहर, पौन, शारदूल, इ०.
३	।ऽ।	अश्व, पयोधर, पयोहर, पउहर, पयोधी, मनुजपति, भूपति, गजपति, सेनाअंग, वसुधापति, पवन, रज्जु, गोपाल, जलद, नायक, वसुधाधिप, चक्रवर्त्ती, चक्रपति, चक्राधीश, कुच, नर, राजा, मुरारि इ०. केटलाक करपाणि अने कमलनु नाम पण आपेछे. केटलाक अश्वपति, सरोज, उरोज, स्तन, नरिन्द्र, नरेन्द्र, सुनायक, उन्नायक, उद्धत नायक, तुरगपति, वर्ष, फणी, गणपति अने भूपइ
४.	ऽ।।	वसुचरण, वसुपद, चलण, वसुचर, तात, पितामह, दहन, बळभद्र, गंड, जंघायुगल, रति, चरनयुग, नेपुरगंजक, पाय, पय, पद, पाद, चरणयुगल, राक्षस, शशि अने रैनपति इ०.
५	।।।।	द्विजवर, विप्र, ऋषि, परमउपाय, शिखर, जाति, उमाति नल, रथ पदात, गज, तुरग, पचशर इ०.

ढगण. आ गण त्रण मात्रानो थायछे. तेनां सवळां मळीने ३ रूप बनेछे. ते नीचे प्रमाणेछे.

ढगण.

ाङ्क	स्वरूप	नाम अने तेना पर्याय
१	।ऽ	रसवास, ध्वज, तोमर, चिन्ह, चिर, चिरालय, तंबूर, तुंबरु, चूडा, माला, पत्र, दाम, वसु, वास, तुर, तुरग, शूर, चूतमाला, ताम्बूलपत्र, रास, पवनवलय, वासव, केउर, केयूर, वसन, इ०.
२	ऽ।	परहताल, सुरपति, सुर, आनद, समुद्र, सिंधु, तुरजवान, तूर्य, तूर, करताल, निर्वाण, नंद, छंद, सरि. पौन, ग्वाल, पवन इ०.
३	।।।	वलय, तांडव, सात्विकभाव, नारी, तिहुह, रस, मुनि, अने नारी, भाव रस तथा तांडवनां बीनां पर्यायिक नामो छे.

:0:

णगण. आ गण बे मात्रानो थायछे तेनां सघळां मळीने २ रूप थायछे ते नीचे प्रमाणे छे.

णगण.

क्रमाङ्क	स्वरुप	नाम अने तेना पर्याय
१	ऽ	मंजीर, नूपुर, नेउर, चामर, चमर, हार, वलय, कंकण, ताटंकादिअलंकार अने तेना पर्याय, कनक, कुंडल, आवली, रसना, रसनाभरण, मुग्ध, अहि, फणी, मानस, केयूर, केउर, वंक, वक्र, वक्त्र, वक्रंड, मुक्ताफळ, किरण, लोचन,मणि शूल, करिवर, मत्त, रत्न अने तेना पर्याय, मणिना पर्याय, अलंकारना पर्याय, दीहा, दीह, किंशुक, कंचका, दीर्घ, भ्रू, शुक, तुंडक इ०
२	।।	परम, णवर, अतिप्रिय, परमप्रिय, सुप्रिय, निजप्रिय, द्विलघु इ०

———:0:———

मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, भगण, अने नगण ए. आठ प्रकारना वर्णगण छे. तेमनां बीजां नाम नीचे प्रमाणे छे.

म गणादि गण विस्त्र.

गण	अक्षर	स्वरुप	नाम अने तेना पर्याय.
मगण	म	S S S	मंदार, मयंक, मकरंद, मदनावतार इ०.
यगण	य	I S S	यशोधर, जर्यमत, जयंत, इ०.
रगण	र	S I S	राजित, रयगण, रमण, रयकर इ०.
सगण	स	I I S	सहित, सबल, शिवकर, इ०.
तगण	त	S S I	तीर्थेश, त्रिभुवनपति, तरुण इ०.
जगण	ज	I S I	जयकर, नगपति इ०.
भगण	भ	S I I	भुजपति, भावंत, भावत, भीम इ०.
नगण	न	I I I	नयन, नरेन्द्रपति इ०.

छंद शुद्ध बने अने ते करनार तथा जेने माटे ते करवामां आव्यो होय तेने ते सुख आपनार नीवडे एटलामाटे पूर्वाचार्योए उपर जणावेला मगणादि अष्टगणना स्वामि, फळ, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, वर्ण, वस्त्र, रंग, भूषण, कुळ, माता, पिता अने लोक जूदां जूदां कल्प्यां छे, ते आ साथे आपेला पत्रक परथी स्पष्ट समजाशे एटले गणवार पृथक पृथक अत्र आपवामां आव्यां नथी.

गण देवतादि चित्र.

गणनाम	मगण	यगण	रगण	सगण	तगण	जगण	भगण	नग
रुप	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	II
देवता	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	व्योम	रवि	चंद्र	नाग
फळ	श्री	गपनि	मृत्यु	भ्रमण	अर्थनाश	शोक	मंगल	गुण
मास	वैशाख	कार्तिक	ज्येष्ट	पौष	आषाढ	चैत्र	श्रावण	मार्गश
पक्ष	शुक्ल	शुक्ल	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	शुक्ल	शुक्ल
तिथि	३	११	२	४	१	१२	५	१२
वार	रवि	मंगल	मंगल	भृगु	बुध-	गुरु	भृगु	बुध
नक्षत्र	मघा	ज्येष्टा	चित्रा	शत तारका	स्वाती	उत्तरा षाढा	मूळ	अनुरा
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	वश्य	शूद्र	शूद्र	वैश्य	क्षत्रिय	ब्राह्मण
वस्त्र	श्वेत	श्वेत	लाल	हरित	नील	श्याम	पीत	सुवर्ण
रंग	श्वेत	श्याम	लाल	धूम्र	श्वेत	श्याम	पीत	कनक
भूषण	श्वेत	रुपु	लाल	सुवर्ण	लाल	मणि	चूर्णी	सुवर्ण
कुळ	द्विज	क्षत्रिय	काळ	वायु	शूद्र	वैश्य	वैश्य	क्षत्रिय
माता.	सरस्वति	सरस्वति	जरा	जरा	धीषणा	धीषणा	धीषणा	सावित्री
पिता	पिंगल	समुद्र	मृत्यु	मृत्यु	यम	यम	यम	ब्रह्मा
लोक	सत्य	पाताल	मर्त्यमर्ती	व्योम	स्वर्ग	मृत्यु	अमरा वर्ती	स्वर्ग

गणनाम	मगण	यगण	रगण	सगण	तगण	जगण	भगण	नगण
दिशा	पूर्व	ईशान	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य	दक्षिण	अग्नि
वाहन	कानबो	मोर मगर	मीढो	तुरग	बलद	हरण	बगलो	हाथी,उंट
नेत्र	३	३	१	२	२	१	३	३
रस	शृंगार	करुण	रौद्र	वीर	शान्त	भयानक	हास्य	नवरसमां अभंग
देश	मगध	मेरुगिरि	उज्जयन	बर्जिआर	उज्जन	गोरड	कालिन्दनी	मागध
ऋषि	कश्यप	आत्रेय	अंगारक	गौतम	वशिष्ठ	कौशिक	अंगीरा	भृगु
स्थान	शीर्ष	नेत्र	कंठ	उर	हृदय	पेट	नाभी	गुप्तस्थान
भोग	ताम्बुल	मिष्टान्न	दही	फल	दाडम	मसूर	हरडे	इच्छित
शस्त्र	चक्र	त्रिशूल	बाण	पर्वत	वाणपिंडु	गुर्ज	फरसी	खड्ग
मित्रामित्र	मित्र	दास	शत्रु	शत्रु	उदासीन	उदासी	भृत्य	मित्र
शुभाशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

विशेष. कोइ छंदोग्रंथमां म य भ न गणना ब्राह्मण, क्षत्रि वैश्य अने शूद्र ए क्रमे वर्ण कहेला छे; अने शुक्ल, पीत, स्फटि

° पृष्ठ. ३६ ना कोठामां गणनी माता अने पिताना आसनमां ज्यां ० शून्य मूक्युं छे त्यां एम समजवानुं छे के, जे गणनुं ए आसन छे ते गणना मात पिताना नाम कोइ ग्रंथमां अमारा जोवामां आव्यां नथी तेम छतां नामो छपाइ गया छे ते खरा नथी

अने श्याम ए क्रमे रंग होवानुं कहेलुं छे. मगणनुं वाहन केटलाक' गयंद गणेछे अने फळ स्थिरता जणावेछे. मागधी पिंगलमां रगणनो स्वामी मेघ होवानुं जणाव्युं छे. भगणनुं कुळ केटलाक इन्द्र होवानुं कहेछे अने तेनुं वाहन वाघ होवानुं लखेछे. केटलाक तगणनुं कुळ पवन मानेछे. जगणनुं वाहन केटलाक बिलाडी मानेछे.

(दुहो.) मन भय सुख देनार छे, जर सत दुख देनार;
अशुभ, न आणे प्रथममां, मनुज कवन कथनार.

एटले मगण नगण भगण अने यगणनो प्रयोग सुख आपनार छे. जगण, रगण सगण, तगणनो प्रयोग दुःख आपनार थायछे. माटे मनुजनी–मनुष्यनी–कविता करवावाळा तेमनो उपयोग आरंभमा करे नहि–अर्थात् ईश्वरना गुणगान इत्यादिमां तेनो बाध नथी.

मगण अने नगण मित्र गण छे, भगण अने यगण दासगण छे. जगण अने तगण उदासीन गण छे; रगण अने सगण शत्रु गण छे.

मित्रगणनी पाछळ मित्रगण आवे तो सिद्धिदायक मनायछे; मित्रनी पाछळ दासगण आवे तो जय करावेछे, मित्रगणनी पाछळ उदासीन गण आवे तो हानी करावेछे; अने मित्रगणनी पाछळ जो शत्रुगण आवे तो ते मित्रनो नाश करावेछे.

दासगणनी पाछळ मित्रगण आवे तो सिद्धि आपे, दासगण आवे तो हानी करावे, उदासीन गण आवे तो पीडा करावे, अने शत्रुगण आवे तो पराजय करावे.

उदासीन गणनी पाछळ मित्रगण आवे तो रचनारने अथवा जेना आख्यानमां ते मुक्यो होय तेने ते अल्प फल आपेछे.

दासगण आवे तो दुःख आपेछे, उदासीन गण आवे तो कर्युं कार्य अफल थायछे, अने शत्रुगण आवे तो दुःख देवरावेछे.

शत्रुगणनी पाछळ मित्रगण आवे तो शून्य फल मळे, दास गण आवे तो प्रियनो नाश थाय, उदासीन गण आवे तो शंका उत्पन्न करावे, अने शत्रुगण आवे तो नाश करावेछे.

म्लेच्छादि अन्त्यजवर्ण विषेनी कविताना आरंभमां रगण, सगण, तगण अने जगण लेवा; द्विजनी कवितामां नगण अने सगण सिवायना गण वापरवा; वैश्य विषेनी कवितामां भगण अने सगण वर्ज्य छे; अने स्त्री विषेनी कविताना प्रारंभमां यगण अने मगण वर्ज्य छे, एम केटलाक केहेछे.

दग्धाक्षरोनी पेठे आ दोष मात्र लौकिक छंदोने लागु पडे-छे; वैदिक छंदमां ए बाधकर्त्ता नथी गणातो. तेमज मंगळवाचकशब्द अथवा देववाचकशब्दमां पण ए गणनो प्रयोग बाधकारक नथी. वळी आरंभ गण शुभ फळदाता मूकवामां आव्यो होय तो तेना पछीना गणनुं मित्र अमित्रपणुं जोवानुं नथी. केटलाक आर्याना गणोनुं पृथक फळ वर्णवेछे ते पूर्वे जणाव्या सदृश छे, एटले अत्रे ते अत्र जूदुं जणाव्युं नथी.

संख्या विषे.

छंदमां एकादि संख्या जणाववा माटे इष्ट संख्यातुल्य जेनो अर्थ थतो होय. अथवा जेनी संख्या इष्ट संख्या तुल्य ज होय तेवा शब्दो, कविताना मापमां मळता आवे तेवा ते संख्या माटे मूकवा प्रथा छे, तेथी ते सूचवनार शब्दोनो संग्रह आ नीचे आपिये छिये तेथी स्पष्ट समजाशे.

०	१	२	३	४	५
आकाश	शशी	नयन	शिखी	श्रुति	बाण
नभ	चंद्रमा	युग्म	दहन	भुक्ति	भूत
गगन	शशभृत्	नेत्र	अग्नि	मोक्ष	शर
ख	आत्मा	पाद	अनल	फळ	इन्द्रिय
शून्य	भू	द्वि	हुताशन	चत्वार	यज्ञ
अभ्र	नाक	सर्पजीभ	वन्हि	चरण	असु (प्राण)
वियत्	पृथ्वी	युगल	पावक	चतुर्	गव्य
पूर्ण	धरा	जद्‌त	गुण	पुरुषार्थ	पच
मख	मही	दस्र	नाडी	तुर्य	अक्षु
	कु	अश्वि	भ्रा	उपाय	पांच
	धरणि	चक्षु	त्रि	युग	संधि
	एक	द्विजजन्म	दोष	आश्रम	इषु
	गजमुख-दंत	अश्विनी	विक्रम	ब्रह्ममुख	प्राण
	[illegible]	यमल	लोक	विधिवदन	वर्ग
	[illegible]	पक्ष	हरनयन	समुद्र	पाण्डव
	ध्रुव	कर	भुवन	वेद	हरवदन
		हस्त	गंगाधर	वारिनिधि	तत्व
		भुज	गंगापथ	अब्धि	पाप
		अयन	संध्या	व्यूह	हेप
		नदीतीर	राम	कृत	पंचामृत
		ओष्ठ	ताप	गेनाग	नियम
		जानु	अर्चिस्	हरिभुज	कन्या
			शूल	वर्णी	माग
			ग्राम	गोस्तन	पोव
			त्रिक	धर्म	अनिल
			नय	याम	अग
			गुण, कालत्री	पशुपद	कल्पवृक्ष
			[illegible]	मचार	महायज्ञ
			शांके		पत्र

स्थपना काठामां जणावेला शब्द अने बीजा तेवाज शून्य अर्थ सूचवता शब्दो शून्य दर्शाववा माटे मूकवामां आवेछे; तेमज एक १ दर्शाववा माटे शशी आदि शब्दो अने तेमना पर्याय वपरायछे. शशी शब्दना पर्याय नीचे प्रमाणे छे:–

कवित.

अब्धि नवनीतक ए, अब्ज अमृतदीधिति;
अमृतसुत ने आप अमृताधार गणो;
अमृतसू इन्दु अने ओषधीश, उडुप छे,
उडुपति उडुराट एने, ऋक्षेश भणो;
कलानिधि कलापति कलाविनी, कलापूर्ण,
कलाभृत् कलावान्, कुमुदपति कहो;
कुमुदप्रियने कहो, कुमुदबांधव–बंधु,
कुमुदिनीपति एने, कुमुदेश तो लहो. १
कैरवी कौमुदीपति, ग्लौ चंद्र चंद्रमा चांद,
छायानिधि, छायाभृत, छायामृगधर छे;
जैवातृक तमोघ्न ने, तमोनुद तमोपह,
तिमिररिपु अरिनुं नाम तमोहर छे;
ताराधिपति ने नाथ, तारापीड तिथिप्रणी,
तुहिनांशु दशवाजी, दाक्षायिणीपति छे;
द्विजपति, द्विजराज, नक्षत्रपति ने नाथ,
नक्षत्रप निशाकेतु, निशामणि वती छे. २
निशीथिनी नाथ ए तो, पर्वधि पियूषनिधि,

कवियो, पीयूष रुचि पीयूष महा भणे,
प्रालेयांशु भपाता ने भपति, मृगांक मास्,
मृगधर मृगवि प्लु, मृगलाञ्छन गणे,
रजनीपति ने नाथ, रात्रिनाथ रात्रिमणि,
राजराज रोहिणीश, रोहिणीपति कहो,
लक्ष्मीसहज ए विधु, शशधर शशभृत,
शर्वरीकान्त शशांक, शशलाञ्छन लहो. २
शशविन्दु, शशी थाय, शिवशेखर शीतगु,
शीतांशु शीतमयुख, शीतमरिची कहो,
शीतभानु, शीतरुक श्रीसहोदर, शुभ्रांशु,
शुचिरोची श्वेतधामा, श्वेतवाहन लहो,
श्वेतरोची श्वेतवाजी, सित दीधिति सितांशु,
सितरश्मि सुधाकर, सुधाधार गायछे,
सुधाभृति सुधानिधि, सुधासूति ने सुधांग,
सुधांशु ने सोम हरि, हरिणांक थायछे ४
हरिण कलंक एने हर चूडामणी वदे,
हरशेखरनु नाम, हिमकर छे हवे,
हिमद्युति हिमरश्मि, हिमश्रय एक लेखी,
क्षमाकर क्षमानाथ, यामिनीपति कवे,
शशीना आ नाम बधा, एक संख्या सूचक छे,
तेम पृथ्वीविना नाम एकमा गणायछे,
माटे ज्या प्रयोग जेवो योजवानो होय तेवो,
कवि इच्छा अनुसार क्रममा योजायछे. ५

६	७	८	९	१०	११	१२
षट्	मुनि	वसु	भक्ति	दश	रुद्र	रवि
शास्त्र	अग	आठ	नव	पंक्ति	शिव	द्वादश
गुहक	हय	इभ	खड	दिसि	अगियार	वार
खट	वार	अष्ट	निधि	दिशा	हर	भानु
इति	सात	गज	ग्रह	आशा	भव	सूर्य
छ	द्वीप	दिग्गज	नद	दिग्	शर्व	आदित्य
मार्खानापेग	सरोवर	नाग	अंक	दोष	पशुपति	भग
षट्	सर	यागांग	संख्या	अवतार	स्थाणु	इन
रस	नग	सर्प	द्वार	रावणशिर	करण	खरांशु
ऋतु	अश्व	तरु	काणु	स्नान	कुरुसेना	चुंबन
जख	लोक	अहि	व्याघ्रस्तन	कामदशा		साध्य-
दर्शन	तुरग	सुख	ऋचा	धूप		(देवगण)
चक्र	घोटक	सिद्धि	सुधाकुड	रूपक		तरणि
रिपु	ऋषि	योग	नाथ			क
राग	पर्वत	हस्ति	रत्न			मास
अरि	ताल	द्विरद	धान्य			राशि
तर्क	पाताल	याम	अबुद			ऋक्ष
अग	धातु	प्रहर				गृह
वेदाग	उपविष	करि				भवन
कृतिकातारा	चिरंजी ि	सात्विक-				संक्रान्ति
आततायी	मातृ	भाव				गुहबाहु
भ्रमरपद	राज्याग	धराधर				भूपमंडळ
द्विजकर्म	ताडव	दिकपाल				
छप्पयपद	नदी	शिवमूर्ति				
अयनमास	अग्निजि-	सिरात				
धात	ह्वा	गंध				
गुहानन		मद				
		ब्रह्मकर्म				

१३	१४	१५	१६	१७	१८
विश्व जगत् त्रयोदश तेर रामचंद्र मलमास यक्ष जख	चौद रत्न मनु विद्या मह (७+७) इन्द्र चोकडी अभिनय	पंदर तिथि घस्र पंचदश	सोळ षोडश नृप भूप कला संस्कार	सतर अत्यष्टि	अठार वनस्प पुरा धृति भारत अठार उपद्वि
१९	**२०**	**२१**	**२२**	**२४**	**२५**
ओगणिश अतिधृति नवदश अंकनंद ब्रह्माब्ज विराट्सुत दैववाद	नख अंगुल कोडी वसा वीस रावणभुज	एकवीश मूर्छना अनुस्मृति सगिन्	बावीश उपसर्ग	सिद्ध जिन तीर्थंकर चोवीश अवतार	पासो तत्व पचीस पवर्गि
२७	**३२**	**४९**	**१००**	**१०००**	**१००००**
भ नक्षत्र उडु ऋक्ष सत्यावीश	रद दंत दात द्विज बत्रीश	वायु ओगणपचास	शत सो नरायुष कमलदल इन्द्रयज्ञ	दशशत सहस्र हजार गगामुख शेषशीर्ष अर्जुनहस्त वेदशाखा इन्द्रनेत्र	लक्ष लाख

चरण अथवा पाद.

सामान्य रीते छंदना चोथा भागने पाद अथवा चरण केहेछे. लौकिक छंदना सामान्य रीते चार पाद अथवा चरण करवामां आवेछे. वैदिक छंदोमां ए नियम जेम जळवातो नथी तेम विषम जातिमां पण ते जळवातो नथी. तेवां वृत्तमां तेना चारथी वधारे के ओछा पाद अथवा चरण थइ शकेछे.

जेटली मात्रा अथवा जेटला वर्णनुं एक चरण बनाववानुं केहेवामां आव्युं होय ते तेनुं माप गणायछे.

विश्राम.

यति, विरति, विराम, अवरति, उपरति, विच्छेद, श्वसत, श्वासी, भेद, भिदा, आश्वासी, छेद आदि विश्रामना पर्याय छे.

कविता कथतां विश्राम लेवो पडे ते क्यां आगळ लेवो तेनो नेर्णय केटलांक वृत्तमां करेलो छे; बाकी तेनो घणो खरो आधार ते वृत्त बोलवानी ढब अने तेना राग उपर रेहेछे.

घणुं करीने पदने छेडे विश्राम आवेछे; अथवा तो मध्यमां आवेछे.

पाद पूर्णार्थे ज अथवा एवो ज कोइ बीजो अक्षर आवे तो नो जे साथे संबंध होय तेनी साथे अंगभूत गणता विश्राममां छूटो पाडो शकाय नहि.

यति आवता शब्दना अक्षरो छूटा पडी जाय तो ते तिभंग केहेवायछे.

शब्दनी विभक्ति तूटी पाडवाथी पण यतिभंग थायछे.

छंद शास्त्रमां कह्युछे के—मध्यमा यति होय तेमा शब्द-ो एक अक्षर आवी जाय तो यतिभग केहेवाय, पण वधारे आवे तो यतिभंग थाय नहि. जेम के —"कोलाहल"

एमां "कोला" आगळ यति आवतो होय तो यतिभंग नहि. "संवाहन" शब्दमां "संवा" आगळ यति आवे तो शब्दभंग थायछे, पण ए यतिभंग गणातो नथी. "उच्चारित" एमां उच्चा, रित एम यति पडी शके. "आल्हादक" एमां आल्हा, दक थायछे.

अनुप्रास अथवा यमक.

छंदना चरणना अन्त्याक्षरोने नियममां मूकी छंदने सुशोभित बनाववानी प्रथा जेवी प्राकृत भाषाछंदो माटे छे तेवी संस्कृत छंद माटे पूर्वाचार्योए आवश्यक गणी नथी. ए प्रथाने भाषाशास्त्रियो अनुप्रासना नामथी ओळखेछे; ने केहेछे के ए विना छंदोरचना नीरस थइ जायछे.

अर्थालंकारना १०८ भेद केटलाक साहित्यशास्त्रकारो माने छे, तेमांना **शब्दालंकारनो** एक भेद आ **अनुप्रासालंकार छे.** छंदोलालित्यमां वधारो करवा माटे वर्णसाम्य लाववामां आवेछे; तेनुं नाम अनुप्रास. तेना मुख्य भेद ५ छे. १ वृत्यनुप्रास, २ छेकानुप्रास, ३ लाटानुप्रास, ४ अन्त्यानुप्रास, ५ श्रुत्यनुप्रास. केटलाक आ उपरांत यमक नामनो छठ्ठो भेद छे एम केहेछे; अने केटलाक आ सर्व भेदने सामान्य रीते यमक एवुं नाम आपेछे.

एकना एक वर्णनी जेमा अनुवृत्ति थती होय, अर्थात् जे छंदमां एकनो एक वर्ण घणी वार आवतो होय त्यां वृत्यनुप्रास थयेलो समजवो.

" मया करो दया निधि, जया गया जशो वदे."

आमां य अक्षरनो एक करता वधारे वार प्रयोग थयो छे माटे आ वृत्यनुप्रास[१] जाणवो.

१ आने केटलाक गूर्जर कवियो "झड" एवुं नाम आपेछे

जे छंदमां एक करतां वधारे वर्णनी आवृत्ति थएली होय त्यां छेकानुप्रास[1] थएल जाणवो.

अमारी तमारी कुमारी तुकारी;
विचारी सुचारी विचारीं न मारी.

आमां म र अने च अक्षरोनी एक करतां वधारे वार आवृत्ति थएल छे माटे आने छेकानुप्रास जाणवो.

जे छंदमां आखा पदनी आवृत्ति थाय अने तेमनो शब्दार्थ जूदो जूदो एटले भिन्न होय ते लाटानुप्रास केहेवायछे.

"पतिपास जेने, नहिं घाम चांदनी थाय;
पतिपास जेने नहिं, घाम चांदनी थाय."

छंदना प्रत्येक चरणना अन्त्याक्षरो अमुक प्रकारना लावी अमुक स्थितिमां गोठववा एनुं नाम अन्त्यानुप्रास केहेवायछे. भाषा शास्त्रियो आने तुकान्तना नामथी ओळखेछे अने तेनी पद परत्वे जूदी जूदी स्थिति थायछे ते परथी तेना छ भेद पाडेछे.

१ सर्वान्त्यतुकान्त. २ समान्त्य विषमान्त्यतुकान्त.
३ समान्त्यतुकान्त. ४ विषमान्त्यतुकान्त.
५ समविषमान्त्यतुकान्त. ६ भिन्नतुकान्त.

जे छंदना चारे चरणना तुकान्त एटले अन्त्याक्षरो एक ज होय ते सर्वान्त्यतुकान्त केहेवायछे:

जेमके:—पांच पर ल लराय, जगण ते पर थाय,
चरण कल दशमांय, रतिकरी रचुं त्यांय.

आमां दरेक चरणना अन्त्यमां य छे माटे ते सर्वान्त्यतुकान्त.

जे छंदना सम चरणान्त अक्षर समान होय तेमज विषम

[1] आने केटलाक गूर्जर कवियो "वर्णसगाई" केहेछे.

चरणान्त्य अक्षर समान होय ते समान्त्यविषमान्त्यतुकान्त केहेवायछे.

जेमकेः—मा पड़ मुज आधार, चोसलां कोण चडावशेः
मूवा चडावण हार,,जीवता जातर आवशे.
(रासमाळा)

आमां बीजा अने चोथा चरणान्त्य अक्षर शे समान छे अने पेहेला तथा त्रीजा चरणान्त्य अक्षर र समान छे माटे ए समान्त्यविषमान्त्य तुकान्त.

जेना सम चरणना तुकान्त मळता होय अने विषम चरणना तुकान्त न मळता होय ते समान्त्य केहेवायछे.

जेमके.—दश मात्रिका देख, वरणी मुनि भाळ;
जाति ज रुडा जाण, त्रण आठ छे ताल.

आमां बीजा तथा चोथा चरणना तुकान्त ळ ल समान छे माटे ए समान्त्य तुकान्त.

जे छंदना विषम चरणना तुकान्त एक सरखा होय अने सम चरणना तुकान्त असमान होय ते विषमान्त्यतुकान्त केहेवायछे.

जेमकेः—चालुं पाटण देश, जिहां पटोळां नीपजे,
सरवो सोरठ देश, लाखेणी मळे लोबडी.
(रासमाळा)

आमां पेहेला तथा त्रीजा चरणना तुकान्त श समान छे अने बीजा तथा चोथा चरणना तुकान्त असमान छे माटे ए विषमान्त्य तुकान्त.

जे छंदना पेहेला चरणना तुकान्त बीजा चरणना तुकान्त सदश अने त्रीजा चरणना तुकान्त चोथा चरणना तुकान्त सदश होय ते समविषमान्त्य तुकान्त केहेवायछे.

(मालिनी)

जेमकेः—मधुर वचनथी तो, भोळवाया जनो जे,
जन वश थयुं मिथ्या उपचारेथी को'जे
मतलबी विशवासु, आश हैये भरेलां,
झटपट ठगी लेवा, ए खरेखात सेलां.

(गू० हितोपदेश.)

आमां पेहेला तथा बीजा चरणना तुकान्त "जे" अने त्रीज अने चोथा चरणना "लां" सरखा छे माटे ए समविषमान्त्य.

जेना कोइ पण चरणना तुकान्त एक बीजाने मळता न-आवता होय ते भिन्नतुकान्त्य केहेवायछे.

जेमकेः— शशि जतां, प्रिय रम्य विभावरी,
थइ रखे जतीं अंध वियोगथी,
दिनरूपे सुभगा बनी रहे, ग्रही
कर प्रभाकरना मन मानीता.

(सरस्वतीचद्र.)

आमां चारे चरणना तुकान्त री. थी. ही. अने ता ए अ-समान छे माटे भिन्नतुकान्त्य.

आवा तुकान्तवाळी कविताने [illegible] "ब्लेंकवर्स" केहेछे केटलाक आ भिन्नतुकान्त्यना [illegible] भेद पाडेछे १ प्रतिपद भिन्नान्त्य २ एकान्तरे [illegible] ३ उत्तरा[illegible] तुकान्त्य.

जेना सघळा चरणोना [illegible] होय तें प्रतिपद भिन्नान्त्य केहेछे.

जेमकेः—आ एकपास उतरे [illegible]
आ उगता रवित[illegible]

संसार आ अहि दशा–युग–अन्तराळे
बे तेजना उदय–अस्तथी बांधी राख्यो
(सरस्वतीचंद्र)

जेना पूर्वार्द्धना चरणोना तुकान्त समान होय तेने पूर्वार्द्धतुकान्त केहेछे. जेमके:— वि॰ नाटक.

(अनुष्टुप.) सिंचतो माधवीने ने,
नचावे कुंदवेलीने;
स्नेह दाक्षिण्यथी,
कामी सरखो मने ए.

जेना उत्तरार्द्धना चरणोना तुकान्त समान होय तेने उत्तरार्द्धतुकान्त केहेछे. जेमके:—

(आभीर) बुद्धिकेरी वात, साक्षात जो लखाय,
बुद्धिवाळा जेह, करे प्रमाण ज तेह.
(पादशाही राजनीति).

आपणा प्राचीन गूर्जर, तेमज हिंदी कविवरोए भिन्नतुकान्त वाळा छंदो रचवा तरफ पोतानुं वलण राख्युं होय एम जणातु नथी; पण हालना केटलाक गूर्जर कवियो एनो उपयोग करवा लाग्या छे.

संस्कृत ग्रंथोमां षट्पदी अथवा अष्टपदीमां वच्चे पदना अन्त्याक्षरो समान लाववामां आव्या छे.

रागरागणीमां गाइ शकाय एवा छंदोनी रचनामां आ तुकान्तपर विशेष लक्ष-देवानी अगत्य छे. तेमां पदान्त अथवा तुकान्त मळवा ज जोइए एटलुंज नहि परंतु स्वर पण एकना एकज मळवा जोइये. तेमां पण पदान्तनी पांच मात्राना स्वर जो मळता आवे तो ते उत्तम केहेवायछे.

संतोषी राजा नकि-थाय नष्ट,
संतोषहीनो द्विज थाय नष्ट;
सलज्ज वेश्या पण थाय-नष्ट,
कुलांगना निर्लज थाय नष्ट.

(गू० हितोपदेश)

जेना अन्तमां बे गुरु आवी पड्या होय त्यां तुकान्तनी पांच मात्रा एक सरखी मळे तो उत्तम, चार मळे तो मध्यम, अने तेथी ओछी मळती आवे तो ते कनिष्ट गणायछे. जेमकेः—

गीति–दूत मुख नृप छे माटे, दूत यवन पण न योग्य हणवाने;
शस्त्र उगामे तोपण, दूत प्रवर्त्ते न अन्य वदवाने.

(गुजराती हितोपदेश)

जेना पदना अन्तमां (।ऽ, ऽ।) आवा त्रण मात्राना वर्ण आवता होय तेवा पदना तुकान्तमां जो पांच मात्रा मळे तो उत्तम, त्रण मात्रा मळती आवे तो मध्यम, अने त्रणथी ओछी मळती आवे तो ते कनिष्ट केहेवायछे. जेमके । ऽ दृष्टान्तः—

वण विलराये लडवुं, जालवणी बहु परस्परे करवी;
जे कंइ निर्बळ सेना, व्यूहतणा मध्यमांय ते धरवी.

(सवैयो.)

नियमित विषये दंडवीकथी घणुंकरी चाले सौ कोय,
परवश आ जग केरीमांहि साधु पुरुष विरला को होय;
विकल दुर्बला व्याधिवाळा निर्धन एवा पतिनी पास,
कुळनारी पण दंडवीकिथी शरणे रहीने करे निवास.

(गुजराती हितोपदेश)

जेना पदान्तमां बे लघु आवता होय तेवा पदना तुकान्तमां चार मात्रा मळे तो ते उत्तम, बे मळे तो मध्यम अने बेथी ओछी मळती आवे तो ते कनिष्ट केहेवायछे. जेमकेः—

पूलेछ पूर्वे फूल ते पछी फल,
अगाउ मेघोदय ते पछी जल,
सदाय आ कारण कार्यनो क्रम,
प्रशाद पूर्वे पुठथी कृपा तम.

(नाट्यप्रकाश)

उपर प्रमाणे तुकान्तना अक्षर अने स्वरनी समानता जे छन्दमा जाळववामा आवेली होयछे ते कर्णमधुर थवा उपरात बीजो कशो लाभ गणातो नथी, तेम तेपर दुर्लक्ष देवाथी उपरना गुणलाभ उपरात बीजी कशी हानि थती नथी, माटे छदो रचवामा आनो प्रयोग यथेच्छ रीतिए करवो.

छन्दमाना पदमा शब्द एनोएज होय अने तेनो अर्थ जूदो थतो होय तो ते **यमकानुमास** केहेवायछे. जेमके —

सारगे[1] सारंग[2] लइ, घरी चांक सारग,[3]
ऋतु सारग[4] न आदर्यो, रखवा मुख सारग.

आमा **सारंग** शब्द सर्व पदमा जूदे जूदे अर्थे छे माटे **यमकानुमास.**

छन्दमाना कोइ पण चरणमा कठ तालव्यादि अक्षर अ, क, ख, ग, घ, ङ अने हमाना बे अथवा अधिक वर्ण एक पछी एक अथवा कइक अन्तरे आवे ते **श्रुत्यनुमास** केहेवायछे.

गीति.

"गुहक गङ्गा, गिरिजा, शकर हसतां हस्या दई तालो"
हाहा घोरे घुघवी, गण ग्वडखड करी घणु हस्या भाळी.

आमा ग, ह, ड इत्यादि उक्तवर्णो उपर कह्या प्रमाणे आव्या छे माटे **श्रुत्यनुमास.**

---

१ साप २ देडको ३ मोर ४ सारगराग

अनुक्रमणिका.

अ.

अंक.	छंदनु नाम.	वर्ण.	मात्रा.	प्रकार.	पृष्ट.
९९९	अकहरि, अकुहरि:	१४	......	सम.	३४४
९९९	—अकुहरि.	१४	......	सम.	३४४
७१	अकोपकृष्टा			अ स.वृ.	४८८
८५०	अखण्डमण्डन.	१३	......	सम.	३२५
३०९	अखनि	८	......	सम.	२५८
३४२	अखेट	८	......	सम.	२६१
६९	अगनोतेर वर्णना दडक	६९	......	......	४६६
६४८	अगरिम.	११	......	सम.	२९७
१५२	अगाभिका			वि. वृ.	५१०
७१४	अगौरी, ललित	१२	......	सम.	३०५
२५४	अचट्ठ, सुमत	७	......	सम.	२५१
१४४१	अचल	२७	......	दंडक.	४२६
११०७	अचलधृति	१६	......	सम.	३६१
१	अचलधृति		१६	मा.स.जा.	२०६
११४९	अचलनयन	१७	......	सम.	३६७
४४९	अचलपंक्ति, वालिका	१०	......	सम	२७२
६८०	—अचलचर्चिका	१२	......	सम.	३००
१३०३	अचलविरति	२२	......	सम.	३९५
१५	अचला		१२	सम.जा.	७
९८२	अञ्चलवती.	१४	......	सम	३४१
६३	अञ्चिताग्रा.			अ स वृ	४८६
८९९	अट्टासिनी.	१३	......	सम.	३३१
२८	अठावीश वर्णना दडक	२८	......	......	४२७
३६	अठावीश मात्रानी विषमपद जाति		२८	......	२०५
७८	अठोतेर वर्णना दडक	७८	......	......	४६७
	[illegible] वर्णना दडक	४८	......	......	४६४

अंक.	छंदांचे नाव.	वर्ण.	मात्रा.	प्रकार.	पृष्ठ.
१०४	अटमर	१३	...	सम.	३३२
४६	अडल, डारिल, चोपाइकुलक		१६	समजा.	१७
५१	—अडिल		१६	समजा.	२०
१२३	अतिकलि	६	...	सम.	२३१
२५	अतिकृति अथवा अभिकृति	२५	...	सम.	४०७
१०१	अतिगीता		२७	समजा.	४१
१३	अतिजगतिछंद	१३	...	सम.	३३८
२८३	अतिजनि	८	...	सम.	२६१
१९	अतिधृति छंद	१९	...	सम.	३७५
७५	अतिप्रतिविनीता		...	अ.स.वृ.	४८९
३३३	—अतिप्रीता	८	...	सम.	२६०
२८८	अतिमोहा	८	...	सम.	२५५
८६०	—अतिरुचिरा	१३	...	सम.	३३७
३८	अतिरुचिरा		२९	शि.जा.	९३
६१४	अतिरह	१३	...	सम.	३३०
७८७	अतिवासिता	१२	......	सम.	३१२
१५	अतिशर्करी छंद	१५	......	सम.	३४४
११९६	अतिशायिनी, चित्रलेखा	१७	......	सम.	३६३
४४	अतिशिखा, श्रुणित.		३२	शि.जा.	९४
११७	अतिसुराहिता.		......	अ.स.वृ.	४९८
१८१	अतुले.		......	वि. वृ.	५२०
१३६१	(अ) अतुलपुलक.	२४	......	सम.	४०६
३	अतुला	पुल.	१४	वि. जा.	१३१
९०	अतिल, अर्तिल		...	अ.स.वृ.	४९२
१७२	अतसद		...	वि.वृ.	५१७
२	अत्युक्ता छंद		...	वर्णमेलछंद.	२२५
१३२८	अद्रितनया	२३	......	सम.	४०१
१७८	अधिकारी	७	......	सम	२४५
११८६	अर्धारफर्रार.	२४	......	सम.	४०४

३३ अचीरा.................... ७ ...... सम. २४०

९८ —अचीरा.................... ९ ...... सम. २६६

३६ —अनङ्गक्रीडा.................... ६४ शिजा. ९२

१५ अनङ्गपद.................... ...... आ.सं.वृ. ४९८

४८ अनङ्गशेखर, महीधर..........२८ ...... दंडक. ४२८

२५ अनति.................... ६ ...... सम. २३९

३८ अनन्तदामा....................१४ ...... सम. ३३५

१०८ अन्तविपुला उद्गीति.......... ...... उ.गी.भे. ११८

९१ अन्तविपुला उपगीति.......... ...... ,, ११५

७४ अन्तविपुलागीति.......... ...... गी.भे. ११२

५७ अन्त (जघन) विपुलार्या...... ...... आ.भे. १०९

१२५ अन्तविपुलार्यागीति. .... आ.गी.भे. १२१

१३६ अन्तर्वनिता....................११ ...... सम. २८०

२२३ अन्तर्धिकाशवासक....................१२ ...... सम. ३०७

१०६ —अनवसिता ....११ ...... सम. २८८

१९९ अनर्घारा .... ९ ...... सम. २६७

१८८ अनसूय.................... ...... वि.वृ. ५२२

७४ अनालेरन. .... अ.स.वृ ४८८

८६ अनामवनाश्रिता.................... ...... ,, ४९१

२०१ अनासादि.................... ७ ...... सम. २४७

११५ अनिन्द्रगुर्विन्दु, गुर्विन्दु, पूर्वेन्दु.१८ ...... सम. ३३३

१०२ अनिभृत.................... ६ ...... सम. २३७

१२६ अनिरया.................... ...... अ.स.वृ. ५००

२५३ अनिर्भार. .... ८ ...... सम. २५२

५५ —अनिला.................... १६ मा.स.जा. २१

८८१ अनिलोद्धतमुखी. ....१३ ...... सम ३२९

०७१ अनिलोहा....................१६ ...... सम. ३५५

७७७ अनीचक....................१२ ...... सम. ३१५

२०६ अनु.................... ७ ...... सम. २४७

३८ अनूरु.................... ...... अ.स.वृ. ४६०

५८६	अनुकूला, मोदपदा	११	......	राम.	२८९
१४४	अनुगीति		कुल ५६	गी. गो.	१२४
४७१	अनुचायिता	१०	......	राम.	२७४
१८	अनुफल		१२	मा. स.जा	८
८	अनुष्टुप्छंद	८	......	राम.	२१२
९९	—अनृजु	४	......	राम.	२२५
३२५	अनृतनर्म, नृतनर्म	८	......	राम.	२५९
५२५	अपग्रोधा	११	......	राम.	२८०
८५	अपरभ्रंशिना		......	अ रा.वृ	४९१
९२	—अपरभा	६	......	राम.	२२६
२५	अपरवक्त्र.		......	अ.रा.वृ.	४७७
४२	(अपर) शिखा,		६२	शि जा.	८४.
१४३	अपरा उद्गता		......	वि. वृ.	५०७
४३	(अपरा) खञ्जा (शिखा)		६२	शि.जा.	९४
९६९	अपराजिता	१४	......	राम.	३४०
८	अपरान्तिका		६४	वै प्र.	२१७
१४८	(अपरा) सपादी	२२	३४	मा. द.	६३
१४४	अपरोद्गता		......	वि. वृ.	५०८.
१४५	अपरोद्गता		......	,,	५०८
१४००	अपवाह, अपवाहक	२६	......	सम.	४१३
१४००	—अपवाहक	२६	......	सम	४१३
५२	अप्रमाथिनी		......	अ.स.वृ.	४८४
३१३	अप्रीता, प्रीता, अतिप्रीता, अलिप्रीता	८	......	सम.	२६०
६६	अभिख्या	६	......	राम.	२३३
६९९	—अभिनवतामरस	१२	......	सम.	३०४
८८६	अभिरामा	१३	......	राम.	३३०
८९३	अभिरुक्ता	१३	......	रांम.	३३०
१३६	अभीक	७	......	समं.	२४०
१०६८	अभियार्ध्रा	१६	......	राम,	३५५
१३८४	अभ्रभ्रमण	२५	......	राम.	४१०

८७५	अभ्रभ्रमशीला..................१३	......	सम.	३२९
२४७	अमति ७	......	,,	२५१
५६९	अमन्दपाद....................११	......	,,	२८४
३४०	अमना, अमनसु.................. ८	......	,,	२६१
३४०	—अमनसु...................... ८	......	,,	२६१
१३३१	अमरसमरी....................२३	......	,,	४०२
३२६	अमरन्दि, हनुमन्त............ ८	......	,,	२५९
५२	—अमरावती..................	......	अ.स.वृ.	४८३
१३६९	—अमला......................२५	......	सम.	४०८
३१९	अमानिका ८	......	,,	२५९
५२२	अमालीन....................११	......	,,	२७९
८६६	अमितनगानिका. १३	......	,,	३२८
४९६	—अमृतगति..................१०	......	,,	२७७
४९६	—अमृततिलका................१०	......	,,	२७७
१३६	अमृतधारा, मञ्जरी..........	......	वि. वृ.	५०४
१३७	अमृतधारा (द्वितीय)..........	......	,,	५०४
१३००	अमृतध्वनि....................२२	......	सम.	३९५
१६	अमृतध्वनि.................. ..	१४४	वि.जा.	१४२
५३६	अमोघमालिका..................११	......	सम.	२८१
१४२३	—अम्बुज......................२६	......	,,	४१६
८५५	अम्बुदावली. १३	......	,,	३२६
१४८४	अम्भोलि......................३१	......	दं. वृ.	४३८
६५६	—अम्भोजाली, ...१२	......	सम.	२९८
२०७	अम्मेवी. ७	......	,,	२४७
३६४	अयनपताका ९	......	,,	२६३
१२८७	अयमात. २२	......	,,	३९१
११८	अयामित. ६	......	,,	२३९
१०३	अयवती	......	अ.स.वृ.	४९५
७६	अरजस्का ६	......	सम.	२३४
१३८९	—अरविंद......................२५	......	,,	४१९

१८६३ —अरविंद......................३१ ...... गम. ४३३
१३८९ अरविंदमुग्गी, अरविंद.........२५ ...... ,, ४११
३०८ अराली .... ८ ...... ,, २५८
३१४ अरि .... ८ ...... ,, २५८
१४२० अरिदमन, अरिदलन ....२६ ...... ,, ४१५
१४२० —अरिदलन .... २६ ...... ,, ४१५
५१ अरिल्ल, अडिल्ल, अलिल्ला, अलल्ल... १६ गमजा. २०
७८८ अरिला..........................१२ ...... गम. ३१०
११ अरुन्तुद .... अ.म.वृ. ४७४
१५२६ —अर्क...........................११ ...... दं. व. ४६५
९० —अर्कच्छाया .... २४ रामजा. ३१
९३९ अर्कशेपा. ....१४ ...... सम. ३३५
७८९ अर्जितकलिका..................१२ ...... , ३१२
१४७४ अर्गद्दकत्रिभंगी.................३० ...... दं. व. ४३६
१५०६ अर्णव..............................३३ ...... ,, ४६०
१२० अर्ति. .... ६ ...... सम. २३९
९० —अर्तिल......................... ...... अ.म.वृ ४९२
३९१ अर्द. .... ९ ...... सम. २६५
६२७ अर्धशिखा........................११ ...... ,, २९४
१३४८ अर्दित,नर्दित.................. २८ ...... ,, ४०८
७०५ अर्दितपाद ....१२ ...... ,, ३०८
अर्द्धसमवृत्त......................... ...... अ.म वृ. ४७१
३९६ अर्द्धकला .... ९ ...... सम. २६६
८१ —अर्द्धकाममोहिनी. .... ६ ...... ,, २३५
८९० अर्धकुसुमिता ....१३ ...... ,, ३३०
९० —अर्धतोटक .... ६ ...... ,, २३८
२९५ —अर्द्धनाराच.................. ८ ...... ,, २५६
७२ —अर्द्धभुजंगी.................. ६ ...... ,, २३३
३६९ अर्धमाला.......................... ९ ...... ,, २६३
११८० —अर्द्धान्तरालापि ....१८ ...... सम ३०८

११८७	अर्भान्तरालापि, अद्धान्तरालापि.१८	......	सम.	३७४
१२१	अर्द्धरुत	......	अ.स.वृ.	४९९
७१२	अर्पितमदना १२	......	सम.	३०५
११०	अर्भकपांक्ति	......	अ.स.वृ.	४९७
१२८४	अर्भकमाला २२	......	सम.	३९१
१३५५	अरसात, मकरंद, अलसा.......२४	......	,,	४०५
५१	—अलक..........................	१६	समजा.	२०
१३८६	अलका, अलिका........................२५	......	सम	४११
९६७	अलकालिका, अलिकालका.......१४	......	,,	३४०
१२२	अल्परुत..........................	......	अ.स.वृ.	४९९
१३५५	—अलसा...........................२४	......	सम.	४०५
२०२	अलालापि.......................... ७	......	,,	२४७
१३८६	—अलिका २५	......	,,	४११
९६७	—अलिकालका १४	......	,,	३४०
९५३	अलिपद, नटगति...........................१४	......	,,	३३८
६१	अलिपद	......	अ.स.वृ.	४८५
३३३	—अलिप्रीता.......................... ८	......	सम	२६०
५१	—अलिला	१६	समजा.	२०
५५	अलिला, अनिला	१६	,,	२१
९४२	अलोला, लोला १४	......	सम.	३३७
३८२	अवनिजा.......................... ९	......	,,	२६५
१३	अवनीलता, नवनीलता, अवलीलता.	......	अ.स.वृ.	४७५
२२	अवलंबक..........................	१३	मा.स.जा.	९
१२४०	अवन्त्योपचार २०	......	सम.	३८२
७०	अवरोधवनिता.	......	अ.स.वृ.	४८९
१३	—अवलीलता.	......	,,	४७५
९५	अवाहित्र, अवाहित्रा	......	,,	४९४
९५	—अवहित्रा	......	,,	४९४
४६	अवार्नाहृतवदना..........................	......	,,	४८२
११३४	अवितथ, नंदटक, नर्कुटक, नर्दटक, कुर्दटक १७	......	,,	३६५

७३५	अविरलरतिका	१२	......	सम.	३१०
१५६	—अभिराम.	७	......	,,	२४२
३९८	—अवीरा	९	......	,,	२६६
७९	अवोढा	६	......	,,	२३४
५०३	अशनि	१३	......	,,	३३२
४१	अशिखा, नाकि		६०	शि.जा.	९३
६३४	अश्रुविलास,	११	......	सम.	२९५
१४६४	—अशोक	२९	......	द.व	४३३
८५२	अशोकपुष्प	१३	......	सम.	३२५
१४४९	अशोकपुष्पमञ्जरी	२८	......	द.प.	४२९
१२५३	अशोकलोक, अशोकलोकालोक	२१	......	सम.	३८५
१२५३	—अशोकलोकालोक	२१	......	,,	३८५
१३९६	अशोकानोकह	२६	......	,,	४१२
१०८८	—अश्वगति.	१६	......	,,	३५८
११८५	अश्वगति	१८	......	,,	३७४.
१४५७	अश्वधाटी	२९	......	द.प.	४३१
१२९८	—अश्वधाटी	२२	......	सम.	२९४
१३२९	अश्वललित, ललित	२३	......	,,	४०१
१६	अष्टि छंद	१६	......	,,	३५८
	असम अथवा विषम वृत्त		......	अ.वि.वृ	५०१
९१८	—असम्बन्धा	१४	......	सम.	३३३
९१८	असम्बाधा, असम्बन्धा	१४	......	,,	३३३
४५०	असिनधारा	१०	......	,,	२७२
२०	असुधा		......	अ.स.वृ	४७६
४६६	—असुधा	१०	......	सम.	२७३
६७९	—असुधारा	१२	......	,,	३००
६७९	अघधारा, असुधारा	१२	......	,,	३००
३०	असुराढ्या		......	अ.स.वृ	४७८
२४८	अहति	७	......	सम.	२५१
२२२	अहरि, करहंनृ, करहरा, करहन्ता, करहंस, करहच, करहचा, करहग, करहत, वच्छ.	७	......	,,	२४८

१९४	अहानिगा		......	वि. वृ	५२९
१२५६	अहि	३१	......	सम.	३८५
४६९	आहिला	१०	......	,,	२७४
३६६	—अहिशिशु	९	......	,,	२६३
१३७	अहिंसा	७	......	,,	२४१
६९	अहीनताली		......	अ.स.वृ.	४८५
४१३	—अहीरि	९	......	सम.	२६८
३७	—अक्षरपंक्ति	५	......	,,	२३०
४६७	अधरावलि,लालिनी	१०	......	,,	२७४

आ.

३४१	आकनचु	८	......	,,	२६१
२२	आकृतिछन्द	२२	......	,,	३८९
४०२	आकेकर, पद्मावती	९	......	,,	२६७
५७३	—आख्यानकी	११	......	,,	२८५
९६	आख्यानकी		......	अ.स.वृ	४९४
२९४	—आणन्द	८	......	सम.	२५६
६२	—आत्मक	५	......	,,	२३२
१०७	आत्रेय		२७	मा.स.जा.	४३
१०७	आदिविपुला,उद्गीति		......	उ.गी.भे.	११८
९०	आदिविपुलाउपगीति		......	,,	११५
७३	आदिविपुलागीति		......	,,	११२
५६	आदिविपुलार्या		५७	आ.जा.	१०८
१२४	आदिविपुलार्यागीति		......	आ.गी.भे	१२१
६७४	आधिदेवी	१२	......	सम.	२९९
८०८	आनता	१३	......	,,	३१९
१००५	आनद्ध	१५	......	,,	३४५
९६३	—आनन्दा	१४	......	,,	३३९
८२०	आननमूल	१३	......	,,	३२१
२९४	—आनन्दरूपक	८	......	,,	२५६
६५	—आनन्दवर्धन		११	मा. स.जा.	२४

९६ आनन्दवस्तु ....चारेपादनी १०		त्रि.जा.	१६३
४३७ आनन्दोलिका १०	......	सम.	२७०
१५० —आन्दोलिता.	३७	मा स.जा.	६४
८६८ आपणिका १३	......	सम.	३३८
३ आपातालिका, आपाताली.......	६०	वै. प्र.	२१४
१३० आपीड..........................	......	अ स वृ.	५०१
१३६२ आगार, सवैया............. २४	......	सम.	४०७
१३९७ आभासमान....................२६	......	सम.	४१२
१३ आभीर, आहीर..............	२१	मा स जा.	६
१४६५ —आम्र २९	......	दं. व.	४३४
१०६५ आरभटी........................१६	......	सम.	३५४
५२१ आराधिनी.................... ११	......	सम.	२७९
१५२६ आराम, पद्मक, विश्वबाहु, अर्क...५१	......	द व.	४६५
१४७६ आर्द्रस्तवक.....................३०	......	दं. व.	४३६
९ आर्द्री ११	......	सम.	२८६
४५ आर्या, गाथा, गाहा	५७	आ. प्र	१००
१३२ आर्या गीति......................	......	आ र्गा भे.	१२०
१४५४ आलानिक.........................२८	......	सम.	४३१
६७ आलिंगन.........	......	अ स वृ	४८७
९२ आलोलपंक्ति...............	......	,,	४९३
१ आवृत्त	......	,,	४७१
६१५ आशापाद.........................११	......	सम.	२९३
८३ आसववासिता................	......	अ स वृ	४९०
१३ —आहीर	११	मा. स जा.	६

इ.

१३०७ इच्छा............................२३	......	सम	३९७
३१३ इडा, इला ८	......	सम	२५८
७७ इति, क्षामलता ९	......	सम.	२३४
१२५० —इन्द्र २०	......	सम.	३८५
१३११ —इन्दव २३	......	सम.	३९७

५९० —इन्दिरा ११	......		सम.	२९०
४९२ —इन्दुमुखी, चन्द्रमुखी......१०	......		सम.	२७६
९५० इन्दुवदना, इन्दवंदना, वरसुंदरी.१४	......		सम.	३३८
७२७ —इन्दुवंशा........................१२	......		सम.	३०८
४३४ इन्द्र, ऐन्द्री.........................१०	......		सम.	२७०
१५३१ —इन्द्र. ६३	......		दंडक	४६६
२५७ इन्द्रफला, इन्द्रवला, दंडलिया..... ८	......		सम.	२५२
५७१ इन्द्रवज्रा............................११	......		सम.	२८४
इन्द्रवज्राभेद ११	......		सम.	२८५
९५० —इन्द्रवदना.........................१४	......		सम.	३३८
२५७ —इन्द्रवला. ८	......		सम.	२५२
७२७ —इन्द्रवंशा. १२	......		सम.	३०८
१३११ —इन्द्रविजय २३	......		सम.	३९७
१३१५ इन्द्रविमान.......................२३	......		सम.	३९८
११५ इभा............................... ६	......		सम.	२३८
१३५ इभभ्रान्ता........................ ७	......		सम.	२४०
३१३ —इला. ८	......		सम.	२५८
११२८ —ईश..........................		५७	दं. व.	४६५
४२ इहा..............................	......		अ.स.वृ.	४८१
५६२ इहामृगी.........................११	......		सम.	२८३

उ.

१ उक्तच्छा		६६	वि.जा.	१२६
१ उक्ताछंद.......................... १	......		सम.	२३५
७३९ उज्ज्वला, महोज्वला १२	......		सम.	३११
१४०७ उज्झितकदन २६	......		सम.	४१४
२२ उडुराजी..........................		२९.	समजा.	८५
१३५३ उत्कटपादिका २४	......		सम.	४०५
१ उत्कृष्टा		६६	वि. जा.	१२६
२६ उत्कृति छंद.......................२६	......		सम.	४१२
१२४२ उत्पलमालिका.....................२०	......		सम.	३८२

८४३	—उत्पलिनी	१३	......	सम.	३२४
१७७	उदक्		......	वि. वृ.	५१६
४१६	—उदधि	९	......	सम.	२६८
७६९	उदयनमुखि	१२	......	सम.	३१४
३५८	उदरश्री, उदरस्तक, उदरासक	९	......	राम.	२६३
५२४	उद्धतिरुरी	११	......	सम.	२७९
३५८	—उदरस्तक	९	......	सम.	२६२
३५८	—उदरासक	९	......	सम.	२६२
८७३	उदासदास	१३	......	राम.	३२९
१५७०	उदारपाद, वैकुंठ, भोगी		६०	दं. व.	४६६
४४६	उदित, कीर्ति	१०	......	सम.	२७१
५४१	उदितदिनेश	११	......	सम.	२८१
५८५	उदितविजोहा	११	......	राम.	२८९
५	उदीच्यवृत्ति		३०	वै. प्र.	२१५
११८	उद्गता		......	वि. वृ.	५०५
१४०	उद्गता		......	,,	५०५
१६	उद्गलितक		......	ग. प्र.	२२४
१०५	उद्गीति, विगाथा, विगाहा, विगाथ.		......	उ.गी.भे.	११७
१४२५	—उद्दर्प	२७	......	दंडक	४१९
१५१२	उद्दाम	४५	......	,,	४१९
११२१	—उद्दाम	४५	......	,,	४६४
१५२१	उद्दामा, उद्दाम	४५	......	,,	४६४
१४५३	—उद्दाल	२८	......	,,	४३०
१४३४	उद्दाल, उद्दालक	२७	......	,,	४२५
१४३४	—उद्दालक	२७	......	सम.	४२५
३०७	उध्या	८	......	,,	२५८
१५५	उद्धा		......	वि. वृ.	५११
७६२	उद्कंरचिता	१२	......	सम.	३१३
३२	उघोर.		१४	सम.जा.	१३
१५७	—उद्धतचाली.		६०.	मा. द.	६८

१५७	—उद्धत.		४०	मा. दं.	६८
१४०	—उद्धर्षिणी.	१४		सम. वृ.	३३६
३०६	उद्धरा	८		,,	२५७
१७३	उन्दारि	७		,,	२४४
६८८	उन्नर्म	१४		,,	३४३
४५१	उन्नाल	१०		,,	२७२
५९३	उपकारिका	१४		,,	२४३
८६७	उपगताशिखा	१३		,,	३२८
८८	उपगीति, गाहू, गाहो			गी. भे.	१९८
८७२	उपचितरतिका	१३		सम.	३२९
६०६	उपचित्र, शुचिन, नरेश	११		,,	२९२
९४	उपचित्र, उपचित्रा			.अ.स.वृ	४९३
६	उपचित्रा (पेहली)		१६	मात्रासमक	२१०
७	उपचित्रा (दोजी)		१६	,,	२१०
८	उपचित्रा (त्रीजी)		१६	,,	२११
९४	—उपचित्रा			अ.स.वृ.	४९३
५७३	उपजाति,उपेन्द्रमाला,आख्यानकी.	११		सम.	२८५
१२	उपजाति भेद	१२		,,	३०४
९०९	उपदारिका, रंजिता	११		,,	२९२
७०८	उपधान	१२		,,	३०५
४५३	उपधाय्या	१०		,,	२७२
८९५	—उपनमिता	१३		,,	३३१
१८५	उपनय			वि. वृ.	५२१
८४	उपमान		२३	समजा.	२९
१०२९	उपमालिनी	१५		सम.	३४९
२९७	उपलिनी, कुतवती	८		,,	२५६
७४२	उपलेखा	१२		,,	३११
७६३	—उपवनमालिका	१२		,,	३१३
१२६	—उपवालि.	६		,,	२३९
१४९२	उपविशाल	२२		,,	४५७

१६७	उपवैतालिक.	......	वि. वृ	५१५
८८७	उपसरसी.......................१३	......	सम.	३३०
१०८	उपसरसीक.	......	अ.स.वृ.	४५६
४५८	उपसमुला......................१०	......	सम.	२७३
५५७	उपस्थित, शिखण्डित.........११	......	,,	२८३
८३७	उपस्थित..........................१३	......	,,	३३२
१४६	उपस्थितप्रचुपित	......	वि. वृ.	५०८
४७४	उपस्थिता १०	......	सम.	२७४
५७५	उपस्थिता ११	......	,,	२८८
५५३	उपहितचडी. ११	......	,,	२८२
२७	उपाख्य..........................	......	अ.स.वृ.	४७८
१६०	उपिक ;............................ ७	......	सम.	२४३
५७३	—उपेन्द्रमाला. ११	......	,,	२८५
५७२	उपेन्द्रवज्रा........................११	......	,,	२८४
२३६	उपोदरि. ७	......	,,	२५०
१६	उपोद्गता, फलिताम...........	......	अ.स.वृ	४८०
२३२	उपोद्दा ७	......	सम.	२४९
५४	उभय (महा) चपला..........	५७	आ गी.भे.	१०८
१२१	उभय (महा) चपला अन्तविपुला, उद्गीति.	......	,,	१२०
१०९	उभयविपुलाउद्गीति..........	......	,,	११८
९२	उभयविपुला उपगीति.	......	,,	११५
७५	उभयविपुलागीति.	......	,,	११२
५८	उभयविपुलार्या.	......	,,	१०९
१२६	उभयविपुला आर्यागीति........	......	,,	१२१
१३२	उभयापीड.	......	वि वृ.	५०२
१२९५	उमा. २२	......	सम.	३९३
७९३	उल्कागारा १३	......	,,	३१८
१८९	उल्गा.............................. ७	......	,,	२४६
१११	उल्पोदा	......	अ.स.वृ	४५७

३०	उल्लन; फुल्लणा		३७	अर्द्धसम.	८९
१५	—उल्लाल		२८	,,	८०
१५	उल्लला, उल्लाल, उल्लास		,,	,,	,,
१५	—उल्लास		,,	,,	,,
३२	उल्लास		१९२	वि.जा.	२०२
८१०	—उर्वसी	१३	......	सम.	३२०
६	—उर्व्वी		१०९	वि.जा.	१३४
७	उष्णिक	७	......	सम.	२४०
१०५५	उहिनी	१५	......	,,	३५३
२०४	ऋचा	७	......	,,	२४७
५१३	ऋत	१०	......	,,	२७८
१३	ऋद्धि	११	......	,,	२८६
१०९८	ऋषभगज विलसित, गजविलसित, गजतुरगविलसित.	१६	......	,,	३५९
८१३	ऋषिराद	१३	......	,,	३२०
३१	एकत्रीश वर्णना दंडक	३१	......	......	४३७
१०८	एकसो आठ वर्णना दंडक	१०८	......	......	४७०
३७	एकत्रीश मात्रानी विषमपदजाति.		३१	......	२०५
१०२	एकसो बे वर्णना दंडक	१०२	......	......	४६९
१०५	एकसो पांच वर्णना दंडक	१०५	......	......	४७०
५१	एकावन वर्णना दंडक	५१	......	......	४६५
९०१	—एकावली	१३	......	सम.	३३१
८१	एक्याशी वर्णना दंडक	८१	......	......	४६८
१०१८	एला, रेखा, कथितरल	१५	......	सम.	३४७
८२	एला.		२२	समजा.	२९
८०	एंशी वर्णना दंडक	८०	...	......	४६७
४३८	—ऐन्द्री	१०		सम.	२५०
२९	ओगणत्रीश वर्णना दंडक	२९	......	......	४६२
४९	ओगणपचास वर्णना दंडक	४९	......	......	४६४
५	ओवी		... ..	अन्यदेशीय	५३६

१०४	औपगप			अ.रा.सू.	४९५
१०६	औपगवीत			,,	४९६
२	औपच्छन्दसिक		६८	वैता.	११४
२६	—औपछदासिक			अ.रा.सू.	४७८

क.

११६	ककुभा		२८	राम.	८६
१२८१	कङ्कणक्वाण	२२		,,	३९०
१२७९	कङ्कणक्वाणत्राणी	२२		,,	३९०
२	कच्छा, कच्छी		६६	वि जा.	१३०
२	—कच्छी		६६	,,	१३०
९०	कच्छपी	६		सम.	२३४
२७	कज्जल, कदली		१४	,,	१२
६८	कज्जा	६		,,	२३३
७	कटाव, कटिबध			अ दे.	५३७
४८४	—कटिका	१०		सम	२५५
८१३	कठिनास्थि, अहीरि	९		,,	२६८
६४५	कठिनी	१३		,,	३७५
१७०	कर्योद्गना	७		,,	२४४
१५१	कड़खा		३७	मा.दं.	६५
५४२	कडार	११		सम	२८१
४३	कणिका	५		,,	२३१
५७९	—कनिका	१२		सम	३१५
२७	—कदली		१४	,,	१२
६०८	कनकाभिरी	११		,,	२९२
८९४	कानिका	१३		,,	३३१
८६४	कनककेतकी, कनककेतन	१३		,,	३२८
८६४	—कनककेतन	१३		,,	३२८
८५८	—कनकप्रभा	१३		,,	३२६
१३६७	कनकमालिका	२१		,,	३८७
५९०	—कनकमजरी	११		,,	२९०

१२४९	कनकलता	२०	......	सम	३८३
८९७	कन्द, कन्दा, कुन्द, सारग.	१३	......	„	३३१
१५१	कन्दका, रूकपक, सधा, सधान, सधो.		६४	आ गी प्र.	१२६
५४९	कन्दविनोद.	११	......	सम	३८२
८९७	—कन्दा	१३	......	„	३३१
८९८	कनीया, कनैया	१३	......	„	३३१
८९८	—कनैया	१३	......	„	३३१
८९७	—कुन्द	१३	......	„	३३१
९५	कन्या, कर्णी, तीर्णा, तिशा.	४	......	„	२२७
३९	—कपिला		१४	सम.	१५
१०८५	—कमठकर	१६	......	„	३५८
७४	कमनी	६	......	„	२३४
४०४	—कम्बलया.	९	......	„	२६७
१४	—कमल	३	......	„	२२७
३००	—कमल.	८	......	„	२५७
१०८५	कमलंकर, कमठकर	१६	......	„	३५८
३००	—कमला	८	......	„	२५७
७	—कमला		......	अ.स.दृ.	४७३
१३६९	कमला, सुंदर, मंगी, सुमिला, माधवा, अमला, चन्द्रकला, सुछंद, सुदरी, सवैया, सुखदा, सुपदानि	२५	......	„	४०८
४७३	—कमला	१०	......	„	२७४
४०४	—कमला	९	......	„	२६७
९१	—कमला	६	......	„	२३६
३८	कमलाकर		......	अ स दृ	४७९
१३९	—कमलावर्ता		३२	सम	५९
९०१	—कमलावली	१३	......	„	३३१
१४	—कमलि.	३	......	„	२२७
१५३	करखा		३७	मा द	६६
३२९	करान्जि	८	......	सम	२६८

४६	—करता.	५	सम.	२३१
१०	करधा.		अ सु वृ.	४७१
८५३	करपाोद्गता	१३	सम.	३०५
१५४	करभित्, रैरग	७	,,	२४२
६०	करभी नवपदी, उप्ट्री, कलभी.	कुल १०९	वि जा	१३६
१०१	करभोद्धता		अ स वृ.	४९५
६९३	करमाला.	१२	सम	३०१
३८८	करशया	९	,,	२६५
१५८	—करह.	७	,,	२४३
२७२	—करहच	७	,,	२४८
११०	—करहचा	६	,,	२३८
२२२	—करहची	७	,,	२४८
२२२	—करहज	७	,,	२४८
२२२	—करहत	७	,,	२४८
,,	—करहता	,,	,,	,,
,,	—करहतृ	,,	,,	,,
,,	—करहस	,,	,,	,,
२७६	कराली,कामताका,केतुमाला	८	,,	२५४
११९२	करासन	१७	,,	३६१
१३६४	—करीटी	२४	,,	४०७
४०	करीरिता		अ स वृ.	४८१
२९८	—करिल	८	सम	२५६
६५	करेणू	६	,,	२३३
५९०	—कर्ण	११	,,	२९०
४६३	कर्णपालिका, कामदा, मरालिका	१०	,,	२७३
१०४४	कर्णलता	१५	,,	३५१
११४३	कर्णस्फोट	१७	,,	३६०
१४९९	कर्णाटक	२६	,,	४१५
९९	कर्णिनी		अ स वृ	४९४
९५५	कर्णिशद	१४	सम.	३४१

२४ —वर्तृ	४	......	सम.	२२८
३ —कन्ता.		७	,,	२
१७ कर्पूरद्विपदी		२८	असजा.	८३
८७९ कर्मठ.	१३	......	सम.	३३९
८९ कर्मदा, तिल	६	......	,,	२३६
३६१ कर्मिष्ठा, किर्मिष्ठा.	९	......	,,	२६३
१८१ —कल्करा	७	......	,,	२४५
१३८२ कलकण्ठ	२५	......	,,	४१०
४३३ —कलगीत.	१०	......	,,	२७०
६ —कलमी		१०९	विजा.	१३४
१४२२ कलधुनि.	२६	......	,,	४१६
१०७३ कलधौतपद	१६	......	,,	३५५
३५ कलना		१४	समजा.	१४
१२३ कलना		......	अमवृ.	४९९
१२४ कलनावती		......	,,	४९९
८७४ कलाधिका	१३	......	सम	३२९
१२६४ कलमतालिका	२१	......	,,	३८६
१२७० कलमदिरा	२१	......	,,	३८८
१९० कलम्बडम्बर		......	विवृ	५२३
४६ —कलमुखी	५	......	,,	२३१
३८ कलले,सुतसमक	५	......	,,	२३०
६७८ कलवर्णविहग	१२	......	सम.	३००
६१८ कलस्तनवश, पायक्त	११	......	,,	२९३
३६३ कलह	९	......	,,	२६३
१०५० कलहकर	१६	......	,,	३५८
९८१ कलहोनेरा.	१४	......	,,	३४१
२२२ —कलहम	७	......	,,	२४८
८२३ कलहग, सिंहनाद, कुटजा, प्रानपियारा	१३	......	,,	३२१
१०३० —कलहंस	१५	......	,,	३४९

८५८ —कलहंस... ....१३ ...... सम. ३२६
९४५ कलहसी. ....१४ ...... ,, ३३७
१६५ कलमुखी, लीला.................... ७ ...... ,, २४३
२० कला, नगानिका, कुमारिका, नगा, नगाणिका, नगी, नगनिका, जया, निर्मला, नगालिका, स्रग्गणिय. ४ ...... ,, १२८
१३९१ —कलाकुशल. ....२५ ...... ,, ४११
९६२ कलाधर. ....१४ ...... ,, ३३९
७९५ कलाधाम.........................१३ ...... ,, ३१८
८५१ कलापतिप्रभा, राग, नदराग......१३ ...... ,, ३२५
१२०९ कलापदीपक......................१९ ...... ,, ३७७
४३१ कलापान्तरिता. ....१० ...... ,, २७०
८६० —कलावती ....१३ ...... ,, ३२७
१३३ कलिका, मञ्जरी, मदरी......... ...... वि वृ ५०३
८८ कलिकाललिता .... अ.म वृ. ४९२
५३२ कलितकमलमाला. ....११ ...... सम. २८०
१८१ —कलिता. .... ७ ...... ,, २४५
२९८ कलिला, करिला.................... ८ ...... ,, २५६
५७ कलिका. .... ५ ...... ,, २३२
९२७ कल्पकान्ता. ....१४ ...... ,, ३३४
११०२ —कल्पचारी. ....१६ ...... ,, ३६०
११०२ कल्पधारी, कल्पचारी. ....१६ ...... ,, ३६०
९६० कल्पमीलिता.......................१४ ...... ,, ३३९
१६५ कमुखी, लीला.................... ७ ...... ,, २४३
१२११ कल्पलतापताकिनी. ....१९ ...... ,, ३७८
१०६३ कल्पाहारि. ....१६ ...... ,, ३५४
१४८७ कवित, मनहरण. ....३१ ...... व. द. ४५४
कवित प्रकरण..........................३१-३३ ... ४३९-६०
१०१८ —कवितरेला ....१५ ...... सम ३४७
१४८० कन्नाधर. ....३१ ...... व.द. ४३७
१४९५ काकलीकलकोकिल. ....२६ ...... सम. ४१५

९७७	काकिणिका	१४	......	रामे.	३४१
४८९	काण्डमुखी	१०	......	,,	२७६
३	कान्ता, फन्ता		७	,,	२
१७	—कान्ता		......	अ स वृ.	४७६
११३०	कान्ता	१७	......	राम.	३६४
११४५	कान्तार	१५	......	,,	३६७
६६१	कान्तोत्पीडा	१२	......	,,	२९८
१४९	कानर		३५	सा.द.	६४
७८१	—काम	१२	......	,,	३१६
३	—काम उत्लाल		६०	वि जा.	१७५
३	—काम.	२	......	राम	२२५
१६५	कामकलशिका		......	वि. वृ.	५१५
१३७	कामकला.		३२	राम.	५७
१०००	—कामक्रिडा	१५	......	,,	३४४
५०१	कामचारि.	१०,	......	,,	२७७
२७६	—कामताका	८	......	,,	२५४
४६३	—कामदा	१०	......	,,	२७३
५१६	कामनिभा.	१०	......	,,	२७१
७१७	—काममोहिनी.	१२	......	,,	३०६
११९४	कामरुप	१७	......	,,	३६२
१०६	कामरूप.		२६	,,	४३
७७	—कामलता	६	......	,,	२३४
९५५	कामला	१४	......	,,	३३८
९८७	कामशाला	१४	......	,,	३४३
३	कामा, स्त्री, काम	२	......	,,	२२५
३७६	कामा.	९	......	,,	२६४
११	—कामावतार	३	......	,,	२२७
६२	कामाक्षी.		......	अ स.वृ	४८६
७१७	—कामिनिमोहन	१२	......	राम	३०६
६३९	कामुकलेखा.	११	......	,,	२९६

२२७ वामोद्गता	७	……	सम	२४९
२३३ वार्षिका.	७	……	,,	२४९
९७८ वारविणी.	१४	……	,,	३४१
२६ काद, वीस, वीर	४	……	,,	२२९
१५२७ —कालदंड.	५४	……	दंडक.	४६५
९०९ कालध्वान्त, कालध्वान	१४	……	सम.	३३२
,, —कालध्वान	,,	……	,,	,,
६४३ कालधर्म.	११	……	,,	२९६
११२४ कालसारोद्धत	१७	……	,,	३६४
१३१८ —कालका	२३	……	,,	३९९
२५ कालिक		१८	,,	१०
१३१८ कालिका, कालका	२३	……	,,	३९९
२३१ कालम्बी.	७	……	,,	२४९
८८ काव्य, वास्तुक		२४	,,	३१
११३२ कासार	१७	……	,,	३६५.
१५३३ कासार, वाराह	६९	……	दडक	४६६
९९५ कासारकान्ता	१२	……	सम.	३०१
६३६ काहाली	११	……	,,	२९५
२२६ काही	७	……	,,	२४९
३८ किञ्जल्क		१४	,,	१५
५१ किञ्जल्कि	५	……	,,	२३१
१४१ किणपा	६	……	,,	२४१
३२ किन्नटक		……	अ.स.वृ	४७९
१२०३ किरणकीर्त्ति	१९	……	सम	३७६
१३६४ —किरत	२४	……	,,	४०७
१४९४ —किरपाण	३२	……	दण्डक.	४५७
३६१ —किर्मिया	९	……	सम	२६३
१४३ किर्मीर	७	……	,,	२४१
८४२ किरात, कुटिलगति	१३	……	,,	३३४
१३६४ —किरीट	२४	……	,,	४०७
३१ —किलकिता		……	अ.स.वृ	४७९

५८३	कुरुरुपजनिता	११	सम.	२८९
८३०	कुबेरवटिका	१३	,,	३१३
४७	कुम्भारि	५	,,	२३१
७६८	कुमारगति	१२	,,	३१४
१५६	कुमारललिता, ललत, अविराम, रासपति.	७	,,	२४२
२९९	कुमारललिता, कुमारिका	८	,,	२५६
१०१२	कुमारलील	१५	,,	३४६
१६८	कुमारिका	७	,,	२४४
९४१	—कुमारिका	१४	,,	३३७
२०	—कुमारिका	४	,,	२२८
२९९	—कुमारिका	८	,,	२५६
९४१	कुमारि, कुमारिका	१४	,,	३३७
४१८	—कुमुद.	९	,,	२९८
१३५१	कुमुदमाला	२५	,,	४०८
६८६	कुमुदिनिविकास	१२	,,	३०१
१४२१	कुम्भक	२६	,,	४१५
७००	कुम्भोज्नी	१२	सम.	३०४
२५२	कुरदि	७	,,	२५१
२६१	कुररिका	८	,,	२५३
९७९	—कुररीरुता, धृति, प्रमदा	१४	,,	३४१
४९६	—कुलटा	१०	,,	२७७
३१०	कुरुचरी	८	,,	२५८
९९०	—कुरंग	१४	,,	३४३
७५१	कुरंगावतार	१२	,,	३१९
३२७	कुलचारी	८	,,	२५९
२६६	कुलाधारी, शुद्धगा	८	,,	२५३
११०५	कुल्यावर्त, कल्यावुत	१६	,,	३६०
११०५	—कुल्यावृत्त	१६	,,	३६०
३४७	कुशक	८	,,	२६१
६२६	कुशलकलावतिक	११	,,	२९४

३५२	—कृषयु	८	......	सम	२६२
२७	—कृष्ण	४	......	,,	२२९
२८२	कृष्णगतिका	८	......	,,	२५४
११२८०	—केकनी	२२	......	,,	३९०
११३३२	केकिनीशारदा	२३	......	,,	४०२
१३०	केतकी (सवैया)		३२	,,	५१
१८	केतु		......	अ स वृ	४७६
६	केतुमती		......	,,	४७३
२७६	—केतुमाला	८	......	सम	२५४
१५३९	केदार	८४		दंडक	४६८
४४५	केर	१०	......	सम	२७१
१५१७	केली	४०		दंडक	४६३
६४७	केलीचर	११	......	सम	२९७
११६३	केशर	१८	......	,,	३७०
१०००	—केशवदेस	१५	......	,,	३४४
१७६	केशवती	७	......	,,	२४४
११३५०	कोकपद	२४	......	,,	४०४
११३४३	—कोक	२४	......	,,	४०३
११३६३	कोकी	२४	......	,,	४०७
११३५	कोकिल, कोकिलक	१७	......	,,	३६५
,,	—कोकिलक	,,	......	,,	,,
८८३	कोमलकल्पकलिका	१३	......	,,	३३०
२४	कोराक्तिना		......	अ स वृ	४७७
२५३	कौंदि	७	......	सम.	२५१
२७५	कौंचमार	८	......	,,	२५४
१०७	कौमुदी		......	अ स वृ	४९६
१५१९	कनेली	४३	......	द द	४६३
९०१	—कनअवली	१३	......	सम.	३३१
३६	कठी, विलास, यशोदा	५	......	,,	२३०
७९९	—कंद	१३	......	,,	३१८

७९९	कदुक, कद	१३	सम	३१८
११११	चमारी	६	,,	२३८
११९२	कसासारी	७	,,	२४६
३७४	फालिक	९	,,	२६४
७६५	—कनुकवती	१२	,,	३१४
१०६१	—कामक्री	१६	,,	३५४
९७३	क्रीडायतन, क्रीडावसथ	१४	,,	३४१
११५८	—क्रीडगा	१८	,,	३६९
११५८	—क्रीडचक्र	,,	,,	,,
१६	—क्रीडा	४	,,	२२७
११५८	—क्रीडाचक्र	१८	,,	३६९
११५८	—क्रीडाचद्र	१८	,,	३६९
११५८	क्रीडचन्द्र, वारवाणाक्रा, क्रीडगा, चांद्रिका, क्रीडाचद्र, क्रीडाचक्र, कीलानद, चद्रक्रीडा, महामोदकारी, महामोद, क्रीडचक्र.	१८	,,	३६९
९७३	क्रीडावसथ	१४	सम.	३४१
१००३	क्रीडितकटका	१५	,,	३४५
११२	—क्रूराशन	१७	,,	३६१
११२	—क्रूरासन,	,,	,,	,,
१७३	क्रोडक्रीड	१८	,,	३७१
२४३	क्रोडांतिक.	७	,,	२५०
५५२	क्रोशितकुशला	११	,,	२८२
१३८५	क्रौंचपदा, क्रौंचापदा	२५	,,	४१०
१३८९	—क्रौंचापद.	,,	,,	,,

ख.

१०८८	—खगति	१६	सम.	३५८
१७५	—खगगा	७	,,	२४४
६२१	खटका, हरिणी	११	,,	२९४
१७५	—खगा	७	,,	२४४

२८३ —राज्ञ	८	……	राग	२५
१४७३ गज	३०	……	य. द.	४३
१३५२ —राजना.	२४	……	राम.	४०
१४८९ संजविशाळ.	३२	……	य. द.	४५
१७५ —राजा,	७	……	राम.	२४
४१ —रंजा.	५	……	,,	२३
२८३ —रंजा	८	……	,,	२५
३३ खजा, राजिका		४१	अ. ग.	५
३३ —राजा		४१	,,	५
१५०३ राजोपविशाळ	३२	……	य. द.	४५
१७५ —राटका	७	……	राम.	२४
९० —खडलिया	६	……	,,	२३
१५१ —खधा		६४	आ. गी. प्र.	१२६
१५१ —खधान.		६४	,,	१२६
१५१ —राधी		६४	आ. गी. प्र.	१२६
१५० खरकरा	७	……	सम.	२६
२२९ खर्परि.	७	……	,,	२४
१४६ खरारि.		३२…	,,	६
१९३ खर्विणी	७	……	,,	२४
९७ खाग, गयणग, गगनागन, गगनाग		२५	,,	३
४५९ खेटक	१०	……	,,	२७३
१९३ खेंगार.		……	वि वृ	५२५
३५७ खेलाद्य	९	……	राम.	२६
५१५ खोरलि	१०	……	,,	२,०

ग.

९८३ गगनगतिका	१४	……	सम.	३४
९७ —गगनाग		२५	,,	३
९७ —गगनागन.		२५	,,	३
९६८ गगनोद्गता	१४	……	,,	३४

१३५२	—गङ्गाधर. २४	......	सम.	४०४
१३५२	—गङ्गोदक. .... ,,	......	,,	,,
३११	गजगति ८	......	,,	२५८
२६	गज़ल	१४	,,	१२
१०९८	—गजतुरगविलसित..........१६	......	,,	३५९
१०९८	—गजविलसित. १६	......	,,	३५९
११७१	गजेन्द्रलता, लता..............१८	......	,,	३७१
८४१	गणदेहा. १०	......	,,	२७१
८६९	—गणस्वारिका....................१३	......	,,	३२८
२५०	गडका, गडकी, गडिका, गजिका, दृढश, माद्रश, दंडिका, वृत्त, चित्रवृत्त, रल्यका. } २०	......	,,	३८४
२५०	गजिका..........................२०	......	,,	३८४
२५०	—गडकी..........................२०	......	,,	३८४
२५०	गंडिका..........................२०	......	,,	३८४
३१	गधान, गधानक. ....कुल३५	४४	अ. स	८९
३१	—गधानक..................कुल३५	,,	,,	८९
१	गमक........................	५	सम.	१
६३८	गम्भारी ११	......	,,	२९६
९७	—गयणग........................	२५	,,	३९
२१	गयवन्ध छप्पय	कुल १४६	वि आ.	१८२
१०८२	—गरुडप्लुत १६	......	सम	३५६
१०८२	गरुडरुत, गरुडप्लुत..............१६	......	,,	३५६
८६५	गरुदवारिता....................१३	......	,,	३२८
५९३	गल्लक..........................११	......	,,	२९०
५	गलितक	८४	ग.प्र	२१९
७१५	गलितनाला......................१२	......	सम.	३०५
४९३	गहना.............................१०	......	,,	२७६
५९५	गह्वर..............................११	......	,,	२९०
४५	—गाथा........................	५७	आ गी.प्र.	१००
१३४९	—गाथिनी	६२	,,	१३५

६	गायत्रीछन्दः	६	......	सम.	२३२
४५	—गाहा.		गुल ५७	आ.गी.प्र.	१००
१३४५	—गाहितगेह	२४	......	सम.	४०४
१३४५	—गाहितदेह	२४	......	,,	४०४
१४९	—गाहिनी		गुल ६२.	आ.गी.प्र.	१२५
१४९	—गाहिणी		फुल ६२	,,	१२५
८८	—गाहू		......	गी. मे.	११४
८८	—गाहो.		......	गी.मे.	११४
१३९	गाहो		पुल ५३	आ.गी.प्र.	१२३
१२१८	ग्रावप्रस्तरण	१९	......	सम.	३७८
५५९	—ग्राही	११	......	,,	२८३
११३	गिया,गीता,गीयऊ,हरिगीता; गियामालती,वेताल,वैतालिक, गीतक		२८	,,	४५
११३	—गियामालती		२८	,,	४५
८६	गिरा	६	......	,,	२३५
१७०	गिरिकन्या		......	वि. वृ	५१६
४७३	—गीतक	१०	......	सम.	२७४
११३	—गीतक		२८	,,	४५
१२४३	—गीतक	२०	......	,,	३८२
११९७	गीतका,भैरो	१९	......	,,	३७५
१०४	—गीता		२६	,,	४२
१२४३	—गीता	२०	......	,,	३८२
७१	गीति, उद्गाथा, उग्गाहा		फुल ६०-	आ.गी प्र.	११२
१०५	गीतिका.		२६	सम	४२
१२४३	गीतिका,मुनिशेखर,शेखर; गीता,शर्वरी,गीतक.	२०	......	,,	३८२
११३	—गीयउ		२८	,,	४५
२०३	गुञ्जा	७	......	,,	२४७
१३४६	गुणमालाधरा	२५	......	,,	४८९
७००	गुणवती,शशिप्रभा.	६	......	,,	२३३

८६९ गुणसारिका,गणसारिका: १३	......	सम	३३८
४४ —गुणित	३२	शि. जा.	९४
९१ गुप्त.	२४	सम	३८
९१५ —गुर्विन्दु १४	......	,,	३३३
२२५ गूर्णिका...... .... ७	......	,,	२४९
१९४ गृहिणी.... .... ७	......	,,	२४६
२१८ गोधि. ७	......	,,	२४८
९९० गोप, कुरग, ...१४	......	,,	३८३
४४ गोपाल	१५	,,	१६
२३ —गोपाल...................... ४	......	,,	२३८
२५८ गोपावेदी. ८	......	,,	२५२
१५४४ गोविंद...........................६९	......	व. द.	४६९
६९६ —गौरी. १२	......	सम.	३०१
१३९२ —गौरी २६	......	,,	४१२
७२० गौरी, प्रभा, मन्दाकिनी, प्रमुदितवदना, प्रमुदितवदना: } १२	......	,,	३०६
९ गग........................	९	,,	५
५५९ —गम्भीर ११	......	,,	२८३

घ.

९३ —घटिका......................		अ स वृ.	४९३
२६ घत्ता, ध्वाता................	३१	अ स.	८७
२७ घत्तानन्द,घातोनन्द...	३१	,,	८८
११२९ घनमयूर............. ......१७	......	सम.	३६५
३४ घनपंक्ति. ५	......	,,	२२९
१४८६ —घनाक्षर ३१	......	व द	४३८
१४८६ "घनाक्षरी, घनाक्षर ३१	......	,,	,,
६ घनाक्षरीवचित	......	था दे.	५३६
४८ घातक........................	१६	सम.	१८
२७ —घातोन्द.	३१	अ.स.	८८
१२५७ —घोटक...... ....२४	......	सम.	४०५

च.

२४	—चउबोला		३०	ओ.सा.	८६
७८	—चउरंसा........	६	......	सम.	२३४
७८	—चउवसा	,,	......	,,	,,
११७६	—चेघा.	१८	......	,,	३७२
१०९५	चकिता........	१६	......	,,	३५९
१३३४	चकोर, चित्तपदा, सवैया, ललिता.	२३	......	......	४०२
९८६	चक्र, चक्रपद, चक्रवर्ती, वृत्तचक्र चक्रविरति, देवरवरतनु, चकुरा.	१४	......	......	३४२
९८६	—चक्रपद........	,,	,,	,,	,,
९८६	—चक्रवर्त्ती	,,	,,	,,	,,
९८६	—चक्रविरति........	,,	,,	,,	,,
१०६६	—चन्द्रावलोक........	१६	......	,,	३५५
९८६	—चकुरा	१४	......	,,	३४२
८०३	चञ्चरीकावली	१३	......	,,	३१९
११७६	—चञ्चरी	१८	......	सम.	३७२
१६२	चञ्चरी........		४६	म.छं.	७१
११०३	—चञ्चला.	१६	......	सम.	३६०
७२१	—चञ्चलाक्षिका.	१२	......	,,	३०७
११७६	—चञ्चली	१८	......	,,	३७२
५	चटुल		७	,,	३
७८	—चण्डरसा	६	......	,,	२३४
१४२५	—चण्डवृष्टिप्रपात.	२७	......	व दं.	४१९
१४२५	चण्डवृष्टिप्रयात, चण्डवृष्टिप्रपात, चण्डवृष्टि, उद्दर्प	२७	......	व दं.	४१९
१४२५	चण्डवृष्टि........	,,	,,	,,	,,
१५१०	चण्डवेग.	३६	......	,,	४६१
८२५	चण्डी	१३	......	सम	३२२
१२३	—चतुरपद.		३०	,,	४८
१२२९	चतुरानन.	२०	......	,,	३८०
३८५	चतुरीहा.	८	......	,,	२५५

७८	—चतुरशा.	६		सम	२३४
२४	—चतुर्वचन			अ.स.भ.	८६
२४	—चतुर्वचा			,,	,,
७८	—चतुर्वर्णा	६		सम.	२३४
३४	—चतुर्वशा	५		,,	२२९
२४	—चतुष्पथा.			अ.म.जा.	८६
४२	—चतुष्पदी.		१५	सम.	१५
१६४	—चतुष्पदी(वडी)		१२०	मा.द.	७२
१२३*	—चतुष्पदी		३०	सम.	४८
९०	—चतुष्पदी		२४	,,	३७
७८	—चतुरस्र.	६		,,	२३४
७१७	—चन्दाणा.	१२		,,	३०६
७१७	—चन्दाना.	,,		,,	,,
४९२*	—चन्द्रमुखी	१०		सम.	२७६
१०२१	—चन्द्ररेखा	१५		,,	३४५
८०७	चन्द्ररेखा, चद्रलेखा	१३		,,	३१९
८७७	—चन्द्रलेखा	१३		,,	३१९
११६०	चन्द्रलेखा, चित्रलेखा	१८		,,	३६९
१००९	चन्द्रलेखा, चन्द्रसेना	१५		,,	३४६
७६७	—चन्द्रवर्त्तन	१२		,,	३१४
७६७	चन्द्रवर्म, चन्द्रवर्त्तन, चन्द्रमग चन्द्रमगा, चन्द्रमग्ग	१२		,,	३१४
१००९	—चन्द्रसेना	१५		,,	३४६
८६२	चन्द्रहासकरा	१३		,,	३२८
७१७	—चन्द्रानन	१२		,,	३०६
१०६१	चद्रापीड, मज्ञ, मज्ञरूप, मज्ञ रूपक, मज्ञारूपा, भामक्री, माधोराधा, वभाण.	१६		,,	३५४
७१७	—चन्द्रायणा	१२		,,	३०६
१५२७	—चन्द्र	५४		व.द.	४६५
१२२७	—चन्द्र.	१९		सम.	३८१

१४४६	चन्द्र.	२८	......	प. दं.	४२८
१३५७	—चन्द्रकला	२४	......	सम.	४०१
१३६९	—चन्द्रकला	२५	......	,,	४०८
१०१३	चन्द्रकान्ता.	१५	......	,,	३४६
११५८	—चन्द्रक्रीडा	१८	......	,,	३६९
५६७	—चन्द्रमग.	१२	......	,,	३१४
,,	—चन्द्रमग	,,	......	,,	,,
,,	—चन्द्रमणा	,,	......	,,	,,
२१	चन्द्रमणि.		१३	,,	९
१२२७	चन्द्रमन, चन्द्रमाला, त्वंद्र, शाशिच, चंदमाल.	१९	......	,,	३८०
,,	—चन्द्रमाला	,,	......	,,	,,
८१	—चन्द्रमाला	६	......	,,	३३५
१२२७	—चन्दमालु	१९	......	,,	३८०
१५	चन्द्रायणा		कुल १२८	वि. जा.	१४२
१४	चन्द्रावली, चन्द्राली		कुल ११८	,,	१४१
१०४८	—चन्द्रावर्त्ता	१५	......	सम.	३५२
८४३	चन्द्रिका, उत्पलिनी, क्षमा, विद्युत	१३	......	,,	३२४
११५८	—चन्द्रिका	१८	......	,,	३६९
१४१	चान्द्रिकागीति		५९	आ.गी.प्र.	१२३
१५२७	—चन्द्रेश	५४		व. दं.	४६१
९५९	चन्द्रौरस	१४	......	सम.	३३९
६२५	चपला	११	......	,,	२९४
५१	चपला		५७	आ गी.प्र.	१०७
२००	चपलावक्त्र		......	अ.व भे.	५२९
७२१	चपलाक्षिका, चचलाक्षिका	१२	......	सम.	३०७
१०३५	चमरीचर	१५	......	,,	३५०
३३	चम्पक		१४	,,	१३
४४२	चम्पकमाला, चम्पामाली, रुकावती, रुक्मावती, रूपवती, सौभाग्यवती, पचकमाला......	१०	......	,,	२७१

१२६५ चम्पकमालिका, चम्पकावली....२१	......	,,	३८७
१२६५—चम्पकावली २१	......	,,	३८७
४४२—चम्पोमाली १०	......	,,	२७१
६६ चमूरु..........................	......	अ.स.वृ.	४८७
५५ चमूरुमीरु.	......	,,	४८४
४४६ चयन........................ ८	......	,,	२६१
८ चरण..........................	५	,,	४
४५ चरणाकुल........................	१६	,,	१७
४५७ चरपद.............................१०	......	,,	२७१
११७६—चर्चरी १८	......	,,	३७२
२ चर्पट...........................	१६	मॉ. स.	२०७
११७७ चल..............................१८	......	सम.	३७२
१०२४—चामर...........................१५	......	,,	३४८
१६९ चामर, समानिका, समाना, वाणी. ७	......	सम.	२४४
५ —चारु. २	......	,,	२२६
१३८० —चारु. २५	......	,,	४०९
१४०२ चारुगीति २६	......	,,	४१३
१४५ चारुगीति..........................	५८	आ.गी.प्र.	१२४
५१० चारुचारण..........................१०	......	सम.	२७८
४८२ —चारुसुखी. १०	......	,,	२७५
८ चारुसेना, (वत्थुवा–वस्तुजाति)..	कुल ११५	वि जा.	१३६
३४९ चारुहासिनी. ९	......	सम.	२६४
९ चारुहासिनी.	५२	वै प्र.	२१७
४० चालीशवर्णना दडक.........४०	......	ग. दं.	४६३
१००४ चार्वटक. १५	......	सम.	३४५
१०१ —चावर	२६	,,	४१
१३३४ —चितपदा. २३	......	,,	४०२
१३७५ चित्तचिन्तामणि. २५	......	,,	४०९
४७५ चितिभृत १०	......	,,	२७५
१००८ —चित्र १५	......	,,	३४५
११०३ चित्र, चञ्चला, चित्रसंग......१६	......	,,	३६०

२८६ —चित्रपदः ८	......	,,	२५५
,, चित्रपदा, चित्रपद. .... ,,	......	,,	,,
११५३ चित्रलेखा १८	......	,,	३६८
११११ —चित्रलेखा १७	......	,,	३६२
११६० —चित्रलेखा १८	......	,,	३६९
८५८ —चित्रवती १३	......	,,	३२६
१२५० —चित्रवृत्त २०	......	,,	३८४
१००८ चित्रा, चित्र १५	......	,,	३४५
५ चित्रा	१६	मा. स.	२०९
११०३ —चित्रसंग १६	......	सम.	३६०
१६० चिरकरका........................	......	वि. वृ	५१३
१८४ चिररुचि ७	......	सम.	२४५
२१ चुलियाला, चूडाला, चूडियाला, चुडिया, चूलका, चोडियाल	३९	अ.स.	८८
४१८ चुलक, कुमुद ९	......	सम.	२६८
११ चुडियां........................	२९	अ स.	८४
२५ चूडाणादोहाउपगीति(गाहू) कुंडलिनी	कुल १०२	वि.जा.	१९३
२४ —चूडाणापचाउपगीति (गाहू,)कुंडलिनी.	१००	,,	१९२
३२ चूडाणा.	४८, ५७	अ. स	८९
२६ चूडाणापचागाहा(आर्या) कुंडलिनी.	१०३	वि.जा.	१९४
२८ चूडाणापचागीति(उग्गाहा) कुंडलिनी	१०६	,,	१९६
२७ चूडाणा उपदोहा विगाहा (उद्गीति)कुंडलिनी	१०५	,,	१९६
२९ चूडाणापचागीहिनीकुंडलिनी. ..	१०८	,,	१९७
३० चूडाणादोहागाहिनीकुंडलिनी ..	११०	,,	१९८
३१ चूडाणा उपदोहा गीति (उग्गाहा) कुंडलिनी	१०८	,,	१९९

५११	चूडापीड.	१४	……	सम.	३३३
१७९	—चूडामणि	७	……	,,	२४५
५२४	चूडामणि		३०	,,	४९
२१	—चूडाला.		२९	अ.स.	८४
१०३०	—चूरियार.	१५	……	सम.	३४९
२१	—चूडियाला.		२९	अ.स.	८४
३७	चूलिका.		६०	वि.जा.	९२
२१	—चूलका.		२९	अ.स.	८४
१०३०	—चूलियारा	१५	……	सम.	३४९
९४०	—चेतोहिता	१४	……	,,	३३६
९३५	चेलांचल,चेलांचल,चेलांतर..	१४	……	,,	३३५
२१	—चौटियाळ		२९	अ.स.	८४
३४	चौत्रीस वर्णना दंडक	१४	……	व.दं.	४६०
५४	चोपन वर्णना दंडक	५४	……	,,	४६५
४२	चोपाळ, चतुष्पदी		१५	सम.	१६
४१	—चोपाइछुलक.		१६	सम.	१७
११५	चोपाया		२८	,,	४६
२४	चोबोला,चौबाला,चतुष्पथा, चतुर्वचा,चतुर्वचन,चउबोला.		३०	अ.स.	८६
७८	—चोरसा	६	……	सम.	२३४
८४	चोराशी वर्णनादंडक	८४	……	व.दं.	४६८
३२	चोवीश मात्रानीविषमस्वजाति .		२४	वि.जा.	२०२
१२२	चौपैया,चतुष्पदी,चतुष्पद		१६	सम.	४८
२४	—चोयाला.		३०	अ.स.	८६
७५	—चौरस	६	……	सम.	२३४
१४४६	चंद्र	२८	……	व.दं.	४३८
७२	चंद्रायन,चांद्रायन		२१	सम.	२६
७१७	—चंदायणा	१२	……	,,	३०६
९०१	—चंपकमालिका	१३	……	,,	३३१
७२	—चांद्रायन		२१	,,	२६

छ

३६	छत्रीश वर्णनादंडक..........३६	......	व.द.	४६१
५६	छप्पन वर्णनादंडक ५६	......	,,	४६१
१८	—छप्पय .... कुल. १५९		वि.जा.	१४५
७	—छवी	८	सम.	२
४८५	छलितक १०	......	,,	२७६
७०७	छलितकपद १२	......	,,	३०५
३४	छव्वीश गाथानी विषमपदजाति.	२६	वि जा.	२०४
१७०५	छाया. १९	......	सम.	३७७
६६	छासठ वर्णनादंडक ६६	......	व द.	४६६
५९	छिद्र........................ ५	......	सम.	१३१
१७३	छेरवती	......	वि वृ	५१०
४६	छेतालीश वर्णनादंडक ४६	......	व द.	४६४
११८८	छेल. १८	......	सम.	३७८

ज.

१४६५	ज कामबाण,आम्र............२९	......	व द.	४३४
१२	जगतीछंद १२	......	सम	२५७
८१२	जगत्समानिका................१३	......	,,	३३०
५३	जघनचपला.	५७	आ.गी प्र.	१०७
६३	जघनचपलापथ्यार्या.	......	आ.भे.	११०
६४	जघनचपलादिविपुलार्या	......	,,	,,
६५	जघनचपलान्तविपुलार्या	......	,,	,,
६६	जघनचपलोभयविपुलार्या... ..	,,	,,	,,
८०	जघनचपलापथ्यागीति.........	,,	गी.भे.	११३
८१	जघनचपलाआदिविपुलागीति...	,,	,,	,,
८२	जघनचपलान्तविपुलागीति.....	,,	,,	,,
८३	जघनचपलाउभयविपुलागीति...	,,	,,	,,
९७	जघनचपलापथ्याउपगीति......	,,	उ.गी भे.	११६
९८	जघनचपलाआदिविपुलाउपगीति.	,,	उ.गी.भे.	११६
९९	जघनचपलाअंतविपुलाउपगीति	,,	,,	,,

No.	Name	Count		Class	Page
१००	जघनचपलाउभयविपुलाउपगीति		,,	उ.गी.भे	,,
११४	जघनचपलापथ्याउद्गीति. ...		,,	उद् गी.भे.	११९
११५	जघनचपलाआदिविपुलाउद्गीति,		,,	,,	,,
१,१६	जघनचपलाअन्तविपुलाउद्गीति		,,	,,	,,
१,१७	जघनचपलाउभयविपुलाउद्गीति		,,	,,	,,
१३१	जघनचपलापथ्यार्यागीति......		,,	आ.गी.भे.	१२२
१३२	जघनचपलाआदिविपुलार्यागीति.		,,	,,	,,
१३३	जघनचपलान्तविपुलार्यागीति...		,,	,,	,,
१३४	जघनचपलाउभयविपुलार्यागीति.		,,	,,	,,
४९	जघन(अन्त)विपुला...........		५७	आ.भे.	१०६
११८१	जगदुदय	१८	......	सम.	३७३
११८१	जगदउदय,जगदुदय..........	१८	......	,,	,,
६२	—जनमि....................	५	......	,,	२३२
१४१	जनहरण		३२	,,	६०
१४९०	जनहरण	३१	......	व. द.	४२६
५८	जनु,नायक.	५	......	सम.	२३२
६२	—जमक.........................	,,	......	,,	,,
६२	—जमकाणा	,,	......	,,	,,
५२	—जमवर्ता		......	अ,स.वृ	४८२
४०	जयकर्ी		१५	राग.	१५
१४४	—जयमगळ	७	......	,,	२४१
२०	—जया.	४	......	,,	२२८
३५	ज्योति.शिखा		६४	गि जा	९१
४३५	जरा.	१०	......	सम.	२७४
७३	जलतरग		१३	,,	१०
९'१७	जलदरसिवा	१६	......	,,	३१९
६६२	जलधरमाळा	१२	......	,,	२९८
११४२	—जलधररासित	१७	......	,,	३६६
१०३७	जलनिधिवेला	१५	......	,,	३५०
७४६	जलमाला	१२	......	,,	३१२

१३९ जलहरण,चमलावती,धर ...... ३२ „ ५९
१४९६ जलहरण,मनोग्रंथवित. ......३२ ...... म. द. ४५८
५६४ जलोद्धतगति ....१२ ...... राम. ३१३
५९१ जवनशालिनी..............११ ...... „ ३१०
२११ जविपुला .... या.न.गे. ५३३
७७५ ज्वलिता ....१२ ...... रम. ३१५
१३५२ —जानकी. ....२४ ...... „ ४०४
७ जाया ....११ ...... „ २८६
१५ जारिणी. .... आ.स.वृ. ४०५
५४८ जालपाद ....११ ...... राम. २८१
२३७ जासारि....................७ ...... „ २५०
९४९ जाहसुरी.................१४ ...... „ ३३५
६२४ जिघारामा.................११ ...... „ २९४
१२९२ जीमृताद्वान, गौरा........२६ ...... „ ४१२
१५१४ जीमूत......................३९ ...... म द. ४६२
३६६ —जुक्ता.................. ९ ...... राम २६२
८१ —जोहा................... ६ ...... „ २३५

झ.

६२ —झमक .... ५ ...... „ ३३२
११६५ झिल्लीलीला ....१९ ...... „ ३७५
९० —झील .... ६ ...... „ २३६
१५० —झुरला .... ३७ मा दं. ६४
१५० —झुलणा.................. ३७ „ ६४
१३९९ —झूल्लणा ....२६ ...... राम. ४१२
१५० झुलणा, आन्दोलिता,झुलणा, झुल्लन. ३७ मा. द. ६४
१२०२ झूलना ....१९ ...... राम. ३७६
१३४० झूलना ....२४ ...... „ ४०३
१३९९ झूलना, झुल्लणा.............२६ ...... „ ४१२
७१७ —झपताल...................१२ ...... „ ३०६

१२५५	तन्वकतन्त्र.	२१	......	सम.	३८५
८९६	—त्वरितगति.	१०	......	,,	२७७
२०७	त विपुला.		......	वि.वृ.	५३१
१५३०	—तक्षक	५४	......	द.द.	८६५
१२२	ताटंक.		३०	सम.	४८
७	—तार्णी	३	......	,,	२२६
३२४	तार्णी.	८	......	,,	२५९
९३	ताशु वर्णनादंडक	९३	......	द.दं.	४६९
६९९	तामरस,अभिनवतामरस, ललितपद.		१२	सम	३०४
८३१	तारक	१३	......	,,	३२१
११६८	तारका,महामालिनी.	१८	......	,,	३७१
५९८	—ताल.	११	......	,,	२९१
११	तालङ्किनी.		कुल ११९	वि.जा.	११८
७	—ताली	२	......	सम.	२२६
२७	तारुरी,कृष्ण.	४	......	,,	२२९
१११९	तितिक्षा.	१७	......	,,	३६१
१५	—तिश्रा.	४	......	,,	२२७
८९	—तिल	६	......	,,	२३६
३६८	—तिलका.	९	......	,,	२६३
९०	तिलका,अर्द्धतोटक,शील,तिलना,द्वलय,तिल,ध्वज,डिल्ल,संडलया,डिल्ला,वनिता,तिल्ला		......	,,	२३६
९०	—तिल्ल	,,	......	,,	,,
९०	—तिलना	,,	......	,,	,,
९०	—तिल्ला.	,,	......	,,	,,
१५	—तीर्णा	४	......	,,	२२७
२९०	—तुङ्ग	८	......	सम.	२५५
२९०	तुङ्गा, तुग तुरंग.	८	......	,,	२५५
११९३	तुमुलक	१८	......	,,	३७५
५६	तरग.		१२	,,	८

२९० —तुरंग.................... ८ ...... सम. २५५
१०२४ तूणक, तूण, चामर,पंचयामल.१५ ...... „ ३४८
१०२४ —तूण .... „ „ „ „
३३ तेत्रीश वर्णनादंडक............३३ ...... व.दं. ४६०
१५०५ तेत्रीशुंकवित ....३३ ...... „ ४६०
४३ तेतालीश वर्णनादंडक.........४३ ...... „ ४६३
१५ तैधिक........................ ...१५ सम. १५
७५३ तोटक, नंदिणी ....१२ ...... „ ३१२
१७ तोमर ....१२ „ ८
४१० तोमर .... ९ ...... „ २६८
१००० —त्रिनयन ....१५ ...... „ ३४४
१३४ त्रिभंगी .... ३२ „ ५३
११ त्रिष्टुपछंद ....११ ...... „ २७९
३० त्रीश वर्णनादंडक ....३० ...... व.दं. ४३५
१४७९ त्रीशुंकवित ....३० ... „ ४३६
६३ त्रेसठ वर्णनादंडक..............६३ ... „ ४६६
१०८७ त्रोटक,मणिकल्पलता ....१६ ...... सम. ३५८
४९६ —त्वरितगति ....१० ...... „ २७७

द.

८५ —दढपद. .... २३ „ ३०
दण्डक......................... ...... „ ४१७
१४० दण्डक. .... ३२ „ ५९
१४७४ —दण्डकत्रिभङ्गी. ....३० ...... व.दं. ४३६
१३२ दण्डकला .... ३२ सम. ५२
९० —दण्डलय. .... ६ ...... „ २३६
१२५० —दाण्डिका ....२० ...... „ ३८४
१०४३ —दण्डिका. ....१५ ...... „ ३५१
४१६ दधि,उदधि,शुभोदर .... ९ ...... „ २६८
११०० दन्तालिका ....१६ ...... „ ३६०
३२६ —दमन. .... ६ ...... „ २३९

६३७	दमनक	११	......	राम.	२९५
१२६	दमनक,उपचलि,दमन,मदनक, मदन,मदकल.	६	......	,,	२६९
१५९	दरदपूर		......	वि.मु.	५१९
८०४	दर्पमाला,दर्भमाला	१३	......	राम.	३१९
८०४	—दर्भमाला.		......	,,	,,
६८७	दल....	१२	......	,,	३०१
४	दक्षिणान्तिका		६०	वै.प्र.	२१४
१४३८	दाम.	२७	......	म.द	४२६
६३१	दामघटिता	११	......	राग.	२९५
५४५	दारदेहा,दारुदेहा	११	......	,,	२८१
६१०	दारिका,नन्दिनी.	११	......	,,	२९३
५४५	—दारदेहा.	११	......	,,	२८१
१३७८	दास	२५	......	,,	४०९
९४	दिक्पाल		२८	,,	३८
२८०	दिगीश	८	......	,,	२५८
३	दिण्डी(अन्यदेशाय)		......	शा दे.	५३९
१४४३	दिनकर	२७	......	व द.	४२६
१२९३	—दिया	२?	......	राग.	३९२
१०१५	दीपक	१५	......	,,	३४६
१०	दीपक		१०	,,	५
४६२	दीपकमाला.	१०	......	,,	२७३
३२८	दीपका.	८	......	,,	२५९
६७	दीपकी.		२०	,,	२४
१५८	दीपमाला		४०	मा. द.	६९
१४२८	दु:साकर	२७	......	व द.	४२१
११७	—दुमन्दर.	६	......	सम.	२३९
१३५७	दुमिला,मादेरा,द्विमिला, दुर्मिल,चद्रकला,दोमलया, रावया,मुकुन्द,रूपमकरद, घोटक	२४	......	,,	४०५

११८	—दुमिला		३२	सम.	५८
११८	—दुमिलिया		३२	,,	५८
११५७	—दुर्मिल	२४	......	,,	४०५
११८	दुर्मिला,दुमिलया,दुमिला		३२	,,	५८
११५८	—दुर्मिला.	२४	......	,,	४०६
११५८	—दुमिलका.	२४	......	,,	४०६
११५८	दुर्लतिका,माधवी,दुर्मिला,दुमिलका,दुमेला.	२४	......	,,	४०६
११५८	—दुमेला.	,,	......	,,	,,
८	—दूहा		२४	अ.रा.	७५
१२६२	दूरावलोक	२१	......	सम.	३८६
८५	दृढपदा,दृढपद		२३	,,	३०
१५८	दृति,करह.	७	......	,,	२४३
९२२	दृसदेहा.	१४	......	,,	३३४
१२२९	देव, महाभुजङ्गप्रयात, महाभुजङ्ग, भुजङ्ग, सुधाप, महानाग, सवैया	२४	......	,,	६०३
९८६	—देवरवरतनु	१४	......	,,	३४२
१९९	देवल	७	......	,,	२६६
५८०	—दोधक.	११	......	,,	२८८
११५७	—दोमलया	२४	......	,,	४०५
१८	दोला,रामा,राम,विमला,भ्रमरी..	४	......	,,	२२८
६५५	दोर्लीला.	१२	......	,,	२९७
२३५	दोपा	७	......	,,	२५०
१०	दोहडिका		२४	अ.रा.	७६
८	दोहा,दूहा,द्विपथा,दोहरा		२४	,,	७५
११	दोही		२६	,,	७६
७०४	द्रुतपद,द्रुतपा		१२	सम.	३०४
७०४	—द्रुतपा		,,	,,	,,
२२	द्रुतमध्या		......	अ.रा.वृ.	४७७
१२७६	द्रुतमुख.	२२	......	सम.	३९०

८६३ द्रुतलम्बिनी.................१३	......	राम.	३२८
७३७—द्रुतविलम्ब.... ....१२	......	,,	३११
७३७ द्रुतविलम्बित,सुन्दरी,द्रुतविलम्ब१२	......	राम.	३११
४०४ —द्रुहणा.................... ९	......	,,	२६७
६३२ द्वारवहा,भारवहा १०	......	,,	२७०.
१४९३ द्वितीयउपविशात.............३२	......	व.द.	४५७
१४०३ द्वितीयझूलणा २६	......	राम.	४१३
१९४७ द्वितीयपंचचामर १७	......	,,	३६७
१५०२ द्विनागाविवा,महानाराच ३२	......	व.द.	४५९
१६ द्विपदी,द्विदला,दुविया,दुवैया, दोपे.	२८	आ.स.	८३
१३५७ —द्विमिला २४	......	राम.	४०५
११९२ —दंडक १८	......	,,	३७५
१२७५ दाडिका. २२	......	,,	३८९
२५७ —द्वडलिया. ८	......	,,	२५२
११९२ दंडी,दंडक.......................१८	......	राम.	३७५
९५ दंडी. १८	२४	,,	३९
१४८३ दंभोलि.........................३१	......	व. द.	४३८

ध.

२५० धनधरि....................... ७	......	राम.	२५१
१५०१ धनपाल.........................३२		व दं.	४५९
४९५ धमनिका १०	......	राम	२७६
१२७२ धर्म...............................२१	......	,,	३८८
१३९—धर	३२	,,	५९
१९ धग, विजया............ .... ४	......	,,	२२८
५२—धवमती	......	आ स टू.	४८३
१२२२ धवल,धवलाङ्ग,धवला,शालि १९	......	राम	३७९
६६८ धवलकरी १२	......	,,	२९९
१२२२—धवल...........................१९	......	,,	३७९
१२२२—धवलाङ्ग.......................१९	......	,,	३७९
१०८८—धवलद्गा १५	......	,,	३५२

२५	—धारा	४	......	सम.	२२८
२५	धारि,धारा,धारी,धारिया	४	......	,,	२२८
१०५	धारिका,आर्भव	६	......	,,	२३७
२५	—धारिया	४	......	,,	२२८
२५	—धारी	४	......	,,	२२८
६९७	—धारी	१२	......	,,	३०२
९१६	धीरध्वान	१४	......	,,	३३३
१०९२	धीरललिता	१६	......	,,	३५९
१२०	धीरावर्त्त		......	अ.स.रू.	४९९
५६३	धीरा	११	......	सम.	२८३
४२१	धूमाली	१०	......	,,	२६९
१५१३	धूर्ली	२७	......	व.द.	४६२
१३४२	धूवा	२८	......	सम.	४०३
१२६६	—धृतश्री	२१	......	,,	३८७
३६२	धृतहाला	९	......	,,	२६२
९७९	—धृति	१४	......	,,	३४१
१८	धृतिछन्द	१८	......	,,	३६७
७०१	धृष्टपद	१२	......	,,	३०४
१०४०	धोरित्त	१५	......	,,	३५१
४०२	धौनिक	९	......	,,	२६७
१३३८	धौरेय,मानदिम्न	२४	......	,,	४०२
३	—ध्रुव		११	अ स.	७४
३	—ध्रुवा.		११	,,	७४
५०	—ध्वज	६	......	सम	२३६
२८	—ध्वाता		३१	अ स.	८७

न

२२०	नखपदा,मालती.	८	......	सम	२५९
२०	—नगणिका.	४	......	,,	२२८
३०	—नगनिका.	४	......	,,	२२८
७६५	नगनहिता,कमुखवर्ती	१२	......	,,	३१४
९७१	—नगरालिका.	१४	......	,,	३४०

२९५	—नगस्वरूपिणी	८	सम.	२५६
२०	—नगानिका	४	,,	२२८
२०	—नगा.	,,	,,	,,
२०	—नगालिका	,,	,,	,,
२०	—नगी	,,	,,	,,
१४९	नगोनिता		वि.वृ.	५१०
१	नगोपमा		,,	,,
५	नरव.		अ स वृ.	४८२
१३	—नटगति.	१४	सम.	३३८
१५	नतभ्रु		ति वृ.	५१८
२८	नदिनी	१३	सम	३३२
१३	—नदिणी	१२	,,	३१२
१९	नदी	१४	,,	३३६
११	—नन्दराग	१२	,,	३७५
१७	नन्द.	४	,,	२२८
४७	नन्द	१०८	प द	४१०
२	नन्दक, पडवा, परवा, परवै, परवा, परवय, वेर,	१९	अ रा.	७३
५	नन्दथु	७	सम.	२८७
७०	नन्दन	१८	,,	३७१
७	नन्दा, पदा.	११७	वि जा.	१३५
१७	नन्दि, दुमन्दर	६	,,	२३९
२६	नन्दिनी.	१३	सम	३२२
१०	—नन्दिनी.	११	,,	२९३
६९	नन्दी	२०	,,	२५
४०	नमेद	१०	,,	२७१
९५	नयनपाली		वि वृ.	५२६
१०	नयमालिनी, वनमालिका, नयमालिनी, नयमालिका, नयमाल्ती.	१२	सम.	३०५
१०३	—नरकीट	८	,,	२५७

४४३	नरगा	१०	……	सम.	२७१
१०९४	नराशिखी	१६	……	,,	३५९
६६	नरहरि		१९	,,	२४
३५१	—नरहरी	८		,,	२६२
१०८३	नराच,नाराच,नराय,नाराज, नागराज,पञ्चचामर,विपक्ष.	१६	……	,,	३५६
२९६	नराची,नाराची.	८	……	,,	२५६
११६६	—नराच	१८	……	,,	३७०
१०८३	—नराय	१६	……	,,	३५६
८९२	नरावलि,गिरावलि.	१३	……	,,	३३०
१२४१	—नराय	२०	……	,,	३८२
४०	नरी.	५	……	,,	२३०
१२	—नरेन्द्र	३	……	,,	२२७
१२	—नरेन्दु	,,	……	,,	,,
१२६१	नरेन्द्र,समुच्चय	२१	……	,,	३८६
६६६	—नरेस	११	……	,,	२९२
११३४	—नर्कुटक.	१७	……	,,	३६५
११३४	—नर्दटक	,,	……	,,	,,
११३४	—नर्दटक	,,	……	,,	,,
२००	नर्दि	७	……	,,	२४७
१३४८	—नर्दिन	२४	……	,,	४०४
१०४३	—नलिनी	१५	……	,,	३५३
१३	—नवनीलता		……	अ स.	४७५
१४६६	—नवमल्लिका	२९	……	व द.	४३४
७१०	—नवमालिका	१२	……	सम.	३०५
७१०	—नवमालिनी	,,	……	,,	,,
७१०	—नवमालनी	,,	……	,,	,,
१८३	नवमदा,मदलेखा	७	……	,,	२४५
९९	नवार्णु मर्णना दण्डक	९९	……	प.द.	४६९
४	नवामिका,मानवारिका,		१६	मा स.	२०८

२०६ न विपुला. .... अ.व.भे. ५३१
४१ —नाकि...................... १० शि.जा. ९३
१०८३ —नागराज ....१६ ...... सम. ३५६
५८० —नागस्वरूपी ....११ ...... ,, २८८
३१६ नाचारि...................... ८ ...... ,, २५८
५२९ नान्दीमुखी, वसत..................१४ ...... ,, ३३५
६१२ नामस ....११ ...... ,, २९३
५८ —नायक .... ५ ...... ,, २३२
२९४ —नाराच...................... ८ ...... ,, २५६
१०८३ —नाराच ....१६ ...... ,, ३५६
१०८३ —नाराज .... ,, ... ,, ,,
११६६ —नाराच ....१८ ...... ,, ३७०
२९६ —नाराची .... ८ ...... ,, २५६
११६६ —नाराचक ....१८ ...... ,, ३७०
२९४ नाराचिका, नाराच, आणन्द, आनन्दरूपक. ८ ...... ,, २५६
७ नारी, ताणी, तारी, माली, शिखा १ ...... ,, २२६
१५६ नालिका...................... . ... वि.वृ, ५१२
३२ नाली .... ५ ...... सम. २२९
९७४ नासाभरण......................१४ ...... ,, ३४१
३७८ निभान्विता...................... ९ ...... ,, २६४
७८३ निमग्नकीला ....१२ ...... ,, ३१६
१३१ निम्नाशया .... ७ ...... ,, २४०
३८८ —निरद .... ८ ...... ,, २६१
४५२ निरन्तिव......................१० ...... ,, २७२
६२९ निरवधिगति......................११ ...... ,, २९८
८६ निरसिका, गिरा .... ६ ...... ,, २३५
४९२ —निरावली ....१३ ...... ,, ३१०
३४८ निरुद, निरद...................... ८ ...... ,, ३११
२० —निर्गला...................... ४ ...... ,, २२८

११११	निर्गलितमेखला	१९	....	सम.	३७८
१७९	निर्दोषिका, चूडामणि.........	७	......	,,	२४९
११९	निर्भयुवारी		......	अ.स.इ.	४९८
९८४	निर्मुक्तमाला	१४	......	सम.	३४१
४२४	निर्मेधा.....................	१०	.. ...	,,	२६७
९२६	निर्यत्पाराशर...............	१४	......	,,	३३४
३६०	निर्विन्ध्या, निर्विन्ध्या	९	......	,,	२६२.
३६०	—निर्विन्ध्या	९	......	,,	२६२
१०३६	—निशम्पालिका.............	१५	......	,,	३५०.
७८०	निशानी.......................	१२	......	,,	३१५
११६७	निशा,सालसा..................	१८	......	,,	३७०
६	निशानी........................		२१	अ.स.	७५
१०३६	निशापाल.....................	१५	......	सम.	३५०
२९	निशि,अनूप्रु.	४	......	,,	२११
१०३६	निशिपाल, निशिपालक,निशि-पालिका, शभु, निशपालिका, निशापाल.	१५	......	,,	३५०
१०३६	—निशिपालक................	१५	......	,,	३५०
१०३६	—निशिपालिका..............	१५	......	,,	३५०.
१०५३	निश्चल	१५	......	,,	३५३
८६	निश्रेणी........................		२३	,,	३०
१२९२	निष्कलकण्ठी.	२२	......	,,	३९२
३९४	निषध.......	९	......	,,	२६६
९७	निस्का,सोमकुल,वीर्या.........	६	......	,,	१३५
८४९	—निस्तुषा.	१३	......	,,	३२५
१३७०	—नीपक.	२५	......	,,	४०८
१३००	नीपवनीयक,वनीपक,नीपक.....	,,	......	,,	,,
५१८	नीरनिधि......................	१०	......	,,	२७९
४६१	नीराञ्जलि.	१०	... ..	,,	२७३
७०२	नीरान्तक.	१२	......	,,	३०४
४१२	नीरोहा				

२०६ न विपुला.			अ.व भे.	५३२
४१ —नाकि		६०	शि.जा.	९३
१०८३ —नागराज	१६		राम.	३५६
५६० —नागपद्मपी	११		,,	२८८
३१६ नागारि	८		,,	२५८
९२९ नान्दीमुखी, वसत	१४		,,	३३५
६१२ नाभस	११		,,	२९३
५८ —नायक	५		,,	२३२
२९४ —नाराच	८		,,	२५६
१०८३ —नाराच	१६		,,	३५६
१०८३ —नाराज	,,		,,	,,
११६६ —नाराच	१८		,,	३७०
२९६ —नाराची	८		,,	२५६
११६६ —नाराचक	१८		,,	३७०
२९४ नाराचिका, नाराच, आणन्द, आनन्दरूपक.	८		,,	२५६
७ नारी, ताणी, ताली, माली, सीया.	३		,,	२२६
१५६ नालिका			वि वृ,	५१२
३२ नाली	५		राम.	२२९
९७४ नासाभरण	१४		,,	३४१
३७८ निभालिता	९		,,	२६४
७८३ निमग्नकीला	१२		,,	३१६
९३१ निम्नाशया	७		,,	२४०
३४८ —निरद	८		,,	२६१
४५२ निरन्तिक	१०		,,	२७२
६२९ निरवधिगति	११		,,	२९८
८६ निरसिका, गिरा	६		,,	२३५
८९२ —निरावली	१३		,,	३३०
३४८ निरुद, निरद	८		,,	२६१
२० —निर्गला	४		,,	२२८

११११	निर्गलितमेदला	१९	……	सम.	३७८
१७९	निर्दोधिका, चूडामणि	७	……	,,	२४५
११९	निर्मधुवारी		……	अ.स.वृ.	४५८
९८४	निर्मुक्तमाला	१४	……	सम.	३४१
४२४	निर्मेधा	१०	……	,,	२६५
९२६	निर्यत्पारावार	१४	……	,,	३३४
३६०	निर्विन्ध्या, निर्वन्ध्या	९	……	,,	२६२
३६०	—निर्वन्ध्या	९	……	,,	२६२
१०३६	—निशम्पालिका	१५	……	,,	३५०
७८०	निस्तानी	१२	……	,,	३१५
११६७	निशा, सालसा	१८	……	,,	३७०
६	निशानी		२३	अ.स.	७५
१०३६	निशापाल	१५	……	सम.	३५०
२९	निशि, अनुष्टु.	४	……	,,	२३९
१०३६	निशिपाल, निशिपालक, निशिपालिका, शशु, निशपालिका, निशापाल	१५	……	,,	३५०
१०३६	—निशिपालक	१५	……	,,	३५०
१०३६	—निशिपालिका	१५	……	,,	३५०
१०५३	निश्चल	१५	……	,,	३५३
८६	निश्रेणी		२३	,,	३०
१२९२	निष्कलकण्ठी.	२२	……	,,	३९२
३९४	निषध	९	……	,,	२६६
८७	निस्का, सोमकुल, वीर्या	६	……	,,	३३५
८४९	—निस्तुषा.	१३	……	,,	३२५
१२५०	—नीपक	२५	……	,,	४०८
१३७०	नीपवर्नायक, वनीपक, नीपक	,,	……	,,	,,
५१८	नीरनिधि.	१०	……	,,	२७९
४६१	नीराञ्जलि.	१०	……	,,	२७३
७०२	नीरान्तिक.	१२	……	,,	३०४
४२२	नीरोहा	१०	……	,,	२६९

१०८८	नील, अभ्रगति, नीलस्वरूप, विशेषिका, विशेषक, विशेष, लीला, पदनील, मगति.....	१६	राम.	३५
७२६	नीलपिरिका.	१२	,,	३१३
१४७२	नीलचक्र.	२०	व.दं.	४३
११५७	—नीलमालूर	१८	राम.	३६
११५७	नीलशार्दूल, नीलमालूर, नीलशालूर	१८	,,	३६
११५७	—नीलशालूर	,,	,,	,,
५८०	नीलसरूपी, नागसरूपी, दीपक, बन्धु, बधा	११	,,	२८८
१०८८	—नीलस्वरूप	१६	,,	३५८
१४६०	नीलोत्पल	२१	व.द	४३५
९०६	नीलोद्दामा	१४	राम.	३३२
६०२	नीला	११	,,	२९१
१५३६	नीहार	७८	व.द.	८६७
१९१	नीहारी	७	राम.	२४६
१०१०	—नूतनमाला	१५	,,	३८६
१०३३	—नूतन	१५	,,	३४९
१	नृगण, मृगण	१७	अ.स.	७३
३२५	—नृतनर्म	८	सम.	२९९
१८२	नेदिष्टा		वि.वृ.	५२०
५०२	नेमधारि	१०	राम.	२७७
९०	नेत्रु वर्णना दडक	९०	व.द.	४६८
१३५९	नेहपाल	२४	राम.	४०६
२	न्हानो अभग		अ.दे.छं.	५३८

प.

३६८	—पङ्क	९	सम.	२६२
५०१	—पङ्क	१३	,,	३३१
५०१	—पङ्कज	१३	,,	,,
८२९	पङ्कजधारिणी	१३	,,	३२३
५०१	—पङ्कजमाला	१३	,,	३३१

५०१	—पङ्कजवाटिका	१३	......	सम.	,,
५०१	—पङ्कजावलि	१३	......	,,	,,
५०१	पङ्कवती, पङ्कजमाला, पङ्क, पङ्कजावली, एकावली, कमलावली, पङ्का, कञ्जअवली, पङ्कजवाटिका, चम्पकवाटिका, पङ्कज	१३	......	,,	३३१
३६८	—पङ्का	९	......	,,	३६३
५०१	—पङ्का	१३	......	,,	३३१
५०२	पङ्कावली	१३	......	,,	३३२
३७	—पङ्क्ति	५	......	,,	२३०
६१	—पञ्च	५	......	,,	२३२
८४९	—पञ्चकमाला.	१०	......	,,	२७१
१२६६	—पञ्चकावली	२१	......	,,	३८७
१०८३	—पञ्चचामर	१६	......	,,	३५६
७८५	पञ्चचामर, विभावरी	१२	......	,,	३१७
१२१०	—पञ्चचामर.	१९	......	,,	३७७
१२४१	पञ्चचामर, नराच	२०	......	,,	३८२
१०२४	—पञ्चयामल	१५	......	,,	३४८
५७०	पञ्चशाखी.	११	......	,,	२८४
२७१	—पञ्चाशेश्वा	८	......	,,	२५३
६१	—पञ्चा	५	......	,,	२३२
२३	पञ्चा		७४	वि.जा.	१८९
११	पञ्चाल, पाञ्चालि, कामावतार	३	......	सम.	२२७
२६४	—पञ्चास्याध्रि	८	......	,,	२५३
५३२	पञ्जरि.	८	......	,,	२६०
१५४	पञ्जो		......	वि वृ.	५११
४९	पज्झटिका, पद्धरी, पाधरी, पद्धडी, पज्झाटिका, प्रझटिका.		१६	सम.	१९८
४९	—प्रझटिका.		,,	,,	,,
३०	पद्‌हारि.	४	......	,,	२२९

५७८	पद्मपक्तिा	११	......	राम	२८७
४७८	पणव.	१०	......	,,	२७५
११८९	पतङ्गपाद	१८	......	,,	३७४
४८०	—पति	१०	......	,,	२७५
७०९	पथिक्रान्ता	१२	......	,,	३०५
९५८	पथ्या,मञ्जरी,मधुभा	१४	......	,,	३२९
४६	पथ्या		५७	आ.गी.प्र.	१०५
१२३	पथ्याआर्यागीति.		......	आ.गी.भे.	१२१
१०६	पथ्याउद्गीति		......	गी.भे.	११८
८९	पथ्याउपगीति		......	,,	११५
७२	पथ्यागीति		......	,,	११२
५५	पथ्यार्या		५७	आ.भे.	१०८
२०१	पथ्यावक्त्र		......	अ.व.भे.	५३९
१२९	पदचतुरुर्ध्व		......	वि.वृ.	५०१
१०८८	—पदनील	१६	......	राम.	३५८
१०३०	—पदहरक	१५	......	,,	३४९
४९	—पद्धटी		१६	,,	१८
५९	पद्धतिका		१८	,,	२२
२२४	पद्धरि	७	......	,,	२४९
४९	—पद्धरी		१६	,,	१८
१५२६	—पद्मक	५१	......	म.दं.	४६५
३००	—पद्म	८	......	राम.	२५७
१५२७	—पद्मराग	५४	......	म.दं.	४६५
५४	पद्मावती.		......	अ.प्र.वृ.	४८४
१३६	पद्मावती,उपमावती.		३२	राम.	५७
४०२	—पद्मावती	९	......	,,	२६७
४१९	पद्मावर्त्त.	१०	......	,,	२६९
१४०	पद्या	७	......	सम.	२४१
६४	पन्था	६	......	,,	२३२
१४५१	पन्नगेन्द्र	२८	......	म.दं.	४३०

१०३३	—पंमंगल	१५	सम.	३४९
८८५	परगति	१३	,,	३३०
७१	परप्रीणिता.		अ.स.वृ.	४८८
२१६	परभानु	७	सम.	२४८
१६६	परभृत	७	,,	२४३
११५४	परामोद	१८	,,	३६८
१५०	परार्थिनी,वरार्थिनी		वि.वृ.	५१०
५२	—परावर्ती.		अ स.वृ.	४८३
१०७६	—परिखापतन	१६	सम.	३५६
१०७६	परिखायतन,परिखापतन	,,	,,	,,
६२	परिचरिता	१८	,,	२३
४८८	परिचारवती	१०	,,	२०६
९४६	परिणाही	१४	,,	३३७
७०६	परितोषा	१२	,,	३०४
१३०८	परिधानीय	२३	,,	३९७
२६७	परिधारा	८	,,	२५३
७२५	परिपुंखिता	१२	,,	३०७
११८२	परिपोषक	१८	,,	३७३
१०१६	परिमल	१५	,,	३४६
५६४	परिमलललित	११	,,	२८४
६८३	परिमितविजया	१२	,,	३००
६९७	परिलेख,धारी	१२	,,	३०२
८८९	—परिभाशिता.	१३	,,	३३०
९२८	परिवाद	१४	,,	३३४
८४०	परिवृड	१३	,,	३२४
१२९७	—परिस्तबक	२२	,,	३९४
२६	—परिश्रुता		अ.स.वृ.	४७८
१०३९	पल्लवरी	१५	सम.	३४९
११७२	पाविर्णी	१८	,,	३७१
१९८	—पांचिका	९	,,	२६६

४१	पाइक्क		१५...	सम	१५
३९८	—पाइत्ता	९	......	,,	२६६
१०९	पाकलि	६	......	,,	२३८
३३९	पाकलि	८	......	,,	२६०
११	—पाञ्चालि	३	......	,,	२२०
२६४	पाञ्चालाग्नि,पञ्चास्यांग्नि,वस्तु.	९	......	,,	२५३,
२६४	—पाञ्चास्याग्नि	,,	,,	,,	,,
४३	पाटलिका		......	आ.स.वृ.	४८१
१०६९	पाणी	१६	......	सम	३५५
३९	पातशीला		......	आ.स.वृ.	४८०.
५०	पादाकुलक,पायाकुलक		...१६	सम.	१८
९	पादाकुलक		...१६	मा.स	२१२
३९८	—पादाताली	९	......	सम	२६६
४९	—पाथरी		...१६	,,	१८
३९८	—पाविता	९	......	,,	२६६
३०३	—पायक	८	......	,,	२५७
६९८	—पायका	११	......	,,	२९३
३९८	पायत्त	९	......	,,	२६६
३९८	—पायत्तारु	९	,,	,,	,,
५०	—पायाकुलक		...१६	,,	१८
२७४	पारान्तचारी	८	......	,,	२५४
८३७	पारावत	१३	......	,,	३२३
९१३	पारावार	१४	......	,,	३३३
१३१९	—पारावारान्त	२३	......	,,	३९९
१३१९	पारावारान्तस्थ,पारावारान्त	२३	......	,,	३९९
११७९	—पार्थिव	१८	......	,,	३७३
१३४९	पार्पतसरण	२४	......	,,	४०४
५०	पालि	५	......	,,	२१२
४८०	पावक, पात्ति	१०	......	,,	३०५
३५५	—पावुणी	८	......	,,	२५६

७३०	पिकालिका, विधायिनी.........१२	......	सम.	३१०
७३	पिकाली ६	......	,,	२३३
६४२	पिचुल.........................११	......	,,	२९६
६५	पियूषवर्ध, आनन्दवर्धन	...१९	,,	२४
४५	पिस्तालिश वर्णना दडक ४५	......	व.द.	४६३
१८६	पिसगी	......	वि.वृ.	५२२
५३२	—पीयूष ६६	......	व.द.	४६६
६७२	पुट,श्रीपुट,स्फूट १२	......	सम.	२९९
११०	पुटमर्दि,करहंचा ६	......	,,	२३८
१७४	पुरटि*........................ ७	......	,,	२४४
९७१	पुराली,नगरालिका १८	......	,,	३४०
१४८	पुरोहिता...................... ७	......	,,	२४१
३१४	पुलकाञ्चित.....................२३	......	,,	३९८
२०१	—पुष्पदाम.....................१९	......	,,	३७६
६८९	—पुष्पविचित्रा १२	......	,,	३०१
९२५	पुष्पशकटिका १४	......	,,	३३४
८०९	—पुसपताम....................१३	......	,,	३१९
५०	पुष्पिताग्रा......................	......	अ.स.वृ.	४२३
७७१	पूर्णा ७	......	सम.	२४४
९	—पूर्विदुहो	...२४	अ.स.	७९
९१५	—पूर्वेन्दु......................१४	......	सम	३३३
१२९	पृथ्वी १७	......	,,	३६३
८४९	पृपद्वती,निस्तुषा १३	......	,,	३२५
११७	—पैडि	......२८	,,	४६
१३५	—पोमावती	...३२	,,	५६
१५२८	—पौड़्क ७०	......	व.द.	४६५
९४५	पौरसरि ७	......	सम.	२५१
१८	पौराणिक	...१८	,,	२२
१०	पक्तिछद १०	......	,,	२६९
७५	पचोतेर वर्णना दडक......... ७५	......	व.द.	४६७

५४ पांशु,वाकि.................... ५ ...... सम. २११
२१ प्रकृतिछंद ....२१ ...... ,, ३८५
१४७ प्रगीति ....५९ आ.गी.प्र. १२४
१४ प्रगुण,चतुर्वंशा,घनपाकि........ ५ ...... सम. २२९
१४३३ प्रचितक,सिंहविक्रान्त.........२७ ...... द.दं. ४२३
४९ —प्रमाटिका ....१६ सम. १८
४३५ —प्रणव...................... १० ...... ,, २७०
२१२ प्रतर्दि,स्वरूप,सरूप............ ७ ...... ,, २४८
१२१ प्रतरि...................... ६ ...... ,, २१९
६०१ प्रतारिता ....११ ...... ,, ३९१
८५८ —प्रतिबोधिता ....१३ ...... ,, ३२६
९५२ प्रतिभादर्शन...................१४ ...... ,, ३३८
१२६९ प्रतिमा.......................२१ ...... सम. ३८८
६८ प्रतिविनीता .... ठा.स.वृ. ४८७
११४४ प्रतिहार ....१७ ...... सम. ३६७
४ प्रतिष्ठाछंद................... ४ ...... ,, २२७
२८३ प्रतिसीरा,सर्गी,खंज .... ८ ...... ,, २५५
१०६४ प्रतीपवल्ली...................१६ ...... ,, ३५४
१३१ प्रत्यापीड.................... वि.वृ. ५०२
३९८ —प्रथिता .... ९ ...... सम. २६६
१२१० —प्रपञ्च......................१९ ...... ,, ३७७
१२१० प्रपञ्चचामर,प्रपंच,पंचचामर .. ,, ... ,, ,,
९१४ प्रपन्नपानीय................ १४ ...... ,, ३३३
९५६ प्रपात........................१४ ...... ,, ३३८
८७७ प्रपातलिका ....१३ ...... ,, ३२९
५२७ प्रफुल्लकदली..................११ ...... ,, २८७
६८१ —प्रबोधफलिता..............१३ ...... सम. ३१०
८५८ —प्रबोधिता..................१३ ...... ,, ३२६
११०१ —प्रभद्रक....................२१ ...... ,, ३५४
१०२६ प्रभद्रक,प्रभद्रिका,सुकेलक......१५ ...... ,, ३४८

१०२६	—प्रभद्रिका	१५	......	सम.	३४८
७२०	—प्रभा	१२	......	,,	३०६
८५९	प्रभावती	१३	......	,,	३२७
८९	प्रभासिता		......	अ.स.वृ.	४९२
९७९	—प्रमदा	१४	......	सम.	३४१
१०८६	प्रमदा	१६	......	,,	३५८
१४०	प्रमदागीति		...५९	आ.गी.प्र.	१२३
२९५	प्रमाणिका, प्रमाणी, पावाणी, अर्द्धनाराच, सामाणी, प्रवाणिका, नगस्वरूपिणी, लघुनाराच	८	......	सम.	२५६
२९५	—प्रमाणी	८	......	,,	२५६
६४	प्रमाथिनी		......	अ.स वृ	४८६
४१	—प्रमालिका		......	अ.स वृ	४८१
७५२	प्रमिता	१२	......	सम	३१२
७५४	प्रमिताक्षरा	१२	......	,,	३१३
७२०	—प्रमुदितमदना	१२	......	,,	३०६
७२०	—प्रमुदितवदना	१२	......	,,	३०६
८७०	प्रमोदतिलका	१३	......	,,	३२८
८०९	प्रमोद, पुसपताम	१२	......	,,	३१९
८२	प्रमोदपद		......	अ,स वृ	४९०
७८	प्रमोदपरिणीता		......	अ.स वृ	४८९
१४७	प्रवर्द्धमान,वर्द्धमान		......	वि वृ	५०९
१०६७	प्रवरललित, प्रवरनलसिता	१६	......	सम.	३५५
१०६७	—प्रवरनलसिता	१६	......	..	३५५
३८३	प्रवाल्हिका	९	......	सम.	२६५
२९५	—प्रवाणिका	८	......	,,	२५६
४८६	प्रवारपदा	१०	......	,,	२७६
१९७	प्रवालान्तिक		......	वि वृ	५२६
८१८	प्रवाह्लिका	१३	......	सम.	३२४
७	प्रवृत्त.		......	वै प्र	२१७

४८४ प्रसरा........................१० ...... सम. २७१
५३६ प्रसुमर मरालिका..................१२ ...... ,, ३०८
५९३ प्रसुमरकरा ....११ ...... ,, २९०
९८५ प्रहरणकलिका, प्रहरणकलिता...१४ ...... ,, ३४२
९८५ —प्रहरण कलिता..................१४ ...... ,, ३४२
८१६ प्रहर्षिणी..........................१३ ...... ,, ३२०
११८ प्रहाग .... ७ ...... ,, २४०
८०९ प्रह्ममूल .... १३ ...... ,, ३१९
५५९ प्राकारबन्ध, माही, विध्वंक- माला, गभीर,.................. ११ ...... ,, २८३
६ प्राद्यवृत्ति.......................... ...... वि.प्र. २१६
३९८ —प्राप्ति.......................... ९ ...... सम २६६
८२३ —प्रानपियारी ....१३ ...... ,, ३२१
१४०४ प्रियगर्वित ....२६ ...... ,, ४१३
४०० प्रियतिलका .... ९ ...... ,, २६७
९४४ —प्रिया ....१४ ...... ,, ३३७
९ —प्रिया .... ३ ...... ,, २२६
४२ प्रिया.रमा .... ५ ...... ,, २३०
७३३ प्रियंवद,प्रियवदा ....१२ ...... ,, ३१०
७३३ —प्रियवदा .... ,, ... ,, ,,
३३३ —प्रीता .... ८ ...... ,, २६०
१२२५ प्रेम ....१९ ...... ,, ३७९
११ प्रेमा ....११ ...... ,, २८६
११५ प्रेमावती, पोमावती .... ३२ ,, ५६
२१० प्रोत्ञ्छिता .... ५ ...... ,, २४७
११९ प्रोथा .... ६ ...... ,, २३९
१०२८ प्लवंगम. ....१५ ...... ,, ३४९
७४ प्लवगम. .... २१ ,, २६

फ.

४९४ फलधर..............................१० ...... सम. २७६
३६ —फलिताम.............. .... अ.स.वृ. ४८०

१८५	बहुल्या	७		सम.	२४५
१००६	बहुलाभ्र	१५		,,	३४५
१३४३	—धाम	२४		सम.	४०३
१४७७	बाललीलातुर	३०		वै.द.	४३६
११२२	बालविक्रीडित	१७		सम.	३६३
८	बाला	११		,,	२८६
४३६	—बाला	१०		,,	२७०
४४९	—बालिका.	१०		,,	२७२
२७७	—बितान	८		,,	२५४
९६	बिन्दु	६		,,	२३६
४२७	बिन्दु, बन्धूक	१०		,,	२६९
३६८	बिम्ब, बिम्बा, ललिततिलका, बिम्बा, पक, पंका	९		,,	२६३
१२०६	बिम्ब	१९		,,	३७३
३६८	—बिम्बा	९		,,	२६३
९२१	बिम्बालक्ष्य	१८		,,	३३४
७९	बिहारी		२२	सम	२८
२५५	—बीजुमाला.	८		,,	२५२
२८	बुद्धि	४		,,	२३९
८१	बृहच्छरावती			अ.स.वृ.	४९०
९	बृहतिछद	९		सम.	२६०
४२	बेताशीश वर्णना दण्डक.	४२		व.दं.	४६३
७२	बेतिरवर्णना दण्डक.	७२		,,	४६७
६३	बोधक		१९	सम.	३३
२८९	बोधा	८		,,	२५५
४२९	बोधातुरा, सकृद्बोधा	१०		,,	२६९
१०६१	—ब्रह्म	१६		,,	३५४
१०६१	—ब्रह्मदण्ड	१६		,,	३५४
१०६१	—ब्रह्मरूपक	,,		,,	,,
१०६१	—ब्रह्मारूपा			,,	,,

भ.

१४६०	भकामभान,भास्वरवाण,नीलो-लाल,भुजंगविलास	२६	......	प.द.	४१४
११६	—भणि......................	७	......	सम.	२४१
१४५६	भगवता.	१९		प.दं.	४१९
११०१	भद्रक,भद्रिक,प्रमद्रक,गद्दिका...	२२	......	सम.	३६४
५	भद्रविराट,प्रमुदबन्ता			अ.स.वृ.	४०१
१०	भद्रा.	११	......	,,	२८६
१०	भद्रा,भद्रिका,(उ.जा.भे.)......पुल.	११७		वि जा.	११७
११०१	—भद्रिक......................	२२	......	सम.	३६४
६०३	—भद्रिका	११	......	,,	२९१
३८६	भद्रिका......................	९	......	,,	२६७
१०	—भद्रिका ....पुल.	११७		वि जा.	११७
११०१	—भद्रिका	२२	......	सम.	३६४
१०४३	—भमरावली	१५	......	,,	३५१
१४६६	भवनिधि	२०	......	प द.	४१४
१०४३	—भमरावलि..................	१५	......	सम.	३५१
२०४	भविपुला		......	आ.ग.भे.	५३२
८४४	—भयलाद	१३	......	सम.	३१५
८४४	भसलमद,भसलनद	१३	......	,,	३१५
७८३	भमलविनोदिता	१२	......	,,	३११
१४०६	भसलशलाका	२६	......	,,	४१३
११८५	भस्त्रानिहतरण	२२	......	,,	३६१
१०४२	भाम	१५	......	,,	३५१
८०५	भासनशीला.	१३	......	,,	३१९
१४७८	भाभर..........................	२०	......	प द.	४१६
५१०	—भामिनी.	११	......	सम.	२६०
५३०	—भारती.	११	......	,,	२७२
४१२	—भारवहा	१०	......	सम.	२७०
११२५	भाराक्रान्ता.	१७	......	,,	३६४

१२३७	भारावतार,हारावतार २०	......	सम.	३८१
२७२	भार्ही.......................... ८	......	,,	२५५
५९७	—भाविनी ११	......	,,	२९०
१३८१	भाविनीविलसित २५	......	,,	४१०
३३७	भाषा, भासा, संभाषा, सभासा . ८	......	,,	२६०
१३४१	—भासमान.....................२४	......	,,	४०३
१३४१	भासमानबिम्ब, भासमान... ...२४	......	,,	४०३
३३७	—भासा...................... ८	......	,,	२६०
६५०	भासितभरण...................१२	......	,,	२९७
७७८	भासितसरणि...................१२	......	,,	३१५
५६०	—भासिनी......................११	......	,,	२८३
१३७४	भास्कर, भास्करविलसित.......२५	......	,,	४०९
१४६७	—भास्मरचाण...................२९	......	व.द.	४३४
४७६	भिन्नपद.........................१०	......	सम.	२७५
४७	भिन्ना	१६	,,	१७
१६३	—भिन्ना ७	......	,,	२४३
१२७७	भीमाभोग २२	......	,,	३९०
१४७	भीमार्जन ७	......	,,	२४१
१०७८	भीमावर्त्त १६	......	,,	३५६
६०५	भुजगहारिणी ११	......	,,	२९२
३६६	भुजगशिशुभृता, भुजगशिशुवृता,भुजगशिशुभृता,भुजगशिशुयुता,अहिशिशु, भुजगशशिभृता,भुजगशिशुसुता,भुक्ता. } ९	.. ...	,,	२६३
३६६	—भुजगशशिभृता ९	......	,,	२६३
३६६	—भुजगशिशुयुता............ ९	......	सम.	२६३
३६६	—भुजगशिशुवृता............ ,,	......	,,	,,
३६६	—भुजगशिशुसुता. .... ,,	......	,,	,,
३६६	—भुजगशिशुसृता. .... ,,	......	,,	,,
७८८	भुजङ्गजुर्पा १२	......	,,	३१२
	१२			३९९

११४ भुजङ्गभृता		......	अ.म.वृ.	४९७
१४६७ —भुजङ्गविलास	२९	......	म.दं.	४३४
१४१४ भुजङ्गविजृम्भित	२६	......	,,	४१४
३८० भुजंगसङ्गता	९	......	सम.	२६४
१३३९ —भुजङ्ग	२४	......	,,	४०३
५५० भुजङ्गी, कर्ण, सेहेल	११	......	,,	२९०
१४१३ भुजगेरित	२६	......	सम.	४१४
१२५६ भुजङ्गोद्गत	२२	......	,,	३९३
६१६ भुजलता	११	......	,,	२९३
३७५ —भुयंगपयाउ	१२	......	,,	२९९
१७६ भुवनविरति			वि.वृ.	५१८
३७ —भूतलमान्या	५	......	सम.	२३०
२५९ भूमधारी	८	......	,,	२५१
५३१ भूरिघटक	११	......	,,	२८०
१४५ भूरिधामा	७	......	,,	२४१
२३९ भूरिमधु	७	......	,,	२५०
२४० भूरिवसु	७	......	,,	२५०
९७२ भूरिशिखा	१४	......	,,	३४०
१२३४ भूरिशोभा	२०	......	,,	३८१
३ भूषणगलितक		...१६	ग.प्र.	२१९
१२३१ मेकालोक	२०	......	सम.	३८०
११६७ —भेरी	१९	......	,,	३७५
४१२ भैरव	९	......	,,	२६८
१०७२ भोगावली	१६	......	,,	३५५
१२९० भोगावली	२२	......	,,	३९२
१५३० —भोगी	६०		म.दं.	४६६
१८४ भौजङ्ग			वि.वृ.	५२१
३७७ भौरिक, महालक्ष्मीका, महालक्ष्मी, महालक्षी.	९	......	सम.	२६४
१०४३ —भ्रमर	१५	......	,,	३५१

१८	भ्रमरद्विपदी.	२८	अ रा.	८४
११८६	भ्रमरपद	१८	सम.	३७८
६३५	—भ्रमरललित	११	,,	२९९
६३५	—भ्रमरविलसित	११	,,	२९५
६३५	भ्रमरविलसिता, भ्रमरविलसित, भ्रमरललित, भ्रमरवित ...	११	,,	२९५
६३५	—भ्रमरवित	११	,,	२९९
१०४३	भ्रमरावती	१५	,,	३५१
१०४३	भ्रमरावलिका, मनहरण, भ्रमरावल, दहिका, रत्न, मनोहरण, भ्रमरावती, भ्रमरावली, भमरावली, भयरावलि, नलिनी, भ्रमर ..	१५	,,	३५१
१०४३	—भ्रमरावल	१५	,,	,,
१०४३	—भ्रमरावली	,,	,,	,,
१८	—भ्रमरी	४	,,	२२८
४८	भ्रू	५	,,	२३१

म.

१४३०	मकर, मतिक्रर.	२७	व.द	४२१
१३८३	—मकरन्द.	२४	सम.	४०३
१३५५	—मकरन्द	२४	,,	४०५
१२१५	—मकरन्दी.	१९	,,	३७८
१२१५	मकरन्दिका, मकरन्दी	१९	,,	३७८
८९९	मकरमुखी	१०	,,	२७७
१४८५	मकरालय	२८	व द	४२७
१०३	मङ्कुर.	६	सम.	२३७
९६४	मञ्ची	१४	,,	३३९
१३४३	—मञ्जरी.	२४	,,	४०२
९५८	—मञ्जरी	१४	सम.	३३९
१९६	मञ्जिष्ठा.		वि पृ.	५२६
११५२	—मञ्जीर.	१८	सम.	३६८

८५८	मञ्जुभाषिणी, प्रबोधिता, प्रतिबोधिता, कलहंस, कनकप्रभा, सुनन्दिनी, चित्रवती, हंसनाद..	१३	......	सम.	३२६
८५७	मंञ्जुमालती	१३	......	,,	३२६
१३३५	मञ्जुल..........................	२३	......	,,	४०२
८५६	—मञ्जुवादिनी	१३	......	,,	३२६
८५६	मञ्जुहासिनी, मञ्जुवादिनी, मन्दभाषिनी..................	१३	......	,,	३२६
१३२	—मञ्जरि			वि.वृ.	५०१
१३६	—मञ्जरी			वि.वृ.	५०४
१३३	—मञ्री			वि.वृ.	५०३
११०९	मञ्जारी	१७	......	सम.	३६१
१४३	मञ्जुगीति....................		......	आ.गी.प्र.	१२४
४५	मण्डल........................	५	......	सम.	२३१
१०८७	—मणिकल्पलता	१६	......	,,	३५८
१०४८	मणिगुण, धवलंगा, शशिकला चन्द्रावर्त्ता, शशिलिखा	१५	......	,,	३५२
१०५०	मणिगुणनिकर..................	१५	......	,,	३५२
१६१	मणिरथक			वि.वृ.	५१३
४९८	—मणिता...	१०	......	सम.	२७७
१०४९	मणिनिकर	१५	......	,,	३५९
३९२	मणिबन्ध, मणिमध्य...........	९	......	,,	२६६
१२१३	मणिमञ्जरि....................	१९	......	,,	३७८
३९२	—मणिमध्य...	९	......	,,	२६६
३५५	—मणिमध्या.........	९	......	,,	२६२
१२२३	मणिमाल	१९	......	,,	३७९
६८९	मणिमाला, पुष्पविचित्रा	१२	......	,,	३०१
२१४	मणिमुखी	७	......	,,	२४८
१०३०	मणिहंस, मानहंस, मनहंस, रणहंस, मनहंसरूप, हंस, कलहंस, नेहंस, मानसहंस, पदहंसक, लियारा, चूरियार	१५	......	,,	३४९

११७६	—मत्तकोकिल................	१८	......	सम.	३७२
१३११	मत्तगजेन्द्र,मत्तगयद,मालती, इन्द्रविजय, इन्दव, मधुमालतिका,शोभा,सवैया	२३	......	,,	३९७
१३११	—मत्तगयन्द................	२३	......	,,	३९७
१६०	मत्तचर्चरीक		४६	मा द.	७०
८१९	मत्तमयूर,माया,मत्तमयूरी,मायक	१३	......	सम.	३३१
८१९	—मत्तमयूरी	१३	......	,,	,,
१४३६	मत्तमातगखेलित, मत्तमातगलीलाकर................	२७	......	व द.	४२५
१४३६	—मत्तमातङ्गलीलाकर.	२७	......	,,	४२५
७४०	—मत्ता	१२	......	सम.	३११
४४७	मत्ता,माता................	१०	......	,,	२७१
७१	मत्ता,विनिहरण		२०	,,	२५
१३३०	मत्ताक्रीड,मत्ताक्रीडा,वाजिवाहन	२३	......	,,	४०१
१३३०	—मत्ताक्रीडा................	,,	......	,,	,,
६५८	मत्ताली................	१२	......	,,	२९८
१४३०	—मतिकर	२७	......	व द	४३१
१२९९	मत्तेभ	२२	......	सम.	३९४
१२३९	मत्तेभविक्रीडित	२०	......	,,	३८१
३९३	—मथना	९	......	,,	२६६
१४३	मदकग्ण		३२	,,	६१
१२६	—मदकळ................	६	......	,,	२३९
११४७	मदकलनी	२०	......	,,	३८३
१२६	—मदन................	६	......	,,	२३९
१२६	—मदनक................	,,	......	,,	,,
४०४	मदनक, रतिपद, कमला, कम्बकया, दुहणा...,...	९	......	,,	२६७
१५५	—मदनमद		४०	मा द.	६७
८८८	मदनजवनिका	१३	......	सम.	३१०

१५५ —मदनदीपन		४०	मा.द	६७
५८४ मदनमाला....................	११	......	सम.	२८९
७८१ —मदनाकुल..................	१२	......	,,	३१६
१०२२ मदनमालिका................	१५	......	,,	३४७
३१३ —मदनमल्लिका..............	८	......	,,	२५९
६१९ मदनया........................	११	......	,,	२९३
१०९१ मदनललिता..................	१६	......	,,	३५९
१५५ —मदनहर.		४०	मा.द.	६७
१५५ —मदनहरण................		४०	,,	६७
१५५ मदनहरा,मदनहर,मदनगृह, मदनहरण,मदनदीपन......		४०	,,	६७
९९ मदनातक		२५	सम.	४१
३८७ मदनोद्धरा	९	......	,,	२६५
७८ —मदरशीर्षा	६	......	,,	२३४
१२९४ —मदरा	२२	......	,,	३९३
१५१ मदलेखा	७	......	,,	२४२
१८३ —मदलेखा	७	......	,,	२४५
६९ मदाक्रान्ता.		......	अ.स.वृ.	४८७
५६६ मदान्धा	११	......	सम.	२८४
९३३ मदावदाता.	१४	......	,,	३३५
१२७३ —मदिरा......................	२२	......	,,	३८८
१३५७ —मदिरा......................	२४	......	,,	४०५
१२९४ मदिरा,मदरा	२२	......	,,	३९३
१३१३ मदिरा,सवाइ	२३	......	,,	३९८
६ मधु..............................	२	......	,,	२२६
१२५१ मधुवर, मदूअर	२०	......	,,	३८४
९९६ मधुपाली,मनोरम	१४	......	,,	३४४
७ मधुभार,छवी,वसुकला...........		८	,,	३
११० —मधुमत..................	८	......	,,	२४६
२८ मधुमत्त..........................		१४	,,	१२

११०	मधुमती,मधुमत्त,वास्तुमति	७	......	सम.	२४६
३८५	मधुमल्ली	९	......	,,	२६५
१३११	—मधुमालतिका..............	२३	......	,,	३९७
५४०	—मधुमाधवी................	१४	......	,,	३१६
१०६	मधुमारक....................	६	......	,,	२३७
१६३	मधुरा		५६	मा.द.	७१
११८	मधुवारी		......	अ.स.वृ.	४९८
३	—मध्यमाछंद.	३	......	सम.	२११
९१०	मध्यक्षामा	१४	......	,,	३३३
३	मध्या,मध्यमाछंद	३	......	,,	२२६
४२५	मध्याधार	१०	......	,,	२६९
३६	मनमोहन.		१४	,,	१४
१४८२	मनहर (घौंसो).................	३१	......	द.द.	४३७
१०४३	—मनहरण.	१५	......	सम.	३५१
१४८१	मनहर	३१	......	द.दं.	४३७
१९१	मनसुख......................		......	वि.वृ.	५२३
१०३०	—मनहंस......................	१५	......	सम.	३४९
१०३०	—मनहंसरूप	१५	......	,,	३४९
६२०	—मनिमाल....................	११	......	,,	२९४
१३५२	मनोभय........................	२०	......	,,	३८४
९९६	—मनोरम......................	१४	......	,,	३४४
४६५	मनोरमा.........................	१०	......	,,	२७३
२९	मनोरमा.......................		३७	अ.स.	८६
२७०	मनोला.........................	८	......	सम.	२५३
१०८	—मनोहर......................	६	......	,,	२३८
१०४३	—मनोहरण	१५	......	,,	३५१
१४९७	मनोहरण.......................	३२	......	द.द.	४५८
१०३०	—मनोहंस......................	१५	......	सम.	३४९
९५	मन्त्रिका.......................	६	......	,,	२३५
१३१२	—मन्थर........................	२३	......	,,	३९८

११२	मन्थरायन, मन्थर	२३	......	सम.	३९८
३३४	मन्थरि	८	......	,,	२६०
९९	—मन्थाण.	६	......	,,	२३७
९९	—मन्थाणा.	७	......	,,	२३७
९९	मन्थान,मन्थाणा,मन्थाण, मन्थानक	६	......	,,	२३७
१०७	—मन्थान.	६	......	,,	,,
९९	—मन्थानक	६	......	,,	,,
१३	—मन्दर	३	......	,,	२२७
१३	—मन्दरा	३	......	,,	२२७
१३	मन्दरि,मन्दर,मन्दरा	३	......	,,	२२७
१०८१	मन्दाकिनी	१६	......	,,	३५६
७१०	—मन्दाकिनी	१२	......	,,	३०६
११९३	मन्दाक्रान्ता	१७	......	,,	३६९
१२५४	मन्दाक्षमन्दर	२१	......	,,	३८५
१६१	मन्देहा		......	वि वृ.	५१४
९४८	मन्मथ	१४	......	सम.	३३७
८३१	मयूखसरणि.	१३	......	,,	३२३
४३८	मयूरसारिणी,शिखिसारिणी.	१०	......	,,	२७०
९०८	मयूरी	७	......	,,	२४७
१०३१	मयूखवदना	१५	......	,,	३४९
७८६	—मयधरमालव	१२	......	,,	३१७
१२१	—मरहट्टा.		२९	,,	४७
४६३	—मरालिका	१०	......	,,	२७३
३४५	मद	८	......	,,	२६१
११३८	मर्कटक	१७	......	,,	३६१
८४७	मर्मस्फुर	१३	......	,,	३२५
६७०	मलयजाद्युरभी	१२	......	,,	२९९
७१७	—मलया	१२	......	,,	३०९
१३८२	मल्लपर्णप्रकाश	२५	......	,,	४११

११६९ —मल्लि. ....२६ ...... सम. ४०

११२५ मल्लिका, मानिनी, सुमुखी, सवैया, कुंदसवैया ....} २३ ...... ,, ४०

३२३ मल्लिका, समानिका, मालिका, मदनमल्लिका............} ८ ...... ,, २५१

२०८ मविपुला. .... अ.व भे. ५३३

८८ मशगा .... ६ ...... सम. ३३५

४०७ मसृण. .... ९ ...... ,, ३६६

१५२ महनीया. .... ७ ...... ,, २४२

५६ महचंद्र...................... १७ ,, २१

३७२ महर्ष .... ९ ...... ,, ३१४

५० महा(उभय)विपुला .... ५७ आ.गी.प्र. १०७

१५०२ —महानाराच. ....३२ ...... व.द. ४९९

६७ महाचपलापथ्यार्या. .... आ भे. ११०

६८ महाचपलादिविपुलार्या......... ...... ,, ११०

६९ महाचपलान्तविपुलार्या. .... ,, १११

७० महाचपलोभयविपुलार्या. .... ,, ,,

८४ महाचपलापथ्यागीति. .... गी.भे. ११४

८५ महाचपलाआदिविपुलागीति. ... . ,, ,,

८६ महाचपलाअन्तविपुलागीति. ... . ,, ,,

८७ महाचपलाउभयविपुलागीति..... ...... ,, ,,

१०१ महाचपलापथ्याउपगीति. .... उ.गी.भे [illegible] ११७

१०२ महाचपलाआदिविपुलाउपगीति. . ... ,, ,,

१०३ महाचपलाअन्तविपुलाउपगीति .. .. ,, ,,

१०४ महाचपलाउभयविपुलाउपगीति . ... ,, ,,

११८ महाचपलापथ्याउद्गीति......... ...... ,, ११९

११९ महाचपलाआदिविपुलाउद्गीति .. .. ,, ,,

१२१ महाचपलाउभयविपुला-उद्गीति...................} ...... ,, १२०

१२५ महाचपलापथ्याआर्यागीति. ... . आ.गी.भे. १२२

१३६ महाचपलाआदिविपुलाआर्यागीति ...... अ.स. १२२

१३७ महाचपलाअन्तविपुलाआर्यागीति ...... ,, ,,

१३८ महाचपलाउभयविपुलाआर्यागीति ...... ,, ,,

१६८ महातुरा. .... वि.वृ. ५१६

१४ —महादोहा. .... २८ अ सम. ८०

१३३९ —महानाग. ....२४ ...... सम. ४०३

७२८ —महानियन्या. ....१२ ...... ,, ३०८

१३३९ —महाभुजङ्ग..................२४ ...... ,, ४०३

१३३९ —महाभुजङ्गप्रयात. .... ,, ... ,, ,,

२५५ —महाणी......,.............. ८ ...... ,, २५२

११६६ —महामाला....................१८ ...... ,, ३७०

११६८ —महामालिनी. ....१८ ...... ,, ३७१

११६६ महामालिका, नाराच, नराच, नाराचक, महामाला........ १८ ...... ,, ३७०

११५८ —महामोदकारी ....१८ ...... ,, ३६९

११५८ —महामोद .... ,, ... ,, ,,

१२१ महाराष्ट्र,मरहट्टा .... २९ ,, ४७

३७७ —महालक्षी .... ९ ...... ,, २६४

३७७ —महालक्ष्मीका .... ,, ... ,, ,,

३७७ —महालक्ष्मी............... ,, ... ,, ,,

१७ महासुन्दरी .... १७ ,, २१

१२८२ महास्रग्धरा. ....२२ ...... ,, ३९१

१०५७ महाहव ....१५ ...... ,, ३५३

७५ माहेदीप .... २२ ,, २७

५०० महिमावसायि...............१० ...... ,, ३७७

४ मही .... २ ...... ,, २२५

१४४८ —महीधर. ....२८ ...... म.द. ४२८

१२५१ —महूअर ....२० ...... सम. ३८४

७३९ —महोज्वला. ....१२ ...... सम. ३११

१६९ महोद्धता,कुमारिका .... ७ ...... ,, २४४

१८०	महोधिका	७	......	सम.	२४५
१६७	महोन्मुखी	७	......	,,	२४३
१५४३	माकद, विमर्ष	१६	......	य.दं.	४६१
१४४	मागधीसवैयो		३२	सम.	६१
१४२३	—मागधी	२७	......	,,	४१६
३०३	—माणव	८	......	,,	२५७
३०३	माणवक, माणवकक्रीड, माणवकक्रीडित, पायक, नरक्रीड, मानवक्रीडा, सुरक्रीडा, माणव	८	......	,,	२५७
३०३	—माणवकक्रीड	८	......	सम.	२५७
३०३	—माणवकक्रीडित	,,	......	,,	,,
८१७	माणविकाविकास	१३	......	,,	३२१
३०४	माण्डवक	८	......	,,	२५७
५७६	—माणिक्यमाळा	११	......	,,	२८८
८०	मातङ्गी, मार्दंगी		......	अ.स.श्रु.	४९०
१५१६	मातली	४०	......	व द्द.	४६३
४४७	—माता	१०	......	सम.	२७१
५८८	मात्रा	११	......	,,	२८९
१२५०	—मादश	१०	......	,,	३८४
१३४३	माधविका, कोक, सवैया,... माधवी, मकरंद, वाम, वाम, वामा, मजरी	२४	......	सम.	४०३
१३६४	—माधविरा	२४	......	सम.	४०७
१३४३	—माधवी	२४	......	,,	४०३
१३५८	—माधवी	२४	......	,,	४०६
१३६३	—माधवी	२४	......	,,	४०७
१३६९	—माधवी	२५	......	,,	४०८
५७९	माधो	११	......	,,	२८८
१०६१	—माधोराधा	१६	......	,,	३५४
१३३८	—मानबिम्ब	२४	......	,,	४६२

१७४	मानमुखी		वि.वृ.	५१८
१४८८	मानदकर्पा	२९	ध.दं.	४३४
१०८	—मानव	६	सम.	२३८
१०८	—मानवक.	६	,,	,,
३०३	—मानवक्रीडा.	८	,,	२५७
१०३०	—मानहंस.	१५	,,	३४९
१०३०	—मानसहंस	१५	सम.	३४९
११०८	मानाक्रान्ता	१७	,,	३६१
१२९३	—मानिनी	२२	,,	३९२
१०१०	—मानिनी	१५	,,	३४६
१३२५	—मानिनी	२३	,,	४००
८१९	—मायक	१३	,,	३२१
६९६	माया,गौरी	१२	,,	३०१
८१९	—माया	१३	,,	३२१
६	माया	११	उ.जा.भे.	२८६
१६२	मायाविनी	७	सम.	२४३
३५६	मायासारी	९	,,	२६२
५२०	—मारती	११	,,	२७९
११५८	माराभिसरण	१९	,,	३७५
८०	—मार्दंगी		अ.स.वृ.	४९०
१०८	—मालतिका	६	सम.	२३८
३२०	—मालती	८	,,	२५९
५२०	—मालती	११	,,	२७९
७३१	मालती, शुभ, वरतनु, यमुना..	१२	,,	३१०
१४२३	—मालती	२६	,,	४१६
३४	मालती	१४	,,	१४
१३११	—मालती	२३	,,	३९७
१०८	—मालती	६	,,	२३८
५३३	—मालतीमाला.	११	,,	२८०
१५१२	मालती	२७	वृ.द.	४६२

२६ मालभारिणी, औपच्छदसिक, वसतमालिका, परिश्रुता....		......	अ.स.वृ.	४७८
१२४५ मालव........................	२०	......	सम.	३८३
६११ मालविक्रा......................	११	......	,,	२९३
१३ —मालविक्रा		२८	अ.स.	८०
१०५२ माला........................	१५	......	सम.	३५२
५२० माला, मालती, भारती, हीमाली, मारती..........	११	......	,,	२७९
३४ माला........................		४५	अ स.	९०
३ माला........................	११	......	सम.	२८६
५५९ माला........................	११	......	,,	२८३
१४५० माला........................	२८	......	व दं.	४३०
११२३ मालाधर, मालाहरा...	१७	......	सम.	३६३
१०७७ मालावलय...................	१६	......	,,	३५६
११२३ —मालाहरा..................	१७	......	,,	३६३
३२३ —मालिका.....................	८	......	,,	२५१
५५ मालिन	५	......	,,	२३२
१०१० मालिनी, मानिनी, नूतनमाला...	१५	......	,,	३४६
१२९३ —मालिनी	२२	......	सम.	३९२
५५८ —मालिनी....................	११	......	,,	२८३
७ —माली........................	३	......	,,	२२६
५८ माली........................		१८	,,	२२
१०६२ माल्योत्तरम......................	१६	......	,,	३५४
६५ मितभाषिणी....................		......	अ.स.वृ.	४८६
१०५६ मितमरुचि.....................	१५	......	सम.	३५३
६५३ मिथुनमाली.....................	१२	......	,,	२९७
६०७ मिदिरा	१२	......	,,	३००
२१३ मीनपदी........................	७	......	,,	२४८
११६३ —मुग्धहरा......................	२४	......	,,	४०७
९८ मुग्धमणि......................		२५	,,	८०
१४८५ मुग्धमणि......................	३१	......	द.दं.	४१९

११६१	—मुक्ताहरा...................२४*	......	सम.	४०७
१२७	—मुक्तागुंफ.................. ७	......	,,	२४०
१३५७	—मुकुन्द.....................२४.	......	,,	४०५
७४५	मुकुलितकलिरावली १२	......	,,	३१२
४	मुखगलितक्	८०	ग.प्र.	२१९
६१	मुखचपलान्त विपुलार्या.......	,,	आ.भे.	११०
५९	मुखचपलापथ्यार्या.	,,	,,	,,
६०	मुखचपलादिविपुलार्या.	,,	,,	,,
६२	मुखचपलोभयविपुलार्या.	,,	,,	,,
५२	मुखचपलाआर्या	३०	,,	१०७
७६	मुखचपलापथ्यागीति	,,	गी.भे.	११२
७७	मुखचपलाआदिविपुलागीति ...	,,	,,	,,
७८	मुखचपलाअन्तविपुलागीति ...	,,	,,	११३
७९	मुखचपलाउभय विपुलागीति...	......	आ गी प्र	११३
९३	मुखचपलापथ्याउपगीति	......	उ गी भे.	११५
९४	मुखचपलाआदिविपुलाउपगीति .	......	,,	११६
९५	मुखचपलाअन्तविपुलाउपगीति ..	......	,,	,,
९६	मुखचपलाउभयविपुलाउपगीति	......	,,	,,
११०	मुखचपलापथ्याउद्गीति.	......	उद्.गी.भे.	११८
१११	मुखचपलाआदिविपुलाउद्गीति	......	,,	,,
११२	मुखचपलाअन्तविपुलाउद्गीति ..	......	,,	,,
११३	मुखचपलाउभयविपुलाउद्गीति	......	,,	११९
१२७	मुखचपलापथ्याआर्यागीति. ...	......	आ गी.भे.	१२१
१२८	मुखचपलाआदिविपुलाआर्यागीति	......	,,	,,
१२९	मुखचपलाअन्तविपुलाआर्यागीति	......	,,	,,
१३०	मुखचपलाउभयविपुलाआर्यागीति	......	,,	,,
३९३	मुखला, साराङ्गिका, सारङ्ग, राङ्गिका, सारगीक, सारागिय, सारवक, मथना. } ९	......	सम.	२६६
४८	मुख(आदि)विपुला	......	आ प्र.	१०६

१५	मुग्धगलितक..........		......	ग.प्र.	२२३
२३	मुग्ध, गोपाल	४	......	सम.	२२८
१७	मुग्धमाला गलितक.		......	ग.प्र.	२२४
७८६	—मुत्तियदाम.	१२	......	सम.	३१७
११६९	—मुदिर	२५	......	,,	४०८
२४	—मुद्रा.	४	......	,,	२२८
१२२४	मुनि,मुनींद्र	१९	......	,,	३७९
१२२४	—मुनींग..................	१९	......	,,	३७९
१२४३	—मुनिशेखर...............	२०	......	,,	३८३
१४३३	मुनीन्द्र.	२७	......	दण्ड.	४२४
२३०	मुरजिका.	७	......	सम.	२४९
१०१९	मुरेला	१५	......	,,	३४७
२५१	मुवकि	७	......	,,	२५१
२३४	मुहुरा	७	... .	,,	२५०
१०	मूलचन्द्र.		१३	,,	९
१४९६	मृगतिलरा, अमृतगति,त्वरितगति,अमृततिलका, कुलटा, सुधागत	१०	......	,,	२७७
८३	मृगाङ्क.		२३	,,	३९
९	मृगी,प्रिया,विद्युत	३	......	,,	२२६
५१	मृगी,यवानी.		......	अ.स.वृ.	४८३
१२	मृगेन्दु,नरेन्दु, मृगेन्द्र, नरेन्द्र...	३	......	सम.	२२७
१२	—मृगेन्द्र	,,	......	,,	,,
८१५	मृगेन्द्रमुख,हरिमुख.	१३	......	,,	३३०
१०२५	मृदंग	१५	......	,,	३४८
१८९	मृदव.		......	वि.वृ.	५३३
८२	मृदुलीला.	६	......	सम.	२३५
१९	मृदुगति.		१२	,,	८
४९	मृदुमालती		......	अ.स.वृ.	४८२
३६१	मृगप्रभा.	७	......	सम.	२४३

२५५	—मौक्तिकतिलक............	८	सम.	२५१
१८१	मौरलिक,कलिता,कलत्रा.......	७	,,	२४५
२६०	मौलिमालिका	८	,,	२५२
२१५	मौलिस्रक्	७	,,	२४८
१८ घ	मंगलवस्तु.	८८	वि जा.	१७०
	मंगलवस्तुनाभेद.	४१	,,	१७१
९५८	—मंजरी	१४	सम.	३३९
११०९	मंजारी..................	१७	सम	३६१
५७	मंजुसौरभ		अ स वृ.	४८४
८५६	—मदभाषिनी.	१३	सम	३३६
१५३८	मंदार	८१	व द.	४६८
१२८९	मंदारमाला.	२२	सम.	३९२
१५८	मंजुमतिका		वि वृ.	५१२
	य.			
१४६६	यशामबाण,नवमाल्लिका.	२९	व द.	४३४
६२	—यमक	५	सम.	२३२
१८६	यमनक	७	,,	२४५
५२	—यमवती		अ स वृ	४८३
७३१	—यमुना	१२	सम.	३१०
५१	—यवानी..................		अ स वृ	४८३
५२	—यवामती		,,	,,
२०९	यविपुला		अ व मे	५३३
२६८	यशस्करी	८	सम.	२५१
३६	—यशोदा..................	५	,,	२३०
२६१	युगधारि.	८	,,	२५२
२०३	—युग्मविपुला..................		अ व मे.	५३०
१८७	युतक.		वि.वृ.	५३३
३६६	—युता	९.	सम	२६२
१७	युद्धविराट्,कान्ता		अ स वृ	४७६
७३८	यूथिका	१२	सम	३११

६८ योग.		२०	राम.	२५

र

३९३ रङ्किा	९	......	,,	२६६
१४७ रङ्गिस्ता		२३	गा.द.	६३
४५५ रङ्गियो,वर्णरंगी	२८	......	व.दं.	४३१
४९८ रङ्कोका	३२	......	व.दं	४५८
२८८ रजतहसी	२२	......	राम.	३५१
१० रजनी	३	......	,,	२२७
३९७ रञ्जक	९	......	,,	२६६
४०५ रञ्जन	२६	......	,,	४१३
६०९ —रञ्जिता	११	......	,,	२९२
५ —रडूडा		१६६	वि.जा.	१३१
५ —रडूडा		......	,,	,,
९० रण		१८	राम.	२२
५ रण्डा, रुण्डा, रडूटा, रड्डा. ...		१६६	वि.जा.	१३१
११५० रणशूर	१८	......	राम.	३६७
१०३० —रणहंस	१५	......	,,	३४९
८७ रणोदय		......	स.रा.ट्र.	४९२
१०४३ —रत्न.	१५	......	राम.	३५१
३९५ रत्नकरा,रत्नकरा	९	......	,,	२६६
८३५ रति	१३	......	,,	३२३
१२ रतिकरी		१०	,,	६
४०४ —रतिपद	९	......	,,	२६७
९४७ रतिरेखा	१४	......	,,	३३७
१००९ रतिलेखा	१६	......	,,	३५६
५५५ रथपद,धृता,सुकृति,सुमनक, वक्त्रा,वृन्ता	११	......	,,	२८२
६०० रथोद्धता,रथोध्रता	११	......	,,	२९१
१० रमण,रमणी,रमुना,रजनी. ...	३	......	,,	२२७
१०५९ रमण	१५	......	,,	३५३

२७१	रमणियशिरसा,पञ्चशिरसा... ..	८	......	सम.	२५८
८८४	रमणी.....................	१३	......	,,	३३०
१०	—रमणी....................	३	......	,,	२२७
३६५	रम्भा......................	९	......	,,	२६२
४२	रमा.	५	......	,,	२३०
१०	—रमुना	३	......	,,	२२७
१९	रयणछप्पय.		कुल १२०	वि जा.	१८१
३९५	—रलका	९	......	,,	२६६
१२५०	—रल्यका	२०	......	सम.	३८४
२०५	रविपुला.		......	अनुष्टुप् ष.भे.	५३२
१२७	रविरुचि		३१	मा.स.	५०
३८१	रवोन्मुखी....................	९	......	सम.	२६५
१	रसउल्लाल	५६	......	वि,जा.	१७३
८०१	रसधारा.	१३	......	सम.	३१९
१३८	रसधारि.	७	......	,,	२४१
५०९	रसभूम.	१०	......	,,	२५८
१२२६	रसाला......................	१९	......	,,	३८०
९०	रसावली, रोडक, चतुष्पदी, अर्कच्छाया...............		२४	,,	३७
८१	—रसावली.	६	......	,,	२३५
१४	रसिक.....................		११	सम.	७
७७०	रसिकपरिचिता.	१२	......	,,	३१४
१३७२	रसिकरसाला.	२५	......	,,	४०९
१	रसिका,उत्कृशा,उच्चच्छा,सुललित		६,६	वि जा.	१२९
८५१	राग.	१३	......	सम.	३२५
१५४	राजचन्द्र....................				६६
१६३	राजराजि,भिया.	७	..		२४२
९	राजसेना				

१०१	रांडि	६	......	सम.	२३७
७९८	राधा	१३	......	,,	३१८
७८	राधिका		२२	,,	२८
७३६	राधिका	१२	......	,,	३११
१८	—राम	४	......	,,	२२८
५७	राम		१७	,,	२२
१९२	रामरक्षा		......	वि.वृ.	५२४
१२	रामा	११	......	सम.	२८६
१८	—रामा	४	......	,,	२२८
३३६	रामा	८	......	,,	२६०
११३०	रामावद्ध	१३	......	,,	३१९
१५६	—रायपति.	७	......	सम.	२४२
१८ ड	रायवस्तु		८४	वि.जा.	१६६
७७	रास.		२२	सम.	२७
७४०	रास,मता.	१२	......	,,	३११
७३	रासा.		२१	,,	२६
११०६	रासा.	१६	......	,,	३६१
२३८	—रासा.	७	......	,,	२५०
२०	रामाउल्लाल छप्पय		१५०	वि जा.	१८१
४४२	—रुक्मावती	१०	......	सम.	२७१
४४२	—रुकावती	१०	......	,,	२७१
१०५८	रवि.	१५	......	,,	३५२
११२	रुचिमुखी.		......	अ.म.वृ.	४९७
१५७	रुचिर.	७	......	सम.	२४२
८३१	रुचिरवर्णा,साला.	१३	......	,,	३२३
८६०	रुचिरा,अतिरुचिरा,तनरुचिरा,कलावती	१३	......	,,	३२७
२३	रुचिरा		३०	अ.म.आ.	८५
२८	रुद्र,बुद्धि.	४	......	सम.	२२९
११	रुद्रजाति		५०	,,	६

५	रुण्डा.		१६६	वि.जा.	१३१
१५२०	रुद्रगारग	४५	......	व.द.	४६३
२७३	रुद्राली	८	......	राम.	२५४
१४९५	रूपकघनाक्षरी, रूपघनाक्षरी. वर्णकगनहर	३२	......	व.द.	४५७
१२५८	—रूपकमाला	२१	......	राम,	३८५
१४९५	—रूपरवनाक्षरी	३२	......	व.द	४५७
१३५७	रूपमकरद	२४	......	राम.	४०५
११४८	रूपमाल, रूपमाला	१७	......	,,	३६७
३५३	—रूपमाला	९	......	,,	२६२
१०५८	—रूपमाला	१५	......	,,	३५३
११४८	—रूपमाला	१७	......	,,	३६७
३५३	रूपमाली	९	......	राम,	२६२
९३	रूपमाळा		...३४	,,	३८
४४२	—रूपवती	१०	......	,,	२७१
३५३	—रूपा	९	......	,,	२६२
१२५८	रूपामाला	२१	......	,,	३८५
३५३	रूपामाली,रूपमाला,रूपमाली, रूपा.	९	......	,,	२६२
७७६	रूपावली.	१२	... ..	,,	३१५
१०५४	रुवामाला,रूपमाला.	१५	.. ...	,,	३१३
१२५८	रुवामाला	२१	......	,,	३८५
१०१८	—रेखा.	१५	......	,,	३४७
१३१	रेणरी		३२	,,	५२
१५४	—रैरग,	५	......	राग.	२४२
९०	रोडक		२४	,,	३५
८९	—रोडा.		२४	,,	३५
५८१	रोधक	११	......	,,	२८८
८९	रोला,रोडा		२४	,,	३५
१८ ६	रोलावस्तू (वत्थू वास्तुक)		धुल.९६	वि.जा.	१६०

२	रंगवहाल		५६	सम.	१७५
२०	लगागीर	४	......	,,	२२८
१०३	लघुसूक्ष्मा		२६	,,	४२
२९५	—लघुनाराच	८	......	,,	२५८
१३५२	लच्छी	२४	......	,,	४०४
११७१	—लता.	१८	......	,,	३७१
७	लम्बितगलितम.		......	गलि.प्रक.	२२७
१४	लयद्विपदी,महादोहा		२८	अ.स.जा.	८०
१५६	—लव	७	......	सम.	१४२
७५०	ललना	१२	......	,,	३१२
७२४	ललामललिताधरा,वसन्त-चत्वर, वरावति	१२	......	,,	३०७
७१४	—ललित	१२	......	,,	३०५
१३२९	—ललित	२३	......	,,	४०१
१४४७	ललित	२८	......	,,	४२८
१४२	ललित (विषम)		......	वि.वृ.	५०७
५९७	ललित, भाविनी, कनकमंजरी, भामिनी, इन्दिरा, शुद्धकामदा, विबुधवन्दिता, राजहंसी	११	......	,,	२९०
१३	ललित,ललितपद,मालविका. ...		२८	अ.स.जा.	८०
९	ललितगलितक		२४	ग. प्र.	२२१
३६८	—ललिततिलका	९	......	सम.	२६३
९१७	ललितपताका	१४	......	,,	३३३
१३	—ललितपद.		२८	अ.स.जा.	८०
६९९	—ललितपद	१२	......	सम.	३०४
१२७१	ललितललाम	२१	......	,,	३८८
७३२	ललिता,शुभलीन	१२	......	,,	३१०
१३३४	—ललिता.	२३	......	,,	४०२
५३७	ललितागमन,	११	......	,,	२८१
१२९३	—ललिता.	२२	......	,,	३९२
२	ललिता		......	अ.स.वृ.	४७२

१४९	ललितागीति, गाहिनी, गाहिणी, गाथिनी.		६२	आ.गी.प्र.	१२५
५३९	ललितालवाल................	११	......	राम	२८१
१२४	लवली		......	वि.बृ.	५०३
१२५	लवली (द्वितीय)		......	वि.बृ.	५०३
८८०	लवलीलता.	११	......	राग.	३२९
१२९१	लविङ्गलता, कलाकुशल, ... विजय(विजैं).........	२५	......	,,	४११
३००	लसदसु, कमल, पद्म, कमला	८	......	,,	२५७
५४	लहुआ		१६	,,	२१
५१८	लक्षणलीला.	११	......	,,	२६०
१२७	—लक्ष्मी....................	७	......	,,	२४०
१३५२	—लक्ष्मी....................	२४	......	,,	४०४
३१७	लक्ष्मी.....................	८	......	,,	२५८
९५१	लक्ष्मी	१४	......	,,	३३८
७१७	—लक्ष्मीधर	१२	......	,,	३०६
७१७	—लक्ष्मीधरा................	१२	......	,,	३०६
११६५	लालसा.....................	१८	......	,,	३७०
१३०२	लालित्य.....................	२२	......	,,	३९५
४६७	—लालिनी	१०	......	,,	२७४
१४५३	लावण्यलीलाप्लुत, उद्दाल	२८	......	,,	४३०
७७	लास्यलीला..................		......	श.रा.पृ.	४८९
१०२१	लास्यभारा, चन्द्ररेखा..........	१५	......	राग.	३४७
७०	लास्यलीलालय................		......	श.रा.पृ.	४८७
६८४	लीलालर्क....................	१२	......	राग.	३००
९८९	लीला.......................	१४	......	,,	३४३
४०८	लीला.......................	५	......	,,	२६०
७६	लीला.......................		...२२	,,	१७
९६	लीला		...२४	,,	१९
१६५	—लीला	७	......	,,	२४३
२२९	लीला	७	..	राग	२४९

४१५ वन्दारु .... ९ ...... सम. २६८
९२० —वन्ध्यारूढ ....१४ ...... ,, ३३४
७१० —वनमालिका ....१२ ...... ,, ३०५
१३०६ वनवासिनी ....२२ ...... ,, ३९६
९० —वनिता .... ६ ...... ,, २३६
७५७ वनिताभरण ....१२ ...... ,, ३३३
५०४ वनिताविनोदी..................१० ...... ,, २७८
६८५ वनिताविलोक..................११ ...... ,, ३००
८९१ —वनिताक्षी ....१३ ...... ,, ३३०
१३७० —वनोपक ....२५ ...... ,, ४०८
१४४ वयस्य,जयमगळ .... ७ ...... ,, २४१
२२१ वरजापि .... ७ ...... ,, २४८
७३१ —वरतनु ....१२ ...... ,, ३१०
१०९७ वरयुवति ....१६ ...... ,, ३५९
२ —वरवय .... १९ क्ष रा जा. ७३
२ —वरवा .... ,, ,, ७२
२४ वरवीर.......................... ११ राम. १०
४ वरवेद.......................... १९ क्ष रा जा. ७४
२४९ वरशशि .... ७ ..... राम २५१
९५० —वरसुन्दरी..................१४ ...... ,, ३३८
१५० —वरार्थिनी .... वि. पु. ५१०
७०४ —वरायति ....१२ ...... राम ३०७
८८९ वरिवसिता,•परिवसिता...... १३ ...... ,, ३३०
५६ वरीय.......................... ५ ...... ,, २३२
१२१७ वरधिनी .... १९ ...... ,, ३७८
१७५ वर्करिता, शुभगा, स्वग, खगा, राजा, खडक ⎫ ७ ...... ,, २४४
१९ वर्णवती.......................... ...... ज पु द ४७६
१४९१ वर्णसुदर्शी.................. ३१ ...... व द. ४५७
१४६० वर्णकदडक............ ...... २९ ...... ,, ४३१
१४९५ —वर्णक्रमभहर ....३१ ...... ,, ४५७

१५०७	वर्णत्रिभंगी	२४	......	प.द.	४६०
	वर्णदंडक		......		४१७
५७७	वर्णललाम	११	......	सम.	२८८
१४५५	—वर्णरंगी.	१८	......	प ९.	४११
१३१६	वर्णवागेश्वरी,वागेश्वरी	२१	......	सम.	३५८
१६६	वर्तिकाविलसित.		......	वि.वृ.	५१५
६८५	वनितावलोक	१२	......	सम.	३००
१८७	—वर्द्धमान.		......	वि.वृ.	५०९
१९५	वार्द्धिण्णु,शर.	७	......	सम.	२४६
९२०	—वन्ध्याश्उ	१४	......	,,	३३४
४७२	वांगगा.	१०	......	,,	२७४
४६०	वर्षांतुरा.	१०	......	,,	२७३
६८२	वलभी	१२	......	,,	३००
२१	वला,ससुहो.	४	......	,,	२२८
३१८	वर्लासन्दु	८	......	,,	२५९
८४	वलिमुग्री,पामी.	६	......	,,	२३५
४०५	वल्गा	९	......	,,	२६७
१५०	—वल्गुगीति		६२	आ गी भे.	१२५
१११७	—वल्गुज	१७	......	सम.	३६१
१५०	—वल्लरिगीति		...६२	आ.गी भे	१२५
१३७७	—वल्लरिका	२५	......	सम.	४०९
१३७७	वल्लरी वल्लरिका	२५	......	,,	४०९
११११	वल्वज, वल्गुज	१७	......	,,	३६१
५३४	पल्लवीविलास	११	......	,,	२८०
१४२३	वशम्वद,सुरा, सामम, शायन मागधी,सवैया,अम्बुज,कुन्द-लता, किशोर,मालती... ..	२६	......	,,	४१६
६५९	वसनविशाला	१२	......	,,	२९८
१०८	वसन्त, मालतिका, मालती, मानवक, मनोहर, मानव...	६	......	,,	२३८
९२६	वसन्त	२४	......	,,	३३५

७२४ —वसन्तचत्वर १२	......	राम.		३०७
९८० —नसन्ततिलक १४	......	,,		३३६
९४० —वसन्ततिल...............१४	......	,,		३३६
९४० वसन्ततिलका,उद्धर्षिणी, सिंहोद्धता,सिंहोन्नता,मधुमाधवी, तक्षा, वसन्ततिलक, वसन्ततिल, शोभावती,चेतोहिता १४	......	राम.		३३६
२६ —वसन्तमालिका...............	......	असगृ		४७८
६८८ वसन्तह्रास...............१२	......	राम.		३०१
७ —वसुकला...............	८	,,		१
९५८ —वसुवधा १४	......	,,		३३९
१४५८ वसुधाधर...............२९	......	वृदं.		४३१
११७४ वसुपदमञ्जरी,हरिणाभिनन्दन...१८	......	राम.		३७२
४ वसुमति...............	७	,,		१
१०६० —वसुमति १५	......	,,		३५३
१२२८ वसुमनी १९	......	,,		३८०
९१ वसुमती, कमला............... ६	......	,,		२३६
१३२२ वसुरत्न,वसुरयण २३	......	,,		३९९
१३२२ —वसुरयण २३	......	,,		३९९
७९२ वस्तु,वास्तुक १३	......	,,		३१८
४३ वस्तु	१५	,,		१६
२६४ —वस्तु ८	......	,,		२५३
६९८ वशा १२	......	,,		३०४
१७२ वाह्विलि ७	......	,,		२४४
५४ वात्री ५	......	,,		२२१
१३१६ —वागीश्वरी २३	......	,,		३९८
१३३० —वाजिवाहन २३	......	,,		४०१
५२ वाटमती,यमवती,जमवती, अमरावती,परावती,धवमती, यवामती.	......	असगृ		४८३
९३२ —वाटिका...............१४	......	,,		३३५

९३१	वाटिकाविकाश, वाटिका, वाटिकाविलास	१४	......	सम.	३३५
९३१	—वाटिकाविलास	१४	......	,,	३३५
१०७०	वाणिनी	१६	......	,,	३५५
११९५	वाग्गिनी	१७	......	,,	३६३
४५४	—वाणी	१०	......	,,	२७२
२	वाणी	११	......	,,	२८५
८४	—वाणी	६	......	,,	२३५
१६९	—वाणी	७	......	,,	२४४
१२३०	वाणीवाण	२०	......	,,	३६०
१००७	वाणीभूषा	१५	......	,,	३४५
१५३४	—वात	७२	......	व.दे.	४६७
१३५	वातुलि	८	......	सम	२६०
५६१	वातोर्मी	११	......	,,	२८३
५४०	वार्ताहारी	११	......	,,	२८१
२६३	वात्या	८	......	,,	२५३
५२	वार्द्धि	५	......	,,	२३१
२७८	वान्तभार	८	......	,,	२५४
४	—वानपारिसा		१६	मा.छनक.	२०८
१३४३	—वाम	२४	......	सम.	४०३
२	वाम		६	,,	२
८४१	वामवदना.	१३	......	,,	३२४
४८१	—वामा	१०	......	,,	२७५
११५८	—वारवाणारत्न	१८	......	,,	३६९
५९६	वारयानिर.	११	......	,,	२९०
४८७	वारवती	१०	......	,,	२७६
१५३३	—वाराह	६९	......	व.द.	४६६
८१	वारि		२२	सम.	२८
२४	वारि, कर्नृ, मुद्रा.	४	......	,,	२२८
४०९	वारिधियान.	९	......	,,	२६८
२७७	वारिशाला, वितान, वितान	८	......	,,	२५४

३१	वाला,समोहासार,रामोहा, वियुतभ्रान्ता	५	......	राम.	२२९
४३६	—वाला १०		......	,,	२७०
४४९	—वालिका. १०		......	,,	२७२
८७	—वालिका..................		२३	,,	३०
१२७४	वासकलीला..................२२		......	,,	३८९
२३८	वासकि,सुवासक,सुवासा,सवा-सनि,सुवास,रासा,सवासन.	७	......	,,	२५०
६०८	वासन्तिः १४		......	,,	३३२
७८७	वासरमणिका १२		......	,,	३१७
४	वासववन्दिता		......	अ स वृ.	४७२
७९६	वासविलासपति १३		......	सम	३१८
१२७	वासवगामिनी................		......	अ स वृ.	५००
१२८	वासिनी		......	अ.स वृ.	५००
७९२	—वास्तुक १३		......	सम.	३१८
१९०	—वास्तुमति ७		......	,,	२४६.
८८	—वास्तूक.		२४	,,	३१
९६	—वास्तूक		९६	वि जा.	१६०
११४१	वाहान्तरित १७		......	सम.	३६६
६७१	वाहिनी १०		......	सम.	२९९
४१४	विश्चवर्ती.................. ९		......	,,	२६८
७५५	विकत्थन.....................१२		......	,,	३१३
७८२	विकलनकुलवल्ली.......... ..१२		......	,,	३१६
५३५	विकसितपद्मावली ११		......	,,	२८०
१४०१	विकुण्ठकण्ठ २६		......	सम.	४५३
२३	विक्रान्तछंद......................२३		......	,,	३६७
८	विगलितक....................		......गलितकप्रकरण२२१		
१०५	—विगाथ.		......	गी भे.	११७
१०५	—विगाथा.		......	,,	११७
१०५	—विगाहा		......	,,	११७
१३४५	विगाहितगेह,गाहितगेह,गाहितदेह२४		......	सम.	४०६.

१४२ विगीति. ...... गी.भे. १२३

१३९१ —विजय(विजै)......२५ ...... सम. ४११

१९ विजया...... ४ ...... ,, २२८

१५९ विजया...... ४० मा.दं. ६९

१५०४ विजया......३२ ...... व.दं. ४५९

६९४ विजयपरिचया ......१२ ...... सम. ३०१

१४१६ —विज्जाहर ......२७ ...... व.दं. ४२१

२५५ —विज्जुमाला. ...... ८ ...... सम. २५२

२५५ —विज्जुमाला ...... ८ ...... ,, २५२

८१ —विज्जोदा ...... ६ ...... ,, २३५

८१ —विज्जोहा. ...... ६ ...... ,, २३५

८१ —विज्जोहा ...... ६ ...... ,, २३५

५३ विट्. ...... ५ ...... ,, २३१

२७७ वितान...... ८ ...... ,, २५४

३०२ वितान...... ८ ...... ,, २५७

१४३९ वितान......२७ ...... व.द. ४२६

५६६ वितानिता......१४ ...... ,, ३४०

८७६ विदला......१३ ...... ,, ३२९

३०७ विद्या,उया...... ८ ...... सम. २५८

६४९ —विद्याधर......१२ ...... ,, २९७

१४२६ विद्याधर, विज्जाहर......२७ ...... व.द. ४२१

६४९ विद्याधार,विद्याधर,विद्याधारी विद्याहार...... १२ ...... सम. २९७

६४९ —विद्याधारी......१२ ...... ,, २९७

६४९ —विद्याहार......१२ ...... ,, २९७

९ —विद्युन ...... ३ ...... ,, २२६

८४३ —विद्युत ......१३ ...... ,, ३२४

३१ —विद्युतभ्रान्ता ...... ५ ...... सम. २२९

१४७० —विद्युत्कर्णा ......२८ ...... व.दं. ४३५

१३५७ विद्युदाली ......३१ ...... सम. ३८५

२५५	विद्युन्माला,विद्युल्लेखा, वीजु-माला,मदामाला, मौक्तिकतिलक,विज्जुमाला,विद्दनमाला, सोमकांत,सोमकांत,सोमकतो, सोमवलो,महाणी,सोमक...	८	......	सम.	२५२
२५५	—विद्युल्लेखा.	८	......	,,	२५२
६३	विद्युल्लेखा, शेषा,शेषराज, शेष..	६	......	,,	२३१
६९१	विद्रमदोला..................	१२	......	,,	३०१
२५५	—विद्दनमाला...............	८	......	,,	२५२
७३०	—विधायिनी..................	१२	......	,,	३१०
७२९	विधारिता	१२	......	,,	३०९
११९६	विधुनिधुवन	१९	......	,,	३७५
८३४	विधुरवितान..................	१३	......	,,	३२३
११३९	विधुरविरहिता...............	१७	......	,,	३६६
८९१	विनताक्षी, वनिताक्षी.........	१३	......	,,	३३०
९७०	विनोन्दिनी.....................	१४	......	,,	३४०
१४११	विनिद्रसिन्धुर	२६	......	,,	४१४
१३९४	विनयविलास	२६	......	,,	४१२
७१	—विनिह्वरण		२०	,,	२५
५५९	—विध्नकमाला.	११	......	,,	२८३
९२०	विन्ध्यारूढ, वन्ध्यारूढ	१४	......	,,	३३४
१०८३	—विपक्ष........................	१६	......	,,	३५६
१३५४	विपक्ष्व......................	२४	......	,,	४०५
७९७	विपन्नकदन, विपन्नकलन, विपन्नकवल	१३	......	,,	३१८
७९७	—विपन्नकलन.	१३	......	,,	३१८
७९७	—विपन्नकवल..............	१३	......	,,	३१८
२०२	विपरितपथ्यावक्त्र		......	अ व भे.	५३०
९७	विपरिताख्यानकी		......	अ स वृ.	४९४
९७६	विपाक्वती....................	१४	......	सम	३४१
१०२३	विपिनतिलक,विपिनतिलका. ...	१५	......	,,	३४५

७४१	विपुलपालिका	१२	......	सम.	३११
४७	विपुला		२०,२७=५७(आ.प्र.)		१०६
२०३	विपुला,युग्मविपुला.		......	अ.व.भे.	५३०
३३८	विपुला	८	......	सम.	२६०
१३१७	विपुलायित.	२३	......	,,	३९९
७१८	विप्लुताशिखा	१२	......	,,	३०६
५९७	—विबुधवन्दिता	११	......	,,	२९०
८००	विभा	१३	......	,,	३१८
७८५	—विभावरी	१२	......	सम.	३१७
८७१	—विभावरी	१३	......	,,	३२८
१५४३	—विमर्द	१६	......	घ-द.	४६९
१९८	विमला		......	अ.व भे.	५२७
५६७	विमला	११	......	सम.	२८४
१८	—विमला	४	......	,,	२२८
२९	विमानिनी		......	अ स.वृ.	४७८
११३	विमुखी		......	अ.स.वृ.	४९७
८१	विमोहा, विजोहा, विज्जोहा, अर्द्धकाममोहिनी, सर्पिणी, रसावली,नद्रमाला,विज्जोदा, वियोधा,जोहा	६	......	सम.	२३५
७७३	वियोगवती	१२	......	,,	३१५
७	—वियोगिनी		......	अ स वृ.	४७३
८१	—वियोधा	६	......	सम.	२३५
७४४	विरतप्रभा	१२	......	,,	३१२
१४२९	विरतिकल्प,निरयिकप्पो	२७	......	व द.	४२१
७१३	विरतिमहती	१२	......	,,	३०५
७	विरया		२३	अ.स.जा.	७५
१४२९	—विरयिकप्पो	२७	......	घ.द.	४२१
४८४	विरलकटिका	१०	......	सम.	२७५
८३३	विरलविरागा,विरलवैराग	१३	......	,,	३२३
८३३	—विरलवैराग.	१३	......	,,	३२१

७२४ विरला,वीरला. ....१२ ...... सम. ३१०

७६० विरलोद्धता. ....१२ ...... ,, ३१३

१३७३ विरहविरहस ....२५ ...... ,, ४०९

१३२६ विराजित,श्रवणाभरण,सवाइ...२३ ...... ,, ४००

२६२ विराजीकरा. .... ८ ...... ,, २५३

४६६ विराट,शुद्धविराट..............१० ...... ,, २७१

८६१ विराधिनी..............१३ ...... ,, ३२८

१४१८ विरागनाटिका..............२६ ...... ,, ४१५

११३१ विरुद्दवृत्त ....१७ ...... ,, ३६५

५०५ विरेकी ....१० ...... ,, २७८

२२० विरोही .... ७ ...... ,, २४८

१३२१ —विल ....२३ ...... ,, ३९९

९३७ विलम्बनीया ....१४ ...... ,, ३३५

१३२१ विलम्बलालिन,विल ....२३ ...... ,, ३९९

६ विलम्बितगलितक.............. ...... गलितक प्र. २२०

५५० विलम्बितमध्या. ....११ ...... ,, २८२

१४२४ विलास. ....२६ ...... ,, ४१६

१०९८ विलसित ....१६ ...... ,, ३५९

११६९ विलास..............१८ ...... ,, ३७१

३६ —विलास.............. ५ ...... ,, २३०

१३१० —विलास..............२३ ...... ,, ३९७

१५२५ विलाग ....४९ ...... व.द. ४६४

१६ विलासवापी .... अ.स.वृ. ४७६

१३१० विलासवाग,सुभाग,विलास ...२३ ...... सम. ३९७

५६५ विलासिनी ....११ ...... ,, २८४

५३० विलुलितमंजरी..............११ ...... ,, २८०

११५५ विलोलितवनमाला ....१८ ...... ,, ३६८

६६३ विवरविलसित ....१२ ...... ,, २९८

१०४५ विशकलिता ....१५ ...... ,, ३५१

४३३ विशदच्छाय,कलगीत ....१० ...... ,, २७०

३६७ विशल्य.............. ९ ...... ,, २६३

क्र.	नाम				पृ.
४५६	विशालप्रभ	१०	......	सम.	२५
४५५	विशालान्तिक	१०	......	,,	२५
६५६	*विशालाम्भोजाली, अम्भोजाली.*	१२	......	,,	२१
१४८८	विशाल	३१	......	प.दं.	४५
७१९	विशिखलता	१२	......	,,	३०
१३८३	विशेषकवलित, विशेषित	२५	......	,,	४१
१५२९	विशेषस्तबक	५७	......	,,	४६
१०८८	—विशेष	१६	......	शम	३५
१०८८	—विशेषक	१६	......	,,	३५
१५११	—विशेषशालिन	३६	......	प द.	४६
१०८८	—विशेषिका	१६	......	शम.	३५
१३८३	—विशेषित	२५	......	,,	४१
३	विश्लोक		१६	(मा.स.क.)	१०
१२३२	विश्ववितान	२०	......	सम.	३८
९१	विश्वप्रभा		......	अ स वृ.	४९
४९०	विश्वमुखी, गारवती, सारस्वती.	१०	......	सम.	१७
१५२६	—विश्ववाह	५१	......	प द.	४६
५६६	विश्वविराट, मदान्धा	११	......	सम.	२८
१३९५	विश्वविश्वास	२६	......	,,	४१
३६८	—विश्वा	९	......	,,	२६
१५३	विषकण्ठी		......	वि वृ	५१
६५१	विषमव्याली	१२	......	सम.	२१
३३	विषमपदजाति.		२४	वि.जा.	२०३
३४	विषमपदजाति		२६	,,	२०४
३५	विषमपदजाति		२७	,,	२०४
३६	,,		२८	,,	२०५
३७	,,		३१	,,	
१०	विषामितगलितक		......	ग प्र.	२३१
१४१०	विषाणाश्रित	२६	......	सम.	४१४
५५१	विष्टम्भ	११	......	,,	१८२
६१	—विष्णु	५	......	,,	२१२

११६१	—विष्णु	१४	......	सम.	४०७
१०२	विष्णुपद		२६	,,	४१
११२	विसभि	६	......	,,	२३९
५१७	विसंसि.	१०	......	,,	२७६
१५३४	विस्तार, पात.	७२	......	ष द	४६७
११००	—विस्मिता	१९	......	सम.	३७६
५६०	विहारिणी, भासिनी	११	......	,,	२८३
२९१	विहाया.	८	......	,,	२५५
१४	विक्षिप्तिकगलितक		......	ग प्र.	२२३
१४७०	वीजकर्षा, विद्युत्पर्णा	२८	......	ष द.	४३५
६५७	वीणादण्ड,	१२	......	सम	२९८
१४१६	वीणार	२६	......	,,	४१६
८७	—वीर्या	६	......	,,	२३५
२६	—वीर	४	......	,,	२२९
१२६	—वीर.		११	सम	५०
७७१	वीरणमाला	१२	......	,,	३१४
१२७८	वीरर्नीराजना	२२	......	,,	३९०
७३४	—वीरला	१२	......	,,	३१०
२४६	वीरवद्ध	७	......	,,	२५१
१३९८	वीरविक्रान्त	२६	......	,,	४१२
१२३८	वीरविमान	२०	......	,,	३८१
१११०	वीरविश्राम	१७	......	,,	३६१
३९८	वीरा, अवीरा, पापित्ता, पवित्रा पाहत्ता, प्रथिता, प्राप्ति, पायत्त, पायत्ताह, पादाताली	९	......	,,	२६६
४२३	वीरान्ता	१०	......	,,	२६९
७२७	वीरासिका, इन्दुवशा, इद्रवशा	१२	......	,,	३०८
२६	—वीरु	४	......	,,	२२९
६१४	वीवध	११	......	,,	२९३
१२५०	—वृत्त	२०	......	,,	३८४
९८६	—वृत्तचक्र	१४	......	सम	३४२

२८७ घृसमुखी........................ ८ ...... सम. २५५
१०४ घृंतहारि .... ६ ...... ,, २३७
३६६ —घृत्ता........................ ९ ...... ,, २६३
५५५ —घृत्ता ....११ ...... ,, २८२
८ —घृत्ति .... ३ ...... ,, २२६
८४६ घृद्धयामा ....१३ ...... ,, ३२५
३३० घृन्त........................ ८ ...... ,, २६०
५५५ —घृन्ता........................११ ...... ,, २८२
२११ घृन्दा........................ ८ ...... ,, २४७
२५५ —घृन्दामाला........................ ८ ...... ,, २५२
१०१४ घृषभ ....१५ ...... ,, ३४६
८ वेगवती .... अ.स.वृ. ४७४
११३ —वेताल ....२८ ...... मा.स.जा. ४५
५६ वेदयाणी. .... अ.स.वृ. ४८४
१३९ वेधा, भाक्त .... ७ ...... सम. २४१
९३५ —वेलांचल ....१४ ...... ,, ३३५
९३५ —वेलान्तर ....१४ ...... ,, ३३५
११६१ वेल्लितवेल........................२४ ...... ,, ४०६
९९८ वेशम्भरी........................१४ ...... ,, ३४४
३५१ —वेशि........................ ८ ...... ,, २६१
१३६० वेश्याप्रीति........................२४ ...... ,, ४०६
३५१ वेपि, वेशि........................ ८ ...... ,, २६१
२५ वेसर .... अर्द्धसमजाति ८७
१५३० —वैकुण्ठ........................६० ...... घ.द. ४६६
१३५१ वैकुण्ठधामा ....२४ ...... सम. ४०४
१६२ वैतालिक........................ ...... वि.वृ. ५१४
११३ वैतालिक........................२८ ...... सम. ४५
१ वैतालीय, अथवा,अपरवक्त्र प्रकरण........................ ...६० वै.प्र. २१२
४१ वैनय, सजा........................ ५ ...... सम. २३०
२१ वैयाली .... अ.स.वृ. ४५६

२	—वैर........................	१६	अ.स.जा.	७१
६७१	वैश्वदेवी. ११	......	समवृत्त.	२६६
३५६	—वैसार.................... ९	......	,,	२६२
३	वैसारी........................	...	अ.स.वृ.	४७२
३५६	वैसाक, वेसार.............. ९	......	सम.	२६२
११४२	—वंशदल......................१७	......	,,	३६६
११४२	—वंशपत्र......................१७	......	,,	३६६
११४२	वंशपत्रपातित, जलधररसित वंशवदन, वंशपत्र, वंशदल, वंशपत्रपतिता.	१७	...... ,,	३६६
११४२	—वंशपत्रपतिता..............१७	......	सम.	३६६
९३४	वंशमूल १४	......	,,	३५९
११३३	वंशल..........................१७	......	,,	३६५
१३३७	वंशलोभता २४	......	,,	४०२
११४२	—वंशवदन १७	......	,,	३६६
७२८	—वंशस्तनित................१२	......	,,	३०८
७२८	वंशस्थ, वंशस्थविल, महानिबंधा, वशस्तनित	१२	...... ,,	३०८
७२८	—वशस्थविल १२	......	,,	३०८
४३६	वंशारोपी १०	......	,,	२६९
९०७	वंशोत्तसा १४	......	,,	३३२
१३६६	व्याकोशकोशल २५	......	,,	४०८
७७२	व्यायोगवती १२	......	,,	३१५
१५११	व्याल,विशेषशालिन २६	......	व दं.	४६२
१६७	व्याहारी ७	......	स.वृ.	२४६

श.

१४	शर्करी [शक्वरी]छंद, ...१४	......	......	३३२
१४५२	शकायतन २८	......	व दं	४३०
१४१२	शकुन्त कुन्तल................२६	......	स.वृ.	४१४
१२०७	शक. १९	......	,,	३७७
१०१	शङ्कर,चामर	- २६	स.जा.	४१

११९४	—शङ्कर	१९	स.वृ.	३७५
१०४७	शङ्कावली	१५	,,	३५२
१५२३	शङ्ख	४८	द.द.	४६४
११४	शङ्खद्युति	६	सम.	२३८
७२	शङ्खधारी	६	,,	२३३
७२	—शङ्खनारी.	६	,,	२३३
७१७	—शङ्खारिणी	१२	,,	३०६
२२९	शतनु,लीला.	७	,,	२४९
१३५६	शम्बर	२४	,,	४०५
३७१	शम्बरधारी	९	,,	२६४
१३०	शम्बूक.,	७	,,	२४०
११९४	शम्भु,शंकर,संभो	१९	,,	३७५
१३६५	शम्भू	२५	,,	४०७
१०३६	शम्भू.	१५	,,	३५०
६५२	शम्या	१२	,,	२९७
१०१७	शरकल्पा	१५	,,	३४७
१२६३	शरकाण्डप्रकाण्ड,	२१	,,	३८६
१५३	शरगीति.	७	,,	२४२
४९१	शरत	१०	,,	२७६
१०५१	शरभ	१५	,,	३५२
१३६७	शरभूरिणी	२५	,,	४०८
७०१	शरमेया.	१२	,,	३०४
३७३	शरलीला	९	,,	२६४
१०६०	शरहृति,वसुमति	१५	,,	३५१
१८३	शरक्षामा		वि.वृ.	५२१
५८	शरावती		अ.स.वृ.	४८५
१५९	शर्म		वि.वृ.	५१३
१२४३	—शर्वरी	२०	स.वृ.	३८२
८३८	शलभलोला	१३	,,	३३३
२९३	शल्लकप्लुत	८	,,	२५६
६२२	शल्कशकल	११	,,	२९४

३९०	शशिकरी	९	......	सम	२६५
१०४८	—शशिकला	१५	......	,,	३५२
१२२२	—शशि	१९	......	,,	३७९
१२४४	शशिधर	२०		सम.	३८३
१२७०	—शशिभृता	६	......	,,	२३३
७८	—शशिमुखी	६	......	,,	२३४
७८	शशिवदना शशिमुखी, चोरसा चउवशा, चउरशा, चउरसा, सीसा, चतुरवर्णा, चतुरंशा, मदरशीर्षा, चतुरस्र	६	......	,,	२३४
१०७	—शशिराट	६	......	,,	२३७
१२६६	शशिवदना, सरसी, पचकावली, सिद्दक, सलिलनिधि, सिद्दक, सिद्धिका, सिद्धि, धृतश्री	२१	......	,,	३८७
१०४८	—शशिलेखा	१५	......	,,	३५२
१२२७	—शशिस	१९	......	,,	३८०
८	शशी, बलाका, श्रुति	३	......	,,	२२६
३३१	शसोटकि	८	......	,,	२६०
१०४१	शान्तसुरभी	१५	......	,,	३५१
५	—शान्त	२	......	,,	२२६
४	शामउल्लाल		५२	,,	१७७
११९७	शायिनी	१७	......	,,	३६२
९४४	शारदचन्द्र, प्रिया	१४	......	,,	३३७
११५१	शार्दूल	१८	......	,,	३६८
११८३	शार्दूलललित, शार्दूललसित	१८	......	,,	३७३
११८३	—शार्दूललसित	१८	......	,,	३७३
१२०४	शार्दूलविक्रीडित	१९	......	,,	३७७
११९०	—शारदा	१८	......	,,	३७४
१००	शालभञ्जिका		......	असम	४९५
५५८	शालिनी, मालिनी	११	......	,,	२८३
१४६१	शालूर, सालू, सालूर	२९	......	षट्.	४३३
५४६	शिखण्डित	११	......	सम.	२८१

५६७	—शिखरित	११	......	गम.	२८१
११३६	शिखरिणी	१७	......	,,	३६५
३६	शिखा		१८+३२=६०	दि.जा.	९३
४०	शिखित		१८ ल+ ग=३०	,,	९३
३१२	शिथिलिभिता, हमकल	८	......	सम वृ.	२५८
४३८	—शिथिलगारिणी	१०	......	,,	२५०
१२००	शिविरा, चाह, साक	२५	......	,,	४०९
१२७	—शिप्रा	७	......	,,	२४०
४४	शिला	५	......	,,	२३१
१२०८	शिलिमुखोज्जृम्भित	१९	......	,,	३०७
३५	शिशिरशिखा		......	अ.स.वृ	४७६
१०८०	शिशुभरण	१६	......	स.वृ.	३५६
१२५	शिशुमुखी		......	अ.स.वृ.	५००
१०५	शिशुलीला		......	अ.स.वृ.	४९६
११४०	—शिशुनिता	१८	......	स वृ.	३६६
१२७	—शीर्षक	७	......	,,	२४०
१२७	—शीर्षरूपक	७	......	,,	२४०
१०४६	शीर्षविरहिता	१५	......	,,	३५१
१२७	शीर्षा, शिप्रा, शिष्या, शीर्षरूपक, शीर्षक, लक्ष्मीमेघाई, मुक्तागुम्फ	७	......	,,	२४०
१२७	शीर्ष्या	७	......	स वृ.	२४०
११४०	शुकवनिता, शिशुवनिता	१७	......	,,	३६६
१४	शुकावली		...	अ स वृ.	४७५
५९७	शुद्धकामदा	११	......	,,	२९०
२६६	शुद्धगा	८	......	,,	२५३
१४२	शुद्धध्वनी		३२	गम.	६०
६६४	शुद्धांत		......	,,	२९८
१४८	शुद्धविराटऋषभ, शुद्धविराडृषभ, शुद्धविराडार्षभ.		......	वि.वृ.	५०९
१४८	शुद्धविराडार्षभ.		......	वि वृ.	५०९
१४८	—शुद्धविराडृषभ		......	,,	५०९

४६६ शुद्धविराट.....................१० ...... स.वृ. २७
८५ शुनक... .... ६ ...... ,, ३३
७३१ —शुभ. ....१२ ...... ,, ३१
६ —शुभगति .... ७ सम. [illegible]
१०८ शुभगीता .... २७ ,, ४३
१४३१ शुभङ्कर,सुहंकर ....२७ ...... व.दं. ४२
१२६० शुभता ....२१ ...... स.वृ. ३८
४१६ —शुभोदर. .... ९ ...... ,, २६८
१४१७ शृंखलवलयित ....२६ ...... ,, ४१५
७१७ —शृंगारिणी.....................१२ ...... ,, ३०६
१९५—शूर. .... ७ ...... ,, २४६
१२४३ —शेखर.....................२० ...... ,, ३८२
४२० शेफाली. ....१० ...... ,, २६९
६३ —शेष..................... ६ ...... ,, २३२
६३ —शेषराज..................... ६ ...... ,, २३२
६३ —शेषा. .... ६ ...... ,, २३२
६४६ शेषापीड.....................११ ...... ,, २९६
१०८९ शैलशिखा.....................१६ ...... ,, ३५८
१४७१ शोभनमणि ....३० ...... व.दं. ४३५
९२ शोभना. .... २४ स,जा. ३८
१३११ —शोभा.....................२३ ...... स.वृ. ३९७
१२३५ शोभा.....................२० ...... ,, ३८१
९४० —शोभावति.....................१४ ...... ,, ३३६
६९० श्वेतमणिमाला . ...१२ ...... ,, ३०१
१९६ श्रोणी .... ७ ...... ,, २४६
२६५ श्लोक .... ८ ...... ,, २५३
१८ षट्पदी,छप्पय..................... १५२ वि.आ. १४५
७३ षट्पद..................... ...... अ.स.वृ. ४८८
११७८ षट्पदेरित.....................१८ ...... सम. ३७३
५९८ श्येनिका,श्येनी,श्येनक,श्रेणिका, श्रेणी,ताल..................... } ११ ...... सम.वृ. २९१
५९८ —श्येनी ....११ ...... ,, २९१

३०६	थद्दरा,उद्दरा	८	......	सम.	२५७
५७८	थमितशिखंडी	११	......	,,	२८८
१३२६	—धवणाभरण	२१	......	,,	४००
८०६	श्राद्दरान्ता.....................	१३	......	,,	३१९
५५४	श्रितकमला.....................	११	......	,,	२८२
१	श्री	१	......	,,	२२५
५८७	श्री, मौक्तिकमाला, कुड्मलदन्ती-	११	......	,,	२८९
६७२	—श्रीपुट	१२	......	,,	२९९
१२०	श्रीयन्त्रु...........................		२८	म.जा.	४७
८०	श्रीमती.........................		२२	,,	२८
५७६	श्रुतकीर्ति,अनवसिता,माणिक्यमाला		......	स.वृ.	२८८
५९८	—श्रेणिका.....................	११	......	,,	२९१
५९८	—श्रेणी.	११	......	,,	२९१
	स.				
४२९	—सकृद्बोधा.....................	१०	......	सम.	२६९
१४६४	सकामबाण, अशोक..............	२९	......	प.दं.	४११
३१	सखी..........................		१४	सम.	१३
१०	—सगणी	३	......	,,	२२७
५८२	—सगता.......................	११	......	,,	२८९
१४२७	सज्जन	२७	......	व.दं.	४२१
१०७५	सतशिखा........................	१६	......	सम.	३५५
११६१	सत्केतु..........................	१८	......	,,	३७०
१५४१	सत्कार...........................	९०	......	प.दं.	४६८
१५	सत्ताविशमात्रानी [विषमपदजाति.]		......	त्रि.जा.	१०४
५७	सत्तावनवर्णनादंडक	५७	......	,,	४६५
२७	सत्ताविशवर्णनादंडक	२७	......	,,	४१९
८७	सत्याशीवर्णनादंडक.............	८७	......	प.दं.	४६८
२२	सती, तरणीजा..............	४	......	सम.	२२८
३४९	सन्धुक........................	८	......	,,	२६१
१२८	सपादी........................		३१	,,	५१
१३१६	सभा...........................	२३	......	,,	४०२

११ समगलितक.................. . ग.प्र. २२२

१२ समगलितक [भ्रांतु]........... ,, ,, ,, ,,

१३ समगलितक [भ्रांतु]......... ग प्र. २२२

७६६ समदवदना.....................१२ ...... ,, ३१४

११३७ समदविलासिनी ....१७ ...... ,, . ३६६

७६ समदाकान्ता............. ..... अ स.वृ. ४८९

३७० सम्मुद्धि .... ९ ...... सम. २६४

६५६ समयग्रीहिता...................१२ ...... ,, ३००

१०२ समयवती..................... अ ग.वृ. .४१५

१४५ समानसवैया,मुक्तहरसवैया ...... १२ सम. ६२

१६९ —समाना....................., ७ ...... ,, २४४

१६९ —समानिका....................१७ ...... ,, - २४४

३२३ —समानिका. .... ८ ...... ,, २५९

११४४ समाहित ....२४ ...... ,, ४०३

६३२ समित ....११ ...... ,, २९५

१२६१ —समुच्चय ....२१ ...... ,, ३८६

५ —समुद्रकान्ता. .... अ.स वृ. ४७३

१२१९ समुद्रतता... ....१९ ...... सम. ३७९

९१ —समुद्रो .... ४ ...... ,, २२८

९०० समृद्ध,समृद्धा ....२१ ...... ,, ३३१

९०० —समृद्धा ....२१ ...... ,, ,,

२२३ सम्याक. .... ७ ...... ,, २४९

६०७ सम्मदमालिका.................. ११ ...... ,, २९२

७८४ सयल (शैल) ....१२ ...... ,, ३१६

३०१ सरधा .... ८ ...... ,, २५७

१०९९ सरभ ....१६ ...... ,, ३६०

९२४ सरमातरणी ....१४ ...... ,, ३३४

१२१४ सरल ....१९ ...... ,, ३७८

१३९ सरल .... वि.वृ ५०५

२१९ सरलाग्नि .... ७ ...... ,, २४८

५१२ सरसमुखी.............. ... . १० ...... सम. २७८

११०	सरारि		२७	सम.	४४
१२६६	—सरसी	२१	......	,,	३८७
१०९	सरसीक		......	अ.स.वृ.	४९६
४६४	सराविका	१०	......	सम.	२७३
९४	सरि	६	......	,,	२३६
२१२	—सरूप	७	......	,,	२४८
५११	सरोज	१०	......	,,	२७८
५६८	सरोजवनिका	११	......	,,	२८४
७१६	सरोजावली	१२	......	,,	३०६
११६६	—सलिलनिधि.	२१	......	,,	३८७
१२८०	सर्वगामी,कंकनी.	२२	......	,,	३९०
१३०९	सर्वगामी.	२३	......	,,	३९७
१२४६	—सर्ववदना.	२०	......	,,	३८३
१११८	सलेखा	१७	......	,,	३६१
१३१३	—सवाइ.	२३	......	,,	३९८
१३२६	—सवाइ.	२३	......	,,	४००
२३८	—सवासन.	७	......	,,	२५०
२३८	—सवासनि	७	......	,,	,,
२१०	सविपुला.		......	अ व भे.	५१२
१४२३	—सवैयो	२६	......	,,	४१६
१२६	सवैयो		३१	सम.	५०
१२९३	सवैया,मानिनी,ललिता,दिवा, मालिनी,सुदर	२२	......	,,	३९२
१३११	—सवैया	२३	......	,,	३९७
१३३४	—सवैया	२३	......	,,	४०२
१३२५	—सवैया	२३	......	,,	४००
१३३९	—सवैया	२४	......	,,	४०३
१३४३	—सवैया	२४	......	,,	४०३
१३६९	—सवैया	२५	......	,,	४०८
१३६२	—सवैया	२४	......	,,	४०७
१३५२	—सवैया	२४	......	,,	४०४

११६३ —सवैया ....२४ ...... सम. ४०७
११५७ —सवैयो ....२४ ...... ,, ४०५
१२६ सवैयो,वीर.................... ३१ ,, ५०
७९१ सव्याली. ....१३ ...... ,, ३१८
४६८ सहजा. ....१० ...... ,, २७४
३८६ सहेलिका.... .... ९ ...... ,, २६५
४ साकी.................... ...... आ.दे. ५३५
३३ साचीकृतवदना.................... ...... अ.स.वृ. ४७९
१२५ साठक.................... ३० सम. ·४९
३७ साडत्रीशवर्णनादंडक..........३७ ...... व.दं. ४६२
६० साठवर्णनादंडक. ....६० ...... ,, ४६६
१५४० साधार. ....८७ ...... ,, ४६८
१५४५ सानन्द ....१०२ ...... ,, ४६९
६४४ सान्द्रपद ....११ ...... सम. २९६
५८६ —सान्द्रपदा ....११ ...... ,, २८९
१४२३ —सामन....................२६ ...... ,, ४१६
६३३ सामपदा ....११ ...... ,, २९५
२९५ —सामाणी .... ८ ...... ,, २५६
६१७ साचक....................११ ...... ,, २९६
५ सार—.................... २ ...... ,, २२६
१५३२ सारपीयूप....................६६ ...... व.दं. ४६६
११९ सार.................... ...२८ सम जा. ४७
२९२ —सारङ्ग .... ९ ...... सम. २६६
७८१ सारङ्ग,मैनावली,मैनिका,सारगरूप,मैणाउल,मदनाकुल,सारगा,काम .... } १२ ...... ,, ३१६
१००० —सारङ्ग ....१५ ...... ,, ३४४
८६७ —सारङ्ग ....१३ ...... ,, ३३१
१५१२ सारङ्ग....................३९ ...... व द. ४६३
१००० —सारङ्गक....................१५ ...... सम. ३४४
७८१ —सारङ्गरूप ....१२ ...... सम. ३१६

३९३	—साराङ्गिक	९		सम.	२६६
१०००	—साराङ्गिका	१५		,,	३४४
१०००	सारङ्गी,लीलालेख,लीलाखेल, कामक्रीडा,साराङ्गिका,सारंग, सारगक,केशवलेख,त्रिनयन.	१५		,,	३४४
३९३	—साराङ्गिका	९		,,	२६६
७८१	—सारङ्गा	१२		,,	३१६
३९३	—सारङ्गीय.	९		,,	२६६
८५४	सार्द्धपदा.	१३		,,	३२५
३९३	—सारवक.	९		,,	२६६
४९०	—सारवती	१०		,,	२७६
१०९६	सारवरोहा	१६		,,	३५१
५	—सारस	२		,,	२२६
५०८	सारस	१०		,,	२७८
८७१	सारसनावली,विभावरी.	१२		,,	३२८
१११	सारसमाला.		२८	,,	४४
१०३३	सारसिका, हारवती,पमङ्गल, नूतन,रक्षण	१५		,,	३४९
११८	सारसी.		२८	,,	४५
४९०	—सारस्वती	१०		,,	२७६
११९०	सारस्वती,शारदा	१८		,,	३७४
२८१	सारावनदा.	८		,,	२५४
९८	सारिका			अ.स श्लु.	४९४
१२५९	सारिसुन्दरी	२१		सम.	३८६
५	सारु,चारु,शानु,सार,सारस	२		,,	२२६
१३८०	—सारु	२५		,,	४०९
६४५	सालन	११		,,	२९६
१५९	—सालका.	७		,,	२४३
११६७	—सालसा.	१८		,,	३७०
८३१	—साला	१३		,,	३२३
१४६१	—सालि	२९		व.दं.	४१२
१४६१	—सालिर.	,,		,,	,,
११६	सावट्टे	३		सम.	२३८

१४२३	—सावन	२६	……	सम.	४१
९५	साहूति.	६	……	,,	२३
१२८८	—साहसी	२२	……	,,	३९
६६६	माक्षी	१२	……	,,	२९
६९०	सिक्तमणिमाला,श्वेतमाणिमाला.	१२	……	,,	३०१
१२९७	सितस्तवक, पारिस्तवक	२२	……	,,	३९४
१२६६	—सिद्धि	२१	……	,,	३८५
१२६६	—सिद्धक	२१	……	,,	३८५
१२६६	—सिद्धिका	,,	……	,,	,
६९	सिन्धुरया	६	……	,,	२३३
१२६६	—सिंहक.	२१	……	,,	३८५
१४७५	सिंहविक्रीडमोटो	३०	……	य दं	४३६
१०२०	सीता	१५	……	सम.	३४७
५९९	सीधु	११	……	,,	२९१
१०३४	सीरिणी	१५	……	,,	३५०
७८	—सीसा	६	……	,,	२३४
७	—सीसा	३	……	,,	२२६
८११	सुकर्णपुर	१३	……	,,	३२०
९६५	सुकेशर	१४	……	,,	३४०
१०२७	सुकेसर,सुखेलन	१५	……	,,	३४८
५५५	—सुकृति	११	……	,,	२८२
१४९३	—सुख	२६	……	,,	४१६
८९६	सुखकारिका.	१३	……	,,	३३१
१३६९	—सुखदा	२५	……	,,	४०८
११६३	सुखदा, विष्णु, सुरेश्वर, कोकी, मुक्ताहरा, मुक्तहरा, सवैया, माधवी.	२४	……	,,	४०७
९९७	सुखदा	१४	……	,,	३४४
१३६९	—सुखदानी	२५	……	,,	४०८
६९३	सुखरैल.	१२	……	,,	३०९
११०१	सुखसार	१६	……	,,	३६०
११०४	सुखसार.	,,	……	,,	,,
६६५	सुखानन्द	१२	……	,,	२९८

१०२६	—सुखेलक. १५	......	सम.	३४८
१०२७	—सुखेलक १५	......	,,	३४८
४३९	सुखेला ....१?	......	,,	२७०
१	सुगण	१७	अ.स.जा.	७३
६	—सुगत	७	सम.	३
१४५	—सुगतसवैयो	३२	,,	६२
६	सुगति,सुगत,शुभगति	७	,,	३
२	—सुगलितक	५२	ग.प्र.	२१८
३७५	सुगन्धि. ९	......	सम.	२६४
१४६	सुगीति	. ५९	आ.गी.प्र.	१२४
१००	सुगीतिका	२५	सम.	४१
६०६	—सुचित्र ११	......	,,	२९२
१३६९	—सुछंद २५	......	,,	४०८
७२२	सुतल १२	......	,,	३०७
३८	—सुतसंगक. ५	......	,,	२३०
१२४	सुदायि ६	......	,,	२३९
११८४	सुधा. १८	......	,,	३७४
९	सुधा.	......	अ.स.वृ.	४७४
४९६	—सुधागत.. ....१०	......	सम.	२७७
१३३९	—सुधाप. २४	......	,,	४०३
१४४२	सुधाधार..........................२७	......	वं.दं.	४२६
५४७	सुधाधारा........................११	......	सम.	२८२
९६१	सुधाधरा १४	......	,,	३३९
११३८	सुधाधारा........................१७	......	,,	३६६
१५००	सुधानिधि.........................३२	......	वं.द.	४५९
१३२७	सुधालहरी........................२३	......	सम.	४००
८५८	—सुनन्दिनी......................१३	......	,,	३२६
२	सुन्दरगलितक,सुगलितक	५२	(ग.प्र.)	२१८
१२९३	—सुन्दर..........................२२	......	सम.	३९२
१३२३	—सुन्दर..........................२३	......	,,	३९९
१३२३	सुन्दरिका,सुन्दरी,सुन्दरिया,सुन्दर.२३	......	,,	३९९
१३२३	—सुन्दरिया .... ,,	......	,,	,,
७३७	—सुन्दरी.........................१२	......	,,	३११

११३३	—सुन्दरी	२३	......	सम.	३९९
१३६९	—सुन्दरी	२५	......	,,	४०८
७	सुन्दरी, सुरमालिका, कमला, वियोगिनी		......	अ स वृ.	४७३
९५४	सुपवित्र,पवित्र	१४	......	सम.	३३८
५	सुप्रतिष्ठाछन्द	५	......	,,	२२९
२३८	—सुवास	७	......	,,	२५०
२३८	—सुवासा.	,,	......	,,	,,
१७५	—सुभग	७	......	,,	२४४
१५७	सुभग, उद्धत,उद्धतचाली		४०	मा द.	६८
७५९	सुभद्रावतरणी	१२	......	सम.	३१३
६०३	सुभद्रिका,सुमुद्रिका,भद्रिका.	११	......	,,	२९१
१३१०	—सुभाग	२३	......	,,	३९७
२५४	—सुमत	७	......	,,	२५१
५५५	—सुमनक	११	......	,,	२८२
१३६९	—सुमिला	२५	......	,,	४०८
६२३	सुमुखी	११	......	,,	२९४
१३२५	—सुमुखी	२३	......	,,	४००
६०३	—सुमुद्रिका	११	......	,,	२९१
५५६	सुमेरु	११	......	,,	२८२
१३२	सुमोहिता	७	......	,,	२४१
३०३	सुरक्रीडा	८	......	,,	२५७
१७१	सुरद्रु		......	वि वृ.	५१७
१२६८	सुरनर्त्तकी	२१	......	सम.	३८७
१६९	सुरभि		......	वि.वृ	५१६
७	सुरमालिका		......	अ स.वृ	४७३
४८३	सुरयानवती	१०	......	सम.	२७५
१२२०	सुरसा	१९	......	,,	३७९
११६	सुरहिता		......	अ.स वृ.	४९८
४४	सुराडया		......	,	४८१
१५२८	सुराम,पौण्ड्रक,दंडा		५७	म द.	४६५
४३०	सुराक्षी	१०	......	सम.	२७०
१४२	सुरि	७	......	,,	२४१

३०	सुरुपी		१४	सम.	१३
१३६३	—सुरेश्वर	२४	......	,,	४०७
२९	—सुलक्षण		१४	,,	१२
२९	सुलक्षणी, सुलक्षण		१४	,,	१२
१	सुललित		६६	वि.जा.	१२९
७३२	—सुललित.	१२	......	सम.	३१०
१०५३	सुललिता.	१६	......	,,	३५९
१२१२	सुललिता.	१९	......	,,	३७८
४६	सुलू,करता,फलमुखी.	५	......	,,	२३१
१२४६	सुवदना,सर्ववदना	२०	......	,,	३८३
७६३	सुवनमालिका,उपवनमालिका	१२	......	,,	३१३
२३८	—सुवास	७	......	,,	२५०
२३८	—सुवासक.	,,	......	,,	,,
४९६	—सुवागत.	१०	......	,,	२७७
२३८	—सुवासा	७	......	,,	२५०
७६१	सुविहिता	१२	......	,,	३१३
५८९	सुवृत्ति	११	......	,,	२९०
१२३३	सुवंशा	२०	......	,,	३८१
४८१	सुषमा,वामा,सुषुमा	१०	......	,,	२७५
४८१	—सुषुमा	,,	,,	,,	,,
१४३१	—सुहकर	२७	......	व.दं.	४२१
८४८	सुक्षमा	१३	......	सम.	३२५
१४०९	सूरसूचक	२६	......	,,	४१४
३३	सूरिणी	५	......	,,	२२९
१०३३	—सृकण	१५	......	,,	३४९
३६६	—सृता	९	......	,,	२६३
३४४	सृतमधु	८	......	,,	२६१
५९८	—सेनक	११	......	,,	२९१
६४१	—सेनिका.	११	......	,,	२९६
५९०	—सेहेल	११	......	,,	२९०
६४१	सैनिक,सैनिका	११	......	,,	२९६
१२९	सैरवी	७	......	,,	२४०
१५३१	सोत्कठ,दद.	६३	......	व.दं.	४६६

११३ सोपधि	६	......	सम.	२३८
२५५ —सोमक	८	......	,,	२५२
२५५ —सोमकान्त	,,	,,	,,	,,
२५५ —सोमकन्तो	,,	,,	,,	,,
८७ —सोमकुल	६	......	,,	२३५
२५५ —सोमकतो	८	......	,,	२५२
२५५ —सोमकान्त	,,	,,	,,	,,
७२ —सोमराज.	६	......	,,	२३३
७२ सोमराजी,शखधारी,अर्द्धभुजंगी,हरिशंखाणा,शखनारी,सोमराज.	६	......	,,	२३३
११२ सोमश्रुति	६	......	,,	२३८
९ सोरठा,सौराष्ट्री,सौराष्ट्र,पूर्वादुहो.			अ.स.जा.	७९
१३८८ सौदामनदाम.	२५	......	सम.	४११
५४३ सौधांघ्रि	११	......	,,	२८१
६१३ सौभगकला	११	......	,,	२९३
१४५९ सौभाग्य.	२९	......	व द.	४३१
४४२ —सौभाग्यवती	१०	......	सम.	२७१
१४४४ सौममाला	२७	......	म.छं.	४२६
३६ सौम्याशिखा, अनंगक्रीडा......		६४	शि.जा.	९९
१७७ सौरकान्ता	७	......	सम.	२४५
१४१ सौरभक,सौरभ,सौरलक.......		......	वि.वृ.	५०६
१४१ —सौरभ		......	,,	,,
६०४ सौरभवर्द्धिनी	११	......	सम.	२९२
१२४८ सौरभशोभासार	२०	......	,,	३८३
४१ सौरभसंचित,प्रमालिका........		.. ...	अ.स.वृ.	४८१
५३ सौरभि	६	......	सम.	२३६
१५७ सौराष्ट्री		......	वि.वृ.	५१९
९ —सौराष्ट्र		......	अ.स.	७९
९ —सौराष्ट्री		......	,,	७९
१४१ —सौरलक		......	वि.वृ.	५०६
१५८ संकलि		......	वि.वृ.	५१९
९०५ —संवल्गाधार	१४	......	सम.	३३९

९०५	सकल्पासार,सकल्पाधार	१४	......	सम	३१२
४७३	—सगतिका	१०	......	,,	२७४
७७४	सगमवती	१२	......	,,	३१५
१	सगलितक		५२	ग प्र.	२१८
१४८	सगीति		६१	आ गी प्र.	१२५
१५२७	सग्राम,पद्मराग,तक्षक,कालदड,चंद्रेश,चद्र	५४	......	द.द.	४६५
४७३	—सजुक्ता	१०	......	सम.	२७४
४७३	—सजुत्ती	,,	......	,,	,,
४७३	—सजुता	,,	......	,,	,,
१५४६	सदोह	१०५	......	द.द.	४७०
२८९	सध्या, चोघा.	८	......	सम.	२५५
१२	सपातशीला.		......	अ स दृ.	४७५
९१९	सबोधा	१४	......	सम.	३३४
३३७	—सभाषा	८	......	,,	२६०
३३७	—समासा	८	......	,,	२६०
१३३३	सभूतशराधि	२३	......	,,	४०२
११९४	—संभो	१९	......	,,	३७५
७६६	समदवदना	१२	......	,,	३१४
३१	—समोहा.	५	......	,,	२२९
३१	—समोहासार	५	......	,,	२२९
४७३	—सयुक्ता	१०	......	,,	२७४
४७३	—सयुगा	१०	......	,,	,,
४७३	—सयुत	१०	......	,,	,,
४७३	सयुता,सद्गतिका,सयुगा,सयुत,सजुत्ती,सयुक्ता,सगतिका,सजुक्ता,गीतक,सज्जुता,कमला.	१०	......	,,	२७४
१२३६	संलक्षलीला	२०	......	,,	३८१
६४०	सश्रयश्री	११	......	,,	२९६
५३८	सम्रतशोभासार.	११	......	,,	२८१
१५४२	संस्कार	९२	......	द द	४६९
	संस्कारी		१६	सम.	१६

११३	सोपधि	६	सम.	२३८
२५५	—सोमक	८	,,	२५२
२५५	—सोमकान्त	,,	,,	,,
२५५	—सोमकन्तो	,,	,,	,,
८७	—सोमकुल	६	,,	२३५
२५५	—सोमकंतो	८	,,	२५२
२५५	—सोमकान्त	,,	,,	,,
७२	—सोमराज.	६	,,	२३३
७२	सोमराजी, शखधारी, अर्द्धभुजंगी, हरिशखाणा, शस्त्रनारी, सोमराज.	६	,,	२३३
११२	सोमश्रुति	६	,,	२३८
९	सोरठा, सौराष्ट्री, सौराष्ट्र, पूर्वीदुहो.		अ.स.जा.	७९
१३८८	सौदामनदाम.	२५	सम.	४११
५४३	सौधांघ्रि	११	,,	२८१
६१३	सौभगकला	११	,,	२९३
१४५९	सौभाग्य.	२९	व.द.	४३१
४४२	—सौभाग्यवती	१०	सम.	२७१
१४४४	सौममाला	३७	व.दं.	४३६
३६	सौम्याशिखा, अनेगक्रीडा	६४	शि.जा.	९२
१७७	सौरकान्ता	७	सम.	२४५
१४१	सौरभक, सौरभ, सौरलक.		वि.वृ.	५०६
१४१	—सौरभ		,,	,,
६०४	सौरभवर्द्धिनी	११	सम.	२९२
१२४८	सौरभशोभासार	२०	,,	३८३
४१	सौरभसंचित, प्रमालिका		अ.स.वृ.	४८१
९३	सौरभि	६	सम.	२३६
१५७	सौराष्ट्री		वि.वृ.	५१२
९	—सौराष्ट्र		अ.स.	७९
९	—सौराष्ट्री		,,	७९
१८१	—सौरलक		वि.वृ	५०६
१७८	संकलि		वि.वृ.	५११
६०५	—संकल्पाधार	१४	सम.	३१९

८१	—स्रग्विणी	६	……	सम.	३३५
७१७	स्रग्विणी,शृङ्गारिणी,लक्ष्मीधर, लक्ष्मीधरा,चदायणा,चदाणा, चद्रानन,काममोहिनी,चदाना, मलया,कामिनीमोहन,हिगुदी, झपताळ.	१२	……	,,	३०६
१८२	स्वनकरी	७	……	,,	२४५
६६७	स्वरवर्दिणी.	१२	……	,,	२९९
२१२	—स्वरूप	७	……	,,	२४८
१२९१	स्वर्णाभर्ण	२२	……	,,	३९२
५८२	—स्वगता.	११	……	,,	२८९
५८२	स्वागता,स्वगता,सगता,स्वागत.	११	……	,,	२८९
५८२	—स्वागत	,,	……	,,	,,
१८८	स्विदा	७	……	,,	२४५
८३९	स्विन्नशरीर	११	……	,,	३२४
१३५२	स्वैरिणीक्रीडन,गंगोदक,जानकी,खंजना, गगाधर, लक्ष्मी, लच्छी,सवैया.	२४	……	,,	४०४

ह.

३०५	हठिनी	८	……	,,	२५७
३२६	—हनुमत	८	……	,,	२५९
६०	—हर	५	……	,,	२१२
११४	हरगीत		२८	,,	४५
२०	हरगीति		२८	अ स	८४
४०१	—हरसुख	९	……	सम	२६७
९९१	हरलीला,हरिलील	१४	……	,,	३४६
२४१	हर्षिणी	७	……	,,	२५०
३०	—हरि	४	……	,,	२२९
११२७	हरि	१५	……	,,	३६४
११९०	हरि	२५	……	,,	४११
६२८	हरिकान्ता	११	……	,,	३१४
११२	हरिगीत		२८	,,	४४

२४ संस्कृतिछंद......................२४ ...... सम. ४०२
४७३ —सहातिका....................१० ...... ,, २७४
१५३५ सहार.........................७५ ...... व.द. ४६७
६९ सिंधुरया...................... ६ .... सम. २३३
११६४ सिंधुसौवीर...................१८ ...... ,, ३७०
८२३ —सिंहनाद....................,१३ ...... ,, ३२१
१०११ सिंहपुच्छ......................१५ ...... ,, ३४६
२७९ सिंहलेखा....................... ८ ...... ,, २५४
१४३२ —सिंहविक्रांत.................२७ ...... व.दं. ४२३
१४३५ सिंहविक्रिड....................२७ ...... ,, ४२५
५२ —सिंहविलोक्ति.............. १६ ,, २०
११५६ सिंहविस्फूर्जित ....१८ ...... सम. २६८
५२ सिंहावलोकन,सिंहविलोकित ... १६ ,, २०
१५० सिंहिनी,वञ्जरीगीति,वल्गुगीति. ६२ आ.गी.प्र. १२५
९८० —सिंहोद्धता.................१४ ...... सम ३३६
९४० —सिंहोन्नता................. ,, ... ,, ,,
१५१ —स्कन्धक .... ६४ आ.गी.प्र. १२६
२४४ स्तरधि. .... ७ ...... सम. ,२५१
३ —स्त्री....................... २ ...... ,, २२५
८३ स्थाली,खडा .... ६ ...... ,, २२५
१५५ स्थूला........................ ५ ...... ,, २४२
३५५ स्निग्धा,मणिमध्या. .... ९ ...... ,, २६२
२ स्नु............................ १ ...... ,, २२५
४१७ स्फुटघटिता .... ९ ...... ,, २६८
६७२ —स्फुट ....१२ ...... ,, २९९
१००२ स्फोटमीड......................१५ ...... ,, ३४५
१८६२ स्मारमालाकुल ....२९ ...... व.दं. ४३२
१०५२ स्रग्,माला.....................१५ ...... सम ३५२
१२५८ स्रग्धरा ....२१ ...... ,, ३८५
१२५८ स्रग्धरा,रूपकमाला,रूपामाला, रूपमाला,रक्तधरा. } २१ ...... ,, ३८५

८१	—स्रग्विणी	६	......	सम.	२३५
७१७	स्रग्विणी,शृङ्गारिणी,लक्ष्मीधर, लक्ष्मीवरा,चद्रायणा,चदाणा, चद्रानन,काममोहिनी,चदाना, मलया,कामिनीमोहन,हिंगुदी, झंपनाळ.	१२	......	,,	३०६
१८२	स्वनकरी	७	......	,,	२४५
६६७	स्वरवर्षिणी.	१२	......	,,	२९९
२१२	—स्वरूप	७	......	,,	२४८
१२९१	स्वर्णाभर्ण	२२	......	,,	३९२
५८२	—स्वगता.	११	......	,,	२८९
५८२	स्वागता,स्वगता,सगता,स्वागत.	११	......	,,	२८९
५८२	—स्वागत	,,	......	,,	,,
१८८	स्विदा	७	......	,,	२४५
८३९	स्विन्नशरीर	१३	......	,,	३२४
१३५२	स्वैरिणीक्रीडन,गगोदक,जानकी,खजना, गगाधर, लक्ष्मी, लच्छी,सवैया.	२४	......	,,	४०४

ह.

३०५	हठिनी	८	......	,,	२५७
३२६	—हनुमत	८	......	,,	२५९
६०	—हर	५	......	,,	२१२
११४	हरगीत		२८	,,	४५
२०	हरगीति		२८	अ स.	८४
४०१	—हरमुख	९	......	सम	२६७
९९१	हरलीला,हरिलील	१४	......	,,	३४६
२४१	हर्षिणी	७	......	,,	२५०
३०	—हरि	४	......	,,	२२९
११२७	हरि	१७	......	,,	३६४
११९०	हरि	२५	......	,,	४११
६२८	हरिकान्ता	११	......	,,	२९४
११२	हरिगीत		२८	,,	४४
११३	—हरिगीता		२८	,,	४५

२३	—हरिणप्लुता		......	अ.स.वृ.	४७७
११७५	हरिणप्लुत,हरिणप्लुता १८		......	सम.	३७२
११७५	—हरिणप्लुता... ....१८		......	,,	३७२
११७४	—हरिणाभिनंदन १८		......	,,	३७२
६२१	—हरिणी.....................११		......	,,	२९४
११२६	हरिणी १७		......	,,	३६४
१४	हरिणी,कमालि,कमल.......... ३		......	,,	२२७
२८	हरिणी..........................	३१		अ.स.	८८
२३	हरिणीप्लुता,हरिणप्लुता.......		......	अ.स.वृ.	४५७
३३१	हरित्........................ ८		......	सम.	२५९
१२८६	हरितकी... ....२२		......	,,	३९१
३१५	हरिपद,हतपद................ ८		......	,,	२५८
१२	हरिपद..........................	२७		,,	७९
१६१	हरिप्रिया	४६		मा.दं.	७०.
८१५	—हरिमुख १३		......	सम.	३२०
६३०	—हरिरूप......................११		......	,,	२९१
६३०	हरिरूपक,हरिरूप..............११		......	,,	२९१
२८	हरिलुप्ता.........................		......	अ.स.वृ.	४७८
९९१	—हरिलील १४		......	सम.	३४३
९९२	हरिलीला.......................१४		......	,,	३४३
८९५	हरिवनिता,उपनमिता १३		......	,,	३३१
७२	—हरिशंखाणा ६		......	,,	२३२
९६३	—हरी १४		......	,,	३३९
४०१	—हलनमुख ९		......	,,	२६७
४०१	हलनमुखी,हरमुख,हलनमुख.... ,,		......	,,	,,
६२	हलि,जनमि,भ्रमक,जमकाणा, जमक,यमक,आत्मक......	५	......	,,	२३२
३८४	हलोद्गता................... ९		......	,,	२६५
२९	—हावल	१४		,,	१०
७५८	हावलिका १२		......	,,	३१३
२५	—हाकलिका	१४		,,	१०
२५	हाकली,हाकल,कालिक ...... हाकलिका..................	१४		,,	१०

११०५	हरि[illegible] ... ११	......	स्क	५०५
१०७	हरिहर[illegible] ... ६	......	,,	११०
११८०	—हार ... १४	......	,,	२०३
१०११	—हारकी ... १५	......	,,	११५
१५	—हारा ... ५	......	,,	११५
११३०	—हारहार ... १०	......	,,	२०१
१११०	हरि[illegible] ... १०	......	—	१८३
१५	—हरि ... ५	......	,,	११५
१५	हरिण,[illegible],हरि,हरिणी,हरा, हरिणाक्ष,[illegible] ... १५	......	,,	११५
१५	—हरिण ... ५	......	,,	११५
१५	हरित ... ५	......	,,	११०
७१७	—हिंदु ... ११	......	,,	१०८
१५५	हिंदू,[illegible] ... ७	......	,,	१०१
१५८	हिंदी ...	४०	,,	६४
१५	हिरण ...	१८	अग	८४
५३०	—हीनी ... ११	......	दस	१३५
४५	ही ... ५	......	,	११९
११६८	हृदयकर्ण ... १५	......	,,	४०८
८८	हेमन्त ...	......	अग द	४५९
५३०	हेतली ... ११	......	दस	१३५
८०	हेर,हेरक,[illegible] ...	११	,,	३०
१८०	हेरा ... ७	......	,,	१४५
११८०	—हेर ... १८	......	,	१०३
११८०	हेरक हेर,हारक,हेरा ... १८	......	,,	१४३
८०	—हेरक ...	३३	,	३०
११९१	हेरकराहार ... १८	......	,,	१४५
५०३	हारिणि ... १०	......	,,	३३०
११८०	—हेरा ... १८	......	,,	१४३
४३५	हेरार्,[illegible] ... १०	......	,,	३००
४	हेरामणि ...	१०८	रि मा.	११३
११५	—हरार ... ८	......	राम	३५८
११५	हरि ... १४	......	,,	३४४

रणपिंगल.

मात्रामेळजाति.

समजाति.

एकथी ते चार मात्रा सुधीनी जाति उपयोगमां आवे एम न होवाथी एनी रचना कोइ करतु नथी.

याज्ञिक आदि छन्ना सामान्य नाम छंद प्रभाकर उपरथी लीधा छे

याज्ञिक. ५ मात्रानी ८ वृत्ति थायछे.

१ गमक. अते लघु. बीजी मात्राए ताळ.

कळ †वाण, ५‡
पद आण, ५
रव* अन्त, ५
भर सन्त. १. ५
भय ताळ, ५
समाळ; ४
ते गमक, ७
कळ समक. २. ८

पिंगलादर्श तथा गणप्रस्तारप्रकाशमा पाच लघुना आणमा बतु छे, पण तेम थवाथी वर्णवृत्त थइ जाय, माटे बीजाओए त मत पाळ्यु नथी जुवो पृ २३२ अक ६२

†मात्रामेळ जातिमा ज्या ताळ आवेछे, ते अक्षरो पण जाडा मूक्या छे.

‡प्रत्यक जातिना प्रत्येकचरणनी आड जे आकडा मूकेला छे, ते तेटली मात्राना एकदर जेटलो रूप (वृत्ति) थायछे, ते माहेलु तेटलामु रूप छे एम समजवु *लघु

रागी. ६ मात्रानी १३ वृत्ति थायछे.

२ वाम. त्रीजी अने छट्ठी मात्रा लघु आणवी. १,४ मात्राए ताल.

छ कल नाम, ८
जाति वाम; ७
त्रण छ हारां, ८ ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ १गुरू
कदि न धार. ३. ८
एक उपर, १२
ने श्रुति पर; १२
नयन ताल, ८ ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ बे ताल आवे
चरण घाल. ४. ८

गणप्रस्तारप्रकाशमा नण गुरु लाववां केहेछे पण ते जुवो वर्णछंदना अं ७

लौकिक. ७ मात्रानी २१ वृत्ति थायछे.

३ कान्ता, कन्ता. अन्ते ग ल. १, ५ मात्राए ताल.

मुनि कल जांह, १३
कान्ता मांह; ९
गल धर अन्त, १३
तुं धीमन्त. ५. ९
एके ताल, ९
पांचे भाळ; ९
बे धर एम, १२
फावे जेम.

४ वसुमति. १,५ मात्राए ताल.

वसुमति जात, १३
कुल कल सात; १३
प्रथमे शरे, ५
ताल तुं करे. ७. ७

५ चटुल. ४+३.=७. १,५ मात्राए ताल.

कल श्रुति करो, ८
त्रण पछी धरो; ८
चटुले घाल, १०
शशि शर ताल.८. १३

६ सुगति,सुगत, शुभगति. ४,३ मात्राए यति. १,५ मात्राए ताल.

मुनि कल, गणो, ८
सुगति, भणो; ९
श्रुति यति, धरो, ८
चरम‡ ग, करो.९. ८ ‡अन्ते.

वासव. ८ मात्रानी ३४ वृत्ति थायछे.

७ मधुभार, छवी, वसुकला. २+३ (न के गल)+ग ल=८
३,६ मात्राए ताल.

कल आठ मांह, १८
बे प्रथम ज्यांह; २०
पछी त्रिकल धार, २१
ग ल उपर सार.१०. २१

त्रण छ पर ताळ,	२१
छत्री मांहि घाल;	१८
मधुभार एम;	१८
रच आर्णा प्रेम. ११.	१८
वसुकलन आम,	२१
रच आर्णी हाम;	१८
कर ईश गान,	१८
मळशे ज मान. १२.	१८

वाणीभूषणमां सगण+गा ल=८ मात्रा आणवा कह्यु छे, पण तेम थवाथी तो वर्णवृत्त थइ जाय, माटे तेनो हेतु एक चोकलाओ+जगण आणवानो जणायछे, एम प्राकृतपिंगळसूत्रनी टीकामां लख्यु छे वळी प्रा. पि. सूत्र, छंदसार, भगवतपिंगळ, इत्यादिमां तो मात्र आठ मात्राज आणवा कह्यु छे छंद शृंगारमां ५ मात्रा+ग+ल आणवा कह्यु छे, वळी मधुभारनाज मापनी पाछवाभे वसुकला जाति कही छे, अने चिंतामणि तथा भाषाछंदमंजरी वाळाए एनेज छत्री जाति कही छे

छंदोरत्नमुक्तावलीमां एम कह्यु छे के—

"सुरा जगण सार, वसुकलसुदार;
मधुभार वृत्त, मानय सुतत्त"

आंक. ९ मात्रानी ५५ वृति थायछे.

८ चरण. (ट)६+(ड) ३. एमां अन्ते सगण. १,७ मात्राए ताळ.

छ उपर त्रण चिपे,	२१
अंत सगण दीसे;	२०
नव कळ पद धरो,	२१
चरण जाति करो. १३.	१६

ताल प्रथमे परे, २०
सात उपर करे; २०
एम ताल धरे, १९
चरण उपर खरे. १४. २१

९ गंग. मात्रा ९ अंते बे गुरु. १, ६ मात्राए ताल.

नव मत्त आणो, ९
ते गंग जाणो; ४
गुरु बेज छेला, ९
कविए कहेला. १९ १९

आ छंद प्रभाकरमा नवी जाति रूपी छे.

दैशिक. १० मात्रानी ८९ वृत्ति थायछे.

१० दीपक, दीप. ४+२+ज=१०. ३, ८ मात्राए ताल.

कल चार पर बेज * १२
लघु धार पद तेज, १२
पछी जगण धर छेह, ११
दश कल दीपक एह. १६. ११
गुण उपर धर ताल, ११
वसु उपर वळी भाळ; ११
ए दीप पण लाल! ९१
रट प्रभुगुण तुं वाल!. १७. ९९

* "बेज–लघु" एम बीजा पदसाथे अन्वय करवो

छंद शृंगार, भगवतपिंगळ अने पिंगळादर्शमा आ जातिनी नव मात्रा कहेछे ते भूल छे नागराजपिंगळमा स, न, ग, ल एवु माप छे, पण ते वर्णमेळ थइ जायछे. जुवो पृ २५९ अंक ३२८ लखपत-

जशसिंधु, छंदशास्त्र, वृत्तमौक्तिक अने वाणीभूषणमां ४+ल+ल+ज, एवु माप छे. भाषाछंदोगअरांमा छेल्लो लघु लाववा केहेछे. वाग्वल्लभमां ४, ६ ए यति कही छे

छंद-प्रभाकरमां आ जातिनुं नाम " दीप " लख्यु छे, अने तेमां प्रथम एक चोकलिया पछी अतमां (। । । ऽ ।) एवी छ मात्रा लाववा कह्यु छे.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां आनु माप आ प्रमाणे छे — गुरु अतवाळो एक चोकलियो+गुरु अतवाळो एक पचकलगण+1 लघु=1० मात्रा.

११ रुडा. मात्रा १० तेना अक्षर ७.३,८ मात्राए ताल.

दशमात्रिका देख, ३९
वरणो मुनि पेख; ३९
जातिज रुडा भाळ, ४१
त्रण आठ छे ताल. १८. ३९

१२ रतिकरी. (५+१+ज)=१० मात्रा. १,६ मात्राए ताल.

पांच पर ल रखाय, ५४
जगण ते पर थाय; ५०
चरण कल दश मांय, ५५
रतिकरी रचुँ त्यांय. १९. ५०
ताल प्रथम गणाय, ५४
छ उपर अवर थाय; ५५
एम ठीक रखाय, ४९
वे सरस पदमांय. २०. ५४

रौद्र. ११ मात्रानी १४४ वृत्ति थायछे.

१३ आभीर, आहीर. (७+ज) ११ मात्रा. १,५,९ मात्राए ताल.

कुल कल कर अगियार, ८९
[1]अते जगण चरणे निरधार; ८९

आभीर आहीर नाम, ८०
जाति रच शुभ आम.२१. ८१
छे शशि शर पर ताल, ८८
वळी नव पर ठीक भाळ; ८९
ए रीतनी शुभ चाल, ८१
आभीरमां रच वाल. २२. ८०

एमां अंते गुरु लघु आववा कवि दलपतराम केहेछे; छंदःशास्त्र, श्रीपिंगल, गौड पिंगल, लघुपतजशरिंधु, छंदःप्रभाकर अने वाणीभूषणमां अंते जगण आववा कयु छे. जे पेहेला सात मात्रा छे, त्यां ३ ४ गण होय तो ठीक. बीजा प्राकृत पिंगल लखनाराओए पण ४ मात्राए यति पाळी छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां यति कही नथी, तेम अंते जगण आववा पण नियम बांध्यो नथी, पण तेना उदाहरणमां जगण आवेछे.

१४ रसीक. ४+७=११. तेमां अंते त्रणलघु. १,५,९, मात्राए ताल.

शिव कल रसिके गमती, १२३
छे श्रुति, हय पर विरति; १४३
चरमे कवि! लघु त्रि धर, १४१
ताल भूं शर नव उपर. २३. १४३

आदित्य. १२ मात्रानी २३३ वृत्ति थायछे.

१५ अचला. ६+६ तेमां छेल्ला ने लघु. १,५,९ मात्राए ताल.

छकल उपर, कर षट कल, २३३
अचला रच, तुं निर्मल; १५४
रवि कलमां, लल सिम धर, २२९
ताले शशि, शर नव पर.२४.२२४

१६ तुरग. च्यारे यति, यतिमां जगण आणवो नहि.

४+४+४=१२. १,५,९ मात्राए ताल.

चोकळ, त्रण यति, धरजो, ८८
रवि कल, पदमां, करगो; ९८
मति यति, तालजे, आवे. २९
तुरगे, जगण न, लावे. २५. ३१

१७ तोमर. मात्रा १२ तेमां अंते गुरु लघु. ३,६,१० मात्राए ताल.

मात्रा बधी छे बार, ९३
तुं जाति तोमर धार; १२७
अंते धरी गल भाळ, १२७
त्रण पद दिशाए ताल. २६. ९७

अक्षरमेळ प्रकरणमां तोमर वृत्त छे, पण छंदप्रभाकर, तुलसीकृत रामायण, सुखदुखमारी, वगेरे ग्रंथोमा मात्रामेळ तोमर जाति होतां अहिं दाखल करी छे.

१८ अनुफल. ८+४=१२. १,५,९ मात्राए ताल.

बार कलो सौ, आवत, १४८
यति आठे ठिक, लावत; १६७
ताल अनुफले प्रथमग, २११
चारे चारे, पछी सग. २७. २००

१९ मृदुगति. ५+७=१२. १,७ मात्राए ताल.

आणिये कला रविन, ११७
शर हय, धरी यतिन; ११८

शशि मुनि, करी सुताल, ११८
मृदुगति, सुजाति माळ.२८. ११८

धाम जातिथी यमणी था जाति छे, ३,६,९,१२मी मात्रा लघु आणवी.

भागवत- २३ मात्रानी ३७७ वृत्ति थायछे.

२० मूलचंद्र. ७,६ यति. अंते जगण. १,४,८,११ मात्राए ताल.

तेर कल मुनि, पर विराम, २१२
जगण अन्ते, पद तमाम; २१९
शशि श्रुति वसु, शिव सु ताल, २२८
ए मूळचंद्र, जाति भाळ.२९. १९०

२१ चंद्रमणि.मात्रा १३.लघु गुरुनो नियम नथी. १,५,९ मात्राए ताल.

चरण चरण प्रति मात्रिका. ८९
आवे तेर प्रमाण जो; ७७
चन्द्रमणिमां ताल तो, ९९
भू शर भक्ति जाणजो. ३० ९९

आपाळदोमसर्शमा आ जाति छे, पण ते द्विदल जेवी जणायछे

२२ अवलंबक. मात्रा १३. १,४,९ मात्राए यति.

१, ५, ९ मात्राए ताल

श्रुति श्रुति, कल पर, शर करो, १४४
जख कल, प्रतिपद, कवि! धरो; १४४
प्रथमे, शर नव, ताल छे, ८६
अवलंबकनी, चाल छे. ३१. ६१

२३ जलतरण. ९,९, यति अंते ग ल, यतिमां जगण न आणवो.

१,६,११ मात्राए ताल.

तेर कल, जलतरण, मांह, २३२
शर शरे, विरति छे, जांह;१७३
शशि पडे, ने शिवे ताल, १६०
यति विषे, जगण नव घाल २२. २२८

२४ वरवीर. ८,९, यति. १,९,९ मात्राए ताल.

यति आठे शर, राखजो, ७८
तेर कला पद, नांखजो; ८०
वरवीर जाति, चाल छे, ६०
शशि शर नव, पर ताल छे. २२.८९

पिंगळादर्शमां आ जाति १२ मात्रामां राखी छे, ते भूल छे.

मानव–१४ मात्रानी ३९० वृत्ति थायछे.

२५ हाकली, हाकल, कालिक, हाकलिका. मात्रा १४.

१,५,९,१३ मात्राए ताल.

द्विजरी स भ मां ठीक गण जाणो, ८१ [चार ल]
गण ते धरीं रवि कल आणो; ८६
अन्त गुरु धरी चौद करो, १६९
हाकली जाति सु नाम धरो. २४.१६९
ताल प्रथमपर एक करी, १७७
श्रुति श्रुति चडती योग धरी, १९७

एक बीजे शिव वर्ण खरा, १६९

त्रण चारे दश वर्ण नरखा. ३९. १६७

विप्र (चार लघु), सगण के भगण ए त्रण पैकी जे ठीक जणाय तेवा डगण रची चार मात्रा आणवी+ग एम कर्ण एटले बे गुरुनो डगण आवे तोपण अमने हरकत जणाती नथी छंदोलतामां १०+४ मात्रामां अते सगण लावबा केहेछे. वृत्तमोक्तिक, वाणीभूषण तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा १४ मात्रा (विप्र+स+भ गमे ते थइने) +ग, एम मात्रानोज मेळ कर्यो छे मागधी नागपिंगळमा स, भ के विप्रगण थइ १२+ग, पेहेला बीजा चरण (पूर्वार्द्ध) मां अक्षर ११, त्रीजा चोथा चरण (उत्तरार्ध)मा अक्षर १० लावबा केहेछे श्रीधर पिंगलमां भ+भ+४+ग रामचंद्रिका काव्यमां हाकलिका नाम छे अने तेमां सगण, भगण अने विप्रगण+गुरु लायेछे, अक्षर ११,११,१२,१२ छे.

छंद प्रभाकरमा पेहेला त्रीजा पादमा ११ ने बीजा चोथा चरणमां १० अक्षर लाववा कयु छे, अने १४ मात्रामा ९+५ मात्रा करवा नियम कर्यो छे

चिंतामणीमा पेहेला त्रीजा चरणमा १० अक्षर, बीजे ११ अक्षर, अने चोथा चरणमा १४ मात्रा आणवा कयुछे.

छदशृंगारनी एक लिखित प्रतिमा "हालक" नाम छे, ते लिखितदोष हशे एम जणायछे. तेमा १२+ग=१४ मात्रा अने ११, १०, ११, १० एम अक्षर छे

छद कामदुधावत्समा त्रण डगण+ग अने ११, १० अक्षर गणवा कह्युं छे.

छंदशास्त्रमां वृत्तमोक्तिकना जेवुज पेहेला बे चरणनु माप कर्युं छे, पण त्रीजा चोथामा डगण पैकी स के भ अने अते गुरु आणी १० अक्षर लाववा कयु छे, पण वाणीभूषण इत्यादिमा अक्षरनो ए नियम मान्यो नथी, एटले आ मात्रामेळनी जातिमां अक्षरमेळनो नियम मानवो अमने उचित लागतो नथी

२६ गजल. ४+२+४+ग+ल=१४ मात्रा.

१, ५, ८, १२ मात्राए ताल.

त्रण पर बे ड गण पर ताल, २६९ १ग्रुरु लघु
शशि शर आठ बारे ताल; २४६
कुल कल चौद चरणे थाय, २८०
गजल ज जाति सरस गणाय. २६. २६९

२७ कज्जल, कदली. १४ मात्रा. अन्ते जगण, वा तगण.

१, ५, ९, १२ मात्राए ताल.

प्रति पद कुल कल चौद धार, ३२२
अन्त जगण वा तगण सार; ३९९
भू शर निधि रवि ताल आण, ३२१
कज्जल, कदली जाति जाण. २७. ३००

२८ मधुमत्त. मात्रा १४. १, ४, ७, १०, १३ मात्राए ताल.

सकल कला चौद तो करो, ११९
प्रथम उपर त्रण त्रणे धरो; १४४
पांच ताल सर्व आणजो, ११७
मधुमत्त जाति जाणजो. २८. ११६

२९ सुलक्षणी, सुलक्षण, ७+७=१४ मात्रा.

प्रत्येक ७ मात्रामां अंते गल १,५,८, १२ मात्राए ताल

वार कल सात, ते पर सात, २२९
कुल कल चौद, छे प्रख्यात; २४६
प्रति यति आदि, शर छे ताळ, २८०
सुलक्षणीज, जाति रसाळ. २९ ३२२

छंदोलतामां आनुं नाम सुगीति आप्युं छे, पण ए नामथी आर्याप्रक-रणमां गीतिनो भेद छे, तेथी भ्रान्तिमां पडवानुं कारण मळे, माटे अमे आ जातिनुं नाम मात्र सुरूपी ज राख्युं छे.

३० सुरूपी. मात्रा १४. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

मात्रा चौद करो चरणे; १६६
'छंदार्णव' सुरूपी वरणे, १७४
भू शर भक्ति यक्ष परे, १४८
चारे चडती ताल खरे. ४०. १९३

३१ सखी. मात्रा १४. तेमां अंते म वा यगण ३,७,११ मात्राए ताल.

कल चौद सखीनी जेमां, १०
कर अन्त म वा य तुं तेमां; ६५
धर ताल श्रीजे मुनि रुद्रे. ६५
रच जाति भली सुभद्रे. ४१. १०

आ जाति "वनजारा"ना रागमां देशीमां गवाय छे.

३२ उधोर. मात्रा १४. तेमां अन्ते ग, ल. १,३,५,८,१०,१२ मात्राए ताल

कल कुल चौद पदमां आण, ३८०
गुरु लघु अन्त उपर जाण; ३२७
शशि त्रण शरे वसु दश ताल, ३६४
रवि पर उधोरे संभाळ! ४२. २४१

३३ चंपक. ८,६ यति. अंते ग, ग. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

चौद विषे गुरु, बे छेले, २५
ताल भू शर नव, जख मेळे; ८८
आठ छये यति, बे आणो. २५
चंपक जाति, ते जाणो. ४३. ५

३४ मालती. ९, ९ यति. ३, १० मात्राए ताल.

कल चौद, पदमां आणजो, १०७
यति शरे, नवमे जाणजो, १०९
ए जाति, जाणो मालती, ९३
त्रण दशे, ताळो चालती. ४४. ९२

३५ कलना. ४+४+४+२=१४. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

त्रण चोकलिया गण ठिक धर, ९८६
ते पर बे कल छूटी कर; ४०२
चौद बने कल कलनामां, ८०
ताल शशि शर नव जखमां. ४५. २२४

३६ मनमोहन. १४ मात्रा, तेमा छेल्लो नगण. ३, १० मात्राए ताल.

कर कला चौद चरण चरण, ९९२
धर प्रतिपदे अंते नगण; ४७४
त्रण दश परे ताळो सरस, ४७४
मनमोहन जाति ए सुरस. ४६. ४९७

गणप्रस्तारप्रकाशमा आनु नाम मोहन अथवा मनमोहन आप्यु छे अने तेनु माप २+५+२+५(तेमां अन्ते नगण)=१४ मात्रा एम आप्यु छे

३७ वज्रचंद्र. ६,८ यति. प्रथम नगण ने अन्ते जगण.
१,५,९,१२ मात्राए ताल.

छपर वसु, कल चौद जाण, ३१४
प्रथम नगण, अन्ते 'ज' आण, ३०१
शशि शर नव, बारे ज ताल; ३०१
नियम वजरचंद्रेग चाल. ४७. ३०१

३८ किञ्जल्क. गुरु लघुनो नियम नथी १,५,९,१३ मात्राए ताल.

कल चरणे चौद थायछे, ११९
प्रथम कले पे'लों ताल छे; ११९
श्रुति श्रुति चडती वळी करे, १२३
किञ्जल्क थाय एम खरे. ४८. १६१

३९ हंसीगति, कपिला. ६+८=१४. एक पछी चच्चारे चडती १,५,९,१३ मात्राए ताल.

पड पर वसु कल दे पूरी, ३४
हंसीगतिनी ए रूढी; ९
चौद कला कुल तो भाळो, २९
प्रथम चचारे छे तालो. ४९. ९

तैथिक-१५ मात्रानी ९८७ वृत्ति थायछे.

४० जयकरी. मात्रा १९, तेमां अंते ल, ग. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

चरण चरणमां पंदर कला, ३०१
लघु गुरु अंते आवे भला; १४९
जाति जयकरी जुगते करो, २२९
शशि शर नव जख तालो धरो. ५०. १७८

छंदःशृगार अने पिंगलादर्शमां अंते गुरुज आणवा कयुं छे अने गणप्रस्तारप्रकाशमां ६+६+३=१५ मात्रा आगवा कयुंछे अने तेना पेहेला रूपमां बे भगण अने लघु गुरु छे तथा छेल्लामां १५ लघु छे.

४१ पाइक्त. मात्रा १९. तेमां ७,८ यति. अंते सगण. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

तिथि कलमांह मुनि वसु करो, ३१४

अंते एक, सगण ठीक धरो; ३६१
'भू पर ताल, पछी श्रुति श्रुति, ३११
पाइक्तनी, गणो शुभ गति. ९१. ३०१

४२. चोपाइ, चतुष्पदी. ६+४+४(तेमां अंते गुरु होय)+ल =१५ मात्रा. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

छ पर डगण बे पछी लघु धार, ९८९
तिथि कुल कलमां छेवट हार; १३४ गुरु लघु.
चतुष्पदी चोपाइ भाळ, ३८०
शशि शर नव जल उपर ताल. ९२. ९९६

धाराबलममां अ प्रकारे अने चोपाइ एकज लखेछे, १५ मात्रामां अन्ते लघु. नागराजपिंगळमां ६+४+४+ल, ए प्रमाणे छे, पण रूपदीप पिंगळमां ८+७ तेमां अंते ग, ल, छे. गणप्रस्तारप्रकाशमा अन्ते ज, त, र, के स, लखरा केहेछे अने तेनु छेल्लु'ल्ल सर्व लघुनु आप्युं छे.

४३ वस्तु. ४+४+४+३=१९. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

त्रण चोकल पर त्रण कल धरो, ३७४
एवी पंदर कुल कल करो; ३६१
एक उपर च्यारे ताल, ३८९
वस्तु जाति विषे संभाळ. ९३. ३९९

शानी अने "जी" उमेरवाथी राग "सामेरी" थाय, एम "प्राचीन काव्य माळा"ना रसिकवल्लभादि प्रथमा पृष्ठ पेहेले लग्यु छे

४४ गोपाल. १०,५ यति. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

दशने पांच उपर, विश्राम, ४९१
एकंदर पंदर, कल आम; ९८१
'एक उपर श्रुति श्रुति, पर ताल, ६०९
ए जाति रूडी,' गोपाल. ९४.' ३७८

छंद-प्रभाकर आ जातिमां ७,८, विराम अने अन्ते जगण आणवानुं, सखी तेनु बीजु नाम भुजगिनी होवानु पण केहेछे.

संस्कारी-२६ मात्रानी १,५९७ वृत्ति थायछे.

४९ चरणाकुल. ८,८ यति,-तेमां अंते ग, ग.

१,५,९,१३ मात्राए ताळ.

प्रतिपद मात्रा, सोळ ज जाणो, १४९
अंते तेमां, बे गुरु आणो; १४९
ताल शशी शर, नव जस लावो, २२४
चरणाकुल बहु, वेश-बतावो. ९९. १७९

पिंगलादर्शमां छेवटे बे गुरु अथवा अंते यगण आणवा कयु छे, कवीश्वर दलपतराम "अंते एक गुरु होय तो नभे" एम लखेछे, पण तेम करवाथी पादाकुलक थइ जायछे.

४६ अडल, डारिल, चोपाइकुल्क. मात्रा १६.

१, ५, ९, १३ मात्राए ताळ.

चरण चरणमा मात्रा सोळे, १२
गुरु लघु को नहि जेमां तोले; २६
ताल अडलमां प्रथम उपर धर,- १९७९
पछी शर नव जस उपर ठोक कर ९६. १५४२

डारिल, बियाखरी[1]. १६ मात्रा, १,५,९,१३ मात्राए ताळ.

गुरु लघु नियम न कुल कल सोळज, १२२०
डारिल जाति पण गण एमज; ११९०
ताल प्रथम पर एमां आवे, ३३
पछी नवारे चडती लावे. ९७. ९७,

[1] मागधछंदशतक.

चोपाइकुलक. मात्रा १६. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

सोळ कळा प्रति पदमां आवे, ८०
लघु गुरुनो कंइ नियम न लावे; २२९
भाषा चोपइकुलक कहेछे, २२१
प्रथमे श्रुति श्रुति ताल रहेछे. ९८. १७५

४७ भिन्ना. मात्रा १६. तेमां अंते ल. १,५,९,१३ मात्राए ताल

भिन्नामांहि सोळ कला कर, ११३२
तेमां अंते लघु आणी धर; १०४३
शशि पर ताल धरी पछी ते पर, ११९७
चच्चारे चडती कर कविवर! ९९. १९३०

४८ घातक. ४+४+४+४=१६ मात्रा, तेना अक्षर १२.
१, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

चारे चोकल गणो सरस धर, १४९६
अक्षर तेमां द्वादश कुल कर; १९१२
षोडश कल शशि पछीं चच्चारे, ८८
ताल सरस धर घातक ज्यारे. १००. १७७

४९. पंझटिका, पद्धरी, पाधरी, पद्धडी, पज्झटिका, प्रझटिका.
४+४+४+ज=१६ ३, ६, ११, १४ मात्राए ताल

त्रण ड्गण उपरे जगण धार, ९१९
कल सोळ पद्धरी चरण चार; ९१६
गुण शास्त्र रुद्र रत्ने सुताल, ७७२
कविराज! पंझटिका तुं भाळ. १६. ७७२

वाग्वल्लभमां नवमी मात्रा गुरु लाववा कहेछे, तेमज अंते जगण के लघु लाववानी ना कहेछे, पण नागपिंगळ, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण अने

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां अंते जगण लाववा केहेछे, माटे तेनुं मत स्वीकारवा योग्य नथी. वळी छंदोवृत्तमुक्तावलीमां तो आदि छगणमां जगण आणवोज नहि, एवो खास नियम आप्यो छे, अने तेनुं नाम प्रज्झटिका आप्युं छे. वळी छंदःप्रभाकरमां पद्धटिका, प्रज्वलय के प्रज्वालिया, एवां बीजां नाम आप्यां छे, अने विशेषमां लखेछे–आनाज वमणा मापवाळाने भिखारीदासे लीलावती छंद मान्यो छे. मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां प्रज्झटिका नाम छे.

५० पादाकुलक, पायाकुलक. ४+४+४+४=१६ मात्रा,

तेमां अंते ग (चरणमां यमक आवे). १,५,९,१३ मात्राए ताल.

चार चरणमां गुरु छेवट छे,	४४४
सोळ कळानो एवो पटछे;	३८१ ३समूह.
पायाकुलक यमकथी शोभे,	८९
भू शर नव जल ताल जथोभे. १२.	१७७

"मात्रासमक" प्रकरणमां लखेला [१]चर्पट, [२]विश्लोक, [३]नवासिका, [४] चित्रा अने [५] उपचित्राना मापमांथी गमे ते चार चरण रचवामां आवे तो तेनु नाम "पादाकुलक" केहेवायछे, एम वृत्तरत्नाकरनी नारायण-भट्टी टीकामां जणाव्युं छे; छंदोवृत्तमुक्तावलीमा चार चोकलिया तेमां अंते गुरु, एम सोळ मात्रा आवे–एटले अल्प गुरुवाळा अरिल्लने पादाकुलक कह्यो छे; वाग्वल्लभ अने छंदःशास्त्रमा आनु नाम पादाकुलकज छः वृत्तमौक्तिक, छंदःशास्त्र, वाग्वल्लभ, अने लखपतजशसिंधुमां गुरुलघुनो नियम नथी, एम केहेछे, तेमज "छेले गुरुजोइये" एम पण नियम करता नथी; पण छंदःशास्त्र (पिंगळ) ना नियम प्रमाणे ज्यां विशेष नियम न होय त्या पादान्ते गुरु आणवो एम जणावी गया छे प्राकृतपिंगळसूत्रमा गुरुलघुनो नियम कह्यो नथी, एटले सोळ मात्रा बधा गुरु के बधा लघुनी नहि, पण गुरुलघु मिश्रित लाववी, एम कयुं छे वाणीभूषणमा कयु छ के:—

"अक्षर गुरु लघु नियम विरहितं, भुजगराज पिंगल परिभाणितम्
भवति सु गुम्फित षोडश कलकं, वाणीभूषण पादाकुलकम्."

गणप्रस्तारप्रकाशमा आठ आठ मात्राना प्रति यतिए प्रास मेळव्या छे, एनुं पेहेलु रुप त्रण कर्ण ने एक भगणनु थायछ अने छेल्लु रुप त्रण विप्र ने भगणनुं थायछे.

५१ अरिल्ल, अडिल्ल, अलिल्ला, अलक. ४+४+४+४=१६.

तेमां जगण न आणवो अन्ते बे ल १,५,९,१३ मात्राए ताल.

कल षोडशमां जगण ज ना रच, ११९६
द्विलघु अंते धरी रचना रच; ११८८
अलिल्ला भण शशि शर नव.उपर, १२१७
ताल वळी जस पर पाछी-धर;१३; १०६७

श्रीधर पिंगळमा जगण न लाववा कहेछे, चिन्नगेन टीकावाळुं मागधी पिंगळ, छंदार्णव अने प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीका तथा गणप्रस्तारप्रकाशमा चार चोकलिया तेमा जगण न आवे, अने अंते सगण आवे एम कयुं छे, एन प्रमाणे करी एक पदमा बे वार यमक लावीने मागधी छंद शतक एने मडिल नाम आपेछे.

उपर प्रमाणे १६ मात्रा सर्वमान्य छतां छंदोरत्नमुक्तावलीना तेनी १८ मात्रा गद्दीने नीचे प्रमाणे (जगण शिवायना चार डगण)+बे लघुनु उदाहरण आपेछे ~.

"कल धारण वारण मान विदारण,
भक्तकारण दानववशनिवारण;
मुखचंद्रसुधाकृत लोचन पारण,
जय कृष्ण कृपाकर सेवक तारण."

पण प्रारभमां बे लघु वधारवानी तेनी भूल थएली लागेछे, केमके एणेज - अरिल पछी पादाकुलक (१६ मात्रा)नुं लक्षण बांधता कयुं छे के—"अरिल्लमा अते गुरु आवे तो पादाकुलक (१६ मात्रा) थाय'! एटले तेनुज कहेवु परस्पर विरोधी [illegible] तेवुं छे,

५२ सिंहविलोकन, सिंहविलोकित., विप्र के सगण गमे ते आणीने. मात्रा १६ करवी. पण तेमा अंते सगण अवश्य आणवो.

३, ७, ११, १५ मात्राए ताल.

सगणे द्विज सोल कळा करजो, ४४२
कर जोडि 'स' छेवटमां धरजो, ४४२.

धर जो पद अंततणुं रचशो, ५४४२
रचशो ठीक सिंहविलोकित सो. १४. ४४२

छंदःप्रदीप अने छंदार्णवमां एम लख्युं छे के– "सोळ मात्रा तेमां अंते गुरु, अथवा विप्र (चार लघु) के सगण गमे ते थइने सोळ मात्रा लेवाय, पण छेल्लो तो सगणज आवे. तेमज प्रत्येक पादनो छेल्लो शब्द पछीना पादना प्रारंभमां आवे एम रचना करवी. छंदःप्रदीपमां आदि यमक राखवा कहेलुंछे" पण तेणे पोते उदाहरणमां आणी नथी. गणप्रस्तार प्रकारमां एवुं पहेलुं रूप प्रग फगं अने एक सगणनुं बताव्युं छे. मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां कह्युं छे के एमां न, न, न, ज, ल, ग =१४ वर्ण आववा.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां गमे तेवा प्रण चोकलिया आणवानुं कही अंते सगण आणवा कहेछे वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां ४+स+६+ग. एवी रीते मात्राओ आणवानुं कह्युं छे.

५३ डिल्ला, ४+४+४+भ=१६ मात्रा. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

प्रण चोकलिया पूरा सुंदर, ९९७
तेना उपर भगण सदा धर; १२०८
डिल्ला जगण न मांहि आणज, ११८७
भू शार, नव, जख, ताल प्रमाण ज. ६५. ११६४

५४ लहुआ. ४+४+४+४=१६ मात्रा. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

चोकलिया गण चार ज धरजो, ५४६
सोळ कळा ए रीते करजो; ३८१
शशि, शर, नव, नख ताल सुधारो, १७८
लहुआ जाति बने बहु सारी. ६६. १६७

५५ अलिल्ला, अनीला. चार डगण, तेमां अंते बे लघु.
१, ५, ९, १३ मात्राए ताल

चारे डगणो प्रति चरणे धर, ११९५
लघु बे अंते ते मध्ये कर; ९८९

ताळो प्रथमे पछी श्रुति उपर, ११९९
आलिला, अनिलामां लावी धर.६७. ९९७

‡छंदोलतामां आ नाम छे. मागधी छंदःशतकमा एने "विभावरी" के

महासंस्कारी-१७ मात्रानी २,५८४ वृत्ति थायछे

९६ महच्चंद्र. ८,९ यति, अंते मगण. १,५,९,१३,१६ मात्राए ताल

पद्मां सत्तर, कुल कला आणो, १३३
आठे यति ने, वळी नवे जाणो; ११९
शशि शर नव रवि, नृप महच्चंद्र, १४४
ताल धरो ठीक, कवि खरे वंदे. ६८ १३१

९७ राम ९,८ यति. अंते यगण. १,६,१२,१४ मात्राए ताल.

दश सात मात्रा, राम विषे छे, २३८
नव आठ एवी, विरति दिसेछे; ३२७
यगण विरतिये, द्यो पछी ताळो, २४१
प्रथम षट आंशा, मनुपर घाळो. ३३०

छंदःप्रभाकरमा नवो कल्प्यो छे.

पौराणिक-१८ मात्रानी ४,१८१ वृत्ति थायछे.

९८ माली. ४+४+४+४+२=१८मात्रा. १,५,९,१३,१७मात्राए ताल

चार डगण पर बे कल लावेछे, १७७
अष्टादश कल एम ज आवेछे; १७४
प्रथम पछी चचार चढे ताळो, १४९
रचना माली जाति विषे भाळो. ७०. १४६

९९ पद्धतिका. नवमी दशमी मात्रा थइने एक गुरु, तेमज अंते पण गुरु.
कहिं पण जगण न आणवो. १,५,९,१३,१७ मात्राए ताल.

अष्टादश कल पाद विषे करजो, ११६१

गुरु नव दश मळीने अंते धरजो; १०२१
पद्धतिकानी मांह जगण न धरो, १९१२
एक उपर चचारे ताल करो. ७१. ९९९

६० रण*. मात्रा १८. ९,९ यति. तेमां अंते गं. १,५,१०,१५ मात्राए ताल.
१० + ८
दश वसु कल कुल, रण जाति ए छे, ३९७
नव नवपर यति, तेमां रहेछे; २९४
शशि बाण पंक्ति, तिथि ताल तेमां, ३२७
स्वरं गुणी! पीलुनो, गाओन एमां. ७२. २४९

* आ जाति अमारा नामथी नवी बनावी दाखल करेली छे.

६१ राजीवगण‡. ९,९ यति, मात्रा १८. १,७,१०,१४,१७ मात्राए ताल.
कल सकल पुराण, पद्मां आणवी, ७३३
नव नव उपर यति, बे तो जाणवी; ६६९
त्रण मुनि दिशि रत्न, सतरे ताल छे. ७३३
राजीवगणनीज, रूडी चाल छे. ७३. ६४३

‡ छंदःप्रभाकर आने "माली" पण केहेछे, पण अंक ५८ मो "माली" जाति आथी जुदाज लक्षणवाळी छे.

६२ परिचरिता. ८, १० यति. तेमां छेल्ला बे लघु.
४+४+५+३+ल+ल. १,५,९,१३,१७ मात्राए ताल.
बे चोकलपर, पांच त्रण कला कर, ३१३९
कुल कल अढार, बे ल चरम तुं धर; ३१२६
शशि पछी श्रुति श्रुति, ताल वसु दश विरति, ४१२६
परिचरिता कवि! रचजो धरी सुमति. ७४. ३४१९

हापौराणिक-१९ मात्रानी ६,७६५ वृत्ति थायछे.

३ दोधक. १०,९ यति. १, ६, ११, १६ मात्राए ताल.
कल ओगणीश तो, चरणे रचावो, ५३९

दश ने पछी नवे, यति ठीक थाशे; १३९
भूपरे पछी शरे, चडना ज ताले, १४९
ज्ञाति पोषक तमे, कवि! एम भाळो. ७१. १४९

ओगियार अक्षरमा रूप २९३ मे ग्राहीवृत्तछे, तेने रागे अथवा 'मदालसा अने ऋतुध्वज" पृष्ट १२ मे "प्रार्थिये आदिरा सुर नुगमार्ग." ए रागे गवाशे

६४ मोहनी* मात्रा १९. अंते गुरु लघु. १,५,९,१३,१७मी मात्राए ताल

ओगणि मात्रातणां चरण श्रुति आण, ४०६२
तेने मोहनी जाति चतुर जन! जाण, ४११४
प्रथम पछी च्च्चार उपर धर ताल, ४०९७
अंतविषे गुरु लघु विचारी घाल. ७६ २७१९

* आ जाति प्रवीणसागर लेहेर ८३ मी प्रमाणे नवी बांधी छे

६५ पीयूषवर्द्ध, आनंदवर्द्धन. १०, ९ यति. अते ल ग.
१, ८, १५ मात्राए ताल

ओगणिश कल आण, प्रतिपदमांह तो, १९६२
प्रथम पछी वसु तिथि, एना ताल तो, १०२१
जाति पीयूषवर्द्ध, रचना आम छे, ११८०
ने अवर आनंदवर्द्धन नाम छे. ७७. १४०९

छंद प्रभाकरमा पीयूषवर्ष अने आनदवर्धक एवां नाम छे

६६ नरहरि. मात्रा १९. १४,५ यति. तेमा अते न ग.
३, ७, ११, १५,१८ मात्राए ताल.

मनु शरे यति ओगणीस, कल करो, २२७०
पण तेमा नगण ग अते, ठीक धरो; २०९२
त्रण पछी चच्चारे ताले शर खरी, १९७९
ए जाति तो कवि! जाणो नरहरि ७८. २०३०

महादैशिक-२०मात्रानी १०,९४६ वृत्ति थायछे.

६७ दीपकी. (दीपक–मात्रा १०नी यगणी).

३, ८, १३, १८ मात्राए ताल.

प्रति चरणनी मांह कल सकळ विश आण, ६७१८
ए दीपकी जाति छे एम कवि! जाण; ६१९३
त्रर्ण ने पछी ताल त्रीजी उपर धार, ६१९४
वर्ळी शर शरे सारी कर सकळ मर्ळी चार. ७९. ६७१८

गणप्रस्तारप्रकाशमां आनुं माप चार माप गण (त्रगणनुं ॥ऽ। आवुं रूप) आपवा कर्युं छे. अने तेनुं नाम दीपक आप्युं छे.

६८ योग. १२, ८ यति=२० मात्रा, तेमां अंते यगण.

१,७,१३,१९ मात्राए ताल.

वार अने आठ कळा, वीश धरीने, १०४६
चरण अंत एक यगण, मांह करीने; ११९४
एक पछी खट खट पर, ताल सुधारो, १२११
योग जाति एह कवि! आप विचारो. ८०. ११८०

आ जाति काफीना जिल्लाना स्वरमां (इंद्रसभाने रागे) गवायछे.

६९ नंदी. १२, ८ यति=२० मात्रा, तेमां अंते बे गुरु.

१, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

वीश कलामां बे गुरू, अंते आवे, १४८
चार आठे प्रति पद, विरति सुहावे; १६६४
ताल प्रथम पछी चडती, चार आणो, ८९
आ नंदी जाति ए, रीते जाणो. ८१. १

७० हंसगति. ११,९ यति=२० मात्रा. १,५,९,१३,१७ मात्राए ताल.

अगियारे ने नवे, विरति आवेछे, ४८९

ए रीते कवि वीश, कला लावेछे; ११६

भूपर ने श्रुति क्रमे, धरो शर तालो, ११२२

हंसगतिनी जाति, भली ए भाळो. ८२. १४८

७१ मत्ता, विनिहरण. ४+४+४+४+४=२० मात्रा. तेमा जगण कोइ ठेकाणे आणवो नहि, अन्ते एक गुरु आणवो.

१, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल

पांच डगणमा अंते तो गुरु आवे, ९९९

करजो कुल कल वीश जगण पण भावे; १५३९

एक उपर पर्जे चारे चढता ताले, ४१०

विनिहरणे मत्तामा शर तो घालो. ८३. ३८१

त्रैलोक–२१ मात्रानी १७,७११ वृत्ति थायछे.

७२ चंद्रायन, चांद्रायन. ११, १० यति=२१ मात्रा

१, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल

प्रतिपदमां अगियार, अने यति दश विषे, ६३२९

वधी मळी वीश एक, कला तेमां दिसे; २७६२

छे चांद्रायन ताल प्लवंगम ढाळनी, ३७३७

चंद्रायन पण कहे, रुडेरी चालनी. ८४. २६२४

छंदप्रभाकरमां ११ मात्रा जगणांत अने १० मात्रा रगणात लाववानु कह्यु छे, पण बीजा पिंगळकारोए तेम कह्यु नथी, तेथी अमे पण ते मत पाळ्यु नथी

७३ रासा. १२,९ यति. १,५,९,१३,१८ मात्राए ताल.

चरण चरणमा रचशो, कल एकवीशो, १४३२

धारे अने वळी नवे, यति ठीक दीसे; १४५६

शशि शर नव जत अढार, शर ताल थशे, १५०८

वसंततिलके रासा, कवि रागमाशे. ८५. १३७५

७४ प्लवंगम. ११,१० यति.† (आदि गुरुनो) †ट+५+४+ज+ग =२१ मात्रा. १, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

आदि गुरुनी छ कल, अमु पछी जाणजो, ३७७४
चार उपर करी जगण, गुरु पछी आणजो; ३८०३
भू पर चडती ताल, चतुर शर सौ करो, ४१०४
एह प्लवंगम नाम शिवे यति तो धरो. ८९. ३७४०

‡ छंदःप्रभाकरमां ८,१३ मात्राए यति कही छे.

† हर (SSS), शक (SIIS), कमळ (SISI) कलि (SSII) के धेनु (SIIII) टगण ए पांच आदि गुरुवाळा टगण (छ मात्रा) पैकीनो कोइ पण लाववो.

पिंगलामणीमां ११, १० यति कही छे, बीजा पिंगळकारो तेम केहेता नथी, वाग्वल्लभ तथा मनहरपिंगळमां आदि गुरु आणवानुं लख्युं नथी पण वाणीभूषणमां लख्युं छे; छंदःसार, वृत्तमौक्तिक अने नागपिंगळमे मात्रा ६ (तेमां आदि गुरु) +५+४+ज+ग लाववा कह्युं छे. आनेज मळ ती पण यति रहित आभाणक के अहाणक जाति मागधी "छंदःशतक" मां कही छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां प्रथम गुरु पछी चार चोकलिया ते उपर लघुगुरु आणवा कह्युं छे. उपरना माप सिवाय गणप्रस्तार प्रकाशमां आ बीजी रीते ड्डै+ड्डै+ड्डै+ड्डै+ड्डै=२१ मात्रा एवु माप आप्युं छे, अने २१ मात्रानुं सामान्यनाम प्लवंगम आप्यु छे तेना रुपांतरमां दिग्पाळी छंद कह्यो छे, पण २१ मात्रा सिवाय तेनुं विशेष लक्षण कंइ बताव्युं नथी माटे अमो तेने दाखल कर्यो नथी.

महारौद्र—२२ मात्रानी २८,६५७ वृत्ति थायछे.

७५ महीदीप. १२,१० यति=२२ मात्रा, तेमां अंते बे गुरु. १, ५, १३, १९ मात्राए ताल.

चरण चरणमांह बधी, बावीश कल जामे, ३६३९
अंतमांह जुगल गुरु, रवि दशे विरामे; २४३४

ताल एके सान तेर, ओगणीश ठामे, २०९१
जाति तो बने रसाल, महीदीप नामे. ८७. १८५८

आ जाति राग रमायणा जिल्ला अने जंगलामा पण गवायछे.

७६ लीला. ११,११,यति, अंते गुरु. १,५,९,१२,१६,२०मात्राए ताल.

वाविश कुल कळ थाय, चरण चरणमांहृ तो, ६७०९
तेमां कर गुरु एक, छेवट छे ज्यांहृ तो; ४८७६
शिव शिवमां यति थाय, जाति लीलाविषे, ४२६२
शशि शर नव रवि सोळ, त्रिशपर ताले दिसे. ८८. ५११३

७७ रास. ८,८,६ यति=२२ मात्रा. १,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल

आठ कलापर, आठ धरी पड, अंत करो, ७९२१
वावीश कळमां, अंतविषे तो, सगण धरो; ९५०५
एक पछी श्रुति, श्रुति चडती शर, ताल दिसे, ७९७६
रासनी रचना, एम करो प्रति, चरणविषे. ८९. १०४९२

७८ राधिका. १३,९ यति=२२. ३,७,११,१५,१९ मात्राए ताल.

बाविश कळमां यति तेर, अने नव ठामे, ३०२८
त्रग पर चचारे ताळ, नडी शर जामे; २९६६
ए जाति राधिका छंदप्रभाकर के' छे, २९७८
गानां गुणिजन ते राह, लावणी ले छे. ९० ७८४

आ जात लावणीमा गवायछे, अने घणु करी तमा अंते बे गुरु आवेछे

७९ विहारी. २२ मात्रा ८,६,८ यति. ३,९,१५,२१ मात्राए ताल.

कल आठ छने, आठ करो, वावी विचारी, २७२८
कळ योग थकी, बे विरोप, थाय विहारी; २८८२
करो त्रण पछी खट, खटमां ताल, चार आणजो, ५५४५

ए गजल राह, तो गवार्ता, जाति जाणेजो. ९१. १४७

८७ श्रीमती. १२,१० यति. ६+६+५+५=२२ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

छकल उपर छकला कर, शर शर कल त्या धर, २१८
एम कळा बावीश धर, रचना सरगज कर, २७६४
बार अने दश स्थाने, विरति रचवा मच, २०६९
श्रीमतीमां शशिपर ने, ताले श्रुति श्रुति रच. ९२. २७१४

८१ चारि. १३, ९ यति. १,५,९,१४,१८, मात्राए ता

प्रति पदमां बावीश तो, कुल कळ गायछे, ६४४
तेरे अने नवे गरो, यति ठीक थायछे, ६४६
शशि शर नव मनुना पछी, पुराण ताल छे, ५५९
चारि जातिनीं ए स्फडी, मझूरी चाल छे. ९३. ४८

८२ एला. ६+५+६+५=२२. ११,११ यति. प्रति यति

१, ४, ७, १० मात्राए ताल

छ पर पांच थाय छे, छपर शर मुकायछे, ६६५
एम वीश ने कला, यति शिवे रखायछे, ५६६
एक चार सात दशे, ताल यति धारजो, ४९०
एह एला नामनी, जाति छे विचारजो. ९४. ५४२

रौद्रार्क—२३ मात्रानां ४६,३६८ वृत्ति थाय

गणप्रस्तारप्रकारमां २३ मात्रानु सामान्य नाम निश्चल आपुछे

८३ मृगांक. १२,११ यति=२३ मात्रा, तेमां अंते गं ल

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

तेवीश कळेन्दु पद छे, बार शिवे यति आण, २११३

अंते गुरू लघु एमा, मृगांक जाति जाण, १८४९९
एक उपर पछी चडती, चच्चारे छे ताल, १७७९९
प्रतिपदमांहे एमज, पड तालो संभाळ. ९५. १८२३७

८४ उपमान. १३,१० यति. १,५,९,१२,१६,२० मात्राए-ताल.

कल कर कुल तेवीश जख, ने दश पर यति छे, १७०२६.
शशि शर नव रवि सोल चौश, पर तालनी गति छे, १६०५९
ए रचना उपमाननी, कथतां ठीक शोभे, ४८७१
गावा कविवर तणु अति, पूरू मन लोभे - ९६. ४४६५

छन्दप्रभाकरमा आ जातिमां अंते बे गुरु आववा कह्यु छे पण तेवा नियमनी आना पछीनी अंक ८५ वाळी द्रढपदा जाति छे, एटले ए मत मान्य नथी

८५. द्रढपदा, *दटपट. १३,१०यति=२३ मात्रा-तेमा अते बे गुरु.
१,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल

त्रेवीश कुल कल चरणमा, जख दश यति जाणो, ६५२१
प्रतिपद केरा अंतमा, बे गुरु ठीक आणो; ५८३८
प्रतियतिमा पेले अने, चडती चच्चारे, ६७०
द्रढपदमांहे ताल तो, कवि पडे कुल धारे ९७. ६४४८

* रूपदीपमा दृगाद, गौडपिंगळमा दिढपदि अने बीजा पिंगळोमा द्रढपदा, त्रिदपद, वगेरे नामो छे

८६ निश्रेणी. १३, १० यति=२३ मात्रा, प्रतियतिमां अते गुरु
१,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल

त्रेविश-मात्रा थायछे, प्रति-पदनी माहे, २३६६
विरति तेरे प्रथम छे, बीजी दश ज्याहे, ४३९३
प्रति यतिअंते गुरु करो, बेमा बे धारी, ११५
द्रढपद पेठे ताल ते, निश्रेणी सारी ९८ ६०

८७ हीर, हीरक, वालिका. ३(धर्म)-टगण+र=२३ मात्रा.

त्रणे टगणमां यमक जोइये. १,४;७,१०,१३,१६;१९;२२ मात्राए ताळ.

धर्म टगण, धार तुं त्रण, अंत रगण आणजे, १०९४७
आदि उपर, ताळ तुं कर, त्री त्रण पर, जाणजे; १०९४७
ऐविश कल, आण सकल; एम अचल, नेमथी, १०९४७
हीर हीरक, जाति निरख, एम परख, प्रेमथी. ९९. १०९४७

मुक्तमौक्तिक, नागपिंगळ तथा वाणीभूषणमां आदि गुरु अने चार लघु (ऽ।।।।) वाळा त्रण धर्म टगण+रगण आणवा कर्युं छे, अने उदाहरण पण तेज प्रमाणे छे. वृत्तमौक्तिकमां आ प्रमाणे उदाहरण छेः—

"आदि गयुत, पेदं लयुत, नाग रचित, षट्कलं,
वन्हि गदित, लोक विदित, मंत्यकथित, मध्यलं;"

पण भाषा छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, (भाषा)छंदार्णव, छंदोलता, भाषा छंदःशृंगार अने चिंतामणीमां त्रण टकार आणवा कर्युं छे, पण टगणना १३ भेद पैकी धर्म-टगणज (ऽ।।।।) आवे, एवो नियम बांध्यो नथी, तेम तेमनां उदाहरणमां पण पाळ्यो नथी.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां कर्युं छे के, प्रत्येक धर्मटगणे यति आवे तो हीर जाति अने यति न आवे तो सुहीर जाति केहेवाय; धर्म टगण न मूकतां शाली नामना त्रण टगण [।।।।।।] मूकी अंते रगण आवे तो लघुहीरक जाति केहेवाय; अने ब्रह्म नामना त्रण टगण (।।।ऽ।) मूकी अंते रगण आणे तो परिवृत्तहीरक जाति केहेवायछे.

छंदःप्रभाकर त्रणे यमक सहित आदि गुरु अने अंते रगण आणी कुल २३ मात्रा लाववानुं केहेछे. गणप्रस्तारप्रकाशमां पेहेलो मगण बग-रना त्रण टगण आणवा कर्युं छे.

अवतारी--२४ मात्रानी ७५,०२५ वृत्ति थायछे.

८८. काव्य. वास्तुक.(प्राकृत पिंगळसूत्र प्रमाणे). ११,१३यति=
२४ मात्रा १, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.
६+१२ (४+४+ज के द्विजगण)+६.

आदि छ कळ करी उपर, रवि कल त्रण गणमां कर, ९६९१६;

तेमां त्रीजो जगण, अगर द्विज गण लावी धर; १०९१६
पछी छ धरी चोवीश, चतुर कवि जन कर्ण लावे, १०८६२
काव्ये यति अगियार, त्रयोदश क्रमथी आवे. १००. ३७४९
प्रथम उपर धर ताल, पछी श्रुति चडती करजे, २१४६०
सकल मळीने ताल, बने पड त्यम पद धरजे; २८१९६
लावणी साखी रांग, समानज वदता भाळ्या, ३७१९
रोला छप्पय समान, वळी ठिक वदता चाल्या. १०१. ३७४९

छंद शास्त्रमा कह्युछे के—वच्चेनी चार मात्राना प्रण चोकळियामां स, ज, के विप्रगण, एमांनो भले ते गण टगण आवे, पण जगण आ० वार्यो क्याइ देखातु नथी

* वृत्तमौक्तिकमा लखेछे के—वचली बार मात्राना त्रण गण आणवा, तेमा छेल्लो गण विप्र (।।।।) अथवा जगण आणवो, एवीज रीते मागधी नागपिंगळ तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा पण लख्यु छे छंद शास्त्रमा वचली बार मात्रामां स,ज के विप्रगणमाथी गमे ते लाववा, एम लखेछे, पण उपरना वे ग्रंथोमा एवी वधी करी नथी, माटे तेमे पण ते पाळी नथी, केमके छंद शास्त्रनाकर्ता केहेछे के "छप्पयनां प्रथम एक काव्य शो ते उपर उल्लाल करवा" तो काव्यना वधा नियम तना अभिप्राय प्रमाणे एमा पण लागु पडी गया एटले स,ज के विप्रगणमांथी गमे ते, वार मात्रामां आववो जोइये, ते सिवाय वाजा आवे नहि पण छप्पयनु उदाहरण एमां आप्यु छे, तेमां "सुंदर भूषित" एवा शब्द भगणना आवी ज यछ, एटले तेना नियम जे स,ज के विप्रगण लाववानो ते तेणे पोते पण पाळयो नथी छंद शृंगारमां ६+१२+६=२४ ए रीत मात्रा लाववा केहेछे

छंद कामदुघावत्समा ६+४+४+विप्र के ज+२+४=२४ लाववा केहेछे भाषा छंदमंजरी, छंदप्रभाकर तथा छंदप्रदीपमां ६+८+१० यति लाववा केहेछे

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां चोवीश मात्रा आणवानु कही, प्रथम ११ मात्रा दोहाना लक्षणयुक्त आणवा केहेछे, तेमज १४ मी मात्रा लघु आणी, त्यां यति आणवा केहेछे, ते पछी वे चोकलिया [तेमां पेहेलो जगण निवारवो]

+२ मात्रा [बे लघु किंवा एक गुरु] एम चोवीस मात्रा चरणमां लाववानुं केहेले. वळी आदमी मात्राए विराम न आवे तो चपला काव्य नाम आपेछे.

९६ लघुनांथी बन्ने लघु घटाडतां अकेक गुरु वधे, ए क्रमे नीचे प्रमाणे काव्यमां ४५ भेद थायछे.

चडतो अंक.	नागपिंगल प्रमाणे भेद.	लघु.	गुरु.	
१	शक	९६	०	शुद्ध जाति.
२	शंभु	९४	१	
३	सूर-सूर्य	९२	२	
४	गंड	९०	३	
५	स्कंध	८८	४	
६	विजय	८६	५	
७	दर्प	८४	६	
८	तालंक, तारांक‡, ताटंक*	८२	७	
९	समर	८०	८	
१०	सिंह	७८	९	
११	शेष, शीर्ष	७६	१०	
१२	उत्तेज	७४	११	
१३	प्रतिपक्ष, पर्णारक्ष, अरि	७२	१२	
१४	परिधर्म, प्रतिधर्म‡	७०	१३	
१५	मराल	६८	१४	
१६	मृगेन्द्र	६६	१५	
१७	दंड	६४	१६	
१८	मर्कट	६२	१७	
१९	मदन	६०	१८	
२०	महाराष्ट्र, मरहट्ट	५८	१९	
२१	वसंत	५६	२०	
२२	कंठ	५४	२१	
२३	मयूर, मोर	५२	२२	

‡वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां ए नाम छे.

*प्राकृत पिंगल सूत्रकार रविकर ए नाम आपेछे.

२४	दीप	५०	२१
२५	भ्रमर*	४८	२४ वैश्याजाति
२६	बीजो महाराष्ट्र	४६	२५
२७	मलगद	४४	२६
२८	राम	४२	२७ क्षत्रियाजाति
२९	मलित	४०	२८
३०	राम	३८	२९
३१	मन्थान	३६	३०
३२	मर्की	३४	३१
३३	मोह	३२	३२ ब्राह्मणी जाति
३४	तदथ नेत्र.	३०	३३
३५	शाल.	२८	३४
३६	दध्न,	२६	३५
३७	शरभ	२४	३६
३८	हंस	२२	३७
३९	अद, दिवस	२०	३८
४०	उदंभ	१८	३९
४१	मर्कटाक.	१६	४०
४२	तुरंग,	१४	४१
४३	हरिण	१२	४२
४४	अध	१०	४३
४५	भृंग	८	४४

*केटलाक "गिम" नाम पण आपेछे, एम ग्रा थि सूचना टिप्पणमां लख्युछे

काव्य-अने षट्पदीना दोष विषे

१ पददुष्ट एटले व्याकरण रीतिए अशुध होयतो काव्य पंगु केहेवाय.

२ मात्रा ओछी होयतो खंज केहेवाय

३ मात्रा अधिक होयतो-वातुल केहेवाय

४ जेमां रकार के लकार न आवे-ते बधिर केहेवाय.

५ जेमां कोइ अलंकार आवे नहि ते-अंध केहेवाय

६ छंदोभंग एटले मात्रानो क्रम होय ते टूटे तो-मूक केहे

७ अर्थहीन होय ते-दुर्बळ केहेवाय.
८ जेमा कर्णकठोर अक्षर आवे ते-कॅफर केहेवाय.
९ ओज, प्रासाद, माधुर्य, आदिथी हीन होय तो ते काण (काणो) केहेवाय

उपर लखेला दोषो काव्यजाति अने पद्पदी जे तेनाज उपरथी थायछे, तेना प्रथममां नागपिंगळ अने वृत्तमौक्तिक आदिमां जणाव्या छे, परंतु सामान्य रीते सर्व प्रकारनी कविताने पण ते लागु पडेछे.

काव्यजातिमां ३२ लघु सुधीना भेद होय ते ब्राह्मणी जाति केहेवाय, ४० लघु सुधीना क्षत्रियाजाति केहेवाय, ४८ लघु सुधीना वैश्याजाति अने ते उपरातना शूद्राजाति केहेवाय.

८९ रोला, रोडा. ११,१३ यति= २४ मात्रा.

१,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल

४+४+४+४+४+४=२४, तेमा अंते गुरु (चि. पि.)

चोकलिया गण छ कर, रची गुरु अन्ते एमा, १३११
अगियारे यति आण, पछी तेरे छे जेमा; १६७
प्रथम उपर छे ताल, पछी चधारे आवे, १९७
रोला, रोडामांह, कला कवि चोवीश लावे. १०२.७८९७

११ गुरु ने ७ लघुना चरणवाळी कुन्द जाति थाय, तेना बधा मळीने ४४ गुरु तथा ८ लघु थइने ९६ मात्रा थाय, तेमाथी अेकेक गुरु ओछो थाय तथा बब्बे लघु वधे, ए क्रमथी कर्णाशल आदि ११ भेद थाय एम वाग्वल्लभ अने मागधी नागपिंगळमां जणावेछे म, त, र, म, ग. एम लावबा छंदःप्रभाकरसिंधु तथा गौडपिंगळमा केहेछे, ते तेर अक्षरना अति जगति छंदनो १६१मो वस्तु नामे भेद थाय, पण जो तेने अक्षरमळ ठरावबामा आवे तो पछी तेना भेद थइ शके नहि मनहरपिंगळमा ६+४+४+४+४+२=२४ मात्रा लावबा केहेछे पण वाग्वल्लभ, छंदशास्त्र अने वृत्तमौक्तिकमा कशा नियम विनानी मात्र २४ मात्राज लाववानु कहेछे, अने मागधी नागपिंगळ अंते गुरु लावबा केहेछे

छंदःप्रभाकर केहेछे के-"कोइ कोइ कवियोनुं मत एम छे के, एना

चोथा पै गुरु जोइये." पण ते मत सर्वमान्य न होवाथी ते पांच केहेरे वर्ष पूर्व प्रभाकर कहे छे के "एनुं बीजुं नाम काव्य पण छे. जे रोलाना चारे चरणोमां ११मी मात्रा लघु होय ते रोला 'काव्य' कहेवाय छे कुंडलियामां एनो प्रयोग थतो जोइये, कोइ कोइ कविए काव्यनी यति ६,८ अने १० उपर मानी छे"

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां छंदानुसार गुरु लघु लखवाथी कर्युं छे, तेथी तेमांना ११ गुरु तथा २ लघु लखवाथी कुन्दरोला थाय, एम पण मनाय छे

प्रत्येक चरणमां ११ गुरु अने २ लघु आवे तो उपर कह्या प्रमाणे कुन्दरोला थाय, पण जो न पाळिये तो १२ गुरु प्रत्येक चरणमां गणी अकेको गुरु घटाडी बब्बे लघु वधारी प्रस्तार करतां १२ भेद थाय, एम नारायणभट्टीमां जणावी नीचे प्रमाणे भेद लखे छे —

क्रम.	भेद नाम.	गुरु.	लघु.
१	कुंद.	११	२
२	करताल	१०	४
३	मेघ	९	६
४	तालंक	८	८
५	काल	७	१०
६	रुद्र	६	१२
७	कोकिल	५	१४
८	कमल.	४	१६
९	इंद्र.	३	१८
१०	शंभु	२	२०
११	चामर.	१	२२
१२	गणेश्वर.	०	२४

वृत्तमौक्तिक तथा छंद शास्त्रमां नीचे प्रमाणे रोलाना १३ भेद कह्या छे —

क्रम	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	मात्रा.
१	कुन्द.	१२	७०	९६.
२	कर्णताल(करताल).	१२	७२	९६.
३	मेघ.	११	७४	९६.

४	ताल्क.	१०	७६	९६
५	कालरुद्र.	९	७८	.९६
६	कोकिल.	८	८०	९६
७	कमल.	७	८२	९६
८	चंद्र,इन्दु.	६	८४	९६
९	शंभु.	५	८६	९६
१०	चामर.	४	८८	९६
११	गणेश.	३	९०	९६
१२	शेष+	२	९२	९६
१३	सहस्राक्ष.	१	९४	९६

+प्राकृतपिंगळसूत्रमां १२ मुं सहस्राक्ष अने १३ मुं शेष एम नाम आप्यां छे.

पिंगळभूषणमां ११मी मात्राए यति आववा दयु छे. मागधी पिंगळसूत्रमा तेमज बीजा केटलाक पिंगळमा 'अंते गुरु आणवो' एवो प्रतिबंध नथी, अने तेना उदाहरणो पण मळी आवेछे. कृष्णभट्ट कृत छन्दोवृत्तमुक्तावलीमां बारे यति जणावी, लखे छे के, अगियार यति आणवा केटलाक केहेछे, पण तेम करवाथी काव्यजाति साथे मळी जायछे

९० रसावली, रोडक, चतुष्पदी, अर्कच्छाया. ११, १३ यति.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

चोविश कुल कल करो, रसावली के रोडकमां, १८८४१
अगियारे यति थाय, वळी तेरे छे तुकमां; १७८७८
, चतुष्पदी मळी सर्व, रचो रोलानी ताले, १६८
अर्कच्छायामांह, सरस कविवर संभाले. १०२. ४०९३

वाग्वल्लभादि केटलाक ग्रंथमा काव्य, रोला अने अर्कच्छायाने एकज मानेला छे, पण उपर प्रमाणे लक्षण भिन्न मळवाथी अमे तेने जूदा पाड्याछे.

९१ गुप्त. १४, १० यति.=२४ मात्रा तेमां आद्यंते नगण.

१, ५, ९, १३, १५, १९, २३ मात्राए ताल

प्रथम नगण धर प्रति पदमां. चरमे धरी नगण, ६१११८
यति धर चौद अने दशमां, कुल कल चोविश गण; ६७८१०
शशि शर नव जग्न तिथि ओगणी, ताल त्रेविशपर, ६६८९६
सरसज गुप्त बने जाति, कोइ रचे कविवर. १०४ ६६६८९

९२ शोभना. १४, १० यति=२४ मात्रा, तेमां अंते जगण, छंद प्रभाकर प्रमाणे,

१, ८, १५, २२ मात्राए ताल

चौद कलने दश उपर यति, जगण छेवट आण, ४२१७३
एम चोविश कलतणी आ, शोभना कवि जाण; ४०६७३
प्रथम पर वळी सात साते, ताल सुंदर सार, ४०६४५
ढाळ रागे गाय तो ते, थाय छे सुखकार. १०५. ४०६२६

९३ रूपमाळा. छंद प्रभाकर प्रमाणे १४, १० यति=२४ मात्रा, तेमा अंते गल

१, ८, १५, २२ मात्राए ताल

चौद ने दश बे विरामे, वीशने कल चार, ४०६३९
शोभना सम ठाठ छे पण, जगण जरूर न धार; ४६१८४
अंतमा गुरु ने लघु तो, रूपमाळा थाय, २९६९३
एकपर पछी सात चडती, ताल एम रचाय. १०६. ४०७८८

९४ दिक्पाल. १२, १२ यति=२४ मात्रा, तेमा अंते बे गुरु

२, ९, १४, २१ मात्राए ताल

चोवीश कला पूरी, दर चरणमांहि आणो; ६५४१
यति थाय कला बारे, दिक्पाल जाति जाणो; ५५५५
त्रण पछी भक्ति ताळो, तिथि एकवीश माथे, ५५६१
बेतोनी राह बोलो, ए जाति गाइ साथे. १०७. ५१८५.

रेखता के नजीरना बेतोनी रीते आ जाति गवाय छे

९५. दंडी. मात्रा २४ तेना अक्षर १८

गग ललल गग ललल गग ललल.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

बे गुरु उपर मूकी लघु कल चारे सरसज, ६५४७३

एवी ठोक रचना तुं त्रिपद करीने पद मन; ६५४७३

एम वरणन अष्टादश कर चोवीश कलम, ६५४७३

भूने श्रुति श्रुति ताले चडनांज दंडी महि धम. १०८.६५४७३

वाग्वल्लभमां लख्युं छे के आ प्रमाणे आ जाति अक्षरमेळ वृत्त पड जायछे, तेथी जो नेमा गणना करवी होय तो छेले म्गण आणवो, अने तेनु नाम दड आप्युं

९६ लीला. १२,१२ यति, ६+६+४+४+४=२४ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

छ कल प्रथम रच चारु, ते पर पछीथी छ कला, २१३१८

तेपर चोकलिया त्रण, रूडा गण रच तुं भला; २७२२८

रविपर यति कल चोविश, लीला रचना करजे, २०४७३

शशिपर पछीं श्रुति श्रुतिपर, ताले चडनी धरजे. १०९. २०५२८

भाषा छंदोमंजरी अने छंद प्रभाकरमां,७,७,७,३ यति वदी छे, विशेषमां छंदःप्रभाकर अंते सगण रचवा केह्युं छे, पण ते मत बीजा पिंगळकारो मान्य करता नथी. वळी एज ग्रथकारे आना अर्द्धने पण लीला जाति कही छे

महावतारी-२५ मात्रानां १,२१,३९३ वृत्ति थायछे.

९७ खांग, गयणग, गगनागन, गगनांग. १२,१३ मात्राए यति.

६+४+४+४+४+ल+ग=२५ मात्रा. तेना २० अक्षर,

१, ६, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताळ

छ कल उपर चोकल गण, चार रुडाज रचायछे, २५१६७५

ते पर लघु गुरु करता, कुल पचिश कल थायछे; २७४२५

विंश अक्षर, प्रथमे ने, चडर्ता चतुर पर ताल छे, २८४५५.
यति द्वादश पर्छो अखपर, गगनांगणनी चालछे ११०. २०९०२

चिंतामणी केहेछे के आदि छ कल, अंते रगण, अक्षर २० अने चारे विश्राम आगवो भाषा छंदोमंजरी १६,९ यति केहेछे, ते बराबर लागु नथी. वृत्तमौक्तिकमां प्रथम ६ मात्रा लाववा केहेछे, ते पछीनो नियम कइ जणाव्यो नथी. प्राग्नी नागपिंगळमां प्रथम चार मात्रा अंते ल ग, मात्रा पची २५, तेना अक्षर वीश, १२,१३ यति (पाठांतरे १६, ९ यति) कहीछे.

वाग्वल्लभमां १२;१३, यति, मात्रा २५, अंते रगण आणवा कयुछे, मनहरपिंगळमां प्रथम विप्रगण,तेना अंते रगण, मात्रा २५, अने तेना अक्षर २० केहेछे, लखपतजशसिंधुमां अंते गुरु कह्यो छे.

मारवाडी हरिजशपिंगळमां अंते गुरु अने वीश अक्षर अवश्य लाववा कयुंछे छंदःसारमां वीश अक्षरमां २५ मात्रा लाववा केहेछे, अने तेमां पंदर लघु तथा पांच गुरु लाववा एम केहेछे. वाणीभूषणमां अंते लघु गुरु न केहेतां रगण आणवानु कह्यु छे, अने वीश अक्षर आणवानी फरज बतावी नथी. प्राकृतपिंगळसूत्रकार प्रथम चोकलियो अने अंते गुरु लाववा केहेछे.

छंदःप्रभाकरमां गगनानङ्ग नाम आप्यु छे, अने तेमां १६, ९ यति तथा अंते रगण लाववा कह्यु छे, वळी तेमां कयु छे के-"कोइ कोइ १२,१३ यति माने छे. अने तेज ग्रंथकार विशेष नियम बतावेछे के- प्रत्येक पदमां पांच गुरु अने पंदर लघुथी वत्ता ओछा गुरु लघु न होवा जोइए"

०.८ मुक्तामणि. १३, १२ यति=२५ मात्रा. तेमां अंते बे गुरु.

३, ७, ११, १४, १८, २२ मात्राए ताल

कल तेर उपर पर्छो बार, यति रुडेरा राजे, ८४०
जे सकल कल्य पचीस, करो मुक्तामणि छाजे; ११७१२
प्रण मुनि शिर मनुए ताल, पछी श्रुति चडतां आवे, १५२६६
दश द्वय प्रति खटठिक ताल, रचिने कविवर लावे. १११. १५९७०

९९ मदनांतक मात्रा २९. तेना अक्षर २० अंते ग.

प्रथम एक चोकलियो. वचे गमे तेवा गुरु.

१, ५, ९, १२, १६, २१, २४ मात्राए ताल.

थाय कला प्रतिपद पचिश परिपूर्ण मदनांतके, २७०११
करजो वर्णो सकल वीश ज्यम पद विष थइ शके ३६५४१९
प्रतिपद प्रथम डगण धरी चरणे गुरु आणजो, २००१२
पछी वचीवचमां गमे त्यम गुरु लघु करी जाणजो. ११२. १३४८२

‡ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा आ जाति छे. २१९८२

२०० सुगीतिका. १९, १० यति=२९ मात्रा. आद्यंते लघु.

२, ५, ९, १२, १६, १९, २३ मात्राए ताल.

सुगीतिकामां आदि लघु कळ, चरण चरणे आण, ५७२२८
पचीश कळ धर चरण चरणे, प्रभाकर§ परमाण; ७१८२६
द्वितीय उपर अनुक्रमे जो, ताल त्रणपर चार, ७६८७५
धरेल कविनन चरण चरणे, सात सौ निरधार. ११२. ६६०५१

§ छंदःप्रभाकर अने छंदार्णव प्रमाणे

महा भागवत-२६ मात्रानी २,९६,४२८ वृत्ति थायछे.

२०१ शंकर, चावर. १६, १० यति=२६ मात्रा, तेमां अंते गुरुलघु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल.

कळ सकळ छव्विश चरण चरणे, छे गुरु लघु छेह, १०९८६३
यति सोळ ने दश मांहीं आणो, जाति शंकर एह; १०६३६४
चावर कविजन अवर कहेछे, छे त्रीजी पर ताल, १०६४८५
त्रण चार चडते ताल कविवर, सात तुं संभाळ. ११४. ७६०८०

२०२ विष्णुपद. १६, १० यति=२६ मात्रा, तेमां अंते गुरु.

१, ५, ९, १३, १७ २१, २५ मात्राए ताल.

सोळ उपर वळी दश विरति छे, छेलो गुरु धरो, ३५६४२

एकंदर कळ छवीश एवी, भाव धरीन करो: ५३७४८ ३०७
एक उपर नचारि चडनी, सात धरो ताळो, ७१५४
विष्णुपद सोहाती जाति, गुणिजन मनवाळो. ११३. २७०६९

१०३ लघुसुलणा. ७,७,७,५ यति=२६ मात्रा. अंते ग.ल.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल

मुनि ससने, मुनि पंच यति, चरमे गुरु, लघु मान, २०७७५८
एं रीत कुल, छव्वीश कळ, प्रति पदविषे, परमाण; ११०३२०
त्रण चारना, क्रमथी चडे, त्रीजी थकी, तो ताल, ७७७३७
छे जाति ए, लघुसुलणा, कवि सरस ते, संभाळ. ११६. ८१३०७.

छंद प्रभाकर आने "झूलना (प्रथम)" एवु नाम आपेछे

१०४ गीता. १४, १२ यति=२६ मात्रा अंते गुरु लघु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल

१४ १२
मनु भानु विरति धारि गुरु, लघु अंतमां तुं आण, ७९०८०
छव्वीश कल त्यां सकळ तुं, प्रति चरणमांहि जाण; ८१३७५
त्रीजी पछी त्रण चार पर तो, सात छे शुभ ताल, १०६७७०
ते जाति गीता थाय छे, कविराज! तुं संभाळ. ११७. ७८६८९

१०५. गीतिका[1] १४, १२ यति=२६ मात्रा. अंते लघु गुरु.

३, ६, ८, ११, १५, १८, २२, २६ मात्राए ताल

१४ १२
रत्न रवि कल धारिने यति, अंत ल ग रचना करो, ४५२०२
सकळ कल छव्वीश चरणे, चरण मध्ये तो धरो, ३०८१७
प्रथम पर पछी त्रण चचारे; ताल आठज आणजो, ४०६७९
जाति मात्रिक गीतिकानी, जुक्ति कविजन जाणजो ११८. ४४८३०

[1] छंद:प्रभाकर प्रमाणे रा ग नृसिंहराव भोळानाथे एने 'विषम हरिगीत' नाम आप्युछे

१०६ कामरूप. ९,७,१० यति=२६ मात्रा. तेमां अंते गुरु लघु‡.

२, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल.

नव सात दशपर, विरति लावो, अंत गुरु लघु आण, ११७४४२
छव्वीश कलनो, जाति एवी, कामरूप प्रमाण; १०६३७२
त्रीजी उपर धरो, ताल त्रण ने. चार चडतो चाल, ८९०४२
प्रभुतणी प्रीति, पामवाने, भजनमां मन घाल. ११९. १०८९४२

‡छंदःप्रभाकर प्रमाणे

नाक्षत्रिक-२७मात्रानी ३,१७,८११ वृत्ति थायछे.

१०७ आत्रेय. १०,१०,७ यति=२७ मात्रा, तेमां अंते लघु गुरु.

१, ६, १४, १६, २१, २६ मात्राए ताल

कल सतावीशमां, लघु गुरू अंत छे, एक अडयां, ८४६३७
प्रथमपर ताल पछी, पांच चडती धरो. ठीक पदमां; ८५१६३
दश पछी दश अने, सातपर यति करो, स्थान त्रणमां, ८६७१३
जाति आत्रेयनी, ठीक गणो जेयनो, कुशल जनमां. १२०. ११२३४७

१०८. शुभगीता× १५, १२ यति=२७ मात्रा, तेमां अंते रगण‡

२, ५, ९, १२, १५, १९, २२, २६ मात्राए ताल.

यति धरी पंदर रवि पर, रगण अंते आणजो, ५०२८५
धरी कला सत्तावि्शन कुल, शुभगीता ते जाणजो; ५०४९३
द्वितीय पर दइ ताल त्रण ने, चार पछी चडती करी, ७२७६१
भक्षीज जाति प्रभाकरे× भणी, हरिगीते गाजो खरी. १२१. ५०२५१

× छंद प्रभाकर ‡ छंदार्णव अन्ते गुरुज आणवा केहेछे

१०९ अतिगीता. (छंदार्णव प्रमाणे) २७ मात्रा, तेमां अंते लघु..

१, ४, ८, ११, १५, १८, २२, २५ मात्राए ताल.

वीश ने स्वर मात्रिकामां लघु करजे अंत अंत, १५४६५७

ए प्रमाणे चरण चारे रची हर्षे बुद्धिवत, १५०८६७
पेलेने त्रण चार चडते आठ आठम ताल घाल, १६२१७८
आण अतिगीता विषे रचना रुडेरी एह चाल १२२ १५१४५५

११० सरसि.† १६, ११ यति=२७ मात्रा. तेमां अंते गुरु लघु*
१, ५ ९, १३ १७, २१, २५ मात्राए ताल

रचिये सत्तावीश कलकेरी, सरसी जाति सार, १२८१७८
सोळ अने अगियारे यति छे, अंते गुरु लघु धार, १८५८७४
प्रथम पछी चचारे चडती, ताल चतुर सभाग, १६६२५१
सकळमळीने एवी कविजन, सात सरस धर ताल १२३ १६३६०८

† भाषा छंदोसार * छंद प्रभाकर प्रमाणे

यौगिक-२८ मात्रानी ५,१४,२२९ वृत्ति थायछे.

१११ सारसमाला‡ ७ड(४+४+४+४+४+४+४)=२८ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७ २१, २५ मात्राए ताल

सात डगण सयुत तो अठ्ठावीश कल सर्वे लावो, ६४१६
भक्ति रसे भरपूर रहीने श्री प्रभु ने मन भावो, ५३३०२
एक पछी चचारे चडती ताले सातज धरजो, १६३१४२
छंदरत्नानी एवी रीते सारसमाला करजो १२४. १२८१६२

‡ छंदारत्न प्रमाणे

११२ हरिगीत. ५+६+५+५+५+ ग =२८ मात्रा
३, ६, १०, १३ १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल

कल पांच उपर टगण करीं पछीं ठगण त्रण ठौर आणजो, १२१३७७
हरिगीतमां गुरु एक अन्ते एम अंतर जाणजो, १०६३६८
कुल कला अठ्ठावीशमां त्रण उपर पेलो ताल छे, ८१२७२
पछीं त्रणे श्रुतिना क्रमाडे पण जगण कुर ४गुता छे १२५ १७०६७७

छंदारंभमा प्रारंभमा बे लघु मात्रा लाववा केहेछे पण वाणीभूषणमा प्रारंभमा इंद्रासन गण (ISS) वर्ज्य करीने पांच मात्रा लाववा कहुछे, तो सुंदर गण (IS।।) लाववाने हरकत नथी एम समजायछे, पण ते मत उचित नथी

छंदोरत्नमुक्तावलीमा उपरनुं माप आपी यतिविषे कइ लख्युं नथी

छंदोरत्नमुक्तावलीमा हरिगीतना मापमाथी अंतनो गुरु कमी करता वाकी २६ मात्रानो अनुहरिगीत थायछे, एम दर्शुं छे विशेषमा तेमा लख्युं छे के अनुहरिगीतना मापमो आरंभे बे मात्रा वधारवाथी (२८ मात्राना) मंदर्गीत जाति थायछे, अने ते (अनुहरिगीत) मांज बे मात्रा घटवाथी (२४ मात्रानी) लघुहरिगीत जाति थायछे

१६,१२ यति=२८ मात्रा तेमा अन्ते रगण अथवा गुरु आणवा कहीं तेनु नाम हरिगीत आपवानुं जे पिंगळमा होय ते बराबर नथी एम उपरना नियम थी जणाशे

१२३ गिया,† गीता,‡ गीयक,‡ हरिगीता, गियामालती, वेताल, वैतालिक,* गीतक. ९,७,१२ यति=२८ मात्रा, तेमा अंते गुरु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल

गण चार चोकल, वार तेपर रगण के गुरु राखजो, १०९८६५
नव सात द्वादश, विरति जेमा, ताल हरिगीतनी सजो, ११७४२६
वैताल, गीया, हरिगीता वळी, गियामालती भाखजो, १०५८३८
गीतक वहे मरु देशमां ए, वात गोखी राखजो. १२६, १४७७३६

† रूपदीपमा "चर चार चौकल धार, तथा वहुरो वारहौं राजिये" एम जणावा अन्ते रगण राखवा केहेछे

‡ मागधा छंद शतकमां ए बने नाम छे *गरबावळीमां ए नाम आपेछे

○ ४वृत्तमौक्तिकना कर्ताना पिताए पिंगळविवृत्तिमा १४ १४ यति चोजा कवियोनी सम्मतिथी राखेला छे छंद प्रभाकरमा हरिगीतिका जाति छे, तेमा १६,१२ यति= २८ मात्रा अन्त रगण अथवा लघु गुरु लाववा केहेछे अमने मळेल ग्रथोमा आर्या कोइ जाति नथी

१२४ हरगीत. ९+६+६+६+३+ ग, ग=२८ मात्रा.

१, ५, ९ १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

अठ्ठाविंश कल प्रति पदमांहे सरल सरस सट आवे, ७३६५७

कल पांच उपर एक टगण करीं पछीथी ठगण बे लावे; २१८५६६
पछी त्रण कलपर बे गुरु धरवा हरगीत रचवा काजे, २७६११५
प्रथम उपर पछी चर्डी श्रुति श्रुतिगे मुनि ताल बधा राजे.१२७.२०८०१

११५. चोपाया. १६, १२ यति=२८ मात्रा, तेमां अंते गुरु.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

अठ्ठाविश कल सौ मर्च्छे आणो, चरमे गुरु शशि धरजो, १८८२३०
प्रथम विरतीमां चार कलाना, चार रुडा गण करजो; १७४६८३
प्रथम उपर पछी चच्चारे मुनि, ताल पदे न विसरजो, १७५५४७
चोपायामां सोळे बारे, बे यति एम उचरजो. १२८. १७४।२७

पादना प्रारभमां जगण, नगण न लाववा चित्रसेनटीकावाळा नागपिंगळमां कहुं छे; आ जाति बे चरणनी पण कोइ बोले छे, मारवाडमां एने ककुभा केहे छे, तेनो अर्थ दिशा थायछे, अने दिशा चार छे, माटे चोपाया. आ जातिना रागने माटे प्राचीन काव्यमाळा ग्रंथ ३जामां राजसूय यज्ञ पृ. ६ मा "राग रामग्री-चोपायानी देशी" एम लख्युं छे

११६. ककुभा. (भाषा छंदोमंजरी प्रमाणे) १६, १२ यति=२८ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

सकल कला अट्ठाविश आणो, चरण चरणमां जोडे, २७२०६
प्रथम विरति तो सोळे आवे, बीजी बारे सोई; १३
पे'ली कलपर ताल धरी पछी, चडती चारे चारे, ३७४१.
जाति ककुभा एम बने छे, कविजन एम उचारे. १२९. ५५८/७०

११७ पंडि १३, १५, यति=२८मात्रा, तेमां अंते रगण.
१, ५, ९, १२, १६, २०, २४, २७ मात्राए ताल

अठ्ठाविश कल तो खरे, प्रति चरण चरणमां आणजो. ६२४४८
प्रथम विरति छे तेरनी, वळी बीजी पनरे जाणजो; ८६६४६
रगणज अंते राखतां, ठिक पंडि जाति थायछे, ७५१६५

१ ५ / १२
शशार नव रवि सोळ निश, चोविश सत्ताविश तालछे १२० १०५६०१
१८ सारसी. ९+७+७+९=२८ मात्रा.
३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल
व सातपर धरॉ सातपर वळी पांच मात्रा आणजो, ७६११४
ट्टाविशे छे चरण एवु सारसीमा जाणजो, २५७७६१
रॉ त्रण उपरतो ताल पछी त्रण चार क्रमथी तो धरो, ६००२६
जॉ जगण जुगते आठ एवा तालपदमा तो करो. १३१ ८८९८५
१९ सार. १६,१२ यति=२८ मात्रा, तेना अंते बे गुर.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल
ळे बारे विरति आणी, अट्टाविश कळ पूरो, १४१३५
थम पछी श्रुति श्रुतिनी ऊपर, ताल कदि न चूको, ५८२०१
ऊदर गणतां ते थाशे. ताळ बधा मळी साते, ५३१६३
ते बे गुर कोइ कहे छे, सार ज जाति आ ते. १३२ ६६३१
आ जातिमा अन्त व गुरु छे तथी मराठी चाल्ना गायान राग त
रावर गवायछे
२० श्रीचन्दु ७,७,७,७ यति=२८ मात्रा, तेमा अंते गुरु.
३, ६, १०, १३ १७ २० २४ २७ मात्राए ताल
ने मानजी, यति चार तो, अते गुरु, एकज धरो. १५२७८२
चन्द्रमां, प्रति चरणमां, विश आठ कर, तुलतो करो, ११८६१५
जी थकी, त्रण चार क्रम, करॉ आठ धर, ठीक ताल तुं, ११८७०३
न्दुए, दोन चन्दु रए, कलिकालनो, वरॉ व्याल तु १३३. १०७६५७
हायौगिक-२९ मात्रानी ८,३२,०४० वृत्ति थायछे.
२१ महाराष्ट्र, मरहट्टा १०,८,११ यति, तेमा अंते ग, ल
६+४+४+६+६+ग।ल=२९ मात्रा २ ७ ११ १० १५ २३ २७ मात्राए ताल
प्रथम छकल कर पांच डगण धर. ने परगुर लघु मेर, ५०७३१६

मात्रा ओगणत्रिश, पदमा तुं धरिश, एवो आणी मेल; ३२१८०३
दश वसु यति धारे, पर्श्रो अगियारे, एम विरति त्रण थाय, ५०३८१७
भर भगण पर तालज, श्रुति श्रुति पर सज मरहट्टा के'वाय. १२४.३२८७३६

प्राकृतपिंगलसूत्र, वाणीभूषण, छंद कामदुघानला, चिंतामणी, इत्या॰ दिमा उपर प्रमाणे माप छे, पिंगलादर्शमां एनी ३० मात्रा लखी छे, ते भूल जणाय छे छंदोरत्नमुक्तावलीमां सात चोकलिया [तेमां अंत्य चोकलियो जगण गुरुवाळो) +ल=२९ मात्रा आगवा कह्युं छे

महातैथिक ३०मात्रानी १३,४६,२६९वृत्ति थायछे.

१२२ तार्टक. १६,१४ यति=३० मात्रा.

३, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

धीशे त्रीशे मात्रा दीशे, प्रति पद माहे बहु सारी, १३०७४३
सोळे चौदे यति बे आणो, सारी रीते संभारी; ५६
प्रथम उपर पर्श्रो चारे चारे, तालो धारेछे जारी, ३४
तार्टके तो एवी तालो, भाख्यो आठे शुभकारी. १२१. १२१३६४

छंदःप्रभाकरमा अंते मगण लाववानुं कह्युं छे

१२३ चौपैया, चतुष्पदी, चतुरपद. १०, ८, १२ यति.=३०मात्रा
यमक आणवी. ४+४+४+४+४+४+स+ग=३० मात्रा

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७ मात्राए ताल

षट चोकल पर धर, सगण तुं कविवर! तेपर गुरु धरजेभी, १८६८१५०
फल त्रीश करी पूरी, बहुज मधुरी, चौपैया करजेनी, १२१६४५
दश अंठे यति करी, बारे पर्श्रो धरी, एम विरति त्रण आवे, १८६१२१
दे ताल त्रीजीपर, श्रुति चडती धर, चौपैयामा भावे १२३. ३११६

पादना आदिमा जगण नगण न लाववा चित्रसेनटीकावाळा नागपिंगलमां कह्युं छे छंदोरत्नमुक्तावलीमां विषम स्थाने जगण न लाववा कह्युं छे छंद शास्त्र अने छंद प्रभाकरमां ७ चोकलिया(तेमां अंते स)+ग=३० मात्रा आणवा कह्युं छे

यही १०, ८ मात्राए प्राय साथ्या मिलानी पण चौपैया जाति मात्री छंद शतकमा वर्ती छे

!२४ चूडामणि. १२, १८ यति=३० मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

एण चरणमां मळीने, सकल कल्या शीघ्र तो गणी करजो, ३५४६६५
रे अने पुराणे, विराते वे गोठवी मरस धरजो; ४७५०२०
ना वे गीर्तिनी, गणिने आणो नियम यथा भारी, ६४४५८
जातिने के' छे, चूडामणि शोभती तरस भारी. १३७. १५६४००

२५ साटक. ि १९२ यति=३० मात्रा, तेमां १८ मात्राना १२

अक्षर२, १५, १९, २४, २९ अक्षर तेमां अन्ते गुरु.

१, सटनिपे, अक्षरे ओगणीशे, ८३०८७
ाणो प्रीश रला ग्री, एक विराम दीशे, ८८३०८२
ाना अक्षर बार सातें, येनी यति आणजो, २१४४६४.
ोनो बार त्र ९सटा, गण रही जाणजो. १३८. २१५४२६

नि साटक जर्वविक्रीडित वृत्तना गणे बोलाय छे एटले तेना ताल ते

आ — तेना जे ४२ भेद थाय छे, ते फोड मागधी पिंगळने आधारे
ल ०१श छ, ए उपरथी एम धारणा थाय छे के ३० मात्रा साथे पूरेपूरा १९
अक्षर आणवा एवो नियम नथी, अने ते अभिप्राय अमन पण उचित लागे छे

मागधी नाग पिंगलमां साटकना ४४ गुरु तथा ३० लघुमार्थी
वच्चे लघु वधारतां तथा अदे गुरु घटाडतां नीचे प्रमाणे ४२ भेद
लीधे छे —

१ मालूरी.	२ वंभी.	३ दभाणी.
४ वीरो	५ राहमो	६ नदाणी.
७ कनो.	८ सोमनो.	९ सव्वगो.
१० भद्दगो.	११ नगो.	१२ सारंगो.

मात्रा ओगणत्रिश, पदमां तुं धरिश, एवो आणी मेळ; ૩૨૧૬૦૩
दश वसु यति धारे, पछीं अगियारे, एम विरति त्रण थाय, ૫૦૩૮૧૭
धर त्रण पर तालज, श्रुति श्रुति पर सज मरहट्टा कें वाय. १२४.३२८७३६

प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंद.कामदुघावल्ल, चिंतामणी, दला-
दिमां उपर प्रमाणे माप छे, पिंगळादर्शमां एनी ३० मात्रा लखी छे, ते भूल
जणाय छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमां सात चोकलिया [तेमां अंत चोकलिओ अरस
गुरु वाळो) +ल=२९ मात्रा आणवा कह्यु छे.

महातौथिक ३०मात्रानी १३,४६,२६९ वृत्ति थायछे.

१२२ तार्टक. १६,१४ यति=३० मात्रा.

३, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

त्रीशे त्रीशे मात्रा दीसे, प्रति पद मांहे बहु सारी, ૧૩૦૭૪૩
सोळे चौदे यति बे आणो, सारी रीते संभारी; ૫૬
प्रथम उपर पछीं चारे चारे, तालो धारेछे जारी, ૩૪
तार्टके तो एवी तालो, भाळो आठे शुभकारी. १२९. ૧૨૧૩૬૪

छंदःप्रभाकरमां अंते मगण लाववानुं कह्यु छे.

१२३ चौपैया, चतुष्पदी, चतुरपद. १०, ८, १२ यति.=३०

વળી ૧૦, ૮ માત્રાએ પ્રાસ લાવ્યા વિનાની પણ ચોપૈયા જાતિ માત્રથી છંદ શતકમાં વળી છે

!૨૪ ચુડામણિ. ૧૨, ૧૮ યતિ=૩૦ માત્રા.

૧, ૫, ૯, ૧૩, ૧૭, ૨૧, ૨૫, ૨૯ માત્રાએ તાલ

રણ ચરણમાં મળીને, સકલ કલા ત્રીશ તો ગણી ધરજો, ૩૫૪૬૬૫
રે અને પુરાણે, વિરતિ બે ગોઠવી સરસ ધરજો; ૪૭૫૦૨૦
રના બે ગીતિની, ગણીને આણો નિયમ બધા ધારી, ૬૪૪૫૮
જાતિને કે' છે, ચુડામણિ શોભતી સરસ ભારી. ૧૨૭. ૧૫૬૪૦૦

૨૫ સાટક. ૧૮, ૧૨ યતિ=૩૦ માત્રા, તેમાં ૧૮ માત્રાના ૧૨ અક્ષર [illegible] ૭ અક્ષર તેમાં અન્તે ગુરુ.

૧, [illegible] રૂપઘનાક્ષરી, જા[illegible] યતિ છે [illegible] [illegible]

રાણો ત્રીશ કલા રૂપઘનાક્ષરી કહેછે, [illegible] યતિના [illegible]

[illegible] અક્ષર ચાર =૩૨ માત્રાની ૩૬,૨૪,૬૭૮ વૃત્તિ થાયછે.

નો ચાર કળ [illegible] સવૈયા. ૧૬, ૧૬ યતિ=૩૨ માત્રા, અંતે બે ગુરુ.

સાટક જા[illegible] ૧, ૫, ૯, ૧૩, ૧૭, ૨૧, ... ૨૯ માત્રાએ તાલ

[illegible] માત્રા બત્રીશ મળીને. ચરણ ચરણમાં રચજો સારી, ૧૪૮૫૬૭
[illegible] સોળે સોળે યતિ આણીને, કરજો પદરચના શુભકારી, ૩૮૪૫૩૦
બને સવૈયા બત્રીશા ઠીક, જેમાં બે ગુરુ છેલ્લા આણો, ૪૭૩૫૮
એક પછી ચચાર જ ઇતી, તાલ તણી જુગતી ઠીક જાણો ૧૪૨ ૩૭૧૩૨૫

૧૩૦ કેતકી (સવૈયા) ૪+૪+૪+૪+૪+૪+૪+ગ ગ,=૩૨માત્રા.

૧, ૫, ૯, ૧૩ ૧૭ ૨૧, ૨૫, ૨૯ માત્રાએ તાલ

ચોકલિયા ગણ સાત રચીને, ઉપર બે ગુરુ આણો ભારી, ૫૩૩૦૨
સોળે સોળે યતિ રાખીને, પદ રચના કરજો કવિ સારી, ૩૭૩૫૮૪
તાલ સવૈયા બત્રીશા સમ, ચારે પાદે સરખા આવે, ૧૨૨૩૮૪
એમ સવૈયો રચજો કેતકી, જે કવિજનના મનમાં ભાવે ૧૪૩. ૧૪૬૬૧૫

मात्रा ओगणत्रिश, पदमां तुं धरिश, एवो आणी मेळ; ३२१६०९
दश वसु यति धारे, पछी अगियारे, एम विरति त्रण थाय, ५१०३८१५
धर त्रण पर तालज, श्रुति श्रुति पर सज मरहट्टा केवाय. १३४,६२८७३

प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंद-सामसुधाकर, चिंतामणी, इत्यादिमां उपर प्रमाणे माप छे, पिंगळदर्शमां एनी ३० मात्रा लखी छे, ते भूल जणाय छे. छंदोरत्नमुक्तावलीमां सात चोकलिया [तेमां अंत चोकलियो अंत गुरुवाळो) ४×७=२९ मात्रा आणवा कह्यु छे.

महातैथिक ३०मात्रानी १३,४६,२६९वृत्ति थायछे.

१२२ तार्टक. १६,१४ यति ३० मात्रा.

बीजे ग्रंथे "ध्यारो" नाम मळी जायछे २१, २५, २९ मात्राए ताल. हे बहु मारी, १३०७
[illegible] प्रति न मळवाथी तेम चलाववु पड्युं छे संभारी;
वतारी--२१ मात्रानी २१,७८,२ [illegible] मात्रा, ते जारी,

चोरस १६ दंडकल कर ते उगरे, १०२८३०३
बे चोकलिया कर, ते पर गुरु धर,
एम कला बत्रीश खरे; ८१३७६३
दशने पछी आठे, विया टाठे,
त्रण यति एवा एम सजे, ८१६५२६
त्रग पछी चचारे, वसु कुल ताले,
दंडकला जाति निपजे. १४९. ८५०२७७

१ मनहरपिंगळमां १८, १४ यति लखेछे, पण ते बराबर नथी

छंद प्रभाकरमां अंते सगण लाववानु कह्युं छे, अने कोइ कोइ, अंतमां एक गुरु मानछे छंदोरत्नमुक्तावलीमां आनु नाम दंडकल आपी विशेषमा जणावेछे के, आना पायमाथी आरभती बे मात्रा ओछी करवाथी "लघुदड

१३१-रेणकी ९,९,८,६ यति=३२ मात्रा तेमां अन्ते लघु, गुरु.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१, मात्राए ताल.

३२
सज सरस प्रतिपद, सकल कल रद रद,
अन्ते लघु गुरु, प्रति झडमां, १३२१७६३
८ ९
नव उपर नव कर, पछी वसु खट पर,
एम विरति धर, प्रति पदमां; १३३६३१०
त्रण पर धर प्रथम, चचार उपर खम,
८
ताल वसु सुगम, एम नकी, १०२१५४८
ए रेणकी-जाति, रसिक गणाती,
कवि ठीक गात सु, राग थकी. १४४. ~~९७४१६८~~ ८३५०

१३२ दंडकला. १०,८,१४ यति†=३२ मात्रा. तेमा छेलो गु

४+८+४+४+६+४+४+ग=३२ ३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१ मात्राए त

प्रथमे चोकल गण, चार प्रथम भण, १०२८३०३
पछी गलिया कर, ते पर गुरु धर,
एम कला बत्रीश खरे; ८५३७६३
१४
दशने पछी आठे, विरामा ठाठे,
त्रण यति एवा एम सजे, ८११६१२६
८
जग पछी चचारे, वसु कुल ताले,
दंडकला जाति निपजे. १४५. ८५०२७७

† मनहरपिंगळमां १८, १४ यति लखेछे, पण ते बराबर नथी छन्दप्रभाकरमां अंते सगण लाववानु कह्यु छे, अने कोइ कोइ, आमां एक गुरु मानछे छन्दोवृत्तमुक्तावलीमां आनु नाम दंडकल आपी विशेषमां जग तेडे छे, आगा मात्रमांनी भारभनी ते मात्रा ओटी गणवाथी "लघुदड

कल" जाति थायछे. अने तेज रीते पद्मावती आदिमां पण चरणना आरंभनी बे मात्रा ओछी करवाथी "लघुपद्मावती" आदि नाम पडेछे.

१३३ लीलावती. † ७ डगण+स=३२ मात्रा. १८,१४ विराम.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल.

करौ सात डगण दर चरण चरणमां, १२०७८५८
पछी ते पर तो सगण करो, ३२६३५०८
अष्टादश उपर पछीथी चौदे,
धीरज धरीने विरति धरो; ११७४५७५
ओजी पर प्रथमज पछी चचारे,
ताल बधा मळी आठ गणो, ९७१३७३
कल बत्रीश केरी एवी जाति,
लीलावती बहु ठीक भणो. १४६. ९९९८११

† चूडामौक्तिक, छंदःशास्त्र अने मागधी नागपिंगळ प्रमाणे. छंदार्णवमां अंते सगण लावचा कहेछे. छंदोरत्नमुक्तावलीमां मात्र ३२ मात्रा आणवा कह्यु छे, पण तेना उदाहरणमां अंते सगण आण्यो छे. छंदःशास्त्रमां आठ डगण आणवानु कही अंते गुरु के सगण कइ आणवानु कह्यु नथी.

१३४. त्रिभंगी. १०, ८, ८, ६ यति † ८ डगण=३२ मात्रा. तेमां अंते ग. आठे डगणमां जगण न आणवो. दरेक यतिए अनुप्रास, ३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल.

३२
लीलावती ताले, कल रद घाले,
बहु संभाले, कविन खरो, ११५७१४६
अन्ते गुरु एमां, जगण न जेमां, ८५७०२५
श्रुति यति तेमां, प्रास करो; १८६७०२५
ाति दशने आठे, वसुना ठाठे,
ःतने माथे, वेस भरो, ८३८९५४

ए जाति त्रिभंगी, रचि बहु रंगी,
आधिक उमंगी, ठीक ठरो. १४७. ८५७०४६

‡ छंदोवृत्तमुक्तावलीमा १०, १६, ६ यति कही छे दलपतराम कविए अंते बे गुरु लाववा लख्युं छे, तेनुं प्रमाण मळ्युं नथी छंदशृंगारमां पण अंते एक गुरु छे, चित्रसेन टीका, नागराज पिंगळ, छंदशास्त्र तथा वाग्वल्लभमां आ जातिना उदाहरणमां पण एकज गुरु मूक्यो छे तथापि नियममां गुरु लाववो एम जणाव्युं नथी माटेथी नागपिंगळमां छेल्ले सगण लाववानुं कह्युं छे, वळी ते विशेष एम पण जणावेछे के "सम के विषम पदमां जगण आवे तेनी चिंता नहि" लखपतजशसिंधुमां पण एमज छे छंदप्रभाकर केहेछे के "कोइ काइ कविए आ जातिने अन्ते लघु वर्ण पण राख्यो छे, पण श्रेष्ठ कवियोए तो गुरुज राख्यो छे अने ते रुचिकर पण लागे छे" चित्रसेन टीकामा लखेछे के, यतिने अंते जगण आवे नहि •

त्रिभगी जाति दैत्यकुळमांथी प्रसिद्ध थइ छे, एम केहेवायछे

६० गुरु अने ८ लघुनुं पेहेलुं रूप गणता (मूळ रूप राखता) अकेको गुरु घटी, बब्बे लघु वधता त्रिभंगीना मुग्धादि ११ भेद थायछे. ते नीचे प्रमाणे —

क्रम.	भेदनाम.	लघु.	गुरु
१	मुग्धा	८	६०
२	मदा	१०	५९
३	रोहिनि	१२	५८
४	रामा	१४	५७
५	कलगा	१६	५६
६	छदा	१८	५५
७	मदा	२०	५४
८	सरिनी	२२	५३
९	हेरवा	२४	५२
१०	रवि	२६	५१
११	सरा	२८	५०

१२	तंका.	३०	४९
१३	वामिनि.	३२	४८
१४	कंठा.	३४	४७
१५	पालका.	३६	४६
१६	रोहा.	३८	४५
१७	लोहा.	४०	४४
१८	सकरा	४२	४३
१९	पासा.	४४	४२
२०	आसा.	४६	४१
२१	मोहा.	४८	४०
२२	परमा.	५०	३९
२३	संभुता.	५२	३८
२४	कपालिनी	५४	३७
२५	पारा.	५६	३६
२६	सारा	५८	३५
२७	समरा	६०	३४
२८	द्वारा	६२	३३
२९	सारा	६४	३२
३०	अत्र	६६	३१
३१	पाधा	६८	३०
३२	पद्मा.	७०	२९
३३	पारेंड.	७२	२८
३४	पालीनी.	७४	२७
३५	परिभंगा	७६	२६
३६	माथा. मंथा. चि गे.	७८	२५
३७	नाथा.	८०	२४
३८	वसा.	८२	२३
३९	अमल	८४	२२
४०	अनग.	८६	२१
४१	वेला.	८८	२०

४२	चाला.	९०	१९
४३	चालिनि.	९२	१८
४४	थिरा.	९४	१७
४५	माला.	९६	१६
४६	उर्ना.	९८	१५
४७	रेख.	१००	१४
४८	चित्रनी	१०२	१३
४९	वेगा.	१०४	१२
५०	चारा.	१०६	११
५१	काला.	१०८	१०
५२	हंसी	११०	९
५३	वसनि.	११२	८
५४	सुभकुम्मारि	११४	७
५५	कलहंस	११६	६
५६	दोमा.	११८	५
५७	गोसा	१२०	४
५८	रांवच	१२२	३
५९	सारा.	१२४	२
६०	रसीआ.	१२६	१
६१	हंस.	१२८	०

अक २६, २९, अने ५९मे "सारा" नाम एवुए आवेछे पण ते फेरचवा बीजी प्रतिनो आधार न मळी सकवाथी एमज चलाव्यु छे

१३९ प्रेमावती, पोमावती १६, १६ यति=३२ मात्रा, तेमां अन्ते बेगुरु.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

सोळे सोळे बे यति बोले, एम कला कुल बत्रिश लावे,
तेमां चरण चरणनी मांहे, बे गुरु अक्षर अन्ते आवे;
प्रथम पछी चचारे ताले, चाले बहु कुल हारे हारे,
ए रीते रचना करवाथी, प्रेमावती, पोमावती धारे.१४०.

छंदः प्रभाकरमां आत्रा मापने पद्मावतीनी यति मूकी तेनी साथे भेळवी

देछे, पळी तेनु बीजु नाम पदमावती पण आपेछे, पण तेवी जाति उल्हरण नामे जूदी छे पद्मावतीनु माप नीचे प्रमाणे सबळ मराठी प्रतिपादन करेछे, तेज योग्यछे

१३६ पद्मावती, पउमावती ‡ १०, ८, १४ यति=३२ मात्रा.

४+४+४+४+४+४+४+स=३२ मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल

गण चोकल केरा, रचजो साते,
सगण सरस ते पर धरजो, 1220८४८
दश वसु ने रवे, विरति प्रयवे,
बत्रिश कल करतां करजो; 1018038
त्रीजी कल उपर, पछी श्रुति श्रुति पर,
ताल सकळ मळी वसु रचजो, 1336476
पद्मावती माती, ठिक बनी जाति,
कविजन रचवाने मचजो. १४९ ८०३७१९ 1221224

‡ मागधी छंद शतकमा ए नामछे

प्राकृतपिंगळसूत्रकार, अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टीकाकार, आठ गण चोकलियां लाववानु कह्यां(जगण)सिवायना बाकीना चारमांथी गमे ते लाववानु केहेछे तेमणे छेवे सगण आणवा सारु नियम बताव्यो नथी, पण तेमणे आपेला उदाहरणमां ते जोवामां आवेछे छंदशास्त्रमां आठ चगण पैकी पयोधर (जगण) नामनु रूप न लाववु एम कह्यु छे

१३७ कामकळा. १६, १६ यति=३२ मात्रा. तेमां अंते गुरु‡

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

सोळे सोळे यति सजी सारा,
कुल कल बत्रिश पूरण करजो, 1205768
तेमां कविवर मति पदमांहे,
एक गुरु ठिक अन्ते धरजो; ८८५३६८ ७०२

प्रथम उपर पछी चारे चडती,
वसु कुल ताळो पदमां गणजो;
कामकला ए जाति सारी,
ए रीते आदरथी भणजो. १९०.

‡ छंदार्णवमा अन्ते बे गुरु केहेछे पण तेम करवाथी ते प्रेमावती थइ जायछे चिंतामणी पिंगळ अन्ते सगण आणवा केहेछे ते उचित छे

१३८. दुर्मिला, दुमिलिया, दुमिला १०, ८, १४ यति=३२ मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल आठ डगण.

गण चोकलिया ठिक, आठ रची वर्यो,
बत्रिश मात्रा तो करजो;
दश आठ अने वळी, चौद उपर यति,
एम तमे त्रण ठिक धरजो,
तजी बे मात्रा पछी, श्रुति श्रुति उपर,
आठ करी कुल ताल मरे,
दुमिला दुर्मिला, दुमिलिया वळी,
नाम धरे कृति एम करे. १९१.

छंद शास्त्र, नागपिंगळ, मनहरपिंगळ अने लखपत जशसिंधुमा १०, ८, १४ यति केहेले, पण अन्ते गुरु विषे कइ कहेलु नथी, तो पण तेमना दृष्टांतमां ते छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमा १६ मात्राए यति कही छे वळी विशेषमा जणाव्यु छे के "केटलाक अंते सगण लाववा केहेछे छंदप्रभाकर अन्ते सगण पछी बे गुरु लाववानु कहा, टीकामा जणावेल के" श्रीसारीदासे (छंदार्णवमा) उदाहरणमां पेहेला बे पादमा अन्ते बे गुरु अने पछीना बे पादमां अन्ते सगण राख्यो छे, पण ते सर्व सम्मत नथी. तेमज तो (छंद जाति) पृथार्थी पण विरुद्ध छे श्रीमद् भट हल्युद्दे अन्तना गुरु लघु विषे निशेष कंइ कह्यु नथी

१३९ जलहरण†, कमलावती§, धर‡. १०, ८, ८, ६ यति=३२ मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताळ

कुल कल बत्रीशें, पूरी दीशे,
प्रति पद विषे, एम भणी, ८५६५२१
दशपर कल वसु धर, वसु कल तेपर,
रस कल वळी वार, विरति तणी; १३४५२८२
तर्जी ये पर्ळो धारे, चारे चारे,
हारे हारे, वसु तालो, ३१७८२१
तो जलहरण अने, कमलावतीनी.
जुगती वाळी छे भाळो.. १९२. ७६२९

† चिंतामणिमां आ जातिनुं माप जलहरण प्रमाणे लख्युंछे, ते भूल छे
§ चित्रसेनटीका-मागधी पिंगळ ‡ भाषाछंदोभजरा

१४० दंडक १८, १४ यति. कोई १०, ८, १४ यति करेछे.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल

कर वर्यो मळीने कल, बत्रिश पुरी,
चरण चरणमां ठीक धरी, ६०३३२६
यति एक अढारे, बीजो चौदे,
एम प्रति पदमांह करी; ६७११५४
तर्जी ये कल पर्ळोथी, श्रुति श्रुति उपर,
ताल चडे वसु सुधी जाती, ~~१६२२२४०~~ ३५०४१
ए दंडक नामे, कविता कामे,
आवे उपयोगी जाति. १९३. ४६५२१

छंदोरत्नमुक्तावलीमां ४+४+४+४+६+४+४+ग=३२ मात्रानुंमाप लख्युंछे पण १३२ अंकनी दंडकला जाति एज मापनी थाय छे पर्ण शृंगारसागरनी मागधभाषी टीकामां उपर मुजब गण पाडीने तेनुं नाम दंडकल आप्युंछे

१४१ जनहरण. १०, ८, ८, ६ यति=३२ मात्रा. तेमां बधा लघु
अन्ते एक गुरु. ३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१ मात्राए ताल.

द्विजवर जश जिनि कर, चरण चरण पर,
पर्ठो तुं सगण धर, प्रतिपदमां, १३४६२६९
रद कल कर वधों मळों, सरस सरस वळों,
नरस नरस तजों, दूर अडमां; १३४६२६९
दश कल पर यति धर, वसु वसु पर कर,
पर्ठो धर रस पर, ठीक यति तो, १३४६२६९
ठीक जनहरण जरुर, जलहरण ज सुर,
वन नहि कर्दो क्रूर, धर्रो मति तो. १५४.१३४६२६९

[1]प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाणीभूषण, वगेरे चरणमां गुरु ने गुरु आवी जाय तो छंद मूके छे, पण एम थवाथी ते त्रिभंगीमां मळी जाय, माटे ए अभिप्राय उचित लागता नथी छंदोवृत्तमुक्तावलीमां अमे उपर आप्युं छे तेवु मापछे छंदप्रभाकरे "जलहरण" नाम कोइए वापरेल छे ते अ[illegible] मान्यु छे

१४२ शुद्धध्वनि. प्रथम छ मात्रा, ते पर दंडीनुं माप. [illegible]
०,८,१४ यति=३२ मात्रा. ६+(SSIIII SSIIII S[illegible]
३, ७, ११, १५, १९, २३ २७, ३१ मात्राए ताल[illegible]मां १०, ८ [illegible]ना दृष्टांतमां [illegible]मां जणाव्युं

रस कल पर कर्णो । द्विज धर, कर्णो ।
द्विजवर, कर्णो द्विज धर तुं । ११७४८[illegible]
ते पर पर्ठो गुरु । छंद धर्रो पूरु ।
रद पद एनु ठिक धर तुं, । ११७४८१०
तजों वे पर्ठो ताले, श्रुति श्रुति चाले ।
वसु कुल घाले, चरण विषे । ११७४८१८

शुद्धध्वनि मांहे, दश वर्णु ज्यांहे ।
१४
मनु कल त्यांहे विरति दिशे. १९१. ११७४८५७

छंदप्रभाकर केहेछे के, चिंगळे वीररसना वर्णनमां कोइ कोइ कवि शुद्धध्वनि केहेछे, पण तेमा जगणनो निषेध कर्यो नथी.

† कर्ण (ऽऽ) वे गुरु. द्विजवर (।।।।) चार लघु

१४३ मदकरण. १०, १२, १० यति. (य+य+टै+टै+ठै+ठै)=३२मात्रा.

२, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल

धरो आदिमां वे, *तारापति गण ते पर,

वे टै ठै गण धरजो, १२६२५३२

१०
दिशा चार लावो, यति पछी दश पर श्रीजी,

धरी जगण करजो; १२४६६८५

८ ४
बीजे सात तालो, पछी थी चडता श्रुति श्रुति,

६
पट तालज रचजो, १२२१८३२

कन्या थाय पूरी, वत्रीश एवी जाति,

मदकरण समजजो. १९६. १३१७६६५

आ जाति चागवलभमाची लीधी छे

* ।ऽऽ इन्द्रासन गण [पांच मात्रानु पेहेलुं रूप—यगण]

मागधी सवैयो. आठ ड [चोकलिया] गण. लघु गुरुनो नियम नथी.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

चोकलिया गण आठ रचीने

कुल बत्रिश कल पूरी करजो, ८९८८७२

गुरु लघुनो तो नियम कशो नहि

एम चतुर कविजन चित धरजो; १३४३२७६

पेले पछी चचारे तालो

भाळो कुल वर्णु मतिपद मांहे, ५०३२६२

एम बने मागधी सवैया
जरुर विरतिनो नियम न जांहे. १९७. ४९६३७८
आ जाति गुर्जरी रागे गवायछे, अने ते जयदेवकृत अष्टपदीमा प्रसिद्ध छे.

१४५ समान सवैयो ‡, सुगत सवैयो †.

१६, १६ यति=३२ मात्रा, तेमां अन्ते भगण.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

घत्रिश कल तुं सकल मळीने,
चरण चरणमां रच निर्बाधक, २३२६६७३
सोळे सोळे यति वे अंते
एक भगण रचनानुं साधक; २२४६२०६
प्रथम उपर पछी चारे चारे,
ताल तरत तुं देजे लागट, २२०२८१६
एम समान सवैयो रचना,
लाग लगार कांई कंइ ना घट. १९८. २५४६९५५

‡ भाषाछंदोमंजरी. † ए नाम छंदोल्लतामा छे.
अंते भगण लाववा छंदःप्रभाकरमा कह्यु छे

१४६. खरारि (छंदःप्रभाकर.) ८, ६, ८, १० यति=३२ मात्रा.
३, ९, १५, २१, २५, ३१, मात्राए ताल.
३२
प्रति चरण चरण, सारों दंत,
कल खरारिमां, धरों पाद आदरो, ६८८४६७
छे आठ छ ए, आठ दशे,
एम नारतो, यति मापथी धरो; ६८७३११
बे मूकीं कला, त्रीजी परे,
ताल धरो रे! नव पंदरे करो, ६८४७२७
पछीं एकवीश, ने पचीश,
एकत्रीशपर, ठिक ताल तो भरो. १९९. ७०५१७५

मात्रा दण्डक.

३३ मात्रानी ५७,०२,८८७ वृत्ति थायछे.

छंदःप्रभाकर, छंदार्णव, आदि ग्रंथोमा बत्रीश मात्रा पछीनी जातिने "दंडक मात्रा जाति" कही छे

१४७. रंगिक्का. १७,१६ यति=३३ मात्रा, तेमां अंते लघु गुरु.

१, ५, ९, १३, १८, २२, २६, ३० मात्राए ताल

सत्तर ने कल सोळे विरति रच,
लघु गुरु लावी छेवट चरणे;
तेत्रीश लाव कला कुल खंतमां,
रचो प्रति चरणे कविवर वरणे;
प्रथम पछी श्रुति श्रुतिने अंतरे,
आवे ताल चतुर प्रति यतिमा;
एवी रचना जो ठीक थाय तो,
रंगिक्का खपशे कवि मतिमां. १६०.

३४ मात्रानी ९२,२७,४६५ वृत्ति थायछे.

१४८. (अपरा) सपादी. मात्रा ३४ तेना अक्षर २२.

गणनो नियम नहि १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९, ३३ मात्राए ताल

बाविश अक्षर धरीने ते मध्ये चोत्रीश रचो कल तो सर्वे,
जाति अपरा सपादी ए तो वखाणी वागवल्लभे विना गर्वे;
एक उपर छे ताल प्रथमनो ने चचारे चडता तो चाले,
घरा मळी छत्रीश भर ताळो प्रतिपादे नाडीथी शुभ म्हाले. १६१.

. २९ मात्रानी १,४९,३०,३५२ वृत्ति थायछे.

१४९. कानर. ८,+१०,+१२, यति+र=२९ मात्रा.
१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ मात्राए ताल.

पांतरिश सकल, कल प्रति चरण मांह,
ठिक थायछे एम कवि! जाणजो,
. आठ दश बार, पर विरति तो सरस,
ने रगण वळी ते उपर, आणजो;
प्रथम पर ताल, पछी चडे शेर उपर,
ठिक एम सौ सात तो, ताल छे,
• एह आ जाति, कानरतणी सरस,
तो शोभती टणकती, चाल छे. १६२.

• ३७ मात्रानी ३,९०,८८,१६९ वृत्ति थायछे.

१५० झूलणा, आंदोलिता, झुल्लाणा, झुल्लन.
१०, १०, १०, ७ यति=३७ मात्रा, तेमां अंते एक गुरु
१, ६, ११, १६, २१ २६, ३१, ३६ मात्राए ताल.

दश दशे ने दशे, विरति साते वसे,
एम त्रिश सात कल, सकल आवे,
सुकवि को होय ने, जे जरुर जोय ते,
अंतमां एक गुरु, आप लावे;
प्रथम पे'ली पछी, पांच पांचे चडे,
सकल मळी आठ छे, ताल जाते,
एज *आंदोलिता*, *झूलणा* जाणजो,
गाय छे सिन्धुमां, ने प्रभाते. १६३.

भाषा-छंदोमजरीमां १०,१०,१७ यति कही छे. प्राकृत पिंगळसूत्रमां १०,१०,१७ यति कही छे. अने अंते एक के बे गुरु आणवा, ते विषे वद

लघु नथी, तेम तेना उदाहरणमा पण एवो नियम कंइ पाळ्यो नथी छंदो वृत्तमुक्तावलीमा सात पचकलिया+२मात्रा आणवा कही, प्रत्येक पचकल छूटा राखवा॑ जणावेछे वळी एज ग्रथमा लख्यु छे के—'झूलणानान चरणमा अत्य लघु अने उपत्य गुरु आवीने ३८ मात्रा थाय तो उपझूलणा जाति बनेछे अने झूलणाना मापमा अते बे मात्रा (उदाहरणमा १ गुरु छे) वधीने ३९ मात्रा थाय तो सुझूलन थायछे, अने झूलणाना मापमा अते त्रण मात्रा (उदाहरणमा त्रणे लघु आण्या छे) वधे अर्थात् ४० मात्रा थाय तो अति झूलन थायछे "

१५१ कडखा १०,१०,१०,७ यति=३७ मात्रा, तेमा अन्ते बे गुरु.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ ३६ मात्राए ताल

प्रथम दश ते पछी, दश उपर आणजो,
ते पछी वळी दशे, विरति जाणो,
एम साडत्रिशे, कल वधी आणता,
अन्तमा बे गुरु, अचुक आणो,
ताल प्रथमे धरी, पांच पाचे चडी,
आठ तो एम कुल, ताल आवे,
झूलणा रागथी, थाय कडखा गळी,
सिन्धु रागे भली, भात भावे १६४

१५२ हंसाल २०,१७ यति=३७ मात्रा, तेमा अन्ते बे गुरु.

(मापा छंदो मजरा प्रमाणे) (ताल कडखा प्रमाण)

सकल कल चरणमा साडत्रीशे करी,
ते विषे अन्तमा कर्ण आणो,
वीश सत्तर विषे विरति बे आणता,
थाय हंसाल ठिक एम जाणो,
प्रथम पर ताल ने पांच पाचे पछी,
ताल्नी आठ तो जोड गूथो,

दश दशे सतर पर विरति कवि को कहे,
पण तमे तेम जाति न चूंयो १६९.

प्राकृत-पिंगळ सूत्रमां १०, १०, १७ यति कही छे. अने अन्ते एक के वे गुरु आणवा कंइ कह्यु नथी. तेमज तेना उदाहरणमां पण ए नियम पाळ्यो नथी. छंदःप्रभाकरमां २०, १७ यति अने अन्ते एक गुरु आणवा कह्युं छे.

१५३ करखा. ८, १२, ८, ९ यति=३७ मात्रा. ताल कडखा प्रमाणे
(भाषा छंदोमंजरी प्रमाणे)

आठ पर प्रथम, पछी बार पर यति करी,
आठ पर आणी, नव उपर करजे,
एम यति चार, कल त्रीश ने सातमां,
प्रति पदे थाय, उर एम धरजे;
एक पछी पांच, पर ताल चडता रची,
सकल मळी आठ, ठिक ताल राजे,
थायछे सरस, करखा भली भातनी,
प्रभु तणा गुण, ते मांह गाजे. १६६.

छंद प्रभाकरमा अन्ते यगण आणवा कह्युं छे, पण ते सर्व सम्मत नथी छंदःशृंगारमा २०, १७ यति, तेमा अते गुरुछे. चिंतामणीमा १०, १०, १७ यति कही छे

३८ मात्रानी ६,३२,४५,९८६ वृत्ति थायछे.

१५४. राजचंद्र. ६,८,१०,१४ यति=३८ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९, ३३, ३७ मात्राए ताल
१०

प्रथम छ पर, पछी आठ दशे, यति ठिक आणीने
छेल्ली यति चौदे लावो,
मात्रा ए, रीते प्रतिपद, ठिक कविवर वरणे,
आडत्रिश कुल थइ आवे;

एक उपर, पछी श्रुति४ चडता, कवि! ताल धरो दश,
चालिश कुल ए रीत करो,
जाति ए, राजचन्द्र पद, ते रचवा मचवा,
अतिशय अंग उमंग धरो. १६७.

४० मात्रानी १६,५५,८०,१४१ वृत्ति थायछे.

१५५ मदनहरा, मदनहर, मदनगृह, मदनहरण, मदनदीपन.
१०,८,१४,८ यति=४० मात्रा. तेमां आदि बे लघु,
अंते गुरु, अने वचमां छत्रीस मात्राना नव चोकलिया
आणवा तेमां पयोधर=जगण न लाववो. यमक आणवी.
३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१, ३५ ३९ मात्राए ताल.

लघु बे रोकडिया, नव चोकलिया,
तेपर गुरु गरवो आवे, पद शोभावे;
कुल मळी कळ चालिश, प्रतिपद भाळीश,
मध्य जगण जो नव लावे, अड तो भावे;
दश८ वसु१४ मनु८ वसुए, विरति करो वळी,
त्रण चच्चारे ताल धरो, पद एम करो;
वळी मदनहरणने, मदनहरा कही,
मदनगृहा ए मदनहरज, रची चित्त ठरो. १६८.

वृत्तार्णवमां त्रिभंगी उपर आठ कल लाववा केहेछे. चिंतामणीमां ६+(८ ..लिया)+ग एम माप कह्यु छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां कह्युं छे के पद्मावती-ना प्रत्येक चरणमां (अन्त्य सगणवाळी), आठ मात्रा वधे तो मदनगृह अथवा मदनदीपन जाति थायछे. छंदःप्रभाकरमां दर्शाव्यु छे के, क्यां क्यां आ जातिमां ३२, ८ उपर यति कही छे ते अशुद्ध जाणवी; पण एम पोतानो अभिप्राय शाथी थयो छे, ते जणाव्युं नथी. वाणीभूषणमां प्रथम छ मात्रा लाववा केहेछे, एटले गमे तेवी बे मात्रा उपर एक डगण लावतां प्रारंभमां

बे लघु अथवा एक गुरु आणी झकाय एम अभिप्राय छे. छंदशृंगारनी मारी पासे एक प्रति संवत् १८५३ नी सालनी छे. तेमां "तिहि विच गन जगन न" इत्यादि छे. तेने बदले पिंगलादर्शना कर्त्ता हीराचंदना हस्ताक्षरनी लखेली एक प्रति मारी पासे छे तेमा तेणे "तिहि मिच रम जगरन" एम अशुद्ध पाठ लख्यो छे अने ते उपरथी तेवो अर्थ करी वचे रगण ने जगण न लाववा हीराचंदे लक्षण बांध्युं छे, ते भूल उपरना कारणथी थइ जणायछे

२५६ हिंदोल १०,१०,१०,१० यति=४० मात्रा. तेमां अंते लघु गुरु.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल.

दशर्नो पर दश करो, ते उपर दश धरो,
सात कल वळी भरो, उपर ध्वजां आणजो; † लघु गुरु
एम चालीश कल, थायछे ठिक सकल,
जाति हिंदोलमां, जरुर करी जाणजो;
दशर्नो पर्ळी दश अने, दशर्नो पर दश बने,
श्रुति कथी कविजने, विरति एवी खरे;
प्रथम पर्ळी पांच ने, पांच चडता बने,
आठ कुल ताल ते, कविजनो ठिक धरे. १६९.

२५७ सुभग, उद्धत, उद्धतचाली. १०,१०,१०,१० यति=४० मात्रा. तेमां अन्ते ग ल. ३,८,१३,१८,२३,२८,३३,३८ मात्राए ताल.

दश कल प्रथम सार, दश ते उपर धार,
वळी दश त्रीजी वार, दश ते परे धार,
कल सकल चालीश, यति चार भाळीश,
दश उपर लावीश, प्रतिपद विषे सार;
तर्नो बे त्रीजे ताल, त्यां प्रथम संभाळ,
चर्डी पांचनी चाल, कुल आठ भाळीन,
छे सुभग ए जाति, उद्धत भली भाति,

ते धर्कोज विख्याति. ए उधतचाली ज. १७०.

† छंदःसार तथा चिंतामणी प्रमाणे. ‡ भाषा-छंदोमंजरी प्रमाणे. छंदःप्रभाकरमां उद्दत नाम आपी तेना अंतमां गुरु लघु आणवा कह्युं छे. पण केटलाक पिंगलकार गुरु लघुविषे केहेता नथी. एज ग्रंथकार शुभगने उद्दतथी जूदो पाडी तेने अंते गुरु लघुने बदले तगण आणवा केहेछे.

१९८ दीपमाला. (दीपकथी चोगणो.) (छंदार्णव प्रमाणे.)
१२, १०, १०, ८ यति=४० मात्रा.
३, ८, १३, १८, २३, २८, ३३, ३८ मात्राए ताल.

छे यति प्रथम बारने, दश उपर धार ने,
ते उपर दश धरी, आठ पर आण,
ए रीत रचवी चरण, चाळी मात्रा सकळ,
दीपमाळा रुडी, जाति कवि जाण;
छे त्रण उपर ताल ने, पांच चडते वळी,
आण प्रति चरणमां, आठ धरी ठाठ,
जागी प्रभाते करो, राग परभातथी,
ईश गुण गानने, प्रेमथी पाठ. १७१.

१९९ विजया. (छंदार्णव प्र.) १०,१०,१०,१०यति=४० मात्रा.
१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल.

दश उपर दश करी, ते परे दश धरी,
आणजो दश फरी, विरति रुडा रची,
एम यति-चार तो, प्रति चरण धारजो,
चाळी मात्रा चवी, चरण मध्ये मची;
एक उपर पछी, ताल तत्त्व चडी,
आठ प्रति चरणमां, आणजो प्रेमथी,
गो उपर साठनो, मात्रिका ठाठ तो,

जाति विजया विषे, लावजो नेमथी. १७२.

छंदःप्रभाकर केहेछे के "चरणने अंते रगण आणवाथी कर्णमधुर लागेछे," तेम स्वाभाविक रीते कवितामां पण तेम घणीक वार थइज जाय छे, पण कोइ कविए एवो नियम कर्यो नथी, तेथी अमे पण ते ग्रहण कर्यो नथी.

४६ मात्रानी २,९७,१२,१५,०७३ वृत्ति थायछे.

१६० मत्तचंचरीक. (वाग्वल्लभ प्रमाणे)

१०, १०, १०, १०, ६ यति=४६ मात्रा.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ ३६, ४१ मात्राए ताल.

दशनों पर दश करी, ते उपर दश धरी,
लावजो दश फरी, रस विषे यति करी, प्रति पदमां;
एम यति पांच छे, दर चरण मांज छे,
तेह संभाळीने, आणजो भाळीने, दर झडमां;
मत्तचंचरीक तो, एम वर्नों जाति तो,
धर्यो कळा कुल मळी, थाय छेतालीशे, चरण विषे;
प्रथम पर एक तो, ताल मूकायछे,
पांच चडते पछी, नव सकल ताल तो, चरण दीशे. १७३.

१६१ हरिप्रिया. भाषाछंदोमंजरी प्रमाणे. २४, २२ यति=४६ मात्रा. एक उपर पछी छए छए चडते ताल.

छेतालिस सकल कळा विरति मांह वेज भला,
चोवीशपर एक थाय वीजो बावीशे;
ताल प्रथम एक कळे सात तेर उपर पछी,
ओगणीश उपर ते दोर्डो जनों दीशे;
पचीश पर फरी रखाय एकत्रिशे दोर्डो जाय,
साडत्रीश उपर थाय पछी चुवालीशे;

एम सकल आठ ताल चरण चरण मांह घाल,
हरिप्रिया बनेज वेश जोइ चित्त हींशे. १७४.

चंचरी. १२+१२+१२+१० यति=४६ मात्रा.
१,७,१३,१९,२५,३१,३७,४३ मात्राए ताल.

वार उपर वार धार, तेज उपरे वार सार,
दश कळा पछी उचार, एम विरति सोई;
छेतालिस चरण मांह, एम कला लाव ज्यांहं,
विरति चार कह्या तेम, आण पदे जोई;
ताल प्रथम उपर धार, पड पडे चडावी चाल,
आठ सकल चरण घाल, नियम चित्त आणी;
एम चंचरीज थाय, जाति ए रुडी जणाय,
मांह प्रभु गुण गवाय, नको धूळधाणी. १७५.

मात्रानी २,६,९,४३,९२,९६,१६२ वृत्ति था

मधुरा. ७,७,७,७,७,७,७,७ यति=५६ मात्रा, वनत
नगण आवे. यतिये यतिये बनी शके तेटली यमक आ
१, ८, १५, २२, २९, ३६, ४३, ५१ मात्राए ताल.

। कल्ना, आठ यति कर, एम कुल कल, छप्पनज धर,
ग चरणे, नगण वरणे, वनी शके तो, पूरती कर;
। प्रथमे, तुरत दइ दे, मुनि मुनि पछी, चडती करी दे,
। एमज, ताल चरणे, सरस हरखे, गणती करी धर;
। विरतिमां, यमक लावे, ठिकज भावे, तुक सुहावे,
ति मधुरा, भाति भाति, वहु विभाती, ख्यातिवाळी;
ारण शरणं, वळी सुखकरण, जे दुख हरण, जग सुख भरण
ण करण, दूर कर मरण, तेज प्रभु भज, हृदय घाली. १७६

जाति विजया विषे, लावजो नेमथी. १७२.

छंदःप्रभाकर केहेछे के "चरणने अंते रगण आणवाथी कर्णमधुर लागे छे," तेम स्वाभाविक रीते कवितामां पण तेम घणीक वार थइजाय छे, पण कोइ कविए एवो नियम कर्यो नथी, तेथी अमे पण ते ग्रहण कर्यो नथी

४६ मात्रानी २,९७,१२,१५,०७२ वृत्ति थायछे.

१६० मत्तचंचरीक. (वाग्वल्लभ प्रमाणे)

१०, १०, १०, १०, ६ यति=४६ मात्रा.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ ३६, ४१ मात्राए ताल.

दशनो पर दश करी, ते उपर दश धरी,
लावजो दश फरी, रस विषे यति करी, प्रति पदमां;
एम यति पांच छे, दर चरण मांज छे,
तेह संभाळीने, आणजो भाळीने, दर अडमां;
मत्तचंचरीक तो, एम वर्णो जाति तो,
वर्णो कला कुल मळी, थाय छेताळीशे, चरण विषे;
प्रथम पर एक तो, ताल मूकायछे,
पांच चडते पछी, नव सकल ताल तो, चरण दीशे. १७३.

१६१ हरिप्रिया. भाषाछंदोमंजरी प्रमाणे. २४, २२ यति=४६ मात्रा. एक उपर पछी छए छए चडते ताल.

छेतालिस सकल कळा विरति मांह चेन भला,
चोवीशपर एक थाय बीजो बावीशे;
ताल प्रथम एक कले सात तेर उपर पछी,
ओगणीश उपर ते दोर्डो जतो दीशे;
पचीश पर फरी रखाय एकत्रिशे दोडो जाय,
साडत्रीश उपर थाय पछी चुवालीशे;

एम सकल आठ ताल चरण चरण मांह घाल,
हरिप्रिया बनेज बेश जोइ चित्त हींशे. १७४.

१६२ चंचरी. १२+१२+१२+१० यति=४६ मात्रा.

१,७,१३,१९,२५,३१,३७,४३ मात्राए ताल.

चार उपर चार धार, तेज उपर चार सार,
दश कलां पछी उचार, एम विरति सोई;
छेतालिस चरण मांह, एम कला लाव ज्यांह,
विरति चार कह्या तेम, आण पदे जोई;
ताल प्रथम उपर धार, पड पडे चडावी चाल,
आठ सकल चरण घाल, नियम चित्त आणी;
एम चंचरीज थाय, जाति ए रुडी जणाय,
मांह प्रभु गुण गवाय, नकां धूळधाणी. १७५.

५६ मात्रानी ३,६,५,४ ३,५ २,९ ६,१६२ वृत्ति थायछे.

१६३ मधुरा. ७,७,७,७,७,७,७,७ यति=५६ मात्रा, बनता सुधी नगण आवे. यतिये यतिये बनी शके तेटली यमक आणवी.

१, ८, १५, २२, २९, ३६, ४३, ५१ मात्राए ताल.

सात कलना, आठ यति कर, एम कुल कल, छप्पनज धर,
चरण चरणे, नगण वरणे, वर्नो शके तो, पूरती कर;
ताँलि प्रथमे, तुरत दइ दे, मुनि मुनि पछी, चडतीं करी दे,
सात एमज, ताल चरणे, सरस हरखे, गणतीं करीं धर;
प्रति विरतिमां, यमक लावे, ठिकज भावे, तुक सुहावे,
जाति मधुरा, भाति भाति, बहु विभाती, ख्यातिवाळी;
अशरण शरणं, वर्ळी सुखकरण, जे दुख हरण, जग सुख भरण.
तारण करण, दूर कर मरण, तेज प्रभु भज, हृदय घाली. १७६.

१२० मात्रानी

८,६७,००,०७३,९,८,५,०,७,८,१,८,६९,८०,५१,९२१

वृत्ति थायछे

१६४. चतुष्पदी (वडी) १०,८,१२ यति तेमा अन्ते १ गुरु

एवां चार चरण=१२० मात्रानु एक पद

न्हानी चोपदाना चार चरण प्रमाण २८ तात्र प्रति चरणमा

वर चोकळिया गण, सात वळी ते, पर गुरु एकज धरने,
ए उपर एवी, जण झड करीने, एक चरण उचरजे,
चोपदी न्हानीना, चार चरण सम, प्रतिपद ताल रखाशे,
कुळ अठ्ठाविश तो, एवा ताळो, पद षट्मात्र रचाशे,
दशपर वळी आठे, रविने माथे, ए क्रम साथे यति छे,
ते सकल मळीने, बारज आवे, प्रति पद कविनी मति छे;
जो चोपदी न्हानी, चार करे तो, एक चरण बनी जाशे,
निश कलना दुवडा, चार गण्येथी, सोने वाश वळ थाशे,
जे आवी लावी, जाति मारी, चतुष्पदी केवाशे,
खुब खात धरीने, एमा कवि को, प्रभुना गुण जो गाशे,
मति निमलज थाशे, ज्ञान प्रकाशे, हरि एथी हरखाशे,
मन चोख्खु राखी, नीति दाखी, प्रभुजनमा परखाशे
तुज भवनी भावठ, भगवत भजता, भट लइ भागी जाशे,
छे सत्य प्रभु आ, जगमा एकज, एम तने समजाशे,
तो पर्थी आगळ, अच्छा वखता, को काळे नहि खोशे,
सो पाशे वाच्यो, नहि वनाता, लीधो नहि लेवाशे १०७.

अर्द्धसमजाति.

समजातिमां चारे पद सरखां आवेछे, पण अर्द्धसममां मात्र अर्द्ध पद एटले पेहेला अने त्रीजा (विषम) चरणोनां अने बीजा तथा चोथा (सम)चरणोनां लक्षण सरखां होयछे, ते माटे ते अर्द्धसमजाति केहेवायछे.

पेहेलु विषम पद अने बीजु सम पद, ए बे मळीने जेटली मात्रा थाय, तेनु प्रथम दल केहेवायछे, तेमज त्रीजुं विषम पद अने चोथु सम पद मळीने तेटलीज मात्रानुं बीजु दल केहेवायछे.

१ नृगण, सुगण. { विषम पदमां ५+५=१० मात्रा; १, ६ मात्राए ताल. | सम पदमां ४+३= ७ मात्रा. १, ६ मात्राए ताल }

बे ठकल विषममां, ड ढ धरी समे;
सुगण नृगण जाति, रचजो तमे. १
प्रथम पट पर धरो, ताल विषमे;
ए रीते आणजो, ताल ज समे. २

वाग्वल्लभ प्रमाणे

२ नंदक, चडवा, बरवा, बरवै, बरवा, बरवय, बैर. { विषम पदमां १२ मात्रा. | सम पदमां ७ मात्रा. }
प्रति दल अन्ते ग, ल. १, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

विषमे भानु सममां, कल मुनि आण;
तेमां प्रति दल अन्ते, गुरु लघु जाण. ३
प्रथमे श्रुति श्रुति प्रति दल, ताली थाय;
नंदक-चडवा-बरवै, एम रचाय. ४

छंदोलतामा बरवय नाम छे, वळी तेज प्रथमां कह्यु छे के केटलाक आने आपाढ पण केहेछे. छंदःप्रभाकरमा अन्ते जगण आणवानुं केहेछे, अने तेनु नाम ध्रुव आपेछे, पण अमे ध्रुवजाति आनाथी जूदी बतावी छे. छंदोबोधमा बैर अथवा वानद नाम आप्यु छे, अने तेमा जगण के गुरु

५ चर्चरा. { ४+४+४=१२मात्रा विषम पदमां. ४+ग+ल=७मात्रा सम पदमां. } १, ५, ९, १३, १७मात्राएताल.

चोकलिया गण त्रण कर, विषमे आप;
सममां चार उपर गुरु, लघुनुं माप. ९.
प्रथम पछी चच्चारे, प्रति पद ताल;
चर्चर जातिमांहे, कवि! संभाळ. १०.

६ निशानी { विषम=पेहेले त्रीजे पदे १३ मात्रा सम=बीजे चोथे पदे १० मात्रा } प्रतिपदमा १,५,९ मात्राए ताल.

विषम पदे कल तेर ने, सममां दश पूरी;
भू शर भक्ति तालथी, निशानी मधुरी. ११

भगवतपिंगळमां अने भाषाछंदोमंजरीमां निशानी अर्द्धसमजातिमां छे.
नि.श्रेणी मात्रा २३ तेमां १३,१० यतिवाळी समजात अंक ८६ पृष्ठ ३०मे छे.

७ विरया { विषम पदमां ४+४+४+४=१६ मात्रा सम पदमां ४+ग+ल = ७ मात्रा } वाणवृत्तम प्रमाणे

प्रत्येक दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल
चोकलिया गण चार विषम पद, आवे ज्यांह;
चार उपर गुरु लघु छे सममां, विरयामांह. १२

८. दोहा, दूहा, द्विपथा, दोहरा. { १,३ विषममां ६+४(जगण विना)+ल+२=१३ मात्रा; २,४ सममां ६+४ (अंत्य गुरुवाळो) +ल=११ मात्रा. }

प्रतिपदमां १, ५, ९, मात्राए ताल,
छ कल उपर कल चार धर, तेमां जगण न छेक;
तेपर त्रण विषमे वधे, समे वधे कल एक. १३
विषम पदे रच तेर कल, सम पदमां अगियार;
लघु कल धर अगियारमी, दोहा चरणे चार. १४

दोहाना विषम चरणोमां क्याय जगण न आववो जोइये, अंतमां रगण रगण अथवा नगण अवश्य राखवो, अने सम चरणोना अंतमां जगण अथवा तगण आणवो जोइये, अर्थात् अंते गुरु लघु आणवा जोइये.- तेम न थवाथी वर्णमधुर थतुं नथी. अने तेज कारणथी दोहाना २१ भेद केटलाक ग्रंथकारोए स्वीकार्या छे, अने छेल्ला श्वान नामना २१मा भेदमां बे गुरु कायम राख्या छे, ते उचित छे.

साहित्य सुधानिधिमां रत्नाकरे दोहानुं लक्षण नीचे प्रमाणे जणाव्युं छे -

१, ३ विषम पदमां ८+३+२=१३ मात्रा

२, ४ सम पदमां ८+ऽ। (ताल)=११ मात्रा

पण एवुं लक्षण बाधता तेने विशेषमां नीचेना नियमो बाधवा पड्या छे"-

१ आठ मात्राओमां आरंभनी त्रण मात्राओ पछी बे गुरु न आववा जोइये.

२ दोहाना विषम चरणो (पहेलं त्रीजी तुक) मां आठ मात्रा पछी त्रण मात्रा आणवानी छे, तेमां ।ऽ वालुं रूप न आववुं जोइये

पण अमे उपर जे दोहानुं छ कल जूदी पाडवानुं लक्षण बाध्युं छे, तेथी त्रण मात्रा पछी बे गुरु न लाववानो नियम पोतानी मेळेज नीकळी आवेछे, कारण के बे गुरु आणता सात मात्रा थइ जाय

वळी अगियारमी मात्रा लघु आणवा खास नियम छे, एटले आठ मात्रा पछी ।ऽ आवुं रूप न आणवुं, ए वात स्वत सिद्ध थइ जायछे

उपरना नियमोने अनुसराने एक दोहरामां चार लघु अक्षर तो अवश्य आणवाज जोइये, केमके प्रति चरणमा अगियारमी मात्रा लघु आणवानो खास नियम कर्यो छे, माटे आखा दोहरानी ४८ मात्रा थाय, तेमां चार लघु अक्षरनी चार मात्रा बाद करता ४४ मात्रा रही, तेना गुरु करिये तो २२ थाय, एटले २२ गुरु अने ४लघुनुं पेहेलुं रूप गणवुं, अकेको गुरु घटाडी बब्बे लघु वधारतां, छेवट ४४ लघु अने २गुरु थइने ४६अक्षरनुं एकवीशमुं रूप थायछे

जूदा जूदा पिंगळना ग्रंथोमां दोहाना आ एकवीश रूपना नाम जूदा जूदा जोवामां आवेछे, ते नीचे विगत आपी छे, तेपरथी जणाइ आवशे

वळी केटलाएक २१ ने बदले २३ रूप आपेछे, पण प्रत्येक दोहरामां उपरना माप प्रमाणे बे गुरु आव्या वगर मधुरता रेहेती नथी, एटले ते अभिप्राय अमने उचित लगतो नथी.

नावे दोहराना नाम बताव्या छे, तेमां चार लघुयी आरभाने बार लघु सुधीनी द्विपथा [दोहरा] ने विप्रा अथवा ब्राह्मणी केहेछे, तेर लघुयी आरभीने बावास लघु सुधीनीने क्षत्रिया केहेछे, २३ लघुयी आरभीने ३२ लघु सुधीनीने वैश्या केहेछे, अने त्यार पछीनी शूद्रा केहेवायछे

जे दोहाना विषम (१ला, ३जा) चरणोमा जगण आवे ते अंतक, दुष्ट के चांडाळ केहेवायछे मुख्य दोष प्राचीन कवियोए जनकाव्यमा मान्यो छे, परतु देव अथवा मगळवाचक काव्यमा तेनो दोष मान्यो नथी

दोहराना भेद.

प्राकृतपिंगळसूत्र प्रमाणे. नागराजपिंगळ प्र.

क्रम	संस्कृत नाम	प्राकृत नाम	नाम	गुरु,	लघु,	वर्ण
१	भ्रमर	भमरु	हस	२२	४	२६
२	भ्रामर	भामरु	गयद, हथिया	२१	६	२७
३	शरभ	शरहु	वाराह	२०	८	२८
४	श्येन	सेवाणु	पशु	१९	१०	२९
५	मण्डूका	मुण्डूअ	पिंगल	१८	१२	३०
६	मर्कट	मकडु	तरल	१७	१४	३१
७	करभ	करहु	तमाल	१६	१६	३२
८	नर.	णरु	सायर	१५	१८	३३
९	मराल,रसाल,हस	मआलु	मच्छो.	१४	२०	३४
१०	मदकल, गयद, मदगध	मअगल, मयअधु	मेर	१३	२२	३५
११	पयोधर,जलधर	पयोहरु	मरु	१२	२४	३६
१२	चल.,बल.,चचल	चलु	कुंजर	११	२६	३७
१३	वानर	वाणरु	हरि	१०	२८	३८
१४	त्रिकल	तिण्णिअलु	शुकराल	९	३०	३९
१५	कच्छप	कच्छ	विरिहण	८	३२	४०
१६	मत्स्य	मच्छ	चारण.	७	३४	४१

१७	शार्दूलः	सद्दूल.	अहि.	५	३६	४२
१८	अहिवरः	अहिवर.	पवण.	५	३८	४३
१९	व्याघ्रः,व्यालः	वग्ध.	वट्टय.	४	४०	४४
२०	विडालः	विराडउ.	धण.	३	४२	४५
२१	श्वा,सुनकः,श्वानः	सुणह	आणंद, हर्ष.	२	४४	४६
२२	उदुवरः,उन्दुरः	उन्दुरु,उंदर.	अकुल.	१	४६	४७
२३	सर्पः	साप.	०	०	४८	४८

हीराचंद कृत पिंगळादर्शमां अंक चोथे सेन, अने हरिजश पिंगलमां सिचाण नाम छे. चिंतामणी कृत छंदोलतामां अंक १९मे वग्ध नाम छे; अने छंदोमंजरीमां एज अंकमां व्याल नाम छे

साहित्य सुधानिधिना भाग २ जाना अंक १० मामां २२ गुरु अने ४ लघु एम २६ अक्षरथी आरंभीने अक्केक गुरु घटाडतां तथा बब्बे लघु वधारतां २ गुरु ने ४४ लघु, एम ४६ अक्षर पर्यंतना अनुक्रमे नीचे प्रमाणे २१ भेद आप्या छेः—

(१) हंस, (२) मोर, (३) पिक, (४) कीर, (५) कलहंस, (६) कपोत, (७) चातृक, (८) चक्वा, (९) चकोर, (१०) गरुड, (११) गीध, (१२) राजहंस, (१३) कलकंठ, (१४) चटक, (१५) सेन, (१६) क्रौंच, (१७) लवा, (१८) टिटिभ, (१९) रायमुन, (२०) हारिल, अने (२१) खंजन.

चित्रसेन टीकावाळा मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां दोहाना २२ भेद नीचे प्रमाणे आपेछेः—

(१) भमरु, (२) भामरु, (३) सीह, (४) सधाण, (५) अमरटउ, (६) मक्कडउ, (७) हरु, (८) मुरारी, (९) मयगल, (१०)पउहर,(११)चउराणण, (१२)तिणयण, (१३) सख, (१४) मच्छ (१५) सदुल, (१६) अहिवर, (१७) वरक, (१८) विराडल, (१९) सुनहड, (२०) उंदर, (२१) सप्पह अने (२२) दीस. वळी तेज ग्रंथकार पाठांतरे नीचे प्रमाणे बीजां नामो आपेछेः—

(१) हंसु, (२) वराहु, (३) गयंदु, (४) पहु, (५) पिंगल, (६) तरउ, (७) तमाल, (८) सायरु, (९) सुंदरु, (१०) मेरु, (११) गरु, (१२) कुजरु, (१३) हरि, (१४) कुक्कुसाल, (१५) दमणी, (१६) मसुओ, (१७) अहि, (१८) पवणु, (१९) धणु, (२०) वज्जु, (२१) आणंदु, अने(२२) आमुहो.

९ सोरठा, सौराष्ट्री, सौराष्ट्र, पूर्वीदुहो. { १, ३ विषम पदमा ११ मात्रा. २, ४ सम पदमां १३ मात्रा. } १, ३ पदनो प्रास मेळववेछे.

दुहाथी उलटा पद, बाकीना नियम अने ताल दुहा प्रमाणे, एम प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाणीभूषण इत्यादिमा कह्यु छे

विषमे पदे अगियार, सम पदमां रच तेर कल;
दुहा नियम सौ धार, पद उल्टावी सोरठे. १५

नागराज पिंगळमा एने चारणी दुहो केहेछे, छंद शास्त्रमां
ट+ड+ल,+ट+ढ+भ; एम अर्द्धमा लाववा केहेछे, पण ते नियम सर्वग्राह्य नथी जणातो. दोहाना सर्व नियमो पाळवाना छे, माटे सोरठाना सम चरणोमा जगणनो प्रयोग न ज थवो जोइये.

१० दोहडिका. { १,३ पदे १३ मात्रा; ३,४ पदे ११ मात्रा } ताल दोहाना प्रति पद प्रमाणे.

पेले बीजे तेर कल, त्रीजे चोथे शिव कल;
पद अंते लघु आण, दोहडिका ते जाण. १६

११ दोही. { १, ३ विषम पदमा १५ मात्रा; २, ४ सम पदमा ११ मात्रा. } दलनेअंते लघु विषममा चोपाइ अने समपदमां दुहा प्रमाणे ताल

विषमे तिथि कल शिव समविषे, दोही जाति विचार;
विषमे छे चोपाई ताल, समे दुहो निरधार. १७
(छंद प्रभाकर प्रमाणे)

१२ हरिपद. { १,३ विषम पदमा १६ मात्रा; २,४ सम पदमा ११ मात्रा } प्रत्येक दलनी अंते ग, ल
तेमा १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

विषम पदे कल सोळज आवे, सममा रुद्रे सुहाय;
एक उपर पछी चारे चडती, हरिपद ताल कहाय. १८

छंदोलता अने वाग्वल्लभ सममा १२मात्रा आणवा केहेछे, पण ते मत ग्राह्य नथी.

१३ ललित, ललितपद, मालविका. { १,३ विषम पदमां १६ मात्रा. / २,४ सम पदमां १२ मात्रा. }

(चिंतामणी प्रमाणे.)

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

विषम पदे कल सोळ सुहावे, सममां बार कहावे;
प्रथमे पछी चचारे तालो, ललित-ललितपद आवे. १९

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आवा मापवाळी जातिने द्विपदी कही छे, पण द्विपदी आथी भिन्न लक्षणवाळी जूदी छे. छंदोलतामां मालविका नाम अने पहेली १६ मात्राना ४डगण आणवा कह्यु छे; वाग्वल्लभमां ललितपद नाम छे.

१४ लयद्विपदी, महादोहा. ४+४+४+४+४+४+४=२८मात्रा

प्रत्येक दलमां. १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

चोकलिया गण मुनि प्रति दलमां प्रथमे तालज धरजो;
चारे चडंता लयद्विपदीमां महादुहामां करजो. २०

१५ उलाला, उल्लास, उल्लाल. ४+४+४+३+६+४+३=२८ मात्रा, एवा बे दल. १५, १३, यति. ३, ७, ११ मात्राए विषमपदमां ताल अने १, ५, ९ मात्राए समपदमां ताल.

त्रण चोकलिया पर त्रण कला, छ चार पछी त्रण कल करो;
उल्लाल, उलासामांह तो, यति पंदर तेरे धरो. २१
त्रण सात पछी अगियार पर, विषम पदे तो ताल छे;
सममां शशि शर नव पर धरो, अगियारे उल्लाल छे. २२

भाषा-छंदोमंजरी अने तेना आधारे छंद.प्रभाकरमां तेर तेर मात्रानुं चरण एवा चार पद लाववा लखेछे, ते भूल छे. वळी छंद.प्रदीपमां १४, १३; १४, १३. मात्राथी कुल ५४ मात्रा लाववा कहेछे, अने १२, ३, ६, ४, ३ मात्राए यति होवा जणावे छे, पण ते अभिप्राय उचित नथी.

मागधी पिंगल छंदोग्रंथ जेनी चित्रसेने टीका करी छे तेमां उल्लालयना २६ भेद आपेछे. ते प्रथम रूप (ऽऽऽ, ऽऽऽ,

।SS, SSS, SIS=२८ मात्रा) बे मगण+यगण+मगण+रगणनुं गणेछे, एटले बे पदना मळीने उल्लालयना २६ गुरु अने ४ लघुथी आरंभीने अकेक गुरु घटाडतां तथा बब्बे लघु वधारतां नीचे प्रमाणे २६ भेद जणाविछे.:—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	रुद्र.	२६	४	३०
२	कुंकम.	२५	६	३१
३	कणय.	२४	८	३२
४	मयरंद.	२३	१०	३३
५	मालाहर.	२२	१२	३४
६	जलहरह.	२१	१४	३५
७	कंत.	२०	१६	३६
८	कणउ.	१९	१८	३७
९	मणरंग.	१८	२०	३८
१०	अंबर.	१७	२२	३९
११	भवरह.	१६	२४	४०
१२	मछह.	१५	२६	४१
१३	वरुण.	१४	२८	४२
१४	पारिजात.	१३	३०	४३
१५	मंदार.	१२	३२	४४
१६	संवर.	११	३४	४५
१७	धणुहर.	१०	३६	४६
१८	कुसुम.	९	३८	४७
१९	करंभ.	८	४०	४८
२०	मणि.	७	४२	४९

२१	कंकण.	६	४४	५०
२२	कुंभ.	५	४६	५१
२३	नदीस.	४	४८	५२
२४	चंदण.	३	५०	५३
२५	सिहर.	२	५२	५४
२६	कुरग.	१	५४	५५

मागधी नागपिंगळना टिप्पणमां चोवीश गुरु अने आठ लघुथी आरंभीने अकेक गुरु घटाडतां तथा बच्चे लघु वधारतां उल्लालयना नीचे प्रमाणे २५ भेद जणावेछे, पण उल्लालयनुं माप जोतां प्रथमना भेद उचित छे. २४ गुरु अने ८ लघुथी आरंभवुं अनुचित लागेछे.

क्रम.	भेद-नाम	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	वाहो	२४	८	३२
२	वोद्दा.	२३	१०	३३
३	वग्गो.	२२	१२.	३४
४	वंधू,वधू,वधु	२१	१४.	३५
५	वाणो.	२०	१६	३६
६	वओ	१९	१८	३७
७	वरो.	१८	२०	३८
८	वेसो.	१७	२२	३९
९	वेणू, वनु, वणु.	१६	२४	४०
१०	वणो, वनो.	१५	२६	४१
११	वरिठो, वरिद्वो	१४	२८	४२
१२	विवुहो.	१३	३०	४३
१३	वलियो.	१२	३२	४४
१४	वहो.	११	३४	४५
१५	विहओ	१०	३६	४६
१६	वामो,वानो.	९	३८	४७
१७	सुहो,सुहो	८	४०	४८
१८	विगालो.	७	४२	४९

१९	विन्दो,चिन्दो.	६	४४	५०
२०	विहुरी.	५	४६	५१
२१	विहू.	४	४८	५२
२२	वसू.	३	५०	५३
२३	विरहो.	२	५२	५४
२४	विलओ.	१	५४	५५
२५	विसओ,विसवो.	०	५६	५६.

१६ द्विपदी, द्विदला, दुविया, दुवैया, दोपै.

६+४+४+४+४+४+ग=२८ मात्रानुं एक दल.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

छ कल उपर चोकल गण पांच पछी तेपर गुरु आवे;
ए रीते अठ्ठावीश कलनुं द्विपदी दल मन भावे. २३
प्रथम उपर पछी श्रुति श्रुति चडता ताले मुनि कवि! धरजो;
द्विपदी एम रचीने रसिक जनोनां हृदयज हरजो. २४

१७ कर्पूरद्विपदी. २+२+४+२+२+ल+२, +२+४+२+२+ल+ल+ल=२८.

१, ५, ९, १३, १६, २०, २४, २७ मात्राए ताल.

कल बे बे श्रुति बे बे लघु, बे बे पर श्रुति तो तुं धर;
बे बे ते पर तो त्रण लघु, कर्पूरद्विपदीमांह कर. २५
यति तिथि पर ने तेरे थशे, पण जणवे नहि कोइ जण;
प्रथमे पछी श्रुति तालज चडे, प्रति यतिमां ए रीत गण. २६

कर्पूरद्विपदीने मागधी लोको उल्लाल केहेछे, अने तेनी रचना मेळवतां पण मळती आवेछे, मात्र तेमां छेल्ली त्रण मात्रा छे, तेने बदले आमां त्रणे लघु आणवानुं कर्युं छे. कर्पूरद्विपदीना छेल्ला त्रण लघुमांथी एक घटाडतां २७ मात्रानी कुंकुम नामनी द्विपदी थायछे, एम मागधी नागपिंगळना टिप्पणमां कर्युं छे.

१८ भ्रमरद्विपदी. १०, १८ यति=२८ मात्रानुं प्रत्येक दल.

तेमां १, ५, ९, ११, १५ १९, २३, २७ मात्राए ताल

भ्रमरद्विपदी दले, दशे अढारे अठ्ठाविश कलमां;
सम विषमे चडता, चयारे ताल छे प्रति दलमां. २७

आना पेहेला तथा त्रीजा पदमा बे मात्रा वत्ती बोलवाथी गीतिना रागे गवाशे

१९ हिमकर. १३, १५=२८ मात्रानुं प्रत्येक दल.

१, ५, ९, अने ३, ७, ११, १४ मात्राए प्रति पदे ताल.

विषम पदे धर तेर कल, सममां तिथि कलनी चाल छे;
शशि शर नव रवि हिमकरे, त्रण मुनि शिव मनु यति ताल छे. २८

सोरठाना जे बे विराम थायछे, ते उपर बेबे मात्रा वधारवाथी आ जाति बनेछे.

२० हरगीति. ९, ७, १२ यति=२८ मात्रानुं प्रत्येक दल. अंते गुरु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल

नव मुनि बारे, यति करी गुरु,-अंत अठ्ठाविश धरो;
त्रीजी थकी त्रण, चार चडता, ताल हरगीति करो. २९

२१ चुलियाला, चूडाला, चूडियाला, चुडिया, चुलका, चोटियाल. १३, ११ यति+(कुसुम गण ।ऽ।।)

९ मात्रा=२९ मात्रानुं प्रत्येक दल; तेमां

१, ५, ९, .१४, १८, २२, २६ मात्राए ताल

जल शिव यति पर कुसुमगण, दुहा उपर लेखाय, सदा ठिक;
चुलियाला के चूडिया, चुलका रच कविराय! तजी बीक. ३०
प्रथम उपर पछि श्रुति श्रुति, चडता यतिमा ताल, मुनिवर;
चूडाला ओगणत्रिसो, चुडियाला ए भाल, भला नर! ३१

दोहाना प्रत्येक दलमा पाच मात्रा उमेरवी, ते छंद शास्त्र प्रमाणे एक

कुसुमगण (।S।।) नी आणवों, पण छंद कामदुघावत्सामां मात्र ठगण-पांच मात्राज लाववा कह्युं छे; छंदोल्तामां पण दोहाना प्रत्येक दल उपर ज ल (।S।।) आणवानुं कह्युं छे, प्राकृतपिंगळसूत्रे, वाणीभूषण, अने श्रीधरकृत पिंगळमां पण उपर प्रमाणे पांच मात्रा आणवानुं कह्युं छे, पण छंदरत्नावलीमां तेरे अने सोळे यति आणवानुं कह्युं छे

२२ उडुराजा १५, १४ यति=२९ मात्रानुं प्रत्येक दल.

१, ५, ९, १३, १८, २२, २६ मात्राए ताल

१५ १४
कल तिथि मनु यति ओगणत्रीश, कल एम बने उडुराजा,
१ ५ २३
शशि शर नव जख ताल अढार, बाविश छव्विशपर ताजा. २२

सोरठाना बे दलना प्रारंभमां चच्चार मात्रा वधारवी, अने तेनी छेल्ली मात्रा लघु छे, ते गुरु करवी

२३ रुचिरा. जगणसिवायना ७ डगण+ग=३०मात्रा, प्रत्येक दलमां.

१६, १४यति १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

४
सात डगणपर एक गुरु करो, कुल कल त्रीश पूरी जाणो;
सोळे चौदे यति रचो सारी, जगण न डगणमां कदि आणो. २३
प्रथम पछी चच्चारे चडता, कुल तालो आठे आवे,
रुचिरा रुडो द्विपदी पूरी, बहु रागे गातां फावे. २४

आ जाति बे दलनी छे, छंद शास्त्र, वृत्तमौक्तिक अने वाग्वल्लभमां यतिनो नियम बताव्यो नथी अमारी पासे संवत १८५४ मा लखेलुं चिंतामणीकृत भाषापिंगळ छे, तेमां सात चोकलिया गण उपर एक गुरु लाववानो नियम कर्यो छे, पण तेमां यति बतावी नथी तथापि घणु करीने १६, १४ यति मळे छे, माटे ए प्रमाणे यति पाळवामां आवे तो ठीक छे, पण एवो नियम करवानो विशेष आधार नथी अतिजगती छंदमां रुचिरा नामनुं वृत्त अक्षरमेळमां छे, तेथी के गमे ते कारणे नागपिंगळ, मनहरपिंगळ अने दलपतपिंगळमां आ जाति नथी

मंदारमरंदचन्द्रनो आ जातिने मात्रावृत्तमां दाखल करीने तेना २९ लघु लखवा कह्यु छे, परंतु सर्व लघुनुं लक्षण एज जातिनो करवानो आवे तो तेनां "रुचिरा" ए नामनो समावेश थइ शके नहि, केमके "रा" ए गुरु छे माटे ए लक्षण मान्य राखवा जेवुं नथी.

छंदःप्रभाकरमां १६ मात्रा विषमपदनी अने १४ मात्रा समपदनी आपतां छेवट बे गुरु लाववा कहेछे, पण मात्रिक समनो तेने ककुभ जाति बनावी छे, तेनी साथे ते मळी जायछे, फेर मात्र एटलोज रहेछे के ते चार चरणनी छे, अने आ बे दलनी छे. वळी मात्रिक समनी चार चरणनी एज जाति तेणे जणावी छे, पण तेमां १४, १६ यति राखी, जगण नहि अने अन्ते गुरु आववानु ते केहेछे. भाषाछंदोमंजरीनां प्रति दलमां १६, १४नी यतियी ३० मात्रा लाववानु केहेछे, ते साथे छेवट गुरु लाववानुं कह्यु नथी, पण तेना उदाहरणमां बे गुरु आप्या छे. ते उपरथीज छंदःप्रभाकरना कर्त्ताए बे गुरुनुं लक्षण बांध्यु होय, एम जणायछे. भाउ मनसुखराम सूर्यरामे गूजराती पद्यमां रामायण रचवा मांड्युं छे, तेमां तेमणे आ अर्द्धसमजाति वापरी छे, ते नीचे लखेला रागोमां गवायछे, एम तेमणे वेतार्यु छे—

"धीर समीरे यमुना तीरे, वसति वने वनमाली."
"क्यां गयो रे पेलो मोरलीवाळो! अमने रसमां रोळी रे"
"वैष्णव नथी थयो तुं रे, हरिजन नथी थयो तु रे"!
"बिगरी कौन सुधारे? नाथ बिन बिगरी कौन सुधारे रे!"
"तें तो घटमां घर कीधुं वालमा वरणागिया रे!"

× × × × × शिक्षा शाणाने.

२४ चौबोला, चौपाला, चतुष्पथा, चतुर्वचा, चतुर्वचन, चउबोला. } १,३ विषम पदमां १६ मात्रा. २,४ सम पदमां १४ मात्रा.

प्रत्येक दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

विषम पदे करो सोळ कळा पळी, सममां चौद सदा धरजो;
प्रथम उरग पछी अंते अंते चढता, तालो चोबोले वरजो. ३९

त्रीश कलानां बे दल छे पण, चार पदे बोलाय छे;
चतुर्वेचा वळी कोइ कहेछे, चतुष्पथा चौयाला छे. ३६

छंदोलतामा अन्ते गुरु लाववा केहेछे छंदरत्नावलीमा पण ४गणे=१६ मात्राए यति अने अन्ते गुरु लाववानु कह्यु छे वाग्वल्लभमा चतुष्पथा नाम छे, प्राकृतपिंगळसूत्रमा चौपाला नाम छे, अने छंदोरत्नमुक्तावलीमा चतुर्वचन ए नाम छे

२५ वेसर { १, ३ पदमा १६ मात्रा ; २, ४ पदमा १५ मात्रा } छंद शतक प्रमाणे,

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल

विषम चरण छे सोळन कलना, वेसर कल पंदर सम पदे;
प्रथम उपर चच्चारे ताळी, प्रति दलमां कवि आठज वदे. ३७

२६ घत्ता,ध्वाता. प्रत्येक दलमा १०,८,१३ यति=३१ मात्रा.

७ ड+३ल=३१ ३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१ मात्राए ताल.

मुनि[७] चोकल गण पर, त्रण लघु टांक धर, दश[८] वसु[१३] जव पर छे विरति;
घत्तामा त्रण पर, पछी[४] श्रुति चडना, ताल वसु[८] दे तुं धरी रति. ३८

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा ध्वाता नाम छे,घत्ताने कोइ धृत्ता पण केहेछे छंदोरत्नमुक्तावलीमा ध्वता नाम आप्यु छे मारी पासे संवत् १८२३नु लखेलु पिंगळ छंदोग्रंथ नामनु मारवाडी पिंगळ छे तेमा पण घत्ता नाम छे वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र, अने वाणीभूषणमा ७ चोकलिया+३ लघु=३१ मात्रानु घत्तानु प्रत्येक दल आणवा कह्यु छे, अने यति पाळवा ते ग्रंथोमा जणाव्यु नथी. पण छंद प्रभाकरमा ध्वत्ता नाम अने तेमा १८,१३ यति=३१ मात्रा अने तेमा छल्ले नगण आणवा नियम कह्यो छे वळी वाणीभूषण अने प्राकृतपिंगळसूत्रना उदाहरणोमा १०, ८,१३ यति जोवामा आवेछे

२७ घत्तानंद, घातोनंद. प्रत्येक दलमां ११, ७, १३ यति.
६+४+४+४+५+४+४=३१ मात्रा. तेमां अंते त्रण लघु
प्रति यतिमां १, ५, ९; १, ५; अने १, ५, ९, १२ मात्राए ताल.

छ पर डगणौ त्रण वार, पाँच तुँ धार,
ड द्वयमांहि नगण चरम+ धर; अंते
घत्तानंद हर मुनि, जस यति थाय,
चारे सुताल विरति कर. ३९

वृत्तरत्नाकरनां नारायणभट्टी टीकामां घातोनंद नाम छे, अने ६+४+४+४+५+६+ ल+ल=३१ मात्रा एक दलमां आगगा कह्युं छे. छंदःप्रभाकर इत्यादिमां आनु नाम घत्तानंद आप्युं छे, पण ते घ ने धना मळतापणाने कंइ भूल थयेली होय. एम समजायछे.

२८. हरिणी. १, ३ पदमां १५ अने २, ४ पदमां १६ मात्रा;
विषममां १, ५, ९, १३ ने सममां ३, ७, ११, १५ मात्राए ताल.

तिवि कर पेला त्रीजा पदे, सममां तो सोळ सदाय वदे;
हरिणी नामे जाति खरी, ते अर्द्धसमे कवियें उचरी. ४०
विषमे ताल प्रथम पर धरो, पछी चारे चडता आप करो;
सममां त्रीजे तालज थशे, पछी चारे चडता चाली जशे. ४१
•भाषाछंदोमंजरीमांथी आ जाति लीधी छे.

२९ मनोरमा. १८, १९, यति=३७ मात्रा. प्रत्येक दलमां
विषममां ३, ७, ११, १५ तथा सममां ४, ८, १२, १६ मात्राए ताल

विषमे कल सकल अढार प्रमाणो,
ओगणीश कला सममां वळी आणो;
विषमे त्रे त्रण तर्में, सममां ताळो,
चार मनोरमामां चडता चालो. ४२

आ जाति भाषा-छंदोमंजरीमां छे. परंतु तेना सम चरणोमां जे १९ मात्रानी योजना करी छे, ते पसंद करवा योग्य नथी, विषममा बे मात्रा छोडी

दइने अने सममां त्रण मात्रा छोडी दइने चार चार चडता ताल देवाथी गवाइ शकायछे.

३० उल्लन, फुल्लणा. १०, १०, १७=३७मात्रानुं प्रत्येक दल.
तेमां १, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राएं ताल.

दशनों पर दश वळी, सत्तरे यति धरी;
साडत्रीश कलतणुं दलन करजो,
एक पछीं शर शरे, ताल दलमां ठरे,
फुल्लणा उल्लनज नाम धरजो. ४३

झूलना १९ अक्षरनुं वृत्तछे, ते नाम उपर झूलणाने वदले फुल्लणा मंचायुं हशे, तेथी भुल थयेली जणायछे. चिंतामणीमां झूल्लना एवु नाम गण्युं छे अने ते दलमां १०, १०, १७ विराम कह्यो छे. एने करखा पण कहे छे. रूपदीपपिंगळ तथा भाषाछंदोमंजरीमां १०, १०, १०, ७ यति कहेछे.

३१ गंधाना, गंधानक, १, ३ पदमां २० मात्रा तेना १७ अक्षर;
२, ४ पदमां २४ मात्रा तेना १८ अक्षर.

यति के गणनो नियम नथी, यमक घणी आवे. प्रत्येक दलमां एक पछी चार मात्राए चडता ताल.

वीश कल सत्तरज वर्ण विषम पदमांहे,
चोवीश कल दशअष्ट वरण सममां छे जांहे;
प्रथमे ताल पछीयीं ठीक श्रुति श्रुति धरजो,
गंधानक कहीं वदत अपर गंधाना भणजो. ४४ ‡माप

गंधानामां विषम पादे १७ तथा सम पादे १८ अक्षर अने प्रत्येकमां वच्चे यमक आणवा वाणीभूषणमां तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमां दर्शाव्युं छे, पण मात्रानो कंइ नियम बताव्यो नथी.

३२ चूडाणा. पेहेला दलमां १३, ११; १३, ११=४८मात्रा. आखो दुहो.
बीजा दलमां १२, १८; १२, १९;=९७ मात्रा. आखी आर्या.
ताल दुहा तथा आर्या प्रमाणे.

आदि दलमां दोहरो, आवो ऑवी जाय,
चूडामणी अथवा भले, चूडाणामां थाय;
बीजा दलनी मांहे, आवो आर्या नियम सहित थाशे;
अडतालिश सत्तावन, कलनां बे दल बनी जाशे. ४५

छंदार्णवमां आ जातिनु बीजु नाम चूडामणी बताव्यु छे. पण सम जातिमां बे गीतिनी चूडामणी जाति पृष्ट ४९ अंक १२४मे छे, माटे एकनु एक नाम राखवाथी गुंचवारो थाय तेथी ए नाम अमे राख्यु नथी.

३३. खंजा, खंजिका. ३६ ल+१ रगण=४१ मात्रानुं प्रत्येक दल.
१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९,३३,३७,४० मात्राए ताल.

छत्रिश लघु कलं चरण चरण प्रति,
पछीं धर्कों उपर तुँ शशि रगणज सज् प्रति पद खंजिके
प्रथम उपर पछीं श्रुति श्रुति चडीं नडीं,
सकल मळी तुँ दश पछीं त्रण पर ठिक द्वय दल ताल दे. ४६

वर्णमेळना विषम वृत्तना प्रकरणमां ३० लघु+१ गुरु समंमां, अने २८ लघु+१ गुरु विषममां एवा मापनु आ नामनु वृत्त छे. मनहरपिंगळमां ५+५+५+५+५+५+६+२=४१ मात्रा लाववा कयु छे. पिंगळादर्शमां पण एज प्रमाणे लीधु छे

३४माला. ३९ ल+१ रगण+ग ग (कर्ण)=४९ मात्रानुं पेहेलुं दल
आर्यांना उत्तरार्द्ध प्रमाणे १२+१५=२७ मात्रानुं बीजुं दल.
पेहेला दलमां. १,५,९,१३,१७,२१,२५,२९,३३,३७,४०,४४ अने बीजा दलमां १,५,९,१३,१७,२१,२६ मात्राए ताल.

छतारिश लघु कल प्रथम दल तुँ धर् रगणपर कर्ण
श्रुति श्रुति चडींग र उपर द्विआवता ताले;
बीजुं दल आर्यांना, उत्तर दल सरखुं धर् माले. ४७

शिखा जाति.

वृत्तरत्नाकर तथा छंद शास्त्र उपरथी शिखा अने तेनां अंगभूत छंदो बे दूलना सिद्ध थायछे; पण छंदःप्रभाकरमां तेनां चार चरण योज्या छे, ते संस्कृत ग्रंथोथी विरुद्ध छे.

शिखामां एक दल सर्व लघुनुं तो बीजुं सर्व गुरुनुं आवे एम छंद सूत्रमां जणाव्यु छे.

(दुहो) रद[32] लघु कलनुं एक दल, अवरविषे गुरु सोळ;
तेने कविजन एम के', शिखा नामथी बोल. ४८
शिखातणा बे भेद छे, कविता करवा काम;
सौम्यशिखा ज्योति शिखा, एवा एनां नाम. ४९

वाग्वल्लभ तथा छंदरत्नावलीमा १८ लघु+१ गुरु=२० मात्राना बे दल आणवा कह्यु छे पण ते अभिप्राय सर्वमान्य नथी

गुरुना लघु अने लघुना गुरु, एम प्रस्तार करता आना अनेक भेदो थायछे.

३८ ज्योति शिखा { पूर्वार्द्धमां ३२ लघु=३२ मात्रा / उत्तरार्द्धमा १६ गुरु=३२मात्रा } आठे अक्षरे यति.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

लघु कल दश[6] पड, प्रथम विरति धर,
द्वितीय प्रथम सम, रद[32] कल कुल कर;
आठे आठे, थोभो कीजे,
सोळे गुरु, अर्द्ध बीजे. ५०

छंद प्रभाकर वगेरेमा यति कही नथी

आना उलटानेज सौम्याशिखा के अनंगक्रीडा कहेछे छंदःप्रभाकरमां अनंगक्रीडा अने ज्योतिशिखाने तथा छंदार्णवमा अनुष्टुप (श्लोक),गाथा, घनाक्षरी वगेरेने मुक्तकमां गण्या छे ते मुक्तकनी व्याख्यामां

जणावेछे के, जे दृत्तमां ययांक गुरुलघु अने ययांक मात्रा अक्षरोनी मात्यानो ना नियम होयछे, ते मुक्तक केहेवायछे.

३६' सौम्याशिखा, अनंगक्रीडा. { पूर्वार्द्धमां १६ गुरु=३२ मात्रा / उत्तरार्द्धमां ३२लघु=३२मात्रा } आठ अक्षरे यति.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

पे'ले अर्द्ध, गुरु सोळे,
आठे आठे, थोभी बोले;
द्वितीय दलनां कल, यदी मळी रंदे कर,
पडे-दश कल.पर, विरति तरत थर. ९१

अनंगक्रीडामां यथाक्रम पेहेला दलमां आठ मगण एटले चोवीश गुरु अने बीजा दलमां आठ नगण एटले चोवीश लघु आणवा केहेछे

३७/चूलिका. { पूर्वार्द्धमां २७ ल+ग=२९ मात्रा. / उत्तरार्द्धमां २९ ल+ग=३१ मात्रा. }

पेहेला दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २८ अने बीजा दलमां १,५,९,१३,१७,२१, २५,२९ मात्राए ताल.

प्रथम दल,सकल लघु कल वीशपर
मुनिवर धरी गुरु शशी करो;
लघु कल सकल मळी वीशपर नव
धरी द्वितीय दलपर- शशी गुरु धरो. ९२

छंद:शास्त्रमां जणाव्यु छे के-"केटलाक पूर्वार्द्धनी पेठे २७ लघु+ १ गुरुनो बने दल आणवानुं केहेछे" पण तेम थवाथी अतिरुचिरामां मळी जायछे. एटले अमे उपरनु लक्षण वाप्युं छे.

शिखाना उपर जे त्रण भेद बताव्या छे, ते उपरांत केटलाक बीजा ग्रंथकारो नीचे प्रमाणे विशेष भेद-बतावेछे

३८ अतिरुचिरा.. २७ ल+१ ग=२९ मात्रा प्रत्येक दलमां.

८,८,७,६ यति १,५,९,१३,१७,२१,२५,२८ मात्राए ताल.

प्रथम द्वितीय दल, लघु कल वीशपर,

मुनि धरि +चाम, ग धर धीरा; +अन्ते.
वसु पछीं वसुपर, मुनिवरनीं उपर,
रसपर विरति, अतिरुचिरा. ९२

३९. शिखा. { ४+४+४+४+४+४+ज=२८ मात्रानुं पेहेलुं दल,
४+४+४+४+४+४+४+ज=३२ मात्रानुं बीजुं.

पेहेला दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ अने बीजा दलमां
१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल.

कविवर! षट चोकल कर प्रथम दलें पछीं जगण धर एक;
पछीं जो बीजे सात ड उपर जगणनो, शिखाविषे छे विवेक. ९४

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीटीकामा शिखानु ए प्रमाणे माप छे.

४० शिखित. २८ल+१ग=३० मात्रानुं प्रत्येक दल.

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल

वॉशपर वसु कल कुल कल लघु धर
पछीं शशि गुरु धर प्रतिदलमां;
†टकर प्रथमपर पछीं श्रुति श्रुति धर † गाय
शिखित तुं रच कविवर! पलमां. ९५

४१ अशिखा, { २४ ल+१ज=२८ मात्रा पूर्वार्द्धमां } एकपर चव्वारे
नाकि. { २८ल+१ज=३२मात्रा उत्तरार्द्धमां } वडला ताल

वॉशपर श्रुति कल सकल तुं लघु धर
उपर जगण कर सदाय;
वॉशपर वसु कल सकल लघु तुं कर
उपर जगण धर तुं अशिख रचाय. ९६

छंदोवृत्तमुक्तावली तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा आनु नाम शिखा ने
वाग्वल्लभमा नाकि नाम आप्यु छे

४२ (अपर)शिखा { २८ल+१ग=३० मात्रा पेहेला दलमां.
३०ल+१ग=३२ मात्रा बीजा दलमां.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

विशपर वसु कल लघु कर तुँ प्रथम
दलनी ‡ जरम धवल कमलों छे;
विशपर दश लघु कल कुल कर शशी
गुरु चरमनीं उपर द्वितीय दल छे. १७

आथी उलटुं ते खंजा. ‡ अन्ते गुरु

४३ (अपरा)खंजा (शिखा); { ३० ल+१ ग=३२ मात्रा पेहेला दलमां
२८ ल+१ ग=३० मात्रा बीजा दलमां

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

प्रथम दल तुँ धर विशपर दश कल
सकल कल तुँ लघु धर गुरु चरमे;
द्वितीय दल सकल लघु कल विश वसु
चरम‡ उपर शशीं गुरु ज रमे. १८

‡ अन्ते • खंजाथी उलटु ते शिखा.

४४ अतिशिखा, गुणित. ३० ल+१गुरु=३२मात्रानुं प्रत्येक दल.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल,

प्रथम द्वितीय दल सकल लघु कल तुँ
त्रीश कल पर शशीं गुरु धर तुँ तिखा;
प्रथम उपर पर्णों श्रुति श्रुति चडीं कल
हकर‡ धरीं तुँ रन सरस अतिशिखा. १९ ‡ताल

आर्या प्रकरण.

आर्यानो प्रयोग विशेषे करीने संस्कृत, मागधी अने मराठी भाषामां जोवामां आवेछे, व्रजभाषामां बहु ओछो छे. हवणां गूजराती भाषामां कांइक विशेष प्रचार थवा मांडयो छे.

आर्यागण

आर्या (गाहा) प्रकरणमां चच्चार मात्राना पांच गण आवेछे, ते एवी रीते के मगण (SSS)मांथी एक गुरु ओछो करी बाकीना बे गुरु (SS)नी चार मात्रा गणायछे, तेने कर्ण अथवा मगण केहेछे. नगणमां एक लघु वधतां चार मात्रा थाय छे, तेने (IIII) विप्रगण केहेछे. अने बाकीना चच्चार मात्राना स,ज अने भ, ए त्रण मूळ गण छे, ते लेवायछे. तेथी आर्याना नीचे प्रमाणे पांच गण थायछेः–

१ SS कर्ण (मगण.)
२ IIS सगण.
३ ISI जगण.
४ SII भगण.
५ IIII विप्र (नगण)

आर्यानुं सामान्य माप.

प्रथम दलमां–७ चोकलिया गण+१ गुरु=३० मात्रा;

बीजा दलमां–५ चोकलिया गण+१ लघु+१ चोकलियो+१ गुरु=२७ मात्रा.

पूर्वार्द्ध (प्रथमदल)मां चच्चार मात्रानो एक एवा सात गण अने एक गुरु आवेछे तथा उत्तरार्द्ध (बीजा दल)मां पांच

चोकलिया गण+१ लघु+एक चोकलगण+१ गुरु आवे छे. अर्थात् बीजादलमां छठ्ठा गणने स्थाने मात्र एक लघु आणवो तथा बने दलमां १ला, ३जा, ५मां, अने ७मा एटले विषम स्थानोमां जगण आणवोज नहि. आर्यांना पूर्वार्द्धमां छठ्ठा गणने स्थाने विप्र (नगण) अथवा जगण ज जोइये; जो विप्रगण होय तो तेना प्रथम अक्षरे विराम आवे, तेमज जो सातमो गण विप्र होय तो छठ्ठा गणना छेल्ला अक्षरे यति आवे, पछी ते छठ्ठो गण जगण होय तोपण चिंता नहि. तेमज उत्तरार्द्धमां पांचमो न (विप्र)गण होय तो चोथा गणना छेल्ला अक्षरे यति आवे. आ उपरथी एम समजवानुं छे के गाथानी पेठे १२ अने १८ तेमज १२ अने १५ मात्राए पद छूटां पडतां नथी, पण उपर कह्या प्रमाणे ज्यां ज्यां विराम कह्या छे, त्यां त्यां पदनी समाप्ति थायछे, अने बीजा पदनो प्रारंभ थायछे. छठ्ठो अने सातमो बने गण न (विप्र) गण आवे तो प्रथम विराम मुख्य समजी त्यां आगळ पदनी समाप्ति समजवी, अने बीजो विराम गौण समजवो.

पिंगळाचार्यना मत प्रमाणे पण आर्यांना पूर्वार्द्ध अने उत्तरार्द्ध एवां बे दल केहेवामां आवेछे, पण पाद ठराववामां आवता नथी.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कह्युं छे के – "जे आर्यांमां एकज जगण होय ते कुलीना (कुळवती), बे जगण होय तो कुलटा (अथवा बीजा ग्रथोना मत प्रमाणे धरणी, संगृहिणी अथवा अभिसारिका केहेवाय,) तेथी वधारे जगण आवे तो वेश्या, अथवा वारांगना केहेवाय अने एके जगण न आवे तो रंडा अथवा विधवा केहेवाय." केमके जगणनुं नाम नायक पाडेलुं छे, तेथी नायक अथवा धणी विनानी ते विधवा.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका प्रमाणे गाहा बोलवानी रीति नीचे प्रमाणे छे –

पेहेलु पाद हंसनी पेठे धीमेथी बोलवु,
बीजु पाद सिंहविक्रमनी पेठे उद्धतपणे बोलवुं,
त्रीजु पाद गजगतिनी पेठे ललितपणे उचारवुं, अने
चोथु पाद सर्पनी गतिनी पेठे डोलतु गावु.

छंदोमंजरीना टीकाकार जीवानंद विद्यासागर भट्टाचार्य केहेछे के– "केटलाकनो एवो अभिप्राय छे के, १२, १८ अने १२, १९ मात्राए पाद गणी यति राखवामा आवी छे." पण आ मत बराबर नथी, कारण के आ प्रमाणे पाद पाडी उपरना बधा नियम लागु करवामा आवे तो ते जूदो भेद थाय छे, अने ते पथ्या केहेवायछे, एटले तेने आर्या रही शकाय नहि.

विप्रादि आर्यानां नाम.

विप्रा	१३ लघु सुधीनी
क्षत्रिया.	१३ थी २१ लघु सुधीनी.
वैश्या...	२१ थी २७ लघु सुधीनी.
शूद्रा.	२७ थी ५३ लघु सुधीनी.

आर्या (गाथा) देश.

विप्रा.	जांजनगर. (काशी गणी छे)
क्षत्रिया.	अयोध्या.
वैश्या	महाराष्ट्र.
शूद्रा.	कर्णाटक.

उपर प्रमाणे चार जातिनी आर्याना चार देश लखपत-

जशसिंधु तथा पिंगळछंदोग्रंथ इत्यादिमां कह्या छे, पण नागराजपिंगळमां अयोध्याने बदले पूर्वदेश अने महाराष्ट्रने बदले मदुरा एवां नाम आप्यां छे.

पद्मिनीआदि चार जातिनी आर्या.

जेमां प्रथम कर्ण-गण होय ते पद्मिनी.
जेमां आदि सगण होय ते चित्रिणी.
जेमां आदि भगण होय ते हस्तिनी.
जेमां प्रथम विप्रगण होय ते शंखिनी.

आर्यानी अवस्था.

जेमां कर्ण गण बहु ते बाळा.
जेमां विप्रगण बहु ते मुग्धा.
जेमां भगण बहु ते मौढा.
जेमां सगण बहु ते वृद्धा केहेवाय.

पण पिंगळछंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मां तथा बीजां केटलांक पिंगळोमां विप्रने बाळा, क्षत्रियाने मौढा, वैश्याने अर्द्धवयसी अने शूद्राने वृद्धा केहेछे.

उत्पत्ति.

गाथानुं कुळ छंद, पिता वेद, माता सरस्वती अने जन्म श्रवण नक्षत्रमां छे.

आर्यानां वर्ण, वस्त्रादिक.

जाति.	वर्ण.	वस्त्र.	आभरण.	तिलक.
विप्रा,	गौर,	श्वेत,	मोती,	श्वेत.
क्षत्रिया,	रक्त,	रक्त,	मोतुं,	लाल.
वैश्या.	पीत,	पीत,	स्युं.	पीळु.

शुद्ध, श्याम, कृष्ण, पीनळ, श्याम.
पिंगळछंदोग्रंथ (चित्रमेनर्दीसावाळा)मां शुद्धालु आभरण कलाउ जणाव्युं छे.

गाथानी मात्रानो पिंड.

गाथानी कुल ९७ मात्रा छे. तेमां पूर्वार्द्धमां चार मात्राना ७ गण अने उत्तरार्द्धमां चार मात्राना ६ गण एटले १३ गण चार मात्राना छे, तेना १३ अंश+ते सिवाय वळी पूर्वार्द्ध अने उत्तरार्द्धमां अंते अकेक गुरु होय छे, ते एक गुरुनी बे मात्रा तेना २ अंश+छठ्ठा गणने स्थाने उत्तरार्द्धमां एक लघु आवेछे, तेनी एक मात्रानो १ अंश=१३+२+१ = १६ अंश एकंदर गाथाना गणायछे.

तोल.

(पिंगळ छंदोग्रंथ प्रमाणे).

चार कला = १ पल.

१४ पल+१ कल (लघु)=१ गाथा.

अनुस्वार विचार.

कवि उन्नडजीकृत भगवत्पिंगळमां कह्यु छे के-"जे अनुस्वार वगरनी गाहा (आर्या) ते आंधळी, एक अनुस्वारवाळी काणी (एक आंखवाळी), बे अनुस्वार वाळी ते बे आंखवाळी (सुनयनी), अने बहु अनुस्वार वाळी ते बहु आंखवाळी (मनोहरा) बनेछे."

कमळा आदि २६ जातिनी गाथा केहेवायछे, क्षत्रिया गाथा ते स्वभाव गाथा केहेवायछे, अने पथ्यादि विशेष गाथा केहेवायछे.

४९. आर्या–गाथा, गाहा‡

१. ४+४+४+४+४+४+ज के विप्रगण+४+ग=३०.

२. ४+४+४+४+४+ल+४+ग=२७.

प्रथम दलमां १,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल.
द्वितीय दलमां १,५,९,१३,१७,२२,२६,मात्राए ताल.

पांच डगण पर छट्ठो द्विजवर अथवा ज,गण धरो पदमां;
तेपर एक डगण करो, अंते ग करो प्रथम दलमां. ६०

बीजुं दल एमज पण, छट्ठे लघु मात्र एक तो धरवो;
विषम गणे प्रति-दलमां अवश्य, जगण नहि कदि-करवो. ६१

छट्ठो जो द्विजवर तो प्रथमाक्षर पछीज, विरति, पद करजो;
रस मुनि बे गण द्विजतो, रसनी पण अंत पद धरजो. ६२

बीजा दलमां-पंचम द्विजवर तो त्यां थकीज. पद गणजो;
अवर प्रकार बने तो अन्ते, यति पद सहज भणजो. ६३

‡ मागधी छंदःशतक आदिमां आ नाम छे

केदारकविनो संस्कृत भाषामां रचेलो "वृत्तरत्नाकर" नामे ग्रंथ छे, जेनापर "भावप्रदीपिका" नामनी टीका जनार्दने करी छे, तेमां लखेछे के-जेमां विषम अक्षरवाळां पाद (जेवांके ८,१०, ७,९ अक्षरनां अथवा ३,६ पादनां) होय ते गाथा केहेवायछे. जेमके मंगल, गीतिका, चेष्टक, विपद्विति, ध्रुवक, चर्चरी, पद्धतिका, कालिका, वेल्लितका, द्विपदी, उत्साह, चत्वरी, मदुलिका, द्विपथ, आदि केटलाक एवा छंदोनो एमां संग्रह थायछे माटे ए सर्व संग्रहिणी केहेवायछे.

"वृत्तरत्नाकर" अने तेनी नारायणभट्टे करेली टीकामा केहे छे के, "त्रण, छ, के दश अथवा तेथी अधिक जेमां चरण

आवे तेने, अने प्रत्येक चरणमां न्यूनाधिक अने नियम वगरना गुरु लघु जेमां आवे तेने गाथा केहेछे.

छंदःशास्त्रमां एम केहेछे के– प्रस्तार प्रमाणे छंदना जे भेद थायछे, तेमांथी प्राचीन मुनियो अने ग्रंथकारो जे प्रसिद्ध छंदोनां नाम कही गया छे तथा ते सिवाय प्रस्तारनी रीतिथी नवा थइ शके ते वर्ज्य करतां बाकी जे नवा छंद जोवामां आवे ते गाथा केहेवाय.

वळी संस्कृतमां रचाय तो आर्या अने प्राकृतमां रचाय तो गाथा केहेवायछे. अने केटलाक मागधी ग्रंथोमां तेनुं नीचे प्रमाणेज माप होयछे:–

गाथा.

१, ३ पादमां १२ मात्रा.

२जा पादमां १८ मात्रा.

४था पादमां १५ मात्रा.

गाथाना माप करतां विशेष नियम थवाथी आर्यादि भेद थायछे. एम केटलाकनुं मत छे.

आर्याना भेद नीचे प्रमाणे छेः–

	भेद.	लघु	गुरु	वर्ण
१	लक्ष्मी, लच्छी.	३	२७	३०
२	ऋद्धि.	५	२६	३१
३	बुद्धि.	७	२५	३२
४	लज्जा.	९	२४	३३
५	विद्या, विज्जा.	११	२३	३४
६	क्षमा, खमाय.	१३	२२	३५
७.	वैदेही, देही, अदेही, देवी, देहीया.	१५	२१	३६

८	गौरी, गोरी.	१७	२०	३७
९	धात्री, धाइ, रात्री. राया.	१९	१९	३८
१०	चूर्णा, जुह्ना, पूर्णा.	२१	१८	३९
११	छाया.	२३	१७	४०
१२	कान्ति, कन्ति.	२५	१६	४१
१३	महामाया. महामइया.	२७	१५	४२
१४	कीर्त्ति, कीत्ती.	२९	१४	४३
१५	सिद्धि, सिद्धा, मुद्दा.	३१	१३	४४
१६	मानी, मानिनी, मनोरमा, मन्ना.	३३	१२	४५
१७	रामा.	३५	११	४६
१८	गाहिनी.	३७	१०	४७
१९	निश्वा, विभा.	३९	९	४८
२०	वासिता, मीया.	४१	८	४९
२१	शोभा.	४३	७	५०
२२	हरिणी.	४५	६	५१
२३	चक्री, चकी.	४७	५	५२
२४	सारसी, ग्ंमी.	४९	४	५३
२५	कुररीय.	५१	३	५४
२६	सिंही.	५३	२	५५
२७	हंसी.	५५	१	५६

पिंगळ छंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मां अंक ७मे देहीया, अंक ९मे राया, अंक १५मे मुद्दा, १६मे मन्ना, १८मे रोहिणी; १९मे विभा. २०मे मीया, २३मे चक्री, अने २६मे हंसी

जणावी तेणे एकंदर २६ भेद बताव्या छे.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां अंक १०मे पूर्णा नाम आप्युं छे.

वृत्तमौक्तिकमां २४मी "हंसी" अने २५मी "सारसी" गणी कुल पचीश भेद लख्या छे अने ते सर्वेनां उदाहरण "उदाहरण मंजरी" नामना ग्रंथमां आप्यां छे.

"छंदःप्रभाकर"मां कह्युं छे के—"एक गुरुनी आर्या बनी शके नहि" एटले तेणे २७ने बदले २६ भेद उपर प्रमाणे कवि चंद्रशेखरना मत प्रमाणे गुरु लघुना क्रमथी आप्या छे, परंतु वच्चे १८मो "गाहिनी" नामे भेद आप्यो नथी अने अंक ७मे टेवी नाम आप्युं छे.

नागपिंगळमां गाहाना २६ भेद आप्या छे तेनां नाम—

१कमला, २लुलिया, ३लीला, ४जुह्ना, ५रंभाय, ६मागधी, ७ लच्छी, ८ विज्जू, ९ माला, १० हंसी, ११ शशिलेहा, १२ जाह्नवी, १३ मुग्धा, १४ काली, १५ कुमारी, १६ मेहा, १७ सिद्धि, १८ रिद्धि, १९ कुम्भिणी, २० धरणी, २१ जरकणी, २२वीणा, २३वंभी, २४गंधर्वी, २५मंजरी अने २६ गौरी.

शंभू अथवा स्वयंभू कृत छंदोग्रंथ प्रमाणे आर्यानां २६ नाम.

१ विमला.	२. सरसा.
३ मदना.	४ रत्ना.
संतोषा.	६ मालती.
चम्पका.	८ कनका.
रूपा.	१० तम्बा.
वरला, वारला.	१२ गंभीरा.

13 सारंगा.	१४ लक्ष्मी.
१५ चन्द्रानना.	१६ सिद्धिकरा.
१७ विप्रा.	१८ मोहकरा.
१९ मदोत्कटा.	२० मदननना.
२१ प्रफुल्लश्रोणी.	२२ गजगमना.
२३ दीर्घकेशी.	२४ कदम्बा.
२५ रंगदा.	२६ रत्नगर्भा.

आवी आर्यामां १३ लघु आवे तो ते विप्रा केहेवायछे, २१ लघु आवे तो ते क्षत्रिया केहेवायछे, २७ लघु आवे तो वैश्या केहेवायछे, अने ते उपरांत आवे तो ते शूद्रा केहेवायछे. अर्थात् अंक १ थी ६ सुधीनी विप्रा, ७ थी १० सुधीनी क्षत्रिया, ११ थी १३ सुधीनी वैश्या, अने १४ थी २७ सुधीनी शूद्रा जाति केहेवायछे

आर्याना मुख्य पांच भेद नीचे प्रमाणेछे, तेनी मात्रा आदिनुं कोष्टक.

क्रम	नाम.	मात्रा उत्तरार्द्ध	मात्रा पूर्वार्द्ध	मात्रा कुल	बीजा नाम.	अर्द्धसम, के विषम
१	आर्या.	३०	२७	५७	गाहा, गाथा.	विषम
२	गीति	३०	३०	६०	उग्गाहा, उद्गाथा	अर्द्धसम.
३	उपगीति.	२७	२७	५४	गाहू	अर्द्धसम.
४	उद्गीति.	२७	३०	५७	विगाहा, विगाथा	विषम
५	आर्यागीति.	३२	३२	६४	स्कंधक, खंधा, साहिनी.	अर्द्धसम.

ए पांच भेदोमांना प्रत्यकना नीचे प्रमाणे १६ भेद थायछे:

१ पथ्या.	९ मुख विपुला.
२ पथ्या चपला.	१० मुखविपुला चपला.
३ पथ्या मुखचपला.	११ मुखविपुला मुखचपला.
४ पथ्या जघनचपला.	१२ मुखविपुला जघनचपला.
५ विपुला.	१३ जघनविपुला.
६ विपुला चपला.	१४ जघनविपुला चपला.
७ विपुला मुखचपला.	१५ जघनविपुला मुखचपला.
८ विपुला जघनचपला.	१६ जघनविपुला जघनचपला.

(छंदःप्रभाकरमां आ १६ नामो केटलाक फेरफार साथे बतावेलां छे.)

प्रथम लखेला मुख्य पांच भेद साथे आ सोळ भेदनुं संमिलन थतां एकंदर ८० भेद थायछे. वळी कोइ कवि केहेछे के सूक्ष्म रीतिना मिश्रणथी एना २००० भेद थइ शके.

४६ पथ्या.

(विराम वर्ज्य करीने बधा नियम आर्या प्रमाणे एटले चचार मात्राना त्रण गण अर्थात् बार मात्राए विराम आवे.)

४+४+४. ४+४+ज के विप्र+४+ग=३०

४+४+४, ४+४+१लघु+४+ग=२७

त्रीजा गणनी अन्ते, अथवा कल बार तो पूरी थातां;

पथ्यामां यति करजो, आर्या नियमे अवर गातां. ६४

पथ्या आदिना आंगिक नियम साथे आर्याना नियम पण लागु पडेछे. माटे एने पथ्याआर्या इत्यादि नाम पण आपवामां आवेछे.

४७ विपुला.

सर्व रचना आर्या प्रमाणे पण पूर्वार्द्ध अथवा उत्तरार्द्धमां के उभयार्द्धमां त्रण गण एटले बार बार मात्रा उल्लंघीने त्रीजा गणनो शब्द ज्यां पूरो थाय त्यां विराम आवेछे, एटले चोथा के पांचमा गणना अक्षर ग्रहीने त्रीजा गणनो शब्द पूरो थाय ते स्थाने यति गणायछे.

४+४+४+४+४+ज के विप्र+४+ग=३०

४+४+४+४+४+१ लघु+४+ग=२७

त्रीजा गणकेरो शब्द, ज्यां पूरो थाय त्यां विरति आणो;
विपुलाआर्या त्रण जातिनी, बनेछे सरुं जाणो. ६५

(जेनो भेद भाग विपुले एटले विस्तारवाळा आवे ते विपुला केहेवाय)

१ मुख (आदि) विपुला, २ जघन (अन्त) विपुला अने ३ महा (उभय) विपुला, एम विपुलाना त्रण भेद थायछे.

४८ मुख (आदि) विपुला.

(आदि एटले पूर्वार्द्धना त्रीजा गणनो शब्द ज्यां चोथा गणनी मात्रा ग्रहीने पूरो थाय, त्यां विराम आवेछे माटे आदि विपुला; उत्तरार्द्धमां पथ्या प्रमाणे)

आदि दले त्रीजा गणकेरो, शब्दज पूरो थता यति छे,
आदि विपुला आर्या, रचजो ए रीति कविमति छे. ६६

४९. जघन (अन्त) विपुला.

(अन्त एटले उत्तरार्द्धमांना त्रीजा गणनो शब्द चोथा गणनी मात्रा ग्रहीने ज्यां पूरो थाय, त्यां विराम आवेछे, माटे ते अन्तविपुला केहेवायछे. पूर्वार्द्ध पथ्या आर्या प्रमाणे)

अन्तज दलना त्रीजा, गणनो शब्दज ज्हां पूरो बनशे,
अन्तविपुला आर्यामां, त्यां यति सुकवि ठिक धरशे. ६७

૬૦. મહા (ઉભય) વિપુલા.

પૂર્વાર્દ્ધ અને ઉત્તરાર્દ્ધ એ બંને દલના પ્રથમના ત્રણ ગણ માહેલા ત્રીજા ગણના શબ્દ જ્યાં પૂરા થાયછે ત્યાં વિરામ આવેછે

ઉભય દલેતણા ત્રીજા, ગણના શબ્દ જ્યાં પૂરા માનો;
તે ઉભય વિપુલા આર્યા, છે એમજ તમે જાણો. ૬૮

૬૧. ચપલા.

સર્વ નિયમ આર્યા પ્રમાણે, પણ બીજો ને ચોથો ગણ જગણ જોઇએ.

ચપલા રચાય આર્યા, સમાન ધારણ કરી નિયમ જો તે;
બીજે શ્રુતિ ગણે તો, ધરો §પયોધર વળી ધીતે. ૬૯

§ પયોધર=જગણ. પિંગળાચાર્યના મત પ્રમાણે બંને જગણની આસપાસ ગુરુ અક્ષર આવવા જોઇએ, એમ અગ્નિ પુરાણમાં પણ લખ્યું છે. એટલે પેહેલા ગણની અન્તે ગુરુ આવે, તેમજ ત્રીજો ગણ બે ગુરુનો આવે, અને પાંચમા ગણના પ્રારંભમાં પણ ગુરુ આવે." પણ સર્વત્ર જગણની આસપાસ ગુરુજ આવવા જોઇએ, એમ કેદારભટ્ટ, ગંગાદાસ આદિ ઘણા કવિઓનો મત નથી. ચપલાના નીચે પ્રમાણે ત્રણ ભેદ થાયછે.

૬૨ મુખ ચપલા.

મુખ એટલે પૂર્વાર્દ્ધમાં ચપલાનો નિયમ પાળવામાં આવે, અને ઉત્તરાર્દ્ધમાં આર્યા પ્રમાણે આવે.

૧ લું દલ=૪+જ+૪+જ+૪+જ અથવા બિ૦+૪+ગુ=૩૦.

ચપલા સમાન જેનું, પહેલું તો દલ મુખચપલામાં છે;
આર્યા સમાન જેનું, બીજું દલ તોજ જેમાં છે. ૭૦

૬૩ જઘન ચપલા.

પૂર્વાર્દ્ધ આર્યા પ્રમાણે પણ જઘન એટલે ઉત્તરાર્દ્ધ ચપલાના નિયમ

प्रमाणे एटले बीजुं दल ६+ज+६+ज+४+ल+४+गु=२७

जयनचपला प्रथम दल, आर्या सम तो अगल्य पूरो आवे;
चपला समान बीजुं, सदाय तो सुकवि मन भावे. ७१

छंदोगोभर्मा पूर्वार्द्ध मुखचपला प्रमाणे लाववा मग्नु छे, पण ते म मान्य नथी.

८४ उभय (महा) चपला.

जेना बंने दलमां चपलानो नियम पाळवामां आवे ते.

१. ४+ज+४+ज+४+ज के वि०+४+गु=३०.

२. ४+ज+४+ज+४+ल+४+गु=२७.

चपला समान जेनां, दळो बने ते उभयजचपला छे;
चपला महा वळी ते, कवि कहेछे खरे आ छे. ७२

एक पथ्या त्रण विपुला थइने चार थाय अने वळी ते चार भेद साथे त्रण प्रकारनी चपला मिश्र थतां तेनां बार भेद थाय छे, ए रीते एक आर्याना सोळ भेद थायछे ते नीचे प्रमाणे.—

८५ (१) पथ्यार्या.

आर्या सम पथ्यार्या, पण चारे पद गणाय विषमे तो;
बीजे अढार थातां, चोथे पंदर कलाए तो. ७३

८६ (२) आदि विपुलार्या.

आदि दले त्रीजा गणकेरो, शब्दज पूरो थतां यति छे;
आदि विपुला आर्या, रचजो एम कविनी मति छे. ७४

आ उदाहरणमां त्रीजो गण जे चार मात्राए गण ए शब्दना ण आगळ पूरो थाय छे. ते शब्दनो छट्ठी विभक्तिनो प्रत्यय केरो छे ते चोथा गणना अक्षरथी विपुल=विस्तारिय छे ने ते ठेकाणे यति आवेछे:

५७ (३) अन्त (जघन) विपुलार्या.

अन्तज दलना त्रीजा, गणनो शब्दज जहां पूरो करशे;
त्यां यति कवि अन्त विपुला, आर्यामां खचित धरशे. ७५

अन्त एटले बीजा दलमां "विपुला" शब्दे त्रीजा गणनी बार मात्रा 'पु' आगळ पूरी थतां ला अक्षर चोथा गणनो छतां विपुला ए शब्द पूरो थवामां त्रीजा गणने विपुल करवामां एटले विस्तारवामां खपी जायछे अने विपुला शब्दने छेडें यति आवेछे.

५८ (४) उभय विपुलार्या.

उभय दलोतणा त्रीजा, गणना शब्द ज्यां पूरा मानो;
ते उभय विपुला आर्या, छे एमज तमे जाणो. ७६

उभय एटले पेहेला तथा बीजा दलमां त्रीजा गण उपरांत यति विपुलायछे एटले विस्तारायछे, जेमके, पेहेला दलमां त्रीजा शब्दना त्री आगळ बार मात्रा पूरी थतां त्यां यति जोइये तेने बदले जा भळनां, त्रीजा ए शब्द चोथा गणनी बे मात्रा लइने पूरो थायछे अने त्यां यति विपुल थायछे; तेमज बीजा दलमां आर्या ए शब्दनी छेवटे यति विस्तार पामेछे.

५९ (५) मुखचपला पथ्यार्या.

पूर्वार्द्धमांह आवे, सदाय चपलातणा नियम ज्यारे;
मुखचपला पथ्यार्या, बोर पथ्याविरति धारे. ७७

६० (६) मुखचपला आदिविपुला आर्या.

मुखमां जणाय चपलातणाज, नियमो सदा समाथा छे;
यति विपुला आदिनो, मुखचपलादिविपुलार्या छे. ७८

६१ (७) मुखचपलान्तविपुलार्या.

पूर्वार्द्धमांह धारी, अबांध चपलातणा नियम दीजे;
मुखचपलान्त विपुलार्यामां, विपुला विरति बीजे. ७९

६२ (८) मुखचपलोभय विपुलार्या.

चपलातणा नियम सकल, तो धरो ठिक करी प्रथम दलमां;
मुखचपलोभय विपुलार्यामां, विपुला यति द्विदलमां. ८०

६३ (९) जघनचपला पथ्यार्या.

जघनज चपला पथ्या, आर्यामा यति अणाय पथ्याना;
बीजा दले नियम तो, अणाय सर्वेय चपलाना. ८१

६४ (१०) जघनचपलादि विपुलार्या.

जघनचपलादि विपुलार्यामां, विपुलातणी विरति पे'ले;
चपलातणा नियम तो, जणाय जोता दले छेले. ८२

६५ (११) जघनचपलान्त विपुलार्या.

जघनचपलान्त विपुला, आर्यामां विपुल विरति बीजे;
चपलातणो कवि! अचूक, उत्तर पदे नियम कीजे. ८३

६६ (१२) जघनचपलोभयविपुलार्या.

जघनचपलोभयविपुलार्यामाह, विरति विपुला द्वि दले;
चपलातणा नियम सकल, तो बीजे दल अटपट पळे. ८४

६७ (१३) महाचपलापथ्यार्या.

पथ्या यति द्विदलमा, पळे द्विदल नियमज चपलाना तो;
पथ्या महाज चपला, गणाय आर्या सरस आ तो. ८५

६८ (१४) महाचपलादि विपुलार्या.

पे'ले दले करो विरति, तो विपुलातणी सरव सारी;

आदि विपुलाज आर्या, महाज चपला नियम धारी. ८६

६९ (१५) महाचपलान्तविपुलार्या.

द्विदल चपला सुनियमज, महाज चपला सुअन्त विपुलामां;
उत्तर दले विपुलातर्णी, विरति आणजो आमां. ८

७० (१६) महाचपलोभयविपुलार्या.

द्विदल चपला नियमज विपुला, यति त्यां धरो द्विदलमां तो;
आर्या महाजचपलामहाविपुला, बने आ तो. ८

गीति.

७१ गीति, उद्गाथा, उग्गाहा.

१. ४+४+४+४+४+ज अथवा विप्र+४+ग=३०.

२. ४+४+४+४+४+ज अथवा विप्र+४+ग=३०.

पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध आर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे.

आर्याना पे'ला दल, समान नियमो रचो दले बे तो;
तो पद्यो जरूर जाणो, उद्गाथा-गीति छे खरे ए तो. ८

उद्गाथानेज केटलाक पिंगळकारो "आर्यागीति" केहेछे, ए प्राकृतपिंगळसूत्रनी लक्ष्मीनाथभट्टे करेली प्रदीप नामनी टीकाम कह्युं छे.

उग्गाहा (गीति)नी ६० मात्रा थायछे, तेना गण पाडतां, सात ग अने छेल्ला बे गुरु थशे. ते सात गणनां गाहा प्रस्तारनी रीत प्रमाणे १२,८०० रूप पूर्वार्द्धनां थाय, अने तेटलांज उत्तरार्द्धन थाय, माटे ते बंनेनो परस्पर गुणाकार करतां कुल रू १६,३८,४०,००० थायछे.

७२ (१) पथ्या गीति.

पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध पथ्या आर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे.

पथ्या पूर्व दले उभय, त्रीश कला रचि अढार यति आवे;
पथ्या गीति विषे तो, तेवां बे दल विवेकी कवि लावे. ९०

७३ (२) आदिविपुला गीति.

पूर्वार्द्धनी यति आदि विपुला आर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे.

आदि दले यति विपुलानी, ने गीतितणा नियम बेमां;
आदिविपुला गीति, रचवा काजे प्रकार ए जेमां. ९१

७४ (३) अन्तविपुला गीति.

उत्तरार्द्धनी यति अन्त विपुला प्रमाणे.

अन्तविपुला गीति, रचनां गीतितणा नियम द्विदले;
अन्त दले यति विपुलाकेरी, जेमां खरे खरीज पळे. ९२

७५ (४) उभय विपुला गीति.

पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्धनी यति विपुलाआर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे.

उभयविपुला गीतिमांहे, द्विदले यति विपुलानी छे;
नियम रचायज गीतिकेरा, आणे सदाय ज्ञानी छे. ९३

७६ (५) मुखचपला पथ्या गीति.

प्रथम दलमां मुखचपलाना नियम एटले बीजा तथा चोथा गणने स्थाने जगण आवे अने पथ्यागीति प्रमाणे बारे अने अढारे यति आवे.

मुखदलनो मांह नियमो, यथाय चपलातणा खराज पळे;
मुखचपला पथ्या गीति, रचतां पथ्यातणी विरति द्विदले. ९४

७७ (६) मुखचपला आदिविपुला गीति.

प्रथम दलमां मुखचपलाना नियम तथा आदिविपुलानी यति आवे

मुख दल विषेज चपलातणा, नियम यति धराय विपुलानी;
ए गीति मुखचपला, आदि विपुला गणायछे ज्ञानी! ९५

७८ (७) मुखचपला अन्तविपुलागीति.

प्रथम दलमा चपलानो नियम, अने द्वितीय दलमा विपुलानी यति.

अन्तविपुलानगीति, गणायछे ते मुखचपला सारी;
अन्त दले याति विपुलानी, ने मुख दल नि'म चपला धारी. ९६

७९ (८) मुखचपला उभयविपुलागीति.

प्रथम दलमा चपलानो नियम अने बने दलमा विपुलानी यति;

द्विदले यति विपुलातणीज, मुखदल नि'म चपला थाशे;
मुखचपला उभय विपुला, गीति तो रचाइ ठिक जाशे ९७

८० (९) जघनचपलापथ्यागीति.

जघन एटले बीजा दलमां चपलाना नियम अने बेमां पथ्यानी यति.

अन्तदले चपला नि'म, पथ्यागीतितणी विरति धारी;
जघनचपलाज पथ्या, रचाय गीति सदाय ते सारी. ९८

८१ (१०) जघनचपला आदिविपुलागीति.

बीजा दलमां चपलाना नियम अने पेहेला दलमां विपुलानी यति.

चपला नि'म उत्तर दलमां यति आदि दल विपुला धरजो;
जघन चपलाज गीति, विपुलआदि खरेखरी करजो. ९९

८२ (११) जघनचपलाअन्तविपुलागीति.

बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने विपुला प्रमाणे यति.

जघनजचपलागीति, अन्तविपुला सदाय रचवी तो;
अन्त दलमाह चपलातणो, नियम ने यति विपुलानी तो. १००

८३ (१२) जघनचपलाउभयविपुलागीति.

बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने बन्ने दलमां विपुला प्रमाणे यति

जघनचपलाउभयविपुलामा, विपुलातणी विरति द्विदले;
अन्त दलमांह चपलातणो, नियम ए गीति विषेज पळे. १०१

८४ (१३) महाचपलापथ्यागीति.

पेहेला तथा बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने पथ्या प्रमाणे विरति; आवे

पथ्यातणी विरति तो, रचाय द्विदले नियमज चपलाना;
पथ्याज गीति एतो, महाजचपला गणाय छे दाना! १०२

८५ (१४) महाचपला आदिविपुलागीति.

पेहेला अने बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने पेहेला दलमां विपुला प्रमाणे यति

द्विदले महाज चपलातणा, नियम ने यति विपुला आदि;
गीति महाज चपला, गणाय आदि विपुल बहु सादी. १०३

८६ (१५) महाचपला अन्तविपुला गीति.

बन्ने दलमा नियम चपला प्रमाणे, बीजा दलमा विपुला प्रमाणे यति

द्विदल चपला नियम छे, महाज चपलाज अन्त विपुलामां;
अन्त दलमां विपुलातणी, यति आणजो गीति आमा. १०४

८७ (१६) महाचपला उभयविपुला गीति.

बन्ने दलमां नियम चपला प्रमाणे अने यति विपुला प्रमाणे

द्विदल चपला नियमज विपुला, विरति तो धरो उभग दलमा;
गीति महाज चपलामहाविपुला, बने खरी पलमा. १०५

उपगीति.

८८ उपगीति, गाहू, गाहो‡

१२(४+४+४)+१५(४+४+ल+४+ग)=२७ नुं प्रत्येक दल.

आर्या उत्तर दल सम, बे दल जेमांह तो आवे;
उपगीति गाहू रचवा, एवो नियम कवि ममनावे. १०६

‡ मागधी छंद शतकमा आ नाम छे

पूर्वार्द्धनां छगण पैकी छेल्ला छट्ठा गणनां चार रूप गणतां ४,२०,८०,४००, १६००, ६४०० एटलां रूप पूर्वार्द्धनां छगणनां थाय, तेम तेटलांज उत्तरार्द्धनां थाय तेनो परस्पर गुणाकार करवाथी ४,०९,६०,००० रूप उपगीतिनां थायछे.

· ८९ (१) पथ्या उपगीति.

आर्याना बीजा दल प्रमाणे बंने दलनुं माप आणवुं, तथा पथ्या प्रमाणे (१२, १५) विरति आणवी.

आर्या उत्तर दल सम, बे दल जेमां जरूर आवे;
पथ्यानी यति जेमां, पथ्या उपगीति मन भावे. १०७

९० (२) आदिविपुला उपगीति.

बने दलनु माप उपगीति प्रमाणे पण प्रथम दलमां यति विपुला प्रमाणे.

आदि दले यति विपुलाना, ने उपगीति नि'म जेमां;
आदि विपुला नामे, उपगीति तो गणो एमां. १०८

९१ (३) अन्तविपुला उपगीति.

बंने दलनुं माप उपगीति प्रमाणे अने बीजा दलनी यति विपुला प्रमाणे.

उपगीति नियम द्विदले, विपुला यति अन्त दल मांहे;
अन्त विपुला उपगीति, तो आवीज छे जाहे. १०९

९२ (४) उभयविपुला उपगीति.

बने दलनु माप उपगीति प्रमाणे अने यति विपुला प्रमाणे

उभय दले यति विपुलानी, ने उपगीति नियमज छे.
उभयविपुला उपगीति, एनुं नाम सरसाज छे. ११०

९३ (५) मुखचपलापथ्या उपगीति.

प्रथम दलमां चपला प्रमाणे नियम अने बने दलमां पथ्या प्रमाणे यति.

पथ्यातणी यति द्विदल, मुखेज चपलातणो धारो;
मुखचपलापथ्या तो, उपगीतिमांह ठिक धारो. १११

९४ (६) मुखचपला आदिविपुला उपगीति,

पेहेला दलमा चपली प्रमाणे माप अने विपुला प्रमाणे यति.

चपलातणाज नियम विपुला यति, मुख दल तो धरवी;
मुखचपलादिविपुला, उपगीतिनी रीते रचवी. ११२

९५ (७) मुखचपला अन्तविपुला उपगीति.

प्रथम दलमां चपलानुं माप अने बीजा दलमां विपुलानी यति

चपला मुखे धरोने, यति विपुलातणी छेल्ले;
मुखचपला अन्तविपुला, उपगीतितणे मेळे. ११३

९६ (८) मुखचपला उभयविपुला उपगीति.

प्रथम दलमां चपलानु माप, अने बने दलमां विपुलानी यति.

चपला रचो प्रथम दलविषे, विपुला विरति द्विदले;
मुखचपला उभयविपुला, उपगीतिज नियम पळे. ११४

९७ (९) जघनचपला पथ्या उपगीति.

बीजा दलमा नियम चपला प्रमाणे अने बने दलमां यति पथ्या प्रमाणे

जघनचपलाजपथ्या, उपगीतिमां विरति पथ्याना;
अन्त दलमांह नियमो, धराय सर्वेज चपलाना. ११५

९८ (१०) जघनचपला आदिविपुला उपगीति.

बीजा दलमां चपलानो नियम अने पेहेला दलमा यति विपुला प्रमाणे

जघनज चपलादिविपुलामां, विपुला विरति प्रथमे;
अन्त दलमांह चपला, रचाय उपगीति नियमथी क्रमे. ११६

९९ (११) जघनचपला अन्तविपुला उपगीति.

बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने विपुला प्रमाणे यति,

उपगीति जघन चपला, अन्तविपुलाज रचवानो;
अन्त दलमां विरति विपुलातणी, नियम चपलानो. ११७

१०० (१२) जघनचपला उभयविपुला उपगीति.

बीजा दलमां चपलानो नियम अने बंने दलमा यति विपुला प्रमाणे.

जघनजचपला उभयविपुला उपगीति, रचवा मेळे;
उभय दलमांह विरति विपुलानी, चपला नियम छेले. ११८

१०१ (१३) महाचपला पथ्या उपगीति

बने दलमां चपलानो नियम अने पथ्या प्रमाणे यति.

द्विदले रचाय चपला, अणाय पथ्या विरति द्विदले;
पथ्या महाज चपला, रचाय उपगीति नियमज पळे. ११९

१०२ (१४) महाचपला आदिविपुला उपगीति.

बने दलमां नियम चपला प्रमाणे अने प्रथम दलमां विपुला प्रमाणे यति.

चपला रचाय बे दलविषे विपुला, यति प्रथममां;
उपगीति महाज चपला, रचाय आदि विपुला क्रममां १२०

१०३ (१५) महाचपला अन्तविपुला उपगीति.

बने दलमां नियम चपला प्रमाणे अने बीजा दलमां विराम विपुला प्रमाणे.

द्विदले रचाय चपला, विराम विपुलातणो छेले;
अन्तविपुला महाजचपला, उपगीति रचो मेळे. १२१

१०४ (१६) महाचपला उभयविपुला उपगीति.

बने दलमां चपला प्रमाणे नियम अने विपुला प्रमाणे यति

द्विदल विराम विपुलातणोज, चपला नियम करजो;
उपगीति महाजचपलामहाविपुला, ठिक रचजो. १२२

उद्गीति.

१०५ उद्गीति, विगाथा, विगाहा, विगाय.

गाथानुं उलटुं दल एटले गाहानुं उत्तर दल ते उद्गीतिनुं प्रथम दल अने गाथानुं प्रथम दल ते उद्गीतिनुं उत्तर दल.

४+४+४+४+४+ज+४+ग=२७ प्रथम दल.

४+४+४+४+४+विप्र के जगण+४+ग=३०बीजुं दल.

प्रथम दले सत्तावीश, बीजे त्रिश कल गणी आणो;
आर्या विलोम उद्गीति, एज विगाथा विगाह पण जाणो. १२३

नारायणभट्टी प्रमाणे आर्याथी विलोम एटले उलटुं छे, माटे एना ८,१९,२०,००० एटले आर्या जेटलाज रुप थाय छे

१०६ (१) पथ्या उद्गीति.

रवि तिथि प्रथम दले ने, रवि अष्टादश बीजे आवे;
पथ्याउद्गीतिमां, एवी पथ्या समी विरति लावे. १२४

१०७ (२) आदिविपुलाउद्गीति.

विपुलायति आदि दलमा, ने उद्गीति नियम आणो,
आदिविपुला नामे, ए उद्गीति तमे खरी जाणो. १२५

१०८ (३) अन्तविपुला उद्गीति.

अन्त दले विपुला यति, उद्गीतिमांय तो आवे;
अन्त विपुला उद्गीतिने, नामे कविजन मन भावे. १२६

१०९ (४) उभयविपुला उद्गीति.

उभय दले विरति विपुलानो, आवे सदा जेमां;
उभय विपुला उद्गीति, तो एवी जणायछे एमां. १२७

११० (५) मुखचपला पथ्या उद्गीति.

पथ्या यति द्विदलमां, मुखेन चपला धरो ज्यारे,
मुखचपला पथ्या ते, उद्गीति तो गणो तमे त्यारे. १२८

१११ (६) मुखचपला आदिविपुला उद्गीति.

चपला अणाय मुखमांह, ठीक विपुला यति आवे,
मुखचपलादि विपुला, उद्गीति नामनेज शोभावे. १२९

११२ (७) मुखचपला अन्तविपुला उद्गीति.

मुख दलनी माह चपला, विराम विपुलातणो छेले;

मुखचपला अन्त विपुला, उद्गीति रचाय ए मेळे. १३०

११३ (८) मुखचपला उभयविपुला उद्गीति.

चपला धरो मुखे विपुला, विरति बे दळे धरजो;
मुखचपला उभयविपुला, उद्गीति नियम धरी करजो. १३१

११४ (९) जघनचपला पथ्या उद्गीति.

अन्त दळे चपला नि'म, पथ्याना त्यों यति उतारी;
जघनचपलानें पथ्या, रचाय उद्गीति तो सदा सारी. १३२

११५ (१०) जघनचपला आदिविपुला उद्गीति.

जघनचपलादिविपुलामां, यति विपुलातणी पे'ले;
चपलातणा नियम तो, जणाय उद्गीतिने विषे छेले. १३३

११६ (११) जघनचपला अन्तविपुला उद्गीति.

जघनज चपला उद्गीति, अन्त विपुला सदा मानी;
अन्त दळ मांह चपलातणो, नियमने विरति विपुलानी. १३४

११७ (१२) जघनचपला उभयविपुला उद्गीति.

जघनचपला उभय विपुलामां, विपुला विरति द्विदळे;
अन्त दळमांह चपलातणो, नियम उद्गीति विषेज पळे. १३५

११८ (१३) महाचपला पथ्या उद्गीति.

पथ्या यति द्विदळमां, पळे द्विदळ नियम चपलानो;
पथ्या महाजचपला, रचाय उद्गीति सदाय ए जाणो. १३६

११९ (१४) महाचपला आदिविपुला उद्गीति.

चपला रचो द्विदळमांह, ने विपुला विरति पे'ले;
उद्गीति महाज चपला, रचाय आदि विपुला सरस मेळे. १३७

१२० (१५) उभय(महा)चपला अन्तविपुला उद्गीति.

चपला करो द्विदलमां, यति विपुला तणी छेल्ले;
अन्तविपुला उभयजचपला, रचो उद्गीति सरस मेळे. १३८

१२१ (१६) महाचपला-उभयविपुला उद्गीति.

द्विदल चपला नियमज विपुला, विरति तों धरो बेमां;
उभयविपुलामहाचपल, तो बने उद्गीति सरस एमां. १३९

आर्या गीति.

१२२ आर्या गीति.

गीतिना प्रति दलमां अंते एक गुरु वधे अने बीजुं बधुं गीति प्रमाणे आवे ते आर्यागीति केहेवायछे. मंदारमरंदचंपूनो कर्त्ता, पिंगलाचार्य अने तेना मतावलंबी अग्निपुराणवाळो तेमज केटलाक बीजा ग्रंथकारना मत प्रमाणे आर्यांना पूर्वार्द्धमांज एक गुरु वधारवा केहेछे.

४+४+४+४+४+ज के विप्र+४+गु+गु=३२ नुं प्रत्येक दल

आठ डगण प्रति दलमां, अथवा गीतिदलपर गुरु शाशि आणोजी;
तो ते आर्या गीति, गीतिकेरा नियमथकी जाणोजी. १४०

गीतिना मूळ लक्षणमां बने दलमा अंते एक गुरु होयछे, अने आर्यागीतिमां उपर प्रमाणे बीजो गुरु लाववा कह्युं, तेथी बे गुरु थया पण तेन बदले पेहेला बे लघु अने अंते एक गुरु पण आवी शके. एम "छंद.शास्त्र", मां कह्युं छे. "पिंगलादर्शमां" बतावेलुं आर्यागीतिनुं लक्षण "छंदःसूत्र" आदि प्रधान ग्रंथोथी विरुद्ध थायछे.

आमां गीतिनां बंने दल उपर एक गुरु वधार्यो, एम कह्युं छे. एटले छेल्ला बे गुरु तेना तेज रेहेतां बाकीना आठ गणनां रूप गीति प्रमाणेज १६,३८,४०,००० आगळ कह्या प्रमाणे थाय छे.

१२३ (१) पथ्या आर्यागीति.

पथ्यासम रवि वीशे, प्रति दलमां विरति बे बनी आवेछे;
पथ्या आर्यागीति, एम कहीने कविजन बोलावेछे. १४१

१२४ (२) आदिविपुला आर्यागीति.

आदि दलमां विरति विपुलानो, कवतां कदापि जो आवे तो;
ते आर्यागीतिने, आदिविपुला वदाय ए दावे तो. १४२

१२५ (३) अन्तविपुला आर्यागीति.

अन्त दले कदि आवे, विपुलाकेरो विराम ठिक करीने जो;
तो अन्तविपुला आर्यागीति, ते सदाय कवि! केहेजो. १४३

१२६ (४) उभयविपुला आर्यागीति.

उभय दल विषे जो लावो, यति विपुलातणी ठिकज धारी जो;
तो उभय विपुला आर्यागीति, ते गणाय सुखकारी जो. १४४

१२७ (५) मुखचपलापथ्या आर्यागीति.

चपलातणो नि'म मुखे, विराम पथ्यातणो रचो दल मांहे;
तो मुखचपला पथ्या, आर्यागीति बने सरम पल माहे. १४५

१२८ (६) मुखचपलाआदिविपुला आर्यागीति.

मुखदल विषेज चपलातणा, नियम ने यति विपुलानी आणो;
मुखचपलादि विपुला, आर्यागीति खरी तमे तो जाणो. १४६

१२९ (७) मुखचपला अन्तविपुला आर्यागीति.

चपलातणो नि'म मुखे, विराम विपुलातणो दले छेले छे;
मुखचपला अन्तविपुला, आर्यागीति एमज बनावेछे. १४७

१३० (८) मुखचपला उभयविपुला आर्यागीति.

उभय दलमांह विपुलातणो, विरतिने नि'म चपलानो मुखमां;
मुखचपला उभयविपुला, आर्यागीति तो रचीने सुखमां. १४८

१३१ (९) जघनचपलापथ्यार्यागीति.

जघनज चपला पथ्या, आर्यागीति विचारी कहुँ त्यम करजो;
अन्त दलमांह चपला, विराम पथ्यातणा द्विदलमां धरजो. १४९

१३२ (१०) जघनचपला आदिविपुला आर्यागीति.

जघनजचपला आदिविपुला, आर्यागीति बने ठिक तो छे,
छेलां दलेज चपला, विराम आदि विषे विपुलानो छे. १५०

१३३ (११) जघनचपला अन्तविपुला आर्यागीति.

जघनजचपला अन्ते, विपुला आर्यागीति रचो तो तेमां;
अन्ते रचाय चपलातणा, नियमने विरति विपुला जेमां. १५१

१३४ (१२) जघनचपलाउभयविपुला आर्यागीति.

जघनजचपला उभयविपुला, आर्यागीति विषे छे सारा;
द्विदले विराम विपुलातणा, जघनमां धरोज चपला धारा. १५२

१३५ (१३) महाचपलापथ्यार्यागीति.

द्विदले रचाय चपला, अने द्विदलमां विराम पथ्याना तो;
पथ्या महाजचपला, गणाय आर्यागीति खरी छे आ तो.१५३

१३६ (१४) महाचपला आदिविपुला आर्यागीति.

आदि दलमांह विपुलातणो, विरति बे दल चपला नि'म रीति;
आदिविपुला सहित तो, महांज चपला रचाय आर्यागीति.१५४

१३७ (१५) महाचपला अन्तविपुला आर्यागीति.

द्विदले रचाय चपला, यति विपुला जघन विषे छे स्थिति
अन्तविपुला महान चपला, सहित तो रचाय आर्यागीति. १५५

१३८ (१६) महाचपला उभयविपुला आर्यागीति.

द्विदले धराय चपलातणा, नियमने यति विपुलाना धारी;
उभयविपुला महान चपलाज, आर्या गीति बनेछे सारी. १५६

प्रचूर्णगीति.

१३९ गाहो..

प्रथम दल ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+२=१२+१४=२६
द्वितीय दल ४+४+४, ४+४+ल + ४ + २ =१२+१५=२७
बारे चौदे यति धरों, प्रथम रचो छव्विस कलनो;
आर्या उत्तर दल करों, गाहो रचनो यति रविनो. १५७.

"नागराज पिंगळ" प्रमाणे, मागधी छंदःशतकमां एनी ५४ मात्रा कही छे.

१४० प्रमदागीति.

प्र० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+२=१२+१८=३०
मुखदल कल ओगणत्रिश, उत्तर त्रिश गीतिनो नि'म धारी;
बेमां विराम बारे, ए प्रमदागीति तो वणी सारी. १५८

१४१ चंद्रिकागीति.

प्र० ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० वि०+४+४=१२+२०=३२.
प्रथम दले सत्ताविश, बीजे बत्रीश कल आणो;
बेमां यति बारे करों, चंद्रिकागीति तो सरस ते जाणो. १५९

१४२ विगीति.

१. ४+४+४, ४+४+ल +४+४=१२+१७=२९.
२. ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र +४+४=१२+२०=३२,
बार सतरनुं मुखदल, बार वीशतणुं अवर दल आवे;
यति पण ए बिचेंछेदे, आर्या नियमे विगीति एवी कावे. १६०

१४३ मंजुगीति.

सुगदल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.
उत्तरदल. ४+४+४, ४+४+ल+४+२=१२+१५=२७.
सुगदल बार सतरनुं, आर्या उत्तर दल अवर आणो;
बारे यति बे दलमां, ए मंजुगीति तो जाणो. १६१

१४४ अनुगीति (मंजुगीतिनुं विलोम:)

पेहेलुं दल. ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७.
बीजु दल. ४+४+४, ४+४+ल +४+४=१२+१७=२९.
आर्याउत्तर दलसम, सुगदल सत्ताविशनुं करजो;
बे कल बीजे वधतीं, यती बारे अनुगीति विषे धरजो. १६२

१४५ चारु गीति.

पेहेलु दल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.
बीजुं दल. ४+४+४, ४+४+ल +४+४=१२+१७=२९.
आर्या अपर दले बे, चडती कल सरस धारी आणो;
बारे विराम बेमां, तेने चारुगीति ठिक जाणो. १६३

१४६ सुगीति (चंद्रिका गीतिनुं विलोम.)

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ०विप्र+४+४=१२+२०=३२
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७
गीतिपर बे वधतां, प्रथम दले कल बधी मळी बत्रिश छे तो;
उत्तर दल आर्यानुं, बेमां रवि यति सुगीति तो. १६४

१४७ मगीति.

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+२=१२+१८=३०
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९

मुख दल गीति बीजे, आर्या उत्तर दलपर कल बे छे;
वारे विराम बेमां, प्रगीति तेने कविजन के'छे. १६५

१४८ संगीति*

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+४=१२+२०=३२
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९
गीतिपर कल बे वधु, मुख दलमां ने प्रगीति सम छेलुं छे;
वारे विरति बधामां, ए लक्षण संगीति केरुं छे. १६६

*छंदोलतामां संगीतिनुं माप१०-२९ तथा परिगीतिनु २९-३०दर्शाव्युछे

१४९ ललितागीति, गाहिनी, गाहिणी, गाथिनी.

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१२+१८=३०.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२०=३२.
पथ्या गीति सम सौ, उत्तर दलमां पण कल बे वधती;
ललिता गीति गाहिनी, गाथिनीनी पण गणाय एमां गणती.१६७

गाहिनीनी बासठ मात्रा थायछे, पूर्वार्द्धना सात गणनां १२,८०० रूप थाय, तेने उत्तरार्द्धना आठ गणनां ५१,२०० रूपथी गुणतां ६५,५३,६०,००० रूप थायछे.

१५० *सिंहिनी, वल्लरीगीति, वल्गुगीति[1].

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ०विप्र+४+४=१२+२०=३२.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ०विप्र+४+२=१२+१८=३०.
गीतिपर कल बे वधु, प्रथम दले यति रवि वीशपर तो धरजो;
उत्तर दळ गीतिसम, वल्लरी सिंहिनि गीति विषे करजो. १६८

* भाषाछंदोमजरीमां एनुं नाम साहिनी राख्युं छे. तथा छंदो दीपिकामां पण तेज नाम राख्युं छे. १ चित्रसेनकृत टीकावाळा

मागधी पिंगळमां तथा पिंगळछंदोग्रंथमां "गाहिणि" नाम आप्युं छे. ने तेना नीचे प्रमाणे भेद कर्या छेः—

१ रंगा २८ ल + १ गु.=३०
२ भंगा २८ ल + २ गु.=३२
३ रोहिणि २८ ल + ३ गु.=३४
४ रामा २८ ल + ४ गु.=३६

प्रमदागीति आदि लइने उपर प्रमाणे ११ भेद गीतिनां थया, तथा आर्याना पथ्यादि १६ भेद जे प्रथम कह्या छे, तेनुं परस्पर संमिलन थवाथी १६×११=१७६ भेद थायछे.

वळी उपर जे (१) गीति, (२) उपगीति, (३) उद्गीति, (४) आर्यागीति, ए गीतिना चार भेद कह्याछे, तेनी साथे पथ्यादि १६ भेदनुं संमिलन थतां ४×१६=६४ रूप थायछे, आ ६४ रूपमां उपर लखेला १७६ भेद मेळवतां २४० जातना गीतिना प्रकार थायछे, आमां वळी शुद्ध आर्याना १६ भेद थायछे ते मेळविये तो २४०+१६=२५६ भेद थायछे.

२९१. कंदका, स्कंधक, [1]खंधा, [2]खंधाण, [3]खंधो.

प्र० ४+४+४, ४+४+४+४+४=१२+२०=३२

द्वि० ४+४+४, ४+४+४+४+४=१२=२०=३२

चोकलिया गण वसु कर, प्रतिदल बारे वीशे विरति धरीने तो; स्कंधक, खंधा ने वळी, कोइ कहे कंदका खरे एने तो. १६९

[1] छंदोरत्नावलीमां १८, १३ ए प्रमाणे यति अने ३१ मात्रानुं एक चरण करवा वेहेछे.

[2] आ नाम "प्राकृत पिंगळ" वगेरेमां छे

[3] आ नाम मागधी छंद शतकमां छे

स्कंधक–खंधनना भेद.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा स्कंधकना बधा नियम आर्या प्रमाणे अने बने दलमा ३२+३२=६४ मात्रा आणवानु केहेता तेनुज बीजुं नाम आर्यागीति आप्यु छे.

२८ गुरु अने ८ लघुने आरंभीने. एकेक गुरु घटाडवाथी अने बबे लघु वधारवाथी एना २८ भेद नीचे प्रमाणे थाय छे:–

	नाम.	गुरु.	लघु.	अक्षर.
१	नंद*	२८	८	३६
२	भद्र.	२७	१०	३७
३	शेष.	२६	१२	३८.
४	सारग.	२५	१४	३९
५	शिव.	२४	१६	४०
६	ब्रह्मा, ब्रह्म. (वृ.र.ना भट्टी प्रमाणे)	२३	१८	४१
७	वारण, वामण (१वृ.र. २वा.व)	२२	२०	४२
८	वरुण.	२१	२२	४३
९	नील.	२०	२४	४४
१०	निशाक§	१९	२६	४५
११	मदन.	१८	२८	४६
१२	ताल, तालाक, तालक.	१७	३०	४७
१३	शेखर.	१६	३२	४८

* वृत्तमौक्तिकमा ३०गु+४ल=३४ अक्षरनो नद लख्यो छे

§ मागधी नागपिंगळ वृ र नी नारायणभट्टीमा आनाम नथी तेने बदले २७ कुम्भ पछी कलश वधार्यु छे पण कुम्भने कलशनो अर्थ एकज छे माटे अमे ते दाखल कर्यो नथी.

१४	शार.	१५	३४	४९
१५	गगन.	१४	३६	५०
१६	शरभ	१३	३८	५१
१७	विमति.	१२	४०	५२
१८	क्षीर.	११	४२	५३
१९	नगर, †नग्न (धा. वल्लुभ).	१०	४४	५४
२०	नर.	९	४६	५५
२१	स्निग्ध	८	४८	५६
२२	स्नेह, स्नेहन.	७	५०	५७
२३	मदकल‡	६	५२	५८
२४	भूपाल,भूप,लोभ (वृ र नारायणभट्टी)	५	५४	५९
२५	शुद्ध, सिद्ध.	४	५६	६०
२६	सरित.	३	५८	६१
२७	कुंभ, कलश.	२	६०	६२
२८	शशी,शशधर (वृ र नारायणभट्टी)	१	६२	६३

† वृत्तमौक्तिक प्रमाणे

‡ वृत्तमौक्तिकमां कुमकल लख्यु छे १ मागधी नागपिंगलमां सुर छे

(उभडर्जीकृत भगवत् पिंगळमां चोसर गाहामां प्रत्येक चरणमां साळ सोळ मात्राना चार गण लावी अने गुरु अक्षर लाववानु कहेछे पण तेणेज तेनु उदाहरण पेहेलु आप्यु छे तेमां बे गुरु अने लाववाथी बराबर बध बेशतु नथी. तेमज गाहा ए विषम जाति प्रसिद्ध छे छतां उपरनु माप स्वीकारवाथी ते सम जाति थइ जाय वळी चरणाकुल प्रमाणे ते ताल इ०मा भळी जायछे माटे अमे तेने गाहाना भेद तरीके जुदो पाडवो उचित धार्यो नथी.)

विषमजाति.

जेनां चारे पादनी मात्रा अथवा लक्षण भिन्न भिन्न होय अथवा जेनां समेसम अने विषमेविषम पाद मळतां न होय; समेसम मळे पण विषमेविषम न मळतां होय अथवा जेनां विषमेविषम पाद मळे पण समेसम न मळे अथवा चार करतां विशेष पाद जेमां होय अर्थात् जे जाति मात्राना सम के अर्द्धसममां न होय ते विषम जाणवी.

१ रसिका, उत्कच्छा, उत्कच्छा, सुललित, छ पाद-मात्रा ६६ बे विप्र+ल+ल+ल=११ मात्रा. एवां छ पाद, (वृत्तमौक्तिक प्र.)

> प्रति चरण कल हर कर,
> सकल कल पण लघु धर,
> यति नि'म चरणमहिं नहिं,
> सकल पद षड रच अहिं,
> सुललित कहौं ह्रदय धर,
> रसिक अपर वर्णे उचर. १७०

छंदःशास्त्रमां ११ मात्रानुं एक पद एवां छ पाद लखवा केहेछे. वाग्वल्लभमां रसिका तथा सुललितमां सर्व लघु लाववा केहेछे; वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां उत्कच्छा नाम आपी बे चोकल+ १ त्रिकल (४+४+३)=११ मात्रा आणवा कह्युं छे. एटले विप्रगणज आवे एवो अभिप्राय नथी.-वळी तेना आठ भेद कल्प्या छे. ते जो सर्व लघु आणवानुं लक्षण मान्य राखिये तो थइ शके नहि. आ जातिमां छए चरणमां मळीने

६६ मात्रा लघु थायछे. एटले सर्व लघुनो प्रथम भेद लोहागिनी छे. पछी एक गुरु वधारता तेने बदले आठ आठ लघु घटाडी तेणे नीचे प्रमाणे आठ भेद आप्या छे.

प्रा पिं सूत्र	वृत्तरत्नाकर ना टी तथा वाग्वल्लभ	प्रा पि सूत्र वृत्तमौक्तिक		वृ ना भ वाग्वल्लभ	
		लघु	गुरु	लघु	गुरु
१ लोहागिणी, लोंहागी	लोहागिनी	६६	०	६६	०
२ हसिनी	हंसी	६४	१	५८	४
३ रेखा		६२	२	५०	८
४ तालकिणी	तालंकी	६०	३	४२	१२
५ कपिणी	कंपी	५८	४	३४	१६
६ गभीरा		५६	५	२६	२०
७ काली		५४	६	१८	२४
८ कालरुद्राणी		५२	७	१०	२८

प्राकृतपिंगळसूत्रमा उक्कच्छा नाम आप्यु छे तेणे प्रथम भेद ६६ लघु अने शुन्य गुरुनो गणी पछी बब लघु घटाडतां अकेको गुरु वधारी उपर कहेला ८ भेद बताव्या छे. मनहर पिंगळमा छ पाचे यति कही छे प्राकृत पिंगळसूत्रमा यति विषे काइ लख्युं नथी छद शास्त्रना दृष्टान्तमां पाच तुकमा आ प्रमाणे यति मळेछे, पण छठ्ठीमा तूटेछे, तेथी अमे यति पाळवी उचित मानीनथी

२ कंछा—कच्छी.

४+४+३=११ एवा छ पाद

१. बे चोकलिया आण,
२. ते पर त्रण कल जाण,
३. छ पाद एम रचाय,
४. कछा कच्छी थाय,

५. ताल प्रथम पर भरो,
६. चारे चडती करो. १७१

३ अतुला—पाद ९ मात्रा ९४—यतिनो नियम नथी.

१. ८+ ८ = १६
२. ८+ ८ = १६
३. ८+ ८ = १६
४. ८+ ८ = १६
५. १६+१४ = ३०

१. एक चरणमां, सोळ कला कर,
२. नियम विरतिनो, जेमां नव धर;
३. चार चरण रच, एवां सुखकर,
४. त्रीश कलानी, अड कर ते परे,
५. तेमां सोळे चौदे यति कर, अतुला जाति पांच चरण. १७२

४ हीरामणि—पाद ४ मात्रा १०८

१. ६+४+ल+२, ६+४+ल=२४ } एक दुहो.
२. ६+४+ल+२, ६+४+ल=२४ }
३. ४+४+४,+४+४+ज अ० विप्र+४+२=३०
४. ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=३०

तेर अने अगियार वळी, तेर अने अगियार,
ए क्रमकेरो दोहरो, प्रथम चरण निरधार;
बार अढारज क्रम पर, बार अढारज पछीथकी जाणो,
एम अवर पद गीति, हीरामणिमां हृदय धरी आणो. १७३

५ रंडा, रुण्डा, रड्डा, रड्डा. नवपदी पाद ९ मात्रा १११.

१ ९+४+४+ज के विप्र=१९

२ ४+४+४ (विप्र) =१२
३ ३+४+४+२+२लघु=१५
४ ४+४+३ लघु=११
५ ३+४+४+२+२लघु=१५
६ ६+४+ल+२ =१३
७ ६+४+ल =११
८ ६+४+ल+२ =१३
९ ६+४+ल =११
} एक दुहो.

१ त्रिकल श्रुति श्रुति ज निकर द्विजवर,
२ बे चोकल पर द्विज धर,
३ त्रि कल श्रुति श्रुति द्विकल द्विलघु कर;
४ श्रुति श्रुति पर त्रण ल धर,
५ त्रि कल श्रुति श्रुति द्विकल द्विलघु धर;
६ छ पर चार पर लघु द्विकल,
७ छ पर चार पर बाण*; *एक लघु
८ षट कल पर श्रुति ध्वज धरी,
९ छ पर चार रव आण. १७४

छंद शास्त्रमां प्रथम पादमां ढ+२ड+ज लाववा केहेछे.
बीजा पादमां २ड+१भ लाववा केहेछे.
त्रीजा अने पांचमामां ढ+२ड लाववा केहेछे.
चोथा पादमां ढ+२ड अने ते पर एक दुहो
लाववा केहेछे

प्राकृत पिंगळसूत्रमां कह्युं छे के—बीजा अने चोथा चरणमां प्रथमनो चोकलियो एवो लाववो के जेमां पेहेली बे मात्रा छूटी आवे; अर्थात् बीजी अने त्रीजी भळे एवो गण न मूकवो. अने त्रीजा तथा पांचमा पादमां ३+३डगण मात्र लाववा केहेछे. विशेषमां ते आ जातिनुं नाम वस्तु केहेछे. वाग्वल्लभमांज मात्र ८,७ यति आणवा कह्युं छे, बीजा ग्रंथकारो तेम केहेता नथी; वळी विषममां १९ अने सममां ११ मात्रा आणवा केहेछे, अने तेमां छेल्ली मात्रा लघु लाववा जणावेछे, बीजी विगत आपी नथी.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां त्रीजा अने पांचमा चरणने अंते भगण आणवा कह्युं छे, ते, उपर जे माप बताव्युं छे, तेमां छेल्ला बे लघु पेहेलांनो बे मात्रानो गुरु आववाथी थइ शके, वळी बीजामां छेल्लो विप्रगणज लाववो जोइये एवो नियम नथी.

रंडाना सात भेद प्राकृतपिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकरनी नारायण भट्टी टीका, वृत्तमौक्तिक, अने छंदःशास्त्रमां आप्या छे. तेमां मात्रानी संख्यानो क्रम छे तेने अनुसरीने अमे नीचे प्रमाणे गोठव्या छे.

१. करभी, नवपदी, उप्टी, कलभी (१०९ मात्रा).
२. नंदा (११२)
३. चारुसेना, चारुसेनी, चारुणी, वल्लुवा, वस्तु (११५).
४. राजसेना (११६).
५. भद्रा, भद्रिका (११७).
६. सालंकिनी (११९).
७. मोहिनी (१२५).

मागधीछंदःशतक एज सात प्रकार, वस्तु जातिना नीचेने क्रमे गणावेछे. ने उपरथी रंडानुं ए पण एक नाम होय एम कल्पना थायछे.

१. करही (१११). २. पंदा (११२). ३. मोहिणि (११३). ४. चारुसेण (११४). ५. सुसभद्द (११५ ६. राय(इ)सेण (११६). ७. ताडंकिणी (११७).

पिंगळछंदोग्रंथ चित्रसेन टीकावाळामां चोथुं नाम चारणीय आप्युं छे ने तेणे पण उपरना ७ भेद वछुआना गणाव्या छे.

६ (१) करभी नवपदी, उप्फी, कलभीः मात्रा १०६,

१. ६+४+ल+२ =१३
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+ल+२ =१३
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+ल+२ =१३
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२ =१३
९. ६+४+ल =११

१. छपर डगण पर लघु द्विकलं,
२. विषम चरणमां थाय,
३. छ चार पर लघु कल समे,
४. दुहा समान रचाय,
५. पछी पंचम पद तेरनु,
६. ते पण दो'रा मेळनु,
७. पछी दुहो रच त्याय,
८. नव पद सो नव कलतणा,
९. कलभी–उप्फीमाय. १७५

वृत्तमौक्तिकमां कलभी नाम आपी, माप अमे उपर बांध्युं छे तेवुं आप्युं छे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां प्रथमनां चार पाद १३, ११, १३, ११ नां आपवा कही विशेष विगत जणावी नथी. तेम तेमां दृष्टांत पण नथी.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कलभी नाम आप्युं छे अने १, ३, ५ मा पादमां १४ मात्रा लाववा जणाव्युं छे. पण तेम करवाथी नंदाना माप साथे ते मळी जायछे.

मागधी छंदःशतकमां आनुं नाम कशही आपी तेनी मात्रा ११३ गणावी छे अने तेने वस्तुना सात प्रकार पैकी पेहेलो गण्यो छे.

७ (२) नंदा-णंदा (माग० छंदःश०) मात्रा ११२.

१. ६+४+४ =१४
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+४ =१४
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+४ =१४
६. ६+४+ल+२=१३ }
७. ६+४+ल =११ } एक दुहो
८. ६+४+ल+२=१३ }
९. ६+४+ल =११ }

१. छ पर डगण बे विषम पदे,
२. छ चार लघु सम थाय;
३. ए रीते पद पांच रची.
४. दुहो एक रचाय;
५. सौ कल मो ने चार थशे;

६. नंदा रचना थायछे,
७. बीजो भेद गणाय;
८. कवि प्रभुगुण तेमां कवी,
९. मननांहे हरखाय। १७६

चारुसेनी (वृ. र. ना. भ.) चारुणी (मा. छं. शा.)

८. (१) चारुसेना (वत्थुवा=वस्तु जाति) मात्रा ११९

१. ६+४+४+ल =१५
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+४+ल =१५
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+४+ल =१५
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२ =१३
९. ६+४+ल =११

(६–९) एक दुहो.

१. तिथि कळ विषमे आण अनुप,
२. सममां धर अग्यार;
३. विषम बधी चोपाई रूप,
४. सम पद दोहो धार.
५. ते पर दोहा केरुँ स्वरूप;
६ सो ने पंदर कळ धरी;
७. खड्डं करो कविराय!
८. चारुसेना चारुगी.
९. वत्थुवा तेह वदाय. १७७.

९ (४) राजसेना. मात्रा ११६.

१. ६+४+४+ल=१५
२. ६+४+२ =१२ †
३. ६+४+४+ल=१५
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+४+ल=१५
६. ६+४+ल+२=१३ }
७. ६+४+ल =११ } एक दुहो.
८. ६+४+ल+२=१३ }
९. ६+४+ल =११ }

१. छ पर ४गण बे ने लघु आण;
२. विषम पदे चोपाई;
३. छ चार बेनुं बीजुं जाण,
४. चोथे छ युग लकार;
५. पांच पूरां रच एवा पाद,
६. ते पर दोहो एक करी,
७. सोने कल रच सोळ;
८. राजसेन रचना करी,
९. कविवर! वाणी बोल. १७८

† भाषा छंदोमंजरीमां ११ मात्रा लाववा कहेछे. पण प्राकृतपिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका इत्यादिमां १२ मात्रा लाववा कह्यु छे माटे अमे ते माप राख्यु छे नहिंतर चारुसेनाथी जूदु न पडे

१० (५) भद्रा–भद्रिका. मात्रा ११७

१. ६+४+४+ल=१५

६ ६+४+ल+२=१३
७ ६+४+ल =११
८ ६+४+ल+२=१३
९ ६+४+ल =११ } दुहो.

१. तालंकिनी रचवा काजे,
२. सोळ रचो कल विषमे;
३. छ चार बे कल बीजे राजे,
४. शिव कल चोथे थाय;
५. छ चार लघुनी विगत विराजे,
६. एम पांच पद आणीने;
७. सो पर वीशकमएकं, १००+(२०-१)१९
८. कुल कला आणो कवि!
९. धारी वचन विवेक. १८०

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां जणावेलुं के, सम चरण (बीजा चोथा)मां बार बार अथवा अगियार अगियार मात्रा आणवी.

१६. (७) मोहिनीरंडा. मात्रा १२७.

१. ४+४+४+४+३=१९
२. ६+४+ल =११
३. ४+४+४+४+३=१९
४. ६+४+ल =११
५. ४+४+४+४+३=१९
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२ =१३
९. ६+४+ल =११ } दोहरो.

१. त्रण कल पे'लां चोकलिया गण चार,
२. विषम पदे निरधार,
३. छ चार लघुनी शिव कल सममां सार,
४. पांच पदो सुखकार,
५. ते पर रचना दुहातणी भंडार,
६. सो सत्ताविश कुल कला,
७. मोहिनीरंडा मांय,
८. §मोहनों जाति मन धरी, § ५-२३ अंक ६४ जुवो
९. कर एवी रचनाय. १८१

मागधी छंदःशतकमां ११२ मात्रा गणी तेने त्रीजो भेद मान्यो छे पण ते प्रमाणग्रंथोथी जुदु पडेछे. वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका तथा प्राकृतपिंगळसूत्रने आधारे अमे उपरनुं माप बांध्युं छे.' वृत्तमौक्तिकमां (१, १, ५) विषमपादमां नव बीजामां दश तथा चोथामां अगियार अने उपर एक दुहो एम सधी ९६ मात्रा आणवा कह्युं छे पण तेने बीजो आधार मळ्यो नथी एटले ए मत माह्य नथी.

१३. कुंडलिया तोटक. मात्रा ११२.

१.	६+४+ल+२=१३	एक दुहो तेनी चोथी तुकना छेला शब्दोनी कुंडळी पांचमी तुकमां वाळवी.
२.	६+४+ल =११	
३.	६+४+ल+२=१३	
४.	६+४+ल =११	
५.	स+स+स+स =१६	एक तोटक.
६.	स+स+स+स =१६	
७.	स+स+स+स =१६	
८.	स+स+स+स =१६	

१. तेर अने अगियारनां,
२. चरण रचीने चार;

३. एम करीने दोहरो,
४. ते पर तोटक धार,
५. धर तोटक ते पर प्रेम धरी,
६. उलटी तुक चोथी दुहानी करी;
७. रच तोटक कुंडलिया सरखा,
८. कविता करो एम पछी हरखा. १८२

आ कुंडलियातोटक प्रवीणसागरमां छे. आवी रीते बीजी कोई पण मात्रामेळ जातिने वर्णमेळ साथे मेळवी आवा छंदो रची शकाय अने ते कर्त्तानी धून उपर छे.

२४. चंद्रावली, चंद्राली. मात्रा ११८.

१. ८+४+गु+गु=१६
२. ६+४+ल =११
३. ८+४+गु+गु=१६
४. ६+४+ल =११
५. ८+४+गु+गु=१६
६. ८+४+गु+गु=१६
७. ८+४+गु+गु=१६
८. ८+४+गु+गु=१६

(५–८) एक चरणाकुल (पृ.१६ अं.४५ जुवो.)

१. चंद्रावलीमां के चंद्राली,
२. वसु पर यति पछी चार;
३. ते पर बे गुरु अन्ते आणी,
४. छ चार ने लघु धार;
५. छ चार ने लघु धार दुहानी,
६. चे अड पछी कुंडळी करवानी;

७. पछी चरणाकुलनी श्रुति आली,

८, चंद्रावलीमां के चंद्राली. १८३

गूजरातीमां हाल जे चंद्रावला नाम केहेवायछे ते अशुद्ध छे. छंदःकामदुघावत्समां एनुं नाम चंद्रावली लख्युं छे. चंद्र+आली अथवा आवली एटले चंद्राली अथवा चंद्रावली नाम आप्युं छे. तेमां कुंडली वाळवानुं अथवा प्रथम चरण जेवुंज छेल्लुं एटले आठमुं चरण लाववुं एवो नियम कर्यो नथी.

१५ चंद्रायणा. मात्रा १२८.

१. ६+४+ल+२=१३
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+ल+२=१३
४. ६+४+ल =११

} एक दुहो.

५थी८. रगण (ऽ।ऽ) अथवा ठगणनी (५) २० मात्रानां चार चरण

१. प्रथम दुहो करी एकने,
२. *चंदाना पछी धार;
३. रगण (ऽ।ऽ) चार रचुं तो ठिकन,
४. वा पछी वीश कल सार;
५. वा पछी वीश कल ठगण (५) चारे करो,
६. दोहरा अन्त पद कुंडलीमां धरो;
७. आदिना बोल ते अन्त देजो फरी,
८. जाति चंद्रायणे प्रथम दुहो करी. १८४

*जगती छंदना पेटामां १२ अक्षर (४ रगण) नु चंदाना, चंद्रायणा आदि नामनु वृत्त छे ते.

१६. अमृतध्वनि. पाद ६ मात्रा १४४.

१३+११=२४
१३+११=२४

} दुहो.

८+८+८=२४
८+८+८=२४
८+८+८=२४
८+८+८=२४
} घणी यमक

प्रथम द्विदल रच दोहरो, अमृतध्वनिनी मांह;
चार चरण चोवीशनां, रचीं कर अड पड जांह;
रचीं कर ए अड, प्रथम फरीथी धर, त्रण त्रण यति कर;
पनु कल प्रति यति, अतिय यमकवती, दर अड अट धर;
ताल प्रथम पर, श्रुति चडती धर, श्रुति पदमां त्यम;
केदि तुं वण शाक, कुंडली नियमेके, अन्त रच प्रथम. १८९

वीर रसनुं वर्णन करवामां आ जाति विशेष योग्य गणायछे: गौंडं पिंगळमां केहेछे के, प्रथम दुहो लावीने उपर आठ आठ विरामनी २४ कलवाळां चार पाद आणवां.

चिन्तामणीमां पण एमज केहेछे, लखपतनशसिन्धुमां केहेछे के, आठ आठ मात्राए विश्राम आवे एवां २४मात्रनां छ पाद; कुंडळीवाळी घणा अनुप्राससहित आवे ते अमृतध्वनि.

छंद कामदुधावत्तसमां त्रण दुहानी आ जाति बनेछे एम केहेछे.

१७. कुंडली, कुंडालिया चरण ६, मात्रा १४४.

१. ६+४+१+२, ६+४+१=२४
२. ६+४+१+२, ६+४+१=२४
} एक दुहो १३; ११ यति.

३. ६+४+४+४+४+२ =२४
४. ६+४+४+४+४+२ =२४
५. ६+४+४+४+४+२ =२४
६. ६+४+४+४+४+२ =२४
} एक काव्य ११, १३ यति.

४ ।ऽ।
१. कुंडलिये कर छ कल परं, ड̐गण-जगणवण-जाण;
२. समे एक त्रण विषममा, एम दुहा पद आण, ११+२
३. एम दुहा पद आण, काव्य झड प्रथमज करतां;–
४. छ पर चोकला चार, उपर वळी कल बे धरतां;
५. छ पर चोकला चार, एज पद फरी वळी करिये;
६. दुहा आदिना शब्द, अन्त धरवा कुंडलिये. १८६

वाणीभूषण अने प्राकृत पिंगळसूत्रमा दोहरांना चार चरण गणी कुल्ल आठ चरण मानेछे.

काव्यमां ६+१२ (४+४+४)+६ तेमां १२ मात्रा पैकी छेल्लो गण विप्र के जगण आणवानो नियम छे; पण कुंडलियामां तो छप्पय जातिनी पेठे मागधी नागपिंगळना उदाहरणमां त्रण चोकलियामां छेल्लो विप्र के जगण आण्यो नथी. वृत्तमौक्तिकमां त्रीजो सगण उदाहरणमां जोवामां आवेछे, पण काव्यना नियममा त्रीजो विप्र के जगण लाववा तेणे लख्युं छता कुंडलियामा ते नियम पोते पाळ्यो नथी. छंदः शास्त्रमा तो त्रण गणमा स ज के विप्र गण काव्यमां आणवानो नियम कर्यो छे ते प्रमाणे तेणे कुंडलियाना पोताना उदाहरणमां त्रीजो सगण आण्यो छे. रूपदीप तथा लखपत पिंगळ अने वाणीभूषणमां दुहा उपर रोळा जाति लाववानुं कहेछे. आ सर्व उपर विचार करीने कुंडलियाने माटे अमे उपर प्रमाणे नियम (छप्पयने अनुसरतो) कर्यो छे ते हाल सुधी वृजभाषामां अने गूजरातीमां चालेला नियमने अनुसरतो पण छे. काव्यनी त्रीजी झडनी प्रथम यति फरीने पाछी त्रीजी झडनो प्रथम यतिमां आणवो एवो नियम छतां पछवाडेथी पाळवामा आवतो नथी. "लखपतजसासिंधु"-मां पाळ्यो छता केटलाक कुंडलियामां तेम कर्युं नथी माटे ते रिवाजे राखवो ठीक छे.

प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीकामां पशुपतिना मत प्रमाणे कुंडलियानुं माप एम लखेछे के, प्रथम दुहो, पछी सोरठो अने ते पछी एक काव्य जाति एम कुल १९२ मात्रा आणवी.

कुंडलियामां दोहराना अन्तनो लाटानुप्रास काव्यना प्रारंभमां मूकवो अने काव्यने अन्ते दोहराना प्रारंभनो लाटानुप्रास मूकवो एम छंदोवृत्तमुक्तावलिमां कह्युं छे.

नागपिंगळ, प्राकृत पिंगळसूत्र, तथा वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां २+४+४+४+४+४+२=२४ एम गण आवे त्यारे षट्पदी केहेछे, अने प्रारंभमां छ मात्रा आवे (६+४+४+४+४+२=२४) तेने षट्पदी अथवा वस्तु एवुं नाम आपेछे.

५ मी अने ६ ट्ठी तुक उल्लाळानी छे, तेनी प्रथमनी चार मात्रामां त्रीजी मात्राए ताल आणवो एम नियम छे, तेनो अर्थ एटलोज छे के, चार मात्रामांथी प्रारंभनी बे मात्रा छूटी पाडवी; एटले २+२=४ मात्रा आणवी, मतलब के, बीजी अने त्रीजी मात्रा एकठी आणवी नहि.

१८ षट्पदी—छप्पय. मात्रा १५२.

१. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
२. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
३. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
४. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
} एक काव्य ११, १३ यति.

५. ४+४+४+३, ६+४+३ =२८
६. ४+४+४+३, ६+४+३ =२८
} एक उल्लालो १५, १३ यति.

१. छप्पय-षट्पदी थाय, कला चोवीश कुल करजो,
२. छ कल पर ड गण चार, ते पछी बे कल धरजो;

३. एवी रीते काव्य, एक बदलीने आणो;
४. अगियारे यति जरुर, तेर पर पछीथी जाणो;
५. त्रण चोकलिया पर त्रणे कला, छ चार पछी त्रण कल करो;
६. ए रीति उल्लाले एक करो, यति पंदर तेरे धरो. १८७

जे पट्पदीमां ४८ लघु होय ते विप्राजाति, तेनुं फळ सिद्धि छे; ७१ लघुवाळी क्षत्रिया केहेवाय, तेनुं फळ वृत्ति (उपजीविका) छे; ९६ लघुवाळी वैश्या केहेवायछे, तेनुं फळ धन छे; अने तेथी उपरांत लघुवाळी शूद्रा केहेवायछे, तेनुं फळ मरण छे. आ प्रमाणे टिप्पण "चित्रसेन टीकांवाळा मागधी पिंगळमां" दर्शाव्युं छे. वळी एक मतांतर एम छे के, अ क वर्गवाळी विप्रा केहेवाय; च ट वर्गवाळी क्षत्रिया केहेवाय; त प वर्गनी वैश्या अने अवर्गनी शूद्रा केहेवाय.

संस्कृत वृत्तमौक्तिकमां पण ६+१२ (४+४+४)+४+२ एवी रीते चोवीश मात्रा लाववा जणावतां केहेछे के, काव्यजातिमां १२ मात्राना चोकलिया त्रण गण लाववां छेलो विप्र (।।।।) अथवा जगण (।ऽ।) आणवो जोइए, एम आदेश कर्यो छे ते पट्पदी संबंधमां पाळवानो नथी.

पट्पदीना ७१ भेद करवामां प्रथम रूप १२ लघु अने ७० गुरुनुं अजय नामनुं योज्युं छे, तेनुं कारण एम जणायछे के, ६+१२ (४+४+४) छ कल उपर बार मात्राना त्रण चोकलिया लाववाना छे तेमां त्रीजो चोकलियो सगण (।।ऽ) अथवा जगण (।ऽ।) लावतां प्रत्येक चरणमां बे लघु नियमित आववा जोइये. ए गणत्री प्रमाणे चार पादनी आठ लघु मात्रा थाय, ते उपरांत, उल्लालनी प्रत्येक यतिमां छेल्ली त्रण त्रण मात्रा आणवानी छे, एटले तेमां एकेको लघु आवेछे, ए हिसाबे बे दलनी चार लघु मात्रा थाय ते (८+४) आठमां उमेरतां प्रथम रूपमां १२ लघु मात्रा आवेछे.

एटले पेहेला रूपमां १२ लघु+७० गुरु (१४०) थइने कुल १५२ मात्रा थायछे. तेमां अकेक गुरु घटाडतां अने ते बदले बबे लघु वधारतां सर्व लघु अक्षर आवी जाय त्यांसुधी एकंदर ७१ भेद थायछे. आ उपरथी एटलुं सिद्ध थायछे के, बार मात्राना त्रण गणमां त्रीजो गण स अथवा जगण लाववानो अभिप्राय भेद पाडनारे अगत्यनो गण्यो छे.

षट्पदीभेद प्राकृतपिंगळसूत्र प्रमाणे.

छप्पय

अअअ विजअ बलि कण्ण, वीर वेआल विहण्णउ,
मक्कलु हरि हर बंभ, इंदु चंदणु सुसुहंकरु,
साण सीह सद्दूल, कुंम कोइल खरु कुंजरु,
मअण मच्छ तालंक, सेस सारंग पओहरु,
ता कुंद कमलु बारण सरहु, जंगम जुइअट्ठवि लहइ,
सरु सुसरु समरु सारसु सरअ, छप्पअ णाम पिंगल कहइ. १
मेरु मअरु मअ सिद्धि, बुद्धि करअलु कमलाअरु,
धवल मणउ धुअ कणउ, किसणु रंजणु मेहाअरु,
गिंम गरुड ससि सूर, सल्ल णवरंग मणोहरु,
गअणु रअणु णरु हीरु, भमरु सेहरु कुसुमाअरु,
ता दिप्पु संख वसु सद्द सुणि, णाअराअ पिंगलु कहइ,
छप्पअ णाम एहत्तरिहि, णाअराअ पत्थरि लहइ. २

अंक	प्रा पिं सूत्र प्रमाणे नाम.	लघु	गुरु.	प्राकृत नाम
१	अजय.	१२	७०	अजअ.
२	विजय.	१४	६९	विजअ
३	*वलि, बलि.‡	१६	६८	बलि.

*छंदःप्रभाकर प्रमाणे. ‡प्रा० र० ना० भ०

४	कर्ण, वर्ण. (र. र. ना.)	१८	६७	कण्ण.
५	वीर.	२०	६६	वीर.
६	वेताल.	२२	६५	वेआल.
७	वृहन्नल, विट्टंकर.	२४	६४	विट्टणउ.
८	मर्कट.	२६	६३	मक्कलु.
९	हरि.	२८	६२	हरि.
१०	हर.	३०	६१	हर.
११	ब्रह्मा, ब्रह्म. (छ प्र र र.ना)	३२	६०	बंभ.
१२	इन्दु.	३४	५९	इन्दु.
१३	चन्दन.	३६	५८	चंदणु.
१४	शुभंकर.	३८	५७	सुहंकरु.
१५	†श्वान, कुक्कुर.	४०	५६	साण.

† वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमा शाल नाम छे

१६	सिंह.	४२	५५	सहि.
१७	शार्दूल.	४४	५४	सद्दुल.
१८	कूर्म, कमठ, कच्छ (छ प्र)	४६	५३	काछव, कुंम.
१९	कोकिल.	४८	५२	कोइल.
२०	खर.	५०	५१	खरु.
२१	कुंजर.	५२	५०	कुंजरु.
२२	मदन.	५४	४९	मअण.
२३	मीन, मत्स्य	५६	४८	मच्छ.
२४	तालांक, तारंग, ताटंक	५८	४७	तारग, तालंक.
२५	शेप.	६०	४६	सेस.
२६	सारङ्ग.	६२	४५	सारग.
२७	पयोधर.	६४	४४	पओहरु.

२८	कुंद.	६६	४३	कुंद.
२९	कमल.	६८	४२	कमलु.
३०	वारण.[1]	७०	४१	वारण.

१ वृत्तरत्नाकर नारायणभट्टीमां आने कारण केहेछे ते कदाच भूल होय.

३१	शरभ, शलभ (छं. प्र.)	७२	४०	सरहु.
३२	जंगम, अजंगम.	७४	३९	जंगम.
३३	द्युतीष्टम्.	७६	३८	जुइअट्ठ.
३४	दाता, वीछ. (हिंदीपिंगळ)	७८	३७	
३५	शर.	८०	३६	सरु.
३६	सुशर.	८२	३५	सुसरु.
३७	समर.	८४	३४	समरु.
३८	सारस.	८६	३३	सारसु.
३९	शारद, सरस.	८८	३२	सरअ.
४०	मेरु.	९०	३१	मेरु.
४१	मदकर.	९२	३०	मअरु.
४२	मद.	९४	२९	मअ.
४३	सिद्धि.	९६	२८	सिद्धि.
४४	बुद्धि.	९८	२७	बुद्धि.
४५	करतल, कलकल.	१००	२६	करअलु.
४६	कमलाकर.	१०२	२५	कमलाअरु.
४७	धवल.	१०४	२४	धवल.
४८	मन.	१०६	२३	मणउ.
४९	ध्वज, ध्रुव.	१०८	२२	धुज्ज, धुअ..
५०	कनक, वलय, करकंकन.	११०	२१	कणउ.
५१	कृष्ण.	११२	२०	किसणु.

५२	रंजन.	११४	१९	रंजणु.
५३	मेघकर, मेघाकर.	११६	१८	मेहाअरु.
५४	ग्रीष्म.	११८	१७	गिहा.
५५	गरुड.	१२०	१६	गरुड.
५६	शशि.	१२२	१५	ससि.
५७	सूर्य.	१२४	१४	सूर.
५८	शल्य.	१२६	१३	सल्ल.
५९	नवरंग	१२८	१२	णवरंग.
६०	मनोहर.	१३०	११	मणोहरु.
६१	गगन.	१३२	१०	गअणु.
६२	रत्न.	१३४	९	रअणु.
६३	नर.	१३६	८	णरु.
६४	हीर.	१३८	७	हीरु.
६५	भ्रमर.	१४०	६	भमरु.
६६	शेखर.	१४२	५	सेहरु.
६७	कुसुमाकर.	१४४	४	कुसुमाअरु.
६८	दीप, दीपक.	१४६	३	दीप्पु.
६९	शंख.	१४८	२	संख.
७०	वसु.	१५०	१	वसु
७१	शब्द	१५२	०	सद्द.

काव्य जातिना भेद ४५ }
उल्लालयना भेद २६ } मळीने ७१ भेद छप्पयना थया.

जूदा जूदा पिंगळकारोए पोतपोतानी कवितामां गोठलो आवे एवो क्रम लीधो छे, अने नाम पण केटलांक नविन कल्प्यां छे; तेथी तेना अंकना क्रममां फेरफार थइ जतां, तेमां केटला लघु गुरु थाय ए क्रम पण बदलाइ जायछे, माटे अमे उपर जे क्रम आप्यो छे तेज ग्राह्य छे. भिन्न भिन्न पिंगळमांथी नीचेना भेद अहिं जणाव्या छे, ते उपरथी फेरफार केवो थइ जायछे ते बतावयाने अमे नीचे विगत आपिये छिये.

चिन्तामणी पिंगळ प्रमाणे छप्पय नाम भेद.

छप्पय

अजय विजय बलि करन, बीर बेताल बिहंकर;
१ २ ३ ४ ५ ६ ७
मरकर हरि हर ब्रह्म, ईंद्र चंदन रु शुभंकर;
८ ९ १० ११ १२ १३ १४
श्वान सिंह सार्दूल, कूर्म कोकिल खर कुंजर;
१५ १६ १७ १८ १९ २० २१
मदन मच्छ तारंग, सेस सारंग पयोहर;
२२ २३ २४ २५ २६ २७
कहि कुंद कमळ वारन सरभ, जगम जुनिठिल अरु बिलहु;
२८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
सर सुसर समर सारस सरह, छपय छंद अनुक्रमि लहु. १
३५ ३६ ३७ ३८ ३९
मेरु मकर मद सिद्धि, बुद्धि करतल कमलाकर;
४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६
धवलो मन धुज कनक, कृष्ण रंजन महुरों धरि;
४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२
भेर्घकरि भनि ग्रीष्म, गरुड शशि सूर सवानिय;
५३ ५४ ५५ ५६ ५७

सल्लक अरु नवरंग, मनोहर गगनज गानिय;
५८ ५९ ६० ६१
भनि रतन अमर नर हीरु भनि, भँार मुशेखर कुसुम भरि;
६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७
कहि दीप शंख वसु शद्द कवि, छपय छंद इमि नाम धरि. २
६८ ६९ ७० ७१

पिंगळछंदोग्रंथ चित्रसेननी टीकावाळुं संवत् १८२३ ना कार्तिक सित त्रयोदशिये लखेलुं छे ते प्रमाणेः—

छप्पय.

अजय विजय बलिवंत, वीर वेयाल विहंकर;
१ २ ३ ४ ५ ६
मक्कड हरि हर बंभ, इंद चंदाण सुहंकर;
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
साण सीह सद्दूल, कूर्म कोइल खर कुंजर;
१४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
मयण मच्छ तारंक, सेस सारंग पयोहर;
२१ २२ २३ २४ २५ २६
लहकमल कुंद वारण वसह, सलभ अजंगम बिल लहइ;
२७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३
सरु सुसरु समरु सारस मनस, छंदःपय रविच्छर कहइ.
३४ ३५ ३६ ३७ ३८
मेरु मकरु मद सिद्धि, वुद्ध करयल कमलानन;
३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५
धवल मंन धुअ गणअ, किसण रंजण मेहा वनि;
४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३
भिंग गरुड ससि सूर, सल्लु नवरंग मनोहर;
५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०

गयण रयण नर हीर, तरल सेहर कुसुमाकर;
६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७
दीपक सद्द सुछेद मणि, णायराय पिंगलु कहइ;
६८ ६९ ७० ७१
छप्पयह णाम एहत्तरिहिं, छन्द पय रविच्छरि लहइ.

एक मागधी पिंगळमां छप्पयना भेद नीचे प्रमाणे छेः—

अजय विजय बलवंत, वीर वेयाल विहंगम;
१ २ ३ ४ ५ ६
मंकुड्ड हरि हर बंभ, इंद चंदाण सुहंगम;
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
रयण मयण गुण निळय, तार ताराह यसंवरु; (सयवर)
१४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
अमल विमल मणहरण, मोह मोहण आडंबर (विहंडण);
२१ २२ २३ २४ २५ २६
कासीस चंग वसु चंगवर. रायगुणह शशिविच्छरण;
२७ २८ २९ ३० ३१ ३२
वंसाणसिद्धि बलिमंडयह, कित्तिविमल सविच्छरण. १
३३ ३४ ३५ ३६
अमय सुमय रसराय, राज आकार अलंकय;
३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२
कालिंदी कलि सबल, जाल माला करकंकय;
४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८
कणय रक्खछप्पीह, संग संगाण अलख्वय;
४९ ५० ५१ ५२ ५३
धुर अवधुर संवडय, सिद्धि सारंग भुयंगय;
५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९

तालंक साल संभणुं ब्लु, मंधरगति मुर्हेमिच्छरण;
६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५
वेताण वंस बंभाणनर, जोरण दुणगुण नागहण. २
६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१

अनुक्रम छूटेछे ते वनावराने पट्पदीना ७१ भेद नीचे जणाव्या छे.

छंदःप्रभाकर.	नारायण-भट्टीप्रमाणे	गुरु	लघु	मा छंदोग्रंथ वि ग्रेसनटीकापाठ	उरग चूडामणि
१ अजय।	अजय	७०	१२	अजय	अजय
२ विजय	विजय	६९	१४	विजग	बिजय
३ यल	यलि	६८	१६	बलवंत	बलिवंत
४ कर्ने	कर्ण	६७	१८	वीर	वीर
५ वीर	धीर	६६	२०	वेयाल	वेयाल
६ वेताल	वेताल	५६	२२	विहरर	विहगम
७ विहंकर	वृहन्नल	६४	२४	मक्कड	मक्कड
८ मर्कट	मर्कट	६३	२६	हरि	हरि
९ हरि	हरि	६२	२८	हर	हर
१० हर	हर	६१	३०	बभ	बभ
११ ब्रह्म	ब्रह्म	६०	३२	इंद	इंद
१२ इंद्र	इन्दु	५९	३४	चदाण	चदाण
१३ चंदन	चंदन	५८	३६	सुहकर	सुहगम
१४ शुभकर	शुभकर	५७	३८	रखण	रखण
१५ श्वान	शाल	५६	४०	मयण	मयण
१६ सिंह	सिंह	५५	४२	गुण	गुण
१७ शार्दूल	शार्दूल	५४	४४	निलय	निलय
१८ कच्छ	कूर्म	५३	४६	तार	तार
१९ कोकिल	कोकिल	५२	४८	ताराह	ताराह
२० खर	खर	५१	५०	रायघर	रायहर

२१ कुञर	कुञर	५०	५२	अमळ	अमळ
२२ मदन	मदन	४९	५४	विमळ	विमळ
२३ मत्स्य	मात्स्य	४८	५६	मणहरण	मणहंरण
२४ ताटक	सारम	४७	५८	मोह	मोह
२५ शेप	शेप	४६	६०	मोहणह	मोहण
२६ सारग	सारम	४५	६२	विहडण	आडंवर
२७ पयोधर	पयाधर	४४	६४	कासीर	कासीस
२८ कमल	कुन्द	४३	६६	चग	चग
२९ कुद	कमळ	४२	६८	वसु	वसु
३० चारण	कारण	४१	७०	चगधर	चगधर
३१ शलभ	शरभ	४०	७२	राइगुणह .	रायगुण.
३२ भवन	जगम	३९	७४	शशिविच्छर	शशिविच्छरण
३३ अजंगम	शर	३८	७६	वैमाणसिद्धि	वमाणसिद्धि
३४ सर	सुशर	३७	७८	वलिमडलह	वलिमडलह
३५ सरस	समर	३६	८०	कित्तिविमल	कित्तिनिमळ
३६ समर	सारस	३५	८२	अमय	अमय
३७ सारस	सरस	३४	८४	ममय	सुमय
३८ मेरु	मेरु	३३	८६	रसराय	रसरान
३९ मकर	सकल	३२	८८	राज	राज
४० अलि	मृग	३१	९०	आकार	आमार
४१ सिद्धि	सिद्ध	३०	९२	कलक्य	अलक्यं
४२ बुद्धि	बुद्धि	२९	९४	कलि	कालिंदी
४३ करतल	कलनल	२८	९६	रानल	कलि
४४ कमलाकार	कमलाकर	२७	९८	कालनि	रावल
४५ धवल	धवल	२६	१००	जाल	जाल
४६ मलय	मूषक	२५	१०२	माल	माला
४७ ध्रुव	ध्रुव	२४	१०४	करकरण	करकविम
४८ कनक	वलय	२३	१०६	कणय	कणय

४९ कृष्ण	किंनर	२२	१०८	रगण धर्णीद	रेयण छर्णीह
५० रत्न	धर्क	२१	११०	सग	साग
५१ मेधा	जन	२०	११२	सगाण	सगाण
५२ गिद्ध	मेधाकर	१९	११४	अलरा	अभगद
५३ गरुड	भीष्म	१८	११६	धुर	धर
५४ शशि	गरुड	१७	११८	अव छ	अलय
५५ सुर	शशि	१६	१२०	सवडय	सवलय
५६ शल्य	सूर्य	१५	१२२	सिद्धि	सिद्धि
५७ नवल	शल्य	१४	१२४	सारग	सारग
५८ मनोहर	नर	१३	१२६	भुयगग	भुयगह
५९ गगर	तुरग	१२	१२८	ताळक	तालक
६० रक्ष	मनोहर	११	१३०	राळ	गाळ
६१ नर	गगन	१०	१३२	रागव	राभव
६२ हीर	रत्न	९	१३४	नलिण	नालिण
६३ भ्रमर	नर	८	१३६	लळ	ल
६४ शेखर	हीर	७	१३८	मधर	मधरगति
६५ कुसुमाकर	भ्रमर	६	१४०	मुद्दाविच्छरह	मुद्दाविच्छरण
६६ पति	शेखर	५	१४२	वेयाण	वेयाण
६७ दाप	कुसुमाकर	४	१४४	धग	चरा
६८ शरा	दीर	३	१४६	यमाणवर	यमाणवर
६९ वसु	दारा	२	१४८	जोयण	जायण
७० शब्द	वसु	१	१५०	वण	वरगुण
७१ मुनि	शब्द	०	१५२	गुणवरगह	नवगहण

उपरना कोठा उपरथी जणायछे के, छंदःप्रभाकर, वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका, चित्रसेननी टीकावाळा छंदोग्रंथमां पाठांतरमां-जणावेली विगत, अने उरगचूडामणीमां आपेला भेद; ए सर्वेना क्रममां घणो फेरफार आवेछे. उपरना कोठामां ९२'मा भेदनां नाम गिद्ध, मेथाकर, अलख, अभंगाई एम जूदां जूदां छे; अने ते भेदमां १९ गुरु अने ११४ लघु आवेछे; आपणे जे भेद नक्की कर्या छे तेमां ९२मुं रूप रंजन नामनुं छे, अने छंदःप्रभाकरमां रंजन भेद ९० मो छे अने तेनुं माप २१ गुरु अने ११० लघुनुं छे. आ प्रमाणे बीजा पिंगळोमां पण क्रम टूटवाथी मापमां फेरफार आवेछे अने नाम पण जूदां पडेछे.

गणप्रस्तारप्रकाशमां तो नाम केवळ नवीनज कल्प्यां छे माटे अमे ते नीचे आपिये छिये.

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण
१	अच्युत.	७०	१६	८६.
२	अनंत.	६९	१८	८७
३	अनाम.	६८	२०	८८
४	अभूत.	६७	२२	८९
५	अरूप.	६६	२४	९०
६	अनूप.	६५	२६	९१
७	अनादि.	६४	२८	९२
८	अनंत.	६३	३०	९३
९	अजादि.	६२	३२	९४
१०	अलोभ.	६१	३४	९५
११	अशोक.	६०	३६	९६

१२	अमोह.	५९	३८.	९७
१३	अकोह.	५८	४०	९८
१४	अकाम.	५७	४२	९९
१५	अहंकार.	५६	४४	१००
१६	अद्रोह.	५५	४६	१०१
१७	अतींद्रय.	५४	४८	१०२
१८	अद्वैत.	५३	५०	१०३
१९	अपार.	५२	५२	१०४
२०	अधार.	५१	५४	१०५
२१	अधिष्टा.	५०	५६	१०६
२२	अनास्ते.	४९	५८	१०७
२३	अप्रमेय.	४८	६०	१०८
२४	अप्रमाद.	४७	६२	१०९
२५	अद्भुत.	४६	६४	११०
२६	अलाव.	४५	६६	१११
२७	अनघ.	४४	६८	११२
२८	अवल.	४३	७०	११३
२९	अखल.	४२	७२	११४
३०	अमर	४१	७४	११५
३१	अजर.	४०	७६	११६
३२	अंछल.	३९	७८	११७
३३	अमल.	३८	८०	११८
३४	अचल.	३७	८२	११९
३५	अतन.	३६	८४	१२०
३६	सत्य.	३५	८६	१२१

३७	शांत.	३४	८८	१२२
३८	सिद्धि.	३३	९०	१२३
३९	सीत.	३२	९२	१२४
४०	सुरभ.	३१	९४	१२५
४१	सूर.	३०	९६	१२६
४२	शेष.	२९	९८	१२७
४३	शल.	२८	१००	१२८
४४	शोभ.	२७	१०२	१२९
४५	सोम	२६	१०४	१३०
४६	शम्भु.	२५	१०६	१३१
४७	कपिल.	२४	१०८	१३२
४८	काम.	२३	११०	१३३
४९	कृष्ण.	२२	११२	१३४
५०	कीर.	२१	११४	१३५
५१	कुशल.	२०	११६	१३६
५२	कूबर.	१९	११८	१३७
५३	केशव.	१८	१२०	१३८
५४	कैटभहा.	१७	१२२	१३९
५५	कोल.	१६	१२४	१४०
५६	कौशल.	१५	१२६	१४१
५७	कंसहा.	१४	१२८	१४२
५८	वनमाली.	१३	१३०	१४३
५९	वामन.	१२	१३२	१४४
६०	विष्णु.	११	१३४	१४५
६१	वीरहा.	१०	१३६	१४६

६२	बुध.	९	१३८	१४७
६३	बूझा.	८	१४०	१४८
६४	वेदगा.	७	१४२	१४९
६५	वेदपत.	६	१४४	१५०
६६	बोधा.	५	१४६	१५१
६७	बौध.	४	१४८	१५२
६८	बंशीधर.	३	१५०	१५३
६९	मंजु.	२	१५२	१५४
७०	मनोहर.	१	१५४	१५५
७१	माक्ष्व.	०	१५६	१५६

उपर ७१ भेद बताव्या ते उपरांत गणप्रस्तारप्रकाशमां छप्पर संबंधी नीचे प्रमाणे विस्तार जणाव्यो छेः—

छप्पयनी रचना करवामां रोला आदि पांच वस्तु भेदनी उपर चार प्रकारना उल्लाल तथा हंस (दोहरानो प्रथम भेद) नो चडावो करवामां आववाथी छ पाद रचाइ ५×५=२५ भेद विशेष जणाव्या छे, ते समजवा माटे पांच वस्तुभेद किया? अने ते प्रत्येकना केटला भेद थायछे ते जाणवानी अगत्य छे. ए भेद नीचे प्रमाणे छे—

१ रोलावस्तु. ४ मोहनवस्तु.
२ आनंदवस्तु. ५ मंगळवस्तु.
३ रायवस्तु.

(१) रोलावस्तु. (वत्थू-वास्तुक)

६+४+ल, ६+४+ल+गु=२४.

आवां चार चरणनी रोलावस्तु जाति थायछे, अने तेने काव्य

जाति मानेछे, पण तेमां तफावत छे. जुओ पृ. ३१ अने ३९.

रोलावृत्तनुं प्रथम रूप रचतां सर्व गुरु करवाने प्रत्येक चरणमां बे लघु आवेछे ते तो कायम राखवा पडेछे, माटे आर्या जातिमां ए हिसाबे ८ लघु अने ४४ गुरु मळी ५२ वर्ण थायछे ते समजवाने नीचे चित्र आपियें छियें.

१	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
२	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
३	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
४	SSS	SS	I	SSS	SS	IS

४४ गुरुमांथी अकेको गुरु घटाडी तेने बदले बबे लघु वधारतां तेना कुल भेद ४५ थायछे अने छेलुं रूप ९६ लघुनुं थायछे. ए भेद नीचे प्रमाणे छेः—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	कमठ.	४४	८	५२
२	मीन.	४३	१०	५३
३	वराह.	४२	१२	५४
४	कृष्ण.	४१	१४	५५
५	नरसिंह.	४०	१६	५६
६	वलि. (बलि?)	३९	१८	५७
७	वामन.	३८	२०	५८
८	गिरिधर.	३७	२२	५९
९	विधि.	३६	२४	६०
१०	विष्णु.	३५	२६.	६१

११	वीर.	३४	२८	६२
१२	हरि.	३३	३०	६३
१३	मोहन.	३२	३२	६४
१४	भामन.	३१	३४	६५
१५	माधव.	३०	३६	६६
१६	शिव.	२९	३८	६७
१७	शशि.	२८	४०	६८
१८	सुर.	२७	४२	६९
१९	धराधर.	२६	४४	७०
२०	वनमाळी.	२५	४६	७१
२१	श्याम.	२४	४८	७२
२२	राम.	२३	५०	७३
२३	वेकुंठ.	२२	५२	७४
२४	देव.	२१	५४	७५
२५	द्विज	२०	५६	७६
२६	कवि.	१९	५८	७७
२७	शाली.	१८	६०	७८
२८	यज्ञ.	१७	६२	७९
२९	बौध.	१६	६४	८०
३०	बलदेव.	१५	६६	८१
३१	दत्त.	१४	६८	८२
३२	व्यास.	१३	७०	८३
३३	कपिल.	१२	७२	८४
३४	ऋषभ.	११	७४	

३५	शेष.	१०	७६	८६
३६	हंस.	९	७८	८७
३७	सनकादि.	८	८०	८८
३८	नारायण.	७	८२	८९
३९	हयग्रीव.	६	८४	९०
४०	धन्वंतर.	५	८६	९१
४१	कल्कि.	४	८८	९२
४२	गुरु.	३	९०	९३
४३	शनि.	२	९२	९४
४४	यम.	१	९४	९५
४५	इंद्र.	०	९६	९६

(२) आनंदवस्तु.

प्रथम.	६+४+३,	६+४=२३
द्वितीय.	६+४+३,	६+४=२३
तृतीय.	६+२+३,	३+६+२=२२
चतुर्थ.	६+२+३,	३+६+२=२२
		९०

१,५,९ मात्राए ताल.

वस्तू आ आनंदमां, छ चार कल त्रण धर,
छ चार आणी ते परे, बे पद त्रेविश कर,
पद बे ने त्रण आण, त्रण पर छ पर द्वि उचर,
त्रीजे चोथे एम, कल्य कुल बाविश कर. १८८

ए रीते कुल ९० मात्रानी आ जाति बनेछे, तेमां छ मात्रा लघु राखवानो फरम होतां एवुं सर्व गुरुनुं प्रथम चिन्ह रचवाने ६ लघु

तथा ४२ गुरु थइ कुल ४८ वर्ण थायछे, ते नीचे प्रमाणे—

१	SSS	SS	IS	SSS	SS	
२	SSS	SS	IS	SSS	SS	
३	SSS	S	IS	IS	SSS	S
४	SSS	S	IS	IS	SSS	S

४२ गुरुमाथी अकेक गुरु घटाडतां अने ते प्रत्येकना बबे लघु वधारतां छेवट कुल ९० लघुनु छेल्लु रूप बनेछे, ते सुद्धात ४३ भेद नीचे प्रमाणे थायछे —

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	सरस.	४२	६	४८
२	सारस.	४१	८	४९
३	सरोज.	४०	१०	५०
४	सरभ.	३९	१२	५१
५	मालिल.	३८	१४	५२
६	समर.	३७	१६	५३
७	शशिन.	३६	१८	५४
८	सुकल्प.	३५	२०	५५
९	सूर.	३४	२२	५६
१०	श्याम.	३३	२४	५७
११	सुधा.	३२	२६	५८
१२	सत्य.	३१	२८	५९
१३	ममन.	३०	३०	६०
१४	सिधु.	२९	३२	६१
१५	सभा.	२८	३४	६२
१६	शोभा.	२७	३६	६३

१७	शान्त.	२६	३८	६४
१८	सुख.	२५	४०	६५
१९	सती.	२४	४२	६६
२०	शची.	२३	४४	६७
२१	सोम.	२२	४६	६८
२२	सीम.	२१	४८	६९
२३	खड्ग.	२०	५०	७०
२४	खोळ.	१९	५२	७१
२५	सार.	१८	५४	७२
२६	सेल.	१७	५६	७३
२७	शल.	१६	५८	७४
२८	सिपर.	१५	६०	७५
२९	परिघ.	१४	६२	७६
३०	पाश.	१३	६४	७७
३१	परस.	१२	६६	७८
३२	चक्र.	११	६८	७९
३३	गदा.	१०	७०	८०
३४	गुरज.	९	७२	८१
३५	गोफन.	८	७४	८२
३६	गुपती.	७	७६	८३
३७	यमदाढ.	६	७८	८४
३८	तोमर	५	८०	८५
३९	तोप	४	८२	८६
४०	तुपक.	३	८४	८७
४१	शक्ति.	२	८६	८८

४२	सैंफ.	१	८८.	८९.
४३	सांग.	०	९०	९०

३ रायवस्तु.

प्र. ६+२+३, ३+२+५=२१
द्वि. ६+२+३, ३+२+५=२१
तृ. ६+२+३, ३+२+५=२१
च. ६+२+३, ३+२+५=२१
= ८४

पृ. २६ अं. ७१ प्लवंगमनी चाल

१,५,९,१३,१७मात्राए ताल.

छ पर कला बे करी, उपर त्रण कल करो;
ते पछी त्रण बे पांच, विगतनी कुल धरो;.
रायवस्तूनां चरण, प्लवंगम चालनां;
शिव दश यतिनां थाय, प्लवंगम तालनां. १८९

आ वस्तूमां १२ लघु राखवानी आवश्यकता होतां प्रथम रूपमां १२ लघु अने ३६ गुरु थइ ४८ वर्ण थायछे, तेनुं बिम्ब नीचे प्रमाणे.—

१	SSS	S	IS	IS	S	ISS
२	SSS	S	IS	IS	S	ISS
३	SSS	S	IS	IS	S	ISS
४	SSS	S	IS	IS	S	ISS

प्रथम रूपना ३६ गुरुमांथी अकेक गुरु घटाडी बबे लघु वधारता कुल ८४ लघुनुं छेल्लुं रूप थशे. ते मुद्दांत तेना ३७ भेद

नीचे प्रमाणे थायछे:-

अंक.	भेदनाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण
१	गिरि.	३६	१२	४८
२	तरु.	३५	१४	४९
३	नद.	३४	१६	५०
४	नर.	३३	१८	५१
५	नग.	३२	२०	५२
६	नाग.	३१	२२	५३
७	नीर.	३०	२४	५४
८	नार.	२९	२६	५५
९	निरं.	२८	२८	५६
१०	नून.	२७	३०	५७
११	नेम.	२६	३२	५८
१२	नैन.	२५	३४	५९
१३	नोक.	२४	३६	६०
१४	नौल.	२३	३८	६१
१५	नन्द.	२२	४०	६२
१६	नाम.	२१	४२	६३
१७	हर.	२०	४४	६४
१८	हार.	१९	४६	६५
१९	हिरण्य.	१८	४८	६६
२०	हीर.	१७	५०	६७
२१	हुल्लम.	१६	५२	६८
२२	हुक.	१५	५४	६९
२३	हेम.	१४	५६	७०

२४	हीम.	१३	५८	७१
२५	हीन.	१२	६०	७२
२६	हंस.	११	६२	७३
२७	हांसि.	१०	६४	७४
२८	कपिल.	९	६६	७५
२९	काम.	८	६८	७६
३०	किरण.	७	७०	७७
३१	कीर.	६	७२	७८
३२	कुशल.	५	७४	७९
३३	कूर.	४	७६	८०
३४	केर.	३	७८	८१
३५	कैर.	२	८०	८२
३६	कोक.	१	८२	८३
३७	कौम(मु?)शी.	०	८४	८४

४ मोहनवस्तु.

प्रथम. ६+२, ६+२=१६
द्वितीय. ६+२, ६+२=१६
तृतीय. ६+२, ६+२=१६
चतुर्थ. ६+२, ६+२=१६
(चरणाकुलनी चाल पृष्ट १६ अंक ४९.)

६४

१,५,९,१३, मात्राए ताल.

छ कल उपर बे, कल यति त्यां धर,
आठ कला ए, रीते बळी कर;
चरणाकुलनी, चाल चलावो,
मोहनवस्तु, एम बनावो. १९०

मोहनवस्तूमां कोइ लघुनी आवश्यकता नथी, तेथी ३२ गुरुना प्रथम रूपनुं बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछेः—

१	ऽऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ
२	ऽऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ
३	ऽऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ
४	ऽऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ

उपर प्रमाणे ३२ गुरुमांथी अकेको गुरु घटाडतां, अने तेने बदले बबे लघु वधारतां सर्व (६४) लघुनुं रूप थता सुधी तेना ३३ भेद नीचे प्रमाणे थायछेः—

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	घट.	३२	०	३२
२	पट.	३१	२	३३
३	दल.	३०	४	३४
४	फल.	२९	६	३५
५	फूल.	२८	८	३६
६	मूर.	२७	१०	३७
७	सत.	२६	१२	३८
८	रज.	२५	१४	३९
९	तम.	२४	१६	४०
१०	तेज.	२३	१८	४१
११	तरन.	२२	२०	४२
१२	नूर.	२१	२२	४३
१३	तन.	२०	२४	४४

१४	मन.	१९	२६	४५
१५	भन.	१८	२८	४६
१६	घन.	१७	३०	४७
१७	मोर.	१६	३२	४८
१८	नाग.	१५	३४	४९
१९	नग.	१४	३६	५०
२०	वन.	१३	३८	५१
२१	जन.	१२	४०	५२
२२	तर.	११	४२	५३
२३	पिक.	१०	४४	५४
२४	सारस.	९	४६	५५
२५	शुक.	८	४८	५६
२६	रस.	७	५०	५७
२७	वल	६	५२	५८
२८	वल.	५	५४	५९
२९	पद्म.	४	५६	६०
३०	पव.	३	५८	६१
३१	पावन.	२	६०	६२
३२	सरस.	१	६२	६३
३३	सरभ.	०	६४	६४

(५) मंगलवस्तु

प्रथम. ६+२+३, ६+२+३=२२
द्वितीय ६+२+३, ६+२+३=२२
तृतीय. ६+२+३, ६+२+३=२२
चतुर्थ ६+२+३, ६+२+३=२२
१,७ मात्राए ताल. ८८

छ बे त्रण धरायछे, छ बे त्रण करायछे;
शिव कळा यति करी, बावीशे रखायछे;
एला सम चालथी, चार चरण थायछे;
मंगलवस्तु भली, एम तो रचायछे. १९१

मंगलवस्तुमां आठ लघु राखवानी आवश्यकता होतां बाकी ४० गुरुनुं आदि बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछे:—

१	SSS	S	IS	SSS	S	IS
२	SSS	S	IS	SSS	S	IS
३	SSS	S	IS	SSS	S	IS
४	SSS	S	IS	SSS	S	IS

४० गुरुमांथी अकेको घटाडतां अने तेनी वत्रे लघु मात्रा वधारतां ८८ लघु वर्ण थता सुधी तेनां ४१ रूप थायछे; तेनां नामो गणप्रस्तारप्रकाशमां आप्यां नथी. तेथी अमे मंगलगृहनां नामो पडी शके तेवां पाडी नवां कल्प्या छे.—

मंगलवस्तुना ४१ भेद

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	तक.	४०	८	४८
	ऋणातक.	३९	१०	४९
	खोल्मुक.	३८	१२	५०
	अंगारक.	३७	१४	५१
	गगनोल्मुक.	३६	१६	५२
	रक्तांग.	३५	१८	५३
	लोहितांग.	३४	२०	५४

८	कुज.	३३	२२	५५
९	भूमिज.	३२	२४	५६
१०	गोत्रांगज.	३१	२६	५७
११	रसांगज.	३०	२८	५८
१२	अवनिज.	२९	३०	५९
१३	धरात्मज.	२८	३२	६०
१४	क्ष्मात्मज.	२७	३४	६१
१५	शिवघर्मज.	२६	३६	६२
१६	वसुधातनुज.	२५	३८	६३
१७	रक्तवर्ण.	२४	४०	६४
१८	रक्त.	२३	४२	६५
१९	भूसुत.	२२	४४	६६
२०	लोहित.	२१	४६	६७
२१	क्षितिसुत.	२०	४८	६८
२२	धरासुत.	१९	५०	६९
२३	महीसुत.	१८	५२	७०
२४	नवदीधिति.	१७	५४	७१
२५	भूमिपुत्र.	१६	५६	७२
२६	धरापुत्र.	१५	५८	७३
२७	भूमिनंदन.	१४	६०	७४
२८	पिंगललोचन.	१३	६२	७५
२९	धरासूनु.	१२	६४	७६
३०	भौम.	११	६६.	७७
३१	महाकाय.	१०	६८	७८

३२	आवनेय.	९	७०	७९
३३	पृथ्वीतनय.	८	७२	८०
३४	आर.	७	७४	८१
३५	रुधिर.	६	७६	८२
३६	घटेश्वर.	५	७८	८३
३७	पिंगळ.	४	८०	८४
३८	मंगल.	३	८२	८५
३९	क्षितिबाल.	२	८४	८६
४०	आषाढभव.	१	८६	८७
४१	पिंगलाक्ष.	०	८८	८८

उपरनी पांच प्रकारनी वस्तू उपर छप्पय करवाने चार जातिना उल्लाल नीचे प्रमाणे वधारवामां आवेछे.–

(१) रस. सर्व मात्रा ५६.
(२) रंग. ,, ,, ५६.
(३) काम. ,, ,, ६०.
(४) श्याम. ,, ,, ५२.

(१) रसउल्लाल. (मात्रा ५६)

प्रथम दल. २+६+२+३, २+३+५+३+२=२८
द्वितीय दल. २+६+२+३, २+३+५+३+२=२८
१, ५, ९, अने १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

बे पट वेमर त्रण धरो, बे अपापर शर त्रण बे करो;
रसउल्लाला दल रची, यति तेर अंते तियिपर धरो. १९२

आमां आठ लघु आणवानी आवश्यकता छे, तेथी तेटला

लघु राखतां बाकी २४ गुरु आववाथी एना आदि रूपनुं बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछेः—

S	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S
S	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S

२४ गुरुमांथी अंकेको गुरु घटाडी बेबे लघु वधारवाथी तेना २५भेद नीचे प्रमाणे थतां छेल्लो भेद ९६लघुनो थायछे—

क्रम.	नाम.		गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	मीन रसउल्लाल.		२४	८	३२
२	वाराह.	,,	२३	१०	३३
३	कमठ.	,,	२२	१२	३४
४	नरहरि.	,,	२१	१४	३५
५	बलि.	,,	२०	१६	३६
६	वामन.	,,	१९	१८	३७
७	हंस.	,,	१८	२०	३८
८	ऋषभ.	,,	१७	२२	३९
९	हयग्रीव.	,,	१६	२४	४०
१०	पृथु.	,,	१५	२६	४१
११	हरि.	,,	१४	२८	४२
१२	पर्शुधर.	,,	१३	३०	४३
१३	राम.	,,	१२	३२	४४
१४	कृष्ण.	,,	११	३४	४५
१५	कल्कि.	,,	१०	३६	४६

१६	व्यास रसउल्लाल.	९	३८	४७
१७	मनु. ,,	८	४०	४८
१८	दत्त. ,,	७	४२	४९
१९	कपिल. ,,	६	४४	५०
२०	सनकादिक. ,,	५	४६	५१
२१	बौद्ध. ,,	४	४८	५२
२२	जगदीश. ,,	३	५०	५३
२३	धन्वन्तर. ,,	२	५२	५४
२४	नारायण. ,,	१	५४	५५
२५	ऋषभदेव. ,,	०	५६	५६

ऋषभ नाम मूळ ग्रंथमाज तेवडुं राख्युं छे एटले अमे रेहेवा दीधुं छे पण ते भूल छे, माटे २५मे अंक अमे ऋषभदेव राख्यु छे.

(२) रंगउल्लाल. (मात्रा ५६.)

प्र० द० २+२+५+२+२, २+६+२+३=२८

द्वि० द० २+२+५+२+२, २+६+२+३=२८

विषम पदमां ३,७,११ अने सममां १,५,९मात्राए ताल.

बे त्रण शर त्रणपर बे कला, बे पट बे त्रण आणजो;

तिथि तेरतणा यतिनो तमे, रंगउल्लालो जाणजो. १९

रसउल्लाल प्रमाणे ५६ मात्रानी आ जाति थायछे, तेथी ते आदि बिम्ब अने तेना भेद पण एज प्रमाणे थायछे माटे आ फरीने जणाववानी अगत्य नथी.

(३) कामउल्लाल. (मात्रा ६०.)

प्रथम दल. २+२+६+२+२, २+३+५+३+२=३.

द्वितीय दल. २+२+६+२+२, २+२+५+२+२=३०.
२, ७, ११ मात्राए ताल.

बे बे पट बे त्रण बे त्रणे, कल पांच वळी त्रण बे करो;
विधि विधिपर यति धरि त्रीश कला, कुल कामउल्लाला दल धरो. १९४

उपर प्रमाणेनी रचनाथी एमां आठ लघु अवश्य आववा जोइये ते राखतां बाकी २६ गुरु आवे, तेनुं आदि बिम्ब नीचे प्रमाणे थाय छेः—

प्रथम दल.	S S SSS S IS S IS ISS IS S
द्वितीय दल.	S S SSS S IS S IS ISS IS S

ए प्रमाणेना २६ गुरुमांथी अकेको गुरु घटाडतां अने बबे लघु वधारतां नीचे प्रमाणे कुल २७ भेद थायछे अने छेल्ला रूपमां ६० लघु आवेछेः—

क्रम.	नाम.		गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	मीन कामउल्लाल.		२६	८	३४
२	वराह.	,,	२५	१०	३५
३	कमठ.	,,	२४	१२	३६
४	नरहरि.	,,	२३	१४	३७
५	वलि.	,,	२२	१६	३८
६	वामन.	,,	२१	१८	३९
७	हंस.	,,	२०	२०	४०
८	ऋषभ.	,,	१९	२२	४१
९	हयग्रीव.	,,	१८	२४	४२

१०	पृथु कामउल्लास.		१७	२६	४३
११	हरि.	,,	१६	२८	४४
१२	परशुधर.	,,	१५	३०	४५
१३	राम.	,,	१४	३२	४६
१४	कृष्ण.	,,	१३	३४	४७
१५	कल्कि.	,,	१२	३६	४८
१६	व्यास.	,,	११	३८	४९
१७	मनु.	,,	१०	४०	५०
१८	दत्त.	,,	९	४२	५१
१९	कपिल.	,,	८	४४	५२
२०	सनकादिक.	,,	७	४६	५३
२१	बौद्ध.	,,	६	४८	५४
२२	जगदीश.	,,	५	५०	५५
२३	धन्वंतर.	,,	४	५२	५६
२४	नारायण.	,,	३	५४	५७
२५	कामदेव.	,,	२	५६	५८
२६	पुरुषोत्तम.	,,	१	५८	५९
२७	शांति.	,,	०	६०	६०

(४) श्यामउल्लास. (मात्रा ४२.)

प्रथम दल. ६+२+२+२, +२+२+२+२+२=२६;

द्वितीय दल. ६+२+२+२, +२+२+२+२+२=२६;

१, २, ७, पादान्त, गण.

पड बे त्रण पर बे कला, त्रण शर त्रण बे थायछे,
तेरे यति प्रति दल विषे, श्यामउछालामांय छे. १९५

एमां आठ लघु राखी बाकीना २२ गुरुनुं आदि चक्र नी प्रमाणे थायछेः—

प्र. द.	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S
द्वि. द.	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S

बावीश गुरुमांथी अकेको घटाडी तेना लघु करतां ५२लघुनुं छेलुं रूप थतां, एना एकंदर २३ भेद नीचे प्रमाणे थायछे.

क्रम.	नाम.		गुरु.	लघु	वर्ण
१	मीन श्यामउछाल.		२२	८	३०
२	वराह:	,,	२१	१०	३१
३	कमठ.	,,	२०	१२	३२
४	नरहरि.	,,	१९	१४	३३
५	बलि.	,,	१८	१६	३४
६	वामन	,,	१७	१८	३५
७	हंस.	,,	१६	२०	३६
८	ऋषभ.	,,	१५	२२	३७
९	हयग्रीव.	,,	१४	२४	३८
१०	पृथु.	,,	१३	२६	३९
११	हरि.	,,	१२	२८	४०
१२	पर्शुरर.	,,	११	३०	४१
१३	राम.	,,	१०	३२	४२
१४	कृष्ण.	,,	९	३४	४३

१५	कल्कि श्यामउल्लाल.		८	३६	४४
१६	व्यास.	,,	७	३८	४५
१७	मनु.	,,	६	४०	४६
१८	दत्त.	,,	५	४२	४७
१९.	कपिल.	,,	४	४४	४८
२०	सनकादिक.	,,	३.	४६	४९
२१	बौद्ध.	,,	२	४८	५०
२२	जगदीश.	,,	१	५०	५१
२३	धन्वंतर.	,,	०	५२	५२

रसउल्लाल २५,रंगउल्लाल २५,कामउल्लाल २७ अने श्यामउल्लाल २३ भेद आ सर्वे भेदना नाम एनाएज रासनामा आप्या छे, माटे तेनी ओळख रेहेवा जे प्रकारना उल्लालना नाम ते होय ते प्रकारनु नाम ते भेदना नाम साथे उमेरवु,जेमके मीन रसउल्लाल,मीन रंगउल्लाल,मीन कामउल्लाल,मीन श्यामउल्लाल

उपरना चार उल्लाल उपरात पाचमो हंस नामनो दुहानो भेद पाच प्रकारनी रोलावस्तु उपर चंडावीने छप्पय करवामा आवेछे, आ हंसनु माप अमारा भ्रमर नामना दुहाना पेहेला भेद प्रमाणे छे. (जुवो पृष्ट ७७ मे भेद १ लो)

(५) हंस दोहरो.

२२गुरु+४लघु=२६ वर्ण, तेनी ४८मात्रा. १,५,९मात्राए ताल.

हंसा दोहा माह नो, गुरु बावी' जाण,
दोहा नी'मो नांखिने, चारे मेरो आण. १=३ १९९

दुहाना २३ भेद पृष्ट ७७ मे आप्या छे, तेमा पेहेलो भ्रमर-हंस जणाव्यो छे, तेना २२ गुरु अने ४ लघु थई २६ वर्ण थायछे, वळी गणप्रस्तारप्रकाशमा दुहाना २१ भेद जणाव्या छे, तेनी टीप पृ. ७८ मे आपीछे ते जुवो.

उपर प्रमाणे पांच प्रकारनी वस्तू उपर हंस सुद्धांत पांच प्रकारनी उल्लाला जाति चडावतां तेना मिश्रणथी छंप्पय (५×५)=२५ भेद विशेषमां नीचे प्रमाणे थायछे:-

क्रम	मिश्रण भेद	कयी वस्तु.	कळा	उल्लाल जातिनो कयो भेद	कळा	सर्वे मात्रा.
१	रोलाहंस	रोला.	९६	हंस	४८	१४४
२	रोलारस.	रोला.	९६	रस.	५६	१५२
३	रोलारंग.	रोला.	९६	रंग.	५६	१५२
४	रोलाकाम	रोला.	९६	काम.	६०	१५६
५	रोलाश्याम.	रोला.	९६	श्याम.	५२	१४८
६	आनंदहंस.	आनंद.	९०	हंस.	४८	१३८
७	आनंदरस.	आनंद.	९०	रस.	५६	१४६
८	आनंदरंग.	आनंद.	९०	रंग.	५६	१४६
९	आनंदकाम.	आनंद	९०	काम.	६०	१५०
१०	आनंदश्याम	आनंद	९०	श्याम.	५२	१४२
११	राजहंस	राज	८४	हंस.	४८	१३२
१२	राजरस.	राज.	८४	रस.	५६	१४०
१३	राजरंग	राज	८४	रंग.	५६	१४०
१४	राजकाम.	राज.	८४	काम	६०	१४४
१५	राजश्याम	राज	८४	श्याम	५२	१३६
१६	मोहनहंस.	मोहन.	६४	हंस.	४८	११२
१७	मोहनरस.	मोहन.	६४	रस	५६	१२०
१८	मोहनरंग.	मोहन.	६४	रंग.	५६	१२०
१९	मोहनकाम.	मोहन.	६४	काम.	६०	१२४
२०	मोहनश्याम.	मोहन.	६४	श्याम.	५२	११६
२१	मंगलहंस.	मंगल	८८	हंस	४८	१३६
२२	मंगलरस.	मंगल.	८८	रस.	५६	१४४
२३	मंगलरंग.	मंगल	८८	रंग.	५६	१४४
२४	मंगलकाम	मंगल	८८	काम	६०	१४८
२५	मंगलश्याम.	मंगल	८८	श्याम	५२	१४०

पिंगळ छंदोग्रंथमां, नीचे प्रमाणेना त्रण छप्पय उपरना करतां भिन्न होतां, अहिं दाखल कर्या छे. छप्पयनी सामान्य मात्रा १५२ थायछे, ते करतां आ त्रण प्रकारना छप्पयमां मात्रानो पण फेर छे.

१९ रयण छप्पय. मात्रा १२०

सोळ मात्रा, तेमां चार गुरु नें ८ लघु–ते आठमां अन्ते त्रण लघु एवां चार चरण उपर एक उल्लाळो.

१ प्रति पादे कल सोळ सोळ कर,
२ तेमां चार गुरु कर, कविवर!
३ आठ लघुमां §चरमे त्रण †रव, §अते †१ लघु
४ एक उल्लाळो ते पर कवि! कव,
५ कल एम बधी मळी सो अने, उपर वीश गणी आणजे;
६ ते रयण छपयनी जाति छे, पिंगळमांह प्रमाणजे. १९७

मात्रा १५२नो रयण नामनो एक भेद थायछे(पृ० १५० अ० ६३ पृ० १५६ अं० ४९) पण आमां मात्रा १२० होता अहिं दाखल कर्यो छे.

२० रासाउल्लाल छप्पय. कुल मात्रा. १४०

(१) १२+९=२१	} रासा	
(२) १२+९=२१	पृ. २६ अं. ७३	
(३) १२+९=२१		
(४) १२+९=२१		
(५) ४+४+४+३, ६+४+३=२८	} उल्लाल.	
(६) ४+४+४+३, ६+४+३=२८	पृ. ८० अं. १५	

रचजो एकज रासो, कल एकवीसे;
बारे अने नव कले, विश्राम दीसे;
उल्लाल एक धरजो, ठिक माप लावी;
तिथि ने तेरे विरति, सारी दिपावी.

कुल कल रचनो कवि भावथी, सो ने चालिश तो मळी;
रासाउल्लाल ज छप्पय ए, पटपद जातिमां भळी. १९८

२१ गयवंध छप्पय. मात्रा १४६.

(१) १३+१०=२३
(२) १३+१०=२३
(३) १४+८ =२२
(४) १४+८ =२२
(५) ४+४+४+२, ६+४+२=२८
(६) ४+४+४+२, ६+४+२=२८

त्रेवीश कुल कल प्रथममां, बीजे पण एवी;
बाविश कल त्रीजे अने, चोथे गणी लेवी;
ते पर आणो उल्लालो, पट पद करवा;
सो ने छेतालीश करो, कुल कल भरवा;
ए जाति बनेछे शोभनी, त्रण जेनामां भाति छे;
गयवंध नामनी मागवी, पटपदकेरी जाति छे. १९९

२२ कुंडलिनी, कुंडलिणी, (आर्याकुंडलिनी) मात्रा १५३

१. ४+४+४=१२, ४+४+४(वि.के ज.)+४+२=३०) एक
२. ४+४+४=१२, ४+४+१+४+२=२७) आर्या
३. {४+४+२, १+४+४+४=२४ / आर्यानो छेला चरणनो ऊथलो.
४. ४+४+२,१+४+४+४ =२४ } एक रोला.
५. ४+४+२,१+४+४+४ =२४
६. ४+४+२,१+४+४+४ =२४

१. धरीने प्रथमज आर्या, अंत पदनी कुंडली फरी करजो;
२. तेम थनां रोळापद, सरखुं आवे त्यमज धरजो;

३. सरखु आवे त्यमज, तमे पछी रोला रचजो,
४. तेमा कल चोवीश, नियमसर रचना मचजो,
५. आदि रचेला बोल, उचारो अन्ते फरीने,
६. रचजो कुंडलिनीज, प्रथममा आर्या धरीने २००

छंदोलनामा कुडलिना नाम कुडलियानु आप्यु छ अने तनु बाकु नाम सारा छ, एम वधु छे ते ग्राह्य नथी

आर्या प्रकरणमां मुख्य पाच भेद गण्या छे, तेमाथी आर्या उपर रोलाजाति आणवाथी उपर बनाव्या प्रमाणे आर्या कुंडलिनी थइ. एज रीते नीचेना कोष्टकमा बताव्या प्रमाणे वधी मळीने पाच प्रकारनी कुंडलिनी थायछे —

क्रम	नाम	आर्या प्रकार	मात्रा	जाति	मात्रा	कुल मात्रा
१	आर्या कुडलिनी	आर्या	५७	रोला	९६	१५३
२	गाति कुडलिना	गाति	६०	रोला	९६	१५६
३	उपगाति कुडलिना	उपगीति	५४	रोला	९६	१५०
४	उद्गाति कुडलिनी	उद्गाति	५७	रोला	९६	१५३
५	आर्यागीति कुडलिना	आर्यागाति	६४	रोला	९६	१६०

उपरना कोष्टकने अनुसरीने प्रचूर्ण गीति जेटला प्रकारनी पृष्ट १२३ मेथी जणावी छे, ते उपर रोला चडाववाथी तेटला भेदना कुंडलिनी थइ शकेछे

गणप्रस्तारप्रकाश नामना ग्रथमा श्रीमान् रामदासजिये उपर पाच प्रकारना मुख्य भेद जणाव्या छे तेने बदले सिंहिनी एर नाम आपीने ते प्रकार जणावेछे पण ए मुख्य भेद नथी,

माटे अमे तेनो समावेश प्रचूर्ण गीतिमां पृष्ट १२६, अंक. १६० मां कर्यो छे, तेना उपर रोला चडाववाथी सिहिनी (वल्लरी-वंल्गुगीति) कुंडलिनी थइ शकेछे.

तेज प्रमाणे ललितागीति-गाहिनी उपर रोला चडाववाथी गाहिनी कुंडलिनी थायछे, तेमां प्रथम गाहिनीनां बे दल अने ते उपर रोलानां चार चरण चडाववांमां आवेछे. ए रीतिए एनुं आदि रूप रचवा गाहिनीना प्रथम दलमां छठ्ठे स्थाने जगण अने बीजा दलमां जगणने बदले विप्रगण लेइ ते उपर रोलानी ११ मी मात्रा लघु राखी बाकीनी सर्व गुरु राखतां तेनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे बनेछे:—

पाद.	१	२	३	४	५	६	७	८	लघु	गुरु	वर्ण	मात्रा.
१	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	२	१४	१६	३०
२	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	SS	४	१४	१८	३२
३	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
४	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
५	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
६	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
								कुल.	१४	७२	८६	१५८

उपरना कोठामां बतावेला प्रत्येक गुरु स्थाने अनुक्रमे बबे लघु मात्रा बदलावतां जतां छेवट अवश्यना गुरु राखतां तेनुं छेल्लुं रूप नीचे प्रमाणे बनेछे:—

पाद.	१	२	३	४	५	६	७	८	लघु.	गुरु	वर्ण.	मात्रा.
१	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	२६	२	२८	३०
२	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SS	२८	२	३०	३२
३	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III			२४	०	२४	२४
४	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III			२४	०	२४	२४
५	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III			२४	०	२४	२४
६	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III			२४	०	२४	२४
								कुल.	१५०	४	१५४	१५८

गीतिने छट्ठे स्थाने जगण अथवा विप्रगण लाववानो नियम होतां उपरना कोटकमां पेहेला पादमां जगण मूक्यो छे. अने बीजा पादमां विप्रगण राख्यो छे. ते मात्र भेद जणाववाने अर्थे छे. बन्ने स्थाने जगण के विप्रगण राखिये तोपण बाध नथी.

गाहिनीनी अन्ते गुरु आवेछे, तेथी बंने दलमां आठमे स्थाने गुरु राख्यो छे, अने बीजा दलमां बे मात्रा छेवटमां उमेरवानो नियम छे, ते मात्रा गुरु गणी छे. तेथी उपरना चक्रमां १५० लघु ४ गुरु थइ १५४ वर्ण अने तेनी १५८ मात्रा थायछे.

उपर आदि अने अन्तनां रूप जणाव्यां ते प्रमाणे अनुक्रमे एकथी ते ६९ सुधी रूप बनेछे, तेनो कोठो गणप्रस्तारप्रकाश उपरथी अमे नीचे आपिये छिये:—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	भद्रा.	७२	१४	८६
२	सुभद्रा.	७१	१६	८७

३	विभद्रा.	७०	१८	८८
४	जैता.	६९	२०	८९
५	विजैता.	६८	२२	९०
६	सुजैता.	६७	२४	९१
७	अजैता.	६६	२६	९२
८	प्रमथा.	६५	२८	९३
९	सुमथा.	६४	३०	९४
१०	सुगता.	६३	३२	९५
११	अगता.	६२	३४	९६
१२	भगता.	६१	३६	९७
१३	विभगता.	६०	३८	९८
१४	सुभगता.	५९	४०	९९
१५	अनन्ता.	५८	४२	१००
१६	विनन्ता.	५७	४४	१०१
१७	सुनन्ता.	५६	४६	१०२
१८	मंजुल.	५५	४८	१०३
१९	मनोहर.	५४	५०	१०४
२०	मनोरस.	५३	५२	१०५
२१	धीर.	५२	५४	१०६
२२	सुधीर.	५१	५६	१०७
२३	अधीर.	५०	५८	१०८
२४	विधीर.	४९	६०	१०९
२५	सुधा.	४८	६२	११०
२६	वसुधा.	४७	६४	१११
२७	प्रकृति.	४६	६६	११२
२८	विकृति.	४५	६८	११४

२९	सुकृति.	४४	७०	११४
३०	अकृति.	४३	७२	११५
३१	कारन.	४२	७४	११६
३२	करन.	४१	७६	११७
३३	अकरन.	४०	७८	११८
३४	विकरन.	३९	८०	११९
३५	सुकरन.	३८	८२	१२०
३६	परम.	३७	८४	१२१
३७	पवित्र.	३६	८६	१२२
३८	सुचित्र.	३५	८८	१२३
३९	विचित्र.	३४	९०	१२४
४०	चरित्र.	३३	९२	१२५
४१	अचित्र.	३२	९४	१२६
४२	मित्र.	३१	९६	१२७
४३	अमित्र.	३०	९८	१२८
४४	ईश्वर.	२९	१००	१२९
४५	अक्रै.	२८	१०२	१३०
४६	अचल.	२७	१०४	१३१
४७	अलख.	२६	१०६	१३२
४८	अखिल.	२५	१०८	१३३
४९	अच्युत.	२४	११०	१३४
५०	अनंत.	२३	११२	१३५
५१	अद्वैत.	२२	११४	१३६
५२	अशोप.	२१	११६	१३७
५३	अनल.	२०	११८	१३८
५४	अमर.	१९	१२०	१३९

५५	पूरन.	१८	१२२	१४०
५६	पावन.	१७	१२४	१४१
५७	धरा.	१६	१२६	१४२
५८	पुरुष.	१५	१२८	१४३
५९	पारधी.	१४	१३०	१४४
६०	पुरषोत्तम.	१३	१३२	१४५
६१	पदमास्त.	१२	१३४	१४६
६२	प्रभु.	११	१३६	१४७
६३	विभु.	१०	१३८	१४८
६४	ब्रह्म.	९	१४०	१४९
६५	विरुन.	८	१४२	१५०
६६	विष्नु.	७	१४४	१५१
६७	बोध.	६	१४६	१५२
६८	वामन.	५	१४८	१५३
६९	बलि.	४	१५०	१५४

उपर जे नाम आप्यां छे ते बीजा कोइ पिंगळमां जोवामां आवतां नथी तेथी ग्रंथकर्त्ताए पोते-कल्पेलां जणायछे, एज प्रमाणे पांचे प्रकारनी आर्या जातिना जेटला भेद थायछे तथा अमे प्रचूर्ण गीति जणावी छे तेओना नियम उपर आधार राखीने प्रत्येकना उपरनी रीतिने अनुसरीने भेद करवा होय तो थइ शकेछे अने तेनां नाम आपणे जेवां पाडवां होय तेवा पडी शकेछे.

खरुं जोतां तो अमे पृष्ट. १२५मे गाहिनीना ६५,९३,६०,००० रूप थायछे एम जणाव्युं छे ते प्रमाणे पण भेद [illegible] शकेछे.

चूडाणा कुंडळिनी.

पृष्ट ८९ अंक ३२ चूडाणा अर्द्धसममां छे, ते दुहा उपर आर्या चडाववाथी थायछे एम लख्युं छे. दुहामां तेना सर्व भेदनो समावेश थइ जायछे, अने आर्यामां तेना जेटला प्रकारना भेद थायछे तेनो पण समावेश थइ जायछे. तेम छतां गणप्रस्तारप्रकाशमां चूडाणाने बदले चूडामणि नाम आपी तेनी कुंडळी बनाववानो प्रकार जणाव्यो छे. पण चूडामणिनां चारे चरण गीतिना नियम प्रमाणेज थायछे. माटे अमे ते जातिने अलगी राखी चूडाणा उपर कुंडळी करवानी रीति उपरना ग्रंथ उपरथी जणाविये छिये.

दोहा, सोरठा (उपदोहा) अथवा **पंचा** उपर **गाहा** (आर्या), **विगाहा**, **उद्गीति**, **उग्गाहा** (गीति), **गाहू** (उपगीति), **सिंहिनी** अने **गाहिनी** चडाववाथी ३×६=१८ भेद चूडाणाना थायछे. अने तेमां दोहानी छेल्ली तूकनी कुंडळी गाहा आदिना प्रथम पादमां वाळवाथी तेना मिश्रणनी कुंडलिनीना १८ भेद थायछे, तेमां ओछामां ओछी १०० मात्रा अने वत्तामां वत्ती ११० मात्रा आवेछे.

पंचा जातिनी बनावट विषे नीचे प्रमाणे विवेचन करवामां आवेछेः—

२३ पंचा.

पूर्वार्द्ध ६+४+२; ६+२+गु+ल=२३

उत्तरार्द्ध ६+४+२; ६+२+गु+ल=२३

प्रथम त्रीजा पदमांहे, षट चोकल बे आण;

सममां षट बे तालनी, पंचा जाति जाण. २०१

एनुं पेहेलुं रूप नीचे प्रमाणे थायछेः—

SSS	SS	S	SSS	S	SI
SSS	SS	S	SSS	S	SI

एना प्रथम रूपमां २२ गुरु अने २ लघु मळीने २४ वर्ण थायछे, तेमां बीजा अने चोथा चरणमां ताल(SI)गुरु लघु लाववाना होतां बे गुरु अंतना रूपमां कायम रेहेवाथी एना नीचे प्रमाणे २१ भेद थायछेः—

क्रम.	नाम.	गुरू.	लघु.	वर्ण.
१	माला.	२२	२	२४
२	बाला.	२१	४	२५
३	वेनी.	२०	६	२६
४	ज्वाला.	१९	८	२७
५	योगी.	१८	१०	२८
६	गंगा.	१७	१२	२९
७	तारा.	१६	१४	३०
८	तरुणी.	१५	१६	३१
९	धरन.	१४	१८	३२
१०	शोभा.	१३	२०	३३
११	सिंधुर.	१२	२२	३४
१२	रंग.	११	२४	३५
१३	धरधर.	१०	२६	३६
१४	गौरी.	९	२८	३७
१५	गणपती.	८	३०	३८

१६	शंभु.	७	३२	३९
१७	धाता.	६	३४	४०
१८	काम.	५	३६	४१
१९	चुरी.	४	३८	४२
२०	चौसर.	३	४०	४३
२१	हार.	२	४२	४४

चूडाणा कुंडलिनीना १८ भेद थायछे एम उपर जणाववामां आव्युं छे ते भेदप्रदर्शक कोष्टक नीचे प्रमाणे छेः—

संख्या	चूडाणा कुंडलिनीनां भेद.	छन्द.	कळा	छन्द.	कळा	कुल
१	चूडाणा दोहा गाहा कुंडलिनी.	दोहा.	४८	गाहा.	५७	१०५
२	,, उपदोहा गाहा ,,	उपदोहा	४८	गाहा.	५७	१०५
३	,, पचा गाहा ,,	पचा	४६	गाहा.	५७	१०३
४	,, दोहा विगाहा ,,	दोहा	४८	विगाहा	५७	१०५
५	,, उपदोहा विगाहा ,,	उपदोहा	४८	विगाहा	५७	१०५
६	,, पचा विगाहा ,,	पचा	४६	विगाहा	५७	१०३
७	,, दोहा उगाहा ,,	दोहा	४८	उगाहा	६०	१०८
८	,, उपदोहा उगाहा ,,	उपदोहा	४८	उगाहा	६०	१०८
९	,, पंचा उगाहा ,,	पचा	४६	उगाहा	६०	१०६
१०	,, दोहा गाहू ,,	दोहा	४८	गाहू	५४	१०२
११	,, उपदोहा गाहू ,,	उपदोहा	४८	गाहू	५४	१०२
१२	,, पचा गाहू ,,	पचा	४६	गाहू	५४	१००
१३	,, दोहा सिंहिनी ,,	दोहा	४८	सिंहिनी	६२	११०
१४	,, उपदोहा सिंहिनी ,,	उपदोहा	४८	सिंहिनी	६२	११०
१५	,, पचा सिंहिनी ,,	पचा	४६	सिंहिनी	६२	१०८
१६	,, दोहा गाहिनी ,,	दोहा	४८	गाहिनी	६२	११०
१७	,, उपदोहा गाहिनी ,,	उपदोहा	४८	गाहिनी	६२	११०
१८	,, पंचा गाहिना ,,	पचा	४६	गाहिनी	६२	१०८

२४ चुडाणापंचाउपगीति(गाहू) कुंडलिनी. मात्रा १००

पंचा { ६+४+२, ६+२+गु+ल,=२२ मात्रा
पंचा { ६+४+२, ६+२+गु+ल,=२२ मात्रा
उपगीति { ४+४+४, ४+४+ल+४+गु,=२७ मात्रा
उपगीति { ४+४+४, ४+४+ल+४+गु,=२७ मात्रा

प्रथम त्रिना पद्मांहे, षट चोकल बे आण,
सममां षट बे ताले, पंचा जाति जाण;
पंचा जाति जाणो, ते पर उपगीति तो आणो,
चूडाणा कुंडल्निी, पंचाउपगीति कवि जाणो. २०२

चूडाणा पंचाउपगीति (गाहू) कुंडलिनीनुं प्रथम रूप.

पंचा	SSS	SS	S	SSS	S	SI		
	SSS	SS	S	SSS	S	SI		
गाहू	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S
	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S

४८ गुरु + ४ लघु =५२ वर्णनी मात्रा १००.

चूडाणापंचाउपगीति(गाहू)कुंडलिनीनुं अंत्य रूप.

पंचा	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
गाहू	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S

४ गुरु + ९२ लघु =९६ वर्णनी मात्रा १००.

उपरना बे चिन्ह उपरथी जणाशे के प्रथम रूपमां ४८ गुरु अने ४ लघुनी आवश्यकता छे. तेमांथी प्रत्येक गुरुने बदले बबे लघु वधारतां छेल्ला रूपमां ४ गुरु अने ९२ लघु थायछे, ए रीते एना ४५ भेद बनी शकेछे. अने तेनां जे नाम आपवां होय ते आपी शकायछेः—

२८ चूडाणादोहाउपगीति (गाहू) कुंडलिनी. मात्रा १०२.

दोहा. { ६+४+लग, ६+२+ऽ। =२४ } पृ.७९— अं.८
{ ६+४+लग, ६+२+ऽ। =२४ }

गाहू. { ४+४+४+४+४+लघु+४+गुरु=२७ } पृ.११५ ; अं.८८
{ ४+४+४+४+४+लघु+४+गुरु=२७ }

नियम ध्यानमां धरीं करी, रचो दोहरो एक,
ते पर उपगीति कविजन! धरीं, सुविवेकः
कविजन! करो विवेके, दोहा उपगीति ए नामे;
चूडाणाकुंडलिनी, आवे कवितातणे कामे. २०३

चूडाणादोहाउपगीति (गाहू) कुंडलिनीनुं प्रथम रूप.

दोहा	SSS	SS	IS	SSS	S	SI		
	SSS	SS	IS	SSS	S	SI		
गाहू	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S
	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S

४८ गुरु + ६ लघु =५४ वर्णनी मात्रा १०२.

चूडाणादोहाउपगीति (गाहू) कुंडलिनीनुं अंत्य रूप.

दोहा	IIIIII	IIII	IIII	IIIIII	II	SI		
	IIIIII	IIII	IIII	IIIIII	II	SI		
गाहू	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S

४ गुरु + ९४ लघु =९८ वर्णनी मात्रा १०२.

उपर प्रमाणे प्रथम रूपमां ४८ गुरु अने छ लघु आवेछे मांथी अकेको गुरु घटाडी, तेने बदले बबे लघु वधारतां, छेवट चार गुरु अने ९४ लघुनुं थायछे. अने तेना भेद ४९ बनेछे

२६ चूडाणापंचागाहा (आर्या) कुंडलिनी. मात्रा, १०३.

पंचा. { ६+४+२, ६+२+ S। =२३ } पृ. १८९
{ ६+४+२, ६+२+ S। =२३ } अं. २२

गाहा. { ४+४+४+४+४+जकेविप्र+४+२=३० } पृ. १००
{ ४+४+४+४+४+ लघु +४+२ =२७ } अं. ४९

पंचा एकज आणी, ते पर गाहा धार,
चूडाणाकुंडलिनी, एवी छे सुखकार;
एवी छे सुखकारी, पंचागाहा तेणे भले नामे;
कविजन कविता करवा, जोडेछे आपने कामे. २०४

चूडाणापंचागाहा (आर्या) कुंडलिनी प्रथम रुप.

पंचा.	SSS	SS	S	SSS	S	SI		
	SSS	SS	S	SSS	S	SI		
गाहा.	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S
जयुक्त.	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S

४९ गुरु+५ लघु=५४ वर्णनी मात्रा १०३.

चूडाणा पंचा गाहा (आर्या) कुंडलिनी अंत्य रुप.

पंचा.	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
गाहा.	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S
जयुक्त	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S

५ गुरु+९३ लघु=९८ वर्णनी मात्रा १०३

उपरना बिम्ब उपरथी जणाय छे के प्रथम रूपमां ४९ गुरु अने पांच लघु आवेछे, तेमाथी अकेको गुरु घटाडी बबे लघु वधारवा तेना कुल ४५ भेद थाय छे. अने छेवटनु रुप ५ गुरु अने ९३ लघुनु बनेछे.

२७ चूडाणा उपदोहा विगाहा (उद्गीति) कुंडलिनी मात्रा १०५

उपदोहा	६+२+३, ६+४+ल+ग,	=२४	पृ. ७९
(सोरठो)	६+२+३, ६+४+ल+ग,	=२४	अं. ९
विगाहा	४+४+४ +४+४+ल+४+ग	=२७	पृ. ११७
	४+४+४+४+४+ज के विप्र+४+ग=३०		अं. १०९

उपदोहो रच एक, जेने के'छे सोरठो,
तेपर राखी टेक, राख विगाहा शोभती;
राख विगाहारूडी, जे उद्गीतितणे नामे;
उपदोहाविगाहा, चूडाणाकुंडलिनी बने आमे. २०९

उपदोहो एज सोरठो छे, पण दोहाना सर्वे नियम उपदोहामां दाखल करिये तो नवमे लघु अने ते उपर गुरु करवामां बाध आवे छे, ते नियम रामदासे पाळ्यो नथी, ते नीचेना बिम्ब उपरथी जणाइ आवेछे, तेमां तेणे नवमी अने बारमी मात्राने स्थाने लघु राखेला जणायछे, पण ते बराबर नथी. ज्या त्यां बिम्ब गोठवती वेळाए विषम मात्राना कोठामां प्रथम लघु मात्रा मूकी पछीथी गुरु मूकेल छे, तेनुं कारण एज के प्रस्तार बतावबाने लघु प्रथम मूकवो जोइए.

चूडाणाउपदोहाविगाहा (उद्गीति) कुंडलिनी प्रथम रूप
मात्रा १०५.

उपदोहा.	SSS	S	IS	IS	S	SSS	S			४९ गुरु+७ लघु=५८ व
	SSS	S	IS	IS	S	SSS	S			
विगाहा.	SS	SS	-SS	SS	SS	I	SS	S		
	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	ज	

चूडाणाउपदोहाविगाहा (उद्गीति) कुंडलिनी अंत्य रूप. मात्रा १०५

उपदोहा	|||||	||	|||	|||	||	|||||	||	२ गुरु.+९९ लघु=१०२
विगाहा	||||	||||	||||	||||	||||			||||	S	नयुक्त
	||||	||||	||||	||||	||||	।S।	||||	S	

उपरना चिम्भ उपरथी जणायछे के प्रथम रूपमां ४९ गुरु अने ७ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी बेबे लघु वधारतां तेना कुल ४७ भेद थायछे; अने छेल्लुं रूप २ गुरु अने ९४ लघुनुं बनेछे.

२८ चूडाणापंचागीति (उग्गाहा) कुंडलिनी मात्रा १०६

पंचा { ६+४+२, ६+२+गल =२३ ; ६+४+२, ६+२+गल =२३ } पृ. १८९ अं. २३

उग्गाहा { ४+४+४+४+४+ज+४+ग=३० ; ४+४+४+४+४+ज+४+ग=३० } पृ. १११ अं. ७१

पंचा प्रथम रचीने, तेपर धर कविराय!
उग्गाहा तुं एवज, जे गीति के'वाय;
जे गीति के'वाती, ते धरवाथी बने सरस जाती;
पंचाउग्गाहानी, चूडाणाकुंडलिनि बहु भाती. २०६

चूडाणापंचाउग्गाहाकुंडलिनीनुं प्रथम रूप. मात्रा १०६

पंचा	SSS	SS	S	SSS	S	S।			गुरु ५०+६ लघु=५६ वर्ण.
	SSS	SS	S	SSS	S	S।			
उग्गाहा	SS	SS	SS	SS	SS	।S।	SS	S	
	SS	SS	SS	SS	SS	।S।	SS	S	

चुडाणा पंचा कुंडलिनीनुं अंत्य रूप.

पंचा.	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI			६गुरु+९४ लघु=१०० वर्ण,
	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI			
उग्गाहा.	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	

उपरना बिम्ब उपरथी जणायछे के, प्रथम रूपमां ५० गुरु अने ६ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी बबे लघु वधारतां तेना कुल भेद ४९ थायछे, अने छेलुं रूप ६ गुरु अने ९४ लघुनुं बनेछे.

२९ चूडाणापंचासिंहिनीकुंडलिनी. मात्रा १०८.

पंचा { ६+४+२+६+२+ ग ल. =२२ / ६+४+२+६+२+ ग ल. =२२ } पृ. १८९ अं. २२

सिंहिनी { ४+४+४, ४+४+ज के विप्र+४+४=३२ / ४+४+४, ४+४+ज के विप्र+४+२=३० } पृ. १२९ अं. १९०

प्रथमे पंचा आणी, तेपर सिंहिनी थाय;
वळरी गीति सिंहिनी, ए नामे के'वाय;
ए नामे के'वायज, चूडाणाकुंडलिनी बहु रीतिनी;
पंचा सिंहिनी शोभित, कविवर केरी अतिशय प्रीतिनी.२०७

चूडाणापंचासिंहिनीकुंडलिनीनुं प्रथम रूप. मात्रा १०८

पंचा.	SSS	SS	S	SSS	S	SI				५० गुरु+ ८ लघु =५८ वर्ण
	SSS	SS	S	SSS	S	SI				
सिंहिनी.	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	SS	ज.	
	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	विप्र	

चूडाणापंचामिहिनीकुंडलिनीनुं अंत्य रूप. मात्रा १०८

पंचा	IIIII	III	II	IIIII	II	SI	६ गुरु+९६ लघु=१०२ वर्ग		
	IIIII	III	II	IIIII	II	SI			
सिंहिनी	III	III	III	III	III	ISI	III	SS	ज.
	II	III	III	III	III	III	III	S	विप्र

उपरना बिम्ब उपरथी जणायछे के, प्रथम रूपमां ५० गुरु अने ८ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी, बचे लघु वधारता, तेना कुल ४५ भेद थायछे, अने छेलुं रूप ६ गुरु अने ९६ लघुनुं बनेछे.

३० चूडाणादोहागाहिनीकुंडलिनी. मात्रा ११०

दोहा $\left\{\begin{array}{l}\text{६+४ (जगण विना)+ल+२, ६+४(अंत्य गुरु वाळी)+ल.}\\ \text{६+४ (,,)+ल+२, ६+४(,,)+ल.}\end{array}\right.$

पृ ७५-अ ८

त्रिप्रयुक्त $\left\{\text{४+४+४,४+४+ विप्र(IIII) +४+S=३०}\right.$ पू. १४९

गाहिनी $\left\{\text{४+४+४,४+४+ विप्र(IIII) +४+४=३२}\right.$ अ. १२९

प्रथम स्थान पर रचकवि, दुहो सामटो आप;
तेपर ललिता गीति जे, गाहिनी नामे थाप;
गाहिनी नामे थापी, चूडाणाकुंडलिनी कही देजो;
तेने दोहागाहिनी, एवा नामथी कविवर! ठिकके हेजो. २०८

चूडाणादोहागाहिनीकुंडलिनी प्रथम रूप. मात्रा ११०

दोहा	SSS	SS	IS	SSS	S	SI	४९ गुरु+१२ लघु ६१ वर्ण.		
	SSS	SS	IS	SSS	S	SI			
गाहिनी	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	
	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	SS	

चूडाणादोहागाहिनी कुंडलिनी अंत्य रूप. मात्रा ११०

दोहा	IIIII	III	III	IIIII	II	SI		५ गुरु+१०० लघु १०५ वर्ण.
	IIIII	III	III	IIIII	II	SI		
गाहिनी	III	III	III	III	III	III III	S	
	III	III	III	III	III	III III	SS	

• उपरना बिम्ब उपरथी जणायछे के, प्रथम रूपमां ४९ गुरु अने १२ लघु आवेछे, तेमांथी अेकेको गुरु घटाडी, बबे लघु वधारतां, तेना कुल ४९ भेद थायछे, अने छेलुं रूप, ५ गुरु अने १०० लघुनुं बनेछे.

३१ चूडाणाउपदोहागीति (उग्गाहा) कुंडलिनी. मात्रा. १०८

उपदोहा { ६+२+गल (ताल), ६+४+ल+गु=२४ } पृ. ७९ अं–९
{ ६+२+गल (ताल), ६+४+ल+गु=२४ }

विप्रयुक्त उग्गाहा { ४+४+४+४+४+विप्र+४+S =३० } पृ. १२१ अं–७१
{ ४+४+४+४+४+विप्र+४+S =३० }

१०८

प्रथम रचो कविरायः उपदोहो के सोरठो;
तेपर पछीथी रचाय, उग्गाहा के गीति तो;
उग्गाहा के गीति, चूडाणाकुंडलिनो न करवानि;
उपदोहाउग्गाहा, एवुं नामज अति रुडुं धरवानि. २०९

चूडाणाउपदोहाउग्गाहाकुंडलिनी प्रथम रूप. मात्रा १०८

उपदोहा	SSS	S	IS	IS	S	SSS	S		४८ गुरु+१२ लघु=६० वर्ण.
	SSS	S	IS	IS	S	SSS	S		
उग्गाहा	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	
	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	

चूडाणाउपदोहाउग्गाहाकुंडलिनी अंत्य रूप. मात्रा १०८

उपदोहा	IIIII	II	III	III	II	IIII	II	२ गुरु+१०६ लघु १०६ वर्ण
	IIIII	II	III	III	II	IIII	II	
उग्गाहा	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	III	IIIII	S
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	III	IIIII	S

उपर प्रमाणे प्रथम रूपमां ४८ गुरु अने १२ लघु आवे छे. तेमांथी अेकेक गुरु घटाडी बबे लघु वधारतां, अंत्य रूपमां छेवटबे गुरु कायम रेहेवाना, एटले ४७ भेद थायछे, तेनुं कोष्टक गणप्रस्तार प्रकाशमांथी नीचे आपवामां आव्युं छे.

चूडाणा (चूडामणि) उपदोहा (उग्गाहा) कुंडलिनीना भेद.

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	माला.	४८	१२	६०
२	बाला	४७	१४	६१
३	बेनी.	४६	१६	६२
४	ज्वाला.	४५	१८	६३
५	गंगा-	४४	२०	६४
६	जोगी.	४३	२२	६५
७	तारा.	४२	२४	६६
८	तरनी.	४१	२६	६७
९	धरनी.	४०	२८	६८
१०	शोभा.	३९	३०	६९
११	सिंधुर.	३८	३२	७०
१२	सैंधव.	३७	३४	७१
१३	सारँग.	३६	३६	७२

१४	सरसी.	२९	३८	७३
१५	सुखदा.	३४	४०	७४
१६	गिरिधर.	३३	४२	७५
१७	गिरिवर.	३२	४४	७६
१८	गिरिजा.	३१	४६	७७
१९	गजमुख.	३०	४८	७८
२०	गोविंद.	२९	५०	७९
२१	शंभू.	२८	५२	८०
२२	शारद.	२७	५४	८१
२३	शशिभा.	२६	५६	८२
२४	सूरज.	२५	५८	८३
२५	शिवदा.	२४	६०	८४
२६	शुभदा.	२३	६२	८५
२७	धाता.	२२	६४	८६
२८	धैरज	२१	६६	८७
२९	धवला.	२०	६८	८८
३०	धनदा.	१९	७०	८९
३१	धात्रन.	१८	७२	९०
३२	धूवर.	१७	७४	९१
३३	धूसर.	१६	७६	९२
३४	धूपत.	१५	७८	९३
३५	धात्री.	१४	८०	९४
३६	माधन.	१३	८२	९५
३७	मोहन.	१२	८४	९६

३८	मंजुल.	११	८६	९७
३९	मोपद.	१०	८८	९८
४०	मथुरा.	९	९०	९९
४१	मांडव.	८	९२	१००
४२	नंदन.	७	९४	१०१
४३	नरहरि.	६	९६	१०२
४४	नारद.	५	९८	१०३
४५	नरपति.	४	१००	१०४
४६	नागपति.	३	१०२	१०५
४७	नाकपति.	२	१०४	१०६

३२ उल्लास. मात्रा १९२.

१. ४+४+४+२+गु=१६ ⎫ एक पादाकुलक (ताल
२. ४+४+४+२+गु=१६ ⎬ तेज प्रमाणे) जुओ
३. ४+४+४+२+गु=१६ ⎬ पृष्ट १८ अंक ५०.
४. ४+४+४+२+गु=१६ ⎭

५. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२ ⎫ एक त्रिभंगी,
६. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२ ⎬ ताल तेज प्रमाणे
७. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२ ⎬ जुओ पृष्ट ५२
८. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२ ⎭ अंक १३४

त्रण चोकलिया पर बे कल ने,
तेपर छेल्ले गुरु ठिक धरने;
एवां चार चरण कवि! करजे,
ते पर एक त्रिभंगी धरजे;

कवि! त्रिभंगी धरजे, ए पद करजे, पे'ले टरजे, उल्लाषी.
वसु चोर लिया कर, दस वसु वसु पर, ने पट पर धर, गति त्यागी;

गुरु तेमां करवो, छेले धरवो, छंद उचरवो, लोभावी,
उल्लास वखाणुं, सो ने वाणुं, कुल कळ आणुं, शोभावी. ३१०

विषमपद जाति.

गणप्रस्तारप्रकाशमां विषमपद छंद(जाति)नी रचना एम जणावी छे के, चोवीश मात्राथी प्रारंभ करीने इच्छापूर्वक मात्राना आवा छंद बनी शके छे. तेमां जेटली मात्राना छंद रचवा होय तेना अर्द्ध विरामनी मात्रानो एक टेक बांधवो, अने पांच चरणनो एक छंद पूरो गणी अन्ते पाछो तेनो तेज टेक मूकवो. तथा पांचे चरणना अथवा तेम न बनी शके तो बब्बे चरणना अनुप्रास टेकना अनुप्रास साथे मेळववाः—

३३ चोवीश मात्रानी विषमपद जाति.

(वर्णु करीने) १४+१०=२४ मात्राना पाच चरण.
४+२+४+४=१४ मात्रानो टेक १, ९, ८, १२मात्राए ताल,
२+४+२+४=१४ मात्रा तेमां १, ४, ८, ११मात्राए ताल.
अने २+४+२=१० मात्रा तेमा १, ४, ८, मात्राए ताल.
२+४+२+४, २+४+२=२४ मात्राना पांच चरण.

प्रथमे टेक एकज आण—
चौद कलनुं थाय छे ठिक, ते तणुंज प्रमाण;
चौद ने दश एम एमां, विरति जुदी जाण;
त्यार पछि चोवीश कलनां, चरण रच तुं वाण;
प्रास पांचे आण मळता, जाण पण न दवाण;
विषम पदनो छंद चोवीश, कलतणो सुत खाण.
प्रथमे टेक एकज आण. ३११

३४ छव्वीश मात्रानी विषमपद जाति.

चौद मात्रानो टेक.

१६+१०ना यतिथी छव्वीश मात्रानां पांच चरणों करवां.

४+३+४+३ =१४मात्रानी टेक. १, ५, ८, १२ मात्राए ताल.
२+३+४+३+४=१६ मात्रा,तेमां ३, ६, १० १३ मात्राए ताल.
३+४+३ =१० मात्रा तेमां १, ४, ८ मात्राए ताल.
२+३+४+३+४, ३+४+३=२६ मात्रा, एवां पांच चरण.

टेके चौद कल वर्यो थाय,—
कल सोळ ने दश विरति वाळ्यां, पाद पांच रचाय;
कुल कला छव्वीश थाय चरणे, एम रचू कविराय!
त्रण पछी त्रणने चार चडता, ताल क्रमथी अणाय;
रचि पांच तुक ए रीतिथी पण, टेक पछिथी गणाय;
कल छव्वीशनो विषमपद ए, छंद कविवर गाय.
टेके चौद कल वर्यो थाय. २१२

३५ सत्तावीश मात्रानी विषमपद जाति.

४+३+४+३=१४ मात्रानो टेक, तेमां १,५,८,१२ मात्राए ताल.

(४+४+४+४=)१६+(४+४+३=)११=२७ एवां पांच चरण, तेमां अनुक्रमे १,५,९,१३ अने १,५,९ मात्राए ताल.

दशने चार कलनो टेक,—

सोळ दिशे धरि विरति चरणे, सत्तावीश कल नेक;
एक शरे नव तेरे ताळो, एक शरे नव टेक;
सत्तावीश विषम पद छंद, एम विवेक भणाय;

आवी रचना रचवामांहे, जो कवि धरिने टेक;
गाय प्रभुना गुण मन राखी, पद ते पामे एक.
दशने चार कलनो टेक. २१३

३६. अठ्ठावीश मात्रानी विषमपद जाति.

३+४+३+४=१४ मात्रानो टेक. तेमां १,४,८,११ मात्राए ताल.
३+४+३+४,३+४+३+४=२८ मात्रा. एवां पांच पद.
१४, १४ मात्राए यति. प्रति यतिमां १, ४, ८, ११ मात्राए ताल.

टेकमां कल चौद आणो,- टेक.
त्रण अने कल चार लावी, त्रण अने कल चार जाणो,
एक चारे आठ रुद्रे, एम ताले तो प्रमाणो;
टेकनी पछी पांच पूरां, पाद आणे प्रविण शाणो,
वीशनी पर आठ कलनी, विषम जाति तो वखाणो;
चतुर! ए तो पारखी ल्यो, जेम चरुमां एक दाणो.
टेकमां कल चौद आणो. २१४

३७ एकत्रीश मात्रानी विषमपद जाति.

४+४+४+३=१५ मात्रानो टेक, तेमां १,५,९,१३ मात्राए ताल.
(४+४+४+४)=१६, +(४+४+४+३=)१५=३१ मात्रा, एवां पांच चरण तेमां ताल टेक प्रमाणे.

(क्यांक बे चोकलनी अष्ट कलने बदले ३+५ नी अष्टकल ताल तूटे नहि एम आवे तो पण नभे.)

पंदर कलनो टेकज थाय.—
चार चतुर ने चार पछी त्रण, वा त्रण पर शर सात रखाय;
सोळ कलाना चतुर डगण र्च्यो, ते पर पंदर एम धराय;
एक पछी चचारे चडता, कवितामांहे ताल रचाय;

तो सारी ए विषम कविता, एकत्रिश कलतणी गणाय;
एमां हरिना गुण गवातां, अन्त समयमां थाशे सा'य. †
पंदर कलनो टेकन थाय. २१५

† आनो राग एकत्रीशा सवैया (पृ.५० अ.१२६) ने मळतो छे.

प्रचूर्ण मात्रामेळजाति

मात्रासमक.

आ सोळ सोळ मात्राना पदनी जाति छे, तेमां भिन्न भिन्न लक्षण आवेछे, तेमज, सम मात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे न भेळववा खास नियम छे.

१ अचलधृति. (छंदःशास्त्र प्रमाणे गीत्यार्या.)

१, २, ३, ४ पादमां ८+८ एवा १६ लघु=१६ मात्रा.
एवां चार पाद. १,५,९,१३ मात्राए ताल

चरण चरण धर दश पड लघु कल,
वसु वसु पर यति द्विपदतणुँ ज दल;
प्रथम पर ऽटकर पछी चढ श्रुति श्रुति, ऽताल
सरस सरस रच द्विदल अचलधृति. २१६

अचलधृतिमां १६ लघुवाळां चार चरण आणवा लख्युं छे, एटले ते अक्षरमेळ वृत्त थइ जायछे, पण आ प्रकरणमां सोळ सोळ मात्रानी नीचे जणाव्या प्रमाणे जाति आवेछे, तेमां ए सोळ मात्रानी आवृत्ति बतावधाने जाणे अधिकारसूत्र होय, एम गणी प्रारंभमां दाखल करवामां आवी छे. एने गीत्यार्या पण केहेछे, आ उपरथी ३२ मात्रानां बे दल करिये तोपण थाय.

२ चर्पट. चारे पादमां सोळ सोळ मात्रा नियमसर आवे, पण नवमी मात्रा लघु आणवी, अने छेल्लो अक्षर गुरु आणवो.

१, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

सोळ कला, लघु नवमी आणो,
चर्पटमां गुरु *चरमे जाणो;		*अंते
एक उपर ने श्रुतिये चडता,
ताल रचो ठिक क्रमथी पडता.	२१७

मात्रासमकना प्रत्येक चरणमां चच्चार मात्राना चार गण आवेछे, अने तेमांनी सममात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे मळे नहि एवो खास नियम छे, माटे पेहेला स्थानमां चार मात्रानां पांच रूप पैकी जगणवाळुं रूप (बीजी त्रीजी मात्रा एकठी थायछे माटे) बाद करतां बाकीनां चार रूप (SS, ||S, S||, ||||) काम लागेछे, ते गण्यां; बीजा स्थानमां उपर लख्या चार गणो पैकी विप्रगण पण काम लागतो नथी, कारण के ते विश्लोकमां लाववानो खास नियम छे–ते लाववाथी विश्लोक थइ जाय–माटे बीजा स्थानमां त्रण रूप (SS,||S,S||) काममां आवेछे; त्रीजा स्थानमां-नवमी मात्रा लघु आणवानी छे माटे पेहेलो लघु आवे एवा स, ज अने विप्रगण पैकी मात्र एक सगणज काम लागेछे, कारण के ज के विप्रगणनुं वासिकामां विधान करेलुं छे, माटे त्रीजा स्थाननुं रूप एकज; चोथा स्थानने अंते गुरु लाववानो छे, माटे तेवां अंत्य गुरुनां रूप (SS,||S) बेज छे, तेथी चोथा स्थाननां बे रूप बने; एटले एकंदर ४×३×१×२=२४×२४ =५७६ पूर्वार्द्धनां, तेने उत्तरार्द्धनां तेटलांज रूपे गुणवाथी ५७६× ५७६=३,३१,७७६ बधां मळीने रुप थायछे.

३ विश्लोक. प्रत्येक पादमां १६ मात्रा, तेमां चार मात्रा पछी जगण अथवा विप्रगण आणवो; बीजी नियमभर आवे. पिंगलाचार्य पांचमी ने आठमी मात्रा लघु आणवा केहेछे. बाकी चारे चरणमां गमे तेम लाववुं. ते पण उपरना मत साथे मळतुंज छे. १,५,९. १३ मात्राए ताल.

प्रति पद विषे कला कल लावे,
श्रुति कल पछी ज के द्विज आवे;
विश्लोक नियम एमज भाळो,
आदि पछीथी नडता श्रुति ताळो. २१८

एनी रूपसंख्या नीचे प्रमाणे थायछे.—

एमां पेहेले स्थाने जगण सिवायना चार गण आवेछे, माटे तेना ४ रूप, बीजे स्थाने विप्र के जगण आणवा खास नियम छे. माटे तेनां बे रूप; त्रीजा स्थानमां कर्ण के भगणज आवेछे, केमके जगण, सगण के विप्र ए त्रण गण आववाथी नवासिका के चित्रानुं पाद बनेछे, माटे त्रीजा स्थाननां रूप बेज; अने चोथा स्थानमां अंते गुरु लाववानो सामान्य नियम होतां तेना पण रूप बेज, तेथी ४×२×२×२=३२×३२=१०२४× १०२४=१०,४८,५७६ रूप बधा मळीने थायछे.

४. नवासिका, वानवासिका. आठ मात्रा पछी जगण अथवा विप्रगण, बाकी गमे तेम मात्रा आवे. पिंगलाचार्य केहेछे के, नवमी ने बारमी मात्रा प्रत्येक पादमां लघु आणवी, (एनो अर्थ पण एज थायछे, केमके, नवमी ने बारमी मात्राए लघु, जगण अथवा विप्र होय तोज आवे,) बाकी गमे तेम आवे. १,५,९,१३ मात्राए ताल

आठ कला पछीं चरण चरणमां,
द्विजवर वा ईजलधर धर गणमां; ईजगण (ISI)
ए छे जाति–नवासिका तो,
ताल प्रथम ने श्रुति चडीं गा तो. २१९

एनी रूप संख्या नीचे प्रमाणे थायछेः—

प्रथम स्थाननां उपर जणाव्या प्रमाणे जगण बाद करतां बाकीनां ४ रूप थायछे, तथा बीजा स्थाननां पांच रूपमांथी जगण अने विप्रगण बाद थायछे, कारण के जगणथी छठ्ठी ने सातमी मात्रा एकठी थायछे, अने विप्रगण मूकवाथी विश्लोकमां अतिव्याप्ति थायछे, एटले ते वर्ज्य करतां बाकीनां त्रण रूप थायछे; त्रीजा स्थानमां मात्र जगण के विप्रगणज आवेछे, माटे तेनां बे रूप; अने चोथामां कर्ण के सगण आवे एटले ४×३×२×२=४८×४८=२३०४ रूप पूर्वार्द्धनां, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां, माटे २३०४×२३०४=५३,०८,४१६ रूप बधां मळीने थायछे.

५. चित्रा. पांचमी, आठमी ने नवमी मात्रा लघु, बाकी गमे तेम आवे. =१६ मात्रा. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

सोळ सकल कल धर दर झडमां,
शर वसु नव कल कर लघु पदमां;
ताल प्रथम पर पछीं श्रुति चडता,
चित्रा विषे सरस तो पडता. २२०

एनां रूप ४×२×३×२=४८×४८=२३०४ पूर्वार्द्धनां, तेटलांज उत्तरार्द्धनां एटले २३०४×२३०४=५३,०८,४१६ थायछे. प्रथम स्थानमां पूर्वोक्त चार रूप थाय; बीजा स्थानमां

पांचमी ने आठमी मात्रा लघु लाववानी छे तेथी मात्र जगण ने विप्रगणज आवी शके, माटे तेनां बे रूप; त्रीजा स्थानमां नवमी मात्रा लघु आणवानी छे, माटे सगण, जगण ने विप्रगण एवां त्रण रूप थायछे; अने चोथा स्थानमां अंते गुरु आणवानो छे माटे पूर्वोक्त कर्ण अने सगण एम बे रूप थायछे.

६. (१) उपचित्रा. चारे पादमां नवमी ने दशमी मात्रा मेळी आवे, अर्थात् तेना गुरु आणवा, बाकी गमे तेम आवे.

१,५,९,१३ मात्राए ताल

सोळ कला वधी आण प्रति पदे,
नव दश भेगी आण झटपटे;
उपचित्रानी रीति ए छे,
बीजा बे वळी नोखा केछे. २२१

आनु लक्षण "छंदःप्रभाकरमो" आठ मात्रा+गुरु+छ मात्रा (अल्प-गुरुवाळी) एम आपेछे, आमा बधां पादोमां अथवा एक के तेथी वधारे पादोमा जगण जोइये, एम केहेछे (पृ.४५)

पेहेला स्थाननां चार (SS,IIS,SII,IIII) रूप,×बीजा स्थानना त्रण (SS,IIS,SII)×त्रीजा स्थाननां बे (SS,SII) रूप,× चोथा स्थाननां बे(SS,IIS) =४८×४८=२३०४ पूर्वार्द्धना×तेटलाज उत्तरार्द्धना=५३,०८,४१६ बधां मळीने रूप थाय.

७. (२) उपचित्रा. चारे पादमां आठ मात्रा पछी भगण ने बे गुरु आवे. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

सोळ कला प्रति पादज आवे,
आठ कला पछी भो गण लावे;
ते पर कर्ण करायज छेले,
उपचित्रा बीजो कर मेळे. २२२

जनार्दन वृत्तरत्नाकरनी टीकामां पाठांतर जणावे छे के "अष्टभ्यो भाद्गावुपचित्रा. इति क्वचित् पाठः"

आठ मात्रा पछी भगण आवे अने ते पछी बे गुरु आवे तो "उपचित्रा" थाय (एवो क्यांक पाठ छे.)

एनी रूपसंख्या आ प्रमाणे थाय.—

४×३×१×१=१२×१२=१४४ एटलां रूप पूर्वार्द्धनां×१४४ उत्तरार्द्धनां=२०,७३६ बधां मळीने बीजी उपचित्रानां रूप थाय.

८. (३) उपचित्रा. चारे पादमां आठ मात्रा पछी भगण आवे, बाकी गमे तेम १,९,९,१३ मात्राए ताल.

सकळ मळी कल सोळज करजो,
वसु कल पछीथी भो गण धरजो;
ते पर चार कला छुट सजजो,
एमज उपचित्रा ठिक रचजो. २२३

जनार्दन वृत्तरत्नाकरनी टीकामां जणावे छे के "अष्टाभ्यो ग्ला वुपचित्रा मतान्तरमेतत्."

आठ मात्रा पछी एक गुरु आवे अने ते पछी बे लघु आवे तो "उपचित्रा" थाय (एवुं पण केटलाकनुं मत छे.)

एनी रूपसंख्या आ प्रमाणे थायः—

४×३×१×२=२४×२४=५७६ एटलां रूप पूर्वार्द्धनां×५७६ उत्तरार्द्धनां=३,३१,७७६ बधां मळीने त्रीजी उपचित्रानां रूप थाय.

मदारमरदवपूमा पण एमज केहेछे

९. पादाकुलक. उपरनी पांच जातिमाथी गमे तेना पादथी मिश्रण होय ते. आना ७९ भेद थायछे. १,५,९,१३ मात्राए ताल

चर्पट नवासिका विश्लोके	विश्लोकनुं पद
चित्रानां पद भळाय जो के;	नवासिकानुं पद
उपचित्रा मिश्रण तो करजो,	चर्पटनुं पद
पादाकुलक नामज धरजो. २२४	उपचित्रानुं (३) पद

भाषा छंदोमंजरीमा पेहेलुं ने त्रीजुपाद मात्रासमक प्रमाणे, अने बीजु ने चोथु सोळ मात्रानु लाववा केहेछे.

वैतालीय अथवा अपरवक्त्र प्रकरण.

प्रथम. ६+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१४
द्वितीय. ८+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१६
तृतीय. ६+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१४
चतुर्थ. ८+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१६

१, ३ पादमां २, ४, ६ ठी मात्रा तेनी पछीनी मात्रा भेगी *आणवी नहि. एटले बीजी ने त्रीजी, चोथी ने पाचमी, तेमज छट्ठी* ने सातमी मात्रा एकठी आणवी नाहि. जो प्रथम लघु पछी गुरु, एम क्रम आवे तो नियम तूटेछे, माटे तेम ना आवे एम करवुं.

२, ४था पादमां आठेय मात्रा लघु आणवी नहि. तेमज २,४,६ मात्राने तेनी पछीनी मात्रा भेगी मेळववी नहि, एटले बीजीसाथे त्रीजी, चोथीसाथे पांचमी, छट्ठीसाथे सातमी मात्रा मळे नहि; पण पेहेलीसाथे बीजी, त्रीजीसाथे चोथी, पांचमीसाथे छट्ठी अने सातमी साथे आठमी मात्रा मळे तेमां बाध नथी. छंद-प्रभाकरमां कह्युं छे के, सम चरणोमां छ आदि लघु न आववा जोइये.

S|S |S
छ कल विषममां र वास छे,
८ S|S |S
वसु पर सममां तो र वास छे;
विषमे कल चौद तो गमे,
वैतालीयमां सोळ तो समे. १. २२५

सम कल न पराश्रिता करो,
सममां तो लघु सर्व ना धरो;
एज नियम पाळनो बधे,
वैतालीय सौ एम तो सधे. २. २२६

वैतालीयनी रूपसंख्या नीचे प्रमाणे थायछेः—

वैतालीयना विषम चरणमां प्रथम छ मात्रा लाववानी छे, तेनां रूप १३ थायछे, ते पैकी ३जुं, ६ठुं, ७मुं, ८मुं अने ११मुं रूप विरोधी आवेछे, केमके तेमां सम मात्रा-एटले २,४,६ ठी मात्रा-पोतानी पछीनी मात्रासाथे मळी जायछे, माटे ते पांच रूप वर्ज्य करतां बाकीनां (१) SSS, (२) ||SS, (४) S||S, (५) ||||S, (९) SS||, (१०) ||S||, (१२) S||||, (१३) ||||||, ए प्रमाणे आठ रूप रेहेछे.

एज प्रमाणे सम चरणमां प्रथम आठ मात्रा लाववानी छे, तेनां रूप ३४ थायछे, तेमां बाधकारक २१ रूप वर्ज्य करतां, बाकी १३ रूप रेहेछे; ते १३ने विषम चरणनां ८ रूप साथे गुणतां १३×८=१०४ रूप पूर्वार्द्धनां थायछे; तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां १०४×१०४=१०,८१६ रूप बधां मळीने वैतालीयनां थायछे.

वळी एज प्रमाणे गणत्री करतां औपच्छंदसिक अने आपातलिकानां रूप पण एटलांज थायछे.

२. औपच्छंदसिक.

पे० ६+र (SIS)+य (ISS)=१६.
बी० ८+र (SIS)+य (ISS)=१८.
त्री० ६+र (SIS)+य (ISS)=१६.
चो० ८+र (SIS)+य (ISS)=१८.
} बाकीनो नियम वैतालीय प्रमाणे.

विषमे षड ने दिशा समे तो,
र य धर ते पर सौ पदे क्रमे तो;
कळ सोळ गणायछे अयुग्मे,
औपच्छन्दसिके पुराण युग्मे. २२७

३ आपातलिका, आपाताली[1] १,५,९,१३ मात्राए ताल.

पे० ६+भ (SII)+S+S=१४
बी० ८+भ (SII)+S+S=१६
त्री० ६+भ (SII)+S+S=१४
चो० ८+भ (SII)+S+S=१६
} बाकीनो नियम वैतालीय प्रमाणे.

विषम षड आठ समे छे,
तेपर भ ग बे ठीक गमेछे;
चौद विषम थाय कला ते,
सोळ समे आपातलिका ते. २२८

१ गदारंमरदचम्पू प्रमाणे

४ दक्षिणांतिका.

पे० ६+र (SIS)+ल+ग=१४
बी० ८+र (SIS)+ल+ग=१६
त्री० ६+र (SIS)+ल+ग=१४
चो० ८+र (SIS)+ल+ग=१६
} वैतालीय प्रमाणे.

आमां बीजी मात्रा त्रीजी भेगी अवश्य लाववी एटले पेहेलो अक्षर लघु ने बीजो अक्षर गुरु आववाथी तेम थशे ४,६,८मी मात्रा पोतानी पछीनी मात्रा साथे भेगी भेळववी नहि.

ऽ।ऽ ।ऽ
समे दिशा †सूर्य वास छे, †रगण.
कला छ विषमे तो धराय छे;
ऽ।ऽ ।ऽ
पछी रगण वास अंतिके,
रचाय रचना दक्षिणांतिके. ३२९

"भाषाछंदोमंजरीमां" पेहेला त्रीजामां १४ अने बीजा चोथामां १५ मात्रा लावया केहेछे, पण तेनो बीजो आधार नथी.

दक्षिणांतिकानी रूपसंख्या आ प्रमाणे थायछेः

एनां चारे पादमां बीजी अने त्रीजी मात्रा भेळी आवे एवां रूप लाववानां छे, माटे त्रीजुं (।ऽ।ऽ), अने अगियारमुं (।ऽ।।।) एवां बेज रूप मात्र काममां आवेछे, तेथी विषम चरणनां बेज रूप थाय; अने सम चरणमां त्रीजुं (।ऽ।ऽऽ), ११ मुं (।ऽ।।।ऽ), २४ मुं (।ऽ।ऽ।।), अने ३२ मुं (।ऽ।।।।।), ए रीते चार रूप काममां लागेछे, तेथी २×४=८ रूप पूर्वार्द्धनां, अने तेटलांज रूप उत्तरार्द्धनां थतां ८×८=६४ रूप बधां मळीने थायछे.

५ उदीच्यवृत्ति. १, ३. मां ६+र+ल+ग =१४.
२, ४. मां ८+र+ल+ग =१६.

वैतालीय प्रमाणे पादनी रचना करवी. पण पेहेला ने त्रीजा पादमां बीजी त्रीजी मात्रा दक्षिणान्तिका प्रमाणे एकठी आवे, ने बीजा चोथा पादमां ए नियम लागु नथी, एटलो दक्षिणान्तिका करतां आमां फेर छे.

अयुग्म पादे सदा भले,
बीजी त्रीजी तो कला मळे;

उदीच्यवृत्ति विषे दिशे,
जुओ दक्षिणांतिका विषे. २३०

उदीच्यवृत्तिनां रूप संख्या नीचे प्रमाणे थायछेः-

एनां विषम चरणमां बीजी अने त्रीजी मात्रा एकठी आणवानी होतां **दक्षिणांतिका** प्रमाणे त्रीजुं (।ऽ।ऽ), अने अगियारमुं (।ऽ।।।) ए बे रूपज काममां आवेछे, अने सम चरणोमां वैतालीय प्रमाणे १३ रूप काममां आवेछे; एटले २×१३=२६ रूप पूर्वार्द्धनां थाय, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां २६×२६=६७६ रूप एकंदर थायछे.

६ प्राच्यवृत्ति.

वैतालीय प्रमाणे सर्व रचना करवी, पण बीजाने चोथा पादनी चोथी मात्रा छूटी न राखतां पांचमी साथे भळेली आणवी-एटले चोथीने पांचमी मात्रानो एकज गुरु अक्षर आणवो.

वैतालीय नियमो सदा
प्राच्यवृत्तिमां आणजो तदा
श्रुति शर भेगी समे करो
गुरु तमे भले ठाम ते धरो. २३१

प्राच्यवृत्तिनी रूपसंख्या काहाडवा माटे एनां विषम चरणमां **वैतालीयमां** बतावेलां ८ रूप काममा लागेछे, अने सम चरणमां चोथी अने पांचमी मात्रा एकठी आणवानी होतां (ISSIS) ६ ठुं, (IIISIS) ८ मुं, अने (SISIII) २८ मुं, (IIISIII) २९ मुं, एवां चार रूप काममां लागेछे, माटे ८×४ =३२ रूप पूर्वार्द्धना थाय, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां ३२×३२=१०२४ रूप बधां मळीने **प्राच्यवृत्तिनां** थायछे.

७ प्रवृत्तक. १, ३ पादमां उदीच्यवृत्ति प्रमाणे. (२—३ भेगी विषमे)
२, ४ पादमां प्राच्यवृत्ति प्रमाणे. (४—५ भेगी समे)

समे चार पांचे तो मळे,
बीजों त्रीजों ते विषमे भळे;
बधा अवर बाकीना खरे,
नियम तेज प्रवृत्तके करे. २३२

प्रवृत्तकनी सख्या विषे.—

एनां विषम चरणनां रूप उदीच्यवृत्ति प्रमाणे बे थायछे, अने समनां रूप प्राच्यवृत्ति प्रमाणे चार थायछे, माटे २×४=८ रूप पूर्वार्द्धनां थयां; अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थाय, माटे ८×८=६४ रूप बधा मळीने थायछे.

८ अपरांतिका. प्रवृत्तकना सम पाद प्रमाणे चारे पाद आणवां.
८ (तेमां ४,५. भेगी) +र+ल+ग=१६ मात्रा, एवां चार पाद.

आठ उपरे सूर्य वास छे,
कल बधी मळी सोळ पाद छे;
चार पांच तो एकठी दिसे,
नियम एज अपरांतिका विषे. २३३

प्रवृत्तकनां समचरण प्रमाणे एना चारे चरण थायछे, तेथी ४×४=१६ रूप पूर्वार्द्धनां, अने तेटलाज उत्तरार्द्धनां थता १६×१६=२५६ रूप बधा मळीने थायछे

९ चारुहासिनी. प्रवृत्तकना विषम पाद प्रमाणे चारे पाद आणवां.
एटले, ६ (तेमा २,३ भेगी)+र+ल+ग=१४.

छ उपरे सूर्य वास तो,
भळे बीजी त्रीजी साथ तो;

वळी नियम चारुवाहिनी,
मनोहरति चारुहासिनी. २३४

प्रवृत्तकनां विषम चरण प्रमाणे चारुहासिनीनां चार चरण थायछे, माटे १×२=४ पूर्वार्द्धनां, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां ४×४=१६ रूप बधां मळीने एनां थायछे.

गलितक प्रकरण.

आ प्रकरण मुख्यत्वे करीने छंदःशास्त्र, वृत्तमौक्तिक, अने छंदोल्लतामांथी लीधुं छे. घणा ग्रंथोमां आ विषय प्रसिद्ध नथी अने तेनां लक्षण पण अपूर्ण जेवां मळी आव्यां छे. अमे बनतो शोध करीने लभ्य लक्षणो आपी चलाव्युं छे.

१. संगलितक.

४+४+५=१३ मात्रानां चार चरण. १,५,९ मात्राए ताल.

डगण डगण पछी पांच छे,
संगलितक ते नाम छे;
एक उपर शर नव परे,
एम त्रणे तालो धरे. २३५

२. सुंदरगलितक, सुगलितक. (आ नाम छंदोल्लतामां छे.)

५+५+ल+ग=१३. १,५,९ मात्राए ताल.

शर शर कल पदमां करो,
लघु गुरु पछी ते पर धरो;
शशि शर नव परं ताल छे,
सुंदरगलितक चाल छे. २३६

३ भूषणगलितक. ५+५+३(ऽ।)+३=१६.

३, ७, ११, १५ मात्राए ताल.

कल पांच परे फरी पांच धरे,
सुर ते पर ने वळी अग्नि करे;
भण भूषण नाम गलितक रे,
धर ताल त्रणे मुनि शिव परे. २३७

आ गलितक छंदःशास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमां छे.

४ मुखगलितक. ६+३+३+३+३+ग=२० मात्रा.

३.७,११,१५,१९, मात्राए ताल.

कल छ उपर धार कला त्रण त्रण त्रण तो,
वळी त्रण पर हार विबुधवर! धर करतो;
त्रण पर धर ताल पछी श्रुति श्रुति मडतो,
मुखगलितक एम रचाय सरस पडतो. २३८

५. गलितक. ५+५+४+४+ल+ग=२१.

१,५,९,१३,१७ मात्राए ताल.

पांच उपर वळी पांच डगण बे वार छे,
तेपर लघुज रखाय उपर वळी हार छे;
शशिपर प्रथमज ताल चडे ज्यां चार छे,
गलितक रचवा काज घणोज विचार छे. २३९

छंदःशास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमां उपरतुं माप छे. छंदोल्तामां

ठ(५)+ड(४)=९ मात्रा आणवानुं कह्युं छे, तेने बीजो आधार न होतां ते ग्राह्य नथी.

६ विलंबितगलितक. ६+ज+४+ज+४(तेमां अंते गुरु)=२२
२,८,१३,१९ मात्राए ताल.

धरो छपर पयोधर श्रुति कलनो वधारो,
पछीथी जगण मूकी बे कल गुरुज सारो;
द्वितीय वसु जखे पछी ताल ओगणिश तो,
विलंबित गलितक सरस बने सुगम तो. २४०

उपर प्रमाणे माप वृत्तमौक्तिकमां छे, पण छंदःशास्त्रमां नीचे प्रमाणे छे. ६+४+४+४+४(तेमां अंते गुरु)=२२. छंदोलताम आ गलितकनुं माप ८+४+ज+४+ज+ग=२६ आप्युं छे, पण तेमां समजफेरथी गुरु जूदो राखवा कह्युं होय एम जणायछे, केमके गुरु अंतवाळो डगण आणवो एम कहेलुं छे.

७ लंवितगलितक.§ ४+४+४+४+४+ग=२२ मात्रा. (तेमां जगण नहि.) १,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल.

चोकलिया गण पांच उपर गुरु तो धरजो,
लंवितगलितक मांहे जगण न कांहि करजो;
एक उपर छे ताल पछी चारे चडशे,
आरतो रागे गातां ठीक मझा पडशे. २४१

§ छंद:शास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमां लंबिता एटलुज नाम छे, अने गलितक प्रकरणमां होतां लंवितगलितक नाम राखवानुं ठीक छे.

वृत्तमौक्तिकमां "विषम स्थानमां जगण न लाववो." एटलुं ज लक्षण बांध्युं छे, पण तेना उदाहरणमां तमाम स्थानमां जगण आवतो नथी

८ विगलितक. ५+५+४+४+५=२२

१,४,८,११,१५,१८,२२ मात्राए ताल.

सकल कल त्रेवीश कर पदमांह ठिक जाणी,

ठगण बे पर डगण बे वर्ळी बाण कल आणी;

प्रथम पछीं त्रण चार चढता ताल शुध आवे,

विगलितक नामनी सुशोभिन जाति सुहावे. २४२

छंदःशास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमा उपरनुं माप छे, छंदोलतामां ठ (५)+ ठ (५)=१० मात्रा आणवा कह्यु छे, पण तेने बीजो आधार न होता ते ग्राह्य नथी.

९. ललितगलितक. ४+५+४+५+४+ग=२४ मात्रा.

३,७,११,१५,१९,२३ मात्राए ताल.

कल चार उपर शर धरी पछी कल चार करो.

वळी पांच उपर कल चार करी गुरु एक धरो;

त्रण कलपर क्षट धरी ताल पछी चच्चार चडो,

ललितागलितक पद एम कला चोवीश घडो. २४३

आ गलितकनुं केटलाक ग्रंथोमां ललिता एवुं नाम आप्युंछे, पण ललितगलितक नाम राखवुं उचित छे.

१० विषमितगलितक जाति.

१,२. पदमां ५+४+५+४+(कमल) गलगल =२४

३,४. पदमां ५+५+५+४+(सूर्य) गलग =२४

५ ४ ५ ४ ऽ।ऽ।
ठ ड उपर ठ ड कर ते उपर कमळ चडाव एक,
प्रथम ने द्वितिय पद चोविश कुल कलनो विवेक;
त्रीने वळी चोथे त्रण ठपर ड सूर्य चोविशे,
विषमितज गलितक रचना एमज ठिक तो दिशे. २४४

११ समगलितक. ४+५+५+४+४+लग=२५ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

घार उपर धरि शर शर पर बे चोकल जाणजो,
चरमे ल ग धरि प्रतिपद पाचिस कल कवि आणजो;
ए समगलितक चरण चतुर कवि रचवा काज तो,
रचना कहीं त्यम रचीने रीझवे राजसमाज तो. २४५

१२ समगलितक (बीजुं). १, ३ पदे ४+३=७ मात्रा;
२, ४ पदे ६+३+३+३+३+५+ग=२५ मात्रा

४ ३
विषम ड ढ पद,
समे छ पर चार वार ढ धरि ठ उपर गुरु करवो;
पचिस कल वद,
समगलितक एक अपर सरस जातिनो उचरवो. २४६

१३ समगलितक (त्रीजुं). १,३. ६+३+३+३+३+५+ग=२५
(छं.शा.वृ.मौ.प्र.) २,४. ४+३=७
१,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल.

विषम पद छ कल पर त्रण त्रण त्रण त्रण ठ भराय छे,



गुरु ते उपर;
पचिश कुल कल विपरित समगलितके थायछे,
समे ४ड ३द धर. २४७

बीजा समगलितकथी आ उलटुं छे.

१४ विक्षिप्तिकगलितक. ५+४+५+४+५+ग=२५ मात्रा.
१,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल.

५४ठड पर ५४ठड धर उपर ५शर, कल गुरु चरमे* करवो,
विक्षिप्तिकगलितक चरण, कविवर करशे गरवो;
पचिश कुल कल प्रतिपदे, गर्णाने विगते धरवी,
तेर प्रथम कल धरि दुहे, १२रवि कल पछी उच्चरवी. २४८

*अंते. आ गलितकमां प्रथम तेर कलनी दुहानी रचना अने ताल पण ते प्रमाणे, बाकीनी बार कलना प्रारंभने प्रथम अक्षरे ताल, पछी चचार चडते आवेछे. वृत्तमौक्तिकमां विक्षिप्तिका नाम आप्युं छे.

१५ मुग्धगलितक.

६ टगण (४+ज+४+ज+४+ज)+ग=२६ मात्रा.
१,५,९,१३,१७,२१,२५ मात्राए ताल.

४।ऽ।द ज चार वार आणी गुरु धरो चरममां फरी,
ए रीतिथी कला कुल करो वीशपर ६षट आदरी;
मुग्धज गलितक चरण रचीज ज्यम रागमां गमे,
ईश्वर कथा कथो आ गलितक विषे नमी तमे. २४९

१६. उद्गलितक. ६+ज+४+ज+४+ज+४=३० मात्रा.

त्रीजी मात्राए, पछी चचारे चडता ताल.

छ कल उपर पयोधर धरी ड ते पर करी फरी पयोधर,
ते उपर कल चार ने ज ड वळी धरो ते परे कवीश्वर!
एम छ कल परे ज ड त्रण करतां कल त्रीश कुल थाय सरखी,
उद्गलितक करो गणतरी करी मनविषे सदाय हरखी. २५०

छंदोलतामां ड+ड+ड+ड+ग=१८ मात्रा करवा केहेछे, पण छंदःशास्त्र अने वृत्तमौक्तिकमां अमे उपर बताव्युं ते प्रमाणे माप छे. मुग्धमालागलितक करतां आमां बे चोकलिया ओछा छे.

१७ मुग्धमालागलितक. ६+ज+४+ज+४+ज+४+ज+४=३८

३,९,७,११,१५,१९,२३,२७,३१,३५ मात्राए ताल.

त्रीश आठे, ज मुग्धमाला विषे कला कुल समायछे ने रचाय सारी,
विगत करो, कला छ प्रथमे धरी तमे चार वार ज ड गण पदे उचारी;
मन दृढथी, सदाय हरिगुण गवाय नित्ये भमाय नहि तो जणाय रूडुं,
माटे तुं, खमाय तेवी खमी पीडा पण प्रभु भजन कर तजीज कूडुं.२५१

बरोबर रागथी गवाय माटे पेहेली छ मात्रा पूरी थतां बे मात्रा बोलाय एटलो राग लबाववो, अर्थात् त्यां विराम लेवो.

रणपिंगळ.

वर्णमेळछंद.

समवृत्त.

१ उक्ताछंद. २ भेद छे. एक वर्ण. केटलामोभेद.–

१ श्री.   १ गुरु.   १

गी, श्री.

गणप्रस्तारप्रकाशमां आनु नाम **शूलधर** आपीने तेने मात्रा-मेळमा गणेलो छे, अने मात्रामेळनी रीति प्रमाणे तेनु बीजु रूप बे लघुनु करी बताव्यु छे, पण तेम करवु योग्य नथी

२ लु.   १ लघु.   २

लु, लु.

गणप्रस्तारप्रकाशमा आनु नाम **अचळ** आपीने मात्रामेळमां गण्यो छे

२ अत्युक्ताछंद. ४ भेद छे. बे वर्ण.

गणप्रस्तारप्रकाशमा चारमात्राना रूप बे गुरुथी शिरुकरीने तेनु सामान्य नाम **ब्रह्मा** आप्यु छे

३ कामा, स्त्री, काम.   ग, ग.   १

गा गा, कामा.

४ मही.   ल. ग.   २

ल गी, मही.

गणप्रस्तारप्रकाशमा आना रूपनु नाम **वासव** आप्यु छे, अने तेनी मात्रामेळमा गणना करा छे

छंदालतामा आनु नाम "रति" राख्यु छे, कारण के ते जणावेछे के, माहिनु

माप ग,ल राखवुं सूत्रथी विरुद्ध छे. आ विचार अनुचित छे, केमके वर्णकर्तानि वृत्तना नाम एवां पाडेलां होयछे के, ते पोताना मापनी कवितारचनामा आवी शके रतिमां "ति"-ह्रस्व छे,तो ए शब्दना बे लघु थायछे,तेज प्रमाणे मदिना पण बे लघु थायछे, एटले बे शब्द सरखा मापना होतां, जो रति नाम ग्रहण करिये तो मदि नाम ग्रहण करवाने हरकत नथी मदि शब्दमा "दी" दीर्घ पण थायछे, तेथी ए शब्दमां प्रथम लघु अने बीजो गुरु वर्ण आवता मदी नाम वधारे बंधबेसतुं छे रतिमां "ति" आगळ विसर्ग होतां संस्कृतमां ते दीर्घ गणी शकाय

५ सारु, चारु, शानु, सार, सारस, ग, ल. ३

गा लु, चारु.

गणप्रस्तारप्रकाशमां आनु नाम ताल आपीने तेने मात्रामेळमां गणेलो छे, अने तेमां त्रण मात्रानु सामान्य नाम यज्ञ राख्युं छे

६ मधु ल, ल. ४

ल लु, मधु.

३ मध्या, मध्यमाछंद. ८भेद छे, त्रण वर्ण.

७ नारी, ताणी, ताली, माली, सीसा. १ मगण. १

मा नारी.

१ मागधी पिंगलछंदोग्रंथमां सीसा नाम आप्यु छे

८ शशी, बलाका, वृत्ति. १ यगण. २

शशी यी.

१ नाट्यशास्त्रमां आ नाम छे

९ मृगी, [1] प्रिया, [2] विद्युत. [3] १ रगण. ३

री मृगी.

१ छंदोलना पण आ नाम दर्शावेछे

२ छंदोलतामां मध्याना भेदमां मृगी अने प्रिया एम भेद जुदा पाडया छे, तेम मृगेन्दु जे छठ्ठो भेद छे, ते लख्यो नथी एम आठ भेद

गणावी केहेछे के, सूत्रकार आवी रीते दर्शावेछे.

३ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

१० रमण, रमणी, रमुना, रजनी,[1] १ सगण. ४
सगणों, रमणी.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

११ पंचाल, पांचालि, कामावतार. १ तगण. ५
ता घाल्, पंचाल.

१२ मृगेन्दु, नरेन्दु, मृगेन्द्र, नरेन्द्र. १ जगण. ६
ज थाय,कवाय;
मृगेन्द्र,नरेन्द्र.

१३ मंदरि, मंदर, मंदरा, १ भगण. ७
भू धरु,मंदर.

१४ हरिणी, कमलि, कमल. १ नगण. ८
नगणों,हरिणों.

गणप्रस्तारप्रकाशमा मात्रामेळमा आनु नाम तांडव आप्युं छे

प्रतिष्ठाछंद. १६. भेद. चार वर्ण.

१५ कन्या, कीर्णा, तीर्णा.[1] तिन्ना.[2] म, ग. १
मा गा कन्या.

१ एक रगणनुं नाम नागराज पिंगळमा तीर्णा लख्यु छे, ए बराबर नथी, केमके तेनु नाम चार अक्षरमा छे

२ छंद प्रभाकर प्रमाणे

१६ क्रीडा[1] य, ग. २
य गा क्रीडा.

१ भीखारीदासाजीये आना बमणा के चोगणाने भुजंगा वृत्त मान्यु छे. जुओ छंदःप्रभाकर टीका पृष्ठ ११०)

१७ नंद. र, ग. ३

नंद रा गा.

१८ दोला, रामा, राम, विमला, भ्रमरी[1]. स, ग. ४

स ग दोला.

[1] नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

१९ धरा[1], विजया[2]. त, ग. ५

ता गा धरा.

[1] छंदोलतामां आ मापना छंदनुं नाम सती छे
[2] नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

२० कला, नगानिका, कुमारिका, नगा[1], नगणिका, नगी, नगानिका[2], जया, निर्गला, नगालिका, लग्गणिय[3]. ज, ग. ६

ज गा कला.

[1] छंदोलता प्रमाणे [2] नाट्यशास्त्र प्रमाणे
[3] लग्गणिय (लग्ना) नाम मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां छे

२१ वला, समुहो. भ, ग. ७

भा ग वला.

२२ सती, तरणीजा. न, ग. ८

न गि सती.

२३ मुग्ध, गोपाल. म, ल. ९

मा ला मुग्ध.

२४ वारि, कर्त्त, मुद्रा. य, ल. १०

य ला वारि.

२५ धारि, धारा, धारी, धारिया[1]. र, ल. ११

रा ल धारि.

[1] मागधी पिंगळछंदोग्रंथ प्रमाणे

२६ कारु, वीरु, वीर. स, ल. १२
स ल कारु.

२७ तावुरि, कृष्ण. त, ल. १३
त्ले तावुरि.

२८ रज्जु, बुद्धि. ज, ल. १४
ज ले रज्जु.

२९ निशि, अनृजु. भ, ल. १५
भी ल निशि.

३० पटु, हरि. न, ल. १६
न ल पटु.

५ सुप्रतिष्ठा छंद. ३२ भेद. पांच वर्ण.

३१ वाला, संमोहासार, संमोहा, विद्युतभ्रान्ता. म, ग, ग. १
मा गा गे वाला.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

३२ नाली. य, ग, ग. २
य गा गे नाली.

३३ सूरिणी. र, ग, ग. ३
सूरिणी र ग्गे.

३४ मगुण, चतुर्वंशा, घनपंक्ति.[१] स, गं, ग. ४
मगुणे स्गा गा.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

३५ हारीत, लोल, हारी, वहारी, हारा, हारीतबंधा, फारीआ.[१] त, ग, ग. ५

हारीत त ग्गे. लोले त गा गा.

१ मागधी पिंगळछदोग्रंथमां आ नाम आप्यु छे.

३६ कंठी, विलास, यशोदा. ज, ग, ग. ६

ज गं ग कंठी.

१ आ नाम छद प्रभाकरवाळाए नवु पाडेलु छे, एम ते पोते लखेछे, पण आगळ तेनां उपरनां बे नाम छे, ते तेमना जाणवामा नहि होय, तेथी "यशोदा" नाम तेमणे उपजावी काढ्यु हशे

३७ हंस, पंक्ति, अक्षरपंक्ति, फारी, भूतलमान्या. भ, ग, ग. ७

हंस भ गा गे.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

३८ कललि, सुतसंगक. न, ग, ग. ८

कललि न ग्गे.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमा आने सात मात्रानु त्रीजुं रूप बताव्युं छे

३९ हासिका. म, ल, ग. ९

म्ला गे हासिका.

४० नरी. य, ल, ग. १०

य ला गे नरी.

४१ वैनस, खंजा.[१] र, ल, ग. ११

रै ल गा धरो, वैनसे करो. (वैनसेर्लगा).

१ नागराज पिंगळमा खजा नाम लख्यु छे

४२ प्रिया, रमा.[१] स, ल, ग. १२

स ल ग प्रिया.

१ छदोलतामां रमा केहेछे

४३ कणिका. त, ल, ग. १३

त्ला गे कणिका.

४४ शिला. ज, ल, ग. १४

ज ला ग शिला.

४५ मंडल. भ, ल, ग. १५

मंडल भ्ल गे.

४६ सुलू, करता, कलमुखी.[१] न, ल, ग. १६

न ल ग सुलू.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

४७ कुम्भारि. म, ग, ल. १७

मा ग्ले कुम्भारि.

४८ भ्रू. य, ग, ल. १८

य गू ले भ्रू ज.

४९ -ही. र, ग, ल. १९

-ही र गी लेर्थी.

५० पालि. स, ग, ल. २०

स ग ले पालि.

५१ किंजल्कि. त, ग, ल. २१

किंजल्कि ता ग्ल.

५२ वार्द्धि. ज, ग, ल. २२

ज गा ल वार्द्धि.

५३ विद्. भ, ग, ल. २३

विद् भ गा ला र्थां.

५४ पांशु, वाकि. न, ग, ल. २४

न ग ले पांशु,

५५ मालिन. म, ल, ल. २५

म्ला ले मालिन.

५६ वरीय. य, ल, ल. २६

वरीये यल ल.

५७ कल्कि. र, ल, ल. २७

कल्कि री ल ल.

५८ जतु, नायक. स, ल, ल. २८

स लि ले जतु.

५९ छिद्र. त, ल, ल. २९

छिद्रे त ल ल.

६० क्षुप, हर. ज, ल, ल. ३०

ज ला ल क्षुप.

६१ क्षुत, विष्णु, पंचा, पंच.§ भ, ल, ल. ३१

भू ल ल क्षुत.

§ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ

६२ हलि, जनमि, झमक, जमकाणा, जमक, यमक, आत्मक. } न, ल, ल. ३२

न ल ल हलि.

६ गायत्री छंद. ६४ भेद छे. छ वर्ण.

६३ विद्युल्लेखा, शेषा, शेषराज, शेष.† म, म. १

मा मे विद्युल्लेखा.

† शेष नाम प्राकृत पिंगळसूत्रमां छे

६४ पंथा. य, म. २

य मे पंथा थाशे.

६५ करेणू. र, म. ३

छे करेणू रा मे.

६६ अभिख्या. स, म. ४

अभिख्या सा मा थी.

सगणे माभिख्या.

(सगण म अभिख्या.)

६७ बभ्रू. त, म. ५

ता मा थकी बभ्रू.

६८ कञ्जा. ज, म. ६

ज मा थकी कञ्जा.

६९ सिन्धुरया. भ, म. ७

सिन्धुरया भा मे.

७० गुणवती, शशिभृता. न, म. ८

गुणवती ना मे.

७१ तंत्री. म, य. ९

मा ये थाय तंत्री.

७२ सोमराजी, शंखधारी, अर्द्धभुजंगी, हरिशंखाणा, शंखनारी, सोमराज. } य, य. १०

य ये सोमराजी.

गणप्रस्तारप्रकाशमा १० मात्रानु सामान्य नाम सोमराजी राख्युं छे. तेना उदाहरणमा आज प्रमाणे बे यगण आवे छे

मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा "हरशखाण" नाम आप्यु छे.

७३ पिकाली. र, य. ११

रा य थी पिकाली.

७४ कमनी. स, य. १२

कमनी स यी थी.

७५ तनुमध्या, चौरस (छंदःप्रभाकर.) त, य. १३

ता ये तनुमध्या.

७६ अरजस्का. ज, य. १४

ज ये अरजस्का.

७७ इति, कामलता. भ, य. १५

छे इति भ ये थी.

७८ शशिवदना,[1] शशिमुखी, चोरसा,[2] चउवंशा,[3] चउरंसा,[4] चंडरसा, सीसा, चतुरवर्णा, चतुरंशा,[5] मदरशीर्षा,[6] चतुरंस्र.[7] — न, य. १६

शशिवदना न्ये, शशिमुखी ना ये.

१ छंदःप्रभाकरमां आनुं पादाकुलक-एवुं नाम पण जणावे छे, पृष्ट. १३३. २ भगवत पिंगळमां. ३ मनहर पिंगळ अने छंदःशृंगारमां. ४ नागराज पिंगळमां. ५ पृथीराजरासा तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमां ए नाम छे. ६ नाट्यशास्त्र प्रमाणे. ७ छंदोवृत्तमुक्तावलिमांथी. आ रूप गणप्रस्तारप्रकाशमां मात्रामेळमां मण्युं छे.

७९ अवोढा. म, र. १७

थाया ऽवोढा म रे.

(थाय अवोढा म रे.)

८० कच्छपी. य, र. १८

य रे थी कच्छपी.

८१ विमोहा, विजोहा, विज्जोहा[1], अर्द्ध-कामर्मोहिनी, स्रग्विणी, रसावली, चंद्रमाला, विज्जोदा[2], वियोधा, जोहा. } र, र. १९

छे विमोहा र रे.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलि तथा गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे.
२ छंदःप्रभाकर पृष्ट १३४.

८२ मृदुकीला. स, र. २०

मृदुकीला स रे.

८३ स्थाली, खंडा. त, र. २१

स्थाली त रा थकी.

८४ वलीमुखी,‡ वाणी. ज, र. २२

ज रे वलीमुखी.

‡ छंदोलता आनु नाम नगानिका केहेछे, पण अक्षर चारमां ज ग ना मापथी नगानिका छे, माटे ते मानवा जोग नथी.

८५ शुनक. भ, र. २३

शुनक भ र थी.

नाट्यशास्त्रमा आने शालिनी नाम आपेछे, पण शालिनी अक्षर ११मां प्रसिद्ध छे, माटे ते वात मान्य नथी

८६ निरसिका, गिरा[1] न, र. २४

निरासिका न रे. न र गिराविषे.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

८७ निस्का, सोमकुल, वीर्या[2]. म, स. २५

निस्का मा स थकी.

२ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

८८ मशगा. य, स. २६

य सा थी मशगा.

८९ कर्मदा, तिल. र, स. २७

कर्मदा र स थी.

९० तिलका, अर्द्धतोटक, झील,[1] तिल्लना, दंडलय, तिल्ल, ध्वज, डिल्ल,[2] खंडलया,[3] डिल्ला,[4] वनिता,[5] तिल्ला.[6] } स, स.

तिलका स स थी.

१ छंद शृंगार २–३ नागराज पिंगल
४ छंद सार ५ छंदोल्ता
६ छंद प्रभाकर पृष्ठ १३५
खंडलया नाम मागधी पिंगलछंदोग्रथमां पण छे

९१ वसुमती, कमला.§ त, स. २

ता से वसुमती.

§ गणप्रस्तारप्रकाश.

९२ कुही. अपरभा†. ज, स. ३

ज से कर कुही.

† गणप्रस्तारप्रकाश.

९३ सौरभि. भ, स. ३१

सौरभि भ स थी.

९४ सरि. न, स. ३२

सरि न स थकी.

९५ साहूति. म, त. ३३

मा ती थी साहूति.

९६ विन्दु य, त. ३४

यतीथी छे विन्दु

९७ मन्त्रिका.　　　　　　र, त. ३५

मंत्रिका रा ता थीं.

९८ हुण्डि.　　　　　　स, त. ३६

स त थी तो हुण्डि.

९९ मन्थान, मंथाणा, मंथाण, मन्थानक. त, त. ३७

तं ता थीं मन्थान. मन्थानके ता त.

१०० क्षमापालि.　　　　　　ज, त. ३८

ज ता क्षमापालि.

१०१ राढि.　　　　　　भ, त. ३९

भा त थकी राढि.

१०२ अनिभृत.　　　　　　न, त. ४०

अनिभृते ना त.

१०३ मङ्कुर.　　　　　　म, ज. ४१

छे मंकुर मू ज.

१०४ यृत्तहारि.　　　　　　य, ज. ४२

य जे वृत्तहारि.

१०५ धारिका (छंदोलता), आर्भव.　　　　र, ज. ४३

धारिका र जा थीं.

१०६ मधुमारक.　　　　　　स, ज. ४४

मधुमारके स्ज.

१०७ हाटकनालि, मंथान, शशिगट.　　　　न, ज. ४५

न्जा हाटकनालि.

1 छंदंग.

१०८ वसंत-मालतिका[१], मालती, मानवक[२], *मनोहर, ‡मानव. } ज, ज. ४६

वसंत ज जा थीं.

मनोहर जा ज.

ज्ज मालती थाय.

१ छंदोलता. २ मा. पि. छ. ग्रंथ चि. टी. *छंदोरत्नमुक्तावलिमांथी. ‡ मागधी पिंगलछंदोग्रंथ.

छंदःप्रभाकरमां घणा मते आ वृत्तनुं माप उपर प्रमाणेज छे, पण कोइ कोइ पिंगलकार, त य, अने ज यथी आनु माप बतावेछे, पण तेवा मापना बीजा वृत्तो आ पिंगलमां दाखल छे.

१०९ पाकलि. भ, ज. ४७

पाकलि भ जा थीं.

११० पुटमर्दि, करहंचा. न, ज. ४८

न ज पुटमर्दि.

१११ कंसारि. म, भ. ४९

कंसारि मा भ थीं.

११२ सोमश्रुति. य, भ. ५०

य भे सोमश्रुति.

११३ सोपधि. र, भ. ५१

रो भ थी सोपधि.

११४ शङ्खद्युति. स, भ. ५२

स भ शंखद्युति.

११५ इन्धा. त, भ. ५३

इन्धा त भा थकी.

११६ सावट्टु. ज, भ. ५४

ज भार्यो सावदु.

११७ नन्दि, सुमन्दर (छंन्दार्णव प्रमाणे.) भ, म. ५५

नन्दि भ भी थकी.

११८ अयमित. न, म. ५६

अयमिते न भ.

११९ मोथा. म, न. ५७

छे मोथा म न थी.

१२० आर्त. य, न. ५८

य ने आर्त कर.

१२१ मतरि. र, न. ५९

री न थी मतरि.

१२२ विससि स, न. ६०

स नथी विससि.

१२३ अतिकलि. त, न. ६१

ती ने अतिकालि.

१२४ सुदाधि. ज, न. ६२

सुदाधि ज न थी.

१२५ अनति. भ, न. ६३

भी न थी अनति.

१२६ दमनक, उपमालि, दमन
मदनक, मदन, [1]मदकल. } न, न. ६४

न न दमनक.

[1] छंदोदर्पण प्रमाणे.

७ उष्णिक छंद. १२८ भेद थायछे. सात वर्ण.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कह्युं छे के "सात अक्षरना छंदमां चे अने पांचे यति थाय" एम केटलाएकनुं मत छे

१२७ शीर्षा, शिखा, शिष्या[1], शीर्षरूपक, शीर्षक, लक्ष्मी, [2]मेराङ, [3]मुक्तागुम्फ. म, म, ग. १

मा मा गा थी छे शीर्षा.

१ छंदप्रभाकर २ गणप्रस्तारप्रकाश ३ छंदोरत्नमुक्तावलि

१२८ प्रहाण. य, म, ग. २

प्रहाणे या मा गा छे.

१२९ सैरवी. र, म, ग. ३

सैरवीमां रा मा गा.

१३० शम्बूक. स, म, ग. ४

स म गा छे शम्बूके.

१३१ निम्नाशया. त, म, ग. ५

निम्नाशया ता मा गे.

१३२ सुमोहिता. ज, म, ग. ६

सुमोहिता जा मा गे.

१३३ अधीरा. भ, म, ग. ७

थाय अधीरा भ्मा गे.

१३४ होला. न, म, ग. ८

न म ग थी होला छे

१३५ इभभ्रान्ता. म, य, ग. ९

मा या गे इभभ्रान्ता.

१३६ अभीक. य, य, ग. १०

अभीके य या गा छे.

१३७ अहिंसा. र, य, ग. ११

रा य गे अहिंसा छे.

१३८ रसधारि. स, य, ग. १२

रसधारि सा या गे.

१३९ वेधा, भक्ति.[1] त, य, ग. १३

वेधा रच ता या गे.

[1] छंदःप्रभाकरवाळे मूळनुं वेधा नाम न जाणवाथी आ भक्ति नाम नवु कल्प्यु छे.

१४० पद्या. ज, य, ग. १४

ज या ग थकी पद्या.

१४१ किणपा. भ, य, ग. १५

थाय किणपा भ्या गे.

१४२ सुरि. न, य, ग. १६

सुरि न य गा थी छे.

१४३ किर्मीर. म, र, ग. १७

किर्मीरे छे म रा गा.

१४४ वयस्य, जयमंगल (प्रवीणसागरमां). य, र, ग. १८

वयस्ये या र गा छे.

१४५ भूरिधामा. र, र, ग. १९

भूरिधामा र रा गे.

१४६ हंसमाला. स, र, ग. २०

स र गे हंसमाला.

१४७ भीमार्जन. त, र, ग. २१

भीमार्जने त रा गा.

१४८ एरोहिता. ज, र, ग. २२

पुरोहिता ज रा गे.

१४९ होडपदा. भ, र, ग. २३

होडपदा भ रा गे.

१५० खरकरा. न, र, ग. २४

खरकरा न रा गें.

१५१ मदलेखा. म, स, ग. २५

मा सां गे, मदलेखा.

आ वृत्तमां केटलाएक ३, ४ यति मानेछे. वळी कोइ आना बमणाने ख्डीला वृत्त केहेछे.

१५२ महनीया. य, स, ग. २६

य सा गे महनीया.

१५३ शरगीति. र, स, ग. २७

रा स गे शरगीति.

१५४ करभित्, रैरंग (पि. छं. ग्रं.). स, स, ग. २८

करभिद्ध स गा थी.

१५५ स्थूला. त, स, ग. २९

स्थूला रचं तसागे.

१५६ कुमारललिता,[1] ललत,[2] अविराम, रायपति. ज, स, ग. ३०

कुमारललिता तो,

ज सा ग थकी थावो.

१ ये पांचे यति लगवा कोइ केहेछे. छंदःप्रभाकर आदि ग्रथोमां यति क्हीं नथी. आठ अक्षरमां आ नामनुं वृत्त अंक २९८ मे छे.

२ गणप्रगारप्रकाशमां.

१५७ रुचिर. म, म, ग. ३१

भा स ग रुचिरे छे.

१५८ दृति, करह. न, स, ग. ३२

दृति-करह ना स गे.

१५९ हिन्दीर, सालका(गणप्रतारप्रकाश). म, त, ग. ३३

हिन्दीरे मा ता ग छे.

१६० उपिक. य, त, ग. ३४

य ता गा, छे उपिके.

पिंगलछन्दःसूत्र प्रमाणे ३, ४ यति.

१६१ मृष्टपादा. र, त, ग. ३५

मृष्टपादा रा त गे.

१६२ मायाविनी. स, त, ग. ३६

स त गे मायाविनी.

१६३ राजराजी, भिन्ना. त, त, ग. ३७

भिन्ना त ता गा थकी,

छे राजराजी नकी.

१६४ कुठारिका. ज, त, ग. ३८

कुठारिका जा त गे.

१६५ कल्पमुखी, लीला.[1] भ, त, ग. ३९

कल्पमुखी भी त गे.

1 छंद-प्रभाकरमां आ नामछे.

१६६ परभृत. न, त, ग. ४०

परभृते ना त गा.

१६७ महोन्मुखी. म, ज, ग. ४१

मा जी गे महोन्मुखी.

१६८ महोद्धता, कुमारिका.[1] य, ज, ग. ४२

य जा गे महोद्धता.

१ गणप्रस्तारप्रकाश.

१६९ चामर, समानिका,[1] समाना,[2] वाणी.[3] र, ज, ग. ४३

छे समानी रा ज गे.

१ छंदोवृत्तमुक्तावली. २ भगवतपिंगळ अने कामदुघावृत्त.
३ एक मागधी पिंगळ.

१७० कठोद्गता. स, ज, ग. ४४

स ज गे कठोद्गता.

१७१ पूर्णा. त, ज, ग. ४५

पूर्णा त ज गा थकी.

१७२ वह्निर्वल्लि. ज, ज, ग. ४६

वह्निर्वल्लि जा ज गे.

१७३ उन्दरि. भ, ज, ग. ४७

उन्दरि भजा गथी.

१७४ पुरटि. न, ज, ग. ४८

पुरटि नजा गथी.

१७५ चर्करिता, सुभग, खंगा,[1] खंगा, खंजा, खंडका.[2] भ, भ, ग. ४९

मा भा गे चर्करिता.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ. २ गणप्रस्तारप्रकाश.

१७६ केशवती. य, भ, ग. ५०

य भा गे केशवती.

१७७ सौरकान्ता. र, भ, ग. ९१

सौरकान्ता र भ गे.

१७८ अधिकारी. स, भ, ग. ९२

अधिकारी स भ गे.

१७९ निर्वाधिका, चूडामणि. त, भ, ग. ९३

निर्वाधिका त भ गे.

१८० महोधिका ज, भ, ग. ९४

महोधिका ज भ गे.

१८१ मौरलिक, कलिता, कलका.[१] भ, भ, ग. ९५

मौरलिके भ भ गा.

१ गणप्रस्तारप्रकाश.

१८२ स्वनकरी. न, भ, ग. ९६

स्वनकरी न भ गे.

१८३ नवसरा, मदलेखा.[१] म, न, ग. ९७

मा ना गे नवसरा.

१ गणप्रस्तार प्रकाश

१८४ चिररुचि. य, न, ग. ९८

य ना गे चिररुचि.

१८५ बहुलया. र, न, ग. ९९

रा न गे बहुलया.

१८६ यमनक. स, न, ग. ६०

स न गा यमनके.

१८७ हीर. त, न, ग. ६१

छे हीर त न गथी.

१८८ खिद्रा. ज, न, ग. ६२

स्विदा रच़ ज न गे.

१८९ उलपा. म, न, ग. ६३

भा न ग थीं उलपा.

१९० मधुमती, मधुमत, वास्तुमती.[1] न, न, ग. ६४

न न ग मधुमती.

१ छंदोलता वि एस आप्टेनी डिक्षनेरीमा पाच वेये यति कही छे

१९१ नीहारी. म, म, ल. ६५

नीहारी मा मा ला थीं.

१९२ कंसासारि. य, म, ल. ६६

य मा ले कंसासारि.

१९३ खर्विणी. र, म, ल. ६७

खर्विणी रा मा ले थीं.

१९४ गृहिणी. स, म, ल. ६८

गृहिणी सा मा ले थीं.

१९५ वर्द्धिष्णु, शूर. त, म, ल. ६९.

ता मा ल थी वर्द्धिष्णु.

१९६. श्रोणी. ज, म, ल. ७०.

ज मा ल थी श्रोणी ज.

१९७ व्याहारि. म, म, ल, ७१

भा म ल थी व्याहारि.

१९८ किशलय. न, म, ल. ७२

किशलये ना मा ल.

१९९ देवल. म, य, ल. ७३

-म्या ला देवले थाय.

२०० नर्दि. य, य, ल. ७४

य या ला थकी नर्दि.

२०१ अनासादि. र, य, ल. ७५

रा य ले अनासादि.

२०२ अलालापि. स, य, ल. ७६

स य ले अलालापि.

२०३ गुञ्जा. त, य, ल. ७७

गुञ्जा त य ले थाय.

२०४ ऋचा. ज, य, ल. ७८

ऋचा ज य ले थाय.

२०५ नन्दथु. भ, य, ल. ७९

नन्दथु भ या ले थॉ.

२०६ अनु. न, य, ल. ८०

अनु न य ला थीज.

२०७ अम्मेथी. म, र, ल. ८१

अम्मेथी मो र ले थॉ.

२०८ मयूरी. य, र, ल. ८२

मयूरी या र ले थॉ.

२०९ सामिका. र, र, ल. ८३

सामिका रा र ले थॉ.

२१० प्रोञ्छिता. स, र, ल. ८४

स र ले प्रोञ्छिता ज.

२११ वृन्दा. त, र, ल. ८५

वृन्दा विषे त रा ल.

२१२ मतार्दि, स्वरूप, सरूप.[1] ज, र, ल. ८६

मतार्दि जा र ला थीं

[1] सरूप नाम मागधी पिंगळछंदोप्रथनी चिन्तसेन टीकामां छे.

२१३ मीनपदी. भ, र, ल. ८७

मीनपदी भ रा ल.

२१४ मणिमुखी. न, र, ल. ८८

मणिमुखी न रा ल.

२१५ मौलिस्रक्. म, स, ल. ८९

मौलिस्रक् म स ला थीं.

२१६ परभानु. य, स, ल. ९०

य सा ले परभानु.

२१७ मेथिका. र, स, ल. ९१

मेथिका र स ले थीं.

२१८ गोधि. स, स, ल. ९२

स स ले कर गोधि.

२१९ सरलाग्नि. त, स, ल. ९३

ता सा ल सरलाग्नि.

२२० विरोहि. ज, स, ल. ९४

ज सा ल थीं विरोहि.

२२१ वरजापि. भ, स, ल. ९५

भा स ल वरजापि.

२२२ अहरि, करहंतृ, कलहंस, करहन्ता, करहंज, करहंच, करहंची, करहंस, करहंत, वन्छ. न, स, ल. ९६

अहरि नसलेथी.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलि. २ छंदःप्रभाकर. ३ गणप्रस्तारप्रकाशमां आने ८ मात्रानुं २१मु रुप गणी तेनु नाम स्वच्छ आप्युं छे.

२२३ सम्पाक. म, त, ल. ९७

सम्पाके मातालघु.

२२४ पद्धरि. य, त, ल. ९८

यतोलेथी पद्धरि.

२२५ गूर्णिका. र, त, ल. ९९

गूर्णिका रातालथी.

२२६ काही. स, त, ल. १००

सतले काही कर.

२२७ कामोद्धता. त, त, ल. १०१

कामोद्धता तातल.

२२८ स्वर्परि. ज, त, ल. १०२

जतालथी स्वर्परि.

२२९ शंतनु, लीला. भ, त, ल. १०३

शन्तनुमां भातल.

"छंदार्णवमां" अंते गुरु वर्ण्यो छे, ते भूल छे.

२३० मुरजिका. न, त, ल. १०४

मुरजिका नातल.

२३१ काललम्बी. म, ज, ल. १०५

काललम्बी मजालथी

२३२ उपोहा. य, ज, ल. १०६

उपोहा यजा लघु.

२३३ कार्पिका. र, ज, ल. १०७

कार्पिका रजा लघु.

२३४ मुहुरा. स, ज, ल. १०८

मुहुरा स जो लघु.

२३५ दोपा. त, ज, ल. १०९

दोपा रच ता ज ल.

२३६ उपोदरि. ज, ज, ल. ११०

उपोदरि जो ज ल.

२३७ जासरि. भ, ज, ल. १११

जासरि भ जे ल थॅ.

२३८ वासकि, सुवासक,[१] सुवासा,[२] सवासानि, सुवास, रासा, सवासन.[३] } न, ज, ल. ११२

न ज ल थॉ वासकि.

१ गणप्रस्तारप्रकाश. २ छंदोवृत्तमुक्तावलि. ३ छंदःप्रभाकर

२३९ भूरिमधु. म, भ, ल. ११३

मा भाले भूरिमधु.

२४० भूरिवसु. य, भ, ल. ११४

य भा ले भूरिवसु.

२४१ हर्पिणी. र, भ, ल. ११५

हर्पिणीमां र भ ल.

२४२ लोलतनु. स, भ, ल. ११६

स भ ले लोलतनु.

२४३ क्रोडान्तिक. त, भ, ल. ११७

क्रोडांतिके त भ ल.

२४४ स्तराधि. ज, भ, ल. ११८

ज भा ल थी स्तराधि.

२४५ पौरसरि. भ, भ, ल. ११९

भा भ ल पौरसरि.

२४६ वीरवटु. न, भ, ल. १२०

न भ ल वीरवटु.

२४७ अमति. म, न, ल. १२१

मा ना ले थी अमति.

२४८ अहति. य, न, ल. १२२

य ना ले थी अहति.

२४९ वरशशि. र, न, ल. १२३

रा न ले वरशशि.

२५० धनधरि. स, न, ल. १२४

स न ले धनधरि.

२५१ सुपंक्ति. त, न, ल. १२५

ता ना लघु सुपंक्ति.

२५२ कुरादि. ज, न, ल. १२६

ज ना लघु कुरादि.

२५३ कोशि. भ, न, ल. १२७

कोशि कर भ न ल.

२५४ अचटु, सुमत (ग.प्र. प्र.). न, न, ल. १२८

अचटु न न लघु,

स स गा ग धराशे तो.

२७२ भार्गी. ज, स, ग, ग. १०

ज सा ग ग थकी भार्गी.

२७३ रुद्राली. न, स, ग, ग. १२

न स ग गथी रुद्राली.

२७४ पारान्तचारी. य, त, ग, ग. १४

य त ग्गे पारान्तचारी.

२७५ कौंचमार. स, त, ग, ग. १६

स त गा गा कौंचमारे.

२७६ कराली, कामताका, केतुमाला. त, त, ग, ग. १७

ता ता ग गा थी कराली.

२७७ वारिशाला, वितान, वितान. ज, त, ग, ग. १८

ज ते ग गे वारिशाला.

छंदःप्रभाकरमा विताननना गण स, भ, ग, न कह्या छे, पण तेवा मापनो अतिमोह्य ५२ मा रूपनो छे, एटले ए अभिप्राय माग्य नथी. वळी वाग्वल्लभ तथा मात्राछंदोमंजरीमा पण विताननना गण ज, त, ग, ग. छे.

२७८ वान्तभार, न, त, ग, ग. ४०

न त ग गा वान्तभारे.

२७९ सिंहलेखा. र, ज, ग, ग. ४३

रा ज गी ग सिंहलेखा.

२८० दिग्गीश. स, ज, ग, ग. ४४

स ज गा ग छे दिग्गीशे.

२८१ सारावनदा. त, ज, ग, ग. ४५

सारावनदा त जा ग्गे.

२८२ कृष्णगतिका. भ, ज, ग, ग. ४७

कृष्णगतिका भ जा गो.

२८३ मतिसीरा, खंजा,‡ खंज.* म, भ, ग, ग. ४९

मो भे गी गे मतिसीरा.

‡ एक माराठी पिंगळ, जेना उपर चित्रसेननी टीका छे, तेमा खजाने SS-SS-IIS-IS प्रत ने नाना करी मात्रामा दाखल कर्यो छे, पण बीजा पिंगळोमाथी उपरनुं माप मळ्या, तथा आज प्रमाणथी ते वर्णमेळनो सिद्ध थतो अहिं दाखल कर्यो छ

*गणप्रस्तार प्रकाश

२८४ अतिमोहा. स, भ, ग, ग, ५२

स भ गा गे अतिमोहा.

२८५ चतुरीहा. ज, भ, ग, ग. ५४

ज भे ग गे चतुरीहा.

२८६ चित्रपदा, चित्रपद. भ, भ, ग, ग. ५५

चित्रपदा भ भ गा गे.

२८७ द्रुतमुखी. न, भ, ग, ग. ५६

द्रुतमुखी न भ गी गे.

२८८ हंसरुत[1], हंसपदी[2]. म, न, ग, ग. ५७

म्नागो हंसरुत थाशे.

१ छंदोमंजरीमां हंसरुत नाम छे २ छंदोलता।

२८९ संध्या, बोधा (गण. प्र. प्र.). त, न, ग, ग. ६१

संध्या त न ग ग आवे.

२९० तुंगा, तुंग, तुरंग (छंद प्रभाकर). न, न, ग, ग. ६४

न न ग ग कर तुंगे. -

२९१ विहावा. य, य, ल, ग. ७४

विहावा य या ला गर्यो.

८ अनुष्टुप् छंद. २५६ भेद थायछे. आठवर्ण.

२५५ विद्युन्माला, विद्युन्लेखा, वीजुमाला, [1]ब्रंदामाला, मौक्तिकातिलक, विज्जुमाला, विद्वनमाला, [2]सोमकान्त, [3]सोमक्रान्त, [3] सोमकंतो, [3] सोमकंतो, [3] महाणी, सोमक.	म, म, ग, ग. १

मा मा गा गे, विद्युन्माला.

१ गणप्रस्तारप्रकाश. २ मुनिसुंदरपिंगलमांथी. गणप्रस्तारप्रकाशमां आने १६ मात्रानु पेहेलुं रूप गण्यु छे, अने तेमा अर्धे यति कही छे. विद्युन्माला, राग झींझोटी ताल चतुश्र जाति त्रिपुट. संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे.

३ मागधी "छंद शतक" प्रमाणे. चारे चारे विश्राम.

२५६ अनिर्भार. स, म, ग, ग. ४

स म गा गा ऽनिर्भारे छे.

२५७ इन्द्रफला, इन्द्रवला, दंडलिया. भ, म, ग, ग. ७

इन्द्रफला भा मा गा गे.

२५८ गोपावेदी. न, म, ग, ग. ८

न म ग गे गोपावेदी.

२५९ भूमधारी. य, य, ग, ग. १०

बने भूमधारी य्या गे.

२६० मौलिमालिका. र. य, ग, ग. ११

मौलिमालिका यों गा गे.

२६१ युगधारि. स, य, ग, ग. १२

युगधारि सा या गा गे.

२६२ विराजिकरा. ज, य, ग, ग. १४

विराजिकरा ज्या गा गे.

२६३ वात्या. भ, य, ग, ग. १५

भा य ग ग थी छे वात्या.

२६४ पाञ्चालांघ्रि, पञ्चास्यांघ्रि, वस्तु.[1] } न, य, ग, ग. १६

न य ग ग पांचालांघ्रि.

१ छंदोलता.

२६५ श्लोक. म, र, ग, ग. १७

मा रा गी गा धरो श्लोके.

२६६ कुलाधारी, शुद्धगा. य, र, ग, ग १८

कुलाधारी यरी गी गे.

प्रवीणसागर लेहेर ७१ मीए "चिंतामणी" नामनो छद छे, ते आनो अपभ्रंश थयो होय एम जणायछे ए फारसी गझलनी रीते गवायछे.

२६७ परिधारा. स. र, ग, ग. २०

परिधारा स रा गा गे.

२६८ यशस्करी. ज, र, ग, ग. २२

यशस्करी ज री गा गे.

२६९ कुररिका. न, र, ग, ग. २४

कुररिका न रा गा गे.

२७० मनोला. य, स, ग, ग. २६

मनोला य स गा गे थी.

२७१ रमणियशिखा, पञ्चशिखा स, स, ग, ग. २७

रमणीयशिखाए तो,

२९२ हेमरूप. र, र, ल, ग. ८३

हेमरूपे र रा ल गी.

२९३ शल्लकप्लुत. स, र, ल, ग. ८४

स ल गा शल्लकप्लुते.

२९४ नाराचिका, नाराच, आणंद, आनन्दरूपक. } त, र, ल, ग. ८५

नाराचिका त रा ल गे.

२९५ प्रमाणिका, प्रमाणी[1], पावाणी, अर्द्धनाराच, सामाणी, प्रवाणिका, नगस्वरूपिणी, लघुनाराच[2]. } ज, र, ल, ग. ८६

प्रमाणिका ज रा ल गे.

१ मदारमरंदचंपूनी टीकामां केहेछे के, कोइ प्रमाणी एवुं नाम पण आपेछे

२ नानक गुरुनी कवितामां नराज एवुं नाम आपेछे

राग परज ताल जल्द दादरो (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

२९६ नराची, नाराची. भ, र, ल, ग. ८७

भा र ल गा नराचीमां.

कोइ पिंगळकार आ वृत्तने लघुनाराच केहेछे. पण ते अयोग्य छे.

२९७ उपलिनी, कुलवती. न, र, ल, ग. ८८

उपलिनी न रे ल गे.

२९८ कलिला, करिला. स, स, ल, ग. ८९

कलिला स सा ला ग थी.

२९९ कुमारललिता[1], कुमारिका[2]. ज, स, ल, ग ९४

ज सा ल ग पदे धरो,

कुमारललिता करो.

१ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकाना २९८ टिप्पणमां लेख छे के,

कुमार ललिता ज्सौ गौ इति सूत्रं क्वचित् पण जसगग मापवालुं भांगि वृत्त २७२मे अंके जुदुं छे. जसग एवा मापनुं कुमारललिता नामनुं वृत्त अंक १५६मे उष्णिक्नु ३०मु रूप छे. २ गणप्रस्तारप्रकाश.

३०० लसदसु, कमल[1], पद्म, कमला[2]. न, स, ल, ग. ९६

लसदसु नसा लगे.

१ मनोहरपिंगळमां कमला छे पण बृहतिनो २५६मो भेद कमला नाम छे. वळी छंदो वृत्तमुक्तावलिमां पण कमल नाम नीकळेछे माटे कमल खरुं छे.

२ मागधी पिंगळटदोमय

३०१ सरधा. स, त, ल, ग. १००

सरधा सा ता ल ग थी.

३०२ वितान. ज, त, ल, ग. १०२

वितान जा ता ल ग थी.

३०३ माणवक, माणवकक्रीड, माणवकक्रीडित, पायक, नरक्रीड, मानवक्रीडा, सुरक्रीडा,[1] माणव. भ, त, ल, ग. १०२

भू त ल गा, माणवके.
चार परे, छेद टके.

राग सारंग, ताल जलद दादरो (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे) मंदारमरंदचंपूमां पण " माणवक " नुं माप तथा यति आ प्रमाणे आप्या छे

१ गणप्रस्तारप्रकाश.

३०४ माण्डवक. न, त, ल, ग. १०४

न त ल गा माण्डवके.

३०५ हठिनी. म, ज, ल, ग. १०६

मो जा ला ग थी हठिनी.

३०६ श्रद्धरा, उद्धरा. र, ज, ल, ग. १०७

अद्धरा र जा ल ग थी.

३०७ विद्या, उध्या. त, ज, ल, ग. १०९

विद्या त ज ला ग थकी.

३०८ अरालि. ज, ज, ल, ग. ११०

अरालि ज जा ल ग थी.

३०९ अखनि. न, ज, ल, ग. ११२

अखनि न जा ल ग थी.

३१० कुरुचरी. र, भ, ल, ग. ११९

रा भ ला गे कुरुचरी.

३११ गजगति. ४, ४ वर्णे यति. न, भ, ल, ग. १२०

नभ लगे, गजगति,
चतुर पें, धर यति.

३१२ शिखिलिखिता, हंसरुत. म, न, ल, ग. १२१

म्ना ला गे शिखिलिखिता.

३१३ ईडा, ईला. त, न, ल, ग. १२५

ईडा त न ल ग थकी.

३१४ अरि. भ, न, ल, ग. १२७

भा न ल ग अरि विषे.

३१५ हरिपद, हृतपद. न, न, ल, ग. १२८

हरिपद न न ल गे.

३१६ नागारि. स, य, ग, ल. १४०

स य गा लथी नागारि.

३१७ लक्ष्मी. र, र ग, ल. १४७

रा र गा ला थी लक्ष्मी ज.

३१८ वलीकेन्दु. स, र, ग, ल. १४८

स र गा ले वलीकेन्दु.

३१९ अमानिका. ज, र, ग, ल. १५०

अमानिका ज रा गा ल.

३२० नखपदा, मालती. न, र, ग, ल. १५२

नखपदा न रा गा ल.

३२१ हरित् न, स, ग, ल. १६०

हरित न स गा ला थी.

३२२ किप्कु. त, त, ग, ल. १६९

ता ता ग ले थाय किप्कु.

३२३ मल्लिका, समानिका[1] मालिका, मदनमल्लिका. र, ज, ग, ल. १७१ चार वर्णे यति.

मल्लिका र, जा ग ले थी.

३२४ ताणी. (मा. पि. छं ग्रं) म, भ, ग, ल. १७७

ताणी मा भा ग ल थीज.

राग दिव्य हींडोल जाति एक ताल मध्य काळ विश्र (संगीत छंदो मंजरी प्रमाणे)

१ वळी मदार मरद चपूर्मा पण नाम तथा यति आ प्रमाणे छे

३२५ अनूतनर्म, नूतनर्म (छंद प्रभाकर)स, भ, ग, ल. १८०

नूतनर्म स भ गा ल.

३२६ अमरान्दि, हनुमन्त. त, भ, ग, ल. १८१

ता भा ग ले अमरान्दि.

३२७ कुलचारि. ज, भ, ग, ल. १८२

ज भा ग ले कुलचारि.

३२८ दीपका. म, न, ग, ल. १८८

दीपका स न ग ले थीं.

३२९ करंजि. ज, न, ग, ल. १९०

करंजि ज न ग ले थीं.

३३० वृन्तं. स, म, ल, ल. १९६

स म ला ला वृन्तें कर.

३३१ शाखोटकि. ज, म, ल. ल. १९८

ज मा ल ले शाखोटकि.

३३२ पञ्जरि. भ, म, ल, ल. १९९

भू म ल ले थी पंजरि.

३३३ अमीता, मीता, अतिमीता, अलिमीता. } न, म, ल, ल. २००

न म ल ले ऽमीता रच.

३३४ मन्थरि. म, य, ल, ल. २०१

मा या ला ल थी मन्थरि.

३३५ वातुलि. य, य, ल, ल. २०२

य या ला ल थी वातुलि.

३३६ रामा. (छंदःप्रभाकर) त, य, ल, ल. २०५

रामा त य ला ले रच.

३३७ भापा, भासा, संभापा, संभासा. } य, र, ल, ल. २१०

रचो भापा य रा ल ल.

३३८ विपुला. (छंदःप्रभाकर.) भ, र, ल, ल. २१३

-छे विपुला भ रा ल ल.

३३९ पाकलि. न, र, ल, ल. २१६

नरललेर्थां पाकालि.

३४० अमना, अमनसु. स, स, ल, ल. २२०

अमना ससलालर्था.

३४१ आकतनु. ज, त, ल, ल. २३०

जतालले आकतनु.

३४२ अखेट. र, ज, ल, ल. २३९

रजलले अखेट रन्.

३४३ अतिजनि. म, भ, ल, ल. २४१

मोभालाले अनिजनि.

३४४ सुतमधु. स, भ, ल, ल. २४४

सभलाले सुतमधु.

३४५ मरु. ज, भ, ल, ल. २४६

जभालले रन् मरु.

३४६ चयन. य, न, ल ल. २५०

यनाललर्था चयन.

३४७ कुशक. र, न, ल, ल. २५१

रानलालर्था कुशक.

३४८ निरुद, निरद स, न, ल, ल. २५२

सनलालर्था निरुद.

३४९ सन्धुक त, न, ल, ल. २५३

सन्धुक तनललर्था.

३५० क्षर, क्षुर. ज, न, ल, ल. २५४

जनालल क्षुर धर.

३५१ वेपि, वेशि. भ, न, ल, ल. २५५

वेपि भ न ल ल थकी.

३५२ कृतयु, कुशयु, नरहरी.[1] न, न, ल, ल. २५६

न न ल ल थी कृतयु.

[1] गणप्रस्तारप्रकाश

९ बृहतिछंद. ५१२भेद थायछे. नव वर्ण.

३५३ रूपामाली, रूपमाला, रूपमाली, रूपा. म, म, म. १

रूपामाली माहे मा मा मा.

३५४ मेघालोक. य, म, म. २

य मो मा आवे मेघालोके.

३५५ स्निग्धा[1], मणिमध्या. ५, ४ यति. भ, म, म. ७

भो म म आणो, स्निग्धा जाणो.

[1] मंदारमरदचम्पू

३५६ मायासारी. न, य, म. १६

नि य म थकी मायासारी.

३५७ खेलाढ्य. म, स, म. २९

मा सा मा रचजो खेलाढ्ये.

३५८ उदरथि, उदरसक, उदरासक[1]. स, स, म. २८

उदरथि स सा मे थाशे.

[1] आ मापनो छंद नागराजपिंगळमां विस्था करीने लख्यो छे, पण ते भूल छे, केमके ३६७मे अके ५६मो भेद ए नामनो छे

३५९ वैसारू, वैसार. त, स, म. २९

जाणो त स म थी वैसारू.

३६० निर्विन्ध्या, निर्विन्ध्या. ज, स, म, ३०

ज सा म करतां निर्विन्ध्या.

३६१ कामिष्टा, किमिष्टा.　　　भ, स, म. ३१

भ स म रचतां कामिष्टा.

३६२ धृतहाला.　　　म, भ, म. ४९

मा भा मा थी धृतहाला छे.

३६३ कलह.　　　स, भ, म. ५२

कलहे सा भ म आवेछे.

३६४ अयनपताका.　　　म, न, म. ५७

मा ना मा ऽयनपताका छे.

३६५ रंभा.　　　त, न, म. ६१

रंभा त न म थकी थाशे.

३६६ भुजगशिशुभृता-वृता-सृता-युता | ७, २ यति.
अहिशिशु[1] भुजगशशिभृता, | न, न, म. ६४
भुजगशिशुसुता, ञुकता.

भुजगशिशुभृता, नन्मे.

१ नागप्रस्तार प्रकाश

२ आ नाम वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां आप्युं छे पाठांतरने लीधे भिन्न भिन्न नामो थया छे

३६७ विशल्य,　　　य, य, य. ७४

विशल्ये य कारो त्रणे छे.

३६८ बिम्ब, बिम्बा, ललित तिलका. | न, स, य. ९६
बिम्बा, पंक, पंका.[1]

न स य धर बिम्बमां तुं.

१ मागधी पिंगळ छंदोग्रंथ

३६९ अर्धक्षामा.　　　म, त, य. ९७

अर्धक्षामा मा त य आण्ये.

३७० सम्बुद्धि. स, त, य. १००

स त ये सम्बुद्धि बनेछे.

३७१ शम्बरधारी. भ, त, य. १०३

शम्बरधारी भ त ये छे.

३७२ महर्ष. ज, ज, य. ११०

महर्ष ज जा य थकी छे.

३७३ शरलीढा. न, ज, य. ११२

न ज य थकी शरलीढा.

३७४ कांसीक. म, न, य. १२१

कांसीके म न य करोजी.

३७५ सुगन्धि. स, न, य. १२४

स न ये थी रच सुगंधि.

३७६ कामा. त, न, य. १२५

कामा त न य करवाथी.

३७७ भौरिक, महालक्ष्मीका, महालक्ष्मी, महालक्षी. र, र, र. १४७

भौरिके रा र रा थायछे.

३७८ निभालिता. स, त, र. १६४

स त रे थाशे निभालिता.

३७९ चारुहासिनी. ज, त, र. १६६

ज ता र थी चारुहासिनी.

भाषा छंदोमजरीमां मात्रामेळमां छे ८, ६=१४.

३८० भुजंगसंगता. ३, ६ यति. स, ज, र. १७२

स ज रे, भुजंगसंगता.

३८१ रथोन्मुखी. त, ज, र. १७३

ता जा र रथोन्मुखी विषे.

३८२ अननिजा. ज, ज, र. १७४

वनें ऽयनिजा ज जा र थी.

३८३ मयाढिका. भ, ज, र. १७५

भो ज र थकी मयाढिका.

३८४ हल्लोद्‌गता. न, ज, र. १७६

न ज र थकी हल्लोद्‌गता.

३८५ मधुमल्ली. स, भ, र. १८०

मधुमल्ली स भ रे वने.

३८६ सहेल्लिका. ज, भ, र. १८२

सहेल्लिका रच जा भ रे.

३८७ मदनोद्धरा. म, भ, र. १८३

भू भ र थी मदनोद्धरा.

३८८ करशया. न, भ, र. १८४

करशया न भरे करो.

३८९ भद्रिका. र, न, र. १८७

भद्रिका र न र थी वने.

३९० शशिकरी. स, न, र. १८८

स न रे शशिकरी वने.

३९१ अर्थ. न, न, र. १९२

न न र चरण अर्थमां.

३९२ मणिबंध, मणिमध्य. ५,४ यति* भ, म, स. १९९

तुं मणिबंधे, भा म स दे.
पांच श्रुतिये, तुं यति दे.

संगीतानुसार छंदोमजरी प्रमाणे आ वृत्त श्रीरंजनी रागमा गवायछे. ताल चतुश्र जाति प्रतिध्रुव छे.

* छंद प्रभाकरमा यति कह्यो नथी, पण श्रुतबोधनी टीका अने छंदरत्नावलीमा प्रथम पांच वर्णे अने त्यार पछी चार वर्णे यति कह्यो छे

३९३ मुखला, सारंगिका, सारंग, [1]रंगीका, [2]सारंगिक, सारंगिय, सारवक, [3]मथना. } न, य, स. २०८

न य स बनावे मुखेला.

१ मनहरपिंगळ २ छंद.प्रभाकरमो मात्रामेळमां छे. ३ गणप्रस्तारप्रकाश.

३९४ निषध. भ, र, स. २१९

भू र स थायछे निषधे.

३९५ रत्नकरा, [1]रत्नका. म, स, स. २१७

थाशे रत्नकरा म स से.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमाथी.

३९६ अर्द्धकला. स, स, स. २२०

स स से रच अर्द्धकला.

३९७ रज्ञक. भ, स, स. २२२

भा स स धर रज्ञकमां.

३९८ वीरा, अवीरा, पापित्ता, पविना, पाइत्ता, प्रथिता, भास्ति, पायत्त, पायत्तारु,[1] पादाताली.[2] } म, भ, स. २४१

वीरांमां मा भ स धरजो.

१ मागधीपिंगळउदोद्यय २ गणप्रस्तारप्रकाश

३९९ अनवीरा.　　　　स, भ, स. २४४

अनवीरा स भ स थकी.

४०० प्रियतिलका.　　　　भ, भ, स. २४७

भ भ स थी प्रियतिलका.

४०१ हलमुखी, हरमुख, हलनमुख.[1]　र, न, स. २५१

रा न से, कर हलमुखी,

छे त्रणे, पंट पर यति,

१ गणप्रस्तारप्रकाश.

४०२ आकेकर, पद्मावती (छंदसार (भाषा.) त, न, स. २५३

आकेकर कर त न से.

४०३ धौनिक.　　　　भ, न, स. २५५

धौनिक रच भ न स थी.

४०४ मदनक, रतिपद, कमला, कुम्बलया[1], द्रुहणा[2].　　न, न, स. २५६

मदनक न न स थकी.

१ मागधीपिंगळ छंदोमय　२ गणप्रस्तारप्रकाश

४०५ वल्गा.　　　　त, त, त. २९३

वल्गा विषे ता त ता धार.

४०६ कीटमाला.　　　　स, ज, त. ३००

स ज ते थी कीटमालाज.

४०७ मसृण.　　　　न, न, त. ३२०

मसृण न न त थी थाय.

४०८ लीला.　　　　न, य, ज. ३३६

न य ज थी लीला रचाय.

४०९ वारिधियान. भ, त, ज. ३९९

भा त ज थी वारिधियान.

४१० तोमर. स, ज, ज. ३६४

स ज जे थी तोमर थाय.

छन्दोमजरीमा श्री गजावरे मात्रामेळमा दाखल करेल छे

४११ कुहू. ज, ज, ज. ३६९

कुहू कर जा ज ज थी तुं.

४१२ भैरव. न, ज, ज. ३६८

न ज ज थी भैरव थाय.

गणप्रस्तारप्रकाशमा आने ११ मात्रानो ८१ मो भेद गण्यो छे ते वर्णवृत्त थइ जायछे माटे अहि दाखल कर्यो छे

४१३ कठिनास्थि, अहीरि. भ, न, ज ३८३

भा न ज कर कठिनास्थि.

४१४ विकचवती. न, य, भ. ४००

विकचवतीमां ना य भ.

४१५ वन्दारु म, स, भ. ४०९

वन्दारु म स भे थी रच.

४१६ दधि, उदधि, शुभोदर.[1] भ, भ, भ. ४३९

छे दधिमां त्रण भू गण.

१ गणप्रस्तारप्रकाश

४१७ स्फुटघटिता. न, य, न. ४६४

स्फुटघटितामां न य न.

४१८ चुलक, कुमुद. न, न, न. ५१२

त्रण न गणथी चुलक.

१० पंक्तिछंद. १०२४ भेद थायछे. दश वर्ण.

४१९ पद्मावर्त्त. म, म, म, ग. १

मा मा मा गा आवे पद्मावर्त्त.

४२० शेफाली. य, म, म, ग. २

य मा मा गा थी थाशे शेफाली.

४२१ धूम्राली. य, य, म, ग. १०

य या मा ग थी थाशे धूम्राली.

४२२ नीरोहा. स, र, म, ग. २०

स र मा गे बनेछे नीरोहा.

४२३ वीरान्ता. ज, स, म, ग. ३०

ज सा ग ग थकी वीरान्ता छे.

४२४ निर्मेधा. न, त, म, ग. ४०

न त म गे थाय निर्मेधा तो.

४२५ मध्याधार. म, भ, म, ग. ४९

मो भो मा गो घर मध्याधारे.

४२६ वंशारोपी. य, भ, म, ग. ५०

य भा मा गा थकी वंशारोपी.

४२७ विन्दु, बन्धूक. म, भ, म, ग. ५५

विन्दु विषे भ भ मा गा आणो.

गणप्रस्तारप्रभाशमां बन्धूक नाम आपी तेनु रुप ८७मुं दर्शाव्यु छे, ते ५५मु जोइये

४२८ कुल. त, न, म, ग. ६१

छे कुल त न म गा आण्याथी.

४२९ बोधातुरा, सकृद्वोधा. य, म, य, ग. ६६

यमायागा वोधातुरामां छे.

४३० सुराक्षी. न, य, य, ग. ८०

नयय ग आणो सुराक्षीमां.

४३१ कलापान्तरिता. य, स, य, ग. ९०

कलापान्तरिता यसेयागे.

४३२ द्वारवहा, भारवहा. र, त, य, ग. ९९

रातयोगा द्वारवहा वृत्ते.

४३३ विशदच्छाय, [1]कलगीत.९,९यति. स, त, य, ग. १००

विशदच्छाये, सतयोगा छे.

1 आ नाम तथा यति " मदारमरद चपू " मांछे.

४३४ इन्द्र, ऐन्द्री. ज, ज, य, ग. ११०

जजा य ग थी रच ऐन्द्री तो.

४३५ हीराङ्गी, प्रणव-[1] ९,९ यति. म, न, य, ग. १२१

हीराङ्गी रच, मनयोगे थी.

पांचे बे यति, धर छोगेथी.

1 गणप्रस्तार प्रकाशमां आनुं "प्रणव" एवुं नाम आप्युं छे

४३६ हेमहास, वाला, वाला. र, र, र, ग. १४७

हेमहासे रचो रारराग़ो.

४३७ आन्दोलिका. ९,९ यति. त, त, र, ग. १६९

आन्दोलिका छे, ततारगा थी.

४३८ मयूरसारिणी, शिखिसारिणी. र, ज, र, ग. १७१

छे मयूरसारिणी रजा र्गे.

पादान्तेयति

४३९ सुखेला. स, ज, र, ग. १७२

सजराग थायछे सुखेला.

४४० नमेरु. त,ज,र,ग. १७३

ता जा र ग थी रचो नमेरु.

४४१ गणदेहा. स,म,स,ग. १९६

गणदेहामां सा म स गा छे.

४४२ चंपकमाला, चंपामाली, रुक्मावती, रुक्मावती, [1]रूपवती, सौभाग्यवती, [2]पंचकमाला. भ,म,स,ग. १९९ (*पादान्ते यति. केटलाक केहेछे.)

भू म स गा थी, चंपकमाला.

[1]राग छाया, ताल चतुर्थ जाति त्रीताल. (संगीतानुसार छंदोमंजरी) चंपामाली नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

* श्रुतबोध, छंदरत्नावलि तथा मंदारमरंद चंपूमां ५, ५ यति कह्यो छे पण छंदःशास्त्र तथा प्राकृतपिंगल सूत्रमा माल्यो नथी.

२ छंदोबोधमां कोइना केहेवाथी.

४४३ नरगा. न,य,स,ग. २०८

न य स ग आणो नरगामां.

४४४ मसरा. ३, ७ यति. म,स,स,ग. २१७

[1]वर्णेछे, मसरा म स सं गे,

त्रीने छे, यति सात प्रसंगे.

४४५ केर. र,स,स,ग. २१९

केरमां करजो र स सं गा.

४४६ उदित, [1]कीर्त्ति.[1] स,स,स,ग. २२०

उदिते रचजो स स सं गा.

१ छंदःप्रभाकरना कर्त्ता ए नामभिन्नु गणेछे, पण ते वृत्त प्रथमथीज बीजा ग्रंथोमां छे.

४४७ मत्ता, माता. ४, ६ यति. म,भ,स,ग. २४१

गच्चामांहे, धर् म भ स ा गा,
चारे छेठे, यति कवि! गागा.

राग कालिंगडो, ताल चतुश्र जाति त्रीताल (संगीतानुसार छंदोमग गणप्रस्तारप्रमाण पिंगळमा मात्रा नाम छे

४४८ चलधारी. स,भ,स,ग. २४

चलधारी कर् स भ संगे.

४४९ अचलपंक्ति, बालिका. र,न,स,ग. २९

रा न सा ग थी अचलपंक्ति.

४५० असितधारा. स,न,स,ग. २९

स न संग थी असितधारा.

४५१ उन्नाल. त,न,स,ग. २९

उन्नाल त न स ग थकी छे.

४५२ निरंतिक. ज,न,स,ग. २९४

निरंतिक रच् ज न संगे.

४५३ उपधाय्या. भ,न,स,ग. २९५

भा न स ग थकी उपधाय्या.

४५४ तनिमा, वाणी (मा. पि. छं. ग्रं.) न,न,स,ग. २९६

न न स ग कर् तनिमामां.

४५५ विशालान्तिक. त,त त,ग. २९३

ता ता त गा छे विशालान्तिके.

४५६ विशालप्रभ. ज,त,त,ग. २९४

ज ता त गा छे विशालप्रभे.

४५७ चरपद. न,त,त,ग. २९६

चरपदे ना त ना गा धरो.

४५८ उपसंकुला. स,न,त,ग. ३००

उपसंकुला स जा ता ग थी.

४५९ खेटक. भ,न,त,ग. ३०३

भा ज न ग धारजे खेटके.

४६० वहींतुरा. त,भ,त,ग. ३०९

वहींतुरा रच ता भा त गे.

४६१ नीराञ्जलि. त,न,त,ग. ३१७

नीराञ्जलि रच ता ना त गे.

४६२ दीपकमाला. भ,म,ज,ग. ३२७

दीपकमालामां भ मा ज गा.

४६३ कर्णपालिका, कामदा,[1] मरालिका.[2]

५, ५, यति. र,य,ज,ग. ३३१

रा य जा ग थी, कर्णपालिका

१ संगीतानुसार छंदोमंजरीमां आ नाम छे तेमां राग केदारो, ताल चतुश्र जाति श्रीताल जणावेछे.

२ आ नाम तथा यति "मंदारमरंदचंपू" छे

४६४ सरानिका. ज,र,ज,ग ३४२

ज रा ज गा थकी सरानिका.

४६५ मनोरमा. ६. ४ यति[1] न,र,ज,ग. ३४४

न र ज गा थकी, मनोरमा.

१ मंदारमरंदचंपू प्रमाणे

४६६ विराट, शुद्धविराट. म,म,ज,ग. ३४५

पादन्ते यति.

मा मा ता ग थकी विराट छे.

४६७ अक्षरावली[1], लालिनी. र,स,ज,ग. ३४७

रा स जा ग थी अक्षरावली,

१. मंदारमरंदचंपू प्रमाणे.

४६८ सहजा. स,स,ज,ग. ३४८

सहजा स स जा ग थी बने.

४६९ अहिला. त,स,ज,ग. ३४९

के'वाय अहिला त सा ज गे.

४७० कुप्य. भ,स,ज,ग. ३५१

कुप्य रच कवि भ सा ज गे.

४७१ अनुचायिता. न,स,ज,ग. ३५२

न्स ज ग अनुचायिता विषे.

४७२ वर्मिता. र,ज,ज,ग. ३५३

वर्मिता रचाय र जा ज गे.

४७३ संयुता, संहतिका, संयुगा, संयुत, [1]संजुत्ती, संयुक्ता, संगतिका, संजुक्ता, गीतक, संजुता, [2]कमला. — स,ज,ज,ग. ३५४ — ५, ५ यति.

स ज जा ग थी, यति पांचमे,
रच संयुता, शुभ ए क्रमे,

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ. २ आ नाम तथा यति मंदारमरंदचम्पूमां छे

४७४ उपस्थिता. २, ८यति केटलाकने मते. त,ज,ज,ग. ३६१

ता जा, ज ग थाय उपस्थिता.

४७५ जरा. ज,ज,ज,ग. ३६६

जरा रच वृत्त ज जा ज गे.

४७६ भिन्नपदं. म,भ,ज,ग. ३७१

भिन्नपदे रच भ भा ज गा.

४७७ वडिशभेदिनी. न,भ,ज,गं. ३७६

नभजगे वडिशभेदिनी.

४७८ पणव[1]. ५, ५ यति.[2] म,न,ज,ग. ३७७

मा ना जा ग थी, पणवे करो.

पांचे ने शर, यति तो धरो.

१ छंद.शास्त्रमां आ वृत्तनुं माप म न य ग लख्युं छे, पण तेनुं अ० ४६५ मे हीरागी छे. छंदोबोध तथा छंदःप्रभाकरमां पण एवुं माप म न य ग छे.

२ मंदारमरंदचम्पू तथा वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमां आ प्रमाणे यति लख्यो छे.

४७९ चितिभृत. न,न,ज,ग. ३८४

चितिभृत रच न ना जे गे.

४८० पावक, पंक्ति (गा. पि. छं. ग्रं.). भ,म,भ,ग. ३९१

पावकमां आणो भा म भ गा.

४८१ सुषमा, वामा, [1]सुपुमा. त,य,भ,ग. ३९७

ता या भ ग थी थाशे सुषमा.

१ गौड पिंगळ.

४८२ फलिनी, चारुमुखी (छंदोलता). न,य,भ,ग. ४००

नयभग थी थाशे फलिनी.

४८३ सुरयानवती. स,स,भ,ग. ४१२

सुरयानवती सोसभगे.

४८४ विरल, कटिका. भ,स,भ,ग. ४१९

थाय विरल मां भा स भ गा.

४८५ छलितक. न,त,भ,ग. ४२४

छलितके आण् ना त भ गा.

४८६ मनादपदा. स,ज,भ,ग. ४२८

स ज भा ग छे मनादपदा.

४८७ वारवती. स,भ,भ,ग. ४३६

स भ भा गे रच् वारवती.

४८८ परिचारवती. त,भ,भ,ग. ४३७

ता भा भ गे परिचारवती.

४८९ काण्डमुखी. ज,भ,भ,ग. ४३८

ज भा भ गे कर् काण्डमुखी.

४९० विश्वमुखी,सारवती,सारस्वती. भ,भ,भ,ग. ४३९

भा भ भ गे रच् विश्वमुखी.

४९१ शरत. न,भ,भ,ग. ४४०

शरतमां कर् ना भ भ गा.

४९२ इन्दुमुखी, चन्द्रमुखी (छंदोलता). त,न,भ,ग. ४४६

इन्दुमुखी त न भो ग वडे.

४९३ गहना. भ,न,भ,ग. ४४७

भा न भ ग थकी छे गहना.

४९४ फलधर. न,न,भ,ग. ४४८

फलधर रच् ना न भ गे.

४९५ धमनिका. स,ज,न,ग. ४९२

स ज ना ग थीज धमनिका.

४९६ मृगतिलका, अमृतगति,[1] त्वरितगति, अमृततिलका,[2] कुड्मा,[3] सुरागर.[4] — न,ज,न,ग. ४९६ — ५,५ यति.

मृगतिलका, न ज न ग थी.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमा अमृतगति नाम छे, गण मळे छे, पण तेमां यति कही नथी. २ वाग्भूषण ३ मंदारमरन्दचम्पू प्रमाणे.
४ "सुरागर" नाम गगप्रस्तारप्रकाशमां छे.

४२७ हंसी, हंसपद.[1] ४, ६ यति.[2] म,भ,न,ग. ४९७

हंसी मांहे, रच म भ न गा.

१छंदोलता. राग यदुकुळ कांबोधी ताल मिश्रगारगी पचक स. छं. सं.
२ श्रुतबोध अने मंदारमरन्दचम्पूमा आज प्रमाणे यति छे
हंसिनी नाम छंदोवृत्तमुक्तावलिमां छे अने यति आ प्रमाणे ज कही छे;
अने मंदारक.तामी छट्ठा सात अक्षर ओछा एवुं मात्र अ पुं छे

४९८ कृतागिता, माणिता. — भ,न,न,ग. ९११

भा न न ग थी कृतागिता.

४९९ मकरमुखी. — न न,न,ग. ९१२

न न न ग थी मकरमुखी.

५०० महिमावराधि. — स,भ,र,ल. ६९२

स भ रा ले महिमावराधि.

५०१ कामचारि. — त,भ,र,ल. ६९३

ता भा र ले रच कामचारि.

५०२ नेमधारि. — ज,भ,र,ल. ६९४

ज भा र ले रच नेमधारि.

५०३ हीरलंघि. — भ,भ,र,ल. ६९५

भा भ र ले कर हीरलंघि.

५०४ वनिताविनोदि. न,भ,र,ल. ६९६

न भ र ले वनिताविनोदि.

५०५ विरेकि. र,न,र,ल. ६९९

रा न रा ल.थकी छे विरेकि.

५०६ कुकपादि. न,र,स,ल. ७२८

न र स ले बने कुकपादि.

५०७ लुलित. स,स,स,ल. ७३२

लुलिते स स सा ल रचाय.

५०८ सारस. (गणप्रस्तारप्रकाश). न,स,स,ल. ७३६

न स स ल थी सारस थाय.

५०९ रसभूम. स,न,स,ल. ७४८

स ज सा ल धार रसभूम.

५१० चारुचारण. र,न,स,ल. ७६३

चारुचारण र न स ला थी.

५११ सरोज. (गणप्रस्तारप्रकाश.) स,न,स,ल. ७६४

स न रा ल थी रच सरोज.

५१२ सरसमुखी. त,न,स,ल. ७६५

ता ना स ल सरसमुखीज.

५१३ ऋत. न,न,स,ल. ७६८

ऋत रच न न स ल थीज.

५१४ कीलाल. भ,म,त,ल. ७७५

भा म त ला कीलाले आणज.

५१५ खौरलि. न,य,त,ल. ७८४

न य त ल आण्यथी खौरलि.

५१६ कामनिभा. म,स,त,ल. ७९३

जाणो कामनिभा भा सा त ल.

५१७ विस्रंसि. न,स,त,ल. ८००

न स त ल थकी विस्रंसि ज.

५१८ नीरनिधि. न,त,न,ल. १०००

न त न ले थाय नीरनिधि.

५१९ कृतकवलि. न,न,न,ल. १०२४

न न न ल थी कृतकवलि.

११ त्रिष्टुपछंद. २०४८ भेद छे. वर्ण ११

५२० माला[1], मालती, भारती, हीमाली[2], मारती. ग,म,म,ग,ग. १

मा मा मा गा गा आवे माला मांहे.

गणप्रस्तारप्रकाशमां आने २२मात्रानां सामान्य नाम कमनदत्त पेहेलुं रूप गण्यु छे

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमां आ नाम छे २ गणप्रस्तारप्रकाशमांथी

५२१ आराधिनी. त,म,म,ग,ग. ५

आराधिनी मांहे ता मा मा गा गा.

५२२ अमालीन. य,य,म,ग,ग. १०

अमालीनमां छे या या मा गा गा.

५२३ मेघध्वनिपूर. त,य,म,ग,ग. १३

मेघध्वनिपूरे ता या मा गा गा.

५२४ उद्धतिकरी. भ,य,म,ग,ग. १५

उद्धतिकरीमां भा या मा गा गा.

५२५ अपयोना. सर,म,ग,ग. २०

अपयोना [illegible] [illegible] सीमागंगा.

५२६ अंतर्वनिता म,म,म,ग,ग. २९

छे अंतर्वनिता मासीमा गं गे.

५२७ प्रफुल्लकदली. ज स,म,ग,ग. ३०

प्रफुल्लकदली जासामा गा गे.

५२८ लक्ष्मलीला. भ,त,म,ग,ग. ३९

लक्ष्मलीला भ ता मा गा गेथी.

५२९ कूलिका, [illegible]चारिणी. र,ज म,ग,ग. ४३

कूलिका रचाय रा जा मा गा गे.

५३० विलुलितमञ्जरी. न ज,म,ग,ग. ४८

विलुलितमंजरी ना ज्मा गा गे.

५३१ भूरिधरक - म,न,म,ग,ग. ५७

छे भूरिधरक मा ना मा गा गे.

५३२ कलिकाकल्पमाला. न,न,म,ग,ग. ६४

क[illegible]

ननमगग धरोन शोभानो.

५३३ मालतीमाला. य,य,य,ग,ग. ७४

यया या न गे मालतीमाला हे.

५३४ चतुरीविलास. र,य,य,ग,ग. ७९

चतुरी विलासे रया दा गागा.

५३५ विकसितपद्मावली न,य,य,ग,ग. ८०

विकसितपद्मावली जो जाणो,

नययगगा एस एमा आणो.

५३६ अमोघमालिका. ज,र,य,ग,ग. ८९
अमोघमालिका जरायागागे.

५३७ ललितागमन. स,स,य,ग,ग. ९२.
ललितागमने ससायागागा.

५३८ संस्कृतशोभासार. स,त,य,ग,ग. १००
सतयगागा संस्कृतशोभासारे.

१३९ ललितालवाल. स,ज,य,ग,ग. १०८
ललितालवाल सजायागागे.

५४० वार्त्ताहारी. न,न,य,ग,ग. ११२
नजयगगे कर वार्त्ताहारी.

५४१ उद्दितदिनेश. स भ य,ग,ग. ११६
सभया उद्दितदिनेशे गागा.

१ वाग्वल्लभमां भ ने बदले न बदले छे पण स न य ग ग एवुं रूप नीचे ५४३ मे अंक छे.

५४२ कडार. य,न,य,ग,ग. १२२
कडारे य न य ग गा आवेछे.

५४३ सौधाग्रि. स,न,य,ग,ग. १२४
सनया ग ग थयाँ सौधाग्रि छे.

५४४ जालपाद. स,भ,र,ग,ग. १३२.
स भ रो गी गा छे जालपादे तो.

५४५ दारदेहा, दारुदेहा. र,र,र,ग,ग. १४७
दारदेहा बने रा र रा गा गे.

५४६ शिखंडित. ज,स,र,ग,ग. १५८
शिखंडित विषे जा स रा गा गा.

५४७ सुधाधारा. र,न,र,ग,ग. १८७

रा नरा ग ग थकी सुधाधारा.

५४८ कुपुरुषजनिता. न,न,र,ग,ग. १९२

कुपुरुषजनिता न ना र्गा गे.

५४९ कन्दविनोद. भ,म,स,ग,ग. १९९

कन्दविनोदे भो म स गी गा छे.

५५० विलम्बितमध्या. म,स,स,ग,ग. २१७

मा सा सा ग्ग विलम्बितमध्या मां.

५५१ विष्टम्भ. स,स,स,ग,ग. २२०

स स सा ग ग आण् विष्टम्भे तुं.

५५२ क्रोशितकुशला. भ,स,स,ग,ग. २२३

क्रोशितकुशला भ स सा गा गे.

५५३ उपहितचण्डी. स,भ,स,ग,ग. २४४

स भ स ग्गा उपहितचण्डीमां.

५५४ श्रितकमला. म,भ,स,ग,ग. २४७

भू भ्स ग गे श्रितकमला थाशे.

५५५ रथपद, वृत्ता, सुकृति, सुमनक[1], वक्त्रा[2], वृन्ता[3]. — न,न,स,ग,ग. २५६ ; ४, ७ यति[4].

रथपद, रन् न न सा गा गे.

यति धर, श्रुति पर तुं रामे.

१ गणप्रस्तारप्रकरणमांथी. २ मंदारमरंदचम्पूमां ए नाम छे

३ छंदःप्रभाकर. ४ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका

५५६ सुमेरु. य,र,त,ग,ग. २७४

सुमेरुमां रच्यो या रा त गी गा.

छंदःप्रभाकरना कर्त्ताए आने १९ मात्रानी जाति मानीने तेमां अंते यगण लाववानो नियम कर्यो छे तो ते चूकथी **सुमेरुवृत्तने** सुमेरु जाति मानी लीधी होय एम सहज अनुमान थायछे.

५५७ उपस्थित, शिखण्डित (शब्दकल्पद्रुममां) ज,स,त,ग,ग. २८९

उपस्थित विषे जा सा त गी गा.

५५८ शालिनी, मालिनी. ४,७ यति. म,त,त,ग,ग. २८९

मा ता ता गा, गा धरो शालिनीमां.

४, ७ यति मंदारमरंदचंपू, शब्दकल्पद्रुम, तथा छंदोवृत्तमुक्तावलिमां कही छे. राग केदार ताल चतुश्र जाति उच्छव, विलंबकाळ. (संगीतानुसारछंदोमंजरी). मालिनी नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

५५९ प्राकारबंध, ब्राह्मी, विध्वंकमाला, गंभीर[1]. } त,त,त,ग,ग. २९२

प्राकारबंधे त ता ता ग गा छे.

१ चित्रसेन टीकावाळा पिंगळ छंदोग्रंथमां गंभीर नाम छे.

५६० विहारिणी, भासिनी. स,ज,त,ग,ग. ३००

रचवा विहारिणी-भासिनीमां;

स ज ता ग गा धरो पाद सीम्मा.

५६१. वातोर्मी. ४,७ यति. म,भ,त,ग,ग. ३०५

वातोर्मीमां, रच मा भा त गी गा.

मंदारमरंदचंपूमां ४,७ यति कही छे.

शालिनी अने वातोर्मीना मिश्रणथी १४ जातिना उपजातियो थायछे. जोडाक्षरो आवेछे त्यां आ शोभेछे एम सुवृत्ततिलकमां लख्युं छे

५६२ ईहामृगी. ४,७ यति. त,भ,त,ग,ग. ३०९

ईहामृगी, रच ता भा त गी गे.

५६३ धीरा. (भाषाछंदोमंजरी) न,भ,त,ग,ग. ३१२

न भ त गा ग थी धीरा बने

५४७ सुधाधारा. र,न,र,ग,ग. १८७

रा न रा ग ग थकी सुधाधारा.

५४८ कुपुरुपजनिता. न,न,र,ग,ग. १९२

कुपुरुपजनिता न ना र्गा गे.

५४९ कन्दविनोद. भ,म,स,ग,ग. १९९

कन्दविनोदे भो म स गी गा छे.

५५० विलम्बितमध्या. म,स,स,ग,ग. २१७

मा सा सा ग्ग विलम्बितमध्या मां.

५५१ विष्टम्भ. स,स,स,ग,ग. २२०

स स सा ग ग आण विष्टम्भे तुं.

५५२ क्रोशितकुशला. भ,स,स,ग,ग. २२३

क्रोशितकुशला भ स सा गा गे.

५५३ उपहितचण्डी. स,भ,स,ग,ग. २४४

स भ स ग्गा उपहितचण्डीमां.

५५४ श्रितकमला. भ,भ,स,ग,ग. २४७

भू भ्स ग गे श्रितकमला थाशे.

५५५ रथपद, वृत्ता, सुकृति, सुमनक[1], वक्त्रा[2], वृन्ता[3]. न,न,स,ग,ग. २९६ ४, ७ यति[4].

रथपद, रण न न सा गा गे.

यति धर, श्रुति पर तु रामें.

१ गगनप्रोत्सकपालमोपी. २ मंदारमरंदचम्पूमां ए नाम छे

३ छंदःप्रभाकर. ४ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका

५५६ सुमेरु. य,र,त,ग,ग. २७१

सुमेरुमां रचो या रा त गी गा.

छंदःप्रभाकरना कर्त्ताए आने १९ मात्रानी जाति मानीने तेमां अंते यगण लाववानो नियम कर्यो छे तो ते चूकथी सुमेरुवृत्तने सुमेरु जाति मानी लीधी होय एम सहज अनुमान थायछे.

५५७ उपस्थित, शिखण्डित (शब्दकल्पद्रुममां) ज,स,त,ग,ग. २८६

उपस्थित विषे जा सा त गी गा.

५५८ शालिनी, मालिनी. ४,७ यति. म,त,त,ग,ग. २८९

मा ता ता गा, गा धरो शालिनीमां.

४, ७ यति मंदारमरंदचपू, शब्दकल्पद्रुम, तथा छंदोवृत्तमुक्तावलिमां कही छे. राग केदार ताल चतुश्र जाति उच्छव, विलंबकाळ. (संगीतानुसारछंदोमंजरी). मालिनी नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

५५९ प्राकारबंध, ब्राह्मी, विध्वंक-माला, गंभीर[1]. } त,त,त,ग,ग. २९२

प्राकारबंधे त ता ता ग गा छे.

[1] चित्रसेन टीकावाळा पिंगळ छंदोग्रंथमां गंभीर नाम छे.

५६० विहारिणी, भासिनी. स,ज,त,ग,ग. ३००

रचवा विहारिणी-भासिनीमां;

स ज ता ग गा धरो पाद सीमा.

५६१. वातोर्मी. ४,७ यति. म,भ,त,ग,ग. ३०५

वातोर्मीमां, रच मा भा त गी गा.

मंदारमरंदचपूमां ४,७ यति कही छे.

शालिनी अने वातोर्मीना मिश्रणथी १४ जातिना उपजातियो थायछे. जोडाक्षरो आवेछे त्यां आ थोभेछे एम वृत्ततिलकमां लख्युं छे.

५६२ ईहामृगी. ४,७ यति. त,भ,त,ग,ग. ३०९

ईहामृगी, रच ता भा त गी गे.

५६३ धीरा. (भाषाछंदोमंजरी)

५६४ परिमलललित. न,न,त,ग,ग. ३२०

परिमलललिते पूर्ण प्रीते,
न न त ग ग करो ठीक रीते.

५६५ विलासिनी. (पादांते यति) ज,र,ज,ग,ग. ३४२

विलासिनी रचो ज रा ज गा गे.

५६६ विश्वविराट, मदान्धा.[1] म,स,ज,ग,ग. ३४९

आणो विश्वविराट मांह् प्रीते,
मा सा जा ग ग माप तो सुरीते.

[1] छंदोलता.

५६७ विमला. स,स,ज,ग,ग. ३४८

विमला रचवा स सा ज गी गा.

५६८ सरोजवनिका. ज,स,ज,ग,ग. ३५०

सरोजवनिका ज सा ज गी गे.

५६९ अमन्दपाद. भ,स,ज,ग,ग. ३५१

भू स्ज ग ग अमन्दपादमां छे.

५७० पंचशाखी. न,स,ज,ग,ग. ३५२

न स ज ग ग थाय पंचशाखी.

५७१ इन्द्रवज्रा. ५,६ यति. त,त,ज,ग,ग. ३५७

ता ता ज गा गे, कर इन्द्रवज्रा.

छंदःशास्त्रमां पादान्ते यति केहेछे. श्रुतबोधमां पांचमे यति छे मंदारमरंदचम्पूमां ५, ६ ए यति केहेछे. रागिणी नटभैरवी, ताल संउपदी-वर्की गवायछे. (संगीतानुसारछंदोमंजरी.)

५७२ उपेन्द्रवज्रा. ५, ६ यति ज,त,ज,ग,ग. ३५८

उपेन्द्रवज्रा, ज त जा ग गे थी.

मंदारमरंदचम्पूमां ५, ६ यति केहेछे, छंदःशास्त्रमां पादान्ते यति

केहेछे श्रुतबोधमा पाचमे यति छे, तेम बोलवामा पण वपरायछे.

वामन शिवराम आप्टेना कोषमा इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा बन्नेमां पाच छ ए यति कही छे, परंतु छंदोवृत्तमुक्तावलिमा बन्नेमा यति कही नथी.

५७३ *उपजाति[1], उपेन्द्रमाला[2], आख्यानकी.

ता ना ज गी गा कदि पाद थाशे,
ज ता ज गी गा वळी तो रचाशे;
ए मिश्रणे तो उपजाति जाणो,
त्रिष्टुपमाथी कवि! जोइ आणो.

* जुओ १२ अक्षरना मायावृत्त उपरनी आ विषेनी टीप

१ संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे राग सिंधुरो कानरो, ताल संकीर्ण जाति झंपताल

२ आ नाम मंदारमरंदचम्पूमा आप्यु छे

आ स्थान नीचे लखेला नाम पिंगळोमा मळी आवेछे, अने ते इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्राना मिश्रणथी थयेला छे

इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा मळी १४ भेद थायछे तेना उदाहरण अने प्रस्तार नीचे प्रमाण छे, तेमा गुरुनी जग्याए इन्द्रवज्रा अने लघुनी जग्याए उपेन्द्रवज्रा जाणवा —

SSSS चारे चरण इन्द्रवज्राना.

१ ISSS कीर्त्ति * १ उपेन्द्रवज्रा, २ इन्द्रवज्रा,
ज,त,ज,ग,ग. त,त,ज,ग,ग.
३ इन्द्रवज्रा, ४ इन्द्रवज्रा.
त,त,ज,ग,ग. त,त,ज,ग,ग.

२ SISS वाणी. १ इन्द्रवज्रा, २ उपेन्द्रवज्रा
३ इन्द्रवज्रा, ४ इन्द्रवज्रा.

* आ १४ भेदना उदाहरण छंद प्रभाकर पृष्ट १५९–६१ मे छे.

वाग्वल्लभमा कीर्त्ति नाम नथी तेथी वाणीथी आरंभ थता क्रम फरी जायछे एना १२ मे अंके बुद्धि छे अने १४ मे अंके मंथणी छे

३	।।ऽऽ माला.	१ उपेन्द्रवज्रा,	२ उपेन्द्रवज्रा,
		३ इन्द्रवज्रा,	४ इन्द्रवज्रा.
४	ऽऽ।ऽ शाला.	१ इन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
५	।ऽ।ऽ हंसी.	१ उपेन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
६	ऽ।।ऽ माया.	१ इन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
७	।।।ऽ जाया.	१ उपेन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
८	ऽऽऽ। बाला.	१ इन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
९	।ऽऽ। आर्द्रा.	१ उपेन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
१०	ऽ।ऽ। भद्रा.	१ इन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
११	।।ऽ। प्रेमा.	१ उपेन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
१२	ऽऽ।। रामा.‡	१ इन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
१३	।ऽ।। ऋद्धि.§	१ उपेन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,

‡ गणप्रस्तारप्रकाशमां पावन.

§ गणप्रस्तारप्रकाशमां बुद्धि.

१४ ऽ।।। सिद्धि.† १ इन्द्र ,, २ उपेन्द्र ,,
३ उपेन्द्र ,, ४ उपेन्द्र ,,

।।।। उपेन्द्रवज्रानां चारे पाद.

† प्राकृत पिंगलसूत्रना कर्त्ता बुद्धि नाम आपेछे. तथा गणप्रस्तार प्रकाशमां ऋद्धि छे.

आ उपरथी जणायछे के, जो बेज वृत्तनुं मिश्रण थाय तो तेना मात्र १४ भेद थाय, पण बे करतां वधारे एटले त्रण के चार वृत्तनुं मिश्रण थाय तो तेना घणा भेद थायछे.

गुरु अने लघु एवां बेज चिन्ह छे, माटे बे वृत्तना मिश्रणना भेदनो प्रस्तार आहिं जणाव्या प्रमाणे थइ शकेछे, पण बे उपरातनुं चिन्ह जणाववानुं साधन नथी तेथी तेनो प्रस्तार थइ शकतो नथी. पण त्रण वृत्तना मिश्रणनुं उपजाति वृत्त करतां बे पद तो एकनां आवे अने अकेकुं बीजानुं आवे त्यारे चार पाद थाय तेनी चालवणी करतां चार मुख्य भेद किया किया मिश्रणथी थाय ते नीचे बतावबामां आव्युं छे.

पादांग.	१ भेद.	२ भेद.	३ भेद.	४ भेद.
१	इ.	उ.	उ.	इ.
२	इ.	इ.	वं.	वं.
३	उ.	इ.	इ.	उ.
४	वं.	वं.	इ.	इ.

उपर प्रमाणेनुं मिश्रण जोवामां आवेछे, पण एम करवुं उचित नथी एम चार अक्षरना अंक ६९६ना माया वृत्तनी टीप जोवाथी जणाशे. एटले आ ठेकाणे ए विषे विस्तार कर्यो नथी.

५७४ पटुपट्टिका. स,ज,न,ग,ग. ३६४

पटुपट्टिका स ज ना ग गे थी.

५७५ उपस्थिता. ६, ५, यति. त,ज,ज,ग,ग. ३६९

ता जा ज ग गा थी, उपस्थिता छे.

५७६ श्रुतकीर्त्ति, अनवसिता, माणिक्यमाला.[1] न,य,भ,ग,ग. ४०० ५,६ यति.

न य भ ग गा, लावो श्रुतकीर्त्ति.

१ आ नाम मंदारमरंदचंपूमां छे, वळी तेमां ५,६ उपर यति लखी छे

५७७ वर्णरलाका. स,स,भ,ग,ग. ४१२

स स भा ग ग थी वर्णरलाका.

५७८ अमितशिखंडी. भ,स,भ,ग,ग. ४१९

छे अमितशिखंडी भ स भ गी गे.

५७९ माधो (गणप्रस्तारप्रकाश) स,भ,भ,ग,ग. ४२६

स भ भा गा ग थकी रच माधो.

५८० नीलसरूपी[1], नागसरूपी, दोधक, बन्धु, बधा. भ,भ,भ,ग,ग. ४३९

भो भ भ गा ग थी नीलसरूपी,

दोधक बन्धु ज नागसरूपी;

पादान्ते यति होवानु छंदःशास्त्रमा लखेले श्रुतबोधनी टीकामां ७,४ ए यति कही छे छंदोवृत्तमुक्तावलिमा आमा कहेला गणोवाळु लीलसरोरुह वृत्त छे तेमा यति पाडी नथी बधा नाम मागधी छंदःशतकमा छे मागधी पिंगळ छंदोग्रथमा पाठांतरे अन्ते बे लघु आणवा एम मत जणाव्यु छे

संगीतानुसार छंदोमञ्जरीप्रमाणे राग दरबारी कानडो, ताल चतुश्र जाति त्रिताल, मात्रा १६ विलम्बकाळ

५८१ रोधक. न,भ,भ,ग,ग. ४४०

न भ भ गा ग थी रोधक थाशे.

५८२ स्वागता[1], स्वगता[2], सगता[3], स्वागत. र,न,भ,ग,ग. ४४३

स्वागता रच रनाभगगे थी.

१ मंदारमरंदचपू, पिंगळछंद-सूत्र अने वृत्तदर्पणमां पादान्ते यति कही छे.
२ संगीतानुसारछंदोमंजरी प्रमाणे राग छायाँ,ताल चतुश्र जाति तेताला; मात्रा १६, मध्य काळ. ३ गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे.

५८३ कुपुरुषजनिता. न,न,भ,ग,ग. ४४८

कुपुरुषजनिता ननभ ग्गा.

५८४ मदनमाला. न,र,न,ग,ग. ४७२

नरनगागथी मदनमाला.

५८५ उदितविजोहा. त,त,न,ग,ग. ४८५

तातानगीगे उदितविजोहा.

५८६ अनुकूला, सांद्रपदा. भ,त,न,ग,ग. ४८७

भूतनगागे कर अनुकूला.

राग शंकरा, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६ मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

५८७ श्री,मौक्तिकमाला[1], कुड्मलदन्ती[2]. भ,त,न,ग,ग. ४८७ ५,६, यति.

भूतनगागा, शैर छ यति श्री
मौक्तिकमाला, रच हुँ मतिथी.

अनुकूला प्रमाणे शंकरा रागथी गवायछे. तेमा यति कहीं नथी, अने आमा ५, ६ यति छे एटलोज फेर छे.

१ मंदारमरंदचपूमां ५ ने ७ यति कही छे, पण ५, ६ जोइये.
२ पिंगळ छंद-सूत्रमा आ नाम छे अने ५, ६ यति कही छे.

५८८ मात्रा. (वाग्वल्लभ.) म,न,न,ग,ग. ५०६

मात्रा मांह मननगग आणो.

५८९ सुवृत्ति. स,न,न,ग,ग. १०८

सननागगथी रच सुवृत्ति.

छंदार्णवमां आनु माप ननसगग आप्युं छे. छंदःप्रभाकरमां पण आ माप वाळा वृत्तने घुत्ता अथवा घुन्ता वृत्त कह्युं छे अने ए मापवाळा अंक ५५५ मे रूप २५६ जे नाम आप्यां छे तेथी छंदार्णवमां आपेलु माप भूलवाळुं जणायछे.

५९० भुजंगी,[१] कर्ण, सेहेल.[२] ६, ५ यति. य,य,य,ल,ग. ९८६

भुजंगीज कर्णे, यया या ल गी.

१ वाग्वल्लभ पृष्ट ५०में तथा छंदःप्रभाकर पृष्ट १६८में आ नाम छे.
२ प्रवीणसागर लेहेर १२मीमां आ नाम छे.

५९१ जवनशालिनी. न,र,य,ल,ग. ६००

जवनशालिनी न रा या ल गे.

५९२ मस्तमरकरा. (वाग्वल्लभ.) न,स,य,ल,ग. ६०८

मस्तमरकरा न सा या ल गे.

५९३ गल्लक. (वाग्वल्लभ.) न,न,य,ल,ग. ६४०

ननयलग करजे गल्लके.

५९४ मपातावतार. य,य,र,ल,ग. ६९०

मपातावतारे या य रा ल गी.

५९५ गह्वर. र,र,र,ल,ग. ६९९

गह्वरे आणवा रा र रा ल गी.

५९६ वारयात्रिक. भ,र,र,ल,ग. ६६३

भा र र ला ग छे वारयात्रिके.

५९७ ललित, भाविनी, कनकमंजरी, भामिनी, इन्दिरा, शुद्धकामदा[१], विबुधवंदिता, राजहंसी.[२] — न,र,र,ल,ग. ६६४ — ६, ५ यति.

ललित थायछे, ना र रा ल गे,
कनकमंजरी, इन्दिरा चगे,
विबुधवंदिता, भामिनी भणो,
यति छये धरी, भाविनी गणो.

१ संगीतानुसार छंदोमजरी अने छंद प्रभाकरमा आ नाम आप्यु छे आ वृत्त राग प्रदीपक, ताल चतुश्र जाति त्रेताल, मात्रा १६ मध्य काळमा गाइ शकाय छे

२ मंदारमरंदचम्पूमा माप न र र ग ग आप्यु छे ते भूलछे, तेन बदले उदाहरणमा अंते ल ग छे ते खरु छे

५९८ श्येनिका, श्येनी, ‡सेनक, श्रेणिका, श्रेणी, ताल[१]. | र,ज,र,ल,ग. ६८३ ५, ६ यति.

श्येनिका रचो, र जा र ला ग थी.

‡ गणप्रस्तारप्रकाशमा आ नाम छे छंदोमजरीमा "श्रेणी" नाम छे

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमा आ गणोथी ताल वृत्त कह्यु छे तेमा यति कही नथी

५९९ सीधु. (वाग्वल्लभ) स,भ,र,ल,ग. ६९२

स भ रा ला ग कराय सीधुमा.

६०० रथोद्धता[१], रथोभ्रता[२]. र,न,र,ल,ग. ६९९

रा न रा ल ग थकी रथोद्धता.

१राग पुनाग वराड, ताल चतुश्रजाति तेताला, मात्रा १६ मध्य काळ (संगीतानुसार छंदोमजरी) २ गणप्रस्तारप्रकाश

६०१ प्रतारिता. स,न,र,ल,ग ७००

स न रा ल ग थकी प्रतारिता.

६०२ नीला. त,न,र,ल,ग. ७०१

नीला रच त न रा ल गा थकी.

६०३ सुभद्रिका, [१]सुमुद्रिका, भद्रिका.[२] | न,न,र,ल,ग. ७०४ ६,५ यति

न न र ल ग थकी सुभद्रिका.

राग कौशीकानडा (श्रीरंजनी) ताल चतुश्र जाति आडा चौताल मात्रा १४ म ध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१ अपरांतिका अथवा परांतिका जाति जे मैतालीय भेदमां छे तेनी साथे मळेछे छंद:शास्त्रमां पादांते यति लखेछे. श्रुतबोध टीकामां ७, ४, यति लखेछे.

२ छंदार्णव तथा वाग्वल्लभ (सुमुद्रिका)

६०४ सौरभवर्द्धिनी. न,य,स,ल,ग. ७२०

नयसलगे सौरभवर्द्धिनी.

६०५ भुजगहारिणी. न,र,स,ल,ग. ७२८

भुजगहारिणी नरसी लगे.

६०६ उपचित्र,सुचित्र,नरेश. ६,५ यति. स,स,स,ल,ग. ७३२

ससससा लग थी, उपचित्र छे,

पट पांच परे, यति मित्र छे.

वाग्वल्लभमां यति कही नथी पिंगळादर्शमां उपचित्रा नाम आपी छठ्ठे यति कही छे

६०७ सम्मदमालिका. न,स,स,ल,ग. ७३६

न स स ल ग सम्मदमालिका.

६०८ कनककामिनी. ज,त,स,ल,ग. ७४२

ज ता स ला गे कनककामिनी.

६०९ उपदारिका.[1] रंजिता.[2] ५,६ यति. र,ज,स,ल,ग. ७४७

राजसालगे तुं उपदारिका

दे शरे छये, विरति रंजिता.

१ उपदारिका अने दारिकानुं मिश्रण थवाथी १४ प्रकारना उपजाति भेद थायछे, पण तेना नाम लभ्य नथी. संगीतानुसार छंदोमञ्जरीमां आनुं नाम ललित छे राग कामोदी, ताल चतुश्र जाति त्रेताला, मात्रा १६ मध्यकाळ

२ आ नाम तथा यति मंदारमरंदचंपू

६१० दारिका, नन्दिनी[1]. ९,६ यति. स,ज,स,ल,ग. ७४८

स ज सा ल गे रच तुं दारिका;

शर ने छये, यति वदे टीका.

१ मंदारमरदंदचंपूमा ए नाम तथा यति छे. वाग्वल्लभमां दारिकामां यति कही नथी.

६११ मालविका. त,ज,स,ल,ग. ७४९

छे मालविका त ज स ला ग थी.

६१२ नाभस. ज,ज,स,ल,ग. ७५०

ज जा स ल गा रच तुं नाभसे.

६१३ सौभगकला. भ,ज,स,ल,ग. ७५१

सौभगकला भ ज स ला ग थी.

६१४ वीवध. न,ज,स,ल,ग. ७५२

न ज स लगी रच तुं वीवधे.

६१५ आशापाद. म,भ,स,ल,ग. ७९३

आशापादे म भ स ल गा धरो.

६१६ भुजलता. न,स,त,ल,ग. ८००

रच भुजलता ना सा त लगे.

६१७ सायक. स,भ,त,ल,ग. ८१०

रचजो सायक सो भा त ल गे.

६१८ कलस्वनवंश[1],पायका. (ग.प्र.प्र.) म,म,त,ल,ग. ८२३

बे भ कलस्वनवंशे त ल गा.

१ वाग्वल्लभ.

६१९ मदनया. न,न,त,ल,ग. ८३२

रच तुं मदनया नान्त लगे.

६२० मोटनक, [1]मोटक, [2]मनिमाळ. त,ज,ज,ल,ग. ८७७

ता जा ज लगी कर् मोटनके.

१ छंदोल्नामांथी. २ आ नाम प्रवीणसागरमां छे. कोइ पांचे यति वेदेछे.

६२१ खटका,हरिणी. (छंदःप्रभाकर.) ज,ज,ज,ल,ग. ८७८

ज जा ज ल गे रचजो खटका.

६२२ शल्कशकल. भ,ज,ज,ल,ग. ८७९

शल्कशकले भ ज जा ल ग छे.

६२३ सुमुखी. ७, ४ यति* न,ज,ज,ल,ग. ८८०

न ज ज ल गे रच् तुं सुमुखी.

*छंदःशास्त्र (कलकत्तानी छापेली प्रति) उपरना वेचर रामदेवना *टिप्पण* (पृ. २२२) प्रमाणे, पण "मंदारमरंदचंपू" पृष्ट १६मां ६,५ उपर अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभटीमां ५,६ उपर यति पृष्ट ४३मे कही छे. छंदोवृत्त-मुक्तावलीमां यति कही नथी.

६२४ जिह्माशया. त,भ,ज,ल,ग. ८८१

जिह्माशया त भ ज ला ग धरो.

६२५ चपला. ६,५ यति. भ,भ,ज,ल,ग. ८८७

भू भ ज ला ग थी, रचो चपला.

६२६ कुशलकलावतिका. भ,न,ज,ल,ग. ८८९

म्ना ज्ला गे कुशलकलावतिका.

६२७ अर्थशिखा. भ,न,ज,ल,ग. ८९१

भा न ज ल ग कर् अर्थशिखा,

६२८ हरिकान्ता. स,भ,त,ल,ग. ९२०

हरिकान्ता रच् सा भा त ल गे.

६२९ निरवधिगति. न,स,भ,ल,ग. ९२८

निरवधिगति ना स भ ल गे.

६३० हरिरूपक, हरिरूप. र,न,भ,ल,ग. ९९९

छे हरिरूपक रा न भ ल गे.

६३१ दामघटिता. न,न,भ,ल,ग. ९६०

न न भ ल ग थी दामघटिता.

६३२ समित्. न,य,न,ल,ग. ९७६

समित बनावो न य न ल गे.

६३३ सामपदा. म,स,न,ल,ग. ९८९

जाणो सामपदा म स न ल गे.

६३४ अशुविलास. ५,६ यति. न,त,न,ल,ग. १०००

अशुविलासे, न त न ल ग छे.

६३५ भ्रमरविलसिता[1], भ्रमरविलसित, [2]भ्रमरललित, [3]भ्रमरावित. } म,भ,न,ल,ग. १००९ ४,७ यति.*

मा भ्ना ला गे, भ्रमरविलसिता.

१ राग हिंडोळ, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६ मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी. २ छंदःशास्त्रमा भ्रमरललित नाम अने ४,७ यति कही छे. ३ गणप्रस्तारप्रकाश.

* मंदारमरंदचपूमां पण आ प्रमाणे यति छे. वाग्वल्लभमां यति नथी कही.

६३६ काहली. स,भ,न,ल,ग. १०१२

स भ ना ला ग धर प्रति पदे,

रचना काहली सरस वदे;

मनु[१४] मात्रा चरण पण गणे

कवि को' जाति कल प्रकरणे.

"वृत्तरत्नाकर"नी नारायणभट्टीकामां आ मात्रामेळ जाति कही छे.

६३७ दमनक. ४,७ यति न,न,न,ल,ग, १०२४

दमनक, रच न न न ल गे.

छंदःशास्त्र, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, वाग्वल्लभ अने छंदोरत्न मुक्तावलीमां आ यति पाळी नथी.

६३८ गंभारि. र,र,र,ग,ल. ११७१

रा र रा गा ल थी थाय गंभारि.

६३९ कामुकलेखा. भ,म,स,ग,ल. १२२३

कामुकलेखा भू म स गा ले थॉ.

६४० संश्रयश्री. त,त,त,ग,ल. १३१७

छे संश्रयश्री त ता ता ग ला थॉ.

६४१ सैनिक-[1] सेनिका. ज,र,ज,ग,ल. १३६६

रचाय सैनिके ज रा ज गाल.

१ वाणीभूषणमां तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमां गुरु लघुने क्रमे ने लघु गुरुने क्रमे एम बने रीते ११ अक्षरना छंदने सेनिका एवुं नाम आप्युं छे, पण आ पिंगळमां गणना भेदने लीधे श्येनिका ने श्येनी वृत्तने अंक ५९८ मे जुदु गण्युं छे.

६४२ पिचुल. स,स,ज,ग,ल. १३७२

पिचुले रचवा स सा ज गा ल.

६४३ कालवर्म. न,भ,ज,ग,ल. १४००

न भ ज गा ल रच कालवर्म.

६४४ सान्द्रपद. चोथे यति. भ,त,न,ग,ल. १९११

सान्द्रपदे, आण भ त न गा ल.

छंदोमञ्जरीना परिशिष्टमां छे पण यति नथी

६४५ सालन. (गणप्रस्तार प्रकाश) भ,भ,म,ल,ल. १९९१

भू भ म लो ल धरी तो सालन.

६४६ शेपापीड. म,भ,म,ल,ल. १७७७

शेपापीडे म भ म ल ला भर.

६४७ केलिचर. न,य,न,ल,लें. २०००

न य न ल ले केलिचर कर.

६४८ अगरिम. न,न,न,ल,ल. २०४८

न न न ल ल थकी अगरिम.

१२ जगतीछंद. ४०९६ भेद छे. १२ वर्ण.

६४९ विद्याधार, विद्याधर, विद्याधारी, ‡विद्याहार. म,म,म,म. १ छंदोलतामां ४,४,४ यति कही छे

मा मा मा मा, विद्याधारे, बारे आवे,

चारे चारे, चारे शोधी, छेदो लावे;

‡ छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आ नामनुं वृत्त आज मापनुं छे, पण तेमां यति कही नथी, परंतु वाग्वल्लभ इत्यादिमां यति कही छे

६५० भासितभरण. भ,स,म,म, ३१

भासितभरणे भा सा मा मा आणो.

६५१ विषमव्याली. न,स,म,म. ३२

न स म विषमव्यालीमां छेलो मा.

६५२ शम्या. त,न,म,म. ६१

शम्या रच त न मा मा आणी पोते.

६५३ मिथुनमाली. न,न,म,म. ६४

रच तुं मिथुनमाली-ना ना मा मे.

६५४ किंशुकास्तरण. र,स,य,म. ९१

किंशुकास्तरणे र सा या मा आवे.

६५५ दोर्लीला. स,स,य,म. ९२

स स या म भरी बनावो दोर्लीला.

६५६ विशालाम्भोजाली, अम्भोजाली. त,स,य,म. ९३

ता सा य म थकी विशालाम्भोजाली.

६५७ वीणादण्ड. ज,स,य,म. ९४

ज सा य म धरो तमे वीणादण्डे.

६५८ मत्ताली. (वाग्वल्लभ) ४, ८ यति. म,त,य,म. ९७

मत्ताली मां, मा त य मा छेदो चोथे,

६५९ वसनविशाला. न,न,य,म. १२८

न न य वसनविशाला छेल्ले मा.

६६० लीलारत्न. म,म,स,म. १९३

लीलारत्ने आणो म म सा मा खोळी.

६६१ कान्तोत्पीडा. भ,म,स,म. १९९

भा म स माथी थायज कान्तोत्पीडा.

६६२ जलधरमाला. ४,८ यति[1] म,भ,स,म. २४१

मा भा सा मा, जलधरमाला चोथे.

[1] शब्दकल्पद्रुम, अने छंदोमंजरी प्रमाणे वाग्वल्लभ इत्यादिमां यति कही नथी.

६६३ विवरविलसित. त,न,स,म. २९३

ता ना विवरविलसिते छे सा मा.

६६४ शुद्धान्त. न,न,स,म. २९६

न न स म ठिक रचजो शुद्धान्ते.

६६५ सुखानंद[1]. य,र,त,म. २७४

सुखानंदे, रचो या रा त मा शोधी.

[1] छंद कामदुघावत्सना कर्त्ता सुखानंदे पोताना नामनो रच्यो छे.

६६६ साक्षी. स,स,ज,म. ३४८

स स जा म धरो सदाय साक्षीमां.

६६७ स्वरवर्षिणी. स,ज,ज,म. ३६४

स्वरवर्षिणी रच् सो ज जा माथी.

६६८ धवलकरी. न,न,भ,म. ४४८

रच् धवलकरी न न भा माथी.

६६९ लुम्बाक्षी, लुब्धाक्षी. स,स,न,म. ४७६

स स ना म थकी रच् तुं लुम्बाक्षी.

६७० मलयजसुरभि. म,न,न,म. ५०९

मा ना न्मा मलयजसुरभिमां छे.

६७१ वाहिनी. ७, ५ यति. (पिंगळछंदःसूत्रे) त,म,म,य. ५१७

छे वाहिनीमां साते, दे ता म मा या.

६७२ पुट, श्रीपुट[१], स्फूट. ८, ४ यति. न,न,म,य. ५७६

पुट वसु युग ना ना, मा य थी छे.

१ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम छे. अने ते तथा छंदोमंजरीना परिशिष्ट अने शब्दकल्पद्रुममां पण एज यति छे.

वृत्तरत्नाकरमां मुनि शर विरति एम कहीने वसु युग इति पाठः एम छे.

६७३ वैश्वदेवी. ५, ७ विराम. म,म,य,य. ५७७

मा मा या ये छे, वैश्वदेवी शरे तो.

राग बेहागडा, ताल विजयानंद, मात्रा ११ विलंब काळ.

(संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

१ छंदःशास्त्र, छंदोमंजरी, प्राकृत पिंगळसूत्र अने मंदारमरंदचंपूमां पण आ प्रमाणे यति छे.

६७४ आधिदैवी. (वाग्वल्लभ) ६, ६ यति. य,म,य,य. ५७८

यमायाया छठे, यति आधिदैवी.

६७५ भुजंगप्रयात[१], भुयंगपयाउ[२]. य,य,य,य. ६९८

यायायाय आवे भुजंगप्रयाते.

१ मागधी "छंद शतक" मां दोढा=छ यगणवाळाने क्रीडाचक्र अने बमणा=आठ यगणवाळाने महाभुजगप्रयात केहेछे पादान्ते यति

२ राग मालकोंस, ताल खंड जाति एकताल (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

६७६ समयमहिता. स,स,य,य. ६०४

समयमहिता ससायाय थी छे.

६७७ मिहिरा. न,स,य,य. ६०८

रच तुं मिहिरा नसायाय थी तो.

६७८ कलवल्लीविहंग. ज,त,य,य. ६१४

जतायया छे कलवल्लीविहंगे.

६७९ अस्रधारा, असुधारा. (वागवल्लभ) ज,र,र,य ६६२

जरारये बनेछे सदाऽस्रधारा.

६८० वलोर्जिता, अचलचर्चिका. न,ज,र,य ६८८

रच तुं वलोर्जिता न जा र याथी.

६८१ वधिरा. स,भ,र,य. ६९२

वधिरामां रच सा भ रा य शोधी.

६८२ वलभी. भ,भ,र,य. ६९९

तुं वलभी रच भा भ रा य आणी.

६८३ परिमितविजया. न,न,र,य. ७०४

परिमितविजया न ना र ये छे.

६८४ लीढालर्क. म,त,स,य. ७२७

लीढालर्के मा त स य आणजोजी.

६८५ वनिताविलोक त,त,स,य. ७४१

ता ता स या आण वनिताविलोके.

६८६ कुमुदिनीविकाश.　　　ज,त,स,य. ७४२

ज ता स या छे कुमुदिनीविकाशे.

६८७ दल[१].　　　भ,ज,स,य. ७५१

भ ज स य आण दल वृत्तमांहे.

१कवि दलपतरामे आ वृत्त पोताना नामनुं नवु बनाव्युं छे.

६८८ वसन्तहास.　　　म,भ,स,य. ७५३

मो भा सा या कर तुं वसन्तहासे.

६८९ मणिमाला[१], पुष्पविचित्रा. ६,६ यति. त,य,त,य. ७८१

ता या त य आणो, छंदे मणिमाला.

१ मंदारमरंदचंपूमां तथा शब्दकल्पद्रुममां ६,६, यति छे.

६९० सिक्तमणिमाला, श्वेतमणिमाला. भ,य,त,य. ७८३

सिक्तमणिमाला भा या त य थी छे.

६९१ विद्रुमदोला.　　　न,य,त,य. ७८४

न य त य थी थाशे विद्रुमदोला.

६९२ सुखशैल.　　　म,भ,त,य. ८१७

भा भा ता या धर शोधी सुखशैले.

६९३ करमाला.　　　स,भ,त,य. ८२०

करमाला कर साभातय आणी.

६९४ विजयपरिचया.　　　न,न,त,य. ८३२

विजयपरिचयामां न न ता या.

६९५ कासारक्रान्ता.　　　म,त,न,य. ८६१

कासारक्रान्ता म त जा य थकी छे.

६९६ माया, गौरी[१].　　　त,ज,न,य. ८७७

माया रचनो त ज जा य धरीने.

१ छंद प्रभाकरमां लखेछे के आ वृत्त "श्यामनंदिका"मां जोनामां आवेछे

६९७ परिलेख[1], धारी. ज,ज,ज,य. ८७८

ज जा ज य आण सदा परिलेखे.

१ जे बे वृत्तना घणुं करीने पेहेला अक्षर गुरु अथवा लघु होय, अने बाकीना अक्षर विशेषे करीने सरखा होय तो तेवा बे वृत्तना मिश्रणथी उपजाति वृत्त बनेछे; जेमके-माया (अं. ६९६) अने परिलेख (अं. ६९७) ए बे वृत्तमां पेहेलानो प्रथम अक्षर गुरु छे, अने बीजानो प्रथम अक्षर लघु छे, अने बाकीना बंने वृत्तना बधा अक्षर एक सरखा छे, तो ए बे वृत्तना मिश्रणथी उपजाति थायछे. तेवीज रीते, धृष्टपद (अं.७०३) अने द्रुतपदना (अं.७०४) मिश्रणथी पण उपजाति थायछे, अने ते प्रत्येक चौद चौद थायछे. विषमपदना प्रकरणमां असंकीर्णना पेटामां कहेलां वृत्त उपजाति गणाय. तेमज विषमाक्षरपादवाळां वृत्तोनुं मिश्रण थवाथी पण उपजाति थायछे. जेमके, (अं.७२८) वंशस्थना अक्षर बार छे, अने उपेन्द्रवज्राना (अं.६७१) अक्षर ११ छे, तो पण ते बेनुं मिश्रण थवाथी उपजाति थायछे, तेनुं उदाहरण, वाल्मीकी रामायणना सुन्दर काण्डमां नीचे प्रमाणे छेः–

नमोऽस्तु वाचस्पतये सवज्रिणे,	१२	वंशस्थनुं.
स्वयम्भुवे चापि हुताशनाय;	११	उपेन्द्रवज्रानुं.
अनेन चोक्तं यदिदं ममाग्रतो,	१२	वंशस्थनुं.
वनौकसां तच्च तथास्तु नान्यथा.	१२	वंशस्थनुं.

वळी इन्द्रवंशा, उपेन्द्रवज्रा, अने वंशस्थ ए त्रणना मिश्रणथी उपजाति थायछे, तेनुं उदाहरण भागवतना १० स्कंधमां नीचे प्रमाणे छे.

(भागवत स्कंध १० पूर्वार्द्ध अध्याय १२ मो श्लोक २६)

तावत्प्रविष्टा स्त्वसुरोदरान्तरे,	१२	इन्द्रवंशानुं.
परं न गीर्णाः शिशवः सवत्साः	११	उपेन्द्रवज्रानुं.
प्रतीक्षमाणेन बकारिवेशनं,	१२	वंशस्थनुं.
हतस्वकान्तस्मरणेन रक्षसा.	१२	वंशस्थनुं.

इन्द्रवज्रा, इन्द्रवंशा, उपेन्द्रवज्रा अने वंशस्थनुं मिश्रण थवाथी उपजाति थायछे तेनुं उदाहरण प्रबोधचंद्रोदय नाटकमां नीचे प्रमाणे छे. अंक बीजो (प्रवेशक) श्लोक १२मो.

विद्याप्रबोधोदय जन्मभूमि,	११	इन्द्रवज्रानुं.
वाराणसी ब्रह्मपुरी दुरत्यया;	१२	इन्द्रवंशानुं.
अतः कुलोच्छेद विधिं विधित्सु,	११	उपेन्द्रवज्रानुं.
र्निवस्तु मत्रेच्छति नित्यमेवसः.	१२	वंशस्थनुं.

उपरना उदाहरणो उपरथी एम सिद्ध थायछे के, प्राचीन विद्वानोए एम मान्युं छे के, समाक्षरवृत्तना मिश्रणथी उपजाति थाय, अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कह्युं-छे के- त्रिष्टुपमां वृत्तोना मिश्रण थवाथी जेम उपजाति थायछे, तेमज बार तेर अक्षरना समानअक्षरना तथा समान यतिवाळा पादोना मिश्रणथी पण उपजाति थायछे. एटले विषम अक्षरना विषम यतिवाळा, तेमज बे करतां वधारे वृत्तना मिश्रणथी उपजाति वृत्त थायछे, एम रामायण, भागवत अने प्रबोधचंद्रोदयनां दृष्टांतो सहित उपर जे लखवामां आव्युं छे, ते मतनुं नारायणभट्टीना अभिप्रायथी खंडन थायछे. एटले एवा प्रकारनी उपजाति करवी योग्य नथी, एम अभिप्राय जणावेछे ते उचित छे.

६९८ वसा. भ,ज,ज,य. ८७९

भो ज ज य थी बनशे कवि! वसा.

६९९ तामरस, [1]अभिनवतामरस, ललितपद[2]. } न,ज,ज,य. ८८०

न ज ज य थायज तामरसे तो.

१ छंदोलना अने वृत्तरत्नाकरमा अभिनवतामरस'- भायाछंदोमंजरीना मोगमा त्रण नगण पछी एक जगण छे. पण कवितामा तेम नथी माटे ए भूल जणायछे. २. वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी प्रमाणे.

७०० कुंभोध्नी. म,भ,ज,य. ८८१

कुंभोध्नीमां म भ ज या करजो जी.

७०१ शरभेया. स,भ,ज,य. ८८४

शरभेया रच स भा ज य आणी.

७०२ नीरान्तिक. त,भ,ज,य. ८८५

नीरान्तिके त भ ज या ठोक आवे.

७०३ धृष्टपद. भ,भ,ज,य. ८८७.

धृष्टपदे रच भ भा ज य आणी.

७०४ द्रुतपद, द्रुतपा. न,भ,ज,य. ८८८

द्रुतपदे रच-न भा ज य शोधी.

[1] "शब्दकल्पद्रुममां" आ वृत्तना गण न भ न य छे, पण तेने बीजा प्रयोगनु प्रमाण नथी

७०५ अर्दितपाद. र,न,ज,य. ८९१

रा न जा य धर तुं अर्दितपादे.

७०६ परितोषा. स,न,ज,य. ८९२.

स न जा य थकी रचो परितोषा.

७०७ छलितकपद. त,न,ज,य. ८९३

आणो छलितकपदे त न जा या.

७०८ उपधान. ज,न,ज,य. ८९४

ज ना ज य थी उपधान रचेछे.

७०९ पथिकान्ता. भ,न,ज,य. ८९५

भा न ज य थकी रचो पथिकान्ता.

७१० नयमालिनी, वनमालिका, नवमालिनी, नवमालिका, नवमालती. — न,ज,भ,य. ९४४ ८,४ यति[1] नारा. मही अने छंद-शास्त्र प्रमाणे.

वैसु नवमालिका न,ज भ य थी.

१ सूत्रने अनुसरता केटलाक ५,७ यति मानेछे, वळी मंदारमरंदचपूमा ७, ५ उपर यति कही छे.

७११ कुसुमविचित्रा. ६, ६ यति.[1] न,य,न,य. ९७६

कुसुमविचित्रा; पर्टे न य ना ये.

१ मंदारमरंदचपूमा पण एज प्रमाणे यति छे.

७१२ अर्पितमदना. भ,स,न,य. ९९१

अर्पितमदना रच भ स ना ये.

७१३ विरतिमहती. त,न,न,य. १०२१

ता ना न य थी विरतिमहती छे.

७१४ अगौरी, ललित.[1] न,न,म,र. १०८८

न न म र थी अगौरी छे शोभती.

१ वाग्वल्लभमां आ वृत्तनु नाम ललित राख्यु छे पण ११ अक्षरमां प्रसिद्ध ललित छे. जुओ अंक ५९७ मे. कामदुघावत्समां पण आ नाम छे.

७१५ गलितनाला. ज,भ,य,र. ११४२

ज भा य रे गलितनाला भाखे.

७१६ सरोजावली. य,य,र,र. ११६२

सरोजावलीमां या य रा रा करो.

७१७ स्रग्विणी, शृङ्गारिणी, लक्ष्मीधर, लक्ष्मीधरा[1], चंद्रायणा[2], चंद्राणा[3], चंद्रानन[4], काममोहिनी, चंढाना, मलया[5], कामिनीमोहन[6], हिंगुदी, झंपताळ[7]. } र,र,र,र. ११७१ पादान्ते यति.

स्रग्विणी तो रचो रा र रा रा धरी.

१ छंद प्रभाकरमांथी. २ "मागधी छंद शतक"

३-४ मागधी पिंगळ छंदोग्रंथमां चंद्राणा, चंद्रानन नाम आप्या छे.

५ पृथ्वीराजरासामां ए नाम वापर्युं छे.

६ मागधी "छंद शतक"मां एनुं कामिणीमोहण नाम लखी तेनां चार पंच कलथी २० मात्रा कही छे, अने तेना ताल स्रग्विणा प्रमाणे छे

७ प्रवीणसागरमां आ नाम छे.

राग घाघेश्री, ताल तिश्रजाति रूपक, मात्रा ५, मध्यकाल (संगीता-नुसारछंदोमंजरी)

७१८ विप्लुतशिखा. भ,ज,र,र. ११९९

विप्लुतशिखा रचो भ जी रा र थी.

७१९ विशिखलता. न,ज,र,र. १२००

विशिखलता रचो न जा रा र थी.

७२० गौरी[1], प्रभा[2], मन्दाकिनी[3], प्रमुदितमदना, प्रमुदितवदना[4]. { न,न,र,र. १२१६ ७, ९ यति.

हय[७] शर[५] न न रा, र गौरी विपे.

१ भट्टोजीदीक्षितना मत प्रमाणे ए नाम छे, तेमां यति आठे छे.

२ मल्लिनाथना मत प्रमाणे प्रभा नाम छे

३ ए नाम तथा यति मंदारमरंदचम्पू अने वाग्वल्लभमां छे याए-

वल्लभमा "प्रभा, मंदाकिनी" नाम छे, तेनु माप उपर प्रमाणे अने तेमा ७, ५ यति कही छे शब्दकल्पद्रुममा यति कही नथी ते मत ग्राह्य नथी

४छंद शास्त्र, मंदारमरंदचम्पू (पृष्ट१७) अने वृत्तरत्नाकरमा प्रमुदितवदना नामथी आ मापने यति छे

७२१ चपलाक्षिका, चंचलाक्षिका[1]. न,न,र,र. १२१६

न न र र चपलाक्षिकामां दिसे.

१छंदःशास्त्र प्रमाणे आ नाम छे, पण कवियो घणुं करीने वृत्तना मापमा आवी शके नहि एवा नाम पाडता नथी "चंचलाक्षिका" ए नाम कोइ प्रकारे पण पोताना मापना गणमा आवी शक्तु नथी माटे अमे "चपलाक्षिका" एवो पर्याय मूक्यों छे.

७२२ सुतल. स,र,स,र. १२३६

सुतले आणवा सरसारा गणो.

७२३ अतर्विकाशवासक. त,र,ज,र. १३६१

अतर्विकाशवासके त रा ज रा.

७२४ ललामलालिताधरा,[1] वसंतचत्वर[2], वरायति[3] ज,र,ज,र. १३६६

ललामलालिताधरा ज रा ज रा.

१ वाग्वल्लभमा यति कही नथी अने ललामलालिताधरा नाम छे

२ वसंतचत्वर नाम पिंगल्यदर्शमा छे तेणे ६, ६ यति कही छे पण तेनु बीजु प्रमाण जडयु नथी

३ आ नाम प्रवीणसागर लेहेर १५ मींमां छे आ गणोवाळा रूपने शब्दकल्पद्रुममा "पंचचामर" कयु छे, पण आ ग्रथमा "पंचचामर" वृत्त अक ७८५ मे जुदुं दाखल छे, तेथी अमे ए नाम उमेर्यु नथी

७२५ परिपुंखिता. र,स,ज,र. १३७१

शायदे परिपुंखिता र सा ज रे.

७२६ मसुमरमरालिका. न,स,ज,र. १३७९

मसुमरमरालिका न सा ज रे.

७२७ वीरासिकी, इन्दुवंशा, इंद्रवंशा. } त,त,ज,र. १३८१ ५, ७ यति.[1]

वीरासिकामां, शौर छे त ता ज रे.

१ आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमां छे पण तेणे यति कही नथी. श्रुतबोध टीकामां ५, ७ यति छे. राग नवरोझ, ताल त्रिखंडवज्र, मात्रा १५, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

७२८ वंशस्थ, वंशस्थविल, महानिबंधा, वंशस्तनित[1] } ज,त,ज,र. १३८२ पादांते यति.[2]

रचाय वंशस्थ ज ता ज रा धरी.

१ शब्दकल्पद्रुम. २ श्रुतबोधमां पांचमे यति केहेछे, पण मंदारमरंदचम्पूमां ६, ६,ए किंवा पादांते यति कही छे. छंदःशास्त्रमां पण पादांते यति छे. पिंगलादर्शमां वंशस्थमा ६, ६ यति कही छे तेनु प्रमाण जडयु नथी. राग देवगांधार, ताल निःसारुक, मात्रा ९, विलंबकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

इन्द्रवंशा अने वंशस्थना चरणोना मिश्रणथी १४ प्रकारना उपजाति भेद थायछे. (S) आ चिन्ह इन्द्रवंशानुं छे. (।)आ चिन्ह वंशस्थनुं छे.

SSSS चारे चरण इन्द्रवंशानां छे एम सूचवेछे.

१ ।SSS वैरासिकी- १ वंशस्थ, २ इन्द्रवंशा, ३ इन्द्रवंशा, ४ इन्द्रवंशा.

२ S।SS रताख्यानकी: १ ,, २ वंशस्थ, ३ ,, ४ इन्द्रवंशा.

३ ।।SS इन्दुमा १ वंशस्थ, २ वंशस्थ, ३ इन्द्रवंशा, ४ इन्द्रवंशा.

४ SS|S पुष्टिदा.	१ इन्द्रवंशा,	२ इन्द्रवंशा;
	३ वंशस्थ,	४ इन्द्रवंशा.
५ |S|S उपमेया,	१ ,,	२ ,,
रामणीयक.	३ ,,	४ ,,
६ S||S सौरभेयी.	१ इन्द्रवंशा,	२ वंशस्थ,
	३ वंशस्थ,	४ इन्द्रवंशा.
७ |||S शीलातुरा.	१ ,,	२ वंशस्थ,
	३ ,,	४ इन्द्रवंशा.
८ SSS| वासन्तिका.	१ इन्द्रवंशा,	२ ,,
	३ ,,	४ वंशस्थ.
९ |SS| मन्दहासा.	१ वंशस्थ,	२ इन्द्रवंशा,
	३ इन्द्रवंशा,	४ वंशस्थ.
१० S|S| शिशिरा.	१ इन्द्रवंशा,	२ वंशस्थ,
	३ ,,	४ ,,
११ ||S| वैधात्री.	१ वंशस्थ,	२ ,,
	३ इन्द्रवंशा,	४ ,,
१२ SS|| शंखचूडा.	१ ,,	२ इन्द्रवंशा,
	३ वंशस्थ,	४ वंशस्थ.
१३ |S|| रमणा.	१ ,,	२ इन्द्रवंशा,
	३ ,,	४ वंशस्थ.
१४ S||| कुमारी.	१ इन्द्रवंशा,	२ ,,
	३ वंशस्थ,	४ ,,

७२९ विधारिता.　　ज,ज,ज,र. १२९०

जजा ज र याय विधारिता विषे.

७३०. पिकालिका, विधायिनी. भ,ज,ज,र. १३९१

भा ज ज र थाय पिकालिका विषे.

७३१ मालती[1], शुभ, वरतनु, यमुना[2]. न,ज,ज,र. १३९२ ५,७, यति. ३

यति शरछे, न ज जा र मालती.

मंदारमरंदचंपूमां कह्यु छे के केटलाकने मते " मालिनी" नाम छे.
शब्दकल्पद्रुम तथा प्राकृतपिंगलसूत्रमा (पृष्ट १५०) मे केहेछे के,
मालतीने कोइ यमुना केहेछे.
नारायणभट्टी प्रमाणे छंदोलतामां केहेछे के केटलाक मालती ने मालिनी
हेछे. ७,५, यति तेणे कही छे.
छंदोमंजरीमां यति नथी.
राग वसंत, ताल चतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६, मध्यकाळ.
संगीतानुसार छंदोमजरी.)

७३२. ललिता, सुललित. ५,७ यति. त,भ,ज,र. १३९७

पांचे विराम, ललिता त भा ज रे.

ृत्त्वल्लभमां तथा छंदोमजरीमा ललिता नाम छे तेमां यति नथी.
मंदारमरदचपूमा यति लखी नथी, पण छंदोर्णव तथा पिंगळादर्शमा ५,७
यति कही छे (पृष्ट ८५) सुललित नाम भाषा छंदोमजरीमां छे तेमां यति
कही के पाळी नथी.

७३३ प्रियम्वद, प्रियंवदा. न,भ,ज,र. १४००

न भ ज रा धर प्रियंवदा विषे.

राग त्रिवेणी, ताल चतुश्र जाति त्रिताल, मात्रा १६, मध्यकाळ.
संगीतानुसार छंदोमंजरी)

७३४ विरला, वीरला. स,न,ज,र. १४०४

विरला रच स न जा र आणिने.

७३५ अविरलरतिका. भ,न,ज,र. १४०७

छे अविरलरतिका भ ना ज रे.

७३६ राधिका. स,भ,भ,र. १४६०

स भ भा रे रन् वृत्त तुँ राधिका.

७३७ द्रुतविलम्बित,[1] सुंदरी, द्रुतविलंब. (गणप्रस्तारप्र.) न,भ,भ,र. १४६४

द्रुतविलम्बित थाय न भा भ रे.

१ मंदारमरदचंपू प्रमाणे पश्मा यति नहि. पिंगलादर्शमां ६, ६ यति कर्हा छे, पण वृत्तरत्नाकर, छंदोमजरी, प्राकृतपिंगलसूत्र (पृष्ट १५३) वगेरे प्रमाण प्रथमां यति नथी. प्राकृतपिंगलसूत्रमां "सुंदरी" मां द्रुतविलंबितनुं जे माप आप्युं छे, यति कर्हा नथी. राग सोहनी, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमजरी)

७३८ यूथिका. ३, ९ यति. र,न,भ,र. १४६७

यूथिका, र न भ रे यति छे त्रणे.

राग मध्यमावती सारग मिश्रगजलीला, मात्रा१७, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमजरी.)

७३९ उज्वला, महोज्वला. न,न,भ,र. १४७२

न न भ र धरजो कवि! उज्वले.

७४० रास,[1] मता.[2] ६, ६ यति. न,र,न,र. १४९६

न र न रे मता, छ पर रासमां.

१ रास भगवत्पिंगळमांथी २ मंदारमरदचंपूमां ए नाम तथा यति छे.

७४१ विपुलपालिका. र,ज,न,र. १५१९

रा ज ना र आण् विपुलपालिका.

७४२ उपलेखा. स,भ,न,र. १५२४

उपलेखा रन् स भ न रा थकी.

७४३. भसलविनोदिता. ज,भ,न,र. १५२६

ज भा न रा थी भसलविनोदिता.

७४४. विरतप्रभा. भ,भ,न,र. १९२७

भाभनरे थी रच विरतप्रभा.

७४५. मुकुलितकलिकावली. र,न,न,र. १९३१

रानरे मुकुलितकलिकावली.

७४६. जलमाला. ४,८ उपर यति. भ,भ,म,स. १४९१

भाभमसा, जलमाला वेद[४] वसु[८]

मंदारमरदंचंपू पृष्ट १७ मे आ नाम तथा यति छे.

७४७. अतिवासिता. स,य,र,स. १६७६

अतिवासितामां सायरास धरो.

७४८. भुजङ्गजुर्पी. र,स,र,स. १६९१

रासरास थकी छे भुजङ्गजुर्पी.

७४९. अर्जितफालिका. भ,स,र,स. १६९५

अर्जितफलिका भासरास थकी.

७५०. ललना. ५,७ यति. भ,म,स,स. १७३९

छे यति पाचे, भामससे ललना.

वाग्वल्लभ, छंद शास्त्रनु टिप्पण, छदोमंजरी, शब्दकल्पद्रुम इत्यादिमां यति छे छंद प्रभाकरे यति पाळी नथी

७५१ कुरङ्गावतार. य,य,स,स. १७३८

कुरंगावतारे ययसास धरो.

७५२. प्रमिता. स,र,स,स. १७४८

प्रमिता तो रची सरसास धरी.

७५३ तोटक,नंदिणी.[१] पादान्ते यति[२]. स,स,स,स. १७५६

रचजो ठीक तोटक साससने.

[१] मागधी पिंगळ छंदोग्रंथमा नंदिणी नाम आप्युं छे

[२] पिंगळादर्शमा ६,६ यति कही छे राग देश, ताल चतुश्र जाति त्रिताल, मात्रा १६, मध्यकाळ, (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

७५४ प्रमिताक्षरा.[1] पादान्ते यति. स,ज,स,स. १७७२

प्रमिताक्षरा रच स जा स सथी.

१ छंद प्रभाकरनी टीकामां कह्युं छे के "आ वृत्तमां कोइ कोइ ठेकाणे न न भ र" गण आवेछे, पण तेनुं ए कथन उचित नथी, केमके एनुं रूप उपजातिनुं अंक ७३१ मे प्रसिद्ध छे राग असावरी, ताल चतुर्थ जाति सवारी, मात्रा १६, म यताळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

७५५ विकत्थन. (वाग्वल्लभ) ज,ज,स,स. १७७४

विकत्थन माह धर जा ज स सा

७५६ नीलगिरिका. भ,ज,स,स. १७७५

नीलगिरिका रच भ जा स स थी.

७५७ वनिताभरण. भ,भ,स,स. १७८३

भा भ स सा धर वनिताभरणे.

७५८ हाकलिका. न,न,स,स. १७९२

न न स स थकी कर हाकलिका.

७५९ सुभद्रावतरणि. म,त,त,स. १८२५

मा ता ता सा थी सुभद्रावतरणि.

७६० विरलोद्धता. म,स,ज,स. १८८१

मा स्जा से विरलोद्धता रच भले.

७६१ सुविहिता. य,स,ज,स. १८८२

य सा जा स थकी बने सुविहिता.

७६२ उदर्करचिता. स,स,ज,स. १८८४

स स जा स थकी उदर्करचिता.

७६३ सुवनमालिका, उपवनमालिका. त,स,ज,स. १८८५

जाणो सुवनमालिका त स ज से.

७६४ जलोद्धतगति. ६, ६ यति. ज,स,ज,स. १८८६

ज सा ज स छये जलोद्धतगति.

मंदारमरंदचंपू, वृत्तरत्नाकर, छंदोलता अने पिंगळ छंदःसूत्रमां पण एज प्रमाणे यति छे. छंदोमंजरीमां यति कही नथी.

राग दिनकीपूर्या अथवा पंचवराळी, ताल चतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६, मध्य काळ. (संगीतानुसार छंदोमजरी.)

७६५ नगमहिता, क्रमुकवती. स,भ,भ,स. १९७२

स भ भा से करजो नगमहिता.

७६६ संमदवदना. भ,भ,भ,स. १९७५

भा भ भ से कर संमदवदना.

७६७ चंद्रवर्त्म, चन्द्रवर्तन, चंद्रमग[1], चंद्रमगा,[2] चंद्रमग्ग.[3] र,न,भ,स. १९७९ ४,८ यति[4].

चंद्रवर्त्म, श्रुति रा न भ स थकी.

१ चंद्रमग नाम भाषा छंदोमजरीमां छे तेमां यति कही नथी.

२ छंदरत्नावली. ३ चंद्रमग्ग नाम छंदःरत्नावलिमां छे तेमां यति कही नथी. ४ मंदारमरंदचम्पू पृष्ट १७ मे अने प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ट १५१ मे चंद्रवर्त्म नाम छे पण तेमां अने छंदोलता तथा छंदोमजरीमां यति कही नथी, परंतु पिंगळादर्श तथा वृत्तरत्नाकरनी टीका (नारायण भट्टी) प्रमाणे यति दाखल करी छे.

७६८ कुमारगति. ज,न,भ,स. १९८२

कुमारगति रचो ज न भ स थी.

७६९ उदयनमुखी. न,स,न,स. २०१६

उदयनमुखी रच न स न से.

७७० रसिकपरिचिता. स,त,न,स. २०२०

स त ना सा थी रसिकपरिचिता.

७७१ वीरणमाला. (वाग्वल्लभ) भ,त,न,स. २०२३

वीरणमाला रच तुं भ त न से.

७७२ व्यायोगवती. त,ज,न,स. २०२९

व्यायोगवती रच त ज न स थी.

७७३ वियोगवती. ज,ज,न,स. २०३०

वियोगवती कर ज ज न स थी.

७७४ संगमवती. भ,ज,न,स. २०३१

संगमवती रच भ ज न स थी.

७७५ ज्वलिता. स,न,न,स. २०४४

ज्वलिता रच स न न स धरीने.

७७६ रूपावलि. त,न,न,स. २०४५

रूपावलि रच त न न स धरी.

७७७ अनीचक. ज,न,न,स. २०४६

अनीचक रच ज न न स थकी.

७७८ भासितसरणि. भ,न,न,स. २०४७

भासितसरणि रच भ न न से.

७७९ कृतकातिका, कतिका. न,न,न,स. २०४८

न न न स गणथी कृतकातिका.

७८० निशानी.[1] म,म,म,त. २०४९

मा मा मा ता थी तो निशानी केवाय.

[1] निशानीमां ११ गुरु+१लघु=१२ अक्षर.

एक गुरु घटे तेम बे लघु वधे एम निशानीना बार भेद थायछे.

भेद.	गुरु.	लघु.	अक्षर.
१ कीला.	११	१	१२
२ लीला.	१०	३	१३
३ स्थिरा.	९	५	१४

४ कुमारी.	८	७	१५
५ वीणा.	७	९	१६
६ रंगी.	६	११	१७
७ चातुरचंगी.	५	१३	१८
८ वारी.	४	१५	१९
९ विद्या.	३	१७	२०
१० माला.	२	१९	२१
११ वालिका.	१	२१	२२
१२ वामा, वाम.	०	२३	२३

७८१ सारङ्ग, मेनावली, मेनिका[1], सारंगरू[2], मैणाउल[3], मदनाकुल[4], सारंगा, काम. — त,त,त,त. २३४१. ३,९ यति[5]

सारंग, तो थाय ता ता तता थीज.

१ वाणीभूषण नामे मिथिलाना दामोदरमिश्र कृत छंदग्रथमां आ नाम आप्यु छे. २- छंदोलता अने मागधी पिंगळ छंदोग्रथमा केटलाकने मते ए नाम जणावेल छे. ३-४ मागधी छंदःशतकमा एने, मदनाकुल अने मैणाउल केहेछे.

५ प्राकृतपिंगळसूत्र प्रमाणे, सारंगमां ३,९ यति छे वाणीभूषणमां, यति कही नथी.

आना वमणा-आठ तगणनुं आभार वृत्त मान्यु छे ते २४ वर्णमां रूप ९५,८६,९८१ मे दाखल छे

७८२ विकलयकुलवल्ली. न,न,त,त. २३६८

विकलयकुलवल्ली ननाताात.

७८३ निमग्नकीला. ज,त,ज,त. २४०६

निमग्नकीला रच जातजातार्था.

७८४ सयल (शैल). ६,६ यति, य,य,य,ज. २६३४.

धरो शैल छट्ठे, य या या ज ठीक.

पिंगळादर्शने आधारे यति छे गणप्रस्तारप्रमाणमा आने १९ मात्रानी तमाल जाति कही छे.

७८५ पंचचामर, विभावरी.[1]　　र,ज,र,ज. २७३१

राजराज लाव पंचचामरे हुँ.

१ वाणीभूषणमा ए नाम छे.

७८६ मौक्तिकदाम, मोतीदाम, मुत्तियदाम[1], मयंधरमालत्र.[1] } ज,ज,ज,ज. २९२६

ज जा ज ज थी रच मौक्तिकदाम.

१ मागधी छंद शतकमा आ बन्ने नाम छे आना यगणने मुक्तहरा केहेछे पिंगळादर्शमा छठे यति कही छे, पण बीजु प्रमाण जड्युं नथी.

७८७ वासरमणिका.　　भ,स,स,भ. ३३२५

वासरमणिका रच भा सा स भ.

७८८ अरिला.　　स,भ,भ,भ. ३५०८

अरिलामा धर ठीक स भा भ भ.

७८९ मोदक[1], चंधा, मोटक.[2]　　भ,भ,भ,भ. ३५११

मोदक माह रचाय भ भा भ भ.

१ तोटकथी उलटो छे २ शब्दकल्पद्रुममा आ नाम छे मंदारमरंद चंपूमा चार भगणने "भामिनि" नाम आप्यु छे पण ते अगियार अक्षरमा न,र,र,ल,ग थी अंक५१७ मे छे एटले दाखल करवा जेवु नथी प्राकृत-छंद कोषमा चार भ नो दोधक कह्यो छे पण दोधक अक्षर अगियारमा अंक ५८० मे छे एटले आ भूल होय एम लागेछे

मोदकमा पिंगळादर्शमा ६,६ यति कही छे तेनु प्रमाण जड्यु नथी.

७९० तरलनयन, तरल, तरलनयनी, तरलदृक्. } न,न,न,न. ४०९६

न न न न थकी तरलनयन.

तरलनयनमा पिंगळादर्शमा छठे विराम आप्यो छे तेनु प्रमाण जड्यु नथी.

१३ अतिजगती छंद. ८१९२ भेद. १३ वर्ण.

७९१ सव्याली. म,म,म,म,ग. १

सव्यालीमा तेरे गुरु आवेछे पादे.

७९२ वस्तु[१], वास्तुक. म,त,र,म,ग. १६१

मातारामागा रचायछे वस्तु वृत्ते.

१ चित्रसेन रीसाराला मागणी पिंगळना आ वृत्त छे ते लखेछे के देवताने आनंद देछे, मित्र तथा गधर्वनुं भूषण छे, मायिकने तापद छे तथा धर्णने प्रिय छे

७९३ उल्काभास. म,त,स,म,ग. २२९

उल्काभासे मातसमगा आणो शोधी.

७९४ लीलालोल. ४,९ यति. (वा. व) म,भ,स,म,ग. २४१

मा भसा मा गा, विरति युगे[४] लीलालोले.

७९५ कलाधाम. भ,भ,ज,म,ग. ३७१

भा भ ज मा ग धरजो कलाधामे तो.

७९६ वासविलासवती भ,भ,भ,म,ग. ४३९

वासविलासवती भ भ भा मा गा थी.

७९७ विपन्नकदन, विपन्नकलन, विपन्नकमल. } न,र,न,म,ग. ४७२

न र न म ग्विपन्नकदने आवेछे.

७९८ राधा. (छंद प्रभाकर) र,त,म,य,ग. ५४७

रा त मा या गा वडे राधा रचो भाई.

७९९ कंदुक, कंद. (छंदोलता) य,य,य,य,ग. ५८६

य या या य गा थायछे कंदुके कंदे.

८०० विभा. न,य,त,य,ग. ७८४

नयतयगा आणो आप त्रिभा मांही.

८०१ रसधारा. न,य,न,य,ग. ९७६

न य न य गेथी रच रसधारा तुं.

८०२ प्रज्ञामूल. म,भ,न,य,ग. १००९

प्रज्ञामूले रच म भ न य गा आणी.

८०३ चञ्चरीकावली[1]. य,म,र,र,ग. ११९४

य मा रा रा गेथी चंचरीकावली छे.

१ मंदाग्मरदचंपू अने वाग्वल्लभमा पण चंचरीकावली माटे यति मानी नथी

८०४ दर्पमाला,दर्भमाला.६,७यति[1]. य,य,र,र,ग. ११९२

य या रा र गे छे, रागथी दर्पमाला.

१ वाग्वल्लभमा ए प्रमाणे यति छे

८०५ भाजनशीला. त,य,र,र,ग. ११६९

छे भाजनशीला ता य रा रा ग धातां.

८०६ श्राद्धरान्ता. र,र,र,र,ग. ११७१

रा र रा गगथी थायछे श्राद्धरान्ता.

८०७ चन्द्ररेखा[1],चन्द्रलेखा[2].६,७यति.न,स,र,र,ग. ११८४

न स र र गथी, ने छए चन्द्ररेखा,

यति छ मुनिथी, जाणजो चन्द्रलेखा.

१ शब्दकल्पद्रुममा ए नाम छे   २ वृत्तरत्नाकरना परिशिष्ट प्रमाणे ए नाम तथा यति लखेल छे, चन्द्रलेखा नाम आ माप अने यतिवाळु मळी आवता यथार्थ छे, परतु चन्द्रलेखा पदर अक्षरमा रुप ४६२५ मु छे.

८०८ आनता. म,न,र,र,ग. १२०९

मा ना रा र ग थकी रचो-आनता तो.

८०९ प्रमोद[1], पुसपताग्र.[2] भ,न,र,र,ग. १२१६

न न र र ग धरो सुखेथी प्रमोदे.

१ वाग्वल्लभमां आ नाम छे. २ गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे.

८१० उर्वसी[1]. ७,६ यति. न,त,त,र,ग. १३१०

न त त रा गे मुनि, अंग उर्वसी छे.

१ मंदारमरन्दचम्पूमां ए नाम तथा यति छे.

८११ सुकर्णपूर. न,र,ज,र,ग. १३६८

न र ज रा ग थायछे सुकर्णपूरे.

८१२ जगत्समानिका. स,स,ज,र,ग. १३७२

स स जा र ग थी जगत्समानिका छे.

८१३ ऋक्षपाद. स,ज,ज,र,ग. १३८८

रच ऋक्षपाद स जा ज रा ग आणी.

८१४ अतिरंह. ज,ज,ज,र,ग. १३९०

रचो अतिरंह ज जा ज रा ग आणी.

८१५ मृगेन्द्रमुख, हरिमुख[1]. न,ज,ज,र,ग. १३९२

धर तुं मृगेन्द्रमुखे न जा ज रा गा.

१ छंदोर्णवमां ए नाम छे.

८१६ महार्पणी[1]. ३,१० यति. म,न,ज,र,ग. १४०१

मा ना जा, र ग थी महार्पणी बणे छे.

१ सुवृत्ततिलकमां लख्युं छे जे घणुं करीने आकारवाळा अने प्रथमना त्रण अक्षरो धीरे अने बाकीना उतावळथी बोल्याथी आ वृत्त शोभे छे. प्राकृतपिंगलसूत्र, पिंगलछंद सूत्र, छंदोमंजरी, वृत्तरत्नाकर, शब्दा[illegible], अने छंदोऽनुशासनवृत्तिने आधारे अमे यति आपी छे, पण छंदःप्रभाकर (पृष्ठ १८८) मां यति पाळी नथी

राग सोहना, ताल चतुश्र जाति प्रसिद्ध, मात्रा १०, [illegible] ([illegible])

८१७ माणविकाविकास. त,भ,भ,र,ग. १४६१.

ता भा भ रा गुरु माणविकाविकासे.

८१८ कीरलेखा. न,र,न,र,ग. १४९६

न र न रा ग थाय कवि! कीरलेखा.

८१९ मत्तमयूर, माया, मत्तमयूरी, मायक. } म,त,य,स,ग. १६३३ ४,९ यति.[1]

छे मा ता या, सा ग युगे मत्तमयूरे.

१, प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा वाणीभूषणमां यति कही नथी. मंदारमरंदचंपू प्रमाणे (वर्ण व्याघ्री स्तनैर्यतिः) चारे तथा नवे यति कही छे, तेमज वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, वृत्तदर्पण अने शब्दकल्पद्रुममां ४,९ यति कही छे, पण बीजा केटलाक ग्रंथकारोए तेमज छंदःप्रभाकरना कर्त्ताए यति बताबी नथी

संगीतानुसार छंदोमंजरीमां राग श्याम, ताल पटितापुनीकन मात्रा ११, विलंबकाळ केहेछे

८२० आननमूल. भ,त,य,स,ग. १६३९

आननमूले रचवा भा त य सा गा.

८२१ लोध्रशिखा. म,स,स,स,ग. १७५३

मा सा सा स ग थी रच लोध्रशिखा तुं.

८२२ तारक[1]. स,स,स,स,ग. १७५६

रचजो कवि! तारक सा स स सा गे.

१ पिंगळादर्शमां छठ्ठे यति आपी छे पण वाग्वल्लभ, छंदोर्णव इत्यादिमां यति कही नथी

८२३ कलहंस, सिंहनाद, कुटजा, मानपियारी. } स,ज,स,स,ग. १७७२

कलहंस माह स ज सा स ग आवे.

छंदःप्रभाकर तथा शब्दकल्पद्रुममां नन्दिनी नाम विशेष छे पण अंक ८२६ मां ते जूदुं वृत्त छे. वाग्वल्लभमां आ मापनुं **क्षमा** वृत्त मूकेल छे पण ते अंक ८४४ मां जूदुं छे.

कलहंस, सिंहनाद, क्षमा, अने कुटजा, ए नामो वाग्वल्ल॰ पृष्ट ६१ मे छे तेमां यति कही नथी.

प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ट-१६३ मे, छंदोमंजरी पृष्ट ११९ मे छंदोलता, वृत्तदर्पण इत्यादिमां लखेछे के, कलहंसनुं बीजुं नाम सिंहनाद छे तेना मापमां आ गणो छे, पण यति कही नथी.

शब्दकल्पद्रुममां कलहंस अने सिंहनाद ए बे नामो आपी तेमां यति कही नथी.

पिंगळादर्शना कर्त्ताए कलहंस नाम आपी ६,७ यति कही छे (पृष्ट-७६), पण तेनुं प्रमाण शिष्ट ग्रंथोमां मळी आवतुं नथी; एटले ग्राह्य नथी.

८२४ नंदिनी. ९,८ यति[१]. न,ज,स,स,ग. १७७६

रच नंदिनी, तुं न ज सा स ग पाने.

१ पिंगळादर्श प्रमाणे यति लखी छे

८२५ चंडी. न,न,स,स,ग. १७९२

रच कवि न न स स ग गा थकी चंडी.

८२६ नन्दिनी[१]. स,भ,त,स,ग. १७९६

स भ ता सं ग नन्दिनी कवि रचेछे.

१ अगियार वर्णमां नन्दिनी अंक ६१० मे छे तेमां स, ज, स, ल, ग, ए माप छे अने ५. ६ यति छे.

८२७ उपस्थित. ६,७ यति. ज,स,त,स,ग. १८२२

उपस्थित विषे, आणो ज स त सा गा.

छंदोमंजरी अने शब्दकल्पद्रुममां आ गणोनो आ क्रम छे पण यति कही नथी

पिंगलादर्शमा ६,७ यति कही छे (पृष्ट ७२) पण तेनु प्रमाण जडतुं नथी.

८२८ शलभलोला.　　य,य,न,स,ग. १८६६

ययाजासगे थी रचो शलभलोला.

८२९ पङ्कजधारिणी.　　म,स,ज,स,ग. १८९१

थाशे पंकजधारिणी मसजसागे.

८३० कुवेरकटिका.　　स,स,ज,स,ग. १८८४

ससजासग थी कुवेरकटिका छे.

८३१ रुचिरवर्णा,साला.(वाग्वल्लभ) ज,स,ज,स,ग. १८८६

जसाजसग थी रचो रुचिरवर्णा.

८३२ मयूपसरणि.　　भ,स,ज,स,ग. १८८७

भासजसग थी मयूपसरणि छे.

८३३ विरलविरागा,विरलवैराग[1]. स,स,भ,स,ग. १९४८

ससभासग थी छे विरलविरागा.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे.

८३४ विधुरवितान.　　न,न,भ,स,ग. १९८४

रच विधुरवितान ननभसागे.

८३५ रति.[1]　　४,९ यति.　　स,भ,न,स,ग. २०६६

सभनासाग थकी रति श्रुति ग्रहे.

१ मदारमरंदचंपूमाथी रति नाम लीधु छे

८३६ कुटजगती　　७,६ यति[1].　　न,ज,म,त,ग. २०९६

कुटजगती हये, नाजामाताग थी.

१ शब्दकल्पद्रुममा तथा छंदोमंजरीना टिप्पणमा ए यति छे.

८३७ पारावत.　　त,त,त,त,ग. २३४१

पारावते थाय ताताजताग सरे.

८५५ अम्बुदावली. स,य,स,ज,ग. २७६४

सयसाजगे थायज अम्बुदावली.

८५६ मंजुहासिनी[1], मंजुवादिनी[2], मंदभाषिनी[3]. } ज,त,स,ज,ग. २७९०

जतासजागे रच तुँ मंजुहासिनी.

१शब्दकल्पद्रुममां मंजुहासिनी नाम छे पण तेमां यति कही नथी मंजुहासिनी नाम वृत्तरत्नाकर तथा छंदोमंजरीना टिप्पणमां (पृष्ट ४७ मे) छे तेमां यति कही नथी.

२ पिंगळादर्शमा मंजुवादिनी नाम आपी तेमां ५, ८ यति जणावी छे, पण तेनु प्रमाण मळ्यु नथी.

३ छंदोर्णवमा ए नाम छे. तेणे ६, ७ यति कहीं छे (पृष्ट८६)

८५७ मंजुमालती. र,ज,स,ज,ग. २७९१

राजसाजगे रच तुँ मंजुमालती.

८५८ मंजुभाषिणी[1], प्रबोधिता, प्रतिबोधिता, कलहंस[2], कनकप्रभा, सुनंदिनी[3], चित्रवती[4], हंसनाद[5]. } स,ज,स,ज,ग. २७९६ ५, ८ यति. (वृत्तरत्नाकर.)

सजसाजगे, शर थी मंजुभाषिणी.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र, मंदारमरंदचंपू, छंदोलता, भाषाछंदोमंजरी, अने वाग्वल्लभमां ए नाम छे, तेमां यति कही नथी मंजुभाषिणीमां छंदःप्रभाकरमां ४,९ यति कही छे.

शब्दकल्पद्रुममां मंजुभाषिणीमा यति कही नथी तेमां अने प्राकृत पिंगळसूत्रमां मंजुभाषिणी अने शंभुने मते सुनन्दिनी केहेछे एम जणाव्युं छे. पिंगळादर्शमां मंजुभाषिणी नाम आपी तेमां ५,८ यति कही छे वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां मंजुभाषिणी नाम आपी तेमां ५,८ यति जणावी छे २ वृत्तदर्पणमां ए नाम छे ३ प्राकृतपिंगळसूत्रमां प्रबोधितामां यति कही नथी. तेणे मंजुभाषिणी तथा सुनन्दिनीथी प्रबोधिताने जुद

पाड्युं छे अने ते ग्रंथमा यति कही नथी. ४ छंदोमार्त्तंडमां तथा वृत्तमौक्तिकमां ए नाम छे.

संगीतानुसार छंदोमंजरीमा राग मुखारी, ताल वसंत, मात्रा १८, विलंबकाळ जणावेछे.

८५९ प्रभावती[1]. ४,९ यति[2]. त,भ,स,ज,ग. ९८०९

चारे नवे, त भ ज स गे प्रभावती.

१वृत्तदर्पणमां ज, भ, स, ज, ग, ए माप छे. २ वाग्वल्लभमां यति कही नथी. शब्दकल्पद्रुम, श्रुतबोध, छंदोवृत्तमुक्तावलि, अने पिंगळदर्शमा ४,९ यति कही छे.

८६० रुचिरा[1], अतिरुचिरा[2], तनरुचिरा[3], कलावती[4]. — ज,भ,स,ज,ग. ९८०९ ४,९ यति.

ज भा स जा, ग थी रुचिरा युगे[4] नवे.

१ वृत्तरत्नाकर पृष्ठ ४७ मे, वाग्वल्लभ पृष्ठ ६१ मे रुचिरा अने अतिरुचिरा नामो, उपरना माप तथा यतिथी जणाव्यां छे. प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ठ १६८ मां रुचिरा नाम आपी यति अने गणो उपर मुजब जणाव्यां छे.

२ मंदारमरंदचंपू पृष्ठ १७ मे अतिरुचिरा नाम आपी तेना गण ज भ स र ग जणावी ४,९ यति केहेछे, पण चोथा गणने स्थाने तेणे जगणने बदले रगण भूलथी गण्यो छे.

३ छंदोर्णव पृष्ठ ८९ मे, तनरुचिरा नाम, उपरना गणो अने यतिवाळा वृत्तनुं आप्युं छे.

४ कलावती नाम छंदोवृत्तमुक्तावलिमांथी लीधुं छे.

छंदःप्रभाकर पृष्ठ १८९ मे रुचिरामां यति कही नथी अने रुचिरानेज प्रभावती केहेवानुं जणाव्युं छे, परंतु प्रभावती अंक ८५९ मे उपर जूदा मापथी छे,

८३८ प्रवाहिका. ज,त,त,त,ग. २३३२

प्रवाहिका थाय जाता तता गा थकी.

८३९ स्विन्नशरीर. भ,त,त,त,ग. २३४८

स्विन्नशरीरे धराशे भताता तगा.

८४० परिवृढ. न,त,त,त,ग. २३४४

परिवृढे नाततातागं आवे पदे.

८४१ वामवदना. भ,ज,त,त,ग. २३५१

वामवदना रचो भाज ताताग थी.

८४२ किरात, कुटिलगति. न,ज,त,त,ग. २३५१

रच तुं किरात नाजाततागा थकी.

८४३ चन्द्रिका,[1] उत्पलिनी, क्षमा,[2] विद्युत.[3] } न,न,त,त,ग. २३६८ ७,६ यति.

न न त त ग हुये, जोड़ तु चंद्रिका.

१ प्राकृत पिंगळसूत्रमां चन्द्रिका नाम छे, तथा उत्पलिनी एवुं नाम कोई कहेछे एवुं लख्युं छे ७,६ यति कही छे छंदोर्णव तथा संगीतप्रेमरसीमां चंद्रिकानुं आ माप छे, पण यति कही नथी पिंगळादर्श, तथा छंदोलतामां न न त त र ग माप चन्द्रिकानुं आप्युं छे अने चारे यति कही छे छंदोमंजरीमां चंद्रिका नाम छे अने कोई उत्पलिनी कहेछे एम जणाव्युं छे

२ वृत्तरत्नाकर पृ ४६ में क्षमा नाम आप्या ७,६ यति कही छे अने कोई चंद्रिका नाम आपेछे एम पण जणावेछे पिंगळादर्शमां ७,६ यति हरनाम कही छे

मंदारमरंद चंपूमां पण क्षमानुं एज माप छे, तेमां ७,६ यति कही छे. छंदशास्त्रमां क्षमानुं न न ज न ग माप अने ७,६ यति कही छे, पण ए मात्र एक ज गणे अक्षर घटे छे माटे प्रमाण नथी, छंदोर्णव तथा छंदोलतामां न,न,त,र,ग गण क्षमाना लखेछे ते भूल छे

३ वाग्वल्लभसूत्रमां यति सहित ए माप विद्युत नाम पण आप्युं छे

८४४ भसलमद, भसलपद. म,स,ज,त,ग. २१९९
छे भसलमदे भ सा ज ता गा पदे.

८४५ कठिनी. न,स,ज,त,ग. २४००
रच तुं कठिनी न सा ज ता गा थकी.

८४६ वृद्धवामा. त,त,ज,त,ग. २४०९
छे वृद्धवामा त त जा त गा आणवे.

८४७ मर्मस्फुर. त,भ,जे,त,ग. २४२१
ता भा ज ता ग धर वृत्त मर्मस्फुरे.

८४८ सुखमा[१]. न,न,म,ज,ग. २६२४
न न म ज ग धर्याथी थायें सुक्षमा.

१ भाषाछंदोमजरीमां सुछमा नाम छे पृष्ठ १८०.

८४९ पृपद्गती, निस्तपा. त,र,र,ज,ग. २७०९
लावो पृपद्गती मांह ता र रा ज गा.

८५० अखंडमंडन. ६,७ यति (वा०व०) ज,र,र,ज,ग. २७१०
अखंडमंडने, आण जा र रा ज गा.

८५१ कलापतिप्रभा, राग, नंदराग. र,ज,र,ज,ग. २७३१
छे कलापतिप्रभा र जा र जा ग थी.

१ छंदप्रभाकरमां आ वृत्त छे, ते पोते नवु रच्युं छे एम लखेछे, पण "कलापतिप्रभा" प्रथमथीज रचायलु वाग्वल्लभमां छे

८५२ अशोकपुष्प. न,न,र,ज,ग. २७५२
न न र ज ग अशोकपुष्पमां धरो.

८५३ करपल्लवोद्गता. य,य,म,ज,ग. २७६२
य या सा ज गाथी करपल्लवोद्गता.

८५४ सार्द्धपदा. र,य,म,ज,ग. २७६३
रा य मा ज गे सार्द्धपदा रचो तमे.

संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे राग प्रभाती, चतुश्रजाति गजलीला, मात्रा १८, मध्यकाळ.

८६१ विराधिनी. न,भ,स,ज,ग. २९०६
न भ स जा गथकों रचो विराधिनी.

८६२ चंद्रहासकरा. र,स,ज,ज,ग. २९०७
चंद्रहासकरा र सा ज ज गे बने.

८६३ द्रुतलम्बिनी. स,स,ज,ज,ग. २९०८
स स जा ज गथी रचो द्रुतलम्बिनी.

८६४ कनककेतकी, कनककेतन. त,स,ज,ज,ग. २९०९
थाशे कनककेतकी त स जा ज गे.

८६५ गरुद्वारिता. ज,स,ज,ज,ग. २९१०
रचो गरुद्वारिता ज स जा ज गे.

८६६ अमितनगानिका. भ,स,ज,ज,ग. २९११
छे अमितनगानिका भ स जा ज गे.

८६७ उपगतशिखा. न,स,ज,ज,ग. २९१२
उपगतशिखा न सा ज ज गाथकी.

८६८ आपणिका. ज,त,ज,ज,ग. २९१८
रचायछे आपणिका ज त जा ज गे.

८६९ गुणसारिका, गणसारिका. ज,ज,ज,ज,ग. २९२६
रचाय ज जा ज ज गे गुणसारिका.

८७० प्रमोदतिलका. त,भ,ज,ज,ग. २९३३
थाशे प्रमोदतिलका त भ जा ज गे.

८७१ सारसनावलि, विभावरी[१]. न,भ,ज,ज,ग. २९३६
न भ ज जा गथरी सारसनावलि,

१ वृत्तदर्पणमा आ नाम छे, तथा पादान्ते यति कही छे विभावरीनो राग पीलु, ताल खंड जाति आडा चौताला, मध्यकाळ, मात्रा १७ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

८७२ उपचितरतिका. भ,न,ज,ज,ग. २९४३

छे उपचितरतिका भ न जा ज गे.

८७३ उदात्तहास. ज,त,भ,ज,ग. २९८९

उदात्तहासे गणो ज त भ जा ग छे.

८७४ कलनायिका. ज,त,न,ज,ग. ३०४

ज ता न जा गे कर तुं कलनायिका.

८७५ अभ्रभ्रमशीला. त,य,स,भ,ग. ३२७७

अभ्रभ्रमशीला त य सा भा गथकी.

८७६ विदला. न,स,त,भ,ग. ३३६०

रच तुं विदला माहे न सा त भ गा.

८७७ मपातल्लिका. भ,स,ज,भ,ग. ३४२३

भा स ज भ ग थी रचो मपातल्लिका.

८७८ मोहमलाप[१]. ४,९ यति. म,भ,भ,भ,ग. ३५०५

मा भा भी भा, गथी मोहमलाप युगे.

१ आ वृत्त 'मदारमरचपू'माथी नवु मळ्यु छे, तेमा आ माप ने यति छे

८७९ कर्मठ. भ,भ,भ,भ,ग. ३५११

कर्मठमां रच आप भ भा भ भ गा.

८८० लवलीलता. भ,र,न,भ,ग. ३५४३

छे लवलीलता भ र न भा गथकी.

८८१ अनिलोद्धतमुखी. न,र,र,न,ग. ३७३६

न र र ना गथी तो ऽनिलोद्धतमुखी.

८८२ प्रबोधफलिता. र,न,र,न,ग ३७७१

छे प्रबोधफलिता र ना र न गथी.

८८३ कोमलकल्पकलिका. स,य,स,न,ग. ३७८८

स य सा न गे कोमलकल्पकलिका.

८८४ रमणी. ज,स,स,न,ग. ३८०६

ज सा स न गथी रच् ठीक रमणी.

८८५ परगति. र,न,स,न,ग. ३८३१

थायछे परगति र ना स न गथी.

८८६ अभिरामा. स,भ,त,न,ग. ३८९२

अभिरामा रचजो सा भ त न गथी.

८८७ उपसरसी. स,न,ज,न,ग. ३९६४

स न जा न गथी रचो उपसरसी.

८८८ मदनजवनिका. न,य,न,न,ग. ४०४८

न य न न गेथी मदनजवनिका.

८८९ वरिवशिता, परिवशिता. स,स,न,न,ग. ४०६०

स स ना न गथी रच् वरिवशिता.

८९० अर्द्धकुसुमिता. भ,स,न,न,ग. ४०६२

अर्द्धकुसुमिता रचे भ स न न गे.

८९१ विनताक्षी, वनिताक्षी. स,भ,न,न,ग. ४०८४

विनताक्षी रच् स भ न न ग थकी.

८९२ नरावलि, निरावलि. त,भ,न,न,ग. ४०८५

थाशे नरावलि त भ न न ग थकी.

८९३ अभीरुका. ज,भ,न,न,ग. ४०८६

अभीरुका रच् ज भ न न ग थकी.

८९४ कनकिता. भ,भ,न,न,ग. ४०८७

भा भ न ना ग थकी रच कनकिता.

८९५ हरिवनिता, उपनमिता. न,न,न,न,ग. ४०९६

न न न न गथी रच हरिवनिता.

आ वृत्तना अत्य गुरुने स्थळे लघु मूकवाथी अडमरवृत्त थाय. जुओ अंक ९०४ मे.

८९६ सुखकारिका. स,ज,ज,म,ल. ४४६०

सुखकारिका रच सा ज जा मा लथी.

८९७ कन्द[1], कन्दा[2], कुंद[3], सारंग[4]. य,य,य,य,ल. ४६८२

य या या य ला आववाथी बने कंद.

१ कन्द वृत्त प्राकृतपिंगलसूत्र, छंद शास्त्र अने वाणीभूषणमा छे

२ पिंगलादर्शमा कधा अने केटलाकमा कदा नाम छे कंधामा पिंगलादर्शमा ७,६ यति कही छे, पण तेनु बीजुं प्रमाण जडतु नथी

३ आ नाम प्रवीणसागरमा छे

कवि दलपतराम डाह्याभाइए कन्दुक नाम आप्युं छे, अने तेमा छेलो लघु मूक्यो छे ते भूल छे मागधीपिंगळ छदोग्रथमा सारंग नाम आप्युं छ आ वृत्तमा अत्य लघुने बदले गुरु मूकवाथी कदुक थाय जुओ अक ७९९ मे

८९८ कनीया, कनैया. त,स,य,य,ल. ४७०२

ता सा य य ल थी कनीया करो वृत्त.

८९९ अट्टासिनी. त,भ,र,स,ल. ९८१३

अट्टासिनी महि ता भ रा स ल थाय.

९०० समूह, समूहा. न,ज,स,ज,ल. ६८९६

न ज स ज ला थी समूहा समूह ज.

९०१ पंकवती[1], पंकजमाला, पंक, पंकजावली, एकावली, कमलावली, पंका, कंजअवली, पंकज वाटिका, चंपकवाटिका, पंकज. भ,न,ज,ज,ल. ७०३९

पंकवती महि भ ना ज ज ल्ल धर.

१ पंकवतीने पंकावलिना मिश्रणथी उपजातिना १४ भेद थाय छे एम वाग्वल्लभमां लख्युं छे. छंदोमंजरी (भाषा)मां "पंकावली, चंपकमाटिका" एवां नाम छे.

९०२ पंकावलि.. भ,न,य,न,ल. ७८०७

भा न य न ल्यथकी पंकावलि कर.

९०३ अशनि. न,न,त,न,ल. ८०००

न न त न ल बनावी रच अशनि.

९०४ अडमरु न,न,न,न,ल. ८१९२

अडमरु महि धर न न न न ल.

शक्करी(शक्करी)छंद.१६,३८४भेद.१४वर्ण.

९०५ संकल्पासार; संकल्पाधार. म,म,म,म,ग,ग. १

चौदे गुरु आवेले सर्वे संकल्पासारे.

९०६ नीलोद्दामा. ४,१० यति.१ म,म,म,म,ग,ग.

नीलोद्दामा, वृत्ते मा मा मा मा गा गा चारे..

१ छंदोल्लतामा ए प्रमाणे यति छे.

९०७ वंशोत्तंसा. त,य,स,म,ग,ग. २०

शोधी त य सा मा ग ग जोडो वंशोत्तंसा..

९०८ वासन्ती.१ म,त,न,म,ग,ग. ४८

वासंतीमां लाव् म त न मा गा गा शोधी..

वासन्तीमा ७,७ यति कोइ केहेछे, परतु प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी वृत्तरत्नाकरनु टिप्पण, वाग्वल्लभ इत्यादि प्रमाण ग्रंथोमा पाळी नथी.

९०९. कालध्वान्त,कालध्वान.६,८यति१. म,म,न,य,ग,ग.९६१

कालध्वान्ते छट्टे, म म न य गा गा आणो..

१ वाग्वल्लभमां ए प्रमाणे यति छे..

९१० मध्यक्षामा. ४, १० यति.[1] म,भ,न,य,ग,ग. १००९

मध्यक्षामा, युग यति म भ ना या गा गे.

शब्दकल्पद्रुममां तथा वृत्तरत्नाकरना परिशिष्ट भागमां ४,१० यति छे. राग रीतगौळ, ताल चतुर्थजाति प्रतिभानुमति, मात्रा ११, विलम्बकाळ. (संगीतानुसार छंदोमञ्जरी).

९११ चूडापीड. (वाग्वल्लभ) म,भ,न,य,ग,ग. १००९

चूडापीडे म भ न य ग ग आणो शोधी.

९१२ कुटिल[1]. ४,१० यति. स,भ,न,य,ग,ग. १०१२

यति वेदे, कुटिल रच् स भा न्या गा गे.

१ आ नाम छंदःप्रभाकरमां छे तेमां यति आपी नथी; परंतु वृत्तरत्नाकरना टिप्पणमां अने शब्दकल्पद्रुमना टिप्पणमां तथा पिंगळादर्शमां आ नाम तथा यति कही छे.

९१३ पारावार. त,न,न,य,ग,ग. १०२१

आणो ठिक त न न य ग ग पारावारे.

९१४ प्रपन्नपानीय. त,य,त,र,ग,ग. १२९३

ता या त र गा गा आवे प्रपन्नपानीये.

९१५ अनिन्द्गुर्विन्दु, गुर्विन्दु, पूर्वेन्दु. न,य,त,र,ग,ग. १२९६

न य त र गा गे जोडो अनिन्द्गुर्विन्दु.

९१६ धीरध्वान. ८,६ यति. म,भ,म,स,ग,ग. १९३७

धीरध्वाने आठे छेदो, मा म म सा गी गा.

९१७ ललितपताका. न,य,स,स,ग,ग. १७४४

ललितपताका रच् ना य स सा गा गे.

९१८ असम्बाधा, असंबंधा. ९,९यति. म,त,न,स,ग,ग. २०१७

मा ता नी सं गे, ग शर यति असंबाधा.

१ मदारमरंदचंपूमां असंबंधा नामथी एज माप ने यति आपी छे.

२ वृत्तरत्नाकर, छंदःशास्त्र, वाग्वल्लभ अने छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी. राग आरभी ताल चतुश्रजाति भानुमति, मात्रा ११, विलंबकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे.)

९१९ सम्बोधा. (वाग्वल्लभ) ज,त,न,स,ग,ग २०२२

जता न सा गा गर्यो कवि रच सम्बोधा.

९२० विन्ध्यारूढ, वन्ध्यारूढ. म,र,म,त,ग,ग. २०६९

विन्ध्यारूढे म रा मा ता गा गा आणगोजी.

९२१ बिम्बालक्ष्य. ७,७ यति. म,र,त,त,ग,ग. २३२१

बिम्बालक्ष्ये हये छे, मा र ता ता ग गा थी.

९२२ दृप्तदेहा. य,र,त,त,ग,ग. २३२२

य रा ता ता ग गा थी दृप्तदेहा बनेछे.

९२३ वभ्रुलक्ष्मी. (वाग्वल्लभ) र,र,त,त,ग,ग. २३२३

रा र ता ता ग गा थी वभ्रुलक्ष्मी बनेछे.

९२४ सरमासरणि. स,स,त,त,ग,ग. २३३२

सरमासरणि जोडो स सा ता त गा गे.

९२५ पुष्पशकटिका. भ,स,त,त,ग,ग. २३३९

पुष्पशकटिकामां छे भ सा ता त गा गे.

९२६ निर्यत्पारावार. म,त,त,त,ग,ग. २३३७

निर्यत्पारावारमां छे म ता ता त गा गा.

९२७ कल्पकान्ता. र,त,त,त,ग,ग. २३३९

कल्पकान्ता मांह रा ता त ता गा ग आवे.

९२८ परीवाह. न,त,न,त,ग,ग. २३४४

रच परीवाह ना ता त ता गा ग आणी.

९२९ नान्दीमुखी[१], वसंत[२]. ७,७ यति न,न,त,त,ग,ग. २३६९

न न त त ग ग थी, सात नान्दीमुखीमां.

१ वाग्वल्लभमां नान्दीमुखी नाम, आ माप ने ७,७ यति जणावेले.

२ नारायणभट्टीना टिप्पणमाना सूत्र प्रमाणे वसंत नाम तथा यति छे

९३० हंससेनी. ४, १० यति.[१] म,भ,न,त,ग,ग. २५४१

चारे थोभो, म भ न त ग गे हंससेनी.

१ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टिप्पणमां अने पिंगलादर्शमां प यति छे

९३१ वाटिकाविकाश, वाटिका, वाटिकाविलास. } भ,न,य,ज,ग,ग. २६८७

भा न य ज ग ग धरो वाटिकाविकाशे.

९३२ अर्कशेषा. र,ज,र,ज,ग,ग, २७३१

रा ज रा ज गा गथी रचाय अर्कशेषा.

९३३ मदावदाता. स,भ,र,ज,ग,ग. २७४०

स भ रा जा ग गथी रचो मदावदाता.

९३४ वंशमूल. स,भ,स,ज,ग,ग. २८०४

स भ सा जा ग ग रचे जोइ वंशमूले.

९३५ चैलाञ्चल,चैलाञ्चल,चैलांतर. त,भ,स,ज,ग,ग. २८०५

चैलांचले त भ स ज गा ग आणजोजी.

९३६ कुसुम्भिनी. ज,भ,स,ज,ग,ग. २८०६

कुसुम्भिनी ज भ स ज गा गथी रचाशे.

९३७ विलम्बनीया. न,भ,स,ज,ग,ग. २८०८

न भ स जा ग गथी थशे विलम्बनीया.

९३८ अनन्तदामा. न,न,स,ज,ग,ग. २८१६

न न स ज ग गथी रचो अनन्तदामा.

९३९. नदी. ७,७ यति[1] न,न,त,ज,ग,ग. २८८०

न न त ज ग ग थी, छेद हुये नदी छे.

1 शब्दकल्पद्रुम प्रमाणे यति आपी छे.

९४० वसन्ततिलका,[1] उद्धर्षिणी,[2] सिंहोद्धता,[3] सिंहोन्नता,[3] मधुमाधवी,[4] तक्का,[5] वसंततिलक,[6] वसंततिल,[7] शोभावति, चेतोहिता.[8]	त,भ,ज,ज,ग,ग. २९३३

थामे वसंततिलका त भ जा ज गा गे.

१ पिंगलाचार्यना मत प्रमाणे. २ सैतव मुनि. ३ काश्यप मुनि. ४राम अने गोमानसना मत प्रमाणे, वळी वृत्तरत्नाकरना टिप्पणमां नागे ए नाम आप्यानो पाठ जणाव्यो छे. ५नागराज पिंगळ, ६ छंदोलता, ७गणप्रस्तारप्रकाश, ८ रामकीर्त्ति पंडिते चेतोहिता नाम आप्युं छे. श्रीकृष्ण कवियें, मंदारमरंदचंपूमां वृत्तबिंदुना पेहेला भागमां पादाते अथवा ७, ७ उपर यति कही छे. छंदःशास्त्रमां पादान्ते यति कही छे. पिंगळादर्शमां, वसंततिलका, सिंहोन्नता, उद्धर्षिणी, अने मधुमाधवी ए नामो आपी तेमां ८, ६ यति कही छे; तेज प्रमाणे शब्दकल्पद्रुममां पण यति कही छे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा वाणीभूषणमां वसंततिलका, अने सिंहोद्धता ए बन्ने नामो आपी तेमां यति कही नथी.

राग यमनकल्याण, ताल लक्ष्मी, मात्रा २१, मध्यकाळ.
(संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

९४१ कुमारी,कुमारिका. ८,६ यति[1]. न,ज,भ,ज,ग,ग. ३,९९२

न ज भ ज गा ग आठ, वसुथी कुमारी.

१ वृत्तरत्नाकरमूळ तथा शब्दकल्पद्रुममा ८,६ यति कही छे.

९४२ अलोला[1], लोला.[2] ७,७ यति. म,स,म,म,ग,ग. ३,०९७

साते छे यति मा सा, मा भा गा गु अलोला.

१ वाग्वल्लभ २ छंद-शास्त्रना परिशिष्टमा ए नाम छे, तथा ७,७ यति कही छे. मंदारमरंदचंपूमा ए नाम तथा यति छे, शब्दकल्पद्रुममा अने छंदःप्रभाकरमा लोला नाम तथा एज यति छे. वृत्तरत्नाकरनी टीकामा केहेछे के आ वृत्तनेज केटलाक कुटिल केहेछे, पण ते जुदो छे, जुओ अंक ९१२ मे.

९४३ कृतमाल. त,ज,य,भ,ग,ग. ३,१८१

आणो कृतमाल विषे ता जा य भ गा गा.

९४४ शारदचन्द्र, प्रिया. त,य,स,भ,ग,ग. ३,२७७

ता या स भ गा गा धरजो शारदचन्द्रे.

९४५ कलहंसी. ६,८ यति. त,य,स,भ,ग,ग. ३,२७७

ता या स भ गा गे, छ दिशाथी कलहंसी.

१ मंदारमरंदचंपूमांथी

९४६ परिणाही. म,भ,स,भ,ग,ग. ३,३१३

मा भा सा भू ग ग थी रचाणे परिणाही.

९४७ रतिरेखा. त,य,भ,भ,ग,ग. ३,४६९

ता या भ भ गा गे तुं रचजे रतिरेखा.

९४८ मन्मथ. स,स,भ,भ,ग,ग. ३,४८४

स स भा भ ग गा आण तुं मन्मथ मांहे.

९४९ जाह्नमुखी. भ,भ,भ,भ,ग,ग. ३,९११

जाह्नमुखी रच भा भ भ भा ग ग आणी.

९५० इन्दुवदना[1], इन्द्रवदना[2]; वरसुन्दरी. } भ,ज,स,न,ग,ग. ३,८२४

इन्दुवदना रच भ जा स न न गा थी.

१ पिंगळ्यरसीमां इन्दुवदना नाम आपी ५,४,५ यति कही छे; परंतु मंदारमरंदचंपू, छंदोमजरी, वृत्तरत्नाकर, अने छन्दःप्रभाकरना यति कही नथी.

२ इन्द्रवदनामां शब्दकल्पद्रुमनी यति कही नथी शब्दकल्पमनो इन्दुवदना अने इन्द्रवदना ए बले नामो आपी तेम यति कही नथी. एटले अमे यति मान्य गणी नथी.

९५१ लक्ष्मी[1]. पादान्ते यति. ग,स.त,न,ग,ग. २,८९१

लक्ष्मीमां धरवा मा सा त न ग ग पादे.

१ आ वृत्तमां वृत्तरत्नाकरना परिशिष्ट भागमां न ने बदले भ अर्थात् (म स त भ ग ग,) एवुं लक्षण आप्युं छे.

९५२ प्रतिभादर्शन. स,भ,न,न,ग,ग. ३,८९२

प्रतिभादर्शनमां छे स भ त न गी गा.

९५३ अलिपद[1], नटगति[2]. न,न,न,न,ग,ग. ४,०९६

नटगति अलिपद न न न न गा गा.

१ शब्दकल्पद्रुममां अलिपद नाम छे, तेमां यति कही नथी.

२ छंदोल्लनामां छे, तेमां यति कही नथी

९५४ सुपवित्र, पवित्र. ८,६ यति. न,न,न,न,ग,ग. ४,०९६

न न न न ग ग वसु[8], यति सुपवित्रे.

१ शब्दकल्पद्रुम, छंदोमजरीनाटिप्पणमां सुपवित्र नाम छे, एमां ८,६ यति कही छे.

९५५ कामला. न,न,म,य,ल,ग. ४,६७२

रच तूं न न म या ला गा थकी कामला.

९५६ प्रपात. न,न,स,भ,ल,ग. ४,६८२

मपाते रचो यायया यालगा आणिने.

९५७ जलदरसिवा. न,म,य,य,ल,ग. ४,७०४

जलदरसिवा नसायायलागा थकी.

९५८ पथ्या,[1] मंजरी,[2] वसुधा.[3] } ९,९, यति. म,ज,म,य,ल,ग. ४,८४४

सजसायला, ग धार[4]छंद पथ्या विषे.

१ वाग्वल्लभमां पथ्या नाम छे पण यति नथी. २ आ नाम छंदःकामदुघावल्लमां छे ३ आ नाम छंदःप्रभाकरमां छे. ४ शब्दकल्पद्रुममां तथा छंदोमंजरीना टिप्पणमां अने पिंगळादर्शमां ५,९ यति करी छे, मंदारमरंदचंपूमां १०,८ यति कही छे.

९५९ चंद्रौरस. म,भ,न,य,ल,ग. ९,१०९

धारो चंद्रौरस ठिक मभनायालगे.

९६० कल्पमीलिता. र,र,र,र,ल,ग. ९,३६७

रा र रा रा ल गे भायचे कल्पमीलिता.

९६१ सुधाधरा. र,ज,न,र,ल,ग. ९,४१९

रा ज ना र ला ग आण्या थकी सुधाधरा.

९६२ कलाधर. र,र,ज,र,ल,ग, ९,४५९

आणजो रा र जा र ला ग आ कलाधरे.

९६३ कुटङ्किका,[1] दरी, आनन्दा.[2] ज,र,ज,र,ल,ग. ९,४६२

कुटङ्किका रचो ज रा ज रा ल गे करी.

१ छंदःप्रभाकरना प्रकटकर्ताए ए नाम नवु कल्प्युं छे, परंतु तेनुं "कुबङ्किका" नाम प्रसिद्ध छे.

२ आनन्दा नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां आप्युं छे

९६४ मङ्गली.[1] स,म,ज,र,ल,ग. ९,४६८

स स जा र ल गा धराय मल्ली विषे.

१ गणप्रस्तारप्रकाशना ए नाम छे, छंदःकामदुघावृत्तमां पण ए नाम छे एज नामनुं वृत्त पदर अक्षरमां छे

९६५ सुकेशर[1]. न,र,न,र,ल,ग. ५,९९२

रच खरे सुकेशर नरानरालगे.

१ वृत्तरत्नाकरमा नरनरैर्लगौच रचितं सुकेशरम् कह्यु छे. १५ वर्णमां जूदाज मापथी सुकेसर वृत्त अंक १०२७ मे छे.

९६६ वितानिता. न,न,न,र,ल,ग. ५,६३२

न न न र ल ग क्षर वितानिता विषे.

९६७ अलकालिका, अलिकालका. त,भ,र,स,ल,ग. ५,८१३

ता भा र सा ल ग थी रचो अलकालिका.

९६८ गगनोद्गता. र,न,र,स,ल,ग. ५,८१९

रा न रा स ल ग थी रचो गगनोद्गता.

९६९ अपराजिता. ७, ७ यति[1]. न,न,र,स,ल,ग. ५,८२४

न न र स ल ग थी, मुनि अपराजिता.

१ वाग्वल्लभ, पिंगळ छंदःसूत्र, वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी, शब्दकल्पद्रुम, तथा मंदारमरंदचंपू प्रमाणे यति लखी छे छंदःप्रभाकर (पृष्ठ १९५) मा यति कही नथी.

९७० विनन्दिनी. स,स,स,स,ल,ग. ५,८९२

स स सा स ल गे रच ठीक विनन्दिनी.

९७१ *पुराली, नगरालिका. न,त,भ,य,ल,ग. ६,०५६

न न भ या ल्ला ग थी कवि! पुराली करो.

* मूळ नगरालिका नाम छे, पण ते माप कोइ प्रकारे आवी शकतुं नथी माटे नगर+आलिका अथवा आली=नगरआली शब्द थाय असे नगरने बदले पुर शब्द मूकी पुर+आली=पुराली नाम ग्रहण कर्युं छे.

९७२ भूरिशिखा. स,स,म,त,ल,ग. ६.

स स मा त ल गा आण्ये थाशे भूरिशिखा.

९७३ क्रीडायतन, क्रीडावसथ. स,स,स,त,ल,ग. ६,३६४:

स स सा त ल गा रचनो क्रीडायतने.

९७४ नासाभरण: त,य,म,त,ल,ग. ६,१४१

ता या भ त ला गा आण् तुँ नासाभरणे.

९७५ कर्णिशर. भ,भ,भ,त,ल,ग. ६,१८३

कर्णिशरे धर् ठीक भ भा भा त ल गा.

९७६ विपाकवती. न,भ,ज,ज,ल,ग. ७,०३२

न भ ज जा ल ग थी थाय विपाकवती.

९७७ काकिणिका. ज,ज,भ,ज,ल,ग. ७,०८६:

ज जा भ ज ला ग थी रचतुँ काकिणिका.

९७८ कारविणी: भ,ज,भ ज,ल,ग. ७,०८७

तुं रच् भ जा भ जा ल ग थी कारविणी.

९७९ कुररीरुता[१], धृति[२], प्रमदा[३] न,ज,भ,ज,ल,ग. ७,०८८

रच् कुररीरुता न ज भ जा ल ग थी.

१. वाग्वल्लभमा कुररीरुता सिवाय बीजा नाम नथी, अने यति पण नथी. २ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टिप्पणना सूत्र प्रमाणे धृति नाम छे पण तेमा यति नथी

३ वृत्तरत्नाकर तथा शब्दकल्पद्रुममां यति नथी छंद कामदुघावत्स तथा छंदोमंजरीना टिप्पणमा छे, तेमा यति कही नथी.

९८० कूर्चललित. र,र,र,भ,ल,ग. ७,२३१:

रा र रा भा ल गा थायछे कूर्चललिते.

९८१ कलहेतिका: स,ज,ज,भ,ल,ग. ७,९२२:

कलहेतिका स ज जा भ ला ग थी रचो.

९८२. अंचलवती.. भ,ज,ज,भ,ल,ग. ७,९२५

अंचलवती भ ज जा भ ला ग थी करो.

९८३ गगनगतिका. र,स,ज,न,ल,ग. ८,०२७

रा स जा न लगे रचो गगनगतिका.

९८४ निर्मुक्तमाला. म,र,भ,न,ल,ग. ८,०८१

जोडो निर्मुक्तमाळा म र भ न ल ग थी.

९८५ प्रहरणकलिका, प्रहरणकलिता. } ७,७ यति १. न,न,भ,न,ल,ग. ८,१२८

न न भ न लग थी. प्रहरणकलिका.

मुनि[७] विरतिथकी, प्रहरणकलिता.

* छंदोमंजरी पृष्ट ११६ मे प्रहरणकलिका नाम उपरना गणोवालुं छे. तेमां यति कही नथी. प्राकृतपिंगलसूत्र पृष्ट १६७ मे, वाग्वल्लभ पृष्ट ६४ मे, मंदारमरंदचंपू पृष्ट १८ मे, ए नाम छे पण यति कोइए कही नथी.

१ शब्दकल्पद्रुममां प्रहरणकलिका नामना वृत्तनुं उपर प्रमाणे माप अने ७,७ यति कही छे.

शब्दकल्पद्रुम, वृत्तदीप, वृत्तरत्नाकर नारायणभट्टी टीका (पृष्ट. ४८) वाळामां प्रहरणकलिता (प्रहरणकलिका इति,पाठः) नाम आपी तेमां ७,७ यति कही छे.

छंदःप्रभाकरमां आ गणोथीज प्रहरणकलिका नाम आपी (यति कह्या वगर) विशेषमां जणावेछे के, आ वृत्तनज प्रहरणकलिता केहेछे.

पिंगलछंदःसूत्रनी हलायुधनी टीकामां ७,७ यति प्रहरणकलिता नाम आपतां जणायछे.

राग मारा (कानरा), तालचतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६. (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे)

९८६ चक्र,[१] चक्रपद,[२] चक्रवर्त्ती,[३] द्रुतचक्र,[४] चक्रविरति, देववरतनु, चक्कुरा. } म,न,न,न,ल,ग. ८,१९१

चक्र रच् भ न न न ल ग कवि गणी.

१ दिग्दर्शमां चक्रपद नाम आपी तेमां ७,७ यति कही छे. २ भगवत्‌पिंगळमां ए नाम छे. ३ छंदरत्नावलीमां ए नाम छे. ४ छंदःप्रभाकरमां ए नाम छे. ५ नारायणभट्टीना टिप्पणना सूत्र प्रमाणे छे.
६ गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे.

९८७ कामशाला. र,र,र,र,ग,ल. ९,३६३

कामशाला विषे रा र रा रा ग ला थाय.

९८८ उन्नर्म. भ,भ,स,स,ग,ल. ९,९७९

भा भ रा सा ग ल धर्मो तो रच् उन्नर्म.

९८९ लीला[1]. त,भ,य,ज,ग,ल. १०,८६९

लीला विषे ठिक त भा या ज गा ल थाय.

१ पिंगळादर्शमां ५,९ यति कही छे पण तेने बीजुं प्रमाण मळ्युं नथी.

९९० गोप[1], कुरंग[2]. ८,६ यति. र,ज,र,ज,ग,ल. १०,९२३

गोप आठ छेद रा ज, रा ज गा ल धार.

१ दिग्दर्श पृष्ठ ८१ मे गोप नाम आपी ८,६ यति कही छे.
२ प्रवीनसागरमां कुरंग नाम छे.

९९१ हरलीला[1], हरिलील. त,त,त,ज,ग,ल. ११,०४९

ता ता त जे गा ल थी थाय हरिलीलाज.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे.

९९२ हरिलीला[1]. त,भ,भ,ज,ग,ल. ११,१८९

ता भा भ जा ग ल थी हरिलीला रचाय.

१ भाषाछंदोमंजरी पृष्ठ १८४ मे ए नाम आप्युं छे.

९९३ उपकारिका. स,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६२८

उपकारिका रचवा स जा ज भ गा ल.

९९४ हेममिहिका. भ,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६३१

हेममिहिका करवा भ जा ज भ गा ल.

९९५ हेति. न,ज,न,भ,ग,ल. ११,६३२

न.ज।ज।भ।ग।ल थकी रचो कवि! हेति.

९९६ मधुपालि, मनोरम[1]. स,स,स,स,ल,ल. १४,०४४

स स सा स ल ले मधुपालि रचो कवि!

1 गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे.

९९७ सुखदा[1]. त,य,स,त,ल,ल. १४,९४१

ता या स त ला ले सुखदा शोभे सरस.

1 भाषाछंदोमंजरी पृष्ठ १८३ मे ए नाम छे.

९९८ वेशम्भरि.. न,न,य,न,ल,ल.. १६,०००

न न य न ल ल:थी वेशम्भरि तुं रच.

९९९ अकहरि, अकुहरि.. न,न,न,न,ल,ल. १६,३८४

अकहरि रच न.न.न.न ल ल थकी.

१५ अतिशक्करीछंद. ३२,७६८भेद. १५वर्ण..

१००० सारङ्गी, लीलालेख[1], लीलाखेल, कामक्रीडा, सारंगिका, सारंग, सारंगक, केशवलेख[2], त्रिनयन[3]. म,म,म,म,म. १

मा मा मा मा माथी जोड़ो सारङ्गी रूडी रीते.

१ ए नाम प्राकृतपिंगळसूत्र तथा छंदोमंजरीमां छे.

२ ए नाम छंदोलतामां छे.

लीलालेख, सारङ्ग अने कामक्रीडा नाम वाग्वल्लभमां छे तेमां यति आपी नथी; छंदोवृत्तमुक्तावलिमां सारङ्गी नाम आपी यति कही नथी..

३ त्रिनयन नाम चित्रसेनटीकावाळा मागधी पिंगळमां छे,. तेमां पंदर गुरु यति वगरना कह्या छे.

प्राकृत पिंगळसूत्र अने छंदोमंजरीमां यति कही नथी..

छंदोलतामां पांच मगणवाळा वृत्तने कामक्रीडा नाम आपतां तेमां यति कही नथी, अने विशेषमां जणाव्युं छे के, कोइ एने ज लीलालेख, केशवलेख, अने सारंगक ए नाम पण आपे छे.

कामक्रीडा अने सारंगिका नामनुं उपर प्रमाणे माप आपी तेमां पिंगळादर्शमां पृष्ट ८९ मे ४, ४, ४, ३, यति कही छे पण तेनुं प्रमाण जोवामां आवतुं नथी.

१००१ वज्राली. (वा. व.) ८,७ यति. त,य,म,म,म. १३

ता या म म मा थी थाशे, आठे थोभो वज्राली.

१००२ स्फोटक्रीड. (वा. व.) १०,५ यति. न,य,म,म,म. १६

विरति दशे स्फोटक्रीडे छे, ना या मा मा मा.

१००३ क्रीडितकटका. (वा. व.) ११,४ यति. भ,स,स,म,म. २२३

क्रीडितकटका भ स सा मा मा, रुद्रे ११ थोभो.

१००४ चार्वटक. (वा. व.) १०,५ यति. म,भ,भ,म,म. ४४२

दिशा१० पांचे यति चार्वटके, मा भा भा मा मा.

१००५ आनद्ध. (वा. व.)१०,५ यति. र,न,स,त,म. २,२९९

रा न सा त म दश अने छे, पांच आनद्धे.

१००६ बहुलाभ्र. (वा.व.) ९,६ यति. स,भ,स,भ,म. ३,३१६

बहुलाभ्रे विरति नवे, सा भ स भा मा छे.

१००७ वाणीभूषा. (वा.व.) ८,७ यति. म,म,त,न,म. ३,८४१

वाणीभूषा आठे साते, म म त न माथी छे.

१००८ चित्रा[१], चित्र[२]. म,म,म,य,य. ४,६०९

चित्रा मांहे शोधी शोधी आण मा मा म या या.

१ वाग्वल्लभ २ प्राकृतपिंगलसूत्र अने छंदोमंजरीमां छे.

१००९ चन्द्रलेखा[1],चन्द्रसेना. ७,८यति.[2] म,र,म,य,य. ४,९२५

सते छे चन्द्रलेखा, मा रा म या या कल्याथी.

१ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम तथा यति वही छे.

२ छंदोमंजरी, पिंगलदर्श, शब्दकल्पद्रुम, अने वाग्वल्लभमां ७,८ यति अने उपरना मापथी चन्द्रलेखा नाम आप्युं छे. छंदःप्रभाकरमां यति बहीं नथी. १२ वर्णमां ६,६ यति ने न स र र ग ए गणोथी चन्द्रलेखा वृत्त अंक ८०७ मे छे.

१०१० मालिनी[1],मानिनी,[2] नूतनमाला. | ८,७ यति. न,न,म,य,य. ४,६७२

न न म य य वसुए, मालिनी ठीक थाशे.

१ वाग्वल्लभ, शब्दकल्पद्रुम,छंदोबोध,सुवृत्ततिलक अने मंदारमरंदचंपूमां पण आ नाम अने आ प्रमाणेज यति छे. छंदःसारमां मालती नाम आप्युं छे. [पृष्ठ ९५ मे]. संगीतानुसार छंदोमंजरीप्रमाणे राग सोरठ, ताल रुंड जाति अगपाक, मात्रा ११, विलंबकाळ.

२ वाणभस्तारमनारामां ए नाम छे.

१०११ सिंहपुच्छ. य,य,य,य,य. ४,६८२

धरो सिंहपुच्छे य या या य या आप आणी.

१०१२ कुमारलीला. म,न,न,र,य. ५,९२९

जो जोडो म न न र य वने कुमारलीला.

१०१३ चन्द्रकान्ता. ७, ८ यति. र,र,म,स,य. ५,६५१

रा र मा सा य थी ने, सातें यति चन्द्रकान्ता.

१०१४ वृषभ. स,ज,स,स,य. ५,८६८

वृषभे रचाय रचना स ज सा स या थी.

१०१५ दीपक. भ,त,न,न,य. ६,६३१

दीपकमां लाव भ त न ता या कवि शाणा.

१०१६ परिमल. न,य,न,न,य. ७,१२०

परिमल मांहे न च न ज चा कर शोधी।

१०१७ शरकल्पा. न,न,स,न,य. ७,९३६

न न स न य कर सदा कवी शरकल्पा.

१०१८ एला[1], रेखा[2]; कवितरेला[3]. स,ज,न,न,य. ८,१७२ ५, १० यति.

स ज ना न या, शर दश यति धर एला.

१ छंदःकामदुधावत्सनां ए नाम छे. वाणीभूषण अने शब्दकल्पद्रुममां पण नाम तथा ५, १० यति छे. २ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम तथा यति छे.

३ पिंगलादर्शमां कवितरेलामां ५, १० यति कह्यां छे.

१०१९ सुरेला. न,ज,न,न,य. ८,१७६०

न ज न न या धर्यो शुभ रच तुँ सुरेला.

१०२० सीता[1]. र,त,म,य,र. ८,७३९

रा त मा या रे करी सीता रचो आ नेमथी.

१ आ वृत्त छंदःप्रभाकरना कर्ताए नवुं कल्प्युं छे.

१०२१ लास्यकारी[1], चन्द्ररेखा[2]. ७,८ यति. र,र,र,र,र. ९,३६१

रा र रा रा र आणो, तमे लास्यकारी विषे.

रा र रा रा र साते, यति चंद्ररेखा दिसे.

१ लास्यकारी नाम वाग्वल्लभमां छे, तेमां यति कही नथी.

२ पिंगलादर्शमां ७,८ यति चन्द्ररेखामां कही छे.

तेर वर्णमां अंक ८०७ मे आ नामनुं वृत्त छे तेनुं माप जूदुं छे.

१०२२ मदनमालिका. न,र,न,र,र. ९,६८८

मदनमालिका न र न रा र थी थायछे.

१०२३ विपिनतिलक[1], विपिनतिलका[2]. न,स,न,र,र. ९,६९६

विपिनतिलके न स न रा र छे सामटा.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदःप्रभाकर.

१०२४ तूणक[1], तूण[2], चामर[3], पंचयामल. — र,ज,र,ज,र. १०,९२३ ८,७[4] यति

आठ सात छे यति र, जा र जा र तूणके.

१ तूणकनाम, छंदोमंजरी, अने शब्दकल्पद्रुममां छे, तेमां यति कही नथी. संस्कृत ग्रेसर्शमां ८,७ यति कही छे

२ आ नाम छंदःप्रभाकरमां छे पण तेमां यति कही नथी.

३ मंदारमरंदचंपूमां आ नाम आप्युं छे, अने तेमां र, र, ज, ज, र गण कह्या छे. तथा ७,८ यति कही छे, तेनुं बीजुं प्रमाण जड्युं नथी.

४ वृत्तदर्पणमां चामरमां पादान्ते यति कही छे. छंदोवृत्त मुक्तावलीमां अने प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा वाणीभूषणमां चामरमां यति कही नथी. वाग्वल्लभमां तूणक अथवा पंचयामल नाम आपी यति विषे कह्युं नथी. संगीतानुसार छंदोमंजरीमां राग पहाडी (कामोदी), ताल दिव्य जाति संकीर्ण, मात्रा २३, मध्यकाळ छे.

१०२५ मृदंग. ८,७यति. (पि. द.) त,भ,ज,ज,र. ११,१२९

ता भा ज जा र वसु ने, मुनिथी मृदंग छे.

१०२६ प्रभद्रक[1], प्रभद्रिका[2], सुखेलक[2]. — न,ज,भ,ज,र. ११,१८४ ८,७यति[3].

न ज भ ज रा कराय, वसुथी प्रभद्रके.

१ प्रभद्रक नाम वाग्वल्लभमां छे पण तेमां यति कही नथी पिंगळादर्शमां ८,७ यति कही छे.

२ आ बन्ने नामो छंदःप्रभाकरमां छे. ३ नारायणभट्टी प्रमाणे

१०२७ सुकेसर,सुरेलक. ५,१०यति न,ज,भ,ज,र. ११,१८४

न ज भ ज रा, शरे[5] यति सुकेसरे करो.

वृत्तरत्नाकर पृष्ट ५०मे "नजभजरै विराजितमिदं सुकेसरम्" जणावी विशेषमां टिप्पण आप्युं छे के सुखेलकम् इति पाठः.

पिंगळादर्शवाळाए सुकेसरमां ५, १० यति कही छे

१०२८ प्लवंगम[1]. भ,म,त,भ,र. ११,६७९

भा भ त भा र धरो आप ठीक प्लवंगमे.

१ मात्रामेळमां आ नाम छे. जुओ पृष्ट २६, अंक ७४.

१०२९ उपमालिनी. ८,७ यति.[1] न,न,त,भ,र. ११,९८४

न न त भ र वसुएं, रचो उपमालिनी.

१ वृत्तरत्नाकरमां ए यति छे.

१०३० मणिहंस, मानहंस[1], मनहंस[2], रणहंस, मनहंसरूप[3], हंस[4], कलहंस[5], मनोहंस[6], मानसहंस, पदहंसक[7], चूलियारा, चूरियार[8]. स,ज,ज,भ,र. ११,६२८

मणिहंस थाय सदा स जा ज भ रे करी.

१ छंदःप्रभाकरमां मानहंस छे. २ वाणीभूषणमां मनहंस छे. ३ छंदरत्नावलिमां ए नाम छे. ४ प्राकृतपिंगळसूत्रमां ए नाम छे. ५ शब्दकल्पद्रुममां ए नाम छे. ६ छंदोवृत्तमुक्तावलिमां ए नाम छे. ७,८ मागधीपिंगळछंदोग्रथमां आ मापवाळा वृत्तना चूलियारा तथा चुरियार एम बे नाम आपेला छे.

१०३१ मयूवदना. भ,ज,ज,भ,र. ११,६३१

तुं रच मयूवदना भ जा ज भ रा थकी.

१०३२ पल्लवरी[1]. भ,भ,भ,भ,र. ११,७०३

भा भ भ भा र थी पल्लवरी करजो तमे.

१ प्रवीणसागर लेहेर १५मीमांथी. ते प्लवगम जातिने रागे गवायछे.

१०३३ सारसिका[1], हारवती[2], पयंगल[3], नूतन, सकण. र,न,भ,भ,र. ११,७०७

रा न भा भ र थकी ठिक सारसिका बने.

१-२ सारसिका अने हारवती नाम वाग्वल्लभमां छे, पण तेमां यति कही

गणी. २ पिंगलादर्शमां पमगल नाम छे, तेमां ८,७ यति कही छे, ए नाम क्यांथी लीधु ते जणातु नथी.

१०३४ सीरिणी. र,न,र,न,र. ११,९६३

: रानरानर थकी रचो सरस सीरिणी.

१०३५ चमरीचर. न,न,र,न,र. ११,९६८

तुँ रच कवि नानारनार चमरीचरे.

१०३६ निशिपाल, निशिपालक, निशिपालिका, शंभु, निशंपालिका, निशापाल. भ,ज,स,न,र. १२,०१९

वृत्त निशिपाल रच भाजसनराधरी.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रथमां ए नाम छे.

२ छंद कामदुघायत्तमां ए बे नाम छे अने विशेषमां ८,७ यति केहेछे पिंगळादर्शमां पण निशापालिकामां ८, ७ यति कही भजयनर गणो जणाव्या छे, ते भूल छे परंतु प्राकृतपिंगलसूत्र, वाणीभूषण, वाग्वल्लभ इत्यादि बीजा ग्रथोमां यति कही नथी, अने गणो उपर मुजब छे

१०३७ जलनिधिवेला. न,य,स,म,स. १२,४९९

जलनिधिवेला रच नायासामास थकी.

१०३८ लीलाचन्द्र. ८,७ यति. (वा.व.) म,म,त,य,स. १३,०९७

लीलाचन्द्रे आठे साते, गण मामातयसा.

१०३९ मोहनि[1]. स,भ,त,य,स. १३,१०८

सभतायास पडे मोहनि तो वृत्त रचो.

१ आ वृत्त छंद प्रभाकरमां आपेलु छे अने तेनीज टीकामां लखेछे के, आ वृत्तना आदिमां स ने बदले रगण पण आवेछे एम कहीने प्रथमना बे पादमां प्रारंभे सगण मूक्या छे अने बाकीना बे पादमां प्रारंभे रगण मूक्यो छे, पण ए प्रमाणे शेळभेळ करवु उचित नथी, रगण मूकवाथी १३,१०७मु रूप जुदु थायछे

१०४० धोरित. ९,६ यति. (वा.व.) भ,न,र,र,स. १३,९०३

धोरित यति नवे छए भा न रा र स थी.

१०४१ शान्तसुरभि. भ,न,र,स,स. १४,०१६

शान्तसुरभि रचो भ ना र स सा धरतां.

१०४२ भाम[1]. भ्र,म,स,स,स. १४,०२३

भ्रा म स सा सा आण् गणो कवि! भाम विषे.

१ आ वृत्त छंदःप्रभाकरना कर्त्ताए नवुं करव्युं छे.

१०४३ भ्रमरावलिका[1], मनहरण[2], भ्रमरावल, दंडिका[3], रत्न[4], मनोहरण[5], भ्रमरावती[6], भ्रमरावली, भमरावली[7], भवरावलि, नलिनी, भ्रमर[8]. स,स,स,स,स. १४,०४४

भ्रमरावलिका रच् सा स स सा स धरो.

१ वाग्वल्लभ. २ छंद:प्रभाकरमा ए नाम छे. ३ नागराज पिंगळमां आ नाम छे. ४छंदःकामदुघावत्समा ए नाम छे. ५ गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे. छंदोबोधमां लखेछे के भाषामा ए नाम छे. ६ छंदःशास्त्र प्रमाणे. ७ भमरावली नाम पिंगळादर्शमा छे, तेमा ९,६ यति कही छे. ८ भगवत् पिंगळमा ए नाम छे.

१०४४ कर्णलता. स,भ,भ,स,स. १४,२६०

रचजो कर्णलता स भ भ स सा करिने.

१०४५ विशकलिता. भ,भ,स,भ,स. १९,६०१

मा भा सा भा स थी झट जोडो विशकलिता.

१०४६ शीर्षविरहिता. म,य,भ,भ,स. १९,७९३

मा या भा भ सा आणी रच् कवि! शीर्षविरहिता.

१०४७ शंकावली. त,भ,र,न,स. १६,०९२

शंकावली रच ता भ रा न स धरों पदे.

१०४८ मणिगुण, धवलंगा,[१] शशिकला[२], चन्द्रावर्त्ता[३], शशिलेखा[४]. — न,न,न,न,स. १६,३८४

मणिगुण रच न न न न स धरों करों.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रथ. २ प्रा० पिंगळसूत्रमां ६,९ यति केहेछे पण वाग्वल्लभ तथा छंद प्रभाकर, छंदोमंजरी अने शब्दकल्पद्रुममा ए नाम छे पण यति नथी. पिंगळादर्श एमां ७,८ यति कही छे ३ छंदःशास्त्रमा चन्द्रावर्त्ता नाम आपी तेमां ७,८ यति केहेछे. ४ संस्कृत प्रोसडीमा शशिलेखा अथवा शशिकला नाम आप्यु छे.

१०४९ मणिनिकर. १०,९ यति[१]. न,न,न,न,स. १६,३८४

मणिनिकर रच न न न, न स दशथी.

१ वाग्वल्लभमा ए प्रमाणे यति छे

१०५० मणिगुणनिकर[१]. ८,७ यति. न,न,न,न,स. १६,३८४

न न न न स वसुर्थी, मणिगुणनिकरे.

१ वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, मंदारमरंदचपू, प्राकृतपिंगळसूत्र, तथा शब्दकल्पद्रुममां ए नाम तथा यति छे पिंगळादर्शमा मणिगुणनिकर अथवा माला नाम आपी तेमा ८, ७ यति केहेछे.

१०५१ शरभ[१]. ५,५,५ यति. न,न,न,न,स. १६,३८४

न न न न स, शर विरति, त्रण शरभे.

१ वाग्वल्लभ प्रमाणे यति लखी छे, पण प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंदोबोध, तथा छंदोवृत्तमुक्तावलीमा यति नथी.

१०५२ स्रग्, माला. ६,९ यति न,न,न,न,स. १६,३८४

षड नव पर, यति न न न न स स्रके.

१ प्राकृत पिंगलसूत्र, छंद शास्त्र, शब्दकल्पद्रुम, छंद-प्रभाकर, वाग्वल्लभ, तथा छंदोबोध अने पिंगळादर्शमां, ए नाम तथा यति छे.

१०५३ निश्चल. ९,६,४ यति. (पिं.द.) म,त,न,म,त. १६,८७१

निश्चलःपांचे, षड युग भा ता, ना मा ता र्थो.

१०५४ रूक्मामाला, रूपमाला. त,र,र,य,ज. २१,१३०

ता रा र या ज थी थायछे रूक्मामाल वृत्त.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां आ वृत्तनुं माप न र ज र ज कयुं छे ते. २१,८४८ मुं रूप थायछे.

१०५५ ब्रह्मिनी. ८,७ यति. (वा.न.) र,स,य,ज,ज. २३,१२१

आठथी ब्रह्मिनी गणो, रा स या ज ज आण.

१०५६ मितसवियः (वा. व.) न,स,स,ज,ज. २३,२६४

मितसवियमां न स सा ज जा पद थाय.

१०५७ महाह्रव. ज,ज,न,ज,न. २३,४०६

महाह्रवमां रचवा ज ज जा ज ज पाद.

१ चिंतामणिटीकावाळा मागधीपिंगळमां ए नाम छे

१०५८ रुचि. (मंदारमरंदचं.) भ,भ,भ,भ,भ. २८,०८७

भू भ भ भू भ करी रुचि तुं रच सुंदर.

१०५९ रमण. न,न,ज,न,भ. २८,९४४

सरस रमण विषे न न ज न भा धर.

१०६० शरह्रति, वसुमति. न,न,न,न,न. ३२,७६८

शरह्रति वसुमति न न न न न थकी.

१ शरह्रति नाम वाग्वल्लभमां छे.

१६ अष्टिछंद. ६५,५३६ भेद. १६ वर्ण.

१०६१ चन्द्रापीड[1], ब्रह्म[1], ब्रह्मरूप[2], ब्रह्मरूपक[3], ब्रह्मारूपा[3], कामकी[4], माधोराधा[5], बंभाण[6]. } म,म,म,म,म,ग.

मा मा मा मा मा गा आवे चंद्रापीडे के ब्रह्मे तो.

विद्युन्माळाथी आ वृत्त बमणुं छे. एटले कोइ ८,८ यति केहेछे, परंतु ते सर्वसंमत नथी.

१ चन्द्रापीड तथा ब्रह्म ए बे नाम वाग्वल्लभमां छे, तेमां यति कही नथी.

२ ब्रह्मरूप नाम प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरीनुं टिप्पण, शब्दकल्पद्रुम अने छंदोवृत्तमुक्तावालिमां आप्युं छे, तेमां यति कही नथी.

३ ब्रह्मरूपक अने ब्रह्मारूपा ए बे नाम छदसारमा छे, तेमां यति कही नथी; ब्रह्मरूपक नाम मामधी पिंगळछंदोग्रंथमां पण छे.

४ आ नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे. ६ ब्रह्मनुं अपभ्रंश रूप.

१०६२ माल्योपस्थ. न,न,न,य,म,ग. १,०२४

न न न य म ग मद रच माल्योपस्थे शोधी.

१०६३ कल्पाहारी. न,न,न,न,म,ग. ४,०९६

न न न न म ग थकी पद रच कल्पाहारी.

१०६४ प्रतीपवल्ली. स,स,भ,र,य,ग. ९,९३२

स स भा र य गा आप धरो प्रतीपवल्लीमां.

१०६५ आरभटी. भ,भ,न,ज,य,ग. ७,१९९

आरभटी रच भ भ न ज या ग पदे लावी.

१०६६ वक्रावलोक, चक्रावलोक.　　न,न,म,र,र,ग. ९,२८०

न न म र र ग आवेछे वृत्त वक्रावलोके.

१०६७ प्रवरललित, प्रवरन ललिता[1]. य,म,न,स,र,ग. १०,१७८

यमा ना सा रा गा प्रवरललितें लाववाना.

[1] छंदोर्णवमा ए नाम छे.

१०६८ अभिधात्री.　　　स,स,स,ज,र,ग. १०,९७२

अभिधात्रींतणी रचना ससा स जा र गा थी.

१०६९ पाणी.　　　न,र,भ,ज,र,ग. ११,१६०

न र भ जा र गा थी कवि! रचाय वृत्त पाणी.

संस्कृत प्रोसडी पृ ३८ मा वाणिनी ने बदले वाणि समजी भूल करी वाणि वृत्त तेणे जुदु पाड्यु अमे वाणिने बदले पाणी नाम नवु आपी तेज मापनु वृत्त आ स्थाने कायम राख्यु छे.

१०७० वाणिनी[1] ७,९ यति[2].　　न,ज,भ,ज,र,ग. ११,१८४

मुनि नव छेदथी, न ज भ जा र गे वाणिनीमा.

[1] वर्ण १७मा आ नामनु वृत्त अंक ११९५ मे छे

[2] मंदारमरदचंपूमा ७,९ यति छे

१०७१ अनिलोहा.　　　स,भ,त,य,स,ग. १२,१०८

अनिलोहा रचे सा भा त य सा गा उरवाथी.

१०७२ भोगावलि.　　　त,न,न,य,स,ग. १३,३०९

भोगावलि रच त न न य सा गा पद लागी.

१०७३ कलधौतपद.　　　स,स,स,स,स,ग. १४,०४४

कलधौतपदे स स सा. स स गा धर पादे.

१०७४ वलिवदन.　　　न,य,म,भ,स,ग. १९,३७६

वलिवदने लागे ना या मा भ स गुरु शोभी.

१०७५ मताशिखा. ९,७ यति[1]. त,य,स,भ,स,ग. १९,९६९

७ ७.
छे सूतशिखा खड ह्ये, ता य स भ स गा थी.

१ वाग्वल्लभमा ए प्रमाणे यति छे,

१०७६ परिखायतन, परिखापतन.स,स,स,भ,स,ग. १५,५८०.

परिखायतने स स सा भा स ग धर लावी.

१०७७ माल्यावल्य. म,भ,स,भ,स,ग. १५,६०१

पादे माल्यावल्य विषे मा भ स भ स गा छे.

१०७८ भीमावर्त्त. म,भ,न,न,स,ग. १६,३६१.

भीमावर्त्ते म भ न न स ग धर पदमाहे.

१०७९ रतिलेखा. स,न,न,न,स,ग. १६,३८०

कवि जाण स न न न स ग थर्ती रतिलेखा.

१०८० शिशुभरण. न,न,न,न,स,ग. १६,३८४

न न न न स ग थर्तों शिशुभरण बने छे.

१०८१ मन्दाकिनी[१].४,४,४,४यति[२].त,म,य,र,त,ग. १७,४७७

ता मा य रा, ता गा थर्ती, चचारथी, मन्दाकिनी

१ आ सिवाय १२ अक्षरमा पण अंक ७२० मे मदाकिनी वृत्त आवे छे

२ मंदारमरदचपूमा ४, ४, ४, ४ यति कही छे

१०८२ गरुडरुत[१], गरुडधृत[२]. न,ज,भ,ज,त,ग. १९,३७६

गरुडरुते रचो न ज भ जा त गा पादमा.

१ वाग्वल्लभ. २ छंद कामदुघावत्समा आ नाम छे

१०८३ नराच[१], नाराच[२], नराय[३], नाराज[४], नागराज[५], पंचचामर[६], विपक[७]. } ज,र,ज,र,ज,ग. २१,८४६

ज रा ज रा ज गा धरो नराच मांह भावथी.

प्रमाणिकाथी बमणु आ वृत्त छे.

१. वाग्वल्लभ अने छंदोवृत्तमुक्तावलिमा नराच नाम आपी यति.

कही नथी. आ मापमां एक लघु वधारतां १७ वर्णमां अंक ११४७ मे द्वितीय पंचचामर छे.

२ भाषाछंदोमंजरीमां नाराच नाम छे. ३ मागधी छंदः-शतकमां नराय नाम छे. ४ सरोजसिंधुमां नाराज लखेछे.

५ छंदःप्रभाकरे टीकामां नागराज नाम आप्युं छे, पण तेमां यति कही नथी, अने तेणे नराच, पंचचामर ए नामो पण आप्यां छे.

६ शब्दकल्पद्रुममां १६ अक्षरमां प्रमाणिकाथी बमणुं आ वृत्त जणावी १७ अक्षरमां पण एज नामनुं वृत्त, ज र ज र ज ग ल ए मापथी आप्युं छे, परंतु तेनुं बीजुं प्रमाण न मळतां अमे १७ वर्णमां दाखल कर्युं नथी.

संस्कृत मोसडी पृष्ट ३८ मे पंचचामरनुं बीजुं नाम विचित्र आप्युं छे.

७ मागधी पिंगळ छंदोग्रंथमां विपक्क नाम आप्युं छे.

प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंदोमंजरी आदि प्राचीन प्रमाण ग्रंथोमां यति कही नथी; वळी मंदारमरंदचंपूना वृत्तबिंदुमां तो स्पष्ट कह्युं छे के, नराचना पदमां छेद(यति)नज आवे. वृत्तदर्पणमां पादांते यति कही छे. कवीश्वर दलपतरामे अने छंदःप्रभाकरे पण यति पाळी नथी. परंतु पिंगळादर्शमां ८,८ यति कही छे. तेनुं कारण एम समजायछे के, प्रमाणिकाथी बमणुं पद करी बोलतां यति आठे देखायछे, तेथी तेणे यति कही छे अने बीजाए ते गौण मानी छे, किंवा ते विषे मौन्य पकडयुं छे.

राग श्रीराग कर्णाटकी, तिश्रजाति एकताल, मात्रा ३, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१०८४ तरवारिका. (वाग्वल्लभ) न,स,स,ज,ज,ग. २३,२६४

न स स ज ज गे तरवारिका रनजो पडे.

१०८५ कमलकर, कमठकर. न,य,न,य,भ,ग. २५,५५२

कमलकरे छे न य न य भा गा पादनिपे.

१०८६ प्रमदा[1]. ४,४,४,५ यति. स,त,य,स,भ,ग. २६,२१२

यति चारे, वेद[४] स ता, या स भ गा, छे प्रमदा.

१ मंदारमरदचम्पूमां वर्ण चौदमा पण प्रमदा नामे वृत्त अंक ९७९ मे छे

१०८७ त्रोटक, मणिकल्पलता. न,ज,र,भ,भ,ग. २७,८२४

न ज र भ भा ग त्रोटके छे मणिकल्पलता.

चार वर्णमा चार सगणना मापवाळु प्रसिद्ध तोटक वृत्त अंक ७५३ पृष्ट ३१२ मे छे तेथी आ भिन छे.

१०८८ नील, अश्वगति[१], नीलस्वरूप[२], विशेपिका[३], विशेपक, विशेप, लीला[४], पदनील[५], खगति[६]. — भ,भ,भ,भ,भ,ग. २८,०८७

नील विशेप विपे धर पांच भ तेम्र गा.

१ आ नाम छंदोलतामा छे. २ छंद कामदुघावत्समां ए नाम छे.
३ आ नाम छद प्रभाकरमा छे ४ छद शास्त्र तथा मागधी छद - शतकमा ए नाम छे. ५ प्रवीणसागरमा ए नाम छे, पिंगळादर्शमा नील, विशेप अने अश्वगति ए नामो आपी तेमां पाचे पाचे यति कही छे.

६ वाग्वल्लभमा खगति, नील, विशेपिका ए नामो छे तेमां यति नथी

१०८९ शैलशिखा. भ,र,न,भ,भ,ग. २८,११९

शैलशिखा रचो भ र न भा भ ग आप धरी.

१०९० कलहकर. न,न,न,न,भ,ग. २८,६७२

न न न न भ ग थी कलहकर वृत्त नने.

१०९१ मदनललिता. ४,६,६ यति[1]. म,भ,न,म,न,ग. २९,१६९

चारे शास्त्रे, मदनललिता, मा भा न म न गे.

१ वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, शब्दकल्पद्रुम, इत्यादिमा पण आज प्रमाणे यति छे संस्कृत प्रोसडीमा मदनललित नाम आपी तेमा यति, कहीं नथी.

१०९२ धीरललिता. भ,र,न,र,न,ग. ३०,१६७

भा र न रा न गा धर्यो रचाय धीरललिता.

१०९३ सुललिता[1]. ४,४,४,४ यति. न,भ,ज,स,न,ग. ३०,१३६

यति युगे, चारे न भा, ज स न गा, सुललिता.

१ मंदारमरंदचंपूमांथी

१०९४ नरशिखी. न,भ,न,स,न,ग. ३०,९८४

नरशिखी रच न भा ज स न गा कवि[1] करी.

१०९५ चकिता. ८,८ यति[1]. भ,स,म,त,न,ग. ३०,७९६

आठ वसु परे छेदो, आणो भा स म त न गा

१ वागवल्लभ, अने शब्दकल्पद्रुममा पण ए प्रमाणे यति छे छंद प्रभाकरमा यति नथी

१०९६ सारवरोहा. भ,त,न,त,न,ग. ३१,२०७

सारवरोह रच भ त ना ता न ग धरिने.

१०९७ वरयुवति. भ,र,य,न,न,ग. ३१,३४३

लाव भ रा य ना न गा ठीक वरयुवतिये.

१०९८ ऋषभगज, विलसित[1], गजविलसित, गजतुरगविलसित[2], विलसित. भ,र,न,न,न,ग. ३२,७२७ ७, ९ यति[3].

भा र न ना न गा च, ऋषभ—गजविलसिते,

सात नवे धराय, विरति ठिक विलसिते.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र अने वृत्तरत्नाकरमां ७,९ यति छे २ छंदोलता.
३ मंदारमरदचंपूमां ए प्रमाणे यति छे. (स्वर घनैर्द्विघ्नम्.)
४ च अहीं तयाने बदले वापर्यो छे.

१०९९ सरभ[1]. ८,८ यति. न,न,न,न,न,ग. ३२,७६८

वर्सु वर्सु यति नन,ननगग सरभमां.

१ पिंगळादर्श पृष्ट ९४ प्रमाणे.

११०० दन्तालिका. (वा.व.) त,म,र,म,य,ल. ३६,९९७

तामारमायाला आण शोधी दन्तालिका मांह.

११०१ सुखसार. भ,त,य,ज,र,ल. ४३,६२२

भातयजाराल धरो पाद सुखसारमांह.

११०२ कल्पधारि, कल्पचारि. र,र,र,ज,र,ल. ४३,६६७

राररजारला थी बने सदाय कल्पधारि.

११०३ चित्र[1],चञ्चला[2],चित्रसंग[3]. र,ज,र,ज,र,ल. ४३,६९१

चित्र, चंचला, रचायछे. रजारजारला र्यो

१ पिंगळ छंद सूत्रना टिप्पणमा चित्र नाम छे तेमां यति कहीं नथी
२ छंदोवृत्तमुक्तावलीमा पण आ नाम छे, तेमा यति आपी नथी
२ वाग्वल्लभमां चित्र अने चचला नाम आपी यति कही नथी
२ छंदप्रभाकरे चंचला अने चित्र ए बन्ने नाम आपी यति कहीं नथी
३ छंदोलता, छंदोमंजरी, तथा प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीकामां चित्रसंग नाम छे, तेमा यति काहीं नथी समानिका वृत्तनु बमणु आ वृत्त छे

११०४ सुखसार[1]. भ,त,य,ज,स,ग. ४७,७१९

भातयजासाग करावो सदाय सुखसार.

१ वाग्वल्लभ प्रमाणे

११०५ कुल्यावर्त्त[1],कुल्यावृत्त[1]. ६, १० यति. म,म,स,भ,त,ल. ९२,९१७

छठ्ठे कुल्यावर्त्ते, यति मा मा स भ ता ला धर्.

१ वाग्वल्लभ प्रमाणे.

११०६ रासा[1]. भ,भ,भ,भ,भ,ल. ६०,८९९

भा भ भ भा भ ल थी रचजो अट रास कवि!

१ चित्रसेन टीकावाळा नागपिंगल तथा मागधीछंदःशतकर्मा ए नाम छे. रासा नाम वृत्तमां आवी शक्तुं नथी माटे अमे रास राख्यु छे.

११०७ अचलधृति[1]. न,न,न,न,न,ल. ६५,५३६

न न न न न ल थकी अचलधृति तुँ रच.

जुओ प्रचूर्ण मात्रामेळ जातिमां पृष्ट २०६ मात्रासमक प्रकरण.

१ छंदःशास्त्र प्रमाणे धार्यु बीजुं नाम "गीत्यार्या" आप्युं छे, अने ते उपरथी छंदःप्रभाकर पण एमज केहेतां विशेषमां केहेछे के, आना चमणाने "डमरु" केहेछे, ते दंडक प्रकरणमां ३२ लघु अक्षरनुं छे.

१७अत्यष्टि छंद. १,३१,०७२भेद.१७वर्ण.

११०८ मानाक्रान्ता. म,म,म,म,म,ग,ग. १

मानाक्रान्ता नामे वृत्ते मा मा मा मी मा गी गो आवे.

११०९ मंजारी.[1] म,म,भ,त,य,ग,ग. ६,९२९

मा मा भा तू योगे गा पद सारी कविता मंजारी.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे.

१११० वीरविश्राम. न,न,र,न,र,ग,ग. ११,९६८

धर् तुँ न न र न ा र गा ग पद वीरविश्रामे.

११११ वल्वज, वल्गुज. भ,भ,त,न,स,ग,ग. १६,१८३

वल्वज- वल्गुज मांहे भ भ त न स ग गा आवे.

१११२ कुराशन, क्रूराशन, करासन, क्रूरासन. त,न,त,न,स,ग,ग १६,१८९

कूराशन रन् तानातनसगग धरी पादे.

१११३ मन्दाक्रान्ता. ४,६,७यति[1]. म,भ,न,त,त,ग,ग. १८,९२९

मन्दाक्रान्ता; श्रुति पड हये, माभनाताततगा गे.

१ छंदःशास्त्र, छंदोवृत्तमुक्तावलि, मंदारमरंदचंपू, छंदोमंजरी अने वृत्तरत्नाकरमां ए प्रमाणे यति छे.

राग वेगवाहिनी, ताळ मिश्रजाति रूपक, मात्रा ९, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे.)

शब्दकल्पद्रुममां कह्युं छे के, कोइने दूत तरीके मोकलतां तेनुं वर्णन आ वृत्तमां सारुं लागेछे. कालिदासनुं मेघदूत खंडकाव्य आ वृत्तमां छे.

१११४ कामरूप[1]. म,र,भ,न,त,ग,ग. २०,३६९

मारा भा ना त गा गा कविवर! धरो कामरूपे.

१ आ नाम वाग्वल्लभमां छे

१११५ वाणिनी[1]. ७,१० यति. न,ज,भ,ज,ज,ग,ग. २३,४७२

मुनि दश वाणिनी, यति नजा भज जा ग गे छे.

१ वाणिनी १६ अक्षरमां अंक १०७० मे छे, तेम छता पिंगळादर्शमां ७,१० यतिथी १७ वर्णमां क्याथी लावी उमेर्यो तेनुं प्रमाण जडतुं नथी.

१११६ अतिशायिनी[1], चित्रलेखा[2]. } स,स,ज,भ,ज,ग,ग. २३,९०० १०, ७ यति.

ससजा भजगागथी दशे, ज अतिशायिनी छे.

१ वाग्वल्लभमां १०, ७ यति छे. २ वृत्तरत्नाकरमां चित्रलेखा नाम छे तेमां यति नथी; वळी चित्रलेखा १८ वर्णमां अंक ११५३मे छे.

१११७ शायिनी[1]. न,स,ज,भ,ज,ग,ग. २३,९०४

नसजभजे गागथी बने सरस शायिनी तो.

१ वाग्वल्लभमां

११९८ सलेखा[1]. न,न,स,न,न,ग,ग. ३२,३२०

ननसनगगे जोडो कवि! सरस सलेखा.

१ वाग्वल्लभमां

११९९ तितिक्षा[1]. म,न,य,न,न,ग,ग. ३२,३८३

भा न य न न ग ग आणी रच तुं पद तितिक्षा.

१ वाग्वल्लभमां छे

११२० हारिणी[1]. ४,६,७यति[2]. म,भ,न,म,य,ल,ग. ३७,३६१

चारे चर्के, मुनि म भ न मा, या ला गथो हारिणी.

१ छंद प्रभाकरमां आ वृत्तने हारिणी साथे एक गण्यु छे, ते भूल छे

२ छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र अने छंद शास्त्रमां आ यति छे

११२१ पृथ्वी. ८,९ यति[1]. ज,स,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५०

दिशा८ नवपरे ज सा, ज स य ला ग पृथ्वी धरो.

१ मंदारमरंदचंपू, वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, अने वृत्तरत्नाकरमां ए प्रमाणे यति छे

राग गौरी, ताल चतुश्र जाति एक ताल, मात्रा ४, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

११२२ वाळविक्रीडित. भ,स,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५१

भा स ज स य ला ग पाद रच बालविक्रीडिते.

११२३ मालाधर, मालाहरा[1]. न,स,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५२ ८, ९ यति[2].

वसु नव यति न सा, ज स य ला ग माळाधरे.

१ पिंगळादर्शमां ए नाम अने यति छे पण तेनुं बीजुं प्रमाण मळ्युं नथी

२ छंदोवृत्तमुक्तावलि, छंद प्रभाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाग्वल्लभ, अने वाणीभूषणमां माळाधर नाम साथे यति नथी, पण छंदार्णवमां ८, ९ यति पहाछे, ने माळाधर नाम आप्युं छे

११२४ कालसारोद्धत[1]. ज,त,ज,स,य,ल,ग. ३८,७९८

ज ता ज सा या ल ग धार कवि! कालसारोद्धते.

१ वागवल्लभमा छे

११२५ घनमयूर[1] ७,६ यति. न,न,भ,स,र,ल,ग. ४२,९४४

घनमयूर हये, रसथी न ना भा ,स रा ल गे.

१ मंदारमरंदचपूमा छे

११२६ हरिणी. ६,४,७ यति[1]. न,स,म,र,स,ल,ग. ४६,११२

छ युग मुनिये, न स्मा रा सा, ल गे हरिणी करो.

१ वागवल्लभ, वृत्तरत्नाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, अने मंदारमरंदचपू. राग कामोद, ताल मिश्रजाति ध्रुवपंत्र, मात्रा २५, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

११२७ हरि. ६, ४, ७ यति[1]. न,न,म,र,स,ल,ग. ४६,१४४

छ चरण हय, छेदे ना ना, म रा स ल गे हरि.

१ वृत्तरत्नाकर प्रमाणे.

११२८ मोहन. ९,८ यति[1]. य,र,स,र,स,ल,ग. ४६,२९०

नवे आठे वने य र सा, रा स ला गुरु मोहने.

१ पिंगळादर्श प्रमाणे यति छे

११२९ भाराक्रान्ता. ४,६,७यति[1].म,भ,न,र,स,ल,ग. ४६,५७७

भाराक्रान्ता, युग छ मुनिये, म भा न र सा ल गे.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र तथा छंदोमंजरी प्रमाणे यति छे

११३० कान्ता. ४,६,७ यति [1]. य,भ,न,र,स,ल,ग. ४६,५७८

करो कान्ता,युग छ मुनिये, य भा न र सा ल गे.

१ शब्दकल्पद्रुम अने नारायणभट्टी टीकावाळा वृत्तरत्नाकरमा ४,६, ७ यति कही छे पण छंदोमंजरीनीटीपमा (भवेत्कान्ता रस युग हयैर्यभौ नरसा लगौ) ६,४,७ यति कही छे

११३१ विरुद्रुत. (वा.व) म,म,स,भ,त,ल,ग. ९२,४६९.

चारे पादे विरुद्रुते छे म भ सा भा त ल गा.

११३२ कासार. ८,९यति(वा.व.) म,म,त,न,त,ल,ग. ९२,९९३.

आठे खंडे मा मा ता ना, त ले ग थी कासार करो.

११३३ वंशल. (वा. व.) म,त,ज,ज,ज,ल,ग. ९६,१६१

मा ता जी जा जा ल ग आप धरो कवि! वंशलमां.

११३४. अवितथ, नर्दटक, नर्कुटक, नर्द्दटक[1], मर्कटक[2]. — न,ज,भ,ज,ज,ल,ग. ९६,२४० — ७, १० यति[3].

अवितथमां रचो, न ज भ जा ज ल गा पदमां.

१ संस्कृत पोसडीमांथी. भागवतना दसमस्कंधना ८७मा अध्यायमां वेदस्तुति आ वृत्तमां छे, अने तेमां ७, १० यति छे.

२ वृत्तरत्नाकरमां ७, १० यति जणावी तेनां नाम नर्दटक, नर्कुटक आप्यां छे. छंदःशास्त्रनी टीपमां यति नथी, छंदोमंजरीमां नर्दटक नाम छे पण यति नथी, मंदारमरंदचंपूमां पण यति नथी. छंदोलतामां ७, १० यति छे; सुवृत्ततिलकमां यति नथी, पिंगळादर्शमां नर्कुटकमां ७, ४; ६ यति कही छे. ३ वृत्तरत्नाकरनीटीप.

११३५ कोकिल, कोकिलक. — न,ज,भ,ज,ज,ल,ग. ९६,२४० — ७, ६, ४ यति[1].

हय षट कोकिले, न ज भ जा ज ल, गा करजो.

१ वृत्तरत्नाकर तथा प्राकृतपिंगळसूत्रना क्षेपकमां तथा शब्दकल्पद्रुममां ७,६,४ उपर यति दर्शावी छे, पण छंदःशास्त्रना आठमा अध्यायना पंदरमा सूत्रमां ८,५,४ यति कही छे.

११३६ शिखरिणी. ६,११यति. य,म,न,स,भ,ल,ग. ९९,३३०

छए रुद्रे छेदो, यमनसभलागे शिखरिणी.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, छंदोवृत्तमुक्तावली, वृत्तरत्नाकर अने पिंगळादर्शमां ६,११ यति मूकी छे.
राग बाहार, ताल मिश्रजाति ध्रुवपद, मात्रा २५, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

११३७ समदविलासिनी. न,ज,भ,ज,भ,ल,ग. ६०,३३६

समदविलासिनी नजभजाभला गुरु रचो,

११३८ सुधाधारा. ६,११ यति. य,त,न,न,भ,ल,ग. ६१,४१०

सुधाधारा राग, शिव यति यतनानभलगे.

१ पिंगळादर्श प्रमाणे यति छे

११३९ विधुरविरहिता[1] ५,९,१२ यति. स,त,य,भ,न,ल,ग. ६४,६१२

सतयभानाला; गुरुथी पाचे विधुरविरहिता.

१ वाग्वल्लभ.

११४० शुकवनिता, शिशुवनिता. स,स,भ,भ,न,ल,ग. ६४,९२४

ससभाभनलागा धरिने रच शुकवनिता.

११४१ वाहान्तरित. त,न,भ,भ,न,ल,ग. ६४,९९७.

वाहान्तरित विप्र धरजो तनभभनलगा.

१ वाग्वल्लभमां छे.

११४२ वंशपत्रपतित, जलधररसित, वंशवदन[1], वंशपत्र, वंशदल, वंशपत्रपतिता[2]. भ,र,न,भ,न,ल,ग. ६४,९८३. १०,७ यति[3].

दिग्मुनि वंशपत्रपतिते, भरनभनलगा.

१ शंभुमते प्राकृतपिंगळसूत्रमां जणाव्युं छे २ "माघकाव्य" मां ए नाम छे.
३ छंदःशास्त्र, मंदारमरंदचंपू, वाग्वल्लभ, अने वृत्तरत्नाकरना ए प्रमाणे यति छे.

११४३ कर्णस्फोट. न,य,त,न,म,ग,ल. ६९,३९२

कवि! पद कर्णस्फोटे नयतनमा गा ला धार

वाग्वल्लभमां छे

११४४ प्रतिहार (वा० व०) र,र,र,र,र,ग,ल. ७४,८९९

रा र रा रा र गा ला थकी आप जोडो प्रतिहार.

११४५ कान्तार (वा० व०) य,म,न,स,र,ग,ल. ७९,७१४

तमे जोडो या मा न स र ग ल थी वृत्त कान्तार.

११४६ फल्गु. ६,६,९ यति: स,भ,म,भ,स,ग,ल. ८१,१४०

रस शास्त्रे शर, यति सा भा स भ, स ग ले फल्गु.

१ वाग्वल्लभमां छे

११४७ द्वितीयपंचचामर. ज,र,ज,र,ज,ग,ल. ८७,३८२

द्वितीय पंचचामरे रचो ज रा ज रा ज गा ल.

आ वृत्त शब्दकल्पद्रुममां छे आ पिंगळमां १६ वर्णमां अंक १०८३ मे "पंचचामर" आवी जायछे, तेथी अहिं पंचचामरना नामसाथे "द्वितीय" जोडवामां आव्युं छे

११४८ रूपमाल,[1] } र,स,ज,ज,भ,ग,ल. ९२,०१९

रूपमाला. } ८,६,३ यति.

रूपमाल वसु छ ए, र स जा ज भा ग, ल थाय.

१ पिंगळादर्शमां आ नाम अने ८,६,३ यति कही छे

११४९ अचलनयन न,न,न,न,न,ल,ल. १,३१,०७२

न न न न न-ल ल थकी रच अचलनयन.

वाग्वल्लभमां छे

१८ धृतिछंद. २,६२,१४४ भेद. १८ वर्ण.

११५० रणशूर[1] १०,८ यति. म,स,स,र,र,म. ९,४३३

आशाए रणशूर रचे छे, म सा सा र रा मा आणी.

१. आ वृत्त अमारा नामथी नवुं रच्यु छे श नो छ थायछे अने र नो ड थायछे, एटले रणछुड एम शब्द थयो तेमां उ नो ओ, थता रणछोड एम छेवटे थायछे.

१,१५१ शार्दूल. १२,६ यति१. म,स,ज,स,र,म. १०,०७२.

बारे छे यति छेवटे म स ज सा, रा म शार्दूल तों.

१ शब्दकल्पद्रुम, वृत्तरत्नाकर अने छंदोमजरीमा ए प्रमाणे यति छे.

१,१५२ मंजीरा,मंजीर१.९,९ यति२.म,म,भ,म,स,म. १२,६७३.

मंजीरामाहें खडे यति, मा मा भा म स मा आणोजी.

१ ए नाम छंद प्रभाकरमां छे, तेमां लक्षणमा यति कही नथी, पण उदाहरणमां उपर मुजब यति पाळी छे. २ मंजीरा नाम वाग्वल्लभमां छे; पण तेमां तथा प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाणीभूषणमां यति कही नथी, पण छंद.शास्त्रनुं टिप्पण; छंद पारिजात, छंदोवृत्तमुक्तावली अने पिंगळादर्शमा उपर प्रमाणे यति छे.

१,१५३ चित्रलेखा१, ४,७,७यति२. म,न,न,त,त,म. १८,९३७

माना ना त,त म युग,हये छे, यति चित्रलेखामा

१. १७ वर्णमा अंक १११६ मे आ नामनु वृत्त छे

२ वृत्तरत्नाकर, छंदोमजरी, अने शब्दकल्पद्रुममा ए यति छे

१,१५४ परामोद. य,स,स,ज,न,म. २१,४९०.

परामोद विषे य स सा ज ना म खचित आवेछे.

११५५ विलुलितवनमाला. न,न,म,न,न,म. २२,३२०.

विलुलितवनमालामां न न म न न म आवे छे.

१,१५६ सिंहविस्फूर्जित. ९,६,७ यति. म,म,भ,म,य,य. ३७,२४९

मा म्भा मा या या, पाचे पट साते, सिंहविस्फूर्जिते छे.

वृत्तरत्नाकरना परिशिष्टमा आ नाम तथा यति छे.

११५७ नीलशार्दूल, नीलमालूर, नीलशालूर. } न,न,म,य,य,य. ३७,४४०

ननमयय य आणो नीलशार्दूलमां ठीक धारी.

११५८ क्रीडचंद्र[1], वारवाणावृत्त[1], क्रीडगा[1], चंद्रिका[1], क्रीडाचंद्र[2], क्रीडाचक्र[3], कील्लानंद[4], चंद्रक्रीडा[5], महामोदकारी[6], महामोद[7], क्रीडचक्र[8].

य,य,य,य,य,य. ३७,४५०

यया याययाया धरो क्रीडचन्द्रे वळी चंद्रिकामां.

१ वाग्वल्लभमां, २ प्राकृतपिंगळसूत्र, ३ पिंगळादर्शमां, ११,७ यति कही छे, पण तेनुं प्रमाण जड्युं नथी. ४–५ भगवत् पिंगळमां छे. ६ छंदः प्रभाकर. ७ भाषा छंदोमंजरी. ८ शब्दकल्पद्रुम.

११५९ कुसुमितलता[1], कुसुमितलतावेल्लिता[2], कुसुमलतावेल्लिता, फूलमाला, कुसमिलता.

५,६,७ यति. म,त,न,य,य,य, ३७,८२७

पांचे चक्रे छे, कुसुमितलता, मा त ना या य ये थी.

१ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम तथा यति छे. २ प्राकृत पिंगळ सूत्रमां आ नाम छे अने यति पण एज प्रमाणे छे. ३ प्राकृत पिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, वृत्तरत्नाकर, अने छंदःशास्त्रप्रमाणे ए यति छे, पण छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी.

११६० चन्द्रलेखा, चित्रलेखा[1]. } म,भ,न,य,य,य. ३७,८७३ ४, ७, ७ यति[2].

चारे सातै, यति म भ न य या, ये बने चन्द्रलेखा.

१ छंदोमंजरीमां अने प्राकृत पिंगळसूत्रना परिशिष्ट भागमां ए नाम तथा यति छे, पण छंदःप्रभाकरमां ए नाम साथे यति नथी.

२ शब्दकल्पद्रुम अने वाग्वल्लभमां बन्ने नाम छे, पण तेणे यति कहीज नथी. वर्ण १९मां अंक १००९ मे चंद्रलेखा नाम छे.

११६१ सत्केतु. म,न,न,ज,र,य. ४४,०२९

आ सत्केतु म न न ज र य आणवे खरे बनेछे.

११६२ चन्द्रकुल. १०, ८ यति. स,स,ज,भ,स,य. ४८,४७६

धर चन्द्रकुले दशे यति, स स ज भ सा य लावी.

पिंगळादर्श प्रमाणे आ नाम तथा यति छे.

११६३ केशर. ४, ७, ७ यति. म,भ,न,य,र,र. ७४,७३७

चोरे साते, म भ न य र र थी, थाशे पदो केशरे.

वृत्तरत्नाकर प्रमाणे आ नाम तथा यति छे.

११६४ सिन्धुसौवीर. (वा० व०) र,र,र,र,र,र. ७४,८९९

रा र रा रा र रा आणजो गोठवी सिन्धुसौवीरमां.

११६५ लालसा. ९,९ यति[1]. त,न,र,र,र,र. ७४,९४१

छेदो नव नव लालसा, ने गणो ता न रा रा र रा.

१ छंदोमंजरीनी टीप.

११६६ महामालिका[1], नाराच[1], नराच[2], नाराचक, महामाला.

६,६,६ यति. न,न,र,र,र,र. ७४,९४४

छ छ छ विरति, छे महामालिका, ना न रा रा र रे.

१ वाग्वल्लभ. २ नाराच के नराचमां प्राकृत पिंगळसूत्रना परिशिष्ट भागमां १२,६ यति कही छे.

३ छंदोलनामाथी.

११६७ निशा[1], सालसा[2]. १०,८ यति. न,न,र,र,र,र. ७४,९४४

दिग वसु यतिथी निशा छे, न ना रा र रा रा धरे.

१ मंदारमरंदचंपू, तेमां यति एज छे.
२ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टिप्पणमां छे.

११६८ तारका,[1] महामालिनी.[2] — न,न,र,र,र,र. ७४,९४४ — १२,९ यति[1].

जग शर यति नानरारा ररे छे, सदा तारका.

१ पिंगळादर्श. २आ नाम छंदःप्रभाकरमां छे पण तेमां यति केही नथी, अने तेणे तारका ने नाराचने एकठा गण्या छे.

११६९ विलास. ४,६,८ यति. म,स,स,र,र,र. ७४,९६९

चो छो आठ, विलास रचो मा,ससा राररा आणिने।
मंदारमरंदचंपूमां छे.

११७० नन्दन. ११,७ यति. न,ज,भ,ज,र,र. ७६,७२७

शिव मुनिये यति नजभजा, ररा करो नन्दने.

छंदोमंजरीमां आ यति छे. शब्दकल्पद्रुममां आनी जोडे महामालिका नाम आपेल छे, पण तेना लक्षणमां "वेदरैफैश्छिन्ना" आप्युं छे, एटले वाग्वल्लभमां आपेलुं माप बराबर छे. वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र तथा शब्दकल्पद्रुममां पण एज नाम तथा यति छे.

११७१ गजेन्द्रलता, लता.[1] — न,न,र,भ,र,र ७६,९९२ — १०,८ यति.

ननरभरर थी लता ने, यति छे दशे आठमे.

१ छंदोमजरीना परिशिष्टमां १०,८ यति कही छे.
२ शब्दकद्रुममा १०,८ यति.

११७२ पार्वणी. ९,९ यति. न,न,र,न,र,र. ७७,९०४

नव नव यति नानरा, नररथी बने पार्वणी.

११७३ क्रोडक्रीड. .म,भ,न,न,र,र. ७७,८०९

आणीयो मा भ न न र र गणज क्रोडक्रीडा मही.

११७४ वसुपदमंजरी[1], हरिणाभिनंदन[2]. न, ज, भ, ज, ज, र. ८९,००८

वसुपदमंजरी रच न जा भ ज जा र आणिने.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता.

११७५ हरिणप्लुत, हरिणप्लुता. } म, स, ज, ज, भ, र. ८, ५, ५ यति. ९३,०१७

आठे छे हरिणप्लुता, शर पांच मा, स ज जा भ रे.

वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरीनु टिप्पण, अने शब्दकल्पद्रुम.

११७६ विबुधप्रिया, मत्तकोकिल[1], कूर्पर, चर्चरी[2], चंचरी[3], चंचली[4], चक्रा. } र, स, ज, ज, भ, र. ९३,०१९

थायछे विबुधप्रिया ठिक वृत्त रा स ज जा भ रे.

१ मत्तकोकिल, चर्चरी, कूर्पर, चंचरी ए नामो वाग्वल्लभमां छे, तेमां यति कही नथी. २ छंदोवृत्त मुक्तावलि, प्राकृत पिंगळसूत्र, वाणीभूषणमां अने छंदोलतामां आ नाम छे, तेमां यति कही नथी. ३ चंचरी अने चर्चरी ए बे नामो पिंगळादर्शमां आपी तेणे १०, ६ यति कही छे, परंतु १८ अक्षरनुं आ वृत्त होतां ६ने बदले ८ लखवा जोइये, ६नो अंक हस्तदोष हशे; दशे यति बोलायछे, परंतु बीजां प्रमाण नहि होतां अमे आवश्यकता गणी नथी.

४ छंदःप्रभाकरमां बीजां केटलांक नामो साथे आ नवुं नाम छे, तेणे यति कही नथी. राग असावरी (जौनपुरी), ताल मिश्रजाति षष्ठीताल, मात्रा २६, मध्यकाळ; विबुधप्रिया, चंचरी अने चर्चरी वृत्तनां छे, एम संगीतानुसार छंदोमंजरीमां लख्युं छे.

११७७ चल. ४,७,७ यति.   म,भ,न,ज,भ,र. ९३,१६९

चारे साते, म भ न ज भ र थी, रचो चल रीतथी.

वृत्तरत्नाकर तथा छंदोमंजरीना टिप्पणमां ए नाम तथा यति छे.

११७८ षट्पदेरित.   न,र,न,र,न,र. ९५,७०४

षट्पदेरिते न र न र न र पद रचायछे.

११७९ पार्थिव. १२,६यति. (वा.व.) ज,स,ज,स,न,र. ९६,०९४

विराम रविये ज सा ज स न रा, चरण पार्थिवे.

११८० हीरक[1], हीर,   म,स,न,ज,न,र. ९७,२४७
हारक, हीरा[3].   १२, ६ यति.

हीरक रचना भ स न ज न र, रवि छये यति.

१ छंदोमंजरीना टिप्पणमां तथा शब्दकल्पद्रुममां हीरक नाम आपी तेमां यति कही नथी. परंतु प्रत्येक छ वर्णे अथवा १२,६ वर्णे यति बोलायछे. २ छंदःप्रभाकरमां हीरक नाम आपी तेमां १२,६ ये यति कही छे. मात्रा जातिमां हीरक, हीर, पृष्ट ३०, अंक ८७, मात्रा २३मां छे, ते आनीज विकृति छे. आनी मात्रा २३ थायछे. ३ गणप्रस्तारप्रकाशमां हीरा नाम छे.

११८१ जगदुदय, जगदुदय[1].   न,न,न,न,न,र. ९८,३०४

जगदुदय न न न न न र चरण थायछे.

१ मागधी पिंगलछंदोग्रंथमां जगदुदय नाम छे.

११८२ परिपोषक.   स,म,स,स,स,स. १,१२,३४८

परिपोषकमां कवि! सा स स सा स स आप धरो.

११८३ शार्दूलललित[1].   म,स,ज,स,त,स. १,१६,५६९
शार्दूललसित[2].   १२,६ यति.

बारे छेद छ ए म सा ज स त सा, शार्दूलललिते.

१ वाग्वल्लभ तथा छंदोमंजरीमां ए नाम अने १२,६ यति कही छे.
२ छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी अने एवुं नाम शार्दूलललिता आप्युं छे अने टीकामां जणाव्युं छे के कोइ कोइ एने "शार्दूललसिता" पण केहेछे.

११८४ सुधा. ६,६,६ यति. य,म,न,स,त,स. १,१६,६७४

छए चक्रे छेदो, य म न स त सा, आणो पद सुधा.

१ वृत्तरत्नाकर आदिमां आ नाम तथा यति छे.

११८५ अश्वगति. भ,भ,भ,भ,भ,स. १,२६,३९१

पाद विषे रच भा भ भ भा भ स अश्वगति सदा.

छंदोलतामां केहेछे के, कोइ एने सुधा केहेछे. पण बीजा प्रमाणो उपरथी सुधा वृत्त तो अ ११८४ मे जुदु छे.

११८६ भ्रमरपद. भ,र,न,न,न,स. १,२१,०२१

भा र न ना न से कवि! भ्रमरपद चरण रचो.

११८७ अर्द्धान्तरालापि[1], अद्धान्तरालापि[2]. त,त,त,त,त,त. १,४९,७९७

अर्द्धान्तरालापि माहि त ता ता त ता तां बधा आण.

१–२ वाग्वल्लभमां आ नामछे, तेमां यति कही नथी.

११८८ छेल. ११,७ यति, त,त,त,त,त,त. १,४९,७९७

रुद्रे हये छेद ता तां त ता ता, त छे छेलनी मांह.

पिंगळादर्शमां आ नाम अने यति छे तेनु बीजु प्रमाण जडयु नथी.

११८९ पतङ्गपाद. ज,त,त,त,त,त. १,४९,७९८

पतङ्गपादे रचो जा त तां ता त ता पाद शोभीत.

११९० सारस्वती[1], शारदा[2]. त,भ,र,स,ज,ज. १,८६,०३७ ९,९ यति.

सारस्वती नवने नवे, त भ रा स जा ज धराय.

१ पिंगळादर्शमां सारस्वतीमां ९,९ यति कहीछे. २ गणप्रस्तारप्रकाश.

११९१ हीरकहारधर. (वा.व.) म,भ,म,भ,भ,म. २,२४,६९५
हीरकहारधरे पद भा भ भ भा भ भ थी रच.

११९२ दंडी, दंडक. (ग.प्र.प्र.) त,न,त,न,त,न. २,४९,६६१,
दंडी रच कवि! ता ना त न त न-आणो झटपट.

१ वाग्वल्लभमा छेल्ले स लखेछे पण दृष्टांतमां न गणेछे.

११९३ तुमुलक. न,न,न,न,न,न. २,६२,१४४,
न न न न न न थकी रच कविवर! तुमुलक.

१९अतिधृति छंद.५,२४,२८८ भेद.१९ वर्ण.

११९४ शम्भु[1], शंकर, संभो[2]. स,त,य,भ,म,म,ग. ३,१७२.
स त या भा मा म ग आवे शंकर संभो शंभु वृत्ते तो.

१ छंदोलतामां ७,९ यति लाववा केहेछे पण वाग्वल्लभ, छंदः प्रभाकर तथा छंदोवृत्तमुक्तावलीमां यति विषे कह्युं नथी. तेमज, प्राकृत पिंगळसूत्र अने वाणीभूषणमां. पण यति नथीः २ संभो, नाम गणप्रस्तार प्रकाशमां.छे, ते शंभुनो अपभ्रंश छे.

११९५ झिल्लीलीला. ८,११यति[1]. न,य,म,म,ज,म,ग. २०,४९६,
वसु शिव छेदे ना या, मा मा जा मा ग थाय झिल्लीलीला.

१ वाग्वल्लभमां आ यति कही छे.

११९६ विधुनिधुवन[1]. म,न,न,त,न,म,ग. ३१,२२९
आवेछे विधुनिधुवनमां मा न न त न मा गा पादे.

१ आ वृत्त वाग्वल्लभमा छे

११९७ गीतका, भैरौ. न,य,र,र,र,य,ग. ४२,१२८
न य र र रा या गा थकी गीतका थायछे तथा भैरौ.

११९८ माराभिसरण. त,न,म,भ,स,य,ग. ४८,१८९,
माराभिसरणमां आवेछे त न म भ सा य गा पादे.

११९९ लोल्लोलम्लील. (वा ब.) र,र,र,र,र,र,ग. ७४,८९९

लोल्लोलम्ललीले रचो रा र रा रा र रा गा पदे तो.

फोर आ वृत्तमां ६,६,७ यति मानेछे, पन तेने बीजुं प्रमाण मळ्युं नथी

१२०० मेघविस्फूर्जिता[1], विस्मिता, मेघवंश[2]. } य,म,न,स,र,र,ग. ७१,७१४ ६,६,७ यति.[3]

छए चकें छे या, म न स र र गा, मेघाविस्फूर्जिता छे.

१ वाग्वल्लभमां आ नाम अने यति छे. २ मेघवंश नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

३ आ वृत्तमां छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी, पण प्राकृत पिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकरनो परिशिष्ट भाग, वाणीभूषण अने मंदारमरंदचंपू एओमां आ प्रमाणे गण अने यति छे.

१२०१ फुल्लदाम, पुष्पदाम. म,त,न,स,र,र,ग. ७९,७४५ ९,७,७, यति.

पांचे साते छे, म त न स र र गा, पादमां फुल्लदामे.

फुल्लदामने कोइ पुष्पदाम केहे छे, एम शब्दकल्पद्रुममा कह्युं छे. छंदोमंजरी अने प्राकृतपिंगळसूत्रमां ए यति कही छे, छंद प्रभाकरमां यति कही नथी. सुरसा अंक १२२० मे छे, तेथी आनी यति जुदी छे. पुष्पदाम नाम (यति सहित) आ मापथी वृत्तरत्नाकरमां छे.

१२०२ झूलना. १०,९,४.यति. स,ज,ज,भ,र,स,ग. १,०९,९२२

स ज जा भ रा स ग थी रचो, झट झूलना, दश पांचे.

१ पिंगळादर्शमां १०,५,४ यति कही छे

१२०३ किरणकीर्त्ति[1]. त,ज,त,भ,न,स,ग १,३०,२४९

साते रविये यति, ता ज ता भ न स ग किरणकीर्त्ति.

१ वाग्वल्लभमा आ नाम तथा ७,१२ यति छे

१२०४ शार्दूलविक्रीडित. म,स,ज,स,त,त,ग. १,४९,३३७
१२,७ यति[1].

मा सा जा स त ता ग सूर्य मुनिये, शार्दूलविक्रीडिते.

१ वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी आदि प्रमाणे यति छे.

आ मूळ प्रकृति छे एनी विकृति जुओ मात्रामेळमां पृ. ४९; अंक २९ मे साटक अने तेना भेदो. राग गुणावरी, ताल खंड जाति, मात्रा ९, विलंबकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१२०५ छाया. ६,६,७ यति. य,म,न,स,त,त,ग. १,४९,४४२

छए चके छाया, विरति धरवी, या मा न सा ता त गे.

छंदःकामदुधावत्स, छंदोर्णव, वृत्तरत्नाकरनुं परिशिष्ट, छंदःशास्त्र अने प्राकृतपिंगळसूत्र, तथा वाणीभूषण एओमां पण ए गण अने यति छे. छंदोमंजरी अने शब्दकल्पद्रुममां १२ मे तथा अंत्याक्षरे यति कही छे, अने छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी.

१२०६ बिम्ब. ५,७,७ यति[1]. म,त,न,स,त,त,ग. १,४९,४७३

पांचे साते ने, हवे यति म त ना, सा ता त गा बिम्बमां.

१ छंदोमंजरीना टिप्पणमां अने शब्दकल्पद्रुममां ए यति छे.

१२०७ शक्र १०,९ यति[1]. र,स,ज,ज,त,त,ग १,९०,३६३

रा स जा ज त ता ग छे दश, ने नवे छेद तो शक्रमां.

१ पिंगळादर्शमां ए यति छे.

१२०८ शिलीमुखोज्जृम्भित[1]. म,म,ज,न,न,त,ग. १,९९,४८१

मा सा जा न ज ता ग आण चरण शिलीमुखोज्जृम्भिते.

१ वाग्वल्लभ.

१२०९ कलापदीपक. र,ज,र,ज,र,ज,ग. १,७४,७६३

रा ज रा ज रा ज गा धरो सदा तमे कलापदीपके.

१२१० प्रपञ्चचामर[1], प्रपञ्च[2], पंचचामर[3]. } न,न,र,ज,र,ज,ग. १,७४,७८५

न न र ज र ज गा धरो भले तमे मपंचचामरे.

१–२ वाग्वल्लभ. ३ वृत्तरत्नाकर.

१२११ कल्पलतापताकिनी.(वा.व.)म,न,न,स,स,ज,ग.१,७८,१६९

मा ना ना स स ज ग धर्यो रच्य कल्पलतापताकिनी.

१२१२ सुललिता. न,स,न,म,ज,ज,ग. १,८४,८००

रच्य सुललिता चरण ना सा ना म जा ज गथी करी.

१२१३ मणिमंजरी.१२,७ यति[1].य,भ,न,य,ज,ज,ग.१,८९,३३०

यति बारे मुनि य भ न य जा ज्गे; रचो मणिमंजरी.

१. वृत्तरत्नाकरमां ए यति छे.

१२१४ सरल. ९,१० यति. न,भ,र,स,ज,ज,ग. १,८६,०४०

सरलमां नव दोपथी, न भ रा स जी ज ग आणजो.

१ आ वृत्त उपर प्रमाणेना माप अने यतिथी मंदारमरंदचम्पूमा छे, अने ते हरिगीतने रागे गवायछे, प्रथमनी बे मूकी देवानी मात्रा ओछी छे.

१२१५ मकरंदिका[1], मकरंदी. य,म,न,स,ज,ज,ग. १,८६,२०६

छए चक्रे साते, य म न स ज जा, गथी मकरंदिका.

१ वृत्तरत्नाकरमां मकरंदिका नाम अने ६,६,७ यति छे.

१२१६ निर्गलितमेखला.(वा.व.) न,न,र,न,भ,ज,ग.१,९२,१९२

चरण न न र ना भ जा ग रच्य निर्गलितमेखला.

१२१७ वरूथिनी.९,९,९,४यति.ज,न,भ,स,न,ज,ग.१,९४,४९४

ज ना भ स न, ज गा विरति, शरो ग्रणथी, वरूथिनी.

आ वृत्त मदारमरंदचम्पूमा छे

१२१८ ग्रावास्तरण.[1] म,भ,स,भ,म,भ,ग. १,९९,९२१ १०,९ यति.

मा भा सा भा म भ ग दशे ने, यति अन्ते ग्रावास्तरणे.

वाग्वल्लभमां आ नाम अने यति छे.

१२१९ समुद्रतता. ८,४,७ यति. ज,स,ज,स,त,भ,ग. २,१४,८७८

यति वसु युगे ज सा, ज स त भा, गे छे समुद्रतता.

वृत्तरत्नाकर तथा छंदोमजरीना परिशिष्टमां आ नाम तथा यति छे.

१२२० सुरसा[1]. ७,७,५, यति. म,र,भ,न,य,न,ग. २,३७,४५१

मा रा भा ना य ना गे, मुनि हय शर थी, थाय सुरसा.

१ वाग्वल्लभ, नागराजपिंगळ, छंदःकामदुघावत्स, प्राकृतपिंगळसूत्र अने छंदोमजरीमां ए नाम तथा यति छे.

१२२१ टङ्कण. ९,१० यति. र,न,र,न,र,न,ग. २,४१,३२९.

आणु टंकण विषे सदा, र न र ना र ना ग कवि! तुं.

वाग्वल्लभमां आ नाम तथा यति छे.

१२२२ धवल[1], धवलांग, धवला, शशि[2]. न,न,न,न,न,न,ग. २,६२,१४४

धवल पद सरस धर गण न न न न न न गा.

१ वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोवृत्तमुक्तावली, वाणीभूषण, आदिमां यति कही नथी २ ए नाम मागधी पिंगळछंदोग्रथमां छे.

१२२३ मणिमाल. (ग. प्र. प्र.) स,ज,ज,भ,र,स,ल. ३,७२,०७६

मणिमाल मांह स जा ज भा र स ला धरो कवि! आप.

१२२४ मुनि[1], मुनीश[2]. न,भ,न,स,न,स,ल. ३,९१,११२

मुनि विषे छेदो दश नव, न भा न स न स ल आणु.

१ पिंगळादर्शमां आ वृत्तमां १०,९ यति कही छे. २ ए नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

१२२५ प्रेम. ९.१० यति. स.स र,न,न.स,ल. ३,९२,८६०

स स रा न न सा ला थकी, नव दश यति कर प्रेम.

प्रेमानंद कविये द्रौपदीहरणनी समाप्तिमां पोताना नामनुं नवुं वृत्त बनावेलुं जणायछे, अने ते दूहाना रागथी गवायछे, वृत्तना पादमां दूहाना, अर्धे नियमो सचवायछे. जुवो पाछळ पृ ७५ अं ८.

१२२६ रसाला. भ,म,ज,भ,ज,ज,ल. ४,४९,९१९.

भा न ज भ ज ज ल छे रसाल शुभ छंद विषे पद.

१२२७ चन्द्रगन, चन्द्रमाला,[1] चंद्र[2], शशिसु,[3] चंदमालु.[4] न,न,न,ज,न,न,ल.९,२३,२६४

न न न ज न न ल चरण चन्द्रमन धर सरस.

१ चंद्रमालामां पिंगळादर्शमां ११,८ यति कही छे, पण प्राकृत पिंगळसूत्र, वाणीभूषण इत्यादिमां यति कही नथी, तेथी ते सर्वमान्य नथी

२ संस्कृत छंदोलतामां तेमज छंदोर्णवमां चंद्र नाम आपी २० मात्राना मात्रामेळमां दाखल कर्युं छे. पण छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आमां कहेला गणो वडे माप बतावेलुं होवाथी अमे तेने वर्णमेळमां दाखल करेल छे. वाणीभूषणमां चंद्र नाम आप्युं छे; तेमां यति कही नथी. ३ गणप्रस्तारप्रकाश. ४ चंदमालु नाम छंदसारमां छे.

१२२८ वसुमती. ज,ज,न,न,न,न,ल. ९,२४,२६९

ज जा न न ना न ल थकी कविवर! वसुमति रच.

आ वृत्त मागधी पिंगळछंदोमयमां छे.

२० कृतिछंद. १०,४८,५७६ भेद छे. २० वर्ण.

१२२९ चतुरानन. न,न,स,स,स,म,ग,ग. १४,०८०

न न स स स म ग ग थी चतुरानन जोडो शोधी पादे.

१२३० वाणीवाण. १०,१० यति[1]. म,भ,स,भ,न,य,ग,ग. ९२,४९६

वाणीवाणे रच म भ सा भा, त य गा गा दश छेदे आणी.

१ वाग्वल्गम

१२३१ भेकालोक. (वाग्वल्गम) भ,म,म,त,न,स,ग,ग. १,२९,०३१

तुं रच भेकालोके भा मा गा ता न स ग ग पद लवीने.

१२३२ विष्वगिवतान. त,भ,ज,न,त,त,ग,ग. १,९१,४१३

विष्वगिवतान रचजो पद त भ जा ना त ता गा ग आणी.

(वाग्वल्लभ)

१२३३ सुवंशा.[1] म,र.भ,न,त,त,ग,ग. १,९१,४४१

मा रा भा ना त ता गा ग कवि रसिया! आण सुवंश वृत्ते.

१ वृतरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका अने शब्दकल्पद्रुम.

१२३४ भूरिशोभा. म,म,न,न,त,त,ग,ग. १,९१,४८९

चक्रे साते साते, म म न न त त गा, गा थकी भूरिशोभा.

वाग्वल्लभमां ६,७,७ यति कही छे.

१२३५ शोभा. ६,७,७ यति. य,म,न,न,त,त,ग,ग. १,९१,४९०

छए साते साते, य म न न त त गा, गा थकी थाय शोभा.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र, तथा वाग्वल्लभ प्रमाणे यति छे. वर्ण २३ मा अंक १३११ मे आ नामनुं वृत्त पण छे.

१२३६ संलक्ष्यलीला. न,र,न,र,न,त,ग,ग. १,६१,२४०

न र न रा न ता ग ग थकी बने चरण संलक्ष्यलीला.

वाग्वल्लभ

१२३७ भारावतार, हारावतार[1]. न,त,ज,न,न,त,ग,ग. १,६३,६८८

पदनिषे आण न ता ज न न त त ग ग भारावतारे.

१ वाग्वल्लभ

१२३८ वीरविमान. भ,भ,भ,भ,भ,भ,ग,ग. २,२२,६९६

वीरविमान विषे रच भा भ भ भा भ भ गा गुरु आणी.

वाग्वल्लभ.

१२३९ मत्तेभविक्रीडित. स,भ,र,न,म,य,ल,ग. २,९८,६७६

जव छे छेद स भा र ना म य ल गा, मत्तेभविक्रीडिते.

मत्त=मातेलो+इभ=हाथी+विक्रीडित=तेमी क्रीडा–मातेल हाथीनी क्रीडा पेठे चोलाय माटे.

छंदोमंजरीना टिप्पणमां तथा शब्दकल्पद्रुममां आ वृत्तमा १३,७ यति कही छे.

१२४० अवन्ध्योपचार. य,य,य,य,य,य,ल,ग. २,९९,५९

अवन्ध्योपचारे य या या य या या ल गा आणजो पादमां.

१२४१ पंचचामर, नराय[1]. ज,र,ज,र,ज,र,ल,ग. ३,४९,९२

ज रा ज रा ज रा ल गा थी पंचचामरे नराय थायछे.

१ मागधी छंद-शतकमां ए नाम छे.

१२४२ उत्पलमालिका. भ,र,न,भ,भ,र,ल,ग. ३,९९,७९[1]

उत्पलमालिका भ र न, भ भ र ला ग थकी नवे शिवे.

१ मंदारमरदचम्पूमां ९,११ यति छे

१२४३ गीतिका[1], मुनिशेखर[2], शेखर, गीता, शर्वरी[3], गीतक[4]. स,ज,ज,भ,र,स,ल,ग, ३,७२,०७६

मुनिशेखरे रच गीतिका स ज जे भ रे स ल गे करी.

१ छंदोमंजरी, वाणीभूषण, प्राकृतपिंगळसूत्र, शब्दकल्पद्रुम, वाग्वल्लभ अने छंद-प्रभाकरमां गीतिकामां यति कही नथी. २ पिंगळादर्शमां आ वृत्तनुं गीतिका अने मुनिशेखर नाम आपी तेमां १०,१० यति कही छे, पण तेनुं बीजुं प्रमाण जडतुं नथी, बो लनां यति वपराय छे खरी. ३ ए नाम भगवतपिंगळमां छे, तेमा यति कही नथी, पण उदाहरणमां केटलांक पदोमां १०,१० यति पाळी छे. ४ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ. आ वृत्त हरिगीत जातिने रागे

गवायछे. तेम वळी छंदोवृत्तमुक्तावलिमां उपरना मापवाळा वृत्तने हरिगति नाम आप्युं छे, पण तेमां यति कही नथी.

१२४४ शशिधर. ९,११ यति[1]. भ,भ,र,स,स,स,ल,ग. ३,७४,४९९

अक शिवे यति भा भ रा स स सा ल ग थाय शशिधरे.

१ पिंगळादर्शमां ए यति कही छे.

१२४५ मालव[1]. र,ज,र,ज,र,ज,ल,ग. ४,३६,९०७

राजराजराजलाग थी रचो तमेज छंद मालव तो.

१ मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे.

१२४६ सुवदना[1], सर्ववदना[2].	}	म,र,भ,न,य,भ,ल,ग. ४,६६,८२२ ७,७,६ यति.

साते अश्वे छये छे, म र भ न य भ ला, गा थी सुवदना.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाग्वल्लभमां ए नाम अने यति छे. मंदारमरंदचम्पूमां पण एज यति छे. २ छंदोर्णवमां सर्ववदना नाम आपीने एज यति कही छे.

१२४७ मदकलनी. न,ज,न,भ,स,न,ल,ग. ९,०७,३७८

नजनभसा, नलग थकी, कर कवि! त. मदकलनी.

१२५० गंडका[1], गंडकी, गंडिका, गंजिका[2], इद्रश[3], माद्रश[3], दंडिका[4], वृत्त[5], चित्रवृत्त[6], रत्यका[7]. — र,ज,र,ज,र,ज,ग,ल. ६,९९,०५१

राजराजराज गाल गंडका न गंडकी विषे कराय.

१ गंडका नाम प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, अने वाणीभूषणमां छे, पण त्रणे ग्रंथोमां यति कही नथी. २ ए नाम भगवत्पिंगळमां छे, तेमां यति कही नथी. ३ ए बंने नामो वाग्वल्लभमां छे, पण तेमां यति नथी. ४ भाषा छंदोमंजरी. ५ छंदःशास्त्र अने छंदोमंजरी प्रमाणे वृत्त नाम छे, तेमां पादांते यति कही छे; शब्दकल्पद्रुममां ए नाम छे, पण तेमां यति नथी. ६ छंदोमंजरीमां गंडकानुं ए नाम छे, पण तेमां यति कही नथी. ७ गणप्रस्तार प्रकाशमां ए नाम अने १२, ८ यति छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीनी लिखित प्रतिमां आ मापनुं गंडक वृत्त लख्युं छे, ते नवुंज नाम होय के गंडकने बदले लिखित दोष पण होय.

१२५१ मधुकर, महूअर[1]. न,य,न,य,भ,भ.ग,ल. ७,४६,४४९

मधुकरमांहि नयनय भा भा गा ल कराय सदाय.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां ए नाम छे

१२५२ मनोभव. ६,६,८यति. स,स,स,स,स स,ल,ल. ८,९८,७८०

६ ६ ८
रस चक्र दिशा, यति सा स स सा, स स ला ल मनोभव.

पिंगळादर्शमां ६,६,६ यति कही छे, पण तेम करतां बे वर्ण वधे छे माटे अमे आठ मूकी छे.

२१ प्रकृतिछंद. २०,९७,१५२ भेद छे. २१ वर्ण.

१२५३ अशोकलोक, अशोकलोकालोक.   ४ मन+तरन+म.   ८१,९२१

चारे मा छे ता रा छे मा अन्ते आणो वृत्त अशोकलोके खोळी.

१२५४ मन्दाक्षमन्दर[1]. १०,११ यति. २न+२म+ज,र,म. ८६,०८०

द्वि न द्वि म पर छे जा रा मा, मन्दाक्षमन्दरे पदे आवेछे.

१ वाग्वल्लभमां आ यति तथा नाम छे.

१२५५ तल्पकतल्लज.   ५भ+जम.   १,९१,९२७

तल्पकतल्लज पांच भ ते पर आण ज म तुं ववे पादे.

गीतिने रागे गवायछे अने एमा तेनु वधु माप सचवायुं छे जुवो पृष्ट १११ अङ्क ७१

१२५६ अहि. (छंद प्रभाकर.)   ६भ+म. २,२४,६९५

भा छ करी धर मा चरमे चरणे अहि वृत्त विषे शोधी.

गीतिने रागे गवायछे.

१२५७ विद्युदाली. (वा. व.)   ७य.   २,९९,५९४

रचो विद्युदाली तमे सात या पाद आणी करी शोभता जे.

१२५८ स्रग्धरा, रूपकमाला[1], रूपामाला[२], रूवामाला[३], स्रग्धरा[४].   मर+भन+३य. ३,०२,९९३ ७,७,७ यतिः

मा रा पूठे भ ना छे, त्रण य हय हये, छेद छे स्रग्धरा मां.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र तथा मंदारमरंदचम्पूमां ए नाम तथा यति छे. २ मागधी छंदःशतक. ३ मागधीपिंगळछंदोग्रंथ.

४ गणप्रस्तारप्रकाश. राग हरिश्चंद्रिका, ताल चतुश्र पंचक, मात्रा ३३, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

१२५९ सारीसुन्दरी.[1] २स+भस+तन+जय. ४,४४,३१६.

द्वि स छे भ स छे ता पर ज य सारीसुन्दरीना पदमांहे.

१ त्रेवीश अक्षरमां अंक १२२३मे "सुंदरी" वृत्त छे, अने ते केटलांक पिंगळोमां छे, छतां २१ अक्षरमां पण तेज नाम छे, माटे फेर रहेवा सारी विशेषण मूकी सारीसुंदरी नाम राख्युं छे.

१२६० शुभता. ७,७,७यति[1]. मर+भन+जजय. ४,९०,४४९

मा रा पूठे भ ना छे, हय हय यति छे, ज ज या शुभतामां,

१ पिंगळादर्शमां ए यति कही छे.

१२६१ नरेन्द्र[1], समुचय[2]. { भर+२न+२ज+य. १४,७ यति. } ४,९०,९१९

भा र नरेन्द्रमां द्वि न द्वि ज पर य छे, यति चौद हये छे.

१ वाणीभूषण, प्राकृतपिंगळसूत्र, अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमां ए नाम छे, पण यति कही नथी. पिंगळादर्शमां नरिन्द्र नाम आपी तेमां १४,७ यति कही छे. २ भाषा छंदोमंजरीमां यति वगरनां एज मापना वृत्तने समुचय नाम आप्युं छे.

१२६२ दूरावलोक. { मर+भन+यरर. १४,७ यति[1]. } ९,९७,९०९

मा रा छे भा न छे या र र मनु हय वे, दूरावलोके यति.

१ धारवृत्तभमां ए यति छे.

१२६३ शरकांडप्रकांड. सरन+४र. ९,९९,९०८

शरकांडप्रकांड स र ना पछी चार छे रा गणो पादमां.

१२६४ कल्पमतल्लिका. (या य.) २नर+७. ९,१९,९९२

कलमतल्लिका त्रण नरा पछी र गण छेवटे थायछे.

१२६५ चम्पकमालिका[1], चम्पकावली. } नतस+३ज+र. ७,११,४००

नतस छे ने ज त्रण छे र छेवट चम्पकमालिका पदे.

१ वागूवल्लभमां आ बंने नाम आपी तेनुं माप नजभजजजर आप्युं छे अने ते ७,११,४०० मुं रूप छे एम जणाव्युं छे, पण एवा गणवाळुं रूप ७, ११, ६०० मुं थाय अने ते तो अंक १२६६ मे जूदुं आपवामां आव्युं छे एटले आ वृत्तमां गण लखवानी वागूवल्लभमां भूल थइ गइ छे.

१२६६ शशिवदना, सरसी[1], पंचकावली[2], सिंहक[3] सलिलनिधि[4], सिद्धक[5], सिद्धिका[6], सिद्धि, धृतश्री. } नजभ+३ज+र. ७,११,६००

शशिवदना नजाभ पर जा त्रण ते पर रा पदे करी.

१–२ ए बे नाम वागूवल्लभमां छे, छंदोमंजरी, अने छंदःप्रभाकरमां पण सरसी नाम आपी यति कही नथी. छंदोर्णव सरसीमां एकादश (११) वर्णे यति केहेछे. ३–४ सरसीने कोइ एवां नाम आपेछे, एम शब्दकल्पद्रुममां छे. पण तेमां यति कही नथी. ४ वृत्तरत्नाकरमां केहेछे के,—आनेज कोइ सिद्धक केहेछे. ५ प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीकामां सिद्धक नाम छे, पण तेमां यति नथी. ६ छंदोबोधमां कह्युं छे के कोइ एने सिद्धिका केहेछे.

१२६७ कनकमालिका. (वा. व.) ३रन+र. ७,६९,६२७

थायछे कनकमालिका त्रण र ना पछी र धरवा थकी.

१२६८ सुरनर्त्तकी[1]. ६,६,६,३यति. ३रन+र. ७,६९,६२७

लोक[३] रान पर, रा थकी रस[६]-छ, शास्त्र[६] छेद सुर,—नर्तकी.

१ मंदारमरदचम्पू प्रमाणे.

१२६९ प्रतिमा. ७स. ८,९८,७८०

रचजो प्रतिमा कवि! सात स सर्व-मळी पदमांह करी.

१२७० कलमशिखा. न य म+भ+३ स. ९,००,११२

कलमशिखा ना या मा आणी, भ पर तमे त्रण सा करजो.

अमारा अभिप्राय प्रमाणे १०, ११ यति आवेछे

१२७१ ललितललाम. न+२ ज+३ त+स ९,३६,२०४,

ललितललाम न थाय-बे जा पछी लोक[३] ता छे स चरमे.

१२७२ धर्म. भ स+न ज+न भ स. १०,१४,७९१.

भा स पर न जा धर न भ सा कवि! रच धर्म चरणमां.

१२७३ तडिद्म्बर, मदिरा[१]. ७ भ. १७,९७,९९९,

तुं तडिदम्बरमां रच भा गण सात बधा पदमां कवि!

१ छंदोर्णवमा केहेछे के, साधारण रीते आवा वृत्त सवैयानी सज्ञाथी ओळखायछे. ते नीचे प्रमाणे:—

क्रम.	अंक.	नाम.	माम.	वर्ण.
१	१२७३	तडिदम्बर, मदिरा.	७ भ	=२१,
२	१३९४	मदिरा, मदरा, मालिनी.	७ भ+ग	=२२
३.	१३११	मत्तगजेंद्र मत्तगयद, इन्द्रविजय, इन्दव, मधुमालतिका, शोभा, मदिरा, सवैया.	७भ+ग,ग	=२३
४	१३२५	मल्लिका, मानिनी, सुमुखी, कुंदसवैया, सवैया.	७ज+ल,ग.	=२१
५	१३३४	चकोर, चित्तपदा, ललिता, सवैया	७भ+ग,ल	=२३
६	१३३५	मजुल. १२,११ यति.	७भ+ग,ल	=२३
७	१३३९	महाभुजगप्रयात, भुजंग, सुधाप, मद-भुजगदेव, महानाग, सवैया.	८ यगण	=२४

८	१३४३	माधविका, कोक, माधवी, मकरंद, वाम, वाम, वामा, मंजरी, सवैया.	७ ज+य. =२४
९	१३५२	गंगोदक, वैकुंठधामा, जानकी, सजना, गंगाधर, लक्ष्मी, लच्छी, सवैया	८ रगण =२४
१०	१३५५	अरसात, मकरंद, अलगा.	७ भ+र =२४
११	१३५७	दुमिला, मंदिरा, द्विमिला, दुर्मिल, चंद्रकला, दोमलया, मुकुन्द, रूपमकरंद, घोटक, सवैया.	८ सगण =२४
१२	१३५८	दुर्लतिका, माधवी, दुर्मिला, दुर्मिलका, दुमेला.	८ सगण =२४ ८,६,१० यति.
१३	१३६२	आभार, सवैया.	८ तगण =२४
१४	१३६३	सुखदा, विष्णु, सुरेश्वर, कोकी, मुक्ताहरा, मुक्तहरा, माधवी, सवैया.	८ जगण =२४ १२,१२ यति.
१५	१३६४	मेदुरदन्त, किरीट, किरत, माधाविका, करिटी.	८ भगण =२४ १२,१२ यति.
१६	१३६९	मुदिर, मलि, सुमिला, कमला, माधवी, शमला, चंद्रकला, सुछंद, सुदरी, सुखदा, सुखदानि, सवैया.	८ सगण+ग=२५ १२,१३ यति.
१७	१४२३	वशवद, लीला, मागधी, कुन्दलता, सुख, सामन, सावन, अंबुज, किशोर, मालती, सवैया.	८ स+२ल =२६ १२,१४ यति.

२२ आकृतिछंद. ४१,९४,३०४ भेद छे. २२ वर्ण

१२७४ वासकलीला. भ,म,स+त,य+म,म+ग. २,०२,९९१

वासकलीला भा म स छे ता या उपर भा मा पर छे गा अन्ते.

१२७५ दंडिका[1]. य,य,य,य,य.य,य,ग. २,९०,५९४

त्यो दंडिका मात या आणिने ने पछीथी गुरु एक आवे छे.

1 चित्रसेन टीकावाळा मागधी पिंगळमा आ वृत्त छे. तेना तेथी नीचे प्रमाणे सात भेद पाड्या छे पण ते भेद दंडकना थायछे —

अंक.	संस्कृत नाम.	प्राकृत नाम.	माप.	वर्ण.
१४२५	उद्दर्प,	उद्दप्पो.	२न+७र=२७	

१४२६	विद्याधर,	विज्जाहर.	३न+६र=२७
१४२७	सज्जन,	साजण.	४न+५र=२७
१४२८	दुःखाकर,	दुखाकरो.	५न+४र=२७
१४२९	विरतिकल्प,	विरयकप्पो.	६न+३र=२७
१४३०	मतिकर,	मकर.	७न+२र=२७
१४३१	शुभंकर,	सुहंकर.	८न+ र=२७

१२७६ द्रुतमुख. ४ न+मर+यग. ३,३१,७७६

द्रुतमुख चरण चरण कर चारे, ना छे मरा पछी या गा.

अमारा अभिप्राय प्रमाणे १४, ८ यति आवेछे.

१२७७ भींमाभोग[1]. { म,त,त,म,म,र,र,ग. / ४,७,४,७, यति. } ९,९०,११३

चारे साते; चार साते विरामे, भीमाभोगे, मा त ता मा म रा गें.

१ शालिनीथी यमणो. आ वृत्त वाग्वल्लभमां छे

१२७८ वीरनीराजना. ४य+३र+ग. ९,९८,६०२

करो चार या लोक रा अन्तमां गा वीरनीराजना वृत्त मांहे.

१२७९ कङ्कणक्वाणवाणी. म+६र+ग. ९,९९,१८९

मा आणनि छ रा ने ग आणी रचो.युक्तिथी कंकणक्वाणवाणी.

१२८० सर्वगामी, } ७र+ग. ९,९९,१८७
केकनी. } १२,.१०, यति..

सर्वगामी विषे छेद सूर्ये दशे, रा गणो सात अन्ते ग आणों.

पिंगळादर्शमां १२,१० यति कही छे. केकनी गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.- वळी सर्वगामी नामनुं वृत्त २१ अक्षरमां अंक ११०९ मे छे.

१२८१ कंकणक्वाण. ७र+ग. ९,९९,१८७

कंकणक्वाणमां, आणवा रा गणो सात अन्ते ग पाडे थवे तो.

सर्वगामी अथवा केकनी करतां फेर एटलोज के, आमां यति पाळवानी नथी. आ बन्ने वृत्त, झूलणा जाति जे पृ.६४मे अंक१९०मे छे तेने अने प्रभातियाने रागे गवायछे.

१२८२ महास्रग्धरा. ८,७,७यति. स,ज,त,न,स,र,र,ग. ६,०९,९९६

वसु सात छेद साजा, तनसररगथी, छे महास्रग्धरा तो.

वृत्तरत्नाकरना टिप्पणमां आ वृत्त अने यति छे:

१२८३ मोद.-　　५भ+मस+ग. ८,१४,९१२

पांच भ थी मस थो ग थकी रच मोद रुडेरुं वृत्त भला तुं.

जुओ टीप अंक १३०४.

१२८४. अर्भकमाला.　　भतनत+नम+सग. ८,१७,६३९

अर्भकमाला भ त न त आणो न म पर सा गा पाद धरीने.

१२८५ भद्रानिस्तरण.-　　मसभ+नजर+सग. ८,७१,४४१

भद्रानिस्तरणे मा स भ पर न ज रा पछी स गा पद मांहे.

१२८६ हरितकी.　१४,८यति.　७स+ग. ८,९८,७८०

मनु आठ विराम हरितकी मांह स, सात पछी ग करेछे.

हरकीछंद मागधी छंदःशतकमां एज मापथी छे, पण ८, १६ आगे लावया केहेछे.-

१२८७ अयमान.-　　७स+ग. ८,९८,७८०

गण सात स आण पदे अयमान तणे चरमे ग करीने.-

१२८८ हंसी[१], रजतहंसी[२], हंस, साहंसी[३].-

८, १४ यति.　ममम+तन+नन+सग. १०,४८,३२१

अठि चौदे छेदो मा मा, तनपर न न धर स ग कर हंसी.

१ छंदोमंजरीमां ८,१४ यति-कही छे. वाणीभूषणमां ८, ६, ८ विराम छे. २ हंसी अने रजतहंसी ए नाम वाग्वल्लभमां आपी तेमां ८,१४ यति कही छे. ३ पिंगळाचार्यकृत छंदःशास्त्रमां

८ १४
हंसीनुं "साहंसी" नाम आप्युं छे अने तेना टिप्पणमां वसु भुवन यतिः एम कह्युं छे.

१२८९ मंदारमाला. ४,६,१२यति[1]. ७त+ग. ११,९८,३७२

चारे छए, बारथी ता गणो, सात अन्ते ग मंदारमाला विषे.

[1] वृत्तदर्पणमां ४,६,६,६यति केहेछे पण ते प्रमाणे यति करतां मंदारमाला ए नाम कोइ प्रकारे वृत्तमां बंध बेसतुं आवी शकतुं नथी, तेमज एवी चार यति करवानुं सबळ कारण जणातुं नथी; माटे अमे ४,६,१२ यति राखी छे. पण छंदःप्रभाकरमां तथा संगीतानुसार छंदोमंजरीमां यति कही नथी. तेथी यतिनो नियम नहि पळाय तो पण अयोग्य नथी. राग रतिचंद्रिका, ताल सत्यमेना, मात्रा ३७, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

१२९० भोगावली. तभर+सनन+जग. १९,७०,४८९

भोगावली रच ता भ रा पर सा न न प्रति पद ज गा धरी.

१२९१ स्वर्णाभर्ण. ४स+नय+भग. १६,३६,०६०

पद चार स छे न य आण पछी भ ग धर स्वर्णाभर्ण विषे.

१२९२ निष्कलकण्ठी. भ,म,स,त,य,म,भ,ग १६,३७,९११

पंदर साते छेद धर्याथी निष्कलकण्ठी, भ म सा त्या स भ गे.

१५, ७ यति वाग्वल्लभ प्रमाणे

१२९३ सवैया[1],मानिनी[2],ललिता[3],दिवा[4],मालिनी[5],सुंदर[6].

७भ+ग. १७,९७,९९९

सात भ ने गुरुथीज दिवा वळी मालिनी मानिनी ने ललिता.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमां सवैया नाम आपी तेमां यति कही नथी.

२ वाग्वल्लभमां मदिरा अने मानिनी नाम आपी तेमां यति कही नथी.

३ छंदोरत्तामां ललिता नाम आपी तेमां यति कही नथी. वळी

विशेष जणावेछे के, तेने केटलाक मदिरा पण केहेछे.

४ दिवा नाम छंदःप्रभाकरमां छे तेणे यति कही नथी अने आ साथेज उमा, मालिनी, मदिरा अने सवैया एकज गण्या छे. तेणे सात भगणने वे गुरुनो बीजो सवैयो, आठ नगणनो त्रीजो अने आठ सगणनो चोथो सवैयो कह्यो छे.

५ छंदःसारमां मालिनी नाम छे. ६ छंदरत्नावली,

१२९४ मदिरा[1], मदरा. { ७भ+ग. १७,९७,५९९ / १२,१० यति.

चार दशे यति छे मदिरा हेय, भा गण अन्त ग तो धरवे.

१. वृत्तरत्नाकरमां मदिरा नाम आपी तेमां यति कही नथी. वाग्वल्लभमां मदिरा ने मालिनी नाम आपी तेमां यति कही नथी. प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा शब्दकल्पद्रुममां मदिरा नाम आपी तेमां यति कही नथी. पिंगळादर्शमां १२, १० यति कही छे. मंदार-मरंदचंपूमां मदिरा नाम आपी तेमां यति कही नथी. गणप्रस्तार-प्रकाशमां मदरा नाम छे, मदिरा नामनुं वृत्त २३ वर्णमां अंक १३११मे छे. तेनुं बीजुं नाम शोभा अथवा इन्द्राविजय पण छे.

१२९५ उमा. ६,६,६,४यति. ७भ+ग. १७,९७,५९९

राग छए पड, चार उमा यति, भा गण सात ग, अन्त रचो.

वृत्तदर्पणमां उमा नाम आपी आ माप अने आ यति केहेछे. संगीतानुसार छंदोमंजरीमां उमा अथवा मदिरानुं एकज नाम आपी तेमां यति कही नथी. तेनो राग सिंधुरा, ताल दिव्यमणि, मात्रा ३०, विलंबकाळ छे.

१२९६ भुजंगोद्धत. तभ+रर+सर+नग. १९,१४,०१७

ता भा पछी र र छे भुजंगोद्धते स र छे ने न गा चरणमां

१२९७ सितस्तवक, }
परिस्तवक. } तभयज+सरनग. १९,१९,९०९

आवे सितस्तवक वृत्ते त भा य ज पछी सा र ना ग पदमां.

आ बंने नाम वाग्वल्लभमां छे. आज गणोवाळु अश्वधाटि वृत्त छे, परंतु तेमा कइ बंधन विशेष होवाथी अमे आ नीचे तेने जूदुं पाड्यु छे.

१२९८ अश्वधाटि. त,भ,य,ज,स,र,न,ग, १९,१९,९०९

ता भा य जा स्र न ग छे भाइ! वृत्त कविता अश्वधाटी रचवा.

अश्व एटले घोडो, ने धाटी एटले रूढी- चाल, घोडाने चालवानी रूढी. घोडो चालतां एक डाबलामां पछवाडेना पगनो डाबलो मूकेछे, एवो आधार गणीने अश्वधाटी वृत्त रचवामां प्रत्येक पादमां बीजो, नवमो, अने सोळमो अक्षर जे गुरु होयछे ते तेनो तेज आववो जोइये. एज प्रमाणे अमारी रचनामां बीजो भा छे, नवमो भा छे, ने सोळमो भा आणवो जोइये पण ते आवी शके एम नथी. अश्वनो अ दीर्घ छे तेथी आ गणवो. आ प्रमाणेज अश्वधाटी काव्य २६ वृत्तनुं जगन्नाथ पंडिते रच्युं छे. जुओ सुभाषितरत्नाकर पृष्ट ३१६ थी ३२० मे.

१२९९ मत्तेभ. ७,७,८यति. तभय+जसर+नग. १९,१९,९०९

मत्तेभ सात हय, आठे त भा य पर, जा सा र ने न ग करो,

आ वृत्त मंदारमरंदचंपूमां छे.

१३०० अमृतध्वनि. { त,भ,य,ज,स,र,न,ग. / ४,७,७,४ यति. } १९,१९,९०९

ता भा य जा, स र न गा चार ने, हय हये अमृतध्वनि बने.

१३०१ भद्रक[1], भद्रिक[2], प्रभद्रक[3], भद्रिका[4].

१०,१२ यति. भ+३रन+ग. १९,३०,७११

भद्रकमां भ छे त्रण र ना, ग अन्त दश बारथी यति करो.

१ वृत्तरत्नाकर, छंदःशास्त्र, छंदोलता अने पिंगळादर्शमां भद्रकं नाम आपी १०,१२ यति कही छे; छंद.प्रभाकरमां यति कही नथी.

२ भद्रिक, भद्रक ए बे नामो वाग्वल्लभमां आपी १०, १२ यति कही छे, पण तेमां चोथो गण र ने बदले स गण्यो छे, ए हिसाबे ते १९,२१,२२३मी वृत्ति थाय, तेने बदले १९,३०,६५१ मी लखी छे माटे एना मापमां पण भूल जणायछे; कारण के १९,३०,६५१ नी वृत्ति प्रमाणे तेनुं रूप र स भ र न र न ग एवुं थायछे.

३ मंदारमरंदचंपू. ४ भाषाछंदोमंजरी.

१३०२ लालित्य. मसर+सत+जन+ग. २०,१६,९२१

लालित्ये म स रा छे स ता पर जा ना ते परे गा कर चरमे.

१३०३ अचलविरति. (वाग्वल्लभ) ७न+ग. २०,९७,१५२

हॅय न गणपर ग धर कविवर! तुं अचलविरतिमां.

१३०४ मोदक,[1] मोद. (ग.प्र.प्र.) { ५भ+म+स+लः २९,११,६७१ }

मोदकमांह भ पांच पछी म स ने लघु लावो एक सदाय.

मोद नामनु वृत्त अंक १२८३ मे उपरना गणो साथे अंत्यं लघुने बदले गुरुवाळुं पण छे. १ भाषा छंदोमंजरीमां मोद सवैया एवुं नाम छे.

१३०५ हाटक. ७ स+ल. २९,९६,९३२

भट हाटकमां हॅय सा कर ला चरमे करजे कविराय!

चित्रसेननी टीकावाळा नागपिंगळमा हाटक नाम छे

मागधी पिंगळछदोग्रंथमा हाटका नाम छे तेमा लखेछे के —

यस्या प्रथम गुरु द्वय सा हाटकी अजया

यस्या प्रथम हस्त गण सा विजया

यस्या प्रथमं चरण गण. सा मगला

- यस्या प्रथमं विप्रगण सा रसमंगला.
शेषे पूर्वोक्ता एव.
एनो अर्थ नीचे प्रमाणे.—

१ अजया तेमां पेहेलं कर्ण(ऽऽ) गण बाकी उपर प्रमाणे.
२ विजया तेमां पेहेले (हस्त) सगण बाकी उपर प्रमाणे.
३ मंगला तेमां पेहेले (चरण) भगण बाकी उपर प्रमाणे.
४ रसमंगला तेमां पेहेले विप्र गण (।।।।) बाकी उपर प्रमाणे.

जो प्रतिपदनी २९ मात्रा कायम राखिये अने सूचव्या प्रमाणे प्रारंभमां वधारो घटाडो करिये तो नीचे प्रमाणे रूप थायछे:—

अजया- २ ग+६ स+ल=२१ वर्ण तेनी मात्रा २९. रूप १४,९७,९६५ मु.
विजया एक सगण वधारीने तेने बदले एकसगण घटाडतां ७स+ल=हाटका
मंगला- भ+६स+ल=२२ वर्ण=२९ मात्रा. रूप २९,९५,९३५ मु.
रसमंगला- न+ल+६स+ल=२३ वर्ण, २९ मात्रा. रूप ५९,९१,८७२ मु.

जो उपर प्रमाणे करिये छिये तो अजयामां एक वर्ण घटेछे. विजयानु रूप तो मूळ हाटका प्रमाणेज, थइ जायछे. मंगलामा मात्र २२ वर्ण कायम रेहेछे, रसमंगलामां २३ वर्ण थइ जायछे, पण सर्वेमां मात्रा तो २९ कायम रेहेछे.

हवे जो "शेषे पूर्वोक्ता एव" एटले, "बाकीनु पूर्वे कह्यां प्रमाणे," तेनो अर्थ एवो करिये के, हाटकानु रूप जे ७स+ल छे ते कायम राखीने प्रत्येक भेदना प्रारभमा सूचव्या प्रमाणे उमेरो करिये तो नीचे प्रमाणे रूप थाय:—

अजया- २ ग+७स+ल=२४ वर्ण. १,१९,८३,७२५. मुं-रूप
विजया- स+७स+ल=२५ वर्ण. अंक. १३८९ मे अरविंदमुखी छे.
मंगला- भ+७स+ल=२५ वर्ण. ३,३९,६७,४५५ मु रूप.
रसमंगला- ४ ल+७स+ल=२६ वर्ण ४,७९,३४,९१२ मु रूप.

आ रीते, "शेषे पूर्वोक्ता एव" एवा लखाण उपरथी बने प्रकारे रचना थइ शकेछे.

१३०६ वनवासिनी. $\left\{\begin{array}{l}\text{सज+जभ+रन+सल.}\\ \text{१०,१२ यति.}\end{array}\right\}$ ३१,२४,९८८

वनवासिनी सज छे जभा, रन छे स ला ... ११

वायुवल्लभ प्रमाणे

२३ विकृतिछंद. ८३,८८,६०८ भेद. २३ वर्ण.

१३०७ इच्छा. ७म+२ग. १

त्रेवीशे वाजी वर्णो ओपेछे माताजीने नामे इच्छा वृत्ते तो सारा.

अमारां माताजीना नामनु नवु वृत्त छे

१३०८ परिधानीय. नन+भत+जय+स+गग. ८,४२,१७६

नन पर भत छे जय पूठे स पछी धर गा गा परिधानीये.

१३०९ सर्वगामी. ७त+२गः ११,९८,३७३

ता सात आणी धरो गा ग अन्ते वने एम तो वृत्त आ सर्वगामी.

गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे सर्वगामी वृत्त, वर्ण २२मा अंक १२८० में छे तेथी आ माप भिन्न छे.

१३१० विलासवास, सुभाग, विलास. } भस+भभ+सज+भगग. १७,९२,४७९

भास पर भभा छे सज ते पर भ गगा विलासवास-सुभागे.

आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमा छे

१३११ मत्तगजेन्द्र[1], मत्तगयंद[2], मालती[2], इन्द्रविजय, इन्दव[3], मधुमालतिका[4], शोभा[5], सवैया[6].

१२, ११ यति. ७भ+२ग. १७,९७,५९९

बार शिवे (११) यति भा हय (७) अन्त ग,-वे पद मत्तगजेन्द्र-सवैया.

१ वाग्वल्लभमां आ नाम छे, अने तेणे यति कही नथी

२ मत्तगयंदमा सात भगण+२ गुरु आवेछे, अने तेनेज मालती केटलेक, एम छंदप्रभाकरमा कह्यु छे ३ छंदरत्नावली तथा गणप्रस्तार-प्रकाशमा इन्दव नाम छे तेमां यति कही नथी ४ वृत्तदीपिकामा आ नाम छे, तेमा यति कही नथी ५ शोभा अने इंद्रविजय नाम पिंगळादर्शमा आपी तेमा १२, ११ यति कही छे अने ते बोलता ठीक पडेछे माटे अमे स्वीकारी छे हार्थीनो कान फरेछे ते प्रमाणे गावानी ढब

यदा प्रथम विप्रगण सा रसमगला
शेषे पूर्वोक्तो एव
एनो अर्थ नीचे प्रमाणे –

१ अजया तेमां पेहेले कर्ण(SS) गण बाकी उपर प्रमाणे
२ विजया तेमां पेहेल (हस्त) सगण बाकी उपर प्रमाणे
३ मगला तेमां पेहेले (चरण) भगण बाकी उपर प्रमाणे
४ रसमंगला तेमां पेहेले विप्र गण (IIII) बाकी उपर प्रमाणे

जो प्रतिपदनी २९ मात्रा कायम राखिये अने सूचव्या प्रमाणे प्रारभमा वधारो घटाडो करिये तो नीचे प्रमाणे रूप थायछे —

अजया- २ ग+६ रा+ल=२१ वर्ण तेनी मात्रा २९. रूप १४,९७,९६७ मु
विजया एक सगण वधारीने तेने बदले एक सगण घटाडता ७रा+ल=हाटका
मगला भ+६रा+ल=२२ वर्ण=२९ मात्रा रूप २९,९५,९३५ मु
रसमगला न+ल+६रा+ल=२३ वर्ण, २९ मात्रा रूप ५९,९१,८७२ मु

जो उपर प्रमाणे करिये छिये तो अजयामा एक वर्ण घटेछे विजयानु रूप तो मूळ हाटका प्रमाणेज थइ जायछे मगलामा मात्र २२ वर्ण कायम रेहेछे, रसमगलामा २३ वर्ण थइ जायछे, पण सर्वेमा मात्रा तो २९ कायम रेहेछे

हवे जो "शेषे पूर्वोक्तो एव" एटले "बाकीनु पूर्वे कह्या प्रमाणे," तेनो अर्थ एवो करिये के, हाटकानु रूप जे ७स+ल छे ते कायम राखीने प्रत्येक भेदना प्रारभमा सूचव्या प्रमाणे उमेरो करिये तो नीचे प्रमाणे रूप थाय —

अजया २ ग+७स+ल=२४ वर्ण १,१९,८३,७२५ मु रूप
विजया स+७स+ल=२५ वर्ण अक १३८९ मे अरविंदमुखा छे
मगला भ+७स+ल=२५ वर्ण २,३९,६७,४५५ मु रूप
रसमगला ४ ल+७स+ल=२६ वर्ण ४,७९,३४,९१२ मु रूप

आ राते, "शेषं पूर्वोक्ता एव" एवा लक्षण उपरथी बने प्रकारे रचना थइ शकेछे

१३०६ वनवासिनी. $\left\{\begin{matrix}\text{सज+जभ+रन+सळ} \\ \text{१०,१२ यति.}\end{matrix}\right\}$ ३१,३४,९८८

वनवासिनी सज छे जभा, रन छे स ला विरति दश सूर्य.
वाग्वल्लभ प्रमाणे

२३ विकृतिछंद. ८३,८८,६०८भेद. २३वर्ण.

१३०७ इच्छा. ७म+२ग. १

त्रेवीशे वाजी वर्णो ओपेछे माताजीने नामे इच्छा वृत्त तो सारां.

अमारा माताजीना नामनुं नवुं वृत्त छे.

१३०८ परिधानीयः नन+भत+जय+स+गग. ८,४२,१७६

नन पर भत छे जय पूठे स पछी धर गा गा परिधानीये.

१३०९ सर्वगामी. ७त+२ग: ११,९८,३७३

ता सात आणी धरो गा ग अन्ते बने एम तो वृत्त आ सर्वगामी.

गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे. सर्वगामी वृत्त, वर्ण २२मां अंक १२८० मे छे तेथी आ माप भिन्न छे.

१३१० विलासवास, सुभाग,विलास. } भस+भभ+सज+भगगे. १७,५२,४७९

भास पर भभा छे सज ते पर भ ग गा विलासवास-सुभागे.

आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमां छे

१३११ मत्तगजेन्द्र[१], मत्तगयंद[२], मालती[२], इन्द्रविजय, इन्दव[३],मधुमालतिका[४],शोभा[५],सवैया[६].

१२, ११ यति. ७भ+२ग. १७,९७,५९९

बार शिवे यति भा हय अन्त ग,-बे पद मत्तगजेन्द्र-सवैया.

१ वाग्वल्लभमां आ नाम छे, अने तेणे यति कही नथी.

२ मत्तगयंदमां सात भगण+२ गुरु आवेछे, अने तेनेज मालती केहेछे, एम छंदःप्रभाकरमां कह्यु छे. ३ छंदरत्नावली तथा गणप्रस्तार-प्रकाशमां इन्दव नाम छे तेमां यति कही नथी. ४ वृत्तदीपिकामां आ नाम छे, तेमां यति कही नथी. ५ शोभा अने इंद्रविजय नाम पिंगळादर्शमां आपी तेमां १२, ११ यति कही छे अने ते बोलतां ठीक पडेछे माटे अमे स्वीकारी छे. हाथीनो चाल फरेछे ते प्रमाणे गावानी ढब

छे. वीश अक्षरमां शोभा नाम छे जुओ अंक १२३५मे

६ सवैयामां लखपतजशसिंधुप्रमाणे १६,१५ यतिथी ३१ मात्रा-११ वर्ण तेमां अंते ल अथवा ग. वळी मुनिनायकनु मत पण ए छे के बे गुरु अथवा ल ग आवे मदिरा, शोभा, अथवा इन्द्रविजे ए नाम संगीतानुसार छंदोमजरीमां छे, पण तेमा तेणे यति कही नथी वळी मदिरा नाम २२ वर्णमा (७भ+ग) आव्यु छे, एटले अहिं मात्र नथी. राग खमाच, ताल चतुश्रजाति तेताल, मात्रा १६, मध्यकाळ

१३१२ मन्थरायन, मन्थर. नर+२न+३भ+गग. १७,९८,१०४

नर पछी नबे त्रण भ चरण छे चरमे गग मंथरमाहे.

आ बन्ने नाम घाएवल्लभमा छे.

१३१३ मदिरा[1], सवाइ[2]. { ६,६,६,५ यति. १८,१६,९४१ / ४भ+रन+भ+२ग.

चार भ ने रन, दे भ पछी द्वि ग, छे सवाइ छछ, छो मदिरामां.

१ मराठी वृत्तदर्पणमां आ नाम तथा यति आप्यां छे पण जुओ वर्ण २२मां अंक १२७३मे मदिरा नाम छे

२ संगीतानुसार छंदोमजरीमां मदिरा किंवा सवाइ नाम आपी तेमां आ गण लख्या छे, पण यति कही नथी राग स्वरदरप्रिया, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६, मध्यकाळ

१३१४ पुलकांचित. भस+नय+२न+भ+२ग. १८,२१,९०१

भास पर नया धर द्वि न छे भा पर द्वि ग पुलकांचित पदे.

१३१५ इन्द्रविमान. भत+नम+भ+२न+२ग. २०,८९,४४७

इन्द्रविमाने भत पर नामा छे भा पर द्वि न द्वि ग पद अन्ते.

१३१६ वर्णवाघेश्वरी[1], { ७य+लग. २१,९६,७४६
वागेश्वरी[2]. { १२,१२ यति.

रची वर्णवाघेश्वरी सार रुद्रे, धरी या गणो सात लागा पदे.

१ पिंगळादर्शमां वारनवाघेश्वरी(अशुद्ध)नाम आपी तेमां १२ ११

यति कही छे. २ गणप्रस्तारप्रकाशमां वागीश्वरी नाम पण अशुद्ध छे.

१३१७ विपुलायित. मन+जभ+नज+रलग. २८,१७,४०१

माना दे ज भ पर ना ज आण् र ल ग विपुलायिते नवे पदे.

१३१८ कालिका[1], कालका[2]. { ३रन+रलग. २८,६२,७७९ / १२, ११ यति.

बार रुद्र[११] यति आण् रा न त्रण, ते पछी र ल ग कालिका पदे.

१ पिंगळादर्शमां कालिका नाम आपी तेमां १२, ११ यति कही छे.
२ गणप्रस्तारप्रकाशमां आ नाम छे ते कालिकानो अपभ्रंश छे.

१३१९ पारावारान्तस्थ[1], पारावारान्त[2]. } ३म+सम+सत+लग. ३२,७०,१४९

पारावारान्तस्थे छे मा तो त्रण साभा पर सत अन्ते लाग करो.

१३२० रामावद्ध. { म,भ,स,भ,त,न,त,ल,ग. ३३,९४,८०१ / १०,४,९यति.

रामावद्धे रच म भ स भा भा, त न ता ला, ग दश[१०] युगे[४] खंड[९] यति.

१३२१ विलम्बललित, विल. ३जस+ज+लग. ३९,२८,९४२

विलम्बललिते रचो त्रण जसा पछी ज पर लाग अन्त करो.

१३२२ वसुरत्न[1], वसुरयण[2]. ६भ+तज+लग. ३९,६७,०३१

आ वसुरत्न विषे धर् पांच भ ते पर ता जा पर लाग पदे.

१ चित्रसेन टीकावाळा नागपिंगळमां छे. २ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां छे.

१३२३ सुंदरिका[1], सुंदरी[2], सुंदरिया, सुंदर[3]. } २स+भस+त+२ज+लग. ३९,९०,०४४.

धर् बे स पछी भास कर् त ने बे जा पर छे ल ग सुंदरिका.

१ प्राकृत पिंगळसूत्र, वाणीभूषण, शब्दकल्पद्रुम एकेयमां यति कही नथी. छंदोलता अने छंदःकामधुघावृत्तमां ७,६,१० यति कही छे.

२ सुंदरीवृत्तमां ७,६,१० वर्णे यति पिंगळादर्शमां कही छे. पण प्राकृ-

त पिंगलसूत्र, वाणीभूषण, छंदोमंजरी, छंदोर्णव तथा छंद प्रभाकरमा यति कही नथी, पण बोलता पळायछे ३ सुंदर-गणप्रस्तारप्रकाशमा छे

१३२४ डम्बलया. त+६ज+लग. ३९,९९,०१७

ता उपर जा छ करी लग छेवट पाद धरी रच डम्बलया.

मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा एनु चरण ३२ मात्रानु कह्यी ते वृत्तना पि डमा ३६ गुरु ५६ लघु अने ९२ वर्ण तथा १२८ सर्व मात्रा थही छे, ते आ मापने मळ्तु छे

आमा एक कर्ण (SS) गण उपर ६ सगण थायछे.

१३२५ मल्लिका[1], मानिनी[2], सुमुखी[3], सवैया[4], कुंदसवैया. } ७ज+लग. ३९,९९,११८

ज सात धरी लग अन्त करी मल्लिका-सुमुखी रच कुंद कवि!

१ छंद प्रभाकर, तेमा यति कही नथी पिंगळादर्शमां मल्लिका नाम छे.

२ छंद प्रभाकर, छंदोर्णव, छंदसार एमां यति कही नथी अंक ३२१ मे ८ वर्णनु मल्लिका नामनुं वृत्त जुदुं छे ३ छंदोबोध, छंद प्रभाकर.

४ छंदोर्णव

१३२६ विराजित[1], श्रवणाभरण[2], समाइ.[3] { न+६ज+लग ३९,९९,१२०

न गण पछी छ ज ने लग आण विराजित ने श्रवणाभरणे.

१-२ वाग्वल्लभ. ३ संगीतानुसार छंदोमंजरी, राग जारपुरंजी, ताल चंद्रकान्ता, मात्रा १०, मध्यकाळ रामकृष्ण कविकृत भगवती पद पुष्पां जली नामे स्तोत्र अने शंकराचार्य कृत यमुनाष्टक आ वृत्तमां छे ते जुद जुदा रागमां गवायछे वृत्तदर्पणमां ७, ६, ६, ८ यति कहेछे ते प्रमाणे यमुनाष्टकमां घणेखरो नियम सचवायो छे

१३२७ सुधालहरी. न+६ज+लग. ३९,९९,१२०

न पर छ जा पर अन्त लगा, हर शाख छये, न सुधालहरी.
११ ६

मदारमरंदचंपूमां ११,६,६ यति छे

१३२८ अद्रितनया. नज+२भज+भलग. ३८,६१,४२४

नज पर बे भजा धर पछी भलाग कर पाद अद्रितनया.

प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, अने शब्दकल्पद्रुममां यति कही नथी, तेमा जणाव्युं छे के, आनेज बीजा अश्वललित नाम आपेछे. परंतु वाणीभूषणमां यति न मानीने अश्वललितथी आ वृत्त जुदुं मान्युं छे. वाग्वल्लभमां यति कही नथी अने अद्रितनया तथा अश्वललित एम बे नाम एकठां आप्यां छे.

१३२९ अश्वललित[1], ललित[2]. { नज+२भज+भलग. ३८,६१,४२४ ११, १२ यति.

नज पर बे भजा धर पछी, भलाग शिव सूर्य अश्वललिते.

१ वृत्तरत्नाकर, छंदःशास्त्र, अने मंदारमरंदचंपूमां अश्वललितना न,ज,भ,ज,स,ज,न,ल,ग गण आप्या छे. परतु ते प्रमाण ग्रंथोथी विरुद्ध होतां तेमा भूल थयेली जणायछे, छंदोलतामां न ज भ ज भ ल ग एवु माप छे तेमा पण भूल थइ छे

२ पिंगळादर्शमां अद्रितनया के अश्वललित एके नाम न आपतां एकलु ललित नाम आपी तेमा ११, १२ यति कही छे अगियार अक्षरमां पृष्ट २९० अंक ५९७ मे ललित नामनु प्रसिद्ध वृत्त जुदु छे.

१३३० मत्ताक्रीड[1], मत्ताक्रीडा[2],वाजिवाहन[3] { २म,त,४न,लग.४१,९४,०४९ ८, १५ यति.

मत्ताक्रीडे बे मा छे ता, चतुर न पर लग वसु तिथि यति छे.

१ मत्ताक्रीड नाम आपी छदःशास्त्र, छंदोमंजरी, अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा ८, १५ यति कही छे. परतु छंदोलता, छंदोबोध, प्राकृत पिंगळसूत्र, शब्दकल्पद्रुम, संस्कृत ग्रोसरी अने पिंगळादर्शमां ८ तथा १५ ने बदले ५, १० यति कही छे, ते मूळनो अर्थ खोटो समजाथी भूल करी जणायछे, एवो स्पष्ट लेख वृत्तरत्नाकरनी टीप पृष्ट ५४ मे पण आप्यो छे.

२ छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी अने आ नाम आप्यु छे.

३ नारायणभट्टी प्रमाणे आ नाम छे.

१३३१ अमरचमरी. ७न+लग. ४१,९४,३०४

हय नगणपर लग थकी पद रच कवि! अमरचमरी.

१३३२ केकिनीशारदा. १२,११यति. ७र+गल. ४७,९३,४९

बार रुद्रे यति सात रा अन्तमां, गाल छे केकिनीशारदा पाद.

१३३३ संभृतशरधि. २भनय+स+गल. ५०,४९,३७०

संभृतशरधि विषे बे भानय पर स तथा गाल पदे अन्त.

१३३४ चकोर[1], चित्तपदा[2], सवैया, ललिता[3]. ७भ+गल. ५९,९१,८६३

भा गण सात तथा गलथी रच चित्तपदा–ललिता च चकोर.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता, वृत्तदीपिका. ३ छंदोलता.

१३३५ मंजुल. ७भ+गल. ५९,९८,८६३

१२,११ अक्षरे एटले १६ ने १९ मात्राए यति.

सात भ ने गल अन्त धरी रवि, रुद्र यति कर मंजुल पाद.

१३३६ सभा. १२,११यति. ७स+लल. ७१,९९,२३६

रवि रुद्र परे यति बे हय सा, गण अन्त ललाथी सभा पद.

---

२४ संस्कृति छंद.

१,६७,७७,२१६ भेद छे. २४ वर्ण.

१३३७ वंशलोन्नता. रजर+२म+ज+र+म. ६,८८,२९९.

वंशलोन्नता विषे र जा रा ने बे मा छे जा पछी र थाय अन्ते मा छे.

१३३८ धौरेय,मानविम्ब.२भ+२स+२न+स+म.१०,४६,२६२

बे भ परे द्वि स पर बे न करी स पर म चरण करो धौरेये.

१३३९ देव[1], महाभुजङ्गप्रयात, महाभुजङ्ग[2], भुजङ्ग[2], सुधाप[2], महानाग[3], सवैया. — ८ य. २२,९६,७४६

करो आठ या देवमां बार छेदे, भुजंगे-महानाग पादे सवैये-

१ पिंगळादर्शमा आनु देव अथवा महाभुजगप्रयात नाम आपी ११, १२ यति कही छे

२ महाभुजग, भुजंग अने सुधाप ए त्रणे नाम वाग्वल्लभमां छे काव्य-सुधाकर अने छंदोर्णवमा एने भुजग कहेछे

३ गणप्रस्तारप्रकाशमा महानाग नाम छे

१३४० झूलना. १२,१२ यति. ७स+य. २९,९१,९३२

कर सात स नी पर या चरमे, यति बार परे झूलना पदे तुं.

गणप्रस्तारप्रकाशमाथी.

१३४१ भासमानबिम्ब, भासमान. — रज+भस+जभ+सय. ३१,०२,६३९

भासमानबिंबमां रज पर भास छे जभा पर सय भासमाने-

आ बन्ने नाम वाग्वल्लभमा छे.

१३४२ धूवा- स+रज+भर+स ज+य. ३९,१७,८०४

स पछी ज बे कर भा र ने स ज आण ते पर या धरी रच धूवा-

चित्रसेनटीकावाळु मागधीपिंगळ

१३४३ माधविका[1], कोक, सवैया, माधवी, मकरंद[2], वाम[3], वाम[4], वामा[5], मंजरी[6]. — ७ज+य. ३९,९९,११८

ज सात पछी य पदे धरी मंजरी माधविका रच कोक सवैया.

१ छंदोबोधमां आ नाम छे, ते जणावे छे के भाषामां आनु नाम वामा छे २, ३ आ बन्ने नाम भाषा छंदोमंजरीमां छे

४ आ वामनु अपभ्रंश रूप गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

५ छंदोबोध ६ काव्यसुधाकर अने शब्दकल्पद्रुममां आ नाम छे

१३४४ समाहित. न+६ज+य. ३९,९९,१२०

न पर छ जा धर ते पर या कर ने रच पाद समाहित केरा.

१३४५ विगाहितगेह, गाहितगेह,गाहितदेह.

३न+य+म न+जय. ३१,३८,२७२

त्रण न पर य धर म न आणी जा या जोड़ पद विगाहितगेहे.

आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमां छे.

१३४६ अधीरकरीर. म+२न+भस+नज+य. ३९,९२,११३

मा ने बे न पर भ स करी न ज पर या चरण अधीरकरीरे.

१३४७ तन्वी[1], भत+न+सभ+भ+नय. ४१,९९,३९३
तन्वीस[2]. ५,७,१२ यति.

भा त पछी ना, कर स भ पर भा, ना य थकी शर हय रवि तन्वी.

[1] वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, अने प्राकृतपिंगळसूत्र, इत्यादिमां आ नाम अने यति छे. [2] गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

१३४८ अर्दित, नर्दित. ६भ+न+ग. ४१,९६,८९९

अर्दित नर्दित मांह छ भा गण, ते पर ना पर य गण धरोजी.

अमारा अभिप्राय प्रमाणे १२,१२ यति आवेछे.

१३४९ पार्पतसरण. भन+य+म+३न+य. ४१,९०,३३९

पार्पतसरण पदे भाना छे या पर म पर त्रि न पर य अन्ते.

१३५० कोकपद. भम+सभ+३न+य. ४१,९३,४७९

कोकपदे भामा पर सा भा उपर त्रण न पर य गण करोजी.

१३५१ वैकुंठधामा. ८र. १२,१२, यति. ४७,९३,४९१

बार ने बार छेदो अने आठ रा, आणजो आप वैकुंठधामा पदे.

१३५२ स्वैरिणीक्रीडन, गंगोदक, जानकी, खंजना, गंगाधर, लक्ष्मी, लच्छी, मंयया. ८ र. ४७,९३,४९१.

स्वैरिणीक्रीडने आठ रा आणजो पाद पादे तमे शोभता जोइने.

१ मंदारमरदंचपूमां आ वृत्त छे, छठ्ठे अक्षरे यति लइ ठीक बोलायछे.
२ वाग्वल्लभमां यति कही नथी. भाषाछंदोमंजरीमां पण तेज प्रमाणे छे.
३ छंदोलता. ४ गणप्रस्तारप्रकाश. ५,६ छंदःप्रभाकरमां छे, पण तेमां यति कही नथी.

१३५३ उत्कटपाट्टिका. तज+रज+नस+रर. ४८,४८,३०१

छे उत्कटपाट्टिका पदे त जा पर र ज पर ना सा पछी रार छे.

वाग्वल्लभ प्रमाणे.

१३५४ विपक. १६,८ यति. ४ जर. ९९,९२,६०६

विपक पाद सोळ आठ एम बे विराम ने, रचाय चार जारथी.

चित्रसेनटीकावाळा मागधीपिंगळमांथी.

१३५५ अरसात[1], मकरंद[2], अलसा[3]. ७भ+र. ९९,९१,८६३

सात भ आण र अन्त पदे अलसा-मकरंद अने अरसातमां.

१ छंदोर्णवमा सवैया प्रकरणमा आ तथा अलसा नाम छे. २ गणप्रस्तारप्रकाश. ३ काव्यसुधाकर.

१३५६ शम्बर. { न+भभ+रन+भभ+र. ६,६,६,६, यति } ९९,९३,९१२

छछछ छो यति, ना पर छे भभा, पर रना भ भ, रा पछी शम्बर.

द्रुतविलंबित (पृष्ट ३११ अंक ७३७मे) न+२भ+र=१२ वर्णनाथी बमणु.

१३५७ { द्रुमिला, मदिरा, द्विमिला[1], दुर्मिल[2], चंद्रकला[3], दोमलया, सवैया, मुकुन्द, रूपमकरंद, घोटक[4]. } ८स. ७१,९०,२३६

द्रुमिला-मदिरा-द्विमिला रचजो सगणो कुळ आठ विचार करी.

१ वाग्वल्लभ, २ छंदोमंजरीनु परिशिष्ट, भाषाछंदोमंजरी ३ भाषाछंदोमंजरी ४ मंदारमरदंचपू

१३५८ { दुर्लतिका[1], माधवी[2], दुर्मिला[3], दुर्मिलका[4], दुमेला[5]. } ८स. ७१,९०,२३६ ८,६,१० यति.

वसु ने छ दशे यति, दुर्लतिका वर्णी, माधवामां वसु सा पद छे.

१,२ दुर्लतिका नाम अने ८,६,१० वर्णे यति छंदोबोधमां छे. भाषामां एने माधवी कहेछे.

३ प्राकृत पिंगळसूत्रमां दुर्मिला नाम आपी तेमां १०,८,१४ मात्राए एटले ८,६,१० वर्णे यति कही छे, ते एकनुं एकज छे.

४ दुर्मिलका नाम वृत्तदीपिकामां आपी ८,६,१० वर्णे यति कही छे; वाणीभूषणमां दुर्मिलका, दुर्मिला नाम आपी तेमां यति कही नथी.

५ दुर्मिला, दुमेला नाम पिंगळादर्शमां आपी १२,१२ यति कही छे. बोलवामां पण ते ठीक छे.

१३५९ नेहपाळ. १२,१२ यति. मतर+सतर+जभ+स. ८०,४६,३४१

बारे बारे नेहपाळ मा त र छे, साता पर जाभ छे स चरममां

पिंगळादर्शमां १२,१२ यति कही छे.

१३६० वेश्याप्रीति. मभ+यम+नभ+नस. ८३,९१,८९७

आठे आठे त्रण यति, छे वेश्याप्रीति म भ ने, य म पर नभ नसा.

मंदारमरंदचंपूमां आ वृत्तमां ८,८,८ यति कही छे.

१३६१ वेल्लितवेल. ३भ+मस+नन+स. ८३,६८,९७७

वेल्लितवेल विषे त्रण भा ने मा स पछी न न चरम स रचजो.

वाग्वल्लभ.

१३६१ (अ.) अतुलपुलक. ७न+स. ८३,८८,६०८

अतुलपुलक कविवर! रच हय न गणपर सर्वा चरणे.

आ वृत्त वाग्वल्लभ प्रमाणे छे.

१३६२ आभार[१], सवैया. ८त. ९९,८६,९८१

आणो तमे आठ ता पाद पादे गणी नाम पाडी सवैया च आभार.

१ छंदोर्णव तथा काव्यसुधाकर अने छंद प्रभाकर

१३६३ सुखदा[१], विष्णु, सुरेश्वर, कोकी, मुक्ताहरा[२], मुक्तहरा[३], सवैया, माधवी[४]. ८ज. १,१९,८३,७२६ १२,१२यति.

रचो सुखदा रविये (१२) यति कोकी, सुरेश्वर आठ ज माधवी विष्णु.

१ पिंगळादर्शमां सुखदा नाम आपी १२,१२यति कही छे.

२ छंदोर्णव. ३ छंद प्रभाकर. ४ गणप्रस्तारप्रकाश.

१३६४ मेदुरदन्त[१], किरीट[२], किरत[३], माधविका, करीटी[४]. ८भ. १,४३,८०,४७१ १२,१२ यति.

मेदुरदन्त–किरीट विषे रवि (१२), छेद धरी रच आठ भ पादज.

१ वाग्वल्लभमां यति कही नथी २ वाणीभूषण, छंदप्रभाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाग्वल्लभमां आ नाम छे पण एकेयमां यति कही नथी.

३ छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आने त्रीजा प्रकारनो सवैयो कह्यो छे, पिंगळादर्शमां किरीट अने कीरत नाम आपी १२,१२ यति कही छे

४ करीटी गणप्रस्तारप्रकाशमां छे

२५ अतिकृति अथवा अभिकृति छंद.

३,३५,५४,४३२ भेद छे. २५ वर्ण.

१३६५ शंभु. चच्चारे यति. ८म+ग. १

शंभुवृत्ते,पादे पादे,आठे मा ने,गा आणीने,चारे चारे,छेदो लावेछे.

शंभु नामनु बीजु वृत्त पाछळ जुओ वर्ण १९ अंक ११९४ मे.

१३६६ व्याकोशकोशल. त भ+य भ+३स+ज ग. १४,२२,९६९

व्याकोशकोशल त भा, यभा पर त्रण सा, जग आठ हये दशे[७] यति

वाग्वल्लभमां आ नाम तथा ८,७,१० यति छे.

१३६७ शरभूरिणी. रस+जज+भर+सय+ग. २९,७६,६०३

रास छे जज छे पछी भर छे अने सय अन्त गा शरभूरिणी पदि.

१३६८ हीणहैयंगवीन. ८र+ग. ४७,९३,४९१

आठ रा पाद पादे तमे आणजो शोभता वृत्तमां हीणहैयंगवीनि.

१३६९. कमला, मुदिर[१], मल्ली[२], सुमिला[३], माधवी, अमला[४], चंद्रकला[५],

सुछंद[६], सुंदरी, सवैया[७], सुखदा[८], सुखदानि[८].

१२,१३ यति. ८स+ग ७१,९०,२३६

कमला-सुमिला-मुदिरे रविये, यति ने धर आठ[१२] स ने ग वळी तुं.

१ वाग्वल्लभ, तेमां यति कही नथी. २ छंद:सारमां आ मागथी मल्लिका नाम आपी तेमां यति कही नथी. ३ पिंगळादर्शमां आ नाम आपी तेमां १२,१३ यति कही छे ४छंदरत्नावळी. ५ काव्यसुधाकर. ६ भगवत्पिंगळ ७ छंदबोध. अने ८ गणप्रस्तार-प्रकाशमां अनुक्रमे ए नाम छे पण ते ग्रंथोमां यति कही नथी.

१३७० नीपवनीयक, वनीपक, नीपक. } भनन+सभ+३स+ग. १२,०२,८१९

भा न न पर स भ पर त्रण सा छेवट गुरु नीपवनीयक वृत्त.

१३७१ कुमुदमाला. नतसभ य+नतसग. ७९,७६,८०८

अथवा (न+कर्णगण (।।।ऽऽ) एवा पांच यतिना पांच टुकडा)

कुमुदमाला, न त स भा या, न त स गा छे, यति शरे[५] छे, शर[५] शरे[५] ना

अथवा

नगण कर्ण, पनिश वर्णे, क्रम करीने, शर[५] धरीने, कुमुदमाला.

१३७२ रसिकरसाला. नन+सस+भतन+सग. ८२,८३,९०४

नन पर सस धर भातन आणी सग पादे रच रसिकरसाला.

१३७३ विरहविरहस्य.मन+नत+यन+नस+ग. ८३,६२,४८९

माना छे नत पर यन पूठे नस अन्ते ग पद विरहविरहस्ये.

१३७४ भास्कर, भास्करविलसित. { मन+ज+यभ+नन+सग. ८३,८१,३११ }

भास्कर भन पर जा धर या भा तेपर नन पर सग कर शाणा.

१३७५ चित्तचिंतामणि. ९, ८, ८ यति. } ३र+नज+३त+ग. ९९,९२,४६७

लोक[3] रा ने नजा लोक[3] ता, यति नव आठ अन्ते, ग छे चित्तचिंतामणी.

१३७६ गुणमालाधरा. १२, १३ यति. } ७भ+त+ग. १,०१,८६,१६७

छे रवि[१२] ने जसथी[१३] यति बे पद, सात भ थी रचजो गुणमालाधरा.

१३७७ वल्लरी, वल्लरिका. ९न+जन+ज+ग. १,२९,१७,३७६

शर[५] नगण पर जन धर जगण कर अन्त ग चरण वल्लरी.

१३७८ दास. ६,६,६,७यति. ४सभ+ग. १,३६,८१,९९६

छ छ चक्रे[६] हय[७], यति आणो कवि! युग[४] सा भा पर, ग धरी दास करो

पिंगळादर्शमां उपर प्रमाणे यति छे.

१३७९ वंधूर. (छंदोलता) ४न+२स+२भ+ग. १,४२,७०,४६२

चतुर[४] नगण पर द्वि स धर द्वि भ अन्त ग वंधूर पदे करजो.

१३८० शिविका[१], चारु[२], सारु. } ८भ+ग. १,४३,८०,४७१ १२, १३ यति.

चार वळी जस उपर छे यति, भा गण आठ पछी ग कस्वे शिविक[13]

१ वागुवल्लभमां छे पण तेमां यति नथी २ पिंगळादर्शमां १२,१३ यति कही छे, अने तेम बोलाय पण छे.

१३८१ भाविनीविलसित. ४रन+ग. १,५४,४५,६९

चार छे रन गणो तथा चरम गा धरो चरण भाविनीविलसिते

१३८२ कलकंठ. { ८,८,९ यति. सज+नज+भनर+नग. १,५४,६१,२९६ }

कलकंठ सा ज पर, न ज छे भ सां र न ग, यति आठ आठ ननथ

आ नाम अने यति मंदारमरंदचम्पूमां छे

१३८३ विशेषकचालित, विशेपिल. { २न+२म+२ज+न ग. १,६१,७९,१६८ }

प्रथम न गण बे आवे बे मा लोके जा पद थाय विशेषकचालिते.

१३८४ अभ्रभ्रमण. तन+मस+४न+ग. १,६७,७४,७१७

अभ्रभ्रमण विषे ता ना पर मा स कर चतुर न धर ग चरमे.

१३८५ क्रौंचपदा[1], क्रौंशपदा[2]. { भमस+भ+४न+ग १,६७,७६,३९१ ५,५,८,७यति. }

क्रौंचपदामां, भा म स छे भा, युग न पर ग शर शर वसु ह्य छे.

१ छंदशास्त्र, वृत्तरत्नाकर, शब्दकल्पद्रुम, छंदोरत्ना अने छंदोमंजरीमां क्रौंचपदाना उपर प्रमाणे गण तथा यति छे.

२ क्रौंशपदा नाम वाग्वल्लभमां छे, तेमां उपर प्रमाणे गण अने यति छे तेणे छंदोमजरीनुं आधारे अक्षर माप उतारी लीधुं छे मात्र प्रारंभमां क्रौंच शब्द फेरवीने क्रौंश शब्द मूक्यो छे

पिंगळादर्शमां क्रौंचपदामां भमनभननननग एवुं माप अने ५,५,८,७ यति कही छे, पण छंदशास्त्रमां "म्भौ स्भौ नौ नौ ग" इत्यादि सूत्र छे, तेमां नौनो गण स्न छे, त्यां आगळ नानो भ्रान्ति थवाथी पिंगळादर्शमां भ्मौ न्भौ नौ नौ ग एम उतारो छे, तेथी तेमां भूल थई छे.

१३८६ अलका, अलिका. ८न+ग. १,६७,७७,२१६

चरण नगण प्रति वसु[८] नगणपर चरम ग कर तुं अलका.

१३८७ मल्लपल्लीप्रकाश. ८य+ल. १,९१,७३,९६२

रच्यो मल्लपल्लीप्रकाशे बधा आठ या ने पछी ला धरी पादनी मांह्.

आ वृत्त वाग्वल्लभमा छे. भुजंगप्रयातनां बे चरणोमां एक लघु उमेरवाथी आ वृत्त थायछे.

१३८८ सौदामनदाम. ४स+नज+यस+ल. २,३९,२९,०८४

रच चार स ने न ज ने य स ने ल चरममां कर सौदामनदाम.

१३८९ अरविंदमुखी[१], अरविंद[२]. ८स+ल. २,३९,६७,४५२

१२,१३ यति.

अरविंदमुखी वसु[८] सा धरतां, पर ला करतां रवि[१२] तेर विराम.

१ पिंगळादर्शमा आ नाम अने यति छे. २ गणप्रस्तारप्रकाश.

१३९० हरि. २स+मसत+३ज+ल. २,८७,९९,८६८

यति सात छये ने, युग[४] वसु[८] सा बे, ने भ स ता, त्रण जा पर ला हरि.

पिंगळादर्शमा ७, ५, ४, ८ यति छे, तेमा शत्रु अथवा रिपुनी संज्ञा ५ लखी छे ते भूल छे, षट् अरि केहेवायछे. १काम, २क्रोध, ३लोभ, ४मोह, ५मद, अने ६मत्सर

१३९१ लवंगलता[१], कळाकुशळ[२], विजय,[३] (विजै).

१२, १३ यति. ८ज+ल. २,८७,६०,९४२

लवंगलता वसु[८] जा पर अन्त, ल पाद विराम कळाकुशळे रवि[१२].

१ भगजनपिंगळमा बने नाम छे, पण यति विषे कशु कह्यु नथी; अने तेणे उदाहरणमा कहिंक ११ अने कहिंक १२ वर्णे यति पाळी छे, ते अनियमित छे एटले १२, १३ यति पाळवी ठीक छे.

२ पिंगळादर्शमा ए नाम आपी उपर प्रमाणे गण तथा यति केहेछे.

३ गणप्रस्तारप्रकाशमा विजयने बदले विजै एम अशुद्ध पाठ छे,

२६ उत्कृति छंद.

६,७१,०८,८६४ भेद छे. २६ वर्ण.

१३९२ जीमूतध्वान[1], गौरी[2]. ८म+२ग. १

जीमूतध्वाने छव्वीशे लांबा वर्णोना आठे मा बे गुरु गौरी अन्ते आवेछे.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता.

१३९३ तनुकिलकिंचित. ३म+नजन+तय+२ग. ३३,९९,१६९

आठे आशा आठे छेदो, छे तनुकिलकिंचित मम, माना जन ताया गागा.

वाग्वल्लभमां ८,१०,८ यति छे.

१३९४ विनयविलास. ४नय+२ग. ३९,९४,५७९

विनयविलासे चरण विषे चार नय पछी बे गुरु चरमे आवेछे.

१३९५ विश्वविश्वास. { म+३य+२र+२त+२ग.९९,११,४९७ ; ९,७,७,७ यति.

मा ने लोक या, बे र बे ता गुरु बे, विश्वविश्वास पांचे, सात साते विरामो.

१३९६ अशोकानोकह. मभ+नभ+नर+२त+२ग.९९,३४,९९१

माभा छे नाभ पर नर छे द्वि त पर ग बे अशोकानोकहे पाद पादे.

१३९७ आभासमान. ४य+४त+२ग. ९५,८५,२२६

रचो चार या चार ता अन्त बे गा आभासमाने पदो चार एवां रसेथी.

१३९८ वीरविक्रांत. मनम+५त+२ग. ९५,८७,०६९

जोडो चार चरण वीरविक्रांत मांहे म ना जा पछी पांच ता अन्त बे गा.

१३९९ झूलना[1], झूल्लणा. } नस+यन+रभ+जस+२ग. ९९,०७,८०८ ; ८,१९ यति.

नस पर यना करो, रा भ पर जा त ने बे ग वसु पंदरे झूलणामां.

१ मागधी पिंगलछंदोग्रंथ प्रमाणे.

१४०० अपवाह[1],अपवाहक.म+६न+स+२ग.१,०२,८८,९०१

मा छे ना छ पर सगण, पर द्वि ग यति, नव छछ शर, अपवाहे छे.

१ वृत्तरत्नाकर तथा वाग्वल्लभमां ९,६,६,५ यति कही छे.

१४०१ विकुण्ठकण्ठ ४ रज+२ग. १,११,८४,८११

थायछे विकुण्ठकण्ठ मांह चार रा ज थाय अन्त पाद बे ग आणवाथी.

१४०२ चारुगति. २न+सम+नज+रज+२ग. १,१२,०२,८१६

द्वि न पर स म धरीं ना जा थी चारुगति विषे रचाय रा ज अन्त बे गा.

१४०३ द्वितीयझूलणा.न+२स+२जभ+ज+२ग.१,२२,४९,८२४

न पर द्वि स बे ज भ ने ज छे द्वि गा रच द्वितीयझूलण जरूर सारा.

मात्रामेळ झूलणाना रागमां आ वृत्त बराबर बेसतु नथी, कारण के आवा गणथी बे मात्रा घटेछे, पण उपर अंक १३९९मे झूलणाना जे गण आप्या छे ते वधारे भरोसा पात्र छे एटले अमे आ माप यथोचित मानता नथी, तोपण मायथी पिंगळछंदोग्रथमां आ प्रमाणे माप होतां एने द्वितीयझूलणा एवु नाम आपी दाखल कर्यु छे

१४०४ प्रियजीवित. ८भ+२ग. १,४३,८०,८७१

छे प्रियजीवितमा वसु भा गण ते पर अंतविषे गुरु बे धरजोजी.

१४०५ रंजन. भनज+नस+२न+भ+२ग. १,४६,६२,९९१
७,७,७,९ यति.

रंजन मुनि हय, सात शर भ न ज, छे न स पर द्वि न, भा गण बे गा.

१४०६. भसलसलाका. { मभ+समन+यत+न+२ग.
१,५७,९०,३२१

आठे आठे दश म भ, छे सा मा ना पर य त,ना छे बे गा भसलसलाका.

वाग्वल्लभमां आ नाम तथा ८,८,१० यति कही छे.

१४०७ उज्झितकदन. मन+३ज+३न+२ग १,६७,६७,८७१
उज्झितकदन विषे भ न छे त्रण जा पर त्रण न पर चरम बे गा.

१४०८ कुहककुहर. २न+मय+२न+मय+लग. १,९१,३२,९९२
कुहककुहरमां बे ना तथा मा य पर द्विन पछी माया अने लाग छे.

१४०९ सूरसूचक. मसज+३स+२य+लग. १,९२,४८,९८५
मा सा जा पद सूरसूचक विषे त्रण सा पर बे य आणो लगा अन्तमां.

१४१० विषाणाश्रित. { यन+रभ+जत+सय+लग. १,९८,१९.६१०

विषाणाश्रितविषे यना छे र भ अने जता छे सय तथा लगा अन्तमां.

१४११ विनिद्रसिन्धुर. ४र+२ ज र+लग. २,२३,६९.४२७
चार रा आणजो बे जरा जाणजो विनिद्रसिन्धुरे धरो लगा पदे पदे.

१४१२ शकुन्तकुन्तल[1]. {म+२र+२न+ रजर+लग. २,२३,८०,१७७

मा ने बे रा न बेने र जा, र पर ल ग नवे, हयें दशे शकुन्तकुन्तले.

१ वाग्वल्लभमां आ नाम अने ९,७,१० यति छे.

१४१३ भुजगेरित. मय+नत+२न+रस+लग. २,३८,९३,९१३

मा या ने न ता छे द्विन, र सा ने ल ग यति वसु हरे, हयें भुजगेरिते.

पिंगळादर्शमां ८,११,७ यति छे.

१४१४ भुजंगविजृंभित. ममत+३न+रस+लग. २,३८,९४,८४९

आठे रुद्रे मा मा ता छे, त्रण न पर र स पर ल गा, भुजंगविजृंभिते.

वृत्तरत्नाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाग्वल्लभ, अने शब्दकल्पद्रुममां ८, ११, ७ यति कही छे. पिंगळादर्शमां ८, १२, ६ यति कही छे, तथा छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी, ते उपर जणावेला प्रमाण प्रथोमां मात्र नाहि, जोवाथी वन्यु हशे.

कथा एवी छे के, गरुड, भुजग (नाग) पछवाडे पड्यो हतो, तेने भुजगे पिंगळ समजाववा माड्युं अने आ वृत्त सुधी समजावतो अने प्रस्तार करतो चालतो चालतो समुद्रकिनारा सुधी आवी पोहोच्यो, पछी समुद्रमा प्रवेश करी गयो. ते उपरथी भुजग=नाग अने विजृम्भित=पळायन=भुजगनु नासी जवु, एवो अर्थ थायछे

१४१५ काकलीकलकोकिल. { रम+२जन+भर+सज+लग. २,८१,४२,४२७

काकलीकलकोकिले रस ने द्वि जा पर भा र छे स ज अन्त ला ग करो.

१४१६ वीणार[1]. त+७ज+लग. २,८७,६०,९४१

वीणार विषे गण ता पर सात ज ते पर अन्त ल गा चरणे धरजो.

[1] आ वृत्त मारवाडी हारिजशपिंगळमा छे

१४१७ शृंखलवलयित. { भ+२न+मम+नन+जलग. २९३,३०,९४३

शृंखलवलयित पद भा पर बे ना छे भ म पर न न पछी ज ल गा.

१४१८ विरामवाटिका. { नज+रसन+जर+न+लग. ३,२१,७५,७९२

चरण विरामवाटिका न ज छे र स न पछी ज रा अने नगण ल गा.

१४१९ कर्णाटक. तभ+२जभ+२न+लग. ३,३९,१२,८२१

कर्णाटके त भ रचाय बे ज भ अणाय बे न पर ल ग चरम विषे.

१४२० अरिदमन, अरिदलन. } २भ+न+५न+लग. ३,३९,९४,११७

आठे आशा आठे बे भा, त पर शर न पर ल ग. पद अरिदमनमां.

आ वृत्त मागधी पिंगळछंदोग्रथमा छे अने तेमा १६,१०,८ मात्राए एटले ८,१०,८ वर्णे यति आणवा कह्युछे

१४२१ कुंभक. २न+६र+गल ३,८३,४७,९९८

चरण चरण कुंभके न न छे ने छ छे रा गणो ते पछी अन्तमां गा ल.

१४२२. कलधुनि. २सज+नस+२न+गल. ९,०१,९९,३७६

सज बे पछी नस पछी न बे कलधुनि पदमांह चरम गल थाय.

१४२३ वशम्वद[1], सुख[2], सामन[3], सावन[3]; मागधी, सवैयो, अम्बुज, कुन्दलता[4], किशोर[5], मालती[6].

१२,१४ यति. ८स+२ल. ९,७९,२१,८८४,

रविये यति छे गण सा वसु बे,—लघु अम्बुज, सुख, वशम्वद, सामन.

१ आ नाम वागवल्लभमां छे, पण तेमां यति नथी. १ ए नाम छंदःप्रभाकरमां छे तेमां यति नथी. ३ ए बे नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे. ४ भाषाछंदोमंजरीमां छे. ५ छंदःशृंगारमां किशोर नाम छे तेणे यति कही नथी, ए वृत्त पिंगळादर्शमां छंदःशृंगारमांथी लीधु छे. परतु १२, १४ यति बोलाय छे तेथी तेणे ते प्रमाणे यति आपी छे ६ छंदोर्णव.

१४२४ विलास[1]. ८भ+२ल. ६,४७,१२,११९

बार मनु यति भा वसु छे गण, ने लघु बे थकी थाय विलास चरण.

१ गौर्टपिंगळ तथा लक्षणतजशसिन्धुमां अन्ते बे गुरु कह्या छे, परतु तेम थवाथी तो १,४३,८०,८७१ सुं रूप अंक १४०४ नु प्रियजिवित थायछे, जेथी ते योग्य नथी. पिंगळादर्शमां १२, १४ यति छे.

वर्णदण्डक.

छव्वीश वर्ण उपरांतना सम चरणना पद्यने दंडक केहेछे. पण पिपीडिका आदि केटलांक छव्वीश अक्षर उपरांतनां पद्य छे तेनी गणना आमां थती नथी.

ओछामां ओछा २७ वर्ण अने घणामां घणा ९९९ वर्णनुं एक पाद थाय एटलो तेना एक चरणनो विस्तार छे; एवां चार समचरणनो एक दंडक थायछे. छंदःशास्त्रमां सूत्र छे के,

दंडको नौरः ७।३३।

२न+र आववाथी दंडक थाय छे. आ सूत्रनी वृत्तिमां हलायुधे २न उपर ७रगण आवे एम कह्युं छे, पण—

प्रथम श्चंडवृष्टिःप्रयातः ७।३२।

ए सूत्रमां पेहेलो दंडक २७ वर्णनो चंडवृष्टिप्रयात थायछे, एम केहेछे, तो २न उपर इच्छापूर्वक रगण आवे ते दंडक केहेवाय, एम मानवामां आव्युं छे ते उचित छे.

अन्यत्र रात माण्डव्याभ्याम् ।७।३३।

ए सूत्रमां एम केहेछे के, रात अने माण्डव्य ऋषियोए आ चंडवृष्टिप्रयातने अन्य स्थाने बीजुं नाम ठराव्युं छे, पण नारायणभट्ट केहेछे के ए ऋषियोए एवुं बीजुं नाम नथी ठराव्युं.

शेष प्रचितः ।७।३४।

आ चंडवृष्टिप्रयात उपरांत दंडकप्रस्तारपूर्वक रगण वधता जाय तेनो सामान्य संज्ञा प्रचित अथवा प्रचितक केहेवायछे. पछवाडे गयेला वर्णछंदोमां अकेको वर्ण वधतां २६ वर्ण सुधी छंद बनेछे, तेम अह्नि अकेको गण वधवाथी प्रचितक थायछे.

प्रचित अथवा प्रचितक एटले वृद्धि पामेलु अर्थात् अकेको रगण वृद्धि पामतो जायछे, माटे एनु सामान्य नाम एनु कल्प्यु छे केटलाएकनो अभिप्राय एवो छे के, २न उपर अकेको रगण वधारवानु कथन छे ते दंडकना चरणमा वधारो करवानु सूचवेछे. अने वृत्तरत्नाकरनी अवधूरि टीकामा केहेछे के, ए प्रमाणे चरणमा रगणनो वधारो करवाथी जे दडक थाय तेना नाम अर्ण, अर्णव एवा छे ते नहि पण बीजा कल्पवा जो आ प्रमाणे करवामा आवे तो नीचे दर्शावेला अर्ण दडकना पेहेला चरणमा ८ र आवे तो बीजामा ९ आवे, त्रीजामा १० आवे, अने चोथामा ११ आवे एटले अर्णनी रचना नीचे प्रमाणे थाय –

प्रथम चरणमा २न+८र=३० वर्ण.
बीजा चरणमा २न+९र=३३ वर्ण
त्रीजा चरणमा २न+१०र=३६ वर्ण
चोथा चरणमा २न+११र=३९ वर्ण

तेमज अर्णवमा नीचे प्रमाणे थाय —

प्रथम चरणमा २न+ ९र=३३ वर्ण.
बीजा चरणमा २न+१०र=३६ वर्ण.
त्रीजा चरणमा २न+११र=३९ वर्ण.
चोथा चरणमा २न+१२र=४२ वर्ण.

एज प्रमाणे व्याड, जीमूत आदिना प्रथम चरणमा १०, ११ एम अनुक्रमे गणनो वधारो करवो, पण जो आ प्रमाणे करवामा आवे तो सम चरण रेहेता नथी. पण प्रत्येकमा त्रण त्रण वर्ण वधवाथी विषम थइ जायछे माटे एवो अर्थ करवो केवळ अयोग्य छे अने नारायणभट्टनो अभिप्राय पण एमज छे.

२७ वर्णना दंडक

१४२५ चंडवृष्टिप्रयात[1], चंडवृष्टिप्रयात[2], चंडवृष्टि[3], उद्दाम[4]. } २न+७र=२७ वर्ण.

द्विन पर हय रागणो चंडवृष्टिप्रयाते धरो चार पादो विषे भावथी.

१ छंद शास्त्र, २ वृत्तरत्नाकर, प्राकृतपिंगलसूत्र. ३ छंदोवृत्तमुक्तावली.
४ मागधीपिंगलछंदोग्रंथ.

चंडवृष्टिप्रयात उपरांत अकेको रगण वधारतां जे दंडको थायछे, ते वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां तथा छंद शास्त्र आदिमां नीचे प्रमाणे जोवामां आवेछे. तेमां छंदोबोधमां मात्र अंक १थी ६सुधी नामछे, अने छंदोमंजरीमां अंक १थी ७सुधीछे –

क्रम,	नाम,	लक्षण,	वर्ण.
१४७०	अर्ण, दंडकतुभंगी.	२न+ ८र=	३०
१४९७	अर्णव	२न+ ९र=	३३
१५०२	व्याल,† विशेषशालीन.	२न+१०र=	३६
१५०५	जीमूत.	२न+११र=	३९
१५०९	लीलाकर	२न+१२र=	४२
१५१२	उद्दाम	२न+१३र=	४५
१५१४	शंख.	२न+१४र=	४८
१५१७	आराम, अर्क[1], पद्मक[2], विश्ववाह.	२न+१५र=	५१
१५१८	संग्राम, चंद्र[1], तक्षक[2], पन्नगराग, चंडेश, कालदंड.	२न+१६र=	५४

† छंदोवृत्तमुक्तावलीनी लिखित प्रतिमां व्याजनाम छे, ते भुल जणायछे.

१ आ निशानवाळां नाम छंदोवृत्तमुक्तावलीमां छे

२ वृत्तरत्नाकरनी जनार्दननी टीकामां आ नाम छे

१५१९ सुराम, ईश, पौण्ड्रक, भोगीन्द्र.....२न+१७र= ५७
१५२१ वैकुंठ, भोगी, उदारपाद.........२न+१८र= ६०
१५२२ सोत्कंठ, इंद्र.........२न+१९र= ६३
१५२३ सार, पीयूप[1] ....२न+२०र= ६६
१५२४ कासार, वाराह[1].........२न+२१र= ६९
१५२५ विस्तार, वात[1].........२न+२२र= ७२
१५२६ संहार. ....२न+२३र= ७५
१५२७ नीहार.........२न+२४र= ७८
१५२९ मंदार ....२न+२५र= ८१
१५३० केदार ....२न+२६र= ८४
१५३१ साधार.........२न+२७र= ८७
१५३२ सत्कार.........२न+२८र= ९०
१५३३ संस्कार. ....२न+२९र= ९३
१५३४ माकंद.........२न+३०र= ९६
१५३५ गोविंद ....२न+३१र= ९९
१५३६ सानंद.........२न+३२र=१०२
१५३७ संदोह.........२न+३३र=१०५
१५३८ नंद.........२न+३४र=१०८

उपर प्रमाणे प्रमाणग्रंथोमां २न कायम राखी ते उपर अकेकों रगण वधारीने जूदा जूदा दंडक रचवानुं केहेवामां आवेछे, त्यारे मागधीपिंगळछंदोग्रंथमां एथी उलटुं ७ रगणमां अकेकानो घटाडो करीने नगणमां वधारो करवानुं केहेछे, २ न+७रनुं रूप जे उपर लखवामां आव्युं छे तेने ते उद्दर्प नाम आपेछे अने तेना भेद उपर जणावेला क्रमे नीचे प्रमाणे थायछेः—

१४२६ विद्याधर, विज्जाहर.　　३न+६र=२७ वर्ण.

ऋण न गण पर पद रा गणो धारिने पादमां आण विद्याधरे दंडकें.

१४२७ सज्जन.　　४न+५र=२७ वर्ण.

चतुर नगण पर शर रगणो धरो पाद पादे तमे सज्जने दंडकें.

१४२८ दुःखाकरो.　　५न+४र=२७ वर्ण.

शर नगण पर चतुर रगण वरतां बनेछे खरो भेद दुःखाकरो.

१४२९ विरतिकल्प, विरयिकप्पो.　　६न+३र=२७ वर्ण.

षट नगण उपर धर ऋण रगण विरतिकल्पमां पाद पादे खरे.

१४३० मकर, मतिकर.　　७न+२र=२७ वर्ण.

हय नगण पर र धर प्रतिपद मंकर-मतिकर दंडकें पादमां.

१४३१ शुभंकर, सुहंकर.　　८न+१र=२७ वर्ण.

वसु न गण पर र गण धरों कविवर! प्रतिचरण रच शुभंकरे.

उपर जणाव्या प्रमाणे मागधीपिंगळछंदोग्रंथमां नगण वेवारी रगण घटाडया छे, पण प्रमाणग्रंथोमां एम नथी. तेमां तो २नगण+७ रगणनो चंडवृष्टिप्रयात थायछे, तेना उपर अकेको रगण वधारतां ९९९ अक्षर सुधीनुं एक पाद करवाने बे नगण उपर ३३१ रगण सुधी वधारवानुं केहेछे. ए हिसाबे तेना ३२९ भेद थायछे, तेमांथी ३४ भेदनां नाम तो ग्रंथोमां प्रसिद्ध छे, ते उपर जणाववामां आव्यां. जनार्दन, सुखानंद, आदि केहेछे के, आवा दंडकोनां नाम नीचे प्रमाणे कल्पवां:—

कुमुद, तक्षक, अब्ज, मंजुल, वारिधि, तरंग, इत्यादि.

वाग्वल्लभमां केहेछे के, कविनी इच्छा प्रमाणे जेमां विराम बराबर सचवाय तेवा गणोथी अनेक दंडको थायछे अने ते घणा गणोथी गुंथायछे, माटे तेनां गुच्छक, दाम, हास, प्रसून, मंजरी अने रुचिरा एवा अर्थवाळां नाम कलपवां. वृत्तरत्नाकरनी अवधूरि टीकामां केहेछे के, गगन, समुद्र, एवां नाम पण अपायछे.

छंदःशास्त्रनो उपर अभिप्राय लखवामां आव्यो तेमां २ नगण उपर ७ रगण आवे तेज दंडक केहेवाय अने रगणनो वधारो करवाथी जे दंडक थाय ते प्रचित केहेवाय, एम ठरेछे; पण बीजा ग्रंथो जोतां तथा कविना प्रयोगोनुं अवलोकन करतां रगण सिवायना गणो जोडवाथी पण दंडक बनेला जणायछे. गंगादास अने केदारभट्टे २ नगण उपर ७ यगणनो प्रचितक कह्यो छे अने बीजा ग्रंथोमां पण तेमज जोवामां आवेछे.

छंदःशास्त्रना टिप्पणमां, छंदःपारिजात उपरथी लखेछे के, छवीश अक्षर सुधी एकेक वर्ण वधतां जे छंद थया ते बताववामां आव्या, हवे ते उपरांत अकेक गण के वर्ण वधवाथी दंडक अने प्रचितक केहेवायछे; एटले नगण साथे रगणनो प्रयोग करतां जे बने ते दंडक अने बीजा गणनी रचनावाळामे प्रचितक केहेछे. नगण साथे य, त, र तथा भ, स, ज ना परस्परना प्रयोगथी, अथवा ते गणोना मांहोमांहेना संमिलनथी, तेमज केवळ सगण अने भगणना योगथी, प्रचितकना करोडो भेद थइ शकेछे, ते केवळ शेषज जाणी शकेछे.

छंदःशास्त्रनी टीकामां छंदःपारिजातनुं वचन छे केः—
विहाय मगणं शुद्धं गणैरन्यैरशेषतः षड्विंशादधि
केर्वर्णैर्दृश्यन्ते प्रचितानि च.

मगण वर्ज्य करतां बाकीना बधा गणोना संमिलनथी २६ वर्ण उपरांतना प्रचितको जोवामां आवेछे.

उपर प्रमाणे मगणने वर्ज्य करवा केहेछे पण अंक १४३४ नो उदाल ९ मगणनो थायछे, तेथी उपरना वचन उपर आधार राखवो उचित जणातो नथी.

उपर जणाव्या प्रमाणे रगणघटित दंडक ३२९ सुधी बनी शकेछे, अने एज प्रमाणे यगणघटित प्रचितक पण बनेछे. तेमज बीजा गणोनी योजनाथी पण बनेछे. छंदःशास्त्रमां बे नगण उपर ७ रगणवाळाने दंडक मान्यो छे, अने सात उपरांतना रगणवाळाने प्रचितक मान्यो छे. अने तेनुं सूत्र नीचे जणाव्युं छे—

शेषः प्रचितः इति

एमां शेषनो अर्थ, सात रगण उपरांत अकेक रगण वधवाथी जे दंडको थायछे ते प्रचित केहेवायछे, एम हलायुधे कर्यो छे; पण वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टनी बनावेली टीकामां केहेछे के, यगण आदि प्रयोगथी रचेला दंडको कविओए बनाव्या छे माटे, शेषः एटले रगणवाळा दंडक सिवायना यगणोथी रचायला दंडकोने पण प्रचित केहेवा.

१४३२ प्रचितक[1], सिंहविक्रान्त[2]. २न+७य=२७वर्ण,

प्रचितक पद पद्दे बे न छे ने य छे सात पूरा रचो ए प्रकारे प्रवीणो!

१ वाग्वल्लभ अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमां प्रचितकनुं माप आ प्रमाणे छे.

२ छंदोवृत्तमुक्तावलीमां सिंहविक्रान्त नाम आपी तेमां २ल+९य लाववा कही उदाहरणमां ९य आप्या छे, ते उपरथी जणायछे के, य यथेच्छ आणवा. पण छंदोमंजरीनुं परिशिष्ट तथा वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमां केहेछे के—

॥नयुगलगुरुयुगेवं यकाराः कवीच्छानुरोधात्तदा यत्र वक्ष्यन्त एषोऽपरो दण्डकः पण्डितैरीरितः सिंहविक्रांतनामा॥
२न+इच्छापूर्वक य एवा मापना दंडकने सिंहविक्रान्त केहेछे.
छंदोमंजरीना उदाहरणमां १३ य मूक्या छे.

जेम चंडवृष्टिप्रयातमां २न+७र आवेछे अने ते उपरांत एकेको रगण वधवाथी जूदा जूदा दंडक थायछे तेम, २न+७य उपरांत अकेको यगणनो चडावो करतां ९९९ वर्ण सुधीनुं पद थतां ३३१ य आवे अने तेना ३२९ भेद थाय तेनां नाम प्रथम मूक्व्या प्रमाणे पडी शकेछे.

चंडवेगदंडक २न+य (यथेच्छनो) थायछे, एम छंदोवृत्तमुक्तावलीमां केहेछे पण छंदोलतामा तेनुं माप रन+८य+२न आप्युं छे; माटे अमे ते अहिं दाखल कर्यो नथी.

मुक्तकदंडक.

गणना नियमथी मुक्त एटले जेने गणना नियम लागु मळता नथी, पण इच्छापूर्वक वर्णनी रचना करवामा आवेछे ते मुक्तकदंडक केहेवायछे.

१४३३ मुनीन्द्र. लघु गुरुनो नियम नहि. २७ वर्ण.
मुनीन्द्रमाहे लघु गुरुकेरो निम न आवे पण सत्ताविश अक्षर लावे.

मनहरपिंगळमा छे

बीजा मुक्तक वर्णसंख्याना क्रमे आगळ जोवामा आवशे.

म य र स त ज भ न ग ल एथी थता दंडक.

उपर प्रमाणे आठ गण तथा गुरु अने लघु एवा प्रत्येकना सत्तावीश अक्षरना प्रारंभथी प्रतिचरणमां ९९९ वर्ण आवे त्यां सुधी दंडक बनेछे तेमां केटलाक सो वर्ण वधता जाय तोपण एकेकुं एकज नाम राखेछे, परन्तु २०

वर्णनु थड बतावी ते उपरांत तेनी शाखाओ भेद रूपे थाय, ते ओळखवाने जूदां नाम पाडवा उचित छे

१४३४ उद्दाल, उद्दालक. ९म=२७ वर्ण.

उद्दाले आवेछे पादे पादे सत्तावीशे
गुरु केरा मा सौ खंडे पोहोंची जाता.

१४३५ सिंहविक्रीड. ९य=२७ वर्ण.

गणो या नवा खंड तो थायछे सिंहविक्रीडना
पादमा वर्ण सत्तावीशेना.

१४३६ मत्तमातंगखेलित, मत्तमातंगलीलाकर. } ९र=२७ वर्ण.

मत्तमातंगलीलाकरे लावजो खंड रा
छेक ओछा अने तो गमे एटला.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकाना परिशिष्ट भागमा तथा छंदोलता मा इच्छा प्रमाणे रगण करवाथी आ दंडक थायछे, एम लक्षण बांधी, उदाहरणमा १३ रगण आप्या छे (महाकवि कालिदासकृत श्यामलादंडकना टिप्पणमा वे नगण+यथेच्छ रगणथी आ दंडक बनवानु लख्यु छे) छंदार्णवमा १८ रगण सुधी वाणीभूषणमा ११ रगण सुधी, अने प्राकृत पिंगळसूत्रमा १० के ११ रगण लाववा कह्यु छ छंद प्रभाकरे ९रनु माप बतावी तेनुं उदाहरण आपी नोंधमा जणाव्युछे के, जेमा ९थी अधिक रगण होय ते पण आनाज भेदमा गणायछे वाग्वल्लभमा ९र अने छंदोमंजरीमा यथेच्छ र लाववा कह्युछ पण ए बन्ने ग्रंथामा उदाहरण ९रना छे, एटले नव करता वधारे इच्छापूर्वक रगण आणवानु प्रमाणग्रंथोपरथी नक्कीछे एना भेदमाथी नाचना वे मूक्या आव्या छे --

१५०६ सारंग १३ र=३९ वर्ण.
१५२१ रुद्रसारंग . ... .. १९ र=४९ वर्ण.

१४३७ कुसुमस्तवक[1], कुसुमास्तरण. ९स=२७ वर्ण

नव सा गण शोभित तो सजजो कुसुमस्तवके प्रतिपाद विषे समजो.

१ छंदोबोध तथा वाग्वल्लभ. छंद.प्रभाकरमा स यथेच्छ अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमां १२ सनु उदाहरण छे.

१४३८ दाम. ९त=२७ वर्ण.

छे ता गणो खंड सर्वे मळी पादपादे वधा दाममां वर्ण सत्ताविशे थाय.

उदाहरण १२ तगणनु छे.

१४३९ वितान. ९ज=२७ वर्ण.

वितान विषे जगणो नव थाय पदेपदमां कुळ वीश अने हय वर्ण.

उदाहरण १२ जगणनु छे.

१४४० वर्त्तुल. ९भ=२७ वर्ण.

वर्त्तुल दंडकमांह पदेपद छे नव भा गणना विश ने हय अक्षर.

उदाहरण १२ भ गणनु छे.

१४४१ अचल. ९न=२७ वर्ण.

नव तुँ नगण धर चरण चरण पर विश हय कुल कर अचल.

उपर प्रमाणे मयरसतजभन ए गणना दंडक थइ रह्या बाकी गल ना रह्या ते जुवो अंक १४४६ तथा १४४७

१४४२ सुधाधार. ४भ+३त+२म=२७ वर्ण.

चार भ उपर छे त्रण तागण तेनी परे तुं सुधाधारमांह भ बे कर.

१४४३ दिनकर. १भ+८म=२७ वर्ण.

एक भ गण पर वसु तुँ नगण धर दिनकर चरण चरण रच.

१४४४ सोममाला. ४जर+ज=२७ वर्ण. तेमां ९,८ यति.

जराजराजराजराज, सोममालमां विराम, तो नवेज आठ वर्ण धार.

२८ वर्णना दंडक.

१४४५. मकरालय. न+ग+र एम सात वर्णनो नगर गण चार चार आवे.=२८ वर्ण.

नगरनां झूमखां चरण सौ सातनां चरणमां चार छे मकरना आलये.

नगरनां झूमखां चारथी आरंभीने ९९९ वर्ण थाय त्यांसुधीनी हदमा जेटला आवी शके तेटला आना भेद थायछे. आ उपरांत छंदोवृत्तमुक्तावलीना अभिप्राय प्रमाणे नगर झूमखामा नग उपर अनुक्रमे अकेक रगण वधारवाथी इच्छापूर्वक दंडको बनेछे. एनी रचनामा कांइक चमत्कार होय एम होवुं जोइये. एना नीचे प्रमाणे भेद प्रसिद्ध छे:—

क्रम.	नाम.	माप.	वर्ण.
१४९१	पन्नगेन्द्र.	न+१ग+ ८र=२८	
१४७८	दंभोली.	न+१ग+ ९र=३१	
१४९९	हेलावली.	न+१ग+१०र=३४	
१५०३	मालती.	न+१ग+११र=३७	
१५०८	केली.	न+१ग+१२र=४०	
१५१०	कंकेली.	न+१ग+१३र=४३	
१५१३	लीला.	न+१ग+१४र=४६	
१५१६	विलास.	न+१ग+१५र=४९ इत्यादि.	

उपरनुं विवेचन नीचे प्रमाणे छंदोवृत्तमुक्तावलीमां कर्युं छेः—

नगणतश्चेद्गुरुस्तस्य पश्चाद्यदाष्टौ तु रेफास्तदा पन्नगेन्द्र कृतः पन्नगः (न+ग+८र)

प्रतिपदं पन्नगेन्द्रात्पुनारेफवृद्धया तु दंभोलिहेलावलीमालती केलिकंकेलिलीलाविलासादयः (न+ग+११र)

छंदोल्लतामां आ विषे नीचे प्रमाणे लखेछेः—

जलधिलघोर्भवेद्रेफकैरष्टभिः पन्नगेन्द्राभिधो दंडकश्चाथ

वृद्धि क्रमादंडकं प्रत्युंपतीह पादे यदैकादिरेफेण चांभोलि हेलीधूलीमानलीकेलिलीलाविलासादयः (न+ल+२०र)

नगणने एक लघु उपर आठ रगण लाववाथी पन्नगेन्द्र दंडक थायछे अने त्यार पछी अकेको रगण वधारवाथी अंभोली(१४७९), हेली (१९००), धूली (१९०४), मातली (१९०७), केलि (१९०८), लीला(१९२३), विलास(१९१६)आदि दंडक थायछे. आ बंने ग्रंथोना जूदाजूदा कथनथी भ्रांति थाय एवुं छे, केमके छंदोवृत्तमुक्तावलीमां न+ग+८र अने छंदोलतामां न+ल+८र नो प्रारंभथी भेद बनावेछे अने तेनां नाममां पण अवळसवळ फेरफार थइ गयो छे, परंतु मकरालयना झूमखामां न+ग+र आवेछे तेथी छंदोवृत्तमुक्तावलीनो अभिप्राय, बीजां सबळ प्रमाणने अभावे अमे मान्य राख्यो छे.

१४४६ चंद्रः २८ गुरु वर्ण.

चंद्रे आवेछे अठ्ठावीशे वर्णो पादे ने पादे पूरेपूरा ओछो आवेछे उद्दाले.

अठ्ठावीश करतां एक वर्ण ओछो राखिये तो उद्दाल (१४३४) थइ जाय माटे आ दंडकनो प्रारंभ अठ्ठाविश अक्षरथी करवो उचित छे.

१४४७ ललित. २८ लघु वर्ण.

ललित चरण पर लघु तुं वरण कुल विंश पर वसु धर कविवर!

जो सत्ताविश अक्षरथी प्रारंभिये तो अचलदंडक थइ जायछे, जुओ अंक १४४१

आठ गण अने लघु गुरुना मिश्रणथी थता दंडक.

१४४८ अनंगशेखर, महीधर[1]. १४ लग=२८ वर्ण.

अनंगशेखरे रचाय चौद लाग सामटा

बंधा गणाय वर्ण वीश आठ तो.

[1] महीधर नाम छंदःप्रदीप अने छंदःप्रभाकरमां १४ लगनुं जणाव्युं छे.

लघुगुरुना क्रमे २८ अक्षरनो आ दंडक छंदोवृत्त-मुक्तावलीमां छे. आमां प्रत्येक पादमां इच्छापूर्वक लघु गुरु आणवा, एम प्रमाणग्रंथोनो अभिप्राय छे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां यथेच्छ लघु गुरु लाववा केहेछे, पण तेनो वृत्तिकार लक्ष्मीनाथ भट्ट विशेषमां एम विस्तार आपेछे के, ल ग ना क्रमथी एटले यथेच्छ जगण रगणना क्रमे छेवट जगण लावो ते उपर अन्तमां एक लघु आणी २८ वर्ण अथवा तेथी वधारे १० के ११ गण उपर एक लघु आवे एम रचना करवी. पण आ कथन उचित नथी, केमके आ दंडकमां ल ग नो क्रम इच्छापूर्वक आणवानो प्रमाणग्रंथोनो अभिप्राय छे, तेमज मूळ सूत्र छे–

"लघुगुरुर्निजेच्छया यदा निवेश्यते तदेष दण्डको भव रयनङ्गशेखरः २०९." आ प्रमाणे छे तेमां पण वृत्तिकारे जणावेलो अभिप्राय आवतो नथी माटे ते ग्राह्य नथी.

वाग्वल्लभमां इच्छापूर्वक ल ग लाववा केहेछे, अने गोठती आवे एवी यति आणवी एम जणावेछे, पण लक्षण बांधतां जे रचना करी छे तेमां ल ग नो क्रम साचव्यो नथी अने वर्ण २७ आण्या छे, ते पण तेनीज उक्तिथी तथा प्रमाणग्रंथोथी विरुद्ध पडतुं छे.

छंद शास्त्रनी टीकामां छंदोमंजरी उपरथी प्रतिपादमां अक्षर अठ्ठावीश आण्या छे, अने लघु गुरुनो क्रम साचव्यो छे, छंदोमंजरीमां यथेच्छ ल ग लाववा केहेछे. उदाहरणमां २८ वर्ण [illegible] णप्रस्तारप्रकाशमां ल ग ना क्रमथी ३२ वर्णना दंडकनुं आ ना [illegible]प्युं छे, पण तेनां बीजां नाम द्विनाराचिका, महानाराच, एव [illegible] ते आना भेद छे. बीजा भेद ९९९ वर्णनो हद सुधी बनी शकेछे.

।४४९ अशोकपुष्पमंजरी. १४गल=२८ वर्ण.

[illegible]द यार गा ल बीश आठ वर्ण छे अशोकपुष्पमंजरी पदे पदे सदाय.

१४ गलना प्रारंभथी बेकीना ९९९ अक्षर सुधी आना भेद थायछे. १६ गलनो सुधानिधि (अं. १४९४) आनो भेद छे.

वाग्वल्लभमां र ज ना क्रमे २७ वर्ण आण्या छे, तेमज छंदः-कामदुघावत्समां २७ अक्षर राखी छेल्लो लघु मूकी दीधो छे. ए विरुद्ध पडतुं छे. छंदःप्रभाकरमां यथेच्छ गुरु लघु लाववानुं केहेछे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां गुरु लघुना क्रमे अर्थात् रगण जगणना क्रमे नव गण अने तेमां नवमा रगण उपर अंते एक लघु एम अठ्ठावीश वर्ण लाववानुं केहेछे. ने एज प्रमाणे छंदःशास्त्रनी टीकामां गुरु-लघुने क्रमे अठ्ठावीश अक्षर आणी तेमां छेल्लो लघु आण्यो छे. अनंगशेखर आथी उलटुं छे. जुवो अंक १४४८ मे.

१४५० माला. (छंदोलता) २न+७म+ग=२८ वर्ण.

द्वि नगण पर साते मा ते पूठे गा अन्ते
आणो सर्व वर्णो अठ्ठावी' मालामांहे.

१४५१ पन्नगेन्द्र. न+ग+८र=२८ वर्ण.

नगण ने गा पछी आठ छे रा गणो
शोभता पन्नगेन्द्रे बधा वर्ण अठ्ठाविशे.

छंदोलतामां ४लघु+८र=२८ वर्ण लाववा केहेछे, पण अंक १४३३ मे मकरालय छे तेनो आ भेद छे, ते जाणवामां नहि होवाथी छंदोलताना कर्त्ताए भूल करेली जणायछे.

१४५२ शक्रायतन. (वाग्वल्लभ) ९भ+१ग=२८ वर्ण.

पाद विषे वसु भा गण आण
शक्रायतने पछी एक गुरु धर छेवट तो.

१४५३ लावण्यलीलाप्लुत, उद्दाल. १न+८य+ल=२८ वर्ण.

नगण परे आठ या ने ल अन्ते धरो
आप लावण्यलीलाप्लुते पादमां ठीक.

१४५४ आलानिक. (वाग्वल्लभ) ननर+६य+ल=२८ वर्ण.

ननर पर य छो ल अन्त आलानिके
आणजो पादमां सर्व अठ्ठाविशे वर्ण.

१४५५ रंगियो,वर्णरंगी. लघु गुरुनो नियम नथी, अंते ल ग.
९, ७, ७, ९ यति.

नव साति साते ने पाचे, एम यतिना वर्ण, अने गुरु ने लघु, रंगिया विषे.

१४५६ भगवता. (ग. प्र. प्र.) भजस+नभ+जभ+मय+ल.

भा ज स परे न भ करे ज भ धरे
भगवता विषे म य पूठे अन्त ला पाद.

१४५७ अश्वधाटी. तभय+जसर+नतभ+लग. =२९ वर्ण.

ता भा य छे, गण ज सा रा पछी, न त भ छे
अश्वधाटी पदमाहे लघु गुरु वळी.

१४५८ वसुधाधर. (छंद प्रदीप) ९स+२ल=२९ वर्ण।

स स सा स स सा स स सा धरिने लघु बे
वसुधाधर दंडक माह सदा कर्,

१४५९ सौभाग्य. भज+ततत+सयय+नगल=२९ वर्ण.

भा ज पर छे त ता ता गणो सा य या छे न ग ल
पाद सौभाग्य माहे सुकविराय!

गणप्रस्तारप्रकाश

१४६० वर्णक दंडक. २न+७य+लग=२९ वर्ण.

द्वि न गण पर करो या बधा मात तो
वर्णके दंडके पादमां अन्त ला गा धरी.

भाषाछंदोमञ्जरी.

१४६१ शालुर, सालु, सालुर. त+८न+लग=१९ वर्ण.
८,८,१३ यति.

ता शालुर पर वसु, नगण चरम लग,
विरति वसु वसु जग पर धरो.

१ "प्रमाण ए छंद सरस्वतीने पढ्यो, अने सरस्वतीना मुखथी शेषनागे सांभळ्यो, तेणे गरुडने कह्यो." एम लक्ष्यणजननी ग्रंथमां लखेछे

२ गणप्रस्तारप्रभाव

मागधी पिंगळछंदःशास्त्रमां प्रारंभमां बे गुरु+८नगण+१सगण लावीने कयु छे ते माप उपर प्रमाणेज थायछे, पण तेमां पाठांतरे सगणने बदले रगण आवे एम कयु छे

१४६२ स्मारमालाकुल. (वाग्वल्लभ.) स+८य+लग=२९ वर्ण.

स पछी वसु या पछी ला ग तो पाद पादे
रचीने तमे स्मारमालाकुले आणजो.

कामबाण.

कामनां बाण पुष्पनां बनेलां कल्पवामां आव्यां छे अने तेनी संख्या पांच छे ते पुष्पनां नाम नीचे प्रमाणे छेः—

१अरविंद, २अशोक, ३आम्र, ४नवमल्लिका, ५नीलोत्पल.

ए प्रमाणे कामबाण पांच होतां आ दंडक कविए पांच प्रकारना कल्पेला होवा जोइये; पण छंदोवृत्तमुक्तावलीमां लखेछे के,—
स्यात्कामबाणाभिधो दंडको ऽयं यथेच्छं निबद्धैस्तसजैर्यैर्गुरुभ्यां च चित्ताभिहारी.

कामबाणे नामनो दंडक त स ज य ए चार यथेच्छ गण उपर अनुक्रमे बे गुरु लाववाथी चित्तने हरण करे एवो थायछे. वळी आगळ जतां आ ग्रंथकारे भुजगविलास नामनो दंडक लख्यो छे तेनु माप एवुं आप्यु छे के —

यत्र यथारुचि भा विलसन्ति गुरू च स एष भुजंगविलासः
यथारुचि भगण उपर बे गुरु आणवाथी भुजंगविलास थायछे.

आ उपरथी जणायछे के, पांच प्रकारनां कामबाण छे तेने
अनुसरता त स ज न य अने भ एवा पांच गण यथेच्छ लावीने
उपर अनुक्रमे बे गुरु आणतां पांच प्रकारना कामबाण दंडक
थायछे. यथेच्छ एटले आ दंडकना ओछामां ओछा २९ (९ गणना
२७+२ग=२९) वर्ण थाय, त्यांथी प्रारंभ करीने ते ९९९ वर्ण
थता सुधी जेटला करवा होय तेटला भेद प्रत्येक कामबाणना
थइ शकेछे. आ कामबाण दंडक एक बीजाथी ओळखावा माटे जेमां
जे गणनुं प्राधान्य छे ते गणनो अक्षर प्रारंभमां मूक्यो छे. वळी
वधारे स्पष्ट थवामाटे जे, जे पुष्पनां पांच बाण बन्यां छे ते ते पुष्पनुं
नाम अनुक्रमे तेनी साथे मूकीने ते पुष्पना नामथी पण ते दंडक
ओळखाय एम क्रम गोठव्यो छे, ते रीते नीचे प्रमाणे दंडको बनेछेः—

१४६३ त कामबाण, अरविंद, (पद्मः) ९त+२ग=२९ वर्ण.

ताकामबाणे धरो तागणो खंड ने ते
पछी तो करो बे गुरु अन्तमां पद्ममांहे.

प्रत्येक दंडकमां २७ वर्णथी ओछा अक्षर लाववा न जोइये,
एटला माटे अमे ९ तगणना २७ अक्षर उपर बे गुरु मूकी २९
वर्ण कर्या छे. एना भेद वधारवा होय तो १०, ११, १२ इत्यादि
अकेको तगण वधारवाथी ९९९ अक्षर सुधीमां इच्छापूर्वक दंडक
थइ शकेछे.

१४६४ स कामबाण, अशोक. ९स+२ग=२९ वर्ण.

कवि! तुं नव सा गण आण पछी गुरु बे
धर पाद अशोक सकामतणा बाणे.

१४६५ ज कामवाण, आम्र. ९ज+२ग=२९ वर्ण.

धरो ज गणो नव ने पर बे गुरु तो
धरजो पद आम्र सदाय जकामवाणे.

१४६६ य कामवाण, नवमल्लिका. ९य+२ग=२९ वर्ण.

धरो खंड यां ने पछी बे गुरु अन्त आणो
तमे माल्लिका मांह याकामवाणे पादे.

१४६७ भ कामवाण, भास्मरवाण, नीलोत्पल, भुजंगविलास.
९भ+२ग= २९ वर्ण.

छे नव भागणनी पर बे गुरु अन्त
नीलोत्पलमां चरणे कवि! भास्मरवाणे.

१४६८ मानदकर्पा.[१] नतस+नभनस+रन+गग=२९ वर्ण.

नतस छे नाभनस, रोन धर पाद पर,
चरम पछी गींग मानदजकर्पा:

आनी मात्रा ३७ छे एटले झूलणा (प्रभात) रागमां गवायछे. आनां प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां ८+८=१६ वर्ण अने उत्तरार्द्धमां ७+६ अगर ८+५=१३ वर्ण आणवाथी लय ठीक सचवाशे.

[१] छंदमालिका प्रमाणे.

१४६९ भवानिधि[१]. भजसन+नततसय=२७ वर्ण.

भाजसन छे नतत, साय भवनिधि विषे
पादमहिज कवि तो वदेछे.

झूलणा (प्रभात) ना रागमां गवायछे. कारण आनी मात्रा ३७ छे. आना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां ८+८=१६ वर्ण अने उत्तरार्द्धमां ५+६=११ अथवा ७+४ मळी अगियार के तेना उलटा कडका मूकीने ११ वर्ण आणवाथी लय ठीक सचवाशे.

[१] छंदमालिका प्रमाणे. (आ दंडक आटला छपाया बाद मळी आवतां अहिं दाखल कर्यो छे, ते २७ ना वेग्रमां गणवो)

१४७० बीजकर्षा, विद्युत्कर्षा.[1] भज+तनन+सनन+स+र+ग =२८ वर्ण

भाज पर तान, सानान पर सगण छे
रगण पर चरम गा वीजकर्षा.

आनी पण मात्रा ३७ छे, एटले झूलणा (प्रभात) रागमां गवाय-छे. आना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां छ-नव, नव छ, सात आठ, के आठ सातना कडकाथी १५ वर्ण अने उत्तरार्द्धमा ९+४=१३ वर्ण आणवाथी लय ठीक सचवाशे.

१ छंदमालिका प्रमाणे. (आ दंडक आटलुं छपाया बाद मळी आवतां अहि दाखल कर्यो छे ते २८ वर्णना पेटामां गणवो.)

३० वर्णना दंडक.

१४७१ शोभनमणि.[1] ५न+र+नतभ+य=३०वर्ण.

शर[5] न पर रगण धर, नतभ गण ते पछी
यगण पादान्त, शोभनमणीमां.

आ दंडकनी पण मात्रा ३७ थायछे, एटले ते झूलणा (प्रभात) रागमां गवायछे. एना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां १०+८=१८ वर्ण, अने उत्तरार्द्धमां ६+६=१२ अथवा ५+७ अने तेथी उलटा एम १२ वर्ण मूकवाथी लय ठीक सचवाशे.

१ छंदमालिका प्रमाणे.

१४७२ नीलचक्र. ५ रज=३० वर्ण,

राज पाच थायछे बधाय पाद पादमां
सदाय नीलचक्रमांह वर्ण त्रीश भाइ!

१४७३ खंज. ९ नगण+र=३० वर्ण,

नव नगण कविवर! कर तुरत पछी
उपर धर रगण चरण खंजमां.

१४७४ अर्ण,दंडकत्रिभंगी. २ न+८र=३० वर्ण.

नन पर वसु रागणो मानथी आणजो
अर्गना-पादमां, नेथकी त्रीश वर्णो-बने.

१४७५. सिंहविक्रीड मोटो. (१४३९) १० य=३० वर्ण.

नय, अथवा इच्छानुसार यगण मूकवाथी पण आनाज उपभेद थायछे

रचो सिंहविक्रीडमोटो तमे पाद पादे
य-आशा गणी सामटा जेम शोभे रुडेरा.

१४७६ आर्द्रस्तवक. (न,य,न,य,न,य,न,य,न,य.) =३० वर्ण.

शरे नय आणी प्रतिपदमां तो इष्ट
रचजे तुं मन धरी-आर्द्रस्तवक क्रमेथी.

१४७७ बाललीलातुर. गमे ते क्रमे १० गण=३० वर्ण.

बाललीलातुर नामे दंडक रचवा काजे
आवे एवा वर्ण-त्रीश रुडा धरजो जी:

बाललीलातुरमां भ,र,न,न,र,न,ज,न,र,र, गण आण्या छे

१४७८ भांधर.[1] न-न स भ+न न+त र त+य=३० वर्ण.

न न स भ पर न न, आणो त र त चरण,
कवि!-अन्ते य जो करो, तो भांधर जाणो.

1 गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे

१४७९ त्रीसुं कवित* { १६, १४ यति / गुरु लघुनो नियम नहि. } ३० वर्ण.

कुल त्रीश वर्ण पाद यति सोळ चौद धार,
त्रीसुं एम कवित तो चार पादकेरु.

* व्रजभाषामां ३०, ३१, ३२ अने ३३ वर्णना कवित थायछे, ते विषे अमे विशेष वर्णन कवित प्रकरणमां हवे पछी जणावीशु, परंतु अत्रे एटलु जणाववानी आवश्यकता छे के, त्रीश वर्णना कवितमां बधा नियम ३१ वर्णना

कवित प्रमाणेज पाळवामां आवेछे, मात्र छेल्ली यति १५ ने बदले चौदनी थायछे, अने तेमां अंते गुरु राखवामां आवेछे. घनाक्षरी नियम रत्ना-कारना कर्त्ता ३० वर्णना कवितनुं नीचे प्रमाणे उदाहरण आपेछेः—

"जै जै व्रज-दुलह दुलारे जसुदाके सुत,
महाराज मोहन मदन मदहारी;
आनँद अखंड रासमंडल विलास भुव,—
मंडलके आखंडल देव हितकारी;
बंसीधर श्रीधर गुपाल बनमाळधर,
राधावर गोपवर गिरवरधारी;
वृन्दावनचंद नंदनंदन गोविंदश्याम,
सुंदर कुंवर कुंज-मंदिर विहारी."

३१ वर्णना दंडक.

१४८०. कळाधर. (काव्यसुधाकर) ९ रज+ग. =३१ वर्ण.

राज पांच वार थाय अन्त गा कळाधरे,
सदा धरो सुदंडके भले प्रकार भावथी.

१४८१ मनहर. १६,१५ यति. १० म+ग=३१ वर्ण.

सोळे ने तिथिये आवे विश्रामो बे पूरे पादे,
एकत्रीशे गुरु वर्णो सर्वे तेमां आवेछे.

कवित अथवा घनाक्षरीने घणे भागे केटलाक मनहर कहेछे. तेनुं माप जुओ अंक १४८६ मां.

१४८२ मनहर(बीजो.) त ज+स ज+भ ज र स+भ+त+ग=३१ वर्ण.

ताजा सज छे मनहरे बीजे पछी भजर
ते पछी सभा पर ता ते पर गा अन्तमां.

[1]आ दंडक गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

१४८३ दंभोलि. न+ग+९र=३१वर्ण.

नगण ने एक गुरु धरी ते पछी खंड आणो
तमे रागणो त्रीश ने एक दंभोलिमां.

जुवो अंर-१४११ नी टीप; छंदोलता प्रमाणे एनुं नाम अंभोलि छे अने तेनुं माप तेना जणाव्या प्रमाणे नीचे मुजब थायछे:—

१४८४ अंभोलि. न+ल+९र=३१ वर्ण.

नगण धरी ल लावो तमे खंड रा ते पछी
पाद अंभोलि मध्ये करो वर्ण एकत्रीशे.

दंभोलि एटले इन्द्रनु वज्र पण अंभोलिनो प्रसिद्ध अर्थ जाणवामां नथी, कदापि अंभस्+आलि=अंभोलि एटले पाणी उपर फरनारो भ्रमर एम अर्थ थइ शके.

आ प्रमाणे होतां पण अंभोलि नाम अने तेनुं माप दंभोलिथी भिन्न छे एटले अमे एने जूदो दाखल कर्यो छे

१४८५ मुक्तामणि.[१] भमर+तरज+सय+मज+ग=३१ वर्ण.

भा म र साथे ता रा ज छे मुक्तामणि विषे
सया पर मजा पछी अन्ते गा थाय पादमां.

१ छंदमालिका प्रमाणे.

१४८६ घनाक्षरी. / घनाक्षर. } लघु गुरुनो नियम नथी, अन्ते ग=३१ वर्ण. कवित. १६,१५ यति.

एकत्रीश वर्ण जेमां गुरु लघु निम नहि,
अंते गुरु एक यति सोळे घनाक्षरीमां.

केटलाक आने कावित अथवा मनहर केहेछे.

कवित प्रकरण.

घनाक्षरी आदि लइने केटलाक दंडक कवितना सामान्य नामथी ओळखायछे माटे आ ठेकाणे "कवित" विषे विस्तार आपवानी अगत्य छे.

छंदःप्रभाकरमां कह्युं छे के "कवितनी लय ठीक थवा माटे प्रथम तेनी ध्वनी सिद्ध करवी जोइये, पछी तेमां सम अथवा विषम प्रयोगनी योग्य योजना करवी जोइये. कवितमां सम (बेकी) प्रयोग बहु कर्णमधुर छे, परंतु कहिंक विषम-(एकी) प्रयोग आवी जाय तो तेनी आगळ एक बीजो विषम प्रयोग आणवाथी ते विषमता मटी समता बनी जायछे.

कवितनो साधारण नियम एवो छे के- पेहेलां त्रण अष्टक अने पछी एक सप्तक मूकवुं. अर्थात् ८,८,८,७ एम वर्ण मूकवा, परंतु शब्दयोजना के विभक्तियोना संबंधथी ए विभाग करवामां कंइ कंइ अंतर पडी जायछे. जेमके:—

आनंदके कंद जग ८	ज्यावन जगत बद ८	दशरथनंदके ७	निवाहंइ नियहिये; ८
कहैं पद्माकर ७	पवित्र पन पालिवेको ९	चोर चक्र पाणिके ७	चरित्रनकों चाहिये; ८
अवधविहारीके ७	विनोदनमेंबीधिबीधि ९	गीध गुह गीधेके ७	गुणानुवाद गहिये, ८
रैनदिनआठोजाम ८	राम राम राम राम ८	सीतारामसीताराम ८	सीतारामकहिये. ७

आवी कठणाइने लीधे प्राचीन ग्रंथकारोए केवळ १६, १५ यति मानी छे.

सत्य छे के–"शिष्टस्य गतिश्चिन्तनीया." परतु सूक्ष्मदृष्टिथी जोइयेछिये तो, एमा पण उपर जणावेलो नियम पळायछे. बीजा अने त्रीजा चरणना पूर्वार्द्धमा १६ वर्ण छे, तो तेमाए ७ विषम आगळ-९ विषम आवीज जायछे, एटले बे विषम मळीने एक सम थइ जायछे. परतु उत्तरार्द्ध केवळ १५ वर्णनु आयछे, ते पोते विषम अक छे, एटले तेना विभागमा बे पैकी एक स्थानमा विषमता अवश्य आववानीज. ते कारणथी आठ आठ वर्णना त्रण अष्टक अने अतमा एक सप्तक मानी लेवु बराबर छे जेमके उपरनु कवित्त नीचेना कोष्टकमा बतावामा आवेछे —

आनंदके कदजग ८	ज्याका जगतवद ८	दशरथ नदक नि ८	बाहेइ निवहिय, ७
कैहैं पद्माकर प ८	विघ्नपर पालिवेका ८	धारचक्रपाणिके च ८	रिघ्नक्का चहिये ७
अवधविहारीके बी ८	नोदनमें बाधिविधि ८	गीधगुदगीधेके गु ८	णानुवाद गहिये ७
रैनदिनआठोंनाम ८	रामराम रामराम ८	सीतारामसीताराम ८	सीताराम कहिये ७

जे अष्टकमा सम अधिक होय तेने "सम" अने जेमा विषम अधिक होयतेने "विषम" कहेवायछे. सम विषमनो विचार विशेषे करीने अष्टकना प्रथमार्द्धमाज करवो जोइये. सप्तकमा तो यथा प्रयोग विषमज आयछे, ते माटे नीचे जणावेला नियमो ध्यानमा राखवा जोइये —

"आनंदके" विभक्ति सहित चार वर्णनुं पद........ = सम.
"कहै पद" बे वर्णना बे शब्द .... = सम.
"अवध" त्रण वर्णनो शब्द+"विहारी" त्रण वर्णनो शब्द=विषम.
"रैन" बे वर्णनो शब्द.................................= सम.
"ज्यावन" त्रण वर्णनो शब्द ....=विषम.
"दशरथ" चार वर्णनो शब्द ....= सम.

(१) अष्टकमां बधा सम शब्दो रही शकेछे. जेम–"रैनादिन आठों जाम," "कहे पदमाकरप" "वित्रपन पालिवेको" ए त्रणे सम प्रयोग छे. जे अष्टकनो प्रारंभ अपूर्ण शब्दथी थाय छे, तेमां ते अपूर्णने सम मानी लेवो जोइये; कारणके एनी विषमता तेना आदिना पदांतमां लोपाइ गइ होय छे. जेमके:– "वित्रपन"=४ वर्ण. –"नोदनमे" ४ वर्ण. ए बे सम छे.

(२) अष्टकमां विषम विषम अने सम पण रही शकेछे. जेमके "अवध विहारीके वि", "कुंजमें ललित केलि," "कौनको सुजस गाय," ए त्रणे विषम प्रयोग छे.

(३) अष्टकमां कहिं कहिं सम, विषम, विषम, एम पण आवेछे. जेम "राम भजत करत." ए विषम प्रयोग छे. आ सम, विषम, विषम, प्रयोग प्रथम कहेला बे प्रयोगोथी उतरतो छे एटले विशेष करीने एवो प्रयोग थतो नथी. एटले एनी गणना सर्वथी छेल्ली करी छे. केवल बत्रीश वर्णोना कवित अथवा बीजा दंडकोमां ए कहिं कहिं काममां आवेछे अने ए प्रयोग ज्यां काममां आवेछे, त्यां आदिथी अंतसुधी आखुं अष्टक एक सरखुं थायछे.

(४) बे विषमना वचमां एक सम आववुं न जोइये. जेमके "कुंजमें केलि ललित" "कौनको गाय सुजस" इत्यादि. ए

(५) अंत्य सप्तकमां सात वर्ण होवाना कारणथी सर्व प्रयोग विषम थायछे. जेमके "सीताराम कहिये." "रिझनको चाहिये," "गानुवाद गहिये." "बाहेड निवाहिये." "रामहिं मनाइये." "राधिके शरण है." इत्यादि.

(६) सोळ अने पंदर वर्णोपर शब्द पूर्ण होनोज जोइये.

(७) सम अथवा विषम प्रयोगनो योग्य उपयोग प्रत्येक अष्टकमां अथवा अष्टकना परस्पर संबंधमा पण राखवो योग्य छे. निकृष्ट प्रयोग रचवाथी बनी शके तेटलुं अलग रेहेवुं जोइये, नहितो कवित कर्णकटु थशे.

(८) कवितनी रचनामाटे नीचेनुं कवित कंठस्थ करवुं लाभकारी थशे.
आठ आठ आठ पछी, सात वर्ण सारा सज, अंतपर एक गुरु, धारी धारी आणजे;
सम सम सम सम, विषम विषम सम, समपछी बे विषम, एम योग जाणजे,
युगल विषम मध्य, समपद रज नहिं, लय नष्ट थाय, राज्ये एम उर धारजे,
आवी रीति प्रतिपद, नियम कवित केरा, अंतरमां आणी आणी, कवित सुधारजे.

प्रत्येक कवित अथवा सवैयाने बे वार बोलवानी रीति छे, केमके तेनो संपूर्ण आशय चोथा चरणमा अथवा तेना पण उत्तरार्द्धमां रहेलो होयछे. (एटले चोथुं चरण बोलवानो समय आवेछे, त्या सुधी पेहेला त्रण चरणनो संबंध ठीक स्मरणमां रेहेतो नथी, एटले तेने बे वार बोलवाथी सारी रीते अर्थ समजी शकायछे." छंद प्रभाकर बीजी आवृत्ति (पृ. १८८ थी १९०)

कवित विषे विशेष विचार.

जे दंडक कवितना सामान्य नामथी ओळखाय छे, अने जे ३०थी ते ३३ वर्ण सुधीना बनेछे, ते विषे श्रीयुत बाबू जगन्नाथदासे "घनाक्षरी नियम रत्नाकर" नामनो ग्रंथ बनाव्यो छे; तेमा तेना विशेष नियम नीचे प्रमाणे जणाव्या छे —

नियम पेहेलो.

कवितना चरणंनी आदिमा तथा ४,८,१२,१६,२०,२४ अने २८ एम चचार चडता वर्ण पछी कोइ शब्दनो आरंभ थाय तो तेना आदिमा जगण (ISI) के तगण (SSI) न आववो जोइए; वळी एवा शब्दना आरंभमां यगण (ISS) के मगण (SSS) आववाथी पण मध्यम श्रेणीनी गति थइ जायछे.

पण तेमां एक वात लक्षमा राखवानी छे के, त्रण वर्णथी ओछा वर्णना शब्दने आ नियम लागु पडतो नथी. केमके त्रण वर्णथी ओछा वर्णनो गण बनी शकतो नथी; जेमके "न होय" एम आदिमा रचना आवे, तेमा आदि शब्द "न" त्रण अक्षरनो गण बनेछे ते करता ओछी संख्यानो छे, ते साथे "होय" शब्द जोडायाथी जगण बनेछे; अने आदिमां जगण आणवानो निषेध कर्यो छे; तोपण ते "न होय" एवी रचनाने लागु पडतो नथी. पण—

"निकुंज विलोकी वर वृंदावन काननके,
छाजे नंदन यौं शोभा सरसति है."

आ उदाहरणमां "निकुंज" शब्द त्रण अक्षरनो परिपूर्ण छे. अने तेनो जगण बनेछे, तेथी सरळताथी बोलवामां उचार करी शकातो नथी, तो उक्त नियमथी विरुद्ध छे.

चार अक्षर पछी पण जगणादि शब्दनो निषेध छे.जेमके-

"दूरहीसों कलींद सुता रमन वीचिनिसों,
भीनी श्याम रंगमें सुखद दरसाति है."

एमां चार अक्षरा पछी "कलींद" शब्द जगणादिवाळो होतां गति बगडेछे.

आरंभमां तगणादि शब्दनो निषेध छे. जेमके—

"आकाशमें लसति सुहाइ मनभाइ घटा,
छहरी छहरी बुंद भीनी बरसती है".

एमां आरंभमां "आकाशमें" ए शब्द तगणादि छे, तेथी गति बगडेछे.

पण चार अक्षर पछी तगणादि शब्दनो निषेध छे. जेमके—

"ऐसे समे सारंगधरपै क्यौं न चले वीर!
बैठी कहा मनमें मसूसी तरसती है".

एमां आरंभना चार अक्षर पछी सारंगधर अंतर्गत "सारंग" शब्द तगणादि छे, तेथी गति बगडेछे.

आरंभमां मगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"आकांक्षी तिहारे दरशनको भयो हौं हौं तो"—

एमां आरंभनो "आकांक्षी" शब्द मगण होतां गतिने मध्यम करेछे.

चार वर्ण पछी मगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"केसममें तातारी मृगमद सुगंध लसै"—इ.

एमां आरंभना चार अक्षर पछी "तातारी" शब्द मगण छे. तेथी मध्यम गति थायछे.

आरंभमां यगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"निकाई तिहारी पर वारो जाती रंभा रमा—" इ.

एमां प्रारंभमां "निकाई" शब्द यगण होतां गति मध्यम श्रेणीनी बनावी देछे.

चार वर्ण पछी पण यगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"जोम भरी जवानी"—इ०

एमां चार अक्षर पछी "जवानी" शब्द यगण छे, तेथी गति मध्यम थायछे.

एज रीते ८, १२, इत्यादि वर्णो पछीनिमाटे पण समजी लेवुं.

पेहेला नियमनो अपवाद.

जो आरंभमां अथवा चार, आठ, इत्यादि वर्णोनी पछी एवो शब्द आवे के जे चार अक्षरनो पूरो एक शब्द होय तो जगण, तगण, मगण तथा यगण आरंभमां अथवा चार वगेरे वर्णो पछी आववा विषे आगळ जे पेहेला नियममां कही गया छिये तेनो बाध आवतो नथी; पण जो ते चार अक्षरना शब्दनो अन्त्याक्षर गुरु होय तो गति मध्यम थइ जायछे.

चार वर्णमां जगणादि शब्द निर्दोषनुं उदाहरण.

"छपाकर छत्र मोती झालरन छत्र मानो."

एमां आरंभे "छपाकर" शब्द जगणादि छे, तथापि चार अक्षरनो पूरो शब्द होतां ते निर्दोष छे.

चार वर्णना तगणादि शब्द निर्दोषनुं उदाहरण.

"चामीकर देखिकै लजात रूप रावरो है."

एमां आरंभमां "चामीकर" शब्द तगणादि छे, तोपण ते चार वर्णनो एक पूरो शब्द होवाथी निर्दोष छे.

चार वर्णना यगणादि शब्द मध्यम नहि. उदाहरण.

"निराधार प्राण, बिन प्रीतम रहेंगे किमि."

एमां आरंभमां "निराधार" शब्द यगणादि छे, परंतु ते चार वर्णनो एक पूर्ण शब्द होवाथी मध्यम नथी.

चार वर्णनो मगणादि शब्द मध्यम नहि. उदाहरण.

"पारावार पूरन अपार पार ब्रह्म रासि"—इ.

एमां आरंभ मां "पारावार" शब्द मगणादि छे, परंतु चार वर्णनो एक पूर्ण शब्द होवाथी मध्यम नथी.

एज प्रमाणे चार, आठ, इत्यादि वर्णो पछीने माटे पण समजी लेवुं.

चार वर्णना जगणादि गुर्वन्त शब्द मध्यम.

"विभावरी संग कोक शोक लाग्यो वाढन है"

एमां आरंभमां "विभावरी" शब्द जगणादि छे, अने चार वर्णनो पूरो शब्द छे, तथापि अंतमां गुरु होवाना कारणथी मध्यम छे.

चार वर्णना तगणादि गुर्वंत शब्द मध्यम.

"धर्मध्वजा धारी है विचारत न बात नेक"–

एमां आरंभमां "धर्मध्वजा" तगणादि शब्द जो के चार व नो पूरो छे, तथापि गुर्वंत होवाना कारणथी मध्यम छे.

चार अक्षरना मगणादि गुर्वन्त शब्द मध्यम.

"धर्माचारी धर्मकी कहानी कहें लाख भांति"

एमां आरभमां "धर्माचारी" शब्द मगणादि चार अक्षर पूरो छे, तोपण गुर्वन्त होवाथी मध्यम गणायछे.

चार वर्णना यगणादि गुर्वन्त शब्द मध्यम.

"समाधानी करत रहत समाधान सदा"–

एमां आरंभमां "समाधानी" यगणादि शब्द जो के चा वर्णनो पूरो छे, तथापि गुर्वन्त होवाना कारणथी मध्यम छे.

एज प्रमाणे चार, आठ, इत्यादि वर्णो पछीना वर्ण माटे प समजवु.

नियम बीजो.

जो कोइ शब्द ५, ९, १३, १७, २१, २५, अथव २९ अक्षर उपर समाप्त थाय तो तेना अंतमां लघु गुरु (।S,

आववा जोइये. परंतु तेना अंतमां जो बे गुरु (SS) आवे तो तेनी गति सर्वथा नष्ट तो थती नथी, पण मध्यम श्रेणीनी तो अवश्य थइ जायछेः—

निर्दोषनुं उदाहरण.

"सिन्धुको सपूत सुत सिन्धुतनयाको बन्धु"–इ.
एमां "तनया" शब्द तेर अक्षर उपर समाप्त थायछे, अने तेना अंतमां लघु-गुरु (IS) छे, तेथी ते निर्दोष छे.

बे गुरु मध्यमनुं उदाहरण.

"आज सुदामाके राइ तन्दुल अघाने इमि." इ
एमां "सुदामा" शब्द पांच वर्णपर समास थायछे, अने तेना अंतमां बे गुरु छे, तेथी गति मध्यम थइ गइ छे.

दूषितनुं उदाहरण.

"निरखि श्याम सुघर धीरज धरै न मन"–इत्यादि. तथा
"निरखौ मृदु निकाइ धीरज धरै न मन"–इत्यादि.
आ बंने उदाहरणोमां "श्याम" तथा "मृदु" शब्दो पाच वर्ण पर समास थायछे, परंतु तेना अंतमां लघु गुरु (IS) अथवा बे गुरु (SS) न होवाथी गति बगडी गइ छे.

एज प्रकारे नव, तेर, सत्तर, इत्यादि अक्षर पर पूर्ण थता शब्द विषे पण समजी लेवुं.

नियम त्रीजो.

५, ९, १३, १७, २१, २५ अने २९ वर्णोनी पछी आवनारो शब्द जो एक वर्णनो होय तो ते गमे तो लघु होय अथवा गुरु होयतो चाले; परंतु ते जो एकथी वधारे अक्षरनो होय तो तेना आदिमां लघु आणवो जोइए.

निर्दोषपनुं उदाहरण.

५ १० १४
१ पांच नव तेर अने, चार पार चडतानी,

१८ २२ २५ ३०
पाछळ होय जो शब्द, एक वर्ण आवतो;

५ १० १४
२ ते लघु के गुरु होय, तोय तेनो दोष नहि,

१८ २२ २६ ३०
उलटो जणाय ए तो, कवि मन भावतो;

५ १० १४
३ पण जो ते शब्दमांह, वधु वर्ण होय तो तो,

१८ २२ २५ ३०
लघु लागे कर्णप्रिय, कवित शोभावतो;

५ १० १४
४ पट दश चौद अने, ते पछी अढार वावी

१८ २२ २५ ३०
छवीश ने त्रीश एम, लघु कवि लावतो.

आना प्रथम चरणमां "तेर" ए शब्द अंतर्गत "र" लघु छे. अने तेर वर्ण पछी "चडतानी" शब्द छे ते "च" लघुथी प्रारभायलो छे. प्रथम चरणना उत्तरार्द्धमां "पाछळ" शब्द अंतर्गत १८मो वर्ण "छ" लघु छे अने बावीशमो वर्ण "जो" परिपूर्ण एकज वर्णनो एक शब्द छे तेथी ते गुरु छे तोपण तेनो बाध नथी. ए प्रमाणे बीजानुं पण अंक उपरथी समजी लेवुं.

दूषितनुं उदाहरण.

"मेघ बरसैं धीर बडी बडी हैं बुंद लखो" इत्यादि. एमां पांचमा अक्षर पछी "धीर" शब्दनो आरंभ गुरुथी थायछे, तेथी गति दूषित थायछे.

एज प्रमाणे ९, १३ इत्यादि वर्णोनी पछी पण समजी लेवुं.

नियम चोथो.

२, ६, १०, १४, १८, २२ अने २६ वर्णो पछी जे शब्द

आवे तेना आदिमां जगण, तगण, मगण, अने यगणमांथी, गमे ते होय तो मध्यम गति थायछे.

बे अक्षर पछी जगणादि मध्यमनुं उदाहरण..

"देखी निकुंजनकी अनुप सुखमाको रूप,
हियमें हुलास बाढयो कहत बनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षरो पछी "निकुंजन" जगणादि शब्द मध्यम छे.

बे अक्षर पछी तगणादि शब्द मध्यम.

"घेरि आकाशहिं राख्यो सरस घनेरी घटा,
चपला चमंकै चख चहत बनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षर पछी "आकाश" शब्द तगण होवाथी मध्यम.

बे अक्षरो पछी मगणादि शब्द मध्यम.

"गर्जै सारंगीनि मनु गुंजै यों भँवर भीर,
केकी सहनाइसुर रंचक गनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षरपछी "सारगीनि" शब्द मगणादि होवाथी मध्यम छे.

बे अक्षर पछी यगणादि शब्द मध्यम.

"ऐसी निकाईहिं लखि मान तजी एरी बीर,
भोगी जनहूंसों सुनि धीरज ठनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षरो पछी "निकाई" शब्द यगण होवाथी मध्यम छे. एज प्रमाणे ६, १० इत्यादि अक्षरो पछी पण समजी लेवुं.

नियम पांचमो.

३,७,११,१५,१९,२३ अने २७ अक्षरो पछी जे शब्द आवे अने ते एकथी वधारे अक्षरनो होय तो तेना आरंभमां लघु

गुरु (।ऽ) होवानी आवश्यकता छे, पण जो ते एकज अक्षरनो शब्द होय तो तेने माटे कंइ नियम नथी.

निर्दोषपणुं उदाहरण.

"शोभाकों सकेलि ऊंची बेलि बाँधी बलीभद्र,
राख्यो सम लोचन कुरंगनिको रोस है;
दीपतिको दीपकके मुख दीपको सुमेरु,
मृदु मुख सारसको सिफाकन्द जोस है;
कलपतरोवरकी कली कैधों कुंदकली,
उपमा अनुपनिको चिन्नि निसोस है;
तिलको सुमन है कि नासिका तरुनि तेरी,
सुखकी सरन कैधों सौरभको कोस है."

आमां पहेला चरणमां त्रण अक्षर पछी "सकेलि" शब्द अने २३ वर्ण पछी "कुरंग" शब्द; तथा त्रीजा चरणमां ३ अक्षर पछी "तरोवर" शब्द, १९ अक्षर पछी "अनुपनि" शब्द अने २७ अक्षर पछी "निसोस" शब्द लघु गुरु (।ऽ) थी आरंभायछे.

बीजा चरणमां ३ अक्षर पछी "कों" शब्द, ७ अक्षर पछी "कै" शब्द अने २३ अक्षर पछी "कों" शब्द गुरु पडेलाछे.

वळी चोथा चरणमां ७ अक्षर पछी "कि" शब्द लघु छे, पण ते एकाक्षरी शब्द होवाथी बंने रूप निर्दोष छे.

एज प्रमाणे बीजा स्थानोपर पण समजी लेवुं जोइये.

दूषित उदाहरण.

"सरस घन लसत नाचत मयूरगन" इ.

"सरस कुंजनी लखि नाचत मयूरगन" इ.

"सरस आकाश लसै नाचत मयूरगन" इ.

एमां त्रण वर्णो पछी "वन" "कुंज" तथा "आकाश" शब्दो लघु गुरु (।ऽ) थी आरंभाता नथी, तेथी गति बगडेछे.

एज रीते बीजां स्थानो उपर पण समजी लेवुं जोइये.

पांचमा नियममां अपवाद.

जो ३ अक्षर पछी नगण (।।।) नो पूरो शब्द आवे तो चाले. अर्थात् जो तेना आरंभमां लघु गुरु (।ऽ) थता नथी, तोपण ते निर्दोष छे.

जेम—उपरना "शोभाको सकेलि" ए शब्दोथी आरंभाता कवितना चोथा चरणमां ३ अक्षर पछी "सुमन" शब्द तथा ११ अक्षर पछी "तरुनि" शब्द त्रण लघुना पूरा होवाथी निर्दोष छे.

एज प्रमाणे बीजी जग्याए पण समजवुं.

एकंदर गुरु लघु संख्याविषे.

अंते एक वात ध्यान आपवा योग्य जणायछे के—प्रस्तारनी रीति प्रमाणे जेटलां रूप घनाक्षरीनां थाय, तेटलां तमाम आवी शकेछे, तोपण घणा लघु अथवा घणा गुरु एकज स्थानमां आववाथी रुचिकर थता नथी एटले ए वात उपर ध्यान आपवुं जोइये के,—१२थी वधारे गुरु अने २४थी वधारे लघु एकठा न थइ जाय तो सारुं. १० गुरु तथा २२ लघु सुधीनां उदाहरणो मळी आवेछे.

सामान्य विचार.

कवितनी रचनामां कये स्थाने केवा प्रकारना कया शब्दनो

केवी रीते योजना करवी, ए कर्त्तोना ज्ञान, अनुभव, सुघडता, सहृदयता, अभ्यास अने निपुणता उपर आधार राखेछे. ए विषे, व्रजभाषाना कवि पद्माकर, पजनेस, तथा बुंदेलखंडी किशोरादिनां कवितोनी गति सारी मार्गदर्शक थशे.

३० अने ३३ अक्षरनां कवित घणा कवियोना काव्यमां, जोवामां आवतां नथी. अने ते कानने पण विशेष रुचिकर थतां नथी. तेथी ते विषे विशेष वर्णन करवा उचित धारता नथी. जे नियमो ३१ तथा ३२ वर्णना कवितोने माटे नक्की करवामां आव्या छे, तेज ३० अने ३३ वर्णनां कवितोने पण लागु पडेछे.

३१ वर्णना कवितमांथी एक अंत्याक्षर कमी करवाथी ३० अक्षरवाळुं कवित बनी शकेछे. अने ३२ अक्षरवाळा कवितना अंतमा एक अक्षर वधारवाथी ३३ अक्षरवाळुं कवित थायछे. परतु ३३ अक्षरवाळा कवितमा अंतना त्रण किंवा वधारे अक्षरो लघु होवानी आवश्यकता जणायछे. अथवा वीप्सा थवा माटे त्रण लघु अक्षरवाळो शब्द बे वार आवे तो ते अत्युत्तम छे.

यति विचार.

विशेषे करीने प्रत्येक प्रथमा कवितमां १६ अक्षरे यति मानी छे एटले "मनहर घनाक्षरी"ना एक चरणमां १६,१५ अने "रूपघनाक्षरी"ना प्रत्येक चरणमा १६,१६ अक्षरे यति आवे, एम रीते ३० अक्षरवाळा कवितमां १६ १४, अने ३३ अक्षरवाळा कवितमां १६, १७. अक्षरे यति आवेछे. कोइ कोइ कवियें ८,८,८ उपर त्रण यतियो मानी छे, पण ते नियम सुप्रसिद्ध कवियोनां कवितोमा पण सर्वत्र पळायो नथी. एटले सर्वसमत नथी. वळी १६ अक्षर उपर यति नक्की,

करेली छे, तथापि केटलाक सारा कवियोए ते नियमनो केटलीक जगोए भंग कर्यो छे, तेम छतां तेवां कवित कोइ पण रीते अरुचिकर थतां नथी–अर्थात् १६ अक्षर पर यतिनो नियम छे, पण तेनी अति आवश्यकता नथी, एम जणाई आवेछे.

साधारण रीते आवा दंडको कवितनी संज्ञाथी ओळखायछे, ते नीचे प्रमाणेः—

क्रम.	अंक	नाम.	माप.	च
१	१४७९	श्रीगुं कवित......	गुरु लघुनो नियम नहि अते गुरु १६, १४ यति	
२	१४८६	घनाक्षरी, घनाक्षर......	गुरु लघुनो नियम नहि अते ग. १६, १५ यति.	३
३	१४८७	कवित्त, मनहरण........	लघु गुरुनो नियम नहि ८, ८, ८, ७ यति.	३
४	१४८८	विशाळ	गुरु लघुनो नियम नहि. १६, १५ यति.	३
५	१४८९	खंजविशाळ............	गुरु लघुनो नियम नहि. १५, १६ यति.	३
६	१४९०	जनहरण.	३० लघु+ग,................	३
७	१४९१	चर्चकडुकली	यथेच्छ ३० वर्ण+गल......	३
८	१४९२	उपविशाळ...............	यथेच्छ ३० वर्ण+गल. १६, १६ यति.	३
९	१४९३	द्वितीय उपविशाळ......	यथेच्छ ३० वर्ण +लल. १६, १६ यति.	३
१०	१४९४	कृपाण, किरपाण......	यथेच्छ ३० वर्ण+गल ८, ८, ८, ८ यति.	३
११	१४९५	रूपक घनाक्षरी, रूप घनाक्षरी..................	गुरु लघुनो नियम नहि अते लल ८, ८, ८, ८ यति.	३
१२	१४९६	जलहरण, धर्मीडुं कवित्त	यथेच्छ ३० वर्ण+लल ८, ८, ९, ७ यति.	३

१३	१४९७	मनोहर	यथेच्छ ३० वर्ण+लल. ८, ८, ८, ८ यति.	३२
१४	१४९८	रुपीरा	यथेच्छ ३१ वर्ण ल. १०, ८, ८, ६ यति.	३२
१५	१४९९	डमरु	बधा लघु वर्ण.	३२
१६	१५०४	विजया	८, ८, ८, ८ यति=३२ वर्ण. अंते लग अथवा नगण.	३२
१७	१५०५	तेत्रीशुं कवित	यथेच्छ ३३ वर्ण. गुरु लघुनो नियम नहि. १६, १७ यति.	३३

१४८७ कवित, मनहरण. लघु गुरुनो नियम नहि ८, ८, ८, ७ यति. ३१ वर्ण.

आठ आठ आठ साते, यति एकत्रीश मांहे,
गुरु लघु केरो निंम, कवितमां छे नहि.

आने पण केटलाक मनहर केहेछे.

एकत्रीशुं, बत्रीशुं अने तेत्रीशुं कवित केहेवायछे. वृत्तरत्नावलीमां नीचे प्रमाणे छेः—

एकद्वित्रियुतास्त्रिंशद्वर्णाः संति कवित्वके,
अन्ते गुरुर्लघुर्वीप्साऽत्र क्रमात् कविभिःकृता
वीप्सा त्रिवर्णाभिहिता गुरुशून्या सुखावहा,
अन्यथा कर्णतुलयां तोलिता विषमा भवेत्.

व्रजभाषामां कवित घणां रचायां छे, अने तेमां उपर लख्या प्रमाणे प्रासमां वीप्सा आणेली घणी जोवामां आवेछे, अने ते बत्रीशां अने तेत्रीशां कवितमां होयछे. तेमां छेल्ला बे के त्रण लघुवाळी वीप्सा मधुरी लागेछे.

मनहरण दंडकनुं राजा संग्रामसिंहजीकृत काव्यार्णवमां १६ अने १५ अक्षर मळी ३१ अक्षरनुं चरण कह्युं छे. अने तेनुं बीजुं नाम सौरदंडक आप्युं छे. वळी वृंदावनकृत छंदो-

निचि पिंगळमां मनहरण दंडकना (१) प्रकर्ष, (२) काम, (३) सोमकर, अने (४) शोभाधर ए प्रमाणे चार भेद कह्या छे, तेनां लक्षण नीचे प्रमाणे आप्यां छेः—

(१) प्रकर्षनुं लक्षण. (दोहा).

शश दश पुनि पट नख बरन, चरन होत विश्राम;
इकतिस बरनहि अंत गुरु, दंडक प्रकर्ष नाम.

प्रथमनो "शश" शब्द ते दशने बदले हस्तदीप होय तो अने नख एटले वीशने बदले पांच गणिये तो १०,१०,६,५ =३१ वर्ण, तेमां अंते गुरु, एवो अर्थ थाय.

(२) कामनुं लक्षण. (दोहा)

वसु वसु वसु पुनि सात पर, विरति अंत गुरु होय;
इकति बरन वसु चरनहिं, काम नाम है सोय.

८,८,८,७=३१ वर्ण, तेमां अंते गुरु, तेने काम दंडक केहे छे. उपर जणावेला काव्यार्णव ग्रंथमां पण आ दंडकनुं माप उपर प्रमाणे छे. उपरना दोहाना उत्तरार्द्धमां "वसु चरनहि" ए कंइ अशुद्धि छे.

(३) सोमकर. लक्षण. (दोहा)

अंत गुरुहि कामस बरन, चरन एक परमान;
वसु वसु पुनि पंद्रह विरति, कहत सोमकर जान.

८,८,१५=३१ वर्ण तेमां अंते गुरु. "कामस बरन" एटले काम समान वरण ३१ एवो अर्थ थइ शके.

(४) शोभाधर. लक्षण, (दोहा)

दश दश पद नव पर विरति, प्रथम तृतिय पद होय;
चतुर द्वितीय वसु आठपर, नव अक्षरपर सोय.
इकतिस बरन सुचरन इक, पछपाछे गुरु दीन;
सो शोभाधर कहतहै, वृंदावन परबीन.

दश, दश, छ, अने नवने बदले मख एटले पांच करिये तो पेहेला तथा त्रीजा पदमां १०+१०+६+५=३१ वर्ण थाय. अने बीजा तथा चोथामां चतुर द्वितीय=६+८+८+९=३१ वर्ण थाय अने दरेक पदने अन्ते गुरु आवे.

१४८८ विशाळ. लघु गुरुनो नियम नहि एवा ३१ वर्ण. १६,१५ यति,

नियम विनाना वर्ण एकत्रीश विशाळमां,
सोळने पंदरपर विरति रचायछे.

छंदोवृत्तमुक्तावली प्रमाणे.

१४८९ खंजविशाळ. गुरु लघुनो नियम नहि एवा ३१ वर्ण. १५,१६ यति.

तिथि सोळ यतिथी वर्ण एम एकत्रीश,
चरण खंजविशाळ कविवर! तुं संभाळ.

छंदोवृत्तमुक्तावलि प्रमाणे कृष्ण कवि कलानिधिकृत वृत्तचंद्रिकामां आनुं नाम चपलाघनाक्षरी जणाव्युं छे.

१४९० जनहरण. ३० लघु+ग=३१ वर्ण.

जनहरण चरण त्रीश लघु धरी रच,
उपर पृथिवी. गुरु धर तुं चरममां.

छंदःप्रभाकरमां जणावेल छे के कोइ कोइ कविये आने जलहरण कह्यो छे ते अप्रमाण छे गणप्रस्तारप्रकाशवाळा रामदासनिये एने मनहरण मान्यो छे

३२ वर्णना दंडक.

१४९१ वर्णककुंडली. यथेच्छ वर्ण ३०+ग+ल=३२ वर्ण.

वर्णककुंडली विषे, यथेच्छ त्रीश अक्षरो
ते पर अन्तमां गुरु, लघु लावो धारी आप!

१४९२ उपविशाल. यथेच्छ वर्ण ३०+गल=३२वर्ण. १६,१६ यति.

त्रीश छे यथेच्छ वर्ण गुरु लघु अन्तपर,
उपविशाल कविते सोळ सोळ पर छेद.

छंदोवृत्तमुक्तावली तथा कलानिधिकृत वृत्तचंद्रिका प्रमाणें.

१४९३ द्वितीय उपविशाल. यथेच्छ वर्ण ३०+ल+ल=३२ वर्ण. तेमां १६, १६ यति.

त्रीश वर्ण गमेतेम पछी बे लघु छे अन्ते,
द्वितीय उपविशाल छेद सोळ सोळ-पर.

१४९४ कृपाण, किरपाण. यथेच्छ ३० वर्ण+गल=३२ तेमां ८,८,८,८ यति.

कृपाणमां आठ आठ, ऐम यति केरो पाठ,
बत्रीस वरण ठाठ, चरण चरम गा ल.

छंद प्रभाकर प्रमाणे आमां प्रत्येक यति सानुप्रास लाववी जोइये. विशेषे कवीने आ वृत्तमां वीर रसनुं वर्णन थायछे प्रत्येक चरणना अंतमां न कारनो प्रयोग अति कर्णमधुर मान्यो छे जमके, तेना उदाहरणमां "महान घमसान, तडितान" इत्यादि शब्द आवेछे, जुओ छंद प्रभाकर बीजी आवृत्ति पृ १९३

१४९५ रूपकघनाक्षरी, रूपघनाक्षरी, वर्णकमनहर.

लघु गुरुनो नियम नथी, अन्ते ल. ८,८,८,८ यति=३२ वर्ण.

रूपकघनाक्षरीमां, चार यति आठ केरा,
अन्ते लघु आणो एक, कुल वर्ण ३२ माह.

छंदोलता तथा छंदःप्रभाकर १६,१६ यति केहेछे. भाषा छंदोमंजरी आने वर्णक्रमनहर केहेछे.

१४९६ जलहरण, {लघु गुरुनो नियम नथी. } ३२ वर्ण.
बत्रीशुं कवितः {अन्ते २ ल. १६,१६ यति. }

बत्रीशा कवितकेरा रद[३२] वर्ण अन्त बे ल,
जलहरण छे नाम सोळसोळपर यति.

कोइ कोइ आनुं नाम जनहरण आपेछे, ते छंदःप्रभाकर, अप्रमाण केहेछे. व्रिजभाषाना ग्वाल आदि कवियोए ३२ अक्षरनां विप्सावाळां कवित वर्णां कर्यां छे.

१४९७ मनोहरण. यथेच्छ वर्ण ३०+२ ल=३२ वर्ण.
८, ८, ८, ८ यति.

चार वसु केरी यति, बत्रीशा कवितमांह,
अन्ते बे लघु लावेछे, रचतां मनोहरण.

जलहरण प्रमाणेज माप छे, मात्र यतिमांज फेर छे.

१४९८ रंगीका. गुरु लघुनो नियम नहि, अंते लघु. ३२ वर्ण.
१०, ८, ८, ६ यति.

दश आठ आठ छये यति, गुरु लघु नि'म नथी,
वर्ण दांत[३२] रंगीकामां, अन्त लघु आण.

आ अन्त्य लघुवाळुं बत्रीसाक्षरी रूपघनाक्षर नामे कवित छे, आनुं माप रुपघनाक्षरी प्रमाणेज छे, मात्र यतिमां फेर छे.

१४९९ डमरु. बधा लघु. ३२ वर्ण.

प्रति चरण चरण रद[३२] धर सुवरण
डमरु कवित कर कवियर! स्मर हर.

आ दंडक काव्यसुधाकर तथा छंदःप्रभाकरमां छे. छंदःप्रभाकरमां ११+११+५+५=३२ वर्ण कह्या छे, अने जणाव्युं छे के-" श्रीयुत भीखारीदासजी अने चैनदासजी आने जलहरण मानेछे

१५०० सुधानिधि. गुरु लघुने क्रमे ३२ वर्ण.

गा ल छे क्रमे क्रमे सुवर्ण शुद्ध दांत सर्व
धारजो गणी गणी सुधानिधि विषे सदाय.

आ दंडक अशोक पुष्पमंजरीनो भेद छे छंदमालिकामां आनु माप ३ भ+जर+जज+तमज+गग=३२ आप्युं छे

१५०१ धनपाळ[1]. र त न+न र ज+र न भ+न ग ल=३२ वर्ण.

रातना नाराज धर पद धनपाळ दंडके
रची र ना भ कर ना ग ल चरममांह.

[1] गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे

१५०२ द्विनागचिका, महानाराच. १६ ल ग=३२ वर्ण.

रचाय द्विनराचिका महानराच मांह तो,
पदे लघु गुरु क्रमे बधा बतीश अक्षरो.

अनंगशेखर पृ. ४२८ अंक १४४८ मे छे, तेनो आ भेद छे. गणप्रस्तारप्रकाश तथा छंदमालिकामां आनुं नाम अनंगशेखर आप्युं छे, पण आ तो तेनो भेद छे, अने तेनां उपर प्रमाणे बे नाम तो प्रसिद्ध छे. आ कवि नर्मदाशंकरना जाणवामां नहि होय तेथी तेमणे नाराचथी बमणो "नर्मछंद" पोताना नामथी नवो कल्प्यानु जणाव्युं छे.

१५०३ संजोपविशाळ. १५, १७ यति.=३२ वर्ण.

वर्ण दंत आणवा संजोपविशाळ थवा,
तिथिने सत्तरे सारा छेद शोधी आणवा नवा.

१५०४ विजया. ८, ८, ८, ८, यति.
अन्ते ल ग अथवा नगण.=३२ वर्ण.

अक्षर बधा बत्रीश छे, विरति वसु उपर,
अंतमां ल ग अथवा, नगण धर चरण.

छंदःप्रभाकरमां कवित्त करता आमा फेर एटलोज जणाव्यो छे के, "कवितमा बे विषम अक्षरोना शब्दनी वच्चे सम अक्षरना शब्द आवे नहि," अने आ विजयामां ए प्रमाणे आवता जोइये.

३३ वर्णना दंडक.

१५०५. तेत्रीशुं कवित. { गुरु लघुनो नियम नहि, १६,१७यति. } ३३, वर्ण

अक्षर मळीने बधा तेत्रीशे करोजी पूरा,
सोळ सतर विभागे तेत्रीशाकवित चरण.

आवा कवितमा नण नग अक्षरनी विप्सा पण लावेछे जेम —

"झिल्हि झनकारे पिक चातकी पुकारे बन,
मोरन गुहारे उठे जुगनु चमकि चमकि;
घोर धन कारे भारे धुरवा धरारे धाम-
धूमन मचाये नचे दामनी दमकि दमकि;
झूकन बयारि वारि लूकन लगावे अग,
कूकन भभूकनसों और मो खमकि खमकि;
केसें रहे प्राण प्राणप्यारे यशवंत बिन,
छोटी छोटी बुंदनसों बरसे झमकि झमकि."

१५०६ अर्णव. २ न+९ र=३३ वर्ण.

नगग पर न थायछे ते पछी पादमा खंड रा
आणजो अर्णवे वर्ण चित्ते धरी तेत्रिशे.

३४ वर्णना दंडक.

१५०७ वर्णत्रिभंगी. { २० लघु+भ+त+य+भ+गग= ८,८,९,४,५, यति } ३४ वर्ण.

वसु वसु नव श्रुति, शर पर यति वीरा,
लघु धरी वर्णत्रिभंगी, भतयाभा,गाग धरी ले.

. छंदःशास्त्रना टिप्पणमां आनुं नाम त्रिभंगी छे, पण मात्रामेळ पृ. ९२ अंक १३४ मे त्रिभंगी छे, तेनी साथे भळी न जाय माटे अमे "वर्णत्रिभंगी" एवुं नाम राख्युं छे.

गौडपिंगळमां भ ने बदले स छे, लखपत जशसिन्धुमां पण तेमज छे; उदाहरणमां पण ते प्रमाणे छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां द्वितीय (बीजो) त्रिभंगी नाम आपी आमां कहेला गणो बताव्या छे, पण तेमां यति कही नथी. छंदःप्रभाकरमां यति नथी, अने गण आ प्रमाणे छे पण रूप नीचे प्रमाणे गोठव्युं छे.—

६ न+ससभमसग=३४ वर्ण.

१५०८ हेलावली. न+ग+ १० र=३४ वर्ण.

नगण आणो पछी एक गा गोठवी ते पछी रा
गणो आप आशा करो पाद हेलावलीमांह तो.

जूओ अंक १४३३ नी टीप.

१५०९ हेली. न+ल+१० र=३४ वर्ण.

न लपर थायछे रा दशे सामटा तेतणा
अक्षरो सर्व चोत्रीश छे पाद हेलीतणे दंडके.

जुओ अंक १४३३ नी टीप. हेलावलीने बदले छंदोलतामां हेलीनाम आपी उपर प्रमाणे माप आप्युं छे, ते भिन्न होता आ स्थाने दाखल करवामां आव्युं छे

३६ वर्णना दंडक.

१५१० चंडवेग. न न+ ८ य+न न=३६ वर्ण.

ननउपर धर या आठ आणी अने बे बने ना
बधा वर्ण छत्रीश तो चंडवेगे शुभ कविवर!

१ छंदोलतामां उपर प्रमाणे माप छे पण छंदोवृत्तमुक्तावलीमां २न+य (यथेच्छ) लाववा कह्युं छे ते उपर छेल्ल बे नगण लाववा कह्युं नथी, पण तेवो दंडक अंक १४३२ मे छ, माटे अमे छंदोलतानुं माप प्रमाण गण्युं छे,

१५११ व्याल, विशेषशालिन.[1] २ न+१० र=३६ वर्ण.

न न पर दश रा गणो व्याल विशेषशालीनना
पादमां मूकजो छत्रिशे अक्षरो आणिने युक्तियी.

१ वाग्वल्लभमा ३० र उपरातनाने आवु नाम आपवा सूचव्यु छे, पण ए अभिप्राय योग्य नथी.

३७ वर्णना दंडक.

१५१२ मालती. न+ग+११ र=३७ वर्ण.

नगण प्रारभमा ते परे गा करो त्यार पूठे तमे
मालती माह तो रा अगियार आणो पदें गोठवी.

जुवो अंक १४२३नी टीप.

छंदोलताना क्रममां धुली नाम आवेछे तेनु शुद्ध स्वरूप तो धूली थाय पण ते रगणनी रचनामा आवी शकतु नथी. "चाभोली धुली मातली केलि लीला विलासादयः" एमां धुली पछी मातली छे ते आ स्थाने जोइये अने मालती शब्द नु उलटपालट थइने मातली थयेलु लागेछे. तोपण मातली इन्द्रनो सारथी केहेवायछे, तेने नामे जूदो दंडक गणिये तो आ स्थाने धूळी कायम रेहेतां तेनी रचना नीचे प्रमाणे थायछे.

१५१३ धूली. न+ल+११ र=३७ वर्ण.

नल पर रुद्र छे रागणो पादपाद मळी ने बधा
त्रीश ने सात तो वर्ण प्रत्येकमा एम धूली विषे.

३९ वर्णना दंडक.

१५१४ जीमूत. २ न+११ र=३९ वर्ण.

न न पर गण रा अगियार आणी धरो पाद जीमूतमां
अक्षरो त्रीश ने खड खोली बधा आप आ दडके.

१५१५ सारंग. १३ र=३९ वर्ण.

पादपादे रचो तेर तो रागणो शुद्ध सारंगना दंडके

त्रीश ने खंड[१] छे अक्षरो सर्व तो एम जाणो तमे.

४० वर्णना दंडक.

१५१६ मातली. न+ल+१२ र=४० वर्ण.

न ल पर बार आणो तमे रागणो सामटा ते तणा सर्व

चाळीश छे वर्ण प्रत्येक पादे सदा मातली दंडके.

१ छंदोलतामाथी. जुवो अंक १४३३नी टीप.

१५१७ केली. न+ग+१२ र=४० वर्ण.

नगण ने एक गा ते पछी बार छे रागणो पादपादे मळी

अक्षरो सर्व चालीश केली विषे थायछे सामटा.

४२ वर्णना दंडक.

१५१८ लीलाकर. २ न+१२ र=४२ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा रार छे पाद लीलाकरे

एटले बे न छे बार तो रा पछी एम लावी धरो दंडके.

४३ वर्णना दंडक.

१५१९ कंकेली. न+ग+१३ र=४३ वर्ण.

नगणनी उपरे एक गुरू धरी तेर तो आणजे रागणो,

तेतणा अक्षरो अग्नि ने आण चालीश कंकेलीना पादमां.

४५ वर्णना दंडक.

१५२० रुद्रसारंग. १५ र=४५ वर्ण.

रारश रारश रारश रारश रारश रुद्रसारंगना पादमां.

आणजो पांच चाळीश जेमा बने वर्ण ने किंचि ते रागणो

१५२१ उद्दामा, उद्दाम. २ न + १३ र = ४५ वर्ण.
ननर ररर रारा रारा रारा आणजो एटले आप उद्दामनां पाद ज्यारे रचो बे न ने तेर रा ते विषे लावजो.

४६ वर्णना दंडक.

१५२२ लीला. न+ग+१४र=४६ वर्ण.
न पर गा थायछे चौद रा पाद पादे बधा आण आ दंडके शोभिता नाम लीला भख्युं जेहनुं मांह छेताळीश अक्षरो थायछे.

१ छंदोजानां कम प्रमाणे थायु माप न+ल+१४ र थायछे जुओ अंक १४३१.

४८ वर्णना दंडक.

१५२३ शंख. २ न + १४ र = ४८ वर्ण.
ननर ररर रारा रारा रारा रा करो एटले बे न ने चौद रा आणजो शंखना पादमां आप सारी रीते गोठवी गोठवी.

१५२४ विदग्धत्रिभंगी. ३ त न+२ भ+३ त न+२ भ=४८ वर्ण
आदे नण तनत्रे भा त्रण त न पाछा द्वि भ धर पाद विदग्धत्रिभंगी तणों रचनामां कविवर तेमां प्रभुगुण गा मनपूर्वक.

१ चारुत्रासभम छे.

४९ वर्णना दंडक.

१५२५ विलास.[1] न + ग + १५ र = ४९ वर्ण.
नपर गा थायछे ते पछी पंदरे रा गणो सामटा छे विलासे पदे वर्ण चाळीश ने खड आणो बधा ते विषे गुण गाओ सदा ईशनां.

१ छंदोरत्नमां न+ल+१५ र एवु माप छे. जुओ अंक १४३३.

५१ वर्णना दंडक.

१५२६ आराम, पद्मक[1], विम्बवाह[2], अर्क[3]. २ न+१५ र=५१ वर्ण. ननर ररर राररा राररा राररा रार छे पद्मके ने वळी बिम्बवाहे अने अर्के आरामना दंडके बे न ने पंदरे रागणो थायछे.

१ वृत्तरत्नाकरनी जनार्दनी टीका. २ वाग्वल्लभ.
३ छंदोलता तथा छंदोवृत्तमुक्तावली.

५४ वर्णना दंडक.

१५२७ { संग्राम, पद्मराग[1], तक्षक[2], कालदंड[3], चन्द्रेश, चन्द्र. } २ न+१६ र=५४ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा एम बे ना अने सोळ रा थायछे पद्मरागे अने तक्षके कालदंडे तथा चन्द्र संग्राममां सामटा.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता. ३ छंदोवृत्तमुक्तावली

५७ वर्णना दंडक.

१५२८ सुराम, पौंड्रक[1], ईश[2]. २ न+१७ र=५७ वर्ण. ननर ररर राररा राररा राररा राररा रा सुरामे अने पौंड्रके ईश ए दंडके थायछे सौ मळी बे न ने सत्तरे रा त्रधा सामटा पाद पाद्रे.खरे.

१.२ छंदोवृत्तमुक्तावलीमां तेमज छंदोलतामांथी
१. पौण्ड्रकनुं माप वाग्वल्लभमां आ प्रमाणे छे

१५२९ विशेपस्तवक[1]. { नय नय नय नय भस भस भस गभस / भस=४नय+३भस+ग+२भस=५७ }

नय सुर्ग आणो त्रण भस जाणो पछी ग प्रमाणो द्वि भस वखाणो ने चरण करो भाव मन धरो अक्षर मथळा आणी सत्तावनज विशेप स्तवकविपे.

१ वाग्वल्लभमां छे.

६० वर्णना दंडक.

१५३० उदारपाद[1], वैकुंठ[2], भोगी[3]. २न+१८र=६०वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा रार छे
एम बे ना धरो रा अढारे करो अक्षरे साठ उदारपादे
अने वृत्त वैकुंठ भोगी विषे पादपादे तमे.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोवृत्तमुक्तावलि तथा छंदोरत्नाकांधी,
३ छंदोरत्नमुक्तावली.

६३ वर्णना दंडक.

१५३१ सोत्कंठ, इन्द्र. २ न+१९ र=६३ वर्ण.

न न र। र र र राररा राररा राररा राररा राररा
आणिने बे न ने ओगणी' रा करो सोतकंठे अने इंद्रमां,
अक्षरो तो बधा अंक तो त्रेसठे जाय पोंची तमे जाणजो.

६६ वर्णना दंडक.

१५३२ सार, पीयूष. २ न+२० र=६६ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा रा
धरी एटले ना रचो बेवळी रा करो वीश पूरा तमे ने बधा
अक्षरो छासठे आणजो सार पीयूष केरा धरी पादमां.

६९ वर्णना दंडक.

१५३३ कासार, वाराह. २ न+२१ र=६९ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा रार
आणी तमे ना धरो बे अने रा करो वीश ने एक पूरा बधा,
अक्षरो साठ ने खंड कासार-वाराहना पादमां ध्यान धारी रचो.

७२ वर्णना दंडक.

१५३४ विस्तार, वात. २ न+२२ र=७२ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर

एम बे ना धरी बाविशे रा करो सामटा माप विस्तार के वातमां वर्ण बोतेर तो पादमां आणजो आ खरी रीत ए दंडके जाणजो.

७५ वर्णना दंडक.

१५३५ संहार. २ न+२३ र=७५ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर

रा धरी सर्व ना बे अने रा करो त्रेविशे एम सर्वे मळी वर्ण सित्तेर ने पांच पूरा रच्ये पाद संहारनु पूर्ण तो थायछे एम मानो तमे.

७८ वर्णना दंडक.

१५३६ नीहार. २ न+२४ र=७८ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रार

आणी तमे बे न ने ते परे सर्व चोवीश रा लाविने वर्ण सित्तेर ने आठ पूरा करो पाद नीहारमा ईशना गुण गावा तमे भावथी आदरो.

८० वर्णना दंडक.

१५३७ कुसुमितकाय[1]. { मस+त,न.त+य,ज,त+र,भ, स+भ,स,भ+स,भ,त+य,स, भ,+तयस+भ न,न+ग,ग. } ८० वर्ण.

एंशी पूरा वर्णो आणो कुसुमितकाये ठिक भाइ!
रचाय तेमा पदे पदे तो गण समुदायो ठिक ठिक मामा पछी
तनता छे यजता छे रभसा छे भसभा छे सभता छे
यसभा छे तयसा छे पछी थकी भनन गगा छे.

[1] वायुवाभ

८१ वर्णना दंडक.

१५३८ मंदार. २ न+२५ र=८१ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा
आणिने सौ मळी बे न ने वीश ने पांच रा लावजो आप मंदारमां
ने पछी एहमां भक्तिना भावथी गुण गाजो तमे सर्वव्यापी प्रभुना
सदा प्रेमथी.

८४ वर्णना दंडक.

१५३९ केदार. २ न+२६ र=८४ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा रा थई
बे न ने ते परे रा धरो सर्व छव्वीश तो जे थकी अक्षरो ऐंशिने
चार सौ थायछे पाद एकेकमां एम केदार जोडायछे ते तमे
युक्तिथी जाणजो.

८७ वर्णना दंडक.

१५४० साधार. २ न+२७ र=८७ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा रार
साधार छे आ रीते बे न ने वीश ने सात रा तेहना अक्षरे
एंशि ने सात तो थायछे पादमा तेहमा गायछे गुण गोविंदना जे
कवि भक्तिना भाववाळो खरो.

९० वर्णना दंडक.

१५४१ सत्कार. २ न+२८ र=९० वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा
राररा लावता आम सत्कारमां बे न ने वीश ने आठ रा
थायछे तेतणा अक्षरो नेवु तो थायछे पाद एकेकमां
एम आ दंडके आप आणी पछी गुथजो काव्य तेमां तमे.

९३ वर्णना दंडक.

१५४२ संस्कार. २ न+२९ र=९३ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा
राररा रा धरी तेहना बे न चोवीश ने पांच रा लावतां
त्राणु संस्कारना थायछे अक्षरो पादपादे खरा तेहमां गुण जो
ईशना गाय तो थाय शुद्धि भली चित्तनी एम जाणो तमे.

९६ वर्णना दंडक.

१५४३ माकंद, त्रिमर्ष. २ न+३० र=९६ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा
राररा रार तो थायछे तेहना बे न ने त्रीश रा आणतां
अक्षरो छन्नु सो थायछे पाद माकंदमां ने त्रिमर्ष रची जे कवि
कोइ आ दंडके ईशना गुणनुं गान गाशे जशे मुक्ति पामी खरे.

आ नियम प्रमाणे जो बे नगण पछी ३० रगण उपरांत वधता जाय तो, तेने विशेषशालीन केहेछे, एवुं वाग्वल्लभमां कह्युं छे.

९९ वर्णना दंडक.

१५४४ गोविंद. २ न+३१ र=९९ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा
राररा राररा एम लावो तमे जे थकी बे न ने त्रीश ने एक रा तो
थतां थाय नव्वाणु सो अक्षरो पादपादे अने नाम गोविंद के'-
वायछे एहनुं ते विषे तो रचो गुण गोविंदना भाव पूरो धरी.

१०२ वर्णना दंडक.

१५४५ सानंद. २ न+३२ र=१०२ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा

ररर रा धरी लावजो पाद सानंदमा बे न ने उपरे बत्रीशे रा बधा एम सौ एक सो बे करो अक्षरो पादपादे तमे प्रेम आणी पछी गाइ ल्यो गुण आ दडके दीनआधारना दुःखीना बधुना.

१०५ वर्णना दंडक.

१५४६ संदोह. २ न + ३३ र = १०५ वर्ण.

ननर ररर ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा रार आणी करो कुल बे ना गणो ने वळी रा गणो तेत्रिशे तो धरी एम सौ अक्षरो एक सो पाच सदोहने पादपादे गणी आणजो ते विषे गुण गोविंदना गुंथजो जे थकी चित्त चोखु थशे सामट.

१०८ वर्णना दंडक.

१५४७ नद. २ न + ३४ र = १०८ वर्ण.

ननर ररर ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा ररररा एम आण्या थकी नद नामे बने दडके बे न ने श्रीश ने चार तो रा गणो सामटा तेतणा अक्षरो एक सो ने पछी आठ तो थायछे पाद-पादे बधा गोठता घाटमा आवता रागमा बेसता आणजो.



अर्द्धसम वृत्त.

• जेमा बे पदोनां सर्व लक्षण मळतां आवे एवुं; एटले १लुं अने त्रीजुं पाद (विषमपद) तेमज बीजुं अने चोथुं पाद (समपद) समान होय ते अर्द्धसमवृत्त केहेवाय. एना बे भेद छे.

१ संकीर्ण. २ असंकीर्ण.

१ संकीर्ण एटले वर्णमां वधघट थवाथी विषमपाद करता समपादनी वर्णसख्या भिन्न रेहे ते.

२ असंकीर्ण एटले विषम तथा समपादना वर्ण सरखा होय पण गण भिन्न भिन्न होय ते.

आ एक जातनी उपजाति पण केहेवाय छे,

असम, ओज, अयुग्म अयुग्मक, अने अयुज ए विषम एटले पेहेला त्रीजा पदनां नाम छे,

अनोज, युग्म, युग्मक, अने, युज ए सम एटले बीजा चोथा पदनां नाम छे,

संकीर्ण.

विषम पदना ८ ने समना १० वर्ण होय तो तेनां कुल २,६२,१४४ रूप थायछे.

१ आवृत्त. { १,३. स ज ग ग. =८ दिगीश. अंक. २८०
           { २,४. स स ज ग. =१० सहजा. अंक. ४६८

विषमे स जा ग गा छे;

स स जा ग समेज आवृत्ते.

पाछळ समवृत्तना पेटामां अक २८०मे दिगीश नामे वृत्त छे, तेना माप प्रमाणे आ वृत्तनां विषम चरण (१,३) थायछे; अने अंक ४६८मे सहजा नामे वृत्त छे, तेना माप प्रमाणे आ

वृत्तनां सम चरण (२,४) थायछे. ए रीते दिग्गीश अने सहजाना मिश्रणथी आवृत्त थायछे. एज प्रमाणे, जे पदनी सामे अंक सहित वृत्तनुं नाम होय ते वृत्तनां ते पद थायछे, एम समजवुं.

२ ललिता. { १,३. र स ल ग. = ८ रूप. ९१
२,४. स ज ज ग. =१० संयुता. अंक ४७३ }

रा स ला विषमे ग छे;
ललिता समे स ज जा ग छे.

विषमपदनुं अहिं जे माप र स ल ग आप्युंछे, एवा मापनुं समवृत्तमां ८ वर्णनुं कोइ वृत्त नथी, तेथी ८ वर्णमां ए मापनुं रूप ९१ मुं थायछे, ते अहिं जणाव्युं छे. एज प्रमाणे समवृत्तना पेटामां, जे पाछळ वृत्त दाखल नथी तेनुं जेटलामुं रूप थायछे तेनो अंक आप्यो छे.

९,१०,नां रूप ९,२४,२८८ थायछे.

३ वैसारी. { १,३. त ज र.=९ रथोन्मुखी. अंक ३८१
२,४. म स ज ग.=१० विराट,शुद्धविराट.अंक ४९९ }

ता जा र अयुग्ममां गमे;
वैसारी म स जा ग थी समे.

आनुं विलोम करियें तो वामनवंदिता थायछे. जुओ अंक. ४

१०, ९नां रूप ९,२४,२८८ थायछे.

४ वामनवंदिता. { १,३. म स ज ग.=१० विराट. अंक ४९९
२,४. त ज र.=९. रथोन्मुखी. अंक ३८१ }

मा मा वामनवंदिता ज गे;
ता जा र करो समे सगे.

आ वृत्तमां वैसारीनां विषम पद छे ते समपद थयां छे अने तेनां समपद

छे ते आनां नियत पद थया छे, आ प्रमाणे उलटासुलटां थाय ते विलोम कहेवायछे. वसंततिलकनुं विलोम जुओ अंक ३.

१०,११नां रूप २०,९७,१९२ थायछे.

५ भद्रविराट, { १,३. त ज र ग.=१० नमेरु. ४४०
समुद्रकान्ता. { २,४. म स ज ग ग.=११ स्निग्धविराट. ५६२

छे भद्रविराट ता ज रा गे;
युग्मे मा स ज गा ग ठीक लागे.

कान्ता, शुद्धविराटनुं विलोम, जुओ अंक १७.

वैतालिय प्रकरणमां वोरवृत्तछंदर्पणिक, पाछळ पृ. २१४ में जुओ तेमां ६ ओ ८ मात्र अयुग्मे जगणथी छे, तेने बदले अहिं गण नक्की करयाछे एटलोज फेर छे

६ केतुमती. { १,३. स ज स ग. = १० रूप २३६
{ २,४. भ र न ग ग. = ११ रूप ४७१

धरजो स जा स ग अयुग्मे;
केतुमती भ रा न ग ग युग्मे.

विलोम केतु जुओ अंक १८

७ सुंदरी, सुरमालिका, { १,३. स स ज ग =१० सहजा.४९८
कमला, वियोगिनी. { २,४. स भ र ल ग.=११ सीतु ९९९

विषमे स स जा ग सुंदरी;
कमला सा भ र ला ग थी ठरी.

१ प्राकृत पिंगळसूत्रमां कहेछे के —
अयुजो यदि सौ जगौ युजः
सभरा ल्गौ रलगाश्च सुन्दरी.

१ एमां लगौ छे त्यां जगौ जोइए तेमज छंदोमंजरीमां छे के —
अयुजो यदि सौ जगौ युजो,

सभरा गौ[२] यदि सुन्दरी तदा.

२ एमां गौ छे तेने बदले लगौ जोइये.

वृत्तरत्नाकरनी टीपमां केहेछे के:—

विषमे यदि सौ जगौ समे;

स्तर[३]लगोऽपरवक्रमीरितम्.

३ एमां स्तने बदले स्भ जोइये.

आवी रचनाथी अपरवक्र बनेछे, पण अंक २७मां ते जूदा मापथी छे अने आ माप तो सुन्दरीने लागु पडेछे.

८ वेगवती. { १,३. स स स ग. =१० उदित, अंक ४४६
२,४. भ भ भ ग ग.=११दोधक,नीलसरूपी.५८०

गण छे स स सा ग अयुग्मे;

वेगवती भ भ भा ग ग युग्मे.

विलोमे वर्गवती, जुवो अंक १९

९ सुधा. { १,३. म स ज ग.=१० विराट, शुद्धविराट. ४६६
२,४. स भ र ल ग.=११ सीधु. अंक ९९९

ओजे थाय म सा ज गा खरे;

स भ रा ला ग सुधा समे करे.

१० करधा. { १,३. म स ज ग.=१०विराट, शुद्धविराट.४६६
२,४. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. ६०३

ओजे तो म स जा ग छे, समे

न न र ल करधा ग तो गमे.

विलोमे वैयाली, अंक २१

११ अरुन्तुद. { १,३. स स ज ग.=१० सहजा. ४६८
२,४. न ज ज र.=१२ मालती. ७३१

विषमे म स जा ग तो धरो;

न ज ज र युग्म अरुन्तुदे करो.

विलोमे अनूकप. जुवो अक. ३८

१२ संपातशीला. { १,३. त म र ग.=१० रूप १३३
२,४. स न म य.=१२ रूप ५७२

ओजे त मा रा गा छे रसीला;

स न मा य सममां संपातशीला.

विलोमे पातशीला थायछे, जुवो अंक. ३९

१३ अवनीलता, नवनीलता, अवलीलता. } १,३. स स ज ग.=१० सहना. ४६८
२,४. स भ ज र.=१२ रूप १३९६

विषमे स स जा ग तो गमे;

स भ जा रा थी अवनीलता समे.

विलोमे करीरिता. जुओ अक. ४०

१०,१२ नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

१४ शुकावली. { १,३. त ज र ग. =१० नमेरु. ४४०
२,४. म न ज र ग.=१२ महर्पिणी. ८१६

ओजे त ज रा ग तो गमेछे;

मा ना जा र ग थी शुकावली समे छे.

विलोमे किंशुकावली, जुवो अक. ६०

१५ जारिणी. { १,३. न त त ग. =१० चरपद. ४५७
२,४. र र न त ग.=१३ रूप २९१९ मुं

विषममां ना त ता गा धरो;

जारिणीमां र रा न त ग आणी करो.

विलोमे अलिपद, अक. ६१ मे जुवो.

१०,१४ नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

१६ विलासवापी. { १,३. त ज र ग. =१० नमेरु. ४४०
{ २,४. स भ र ज ग ग.=१४ मदावदाता. ९३२

अोजे त ज रा ग छे तथापि;

सममां सा भ र जा ग गा विलासवापी.

विलोमे अकोपकृष्टा, जुवो अंक ७२.

११, १० नां रूप २०, ९७, १५२ थायछे.

१७ शुद्धविराट, { १,३. म स ज ग ग=११ विश्वविराट. ९६६
कान्ता. { २,४. त ज र ग=१० नमेरु. अंक. ४४०

ओजे शुद्धविराट मा स्ज गा गे;

ता जा र ग युग्म ठीक लागे.

विलोमे भद्रविराट. जुवो अंक ५ मो.

१८ केतु. { १,३. भ र न ग ग.=११ रूप. ४७१
{ २,४. स ज स ग. =१० रूप. २३६

छे प्रथमे भ रा न ग ग जोजे;

स ज सा ग केतु सम कीजे.

विलोम करता केतुमती थायछे, जुवो अंक ६

१९ वर्गवती. { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. अंक. ९८०
{ २,४. स स स ग.=१० उदित. अंक. ४४६

वर्गवती भ भ भा ग ग ओजे;

करजो स स सा ग अनोजे.

विलोम करतां वेगवती थायछे. जुवो अंक ८.

२० असुधा. { १,३. स भ र ल ग.=११ शीतु. ९९९
{ २,४. ग स ज ग. =१० विराट. अंक. ४६६

असुधा सा भ र ला ग ओजमां;

मा सा जा ग भरो अनोजमां.

विलोमे सुधा अंक ९

२१ वैयाली. { १,३. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. ६०३
{ २,४. म स ज ग. =१० विराट. अंक. ४६६

न न र ल ग अयुग्मगा गमे;
वैयाली म स जा ग शी समे.
विलोमे फरवा जुवो अंक १०

११, १२ नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

२२ द्रुतमध्या. { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ९८०
{ २,४. न ज ज य. =१२ नामरस. ६९९

भो भ भ गा ग अयुग्म पदे छे;
न ज ज य युग्म विषे द्रुतमध्या.
अंक ४२ से द्रुता छ तत्तु विलोम

२३ हरिणीप्लुता, { १,३. स स स ल ग.=११ उपचित्र. ६०६
हरिणप्लुता. { २,४. न भ भ र.=१२ द्रुतविलंबित. ७३७

स स सा ल ग छे विषमे पदे;
न भ भ रा समभा हरिणीप्लुता.

२४ कोरकिता. { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ९८०
{ २,४. न य न य.=१२ कुसुमविचित्र. ७११

कोरकिता भ भ भा ग ग ओजे;
न य न य आते चरण अनोजे.
अंक ४३ ना माद्यलिकातु विलोम

२५ अपरवक्त्र. { १,३. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. अंक. ६०३
{ २,४. न ज ज र.=१२ माळती. अंक. ७३१

विषम न न र छे ल गा गमे;

न अपरवक्त्र ज जा र छे समे.

जुवो पाछळ पृ. २१२ वैतालिय अथवा अपरवक्त्र तेमां ६,८ मा कही छे तेने बदले आहिं गण नक्की कर्या छे.

२६ मालभारिणी, औपच्छंदसिक, वसन्तमालिका, परिश्रुता. { १,३. स स ज ग ग.=११ विमला. ६६१ / २,४. स भ र य.=१२ वधिरा. ६८

विषमे स स जा ग गा धरे छे;
सममां सा अ य मालभारिणीमां.

अंक ४१ प्रमालिका अने सौरभमंचितं विलोम.

२७ उपाद्य. { १,३. न स ज ग ग.=११ पंचशाखी. अंक. ६७ / २,४. म भ र य. =१२ वलभी. अंक. ६८

न स ज ग ग थी उपाद्य ओजे;
भा भ र या धरजो तमे अतीजे.

२८ हरिलुप्ता. { १,३. स स स ल ग. =११ उपचित्रा. अंक. ६०१ / २,४. स भ भ र. =१२ राधिका. अंक. ७३६

विषमे स स सा ल ग ए गमे;
हरिलुप्ता स भ भा र थकी समे.

विलोम लुप्ता. जुवो अंक ४७

२९ विमानिनी. { १,३. स भ र ल ग. =११ सीधु. १९९ / २,४. म न ज र. =१२ रूप. १४०१

स भ रा ल्या ग विमानिनी विषे;
मा ना जा र समपिये मने दिसे.

३० अमुराध्या. { १,३. म स ज ग ग. =११ विश्वविराट. ६६६ / २,४. न न र य. =१२ परिमिताविजया. १८३

मा सा जा ग ग ओजमां गमे छे;
न न र य असुराढ्यमां समे छे.

विलोमे सुराढ्या जुवो अंक ४४.

२१ किलिकिता, { १,३. र न र ल ग. =११ रथोद्धता. ६७६
किलकिता. { २,४. न भ ज र. =१२ प्रियंवदा. ७३६

रा न रा ल ग कराय ओजमां;
किलकिता न भ ज रा अनोजमां.

३२ किन्नरक. { १,३. त ज ज ल ग. =११ मोटनकं. ६२६
{ २,४. स स स स. =१२ तोटक. ७९२

ओजे त ज जा ल ग आप धरो;
सम किन्नरके स स सा स करो.

अंक ४५ मे नटक छे ते आ वृत्तनु विलोम छे.

३३ साचीकृतवदना. { १,३. न य भ ग ग.=११ श्रुतकीर्ति. ९७६
{ २,४. त न भ स.=१२ रूप. १९८१

न य भ ग गा आणो कवि! ओजे;
साचीकृतवदना त न भ स थी.

विलोमे असाचीकृतवदना थायछे, जुवो अंक ४६.

३४ कमलाकर. { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ९८०
{ २,४. भ न ज य. =१२ पथिकान्ता. ७०९

छे कमलाकर भा भ भ गा गे;
भा न ज य पद समे विक लागे.

विलोमे कुसुमचर, जुवो अंक ४८

३५ शिशिरशिखा. { १,३. न न र ल ग.=११ सुमंदिका. ६०३
{ २,४. न ज ज र.= १२ मालति. ७३१

न न र ल ग अयुग्ममां गमे;

शिशिरशिखा, न ज जा र थी समे. ५,७ यति.

विलोमे मृदुमालति. जुवो अंक ४९

३६ उपोद्गता, फलिताग्र.
{ १,३. स स ज ग ग.=११ विमला. ५६७
{ २,४. स भ र य. =१२ वसिरा. ६८१

विषमे स स जा ग गा गमेछे;

स भ रा या थीं उपोद्गता सने छे.

विलोमे एनु एज नाम रहेछे

११,१३ नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

३७ वद्धास्य.
{ १,३. म भ न ल ग.=११ भ्रमरविलसिता ६३९
{ २,४. स म न न ग.=१३ वरिपशिता. ८८९

ओजे आणो म भ न ल ग तमे;

स वधास्य रचाय स न न ग समे.

विलोमे धामाक्षी. जुवों अंक ६०.

१७,१० नां रूप ४१,९४,३०४ थायछे.

३८ अनूरूप.
{ १,३. न ज ज र.=१२ मालती. ७६१
{ २,४. स स ज ग =१० नदगा. ४६८

विषम निंगे न ज जा र तो गणे;

स स जा ग समे अनुरूपे.

विलोमे अनुकुल, जुवो अंक. ११

३९ पानशीला.
{ १,३. म न म न.=१२ [illegible] ५७२
{ २,४. त म र ग =१० [illegible] १६३

विषमे म न म ना थी पानशीला;

ता मा र गा युग्मे आणु [illegible]

[illegible]

४० करीरिता. { १,३. स भ ज र.=१२ रूप. १,२९६
२,४. स स ज ग.=१० सहेजा ४६८ }

विषमे सा भ ज र लावजो तमे;
स स जा ग करीरिता समे.

विलोमे अञ्जनीलता, जुवो अंक १३

१२,११ नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

४१ सौरभसंचित, प्रमालिका. { १,३. स भ र य. =१२ बधिरा. ६८१
२,४. स स ज ग ग=११ विमला. ९६७ }

स भ रा सौरभसंचिते य ओजे;
स स जा ग ग थायछे अनोजे.

विलोमे परिश्रुता, जुवो अंक, ?६

४२ इहा. { १,२. न ज ज य. =१२ तामरस. अंक. ६९९
२,४. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. अंक. ९८० }

न ज ज य थाय सदाय अयुग्मे;
भा भ भ आण इहा ग ग युग्मे.

अंक २३ मे द्रुतमध्या छे तेनु विलोम

४३ पाटलिका. { १,२. न य न य. =१२ कुसुमविचित्रा. ७११
२,४. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ९८० }

न य न य आणो चरण अयुग्मे;
भा भ भ पाटलिका ग ग युग्मे.

अंक २४ मे कोरकिता छे, तेनु विलोम

४४ सुराढ्या. { १,३. न न र य. =१२ परिमितविजया. ६८३
२,४. म स ज ग ग.=११ विश्वविराट. ९६६ }

न न र य विषमे रचो सुराढ्या;

युग्मे मा स ज गा ग थाय, भाई!

अंक ३० मे असुराढ्यानुं विलोम.

४५ नटक. { १,३. स स स स. =१२ तोटक. ७५३
{ २,४. त ज ज ल ग.=११ मोटनक. ६२०

विषमे सससा स धरो नटके;

ताजाजलगा सम पाद टके.

अंक ३२मे किनटक छे तेनु विलोम.

४६ अवाचीकृतवदना. { १,३. तनभस.=१२ रूप. १,९८१
{ २,४. नयभगग.=११ श्रुतकीर्ति. ५७६

ता ना भ स अवाचीकृतवदना;

समपदमां नाया भगगा छे.

अंक ३३मे साचीकृतवदना छे तेनु विलोम.

४७ लुप्ता. { १,३. स भ भ र.=१२ राधिका. अंक. ७३६
{ २,४. स स स ल ग.=११ उपचित्रा. अंक. ६०६

स भ लुप्ता भ र तो विषमे करो;

स स सा ल ग युग्म पदे धरो.

अंक २८मे हरिप्लुता छे तेनु विलोम

४८ कुसुमचर. { १,३. भ न ज य.=१२ पथिकान्ता. ७०९
{ २,४. भभभगग.=११ दोधक. ९८०

छे कुसुमचर भ ना ज य ओजे;

छे भ भ भा ग ग पाद अनोजे.

अंक ३४मे कमलाकर छे तेनु विलोम.

४९ मृदुमालती. { १,३. न ज ज र.=१२ मालती. अंक. ७३१
{ २,४. ननरलग.=११ सुभद्रिका. ६०२

न ज ज र थी मृदुमालती बने;

न न र ल ग धरो तमे समे.

अंक ३५ शिशिरशिखा छे तेनुं विलोम.

१२,१३ नां रूप ३,३८,५४,४३२-थायछे.

८० पुष्पिताग्रा. { १,३. न न र य. =१२ परिमितविजया. ६८३
२,४. न ज ज र ग=१३ मृगेन्द्रमुख. ८१५ }

न न र य पद एकी पुष्पिताग्रा;
न ज ज र गा रचजो तमे समे तो.

जुवो पृ. २१४ औपच्छंदसिक.

अंक ६३ मे अचितात्रा छे ते आनुं विलोम छे.

८१ मृगी, यवानी. { १,३. र ज र ज.=१२ पंचचामर. ७८१
२,४ त र ज र ग.=१३ रूप. १,३६१ }

रा ज रा ज छे मृगी अयुग्म पाद;
ता रा ज रा ग छे अनोज पादमांहे.

८२ वाक्मती[1], यमवती, जममती, अमरावती, परांवती, धवमती[2], यवामती. { १,३. र ज र ज.=१२ पंचचामर.७८९
२,४. ज र ज र ग.=१३ रूप १,३६६ }

वाङ्मती र जा र जा अयुग्ममांहः
समे धरो ज रा ज रा ग प्रीति आणी.

अमरावतीनुं विलोम करवाथी एज नाम रेहेछे एम वाग्वल्लभमां कह्यु छे.

१ छंदोक्ता प्रमाणे. २ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां 'स्याद् युग्मके रजौ रयौ' एम पाठ छे, पण जनार्दन अने अवचूरि टीकावाळा मूळपाठमां 'रजौ रजौ' एवो पाठ छे ते खरो छे. शब्दकल्पद्रुममां उपरना पाठ उपरथी विषम पदमां र ज र य मूकीने भूल खाधी छे.

५३ अप्रमाथिनी. { १,३. स भ र ग.=१२ चंचिरा. अंक ६८१
{ २,४. न ज ज र ग.=१३ मृगेंद्रमुख. ८१९

स भं रा गा धर्यो अप्रमाथिनी छे;
न ज ज र गा कभनी अनोजनी छे.

विलोमे प्रमाथिनी, अंक ६४.

५४ पद्मावती. { १,३. त भ ज य. =१२ नीराजितक. ७०२
{ २,४. स ज स स ग.=१३ कल्हंस. ८२२

पद्मावती तभजया धर्यो ओजे;
रचजो सदा सजससाग अनोजे.

५५ चमूरुभीरु. { १,३. र न ज र. =१२ रूप. १,४०३
{ २,४. स न ज र ग. =१३ रूप. १,४०४

ओजमां र न ज र थायछे शिरु;
स न जा र ग समथी चमूरुभीरु.

विलोमे चमूरु. अंक ६६

५६ वेदवाणी. { १,३. म स ज म. =१२ रूप. ३४९
{ २,४. स भ र य ग. =१३ रूप. ६९२

ओजे पंक्ति ग सा ज मा वखाणी छे;
समगा सा भ र या ग वेदवाणी छे.

विलोम करवामां आवे तोपण वेदवाणी नाम रहेछे

५७ मंजुसौरभ. { १,३. न ज ज र.=१२ मालती. अंक ७३१
{ २,४. स ज स ज ग.=१३ रूप. २,६६८

विषम पदे न ज जा र थाय छे;
सम मंजुसौरभ सा जा य जा ग छे.

वृत्तरत्नाकरमां नीचे प्रमाणे छे
यदि विषमे भवतो नजौ जरौ,

स ज या समे ज गुरु मंजुसौरभम्.

बीजो पाठ शब्दकल्पद्रुममां छे.

स ज य: समेतु जगौ मञ्जुसौरभम्.

आ उपरथी जणाय छे के छंदोमंजरीनी टीपमां "स ज गाः समेतु ज गुरु" एम छे तेमां गाः ने ठेकाणे याः जोइये.

१२,१५ नां रूप. १३,४२,१७,७२८.

५८ शरावती.
{ १,३. न न र य. =१२ परिमितविजया. ६८
{ २,४. स भ न ज र र.=१५ रूप. ११,२९२

विषम पद न ना र या थकी छे;

सममां सा भ न ज र थी बने शरावती.

विलोमे बृहच्छरावती, जुवो अंक ८१.

१२,१६नां रूप २६,८४,३५,४५६ थायछे.

५९ अहीनताली.
{ १,३. म न ज र. =१२ रूप. १,४०
{ २,४. स भ स ज र ग.=१६ रूप. १,९९

ओजे छे म न ज र पाद मांहृ तो;

स भ सा जा र ग सममां धरचे अहीनताली.

विलोमे हीनताली, अंक ८४.

१३, १० नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

६० किंशुकावली.
{ १,३. म न ज र ग.=१३ महार्पिणी. ८१
{ २,४. त ज र ग.=१० नमेरु. ४४

ओजे पंक्ति म न ज रा ग नी भली छे;

ता जा र ग किंशुकावली छे.

शुकावलीनु विलोम, जुवो अंक १४.

६१ अलिपद.
{ १,३. र र न त ग.=१३ रूप. २,११६
{ २,४. न न न ग. =१० चरपद. अंक.४९७

ओजमां रा र ना आलिपदे ता ग छे;
सम पदे तो न ता ता ग छे.

अंक १५ मे जारिणी छे तेनुं विलोम.

१३,११ नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

६२ कामाक्षी. { १,३. स स न न ग. =१३ वरिवशिता. ८८९
२,४. म भ न ल ग. =११ भ्रमरविलसिता. ६३१ }

चरणे स स ना न ग धर असमे;
कामाक्षी मा भं न ल ग थीं समे.

चंद्रास्यनु विलोम, जुवो अंक ३७

१३,१२ नां रूप ३,३५,५४,४३२ थायछे.

६३ अंचिताग्रा. { १,३. न ज ज र ग.=१३ मृगेन्द्रमुख. ७१५
२,४. न न र य.=१२ परिमितविजया.६८१ }

न ज ज र गा विषमेथीं अंचिताग्रा;
न न र य सम पाद अंचिताग्रा.

अंक ५० मे पुष्पिताग्रा छे तेनु विलोम.

६४ प्रमाथिनी. { १,३. न ज ज र ग.=१३ मृगेन्द्रमुख. ८१५
२,४. स भ र य.=१२ श्रधिरा. ६८१ }

न ज ज र गा विषमे प्रमाथिनीमां;
सममां सा भ र या धराय सीमा.

अंक ५२ मे अप्रमाथिनी छे तेनु विलोम.

६५ मितभाषिणी. { १,३ स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी.८९८
२,४. स ज स य.=१२ प्रमिताक्षरा. ७५४ }

मितभाषिणी स ज स ज ग विषमे.
स ज सा स छे भा

६६. चमूरु. { १,३. स न ज र ग.=१३ रूप १,४०४
{ २,४. र न ज र. =१२ रूप १,४०३

विषमे स न ज र गा चमूरु आणो;
रा न जा र सम पदे धरो तमे.

अंक ५५ मे चमूरुभीरु छे तेनुं विलोम.

१३,१४ नां रूप १३,४२,१७,७२८ थायछे.

६७ आलेपन. { १,३. न त त त ग. =१३ परिवृढ. ८४०
{ २,४. न भ य य ल ग.=१४ रूप ४,७२८

विषममां ना त ता ता ग आलेपने;
समपदे गण न भा या य ला गा बने.

विलोमे अनालेपन थायछे, जुवो अंक ७४.

६८ प्रतिविनीता. { १,३. न य ज र ग. =१३ रूप १,३६०
{ २,४. स भ र न ग ग.=१४ रूप २,७६४

विषमविषे ना य जा र गा धरोजी;
सममां सा भ र ना ग गे प्रतिविनीता.

विलोमे अतिप्रतिविनीता, जुवो अंक ७५.

६९ मदाक्रान्ता. { १,३. स स ज र ग.=१३ जगतसमानिका.८१२
{ २,४. म स ज र ग ग=१४ रूप १,३६९

विषमे धरजो स सा ज रा ग कान्ता!
बेकीमां म स जा र गा ग थी मदाक्रान्ता.

विलोमे संमदाक्रान्ता, जुवो अंक ७६.

७० लास्यलीलालय. { १,३. त य र र ग=१३ भाजनशीला.८०५
{ २,४. म स त त ग ग=१४ पुष्पशकटिका ९२६

ता या र र गा आ ओज केरा पदे छे;

७५. अतिप्रतिविनीता. { १,३. स भ र न ग ग.=१४ रूप ३,७६४
२,४. न य ज र ग.=१३ रूप १,३६०

स भ रा छे न ग गा अतिप्रतिविनीता;
समपदमां ना य जा र गा विनीता.

प्रतिविनीतानु विलोम, जुओ अंक ६८

७६ संमदाक्रान्ता { १,३. म स ज र ग ग.=१४ जगतसमानिका. ८१२
२,४. स स ज र ग.=१३ रूप १,३६९

ओजे छे म स जा र गा ग संमदाक्रान्ता;
समम्मां स स जा र गा धराय शान्ता!

मदाक्रान्तानु विलोम, जुओ अंक ६९

७७ लास्यलीला. { १,३. भ स त त ग ग.=१४ पुष्पशकटिका. ९२९
२,४. त य र र ग.=१३ भाजनशीला. ८०९

छे विषम विषे भा सा त ता गा ग कीला!
ता या र र गा छे युग्ममां लास्यलीला.

लास्यलीलालयनु विलोम, जुओ अंक ७०

१४,१९नां रूप ५३,६८,७०,९१२ थायछे.

७८ प्रमोदपरिणीता. { १,३. न न र ज ग ग.=१४ रूप २,७५२
२,४. न ज ज भ य.=१५ रूप ७,९३६

विषम चरण ना न रा ज गा ग गीता;
न ज ज भ यार्थी समे प्रमोदपरिणीता.

विलोमे प्रमोदपद. जुओ अंक ८२.

७९ अवरोधवनिता { १,३. न भ म र ल ग.=१४ रूप ५,५६०
२,४ स स ज भ य.=१५ रूप ७,९१६

विषम पादविषे न भ मा र ला ग छे;
अवरोधवनितमां समे स स ज भा या.

सममांहे स भ छे रजा पछी रा ग पदे छे

१ वाणवसमां नीचे प्रमाणे छे.

न भ रा श्च विषमे रयौ यदा समे चेत्;

स भ रा आसववासिता जसौ च गुरु रेषा.

विषम पादमां न भ र र य =१५

समपादमां स भ र ज स ग =१६

उपरनी कवितानी रचना प्रमाणे तो विषम पदमां चौद वर्ण स न र ज ग ग=१४ थायछे, एमां भूल छे. प्रथम नगण लेइये पण ते थतो नथी.

विलोमे अनासववासिता थायछे, जुवो अंक ८६

१६,१२ नां रूप. २६,८४,३५,४५६ थायछे.

१. हीनताली. { १,३. स भ स ज र ग.=१६ रूप. १०,९९६
२,४. म न ज र. =१२ रूप. १,४०१ }

विषमे स भ स ज र गे रचाय हीनताली;

आवेछे म न ज र युग्ममां सदा.

अहीनतालीनुं विलोम, अंक ५९.

१६,१३ नां रूप. ५३,६८,७०,९१२ थायछे.

१ अपरप्रीणिता. { १,३. न न स त त ग.=१६ रूप. १६,६८८
२,४. न न त त ग.=१३ चंद्रिका. ८४३ }

न न स अपरप्रीणिता ता ता ग छे ओजमां;

न न त त ग अनोजे रचो योजमां.

परप्रीणितानुं विलोम जुवो अंक ७१

६ अनासववासिता. { १,३. स भ र ज स ग.=१६ रूप. १९,०२८
२,४. न भ र र य.=१५ रूप. ९,३०४ }

स भ ने रा ज पछी स गा कराय असमे तो;
न भ अनासिंत्रवासिता रा र या समे तो.
आसवबासितानु विलोम, जुवो अंक ८३.

१८,१९नां रूप. १,३,७,४३,८९,५३,४७२.

८७ रणोदय. { १,३. मस+स र+र म. =१८ रणशूर. १,११०
२,४ जम+भ म+त य+ग.=१९ रूप. ९२,६१४

मा मा ने स र नी पर रा मा, गणो ओज पादे आवे;
रणोदये जा मा ने म भ छे, त य अन्ते ग समे लावे.

रण+उदय=रणोदय—रणछोडभाई उदयराम एवु नामसूचक आ वृत्त नवु कल्प्यु छे.

भैरव रागमां गवायछे, तेमज लावणीने रागे पण गाइ दराव्यछे.

८८ कलिकाललिता. { १,३स भ त य स भ ग ग=२०रूप२०९७१६
२,४ स भ त य स स=१८रूप१११४१२

प्रथमे ने पद त्रीजे स भ ता या स भ गा गा धरजोजी;
स भ ता या स स आणो समपादे कलिकाललिता.

असंकीर्ण.

१०,१०नां रूप १०,४७,५५२ थायछे.

८९ प्रभासिता. { १,३. स स ज ग.=१० सद्गा. अंक ४६८
२,४. म स ज ग.=१० विराट,शुद्धविराट.४६६

विषमे स स जा ग तो गमे;
मा सा जा ग प्रभासिता समे.

९० अतन्द्र. { १,३. न त त ग.=१० विशालप्रभ. अंक ४९६
अशिल. { २,४. त न त ग.=१० विशालान्तिक. अंक ४५९

अतन्द्र ओजे न ता ता ग छे;

ता ता त गा सुमनां पाद छे.

विलोमे विश्वप्रभा, जुवो अंक ९१.

९१ विश्वप्रभा. { १,३. त त त ग.=१० विशालान्तिक, अंक ४९६
{ २,४. ज त त ग.=१० विशालप्रभ. अंक ४९६

ओजे त ता ता ग आण्या गमे;

ज ता त विश्वप्रभा गा समे.

अतेजनु विलोम, जुवो अंक ९०

९२ आलोलघटिका { १,३. स स ज ग.=१० सहना. अंक ४६८
{ २,४. त स ज ग.=१० अहिला. अंक ४६९

विषमे स स जा ग थायछे;

आलोलघटिका त स जग छे.

विलोमे लोलघटिका थायछे, जुवो अंक ९३.

९३ लोलघटिका, { १,३. त स ज ग.=१० अहिला. अंक ४६९
घटिका. { २,४. स स ज ग.=१० सहना. अंक ४६८

ओजे त स ज गा पदे गमे;

घटिका स स जा ग थी समे.

आलोलघटिकानु विलोम, जुवो अंक ९२.

११,११ नां रूप ४१,९२,२५६ थायछे.

९४ उपचित्र, { १,३. स स स ल ग.=११ उपचित्र. अंक ६०६
उपचित्रा. { २,४. भ भ भ ग ग. =११ दोधक. अंक ९८०

विषमे स स स ल ग आणनो;

भा भ भ गा ग समे उपचित्रे.

इहानां समपद ते आना समपद छे.

द्रुतमध्यानां विषम पद ते आनां समपद छे.

अनादिन गा श्र ९५मे छे, तेनुं विलोम

१०५ शिशुलीला. { १,३. स स ज ग ग =११ विमला. ९६७
{ २,४. स र ज ग ग. =११ रूप ३४०

विषमे रचजो ससा जगागा;
शिशुलीला समे सरा जगा गा.

१०६ औपगवीत. { १.३. भ र र ल ग.=११.वारयात्रिक अंक९९
{ २,४. न र र ल ग.=११. ललित. अंक९९७

औपगवीतमां भा र रा ल गा;
समनिषे करो ना र रा ल गा.

औपगवनुं विलोम, जुओ अंक १०४.

१२,१२ नां रूप १,६७,७२,१२० थायछे.

१०७ कौमुदी. { १,३. न न भ भ.=१२ रूप. ३,४८०
{ २,४. न न र र.=१२ चपलाक्षिका.अंक७२१

न न भ भ विषमे दारजो कवि!
न न र र सममां धखे कौमुदी.

१०८ उपसरसीक. { १,३ स भ ज य.=१२ शरमेया. अंक७०१
{ २,४. त भ ज य.=१२ नीरान्तिक.अंक७०२

स भ जा उपसरसीक य आवे;
ता भा ज या युज विषे कवि लावे.

सरसीकनु विलोम, जुओ अंक १०९.

१०९ सरसीक. { १,३. त भ ज य.=१२ नीरान्तिक. अंक७०२
{ २,४. स भ ज य.=१२ शरमेया. अंक ७०१

ता भा ज या थी सरसीक अयुग्मे;
स भ जा या कवि! पदे कर युग्मे.

उपसरसीकनुं विलोम जुओ, अंक १०८.

११० अर्भकपंक्ति. { १,३. स भ र य. =१२ वधीरा. ६८१
२,४. भ भ र य. =१२ वलभी. ६८२

विषमे सा भ र या धरो तमे तो;
अर्भकपंक्ति भ भा र या समे तो.

उलपोटा अंक १११ मे छे तेनु विलोम.

१११ उलपोटा. { १,३. भ भ र य. =१२ वलभी. ६८२
२,४. स भ र य. =१२ वधीरा. ६८१

ओज भ भा र य थायछे अयुग्मे;
उलपोटा स भ रा य थाय युग्मे.

अर्भकपंक्तिनु विलोम, जुवो अंक ११०

१३,१३ नां रूप ६,७१,००,६७२ थायछे.

११२ रुचिमुखी. { १,३. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९
२,४. न न भ स ग.=१३ विधुरवितान. ८३४

न न स स ग रुचिमुखी विषमे तो;
न न भ स ग धराय पद समे तो.

विमुखीनु विलोम अंक ११३

११३ विमुखी. { १,३. न न भ स ग.=१३ विधुरवितान. ८३४
२,४. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९

न न भ स ग अयुग्म पद मुखी छे;
न न स स ग सम पदे विमुखी छे.

रुचिमुखीनु विलोम अंक ११२

११४ भुजङ्गभृता. { १,३. स स स स ग.=१३ तारक. ८२२
२,४. भ भ भ भ ग.=१३ कमठ. ८७९

विषमे रचजो स स सा स ग भाई!

भा भ भ भा ग समेर्थी भुजंगभृता.

विलोमे अनंगपद, जुवो अंक ११५.

११५ अनंगपद. { १,३. भ भ भ भ भ ग. =१३ कर्मठ. ८७९
२,४. स स स स स ग. =१३ तारक. ८२२

ओज भ भा भ भ गार्थी अनंगपदे;
कवियो सममां स स सा स ग आणो.

भुजंगभृतानु विलोम अंक ११४.

११६ सुरहिता. { १,३. न न स स ग. = १३ चण्डी. ८२९
२,४. त न न न ग. = १३ रूप. ४,०९३

विषम चरण न न सा स ग आण्ये;
ता ना न न ग समथकी सुरहिता.

अतिसुरहितानु विलोम अंक ११७.

११७ अतिसुरहिता. { १,३. त न न न ग =१३ रूप. ४,०९३
२,४. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९

ओजे त न न न ग अतिसुरहिता;
न न स स ग समपदे रचनो जी.

सुरहितानु विलोम अंक ११६.

११८ मधुवारी. { १,३. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी. ८९८
२,४. त भ र स ल.=१३ अट्टासिनी. ८९९

स ज सा ज गा र्थी मधुवारी ओज छे;
ता भा र मा ल समे रचो कवि! आप.

निर्मधुवारीनु विलोम, जुवो अंक ११९.

११९ निर्मधुवारी. { १,३. त भ र स ल.=१३ अट्टासिनी. ८९९
२,४. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी. ८९८

ता भा रै सा ल र्थी ओज निर्मधुवारी;

सममां स जा स ज ग थायछे गरे.

मधुधारीतु विलोम अंक ११८.

१२० धीरावर्त्त. { १,३. म त य स ग.=१३ मत्तमयूर, माया. ८१९
२,४. म भ स म ग.=१३ लीलालोल. ७९४ }

मापे ओजे, मा त य सा गा कवि लावे; (४,९ यति)

धीरावर्त्ते, म भ स म गा युग्मे आवे. (४,९ यति)

विलोमे पण एज नाम रहेछे.

२१ अर्द्धरुत. { १,३. भ न य न ल.=१३ पंकावली. अंक ९०२
२,४. भ न ज ज ल.=१३ पंकवती. अंक ९०१ }

अर्द्धरुत विषममां भा न य न ल;

युग्म चरण रचवां भ न जा ज ल.

विलोमे अल्परुत थायछे, जुवो अंक १२२

२२ अल्परुत. { १,३. भ न ज ज ल.=१३ पंकवती. अंक ९०१
२,४. भ न य न ल.=१३ पंकावली. अंक ९०२ }

अल्परुत भ न ज जा ल पदे धर;

युग्म चरण भ न या ना लधी कर.

विलोमे अर्द्धरुत, जुवो अंक १२१.

१२३ कलना. { १,३. स ज स स ग =१३ कलहंस. अंक ८२३
२,४. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी. अंक ८९८ }

विषमे स जा, स स ग थी कलना छे; (९,८ यति)

सममां स जा स ज ग तो रचायछे.

कलनावतीतु विलोम, जुवो अंक १२४

१२४ कलनावती. { १,३. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी. ८९८
२,४. स ज स स ग.=१३ कलहंस. अंक ८२३ }

कलनावती स,ज स जा ग ओजमां;

सममां स जा स स ग आण सदा तुं.

कलना, अंक १२३ तु विलोम

१२५ शिशुमुखी. { १,३. न भ ज ज ग.=१३ सारसनावली. ८७१
२,४. न भ स ज ग. =१२ विरोधिनी. ८६१

शिशुमुखी न भ ज जा गुरु ओजगां;
पद विषे न भ स ज गां अनोजगां.

विलोमे आनिरया, अंक १२६.

१२६ अनिरया. { १,३. न भ स ज ग.=१३ विरोधिनी. ८६१
२,४. न भ ज ज ग.=१३ सारसनावली. ८७१

विषममां न भ स ज गा करो तमे;
अनिरया न भ ज जा ग धरो समे.

शिशुमुखीनु विलोम, जुवो अंक १२५.

१६,१६ नां रूप ४,२९,४९,०१,७६० थायछे.

१२७ वासववासिनी. { १,३ न ज भ ज ज ग=१६ रूप२३,४७२
२,४. त ज भ ज ज ग=१६ रूप२३,४६९

न ज भ ज जा ग ओज-पद वासववासिनी;
युग्मे धरवा त जा भ ज ज गा पद वासिनी.

वर्ण १४मा अंक ९७९मे कुररीरुता छे ते उपर ल ग वधारवाथी आनु विषमपद थायछे

विलोमे वासिनी, अंक १२८.

१२८ वासिनी. { १,३. त ज भ ज ज ग.=१६ रूप २३,४६९
२,४. न ज भ ज ज ग.=१६ रूप २३,४७२

ता जा भ ज वासिनी विषममां ज ग को करे;
न ज भ ज जा ग माप समपाद विषे धरे.

वर्ण १४मा अंक ९७९मे "कुररीरुता" छे ते उपर ल ग वधारवाथी आनां समपद थायछे

विलोमे वासववासिनी, अंक १२७

असम अथवा विषमवृत्त.

भिन्न भिन्न लक्षणवाळां, एटले जेनां चारे पाद विषम होय ते विषमवृत्त केहेवायछे; तेना संकीर्ण अने असंकीर्ण एवा भेद छे अने ते त्रण जातिना छेः—

१ पदचतुरूर्ध्व (अथवा पादचतुरूर्ध्व),
२ उद्गता,　　　३ उपस्थितप्रचुपित.

संकीर्ण.

१२९ पदचतुरूर्ध्व. { पद+चतुर+ऊर्ध्व=पदचतुरूर्ध्व. जेना पदमां चार चार वर्ण वधे एवुं; वळी जेमां लघु गुरुनो नियम नहि एवुं.

प्रथमे अक्षर आठ,
बीजे बारतणो रचायछे ठाठ;
त्रीजामां अक्षर सोळ सर्वे मळीने आणजो,
चोथे अक्षर वीश पदचतुरूर्ध्व पदमांह जाणजो.

वृत्तरत्नाकर अने मंदारमरंदचंपू प्रमाणे

८,१२,१६, अने २० ए क्रममा उथलपाथल करवामा आवे तो पदचतुरूर्ध्वना २४ रूप थायछे.

१३० आपीड. {
१. ६ल+२ग. = ८ वर्ण. तुंगा. २९०
२. १०ल+२ग. =१२ वर्ण. रूप १,०२४
३. १४ल+२ग.=१६ वर्ण. शिशुभरण. १,०८०
४. १८ल+२ग.=२० वर्ण. रूप २,६२,१४४

(अन्तमां प्रतिपदे बे गुरु बाकीना सर्वे लघु.)

छ ल द्वि ग प्रथमे छे,
दश ल उपर द्वि ग युगले छेः

१२५ शिशुमुखी. { १,३. न भ ज ज ग.=१३ सारसनावली. ८७१
२,४. न भ स ज ग. =१३ विरोधिनी. ८६१

शिशुमुखी न भ ज जा गुरु ओजमां;
पद विषे न भ स ज गां अनोजमां.

विलोमे अनिरया, अंक १२६.

१२६ अनिरया. { १,३. न भ स ज ग.=१३ विरोधिनी. ८६१
२,४. न भ ज ज ग.=१३ सारसनावली. ८७१

विषममां न भ स ज गा करो तमे;
अनिरया न भ ज जा ग धरो समे.

शिशुमुखीनु विलोम, जुवो अंक १२५.

१६,१६ नां रूप ४,२९,४९,०१,७६० थायछे.

१२७ वासववासिनी. { १,३ न ज भ ज ज ग=१६ रूप २३,४७२
२,४. त ज भ ज ज ग=१६ रूप २३,४६९

न ज भ ज जा ग ओज-पद वासववासिनी;
युग्मे धरवा त जा भ ज ज गा पद वासिनी.

वर्ण १४मा अंक ९७९मे कुररीरता छे ते उपर ल ग वधारवाथी आनु विषमपद थायछे.

विलोमे वासिनी, अंक १२८.

१२८ वासिनी. { १,३. त ज भ ज ज ग.=१६ रूप २३,४६९
२,४. न ज भ ज ज ग.=१६ रूप २३,४७२

ता जा भ ज वासिनी विषममां ज ग को करे;
न ज भ ज जा ग माप समपाद विषे धरे.

वर्ण १४मा अंक ९७९मे "कुररीरता" छे ते उपर ल ग वधारवाथी आना समपद थायछे

विलोमे वासववासिनी, अंक १२७

असम अथवा विषमवृत्त.

भिन्न भिन्न लक्षणवाळां, एटले जेनां चारे पाद विषम होय ते विषमवृत्त केहेवायछे; तेना संकीर्ण अने असंकीर्ण एवा भेद छे अने ते त्रण जातिना छेः—

१ पदचतुरूर्ध्व (अथवा पादचतुरूर्ध्व),

२ उद्गता, ३ उपस्थितप्रचुपित.

संकीर्ण.

१२९ पदचतुरूर्ध्व. { पद+चतुर+ऊर्ध्व=पदचतुरूर्ध्व. जेना पद्मां चार चार वर्ण वधे एवुं; वळी जेमां लघु गुरुनो नियम नहि एवुं.

प्रथमे अक्षर आठ,
बीजे बारतणो रचायछे ठाठ;
त्रीजामां अक्षर सोळ सर्व मळीने आणजो,
चोथे अक्षर वीश पदचतुरूर्ध्व पदमांहे जाणजो.

वृत्तरत्नाकर अने मंदारमरंदचंपू प्रमाणे.

८,१२,१६, अने २० ए क्रममां उथलपाथल करवामां आवे तो पदचतुरूर्ध्वना २४ रूप थायछे.

१३० आपीड. {
१. ६ल+२ग. = ८ वर्ण. तुंगा. २९०
२. १०ल+२ग. =१२ वर्ण. रूप १,०२४
३. १४ल+२ग.=१६ वर्ण शिशुभरण. १,०८०
४. १८ल+२ग.=२० वर्ण. रूप २,६२,१४४

(अन्तना प्रतिपदे बे गुरु मार्गना सर्वे लघु.)

छ ल द्वि ग प्रथमे छे,
दश ल उपर द्वि ग युगले छे;

१४ २
मनु ल उपर द्विग कवि धर पद बीजे;
१८ ४
धृति ल उपर ग ग धरों कविवर! श्रुति पद कीजे.
उपरनी रीते आना पण चोवीश भेद प्रस्तारथी थायछे

२३१ प्रत्यापीड.
१. २ग+ ६ ल= ८ वर्ण. सन्धूक. ३४
२. २ग+१० ल=१२ वर्ण. रूप ४,०९
३. २ग+१४ ल=१६ वर्ण. रूप ६१,४३
४. २ग+१८ ल=२०वर्ण. रूप१०,४८,५७

बे गा छ ल प्रथमज,
बे गा पर दश ल द्वितीय पद;
१४
बे गा उपर मनु ल तृतीय चरण धर,
१०+८
बे गा उपर चरम चरण दश वसु ल कवि! कर.

२३२ उभयापीड.
१. २ग+४ल+२ग= ८ संध्या,पोण.३८
२. २ग+८ल+२ग=१२ विरतिमहती.७१
३. २ग+१२ल+२ग=१६ रूप. ८,१८९
४. २ग+१६ल+२ग=२० रूप.२,६२,१४१

गा गा ल न ग ग पे'ले,
८
गा गा वसु ल उपर ग ग बीजे;
१२
गा॰गा पर रवि ल पर ग ग चरण त्रीजे,
१०+६
गा गा पर दश षट ल उपर ग ग धर पद चोथे.

उभय+आपीड=उभयापीड=जेमां आपीड अने प्रत्यापीड ए बंनेनां लक्षण आवे ते. एटले एना पादमां आपीडमा अंतमां बे गुरु आवेछे ते लीधा, अने प्रत्यापीडमा प्रारभमा बे गुरु आवेछे ते आना प्रारंभमा लीधाछे. ए रीते प्रत्येक पादमां आदि अने अन्तमा बबे गुरु आवेछे, बाकीना वच्चे लघु अक्षर आवेछे.

उभय एटले आदि अने अंत एम बे स्थाने बे गुरु आवे.

कलिका, मञ्जरी, मन्दरी[1].
- १. १० ल+२ग=१२ वर्ण. रूप १,०२४
- २. ६ ल+२ग= ८ तुंग, तुंगा. अंक २९०
- ३. १४ ल+२ग=१६ शिशुभरण. १,०८०
- ४. १८ ल+२ग=२० रूप २,६२,१४४

दश ल पर ग ग प्रथम दीजे,
छ ल ग ग पद बीजे;
मनु ल पर ग ग तृतीय पद धरजो जी,
दश वसु ल पर ग ग चतुरथ चरण करजो जी.

१ मदारमरदचम्पू प्रमाणे

१३४ लवली.
- १. १० ल+२ग=१२ रूप १,०२४
- २. १४ ल+२ग=१६ शिशुभरण.अंक १,०८०
- ३. ६ ल+२ग= ८ तुंग, तुंगा. अंक २९०
- ४. १८ ल+२ग=२० रूप २,६२,१४४

दश ल परगग प्रथम आणो, (आपीडनुं २जु पद= १२०
मनु ल उपर द्वि ग लवली द्वितीय जाणो; („ ३जुं)
छ ल द्वि ग पद त्रीजे, (आपीडनुं प्रथम पद)
चतुरथ पद दश वसु ल उपर ठीक ग ग कीजे. („ ४थुं)

आमा सकल चरणने अंते बे गुरु आवे
वृत्तरत्नाकर तथा मदारमरदचम्पू प्रमाणे

१३५ लवली. (द्वितीय)
- १. १४ल+२ग=१६ शिशुभरण. अंक १,०८०
- २. १०ल+२ग=१२ वर्ण. रूप १,०२४
- ३. ६ल+२ग= ८ तुंग, तुंगा. अंक २९०
- ४. १८ल+२ग=२० वर्ण. रूप २,६२,१४४

प्रथम चरण मनु ल उपर द्वि ग दीजे,

दश ल पर द्वि ग चरण बीजे;

छ ल पर ग ग त्रीजे,

१०+८
दश वसु ल पर द्वि ग चतुरथ पद लवलौं कीजे.

पिंगल नागना मत प्रमाणे छंद शास्त्रमां लख्या मुजब..

१३६ अमृतधारा[1] मञ्जरी[2].
१. १० ल+२ग = १२ रूप १,०२४
२. १४ ल+२ग = १६ शिशुभरण १,०८०
३. १८ ल+२ग = २० रूप २,६२,१४४
४. ६ ल+२ग = ८ तुंग, तुंगा. २९०

दश ल पर द्वि ग प्रथम आवे,

१४
द्वितीय चरण मनु ल उपर ग ग लावे;

८+१०
वसु दश ल उपर ग ग तृतीय पद अमृतधारा,

छ ल द्वि ग पद चारा.

१ घुमरलाकर तथा मंदारमरंदचंपूना मत प्रमाणे.

२ मंदारमरंदचंपू केहेछे के कोइ एने मंजरी केहेछे.

१३७ अमृतधारा. (द्वितीय)
१. १८ ल+२ ग = २० रूप. २,६२,१४४
२. १० ल+२ ग = १२ रूप. १,०२४
३. १४ ल+२ ग = १६ शिशुभरण. १,०८०
४. ६ ल+२ ग = ८ तुंग, तुंगा. २९०

८+१०
प्रथम चरण वसु दश ल पर ग ग अमृतधारा;

दश ल द्वि ग द्वितीय पद सारा,

१४
तृतीय पद मनु ल पर द्वि ग ठिक गोठे,

छ ल पर ग ग चोथे

१३८ उद्गता.
1. स न स ल =१० रसभूम. अंक ९०९
2. न स ज ग =१० अनुचायिता.अंक ४७१
3. भ न ज ल ग=११ अर्धशिखा. अंक ६२७
4. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी.अंक ८९८

प्रथमे स जा स ल धराय,
न स ज ग द्वितीय पादमां;
भा न ज ल ग तृतीये चरणे,
स ज सा ज गा पद चतुर्थ उद्गता.

छंदःशास्त्र, प्राकृत पिंगलसूत्र, वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी, अने मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे.

१ माघ अने भारवि कविनी रचनामां आवा प्रकारनी उद्गता रची छे, माटे तेनी प्रकारान्तर गणना करी छे.

१३९ सरल.
1. स ज स ल =१० रसभूम. अंक ९०९
2. न स ज ग =१० अनुचायिता. " ४७१
3. भ न ज ल ग=११ अर्धशिखा. अंक ६२७
4. न न न ग =१० रूप ९११

प्रथमे स जा स ल धराय,
न स ज ग करी बीजे पदे;
भा न ज ल ग तृतीये चरणे,
त्रि न ग पद ४ युग सरला.

४० उद्गता.
1. स ज स ल=१० रसभूम. ९०९
2. न स ज ग=१० अनुचायिता. ४७१
3. भ न भ ग१=१० गहना. ४९३
4. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. ८९८

प्रथमे स जा स ल रचाय,
न स ज ग द्वितीय उद्गता;

भा न भ ग अनले धरजो,
स न सा ज गा पद चतुर्थमां सजो.

१ छंदोमंजरी तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमां प्रथम जणावेलो उद्गतावृत्त आर्षीने आ माप पण जणाव्युं छे, अने तेनुं उदाहरण नीचे प्रमाणे आप्युं छे.–

१ विलसत गोपरमणीषु,
२ तरणितनया प्रभोद्गता;
३ कृष्णनयनचकोरयुगे,
४ दधती सुधांशुकिरणोर्मिविभ्रम.

उद्गतानुं चोथुं पद शब्दकल्पद्रुममां मळतुं आवतुं नथी पण छंदोमंजरी साथे मळेछे तेमां बीजो प्रकार छे.

१४१ सौरभक, सौरभ, सौरलक.*
१. स ज स ल=१० रसभूम. अंक ५०९
२. न सा ज ग=१० अनुनादिता.अंक ४७१
३. र न भ ग=१० रूप. ४४३
४. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी.अंक ८९८

प्रथमे स जा स ल कराय,
द्वितीय चरणे न सा ज गा;
छे तृतीयपद रा न भ गा,
स ज सा ज गा पद चतुर्थ सौरभे.

पेहेलुं, बीजुं, अने चोथुं चरण उद्गता प्रमाणे थायछे. मात्र त्रीजुं चरण जूदुं पडेछे. आ विषे वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगलसूत्र, अने मंदारमरंदचम्पूनी संमति मळेछे.

परिभूत फुल्ल शत पत्र =१०
वन विसृत गन्ध विभ्रमा =१०
कस्य हृद हरतीह हरे =१०
मुख पद्म सौरभ कला तवाद्भुता=१३

पण एक उदाहरण उपर प्रमाणे छे तेने बदले संस्कृतप्रोसडीमां

बीजा चरणनी आदिमां चन ने बदले बदन शब्द मूकवाथी एक अक्षर वधेछे अने तेनी माप न न र ल ग गण्युं छे ते भूल छे. तेमज प्रा. पि. सू. मां चोथा चरणना प्रारंभमां मुख शब्द मूकी दीधो छे. तेथी १२ ने बदले ११ वर्ण भागछे अने तेनी उद्दव-णिकामां जणाव्या प्रमाणे र न र ल ग भागछे, ते पण भूल छे.

मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे.

१४२ ललित. (विषम)
- १. स ज स ल=१० रसभूम. अंक ५०९
- २. न स ज ग=१० अनुचायिता. अंक ४७१
- ३. न न स स=१२ द्रुतकलिका. अंक ७९८
- ४. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. अंक ८९८

प्रथमे स जा स ल रचाय,
द्वितीय चरणे न सा ज गा;
तृतीय चरण न न सा स करो,
स ज सा ज गा ललितमां युगे* धरो.

बीजा चरण शिवाय बाकीना चरण उद्गता प्रमाणे छे
मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे पण आ ललित छे —

जेम उद्गताना भेद थायछे तेम आना पण भेद थइ शकेछे वळी संस्कृत ग्रंथोमां पे आनयु ललित छे तेमा एकमा नीचे प्रमाणे गण आप्या छे.—

१ पादमां स ज स ल. रसभूम. अंक ५०९
२ पादमां न स ज ग. अनुचायिता. अंक ४७१
३ पादमां न न भ ग. फलधर. अंक ४९५
४ पादमां स ज स ज ग. मंजुभाषिणी. अंक ८९८

१४३ अपरा+ उद्गता.
- १. स ज न ग=१० धमानिका. अंक ४९६
- २. न स ज ग=१० अनुचायिता. अंक ४७१
- ३. भ न ज ल ग=११ अर्धशिखा. अंक ६२७
- ४. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. अंक ८९८

पे'ले पाद म सा ज भा ग गा कवि! आणो,
स न जा र ग पद छे द्वितीय जाणो;
न न स चरण तृतीये,
न न न ज य मनुपित उपस्थित चोथे.

मंदारमरंदचपू प्रमाणे.

१४७ प्रवर्द्धमान, वर्द्धमान.
- १. म स ज भ ग ग=१४ रूप. ३,४१७
- २. स न ज र ग =१३ रूप. १,४०४
- ३. न न स न न स =१८रूप. १,२०,८१६
- ४. न न न ज य =१५ रूप. ७,१६८

मासा जभा ग ग वर्द्धमानमां प्रथमे छे,
सनजा र ग चरणे बीजे करेछे;
न नसन न स गण आ अनल[३] पद कवि करे,
त्रि न पर ज यं प्रवरधमान चतुर्थे.

१४८ शुद्धविराटऋषभ, शुद्ध विराट्टपभ, शुद्ध विराडार्षभ.
- १. मसजभगग=१४ रूप. ३,४१७
- २. सनजरग =१३ रूप. १,४०४
- ३. त ज र = ९ रवोन्मुखी. ३८१
- ४. नननजय =१५ रूप. ७,१६८

पेहेले चरणे म सा ज भा ग ग कीजे,
स न जा र ग कवि! आण पाद बीजे;
ता जा र तृतीय पाद दे,
न न न ज य श्रुति चरण शुद्धविराटे.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा लखेछे के पेहेलाज पादने अते यति मानी बाकीना त्रणे पादो साथे बोलाय तो आर्षभ एवु नाम पडे अने प्रत्येक चरणने अते यति रखाय तो शुद्धविराडृषभ थाय एम यतिना भेदथी बे नाम पडेछे एम केटलाक केहेछे

१४९ नगोनिता.
१. त र ल ग=८ नाराचिका. अंक २९४
२. ज र ल ग=८ प्रमाणिका. अंक २९५
३. र ज ग=७ चामर. अंक १६९
४. ज र ल ग=८ प्रमाणिका. अंक २९५

ता रा नगोनिता ल गा,
बीजा विषे ज रा ल गा;
रा ज गा त्रीजे धरो,
ज रा ल गा युगे करो.

१५० पराथिनी, वराथिनी.
१. न य स = ९ सारंगिका. अंक ३९३
२. ज त भ ग=१० रूप ४२२
३. भ म स = ९ मणिबंध. अंक ३९२
४. त ज र ग ग=११ रूप १७३

प्रथम न या सा करजो,
बीजे ज ता भा ग तो भरजो;
भा म स त्रीजे पाद धरो,
ता जा र ग गा पराथिनी चोथे.

१५१ नगोपमा.
१. त ज र = ९ रुग्मोन्मुखी. ३८१
२. म स ज ग =१० विराट. ४६६
३. त ज र =९ रुग्मोन्मुखी. ३८१
४. स भ र ल ग=११ सीधु. ६६९

पे'ले त ज रा बने सारे,
बीजे मा स ज गा पदे धरे;
त्रीजे त ज रा तमे करो,
स भ रा ला ग नगोपमा भरो.

१५२ अगाधिका.
१. त ज र = ९ रुग्मोन्मुखी. ३८१
२. म स ज ग=१० शुद्धविराट ४६६
३. स म ज ग=१० सरजा. ४६८
४. म म ज ग=१० शुद्धविराट. ४६६

पेले त ज रा करो भले,
बीजे मा स ज गा पदे भळे;
स स जा ग त्रीजे अगाधिका.
चोथे पाद धरो म सा ज गा.

१५३ विषकण्ठी.
- १. न भ र = ९ करशया. ३८८
- २. स स ज ग =१० सहजा. ४६८
- ३. न न र ल ग=११ सुभद्रिका. ६०३
- ४. स भ स ज ग=१३ रूप. २,८०४

प्रथम ना भ र थायछे,
स स जा ग बीजे रचायछे;
न न र ल ग त्रीजे पदे करो.
विषकंठी स भ स ज गा युगे धरो.

१५४ पंजी.
- १. स स य = ९ रूप. ९२
- २. न ज ज र =१२ मालती. ७३१
- ३. न न र ल ग =११ सुभद्रिका. ६०३
- ४. न ज ज र ग=१३ मृगेन्द्रमुख. ८१९

स स या प्रथमे करो जो,
न ज ज र पाद द्वितीय आणजो;
न न र ल ग तृतीय जाणजो,
न ज ज र गा थकी तुर्य पाद पंजी.

छंदोलतामां आना चोथा पदनुं लक्षण उपर प्रमाणे छे पण तेमां उदाहरणमां रगण ने बदले समगण थइ गयो छे

१५५ उदया.
- १. न ज न ग =१० अमृतगति. अंक ४९६
- २. स भ स = ९ अनवीरा. अंक १९९
- ३ न न न ल ग=११ दमनक. अंक १३७
- ४. म न न ग =१० रूप. ९०६

प्रथम पदे न ज न ग छे,
उदया नेत्र स भ स छे;
तृतीय चरण न न न ल गा,
चोथे वर्ण दश म न न गा.

१९६ नालीका.
१. स स ज ग=१० सहजा. अंक ४६
२. स भ र ल ग=११ सीधु. अंक ९९
३. त ज र = ९ रवोन्मुखी.अंक ३८
४. म स ज ग =१० विराट. अंक ४६

प्रथमे स स जा ग नालीका,
स भ रा ला ग द्वितीय छे कौका!
त्रीजे त ज रा तमे करो,
चोथे पाद म सा ज गा धरो.

१९७ सौराष्ट्री.
१. स स ज ग =१० सहजा. अंक ४६८
२. स भ र ल ग=११ सीधु. ,, ९९९
३. स स ज ग =१० सहजा. ,, ४६८
४. म स ज ग =१० विराट. ,, ४६६

प्रथमे स स जा ग थाय रे,
पद बीजे स भ रा ल गा धरे;
तृतीये स स जा ग कार छे,
सौराष्ट्री म स जा ग चार छे.

१९८ मंशुमतिका.
१. न ज ज ल ग=११ सुमुखी. ६२३
२. भ भ भ ग =१० विधमुखी. ४०९
३. न भ भ ग =१० शान्त. ४९१
४. भ ज त ग =१० खेटक. ४९९

प्रथम पदे न ज जा ल्घु गा,

छे द्वितीये पद भा भ भ गा;
तृतीय पाद न भा भ ग छें,
मंक्षुमतिका भ जा ता ग छे.

१५९ शर्म.
१. न न न ल ग=११ दमनक. अंक ६३७
२. न ज न ग=१० त्वरितगति,अमृतगति. ४९६
३. भ भ स = ९ प्रियतिलका. अंक ४००
४. भ न न ग=१० कृतमणिता. अंक ४९८

प्रथम चरण न न न ल गा,
चरण द्वितीय न ज न गा;
छे तृतीये भ भ स खरे,
शर्म युग भ न न ग करे.

१६० चिरकरका.
१. स स ज ग=१० सहजा. अंक ४६८
२. स भ र ल ग=११ सीधु. अंक ५९९
३. त ज र = ९ रवोन्मुखी.अंक ३८१
४. न ज ज र=१२ मालती. अंक ७३१

प्रथमे स स जा ग थायछे,
द्वितीये सा भ र ला ग गायछे;
त्रीजे त ज रा तमे धरो,
चिरकरका न ज जा र थी करो.

१६१ माणित्यक.
१. न न र ल ग=११ सुभाद्रिका. ६०२
२. स भ र ल ग =११ सीधु. ५९९
३. स स ज ग =१० सहजा. ४६८
४. भ स ज ग =१० विराट. ४६६

प्रथम न न र ला ग तो किजे,
स भ रा ला ग माणित्यके बीजे;

तृतीये चरणे स सा ज गा,
चोथे पाद करो म सा ज गा.

१६२ वैतालीक.
- १. स स ज ग=१० सरजा. ४६८
- २. म स ज ग=१० विराट,शुद्धविराट ४६६
- ३. न न र ल ग=११ सुभद्रिका. ६०३
- ४. स भ र ल ग=११ सौधु. ९९९

प्रथमे स स जा ग तो कीजे,
वैतालीक म सा ज गा बीजे;
तृतीय चरण ना न रा ल गा,
श्रुति पदे रच सा भ रा ल गा.

१६३ मन्देहा.
- १. न न भ स =१२ रूप १,९८४
- २. म न न ल ग=११ रूप १,०१७
- ३. भ स ज ग =१० रूप ३९१
- ४. म त र = ९ रूप १६१

प्रथम चरण ना न भ स धरो,
मन्देहा म न न ल ग थाँ करो;
भा स ज ग त्रीजे पदे करे,
चोथे पादे मा त रा धरे.

१६४ कुथिनी.
- १. न ज य ग ग=११ वार्त्ताहारी. अंक ९४०
- २. न न स म =१२ शुद्धान्त. अंक ६६४
- ३. त न म ग =१० कुल. अंक ४२८
- ४. स न य ग ग=११ सौधांश्रि. अंक ९४२

प्रथम पदे न ज या गा गा छे,
न न स म कर कुथिनीमा बीजे;
त्रीजे चरण त ना मा गा छे,

स न या ग ग पद चोथामां छे.

२६५ कामकलशिका.
- १. ससजगग=११ निमला. अंक ५६७
- २. सभरय =१२ बधिरा. अंक ६८१
- ३. तजरग =१० नंमरु,लाजवती.४४०
- ४. भसजगग=११ अमंदपाद. ५६९

प्रथमे स स जा गं गा करोजी,
पद बीजे स भ रा य तो धरोजी;
त्रीजे पद थाय ता ज रा गा,
कामकलशिका भ सा ज गा गा.

२६६ वर्त्तिकाविलसित.
- १. रनरलग=११ रथोद्धता. अंक ६०७
- २. रनभगग=११ स्वागता. अंक ५८२
- ३. नररलग=११ भाविनी. अंक ५९७
- ४. रनरर =१२ रूप. १,२११

थायछे प्रथम रा न रा ल गा,
छे द्वितीय पद रा न भ गा गा;
न र र ला ग आवे त्रीजे पदे,
वर्त्तिकाविलसिते र ना रा र दे.

२६७ उपवैतालिक.
- १. त भ त ग ग=११ इहामृगी. ५६२.
- २. त भ त ग ग=११ इहामृगी. ५६२
- ३. न त ज र =१२ विरासिका.७२७
- ४. त भ त ग ग=११ इहामृगी. ५६२

ता भा त गा उपवैतालिके छे,
बीजे पदे त भ ता गा ग के' छे;
त्रीजे पदे छे त न जा र मापमां,
चोथे पदे कवि! ता भा त गा

१६८ महातुरा. { १. स न स ल ग=११ रूप. ७६४
२. स भ न र =१२ उपलेखा. ७४२
३. त ज न र =१२ रूप १,९१७
४. म न ज र =१२ रूप १,४०१

प्रथमे स न स ल ग आणजो,
पद बीजुं स भ न र थी जाणजो;
त्रीजे चरणे त ज न र छे शूरा!
चोथे मा न ज र बने महातुरा.

१६९. सुरभि. { १. न ज र र =१२ विशिखलता. अंक ७१९
२. न ज ज र =१२ मालती. अंक ७३१
३. न न र य =१२ परिमितविजया.अंक६८३
४. न ज ज र ग=१३ मृगेंद्रमुख. अंक ८१९

प्रथम पदे न जा र रा जाणजो,
द्वितीय पदे न ज जा र आणजो;
तृतीय चरण ना न रा य आणो,
सुरभि चतुर्थ न जा ज रा ग जाणो,

आ वृत्त छंदोलतामांथी मळ्यु छे. छंदोलतामां तेनां प्रथम पादना लक्षणनां उपर प्रमाणे गण कथ्या छे पण उदाहरणमां एक रगण ओछो छे.

१७० गिरिकन्या. { १. स स ज ग ग =१२ विमला. अंक९६७
२. स भ र य =१२ वधिरा. अंक६८१
३. स स ज य स स ज स ग=२९ रूप७६,६३,६२८
४. स ज स म ग =१३ कलहस. अंक८२३

प्रथमे स स जा ग गा धरजि,
गिरिकन्या स भ रा य आण बीजे;
तृतीये चरणे स सा ज य सा सा ज स गा करवा वसन्ततॅरि भाखे,
स ज सा स गा श्रुति पदे कवि दाखे.

छंदोलतामांथी आ वृत्त लीधु छे

१७१ सुरद्रु.
१. ४ रगण=१२ स्त्रग्विणी. अंक ७१७
२. ३य+लग=११ भुजंगी, कर्ण. अंक ५९०
३. ४ यगण=१२ भुजंगप्रयात. अंक ६७९
४. ३त+२ग=११ प्राकारबंध. अंक ५५९

आदिना पादमां चार रा तो वदे,
त्रि या छे ल गा छे, द्वितीये पदे;
य तो चार त्रीजे सुरद्रु पदे छे,
चोथे त्रि ता ने द्वि गा माप देछे.

१७२ अत्सरु.
१. सजससस=१२ प्रमिताक्षरा. अक ७५४
२. तभजलग=११ जिह्लाशया. अंक ६२४
३. भजसस=१२ नीलगिरिका. अंक ७५६
४. जंजसस=१२ विकत्थन. अंक ७५५

स ज सा स अत्सरु विषे प्रथमे,
बीजे त भा ज ल ग थाय क्रमे;
भा ज स स छे गण तृतीय पदे,
ज जा स स तुर्य पदमांह वदे.

१७३ छेकवती.
१. भ भ भ भ=१२ मोदक. ७८९
२. ज ज ज ज=१२ मौक्तिकदाम.७८६
३. स स स स=१२ तोटक. ७५३
४. भभभगग=११ दोधक, बंधु. ५८०

भा भ भ भा थकी छेकवती कर,
ज जा ज ज पाद बीजे कवि! धार;
स स सा स त्रीजे पद आण सदा,
भा भ भ गा ग बने पद चोथे.

२७४ मानमुखी.
१. न न भ स ग=१३ विधुरवितान. ८३४
२. भ स न य =१२ अर्पितमदना. ७१२
३. न य न य =१२ कुसुमविचित्रा. ७११
४. भ त न ग ग=११ अनुकूला. ९८६

न न भ स ग बधा पद प्रथमे छे,
भा स न य द्वितीय पद धरेछे,
न य न य त्रीजे चरण करेछे,
मानमुखी भा त्न ग ग यूंगे छे.

२७५ नतभृगु
१. म भ न ल ग=११ भ्रमरविलसिता. ९३९
२. स त न स =१२ रसिकपरिचिता. ७७०
३. न य न न ग=१३ मदननवनिका ८८८
४. म त न स=१२ चीरणमाला. ७७१

पे'ले पादे म भ न ल ग धरो,
पद बीजे सा त न स कविरो ररो,
नतभृगु त्रीजे न य न न ग पदे,
तुर्य पदे भा त न सगण वदे.

२७६ भुवनविरति
१ न भ ज य=१२ द्रुतपद. ७०४
२. र न भ ग ग=११ स्वागता. ९८२
३ ज न ज य =१२ उपधान ७०८
४. न न स स ग=१३ चंडी. ८३५

प्रथम पाद न भ जा य धरेछे,
रा न भा ग ग द्वितिय पदे रे,
ज ना ज य पद रचो यति त्रीजे,
भुवनविरति न न सा स ग चोथे

१७७ उद्रकः—
{१. न भ स ज ग=१३ विरोधिनी. ६८१
{२. स न ज र =१२ विरला. ७३४
{३. त न र ल ग=११ नीला. ६०९
{४. भ न ज र =१२ अविरलरतिका. ७३९

न भ स जा ग-उद्रक आदिमां धरो,
स न जा र कवि! द्वितीयमां करो;
त्रीजे त न र ल गा रचायछे,
भा न ज र चरण तुर्य थायछे.

१७८ संकलि.
{१. न ज ज ग=१२ तामरस. ६९९
{२. भ भ भ ग ग=११ दोधक. ९८०
{३. न न स स ग=१३ चंडी. ८२९
{४. भ न ज ग =१२ पथिकान्ता. ७०९

प्रथम पदे न ज जा य रचावो,
भा त्रि द्वितीय पदे ग ग लावो;
तृतीय चरण द्विन-मा स ग जाणो,
संकलि चतुर भ ना ज य आणो.

१७९. दरदपुर.
{१. न न स ल ग=११ रूप. ७६८
{२. स भ न र =१२ उपलेखा. ७४३
{३. न ज भ ज ग=१३ रूप. २,९९२
{४. त न र न ग ग=१४ रूप. ३,७७३

प्रथम न न स ल ग आणजो,
पद बीजे स भ न र प्रमाणजो;
तृतीय पदे न जा भ ज ग जाणजो,
त ना र दरदपुरमा न ग ग चोथे.

१८० तरुणाशया.
- १. न ज ज र ग=१३ मृगेन्द्रमुख. ८१५
- २. भ भ र य=१२ वलभी. ६८२
- ३. ज ज ज र ग=१३ अतिरंह. ८१४
- ४. स ज ज र ग=१३ मत्तपाद. ८१३

प्रथम पदे न ज जा र गा धरो जी,
भा भ र या पदमां बीजे करो जी;
त्रीजे चरणे ज ज जा र गा नकी छे,
तरुणाशया स ज जा र गा थकी छे.

१८१ अतुल.
- १. न स ज त ग=१३ कठिनी. ८४९
- २. न ज र र=१२ त्रिशिखलना. ७१९
- ३. भ ज र र=१२ विप्लुतशिखा. ७१८
- ४. भ स ज त ग=१३ भसल्लपद. ८४४

अतुल प्रथमे न सा ज ता गा करे,
न ज र र पादमांह बीजे धरे;
भा ज र र थाय पाद त्रीजा विषे,
भा स ज त ग गाप पाद चोथे दिसे.

१८२ नेदिष्ठा.
- १. म न भ ल ग=११ रूप ९९३
- २. न य ज भ ग ग=१४ रूप ३,४०८
- ३. त न र न ग=१३ रूप २,७७३
- ४. म न ज न य=१५ रूप ८,०९७

पेले पाद म न भा ल ग हजो,
चरण द्वितीये न या ज भा ग ग आणो;
त्रीजे चरण त ना र ना ग करजो,
नेदिष्ठा चरण चुगे म न ज न य जाणो.

१८३ शरक्षामा.
१. न भ ज र=१२ प्रियंवद. अंक ७३३
२. स भ ज र स=१५ रूप १३,६८४
३. भ न स ज ग=१३ रूप २,८१५
४. म न स ज म=१५ रूप २,८०९

प्रथम पाद न भ जा र जाणजो,
गण बीजे स भ ज रा स पादमांह सजो;
भा न स ज ग पद्द तृतीयके हजो,
चोथे मा न स ज म करी करो शरक्षामा.

१८४ भौजंग.
१. स स ज ग ग=११ विमला. अंक ५६७
२. स न ज र य=१५ रूप ५,१००
३. न न भ स ल ग=१४ रूप ६,०८०
४. म न ज न र ग=१६ रूप १२,१५३

प्रथमे स स जा ग गा धरो जी,
स न जा र य चरणे द्वितीयके करो जी;
तृतीय चरणमा न न भ स ला ग छे,
भौजंगे म न ज न रा ग चरण थाय चोथे.

वाग्वल्लभमा आनु माप छे, पण तेमा जे उदाहरण छे तेमां त्रीजो जगण जोइये तेने बदले नगण आवेछे अने वळी एक अक्षर पण खूटेछे खरो चोथु पद आ प्रमाणेछे —

'मो नो जो नर गण गुरुरपिच भौजग.'

१८५ उपनय.
१ न न भ न ल ग=१४ प्रहरणकलिका. ९८५
२. भ स न न ग=१३ अर्द्धकुसुमिता. ८९०
३. स स न न ग=१३ वरिवासिता. ८८९
४. त ज न स=१२ न्यायोगवती. ७७२

उपनय प्रथमे न न भ न ल ग छे,
पादपर द्वितीय भ स न न ग छे;

पदमांह तृतीयेस स न न ग छे,
चोथे चरणे गण त ज न स छे.

२८६ पिसंगी.
१. नंजभजलग=१४ कुररीरुता. ९७९
२. भरनभग=१२ लवलोलता. ८८०
३. भजभजलग=१४ कारविणी. ९७८
४. जजभजलग=१४ काकिणिका. ९७७

प्रथम पदे न जा भ ज ल गा धरजो,
भा र न भा ग आप द्वितीये करजो;
भा ज भे ज ला तृतीय ग पदे रचजो,
पिसंगी चतुर्थ जा ज भ ज ला ग सजो.

२८७ युतक.
१. सजजभगल=१४ उपकारिका. अंक ९९३
२. तभरसल =१२ अट्टासिनी. अंक ८९९
३. भजजभगल=१४ हेममिहिका. अंक ९९४
४. नसमजज =१५ मितमकिथ. अंक १,०९६

प्रथमे मदा स ज जा भ गा ल रचाय,
बीजे पदे त भ रा स ला ठिक थाय;
छे गण तृतीय पदे भ जा ज भ गा ल,
युतक पदे तुर्ये न सा स जा ज निहाळ.

२८८ अनसूय.
१. ननमयय=१५ मालिनी. अंक १,०१०
२. भसततगग=१४ पुष्पशकटिका. ९२९
३. ससततगग=१४ सरमासरणी. ९२४
४. तयररग=१३ भामनशीला. ८०९

प्रथम चरण ना ना मा य या आप कीजे,
भा स त त ग गा आणो शमे पाद बीजे;
अनसूय विषे सा सा त ता गा ग त्रीजे,
चोथे त य रा रा गा पदे आप दीजे.

१८९ मृदव. { १. स ज ज भ र=१५ मणिहंस. अंक १,०३७
२. त भ र स ल ग=१४ अलकालिका. अंक९९७
३. भ ज ज भ र=१५. मयूरदना. अंक १,०२१
४. न स स ज ज ग=१६ तरवारिका. अंक१,०८४ }

प्रथमे तमे स ज जा भ रा गण आणजो,
बीजे पदे त भ रा स ला ग खरे सजो;
सज्जन तृतीय पदे भ जा ज भ रा धरो,
मृदव श्रुतिमां न स सा ज जा ग पदे करो.

१९० कलेवडेवर. { १. न भ भ र य=१५ रूप ९,३०४
२. स भ स ज र ग=१६ रूप १०,९९६
३. न न र ज र ग=१६ रूप १०,९४४
४. ग न ज र य ग=१६ रूप ९,४९७ }

प्रथममां न भ भा र य सद्य तो धरेछे,
स भ सा जा र ग स्वनि तो द्वितीयमां करेछे;
न न र ज र ग ए त्रीजे कलेवडेवरे छे.
चोथे पाद ग न ज रा य गा सदाय रहेछे.

१९१ मनसुखं { १. म स त य भ म=७+५+६=१८ रूप. २९,३६९
२. त न त य भ स ग ग=८+५+७=२० „ १,२३,७०९
३. त न म म भ स ग ग=८+५+७=२० „ १,२४,४७७
४. त ज ज न स न य ग=८+७+७=२२ „ ९,०७,७९७ }

पेले पाद म सा ता, या भ म साते, पांच छए छेदो,
बीजे त न त य भा सा, ग ग आठे ने, शर मुनि छे छेदो;
आठे शर मुनि ता ना, मा स भ सा ग्गा, मनसुखमा त्रीजे,
चोथे त ज जा न स ना, य ग वसु मुनि ने, मुनि यति तो कीजे.

*मारा परम मित्र मनसुखराम सूर्यरामना नामनुं आ वृत्त नव कल्प्यु छ

आ वृत्त गीतिना रागथी पण गवायछे. मापमा फेर मात्र एटलोज छे के आना पेहेला चरणमा छठो विप्र अथवा जगण आववो जोइये तेने बदले भगण छे, बाकीनां त्रण चरण घणु करीने गीति प्रमाणे छे, गीतिमा प्रथमनी १२ मात्राए विराम एकज आवेछे तेने बदले आमां वच्चे बे विराम आवेछे ए विरामना प्रास मळता आववाथी विशेष मधुर थायछे, अने ते भैरव रागथी गवायछे वधारे समजण पडवा माटे एनी सारीगम नीचे आपवामा आवी छे —

१. पे'ले सा री,	पाद म सा ता नी सा नी ध प	या भ म साते नी सा नी ध प	पांच छए छे म ग म ध नी	दो सा
२. बीजे सा री	त न त य भा सा नीनी सानी ध प	ग ग आठे ने नीनी सानी ध प	शर मुनि छे छे मम ग म धनी	दो सा
३. आठे सारी	शर मुनि ताना नीनी सानी धप	मा स नी सा गा नी सा नी ध प	मनसुख्वमा त्री ममगम ध नी	जे. सा
४. चोथे सारी	त ज जा न स ना नीनी सानी धप	यग वसु मुनि ने नीनीसानीधधप	मुनि यति तो की ममभगधनी	जे. सा

१९२ रामरक्षा.
- १. मसजसततग=१९ } शार्दूलविक्रीडित.
- २. मसजसततग=१९ } अंक १२०४
- ३. मरभन+३य=२१ } स्रग्धरा.
- ४. मरभन+३य=२१ } अंक १२९८

मा सा जा स त ता ग सूर्य[१२] मुनिथी[७], पे'ले पदे आणजो,
पेहेला पद जेटला गण बधा, बीजे पदे जाणजो;
त्रीजे मा रा भ ना छे, त्रण य हय[७] हये[७], छंदथी रामरक्षा,
चोथे त्रीजा समाने, सकळ गण करो, शोभती जेम वक्षा.

रामरक्षा स्तोत्रमा २६ मो श्लोक आ मापनो छे. पण तेनु नाम प्रसिद्ध नथी, माटे अमे [illegible] एव नाम नवु कल्प्यु छे.

१९३ खेंगार. {
१.स भस सस न य=१२+९=२१रूप९,०९,५८८
२.स म भ भ भ स ग=१०+९=१९रूप१,२६,३४०
३.न न न ज य भ स ग=१४+८=२२रूप९,९०,२०८
४.भ त य भ स स ग=१०+९=१९रूप१,१३,७६७

प्रथमे सा पर भ ससा स न या, रवि[१२] ने नव यति जाणी,
रच खेंगारे बीजे चरणे, स म भा भ भ स ग आणी;
तृतीय चरण न न न ज या भ स गा, चौदे[८] वसु यति जेमां,
भा त य भा सा स ग चोथे छे, दश नव छे यति एमां.

कच्छाधिपति महाराव श्री खेंगारजी सवाइ बहादुरना नामनुं आ वृत्त नवुं कल्प्युं छे. ते **मराठी चालनी साखीना** रागमां गवायछे.

"धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली"
एवो गीतगोविंदनो राग छे तेमा गवायछे.

"मधुवनचारिणि भास्करवाहिनि जाह्नविसंगिनि सिंधुसुते"
ए प्रारभनुं यमुनाष्टक छे ते रागथी गवायछे.

"अयि गिरिनंदिनि नदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते"
'भगवतीपुष्पांजली स्तोत्रना ए आदि पद छे तेना रागमां पण गवायछे.
तेमज **चोपाया** जाति जे पृ ४६ अक ११५मे छे तेने रागे पण गवायछे.

असंकीर्ण.

१९४ अहानिगा. {
१. त र ल ग=८ नाराचिका. २९४
२. ज र ल ग=८ प्रमाणिका. २९९
३. र ज ल ग=८ श्रद्धरा,उद्धरा.३०६
४. ज र ल ग=८ प्रमाणिका. २९९

ता रा ल गा अहानिगा,
द्वितीयमां ज रा ल गा;
छे तृतीय रा ज ल गा,
चतुर्थमां न रा ल गा.

१९५ नयनपाली.
१. म भ ज य=१२ कुम्भोदनी. ७००
२. त भ ज य=१२ नीरान्तिक.७०२
३. न भ ज य=१२ द्रुतनाद. ७०४
४. न ज भ य=१२ वनमालिका.७१०

पेले पादे म भ ज या गण आणो,
बीजे पदे त भ ज या ठिक जाणो;
नयनपाली न भ जा य त्रीजे छे,
न ज भ य तुर्य पाद कवि केछे.

१९६ मंजिष्ठा.
१. स स स स ग=१३ तारक. ८२२
२. स ज स स ग=१३ कलहंस. ८२३
३. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. ८१८
४. म न ज र ग=१३ प्रहर्षिणी. ८१६

चरणे प्रथमे स स सा स ग कीजे,
स ज सा स गा कर सदा पद बीजे;
स ज सा ज गा कवि पदे त्रीजे कथ;
मंजिष्ठा चरण म ना ज रा ग चोथे.

१९७ प्रवालान्तिक.
१. न त त त ग=१३ परिवृढ. ८४०
२. भ ज त त ग=१३ वासवदत्ता. ८४१
३. ज त त त ग=१३ प्रवाहिका. ८३९
४. त त त न ग=१३ परावृत्त. ८३७

प्रथम पादे रचेछे न ता ता त गा,
छे पद द्वितीयमांहे भ जा ता त गा;
त्रीजे प्रवालान्तिके छे ज ता ता त गा,
आणो-तमे पाद चोथे त ना ता त गा.

१९८ विमला.
१. न र ज न ग ल=१४ रूप १२,१२०
२. न र न ज ग ल=१४ रूप ११,२२४
३. न र न न ग ल=१४ रूप १२,२४८
४. त भ स ज ग ल=१४ रूप १०,९९७

प्रथम पादमां न रा ज न ग ल आण,
द्वितीय पादमां न र न ज गा ल जाण;
न र न ना ग ला तृतीय मद रचाय,
ता भा स जा ग ल विमला चतुर्थ थाय.

अनुष्टुप् वक्रादि[१] भेद.

(आ भेद श्लोकना नामथी ओळखायछे)

१९९ वक्र { पहेला वर्ण पछी नगण के सगण आणवो नहि, चोथा अक्षर पछी ५,६,७ अक्षरने स्थाने यगण आणवो.

१. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+य+१ (ल के ग)=८
२. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+य+१ (ल के ग)=८
३. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+य+१ (ल के ग)=८
४. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+य+१ (ल के ग)=८

एक वर्ण पछी पासे, न स छोडी गणो धारे,
पछी यने धरे एक, वर्ण वक्त्र पदे चारे.

[१] अनुष्टुप्ना असंख्य भेद थायछे, अने तेना भेदोमां आ पण आवी जाय एवो छे, पण जनार्दन केहेछे के, सम विषम.अने गुरु लघुना भेदे करीने तेमाथी जुदा पाडवामां आवेछे वाग्वल्लभमां केहेछे के, अर्द्धसम अने विषम एवां बे जातिनां आ वृत्त थायछे जेनां चारे चरण अनुष्टुप्नां जेवां होय ते विषममां गणायछे

केटलाक नीचे प्रमाणे मांप बतावेछेः—

१,३ विषममां ४ वर्ण+य+ल के ग=८

२,४ सममां म+ग+य+ल के ग=८

याज्ञवल्कभमां वक्त्रनो श्लोक नियम–१,२,३,४ पदमां पांचमो लघु ने छठ्ठो गुरु आवे. १,३ पदमां ७मो वर्ण गुरु, २,४ पदमां ७मो लघु आवे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां तथा प्राकृत-पिंगळसूत्रमां पण ए प्रमाणे नियम छेः—

पांचमो लघु चारेमां, छ.साते गुरु तो करो;
सम साते लघु लावो, श्लोके आठज अक्षरो.

हलायुधवृत्ति वगेरे छंदोग्रंथमां अनेक प्रकारना गण भेदथी आ अनुष्टुप् वृत्तने "विषमवृत्तमां" वक्त्र एवां नामथी ओळखाव्या छे. सघळां पुराणोमां सामान्य रीते आठ अक्षरनां पदवाळां वृत्त अनुष्टुपना नामथी ओळखाय छे.

वक्त्रनी रूपसंख्या नीचे प्रमाणे नीकळी शकेछे:—

एमां आठ अक्षर आवेछे, तेमां पेहेलो अक्षर गुरु के लघु आवतां तेनां बे रूप थाय; अने त्यार पछीना त्रण अक्षरमां न अने सगण वर्ज्य छे, तो ते बे आठ गणमांथी बाद करतां बाकी ६ रूप रह्यां, ते वडे आगलां बे ने गुणतां १२ रूप थयां; त्यार पछी पांच, छ, अने सातमा अक्षरने ठेकाणे मात्र एकज यगण आवेछे, तेनुं एकज रूप थायछे, ते उपर एक अक्षर लघु के गुरु आवेछे, एटले तेनां बे रूप थाय. तो ए प्रमाणे १२×१×२=२४ रूप एक चरणनां थाय. तेवीज रीते बीजा चरणना तेटलाज रूप थतां २४×२४=५७६ रूपपूर्वार्द्धना थाय अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां ५७६×५७६=

३,११,७७६ रूप बधां मळीने थायछे. एक (पेहेला) अक्षर पछी जेम न स वर्ज्य गणेला छे, तेम छंदःशास्त्र अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां समपदमां रगणने पण वर्ज्य गण्यो छे. तेम गणतां पेहेला चरणनां २४ रूप थाय, अने बीजा चरणमां रगण वर्ज्य थवाथी बाकी ५ गण रेहेछे, तेथी तेनां रूप २×५×१×२=२० थायछे, एटले २४×२०=४८० रूप पूर्वार्द्धनां थाय, तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां ४८०×४८०= २,३०,४०० रूप बधां मळीने थायछे. तेमज पथ्यावक्त्र, विपरीत पथ्यावक्त्र अने चपलावक्त्र ए त्रणेना पण वक्त्रनी पेठे ३,११, ७७६ भेद थायछे.

२०० चपलावक्त्र. { विषम पदमां चोथा अक्षर पछी नगण आणवो. बाकी वक्त्र प्रमाणे.

१. (ल के ग) १+३ (स न विना)+न+१ (ल के ग)=८
२. (ल के ग) १+३ (स न विना)+य+१ (ल के ग)=८
३. (ल के ग) १+३ (स न विना)+न+१ (ल के ग)=८
४. (ल के ग) १+३ (स न विना)+य+१ (ल के ग)=८

(१) विषमे चार पर न, (२) समे तो य करो एक;
(३) वक्त्र धारा अपर जे, (४) चपलामांहृ विवेक.

२०१ पथ्यावक्त्र. { विषम पदमां वक्त्र प्रमाणे सम पदमां चोथा अक्षर पछी जगण.

१. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+य+१ (ल के ग)=८
२. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+ज+१ (ल के ग)=८
३. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+य+१ (ल के ग)=८
४. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य)+ज+१ (ल के ग)=८

(१) समे चार परे जा छे, (२) विषमे य रणो वळी,
(३) पथ्यावक्त्र बने तेह, (४) वक्त्र धारा विषे मळी.

आठ वर्णना चार चरण आवेछे ते "श्लोक" केहेवायछे अनुष्टुप्नां लक्षणमां आ नियम म्होटा प्रबन्धमां पाळेलो जणातो नथी. आ नियम क्वचित्ज पाळ्यामां आवेछे, एम केटलाकनो अभिप्राय छे.

२०२ विपरीत पथ्या-वक्त्र[1]. } विषम पदमां चोथा अक्षर पछी जगण आणवो. समपद वक्त्र प्रमाणे.

१. १(ल के ग)+३(सन वर्ज्य)+ज+१ (ल के ग)=८
२. १(ल के ग)+३(सन विना)+य+१ (ल के ग)=८
३. १(ल के ग)+३(सन विना)+ज+१ (ल के ग)=८
४. १(ल के ग)+३(सन विना)+य+१ (ल के ग)=८

(१) पे'ले त्रीजे धरी जने, (२) बीजे चोथे य मूकाय;
(३) विपरीत थवा थकी, (४) पथ्या विपरीता थाय.

[1] केटलाकना मत प्रमाणे विपरीत करवाथी पण पथ्या थायछे, ते ओळखवा माटे जुदु नाम राख्युं छे.

२०३ विपुला, युग्मविपुला. { सम[1] चरणमां सातमो अक्षर लघु आणवो. बाकीना वक्त्र प्रमाणे.

पण सैतव आचार्यने मत प्रमाणे चारे पदमां सातमो लघु[2] आणवो जोइये.

चारे परे भ न त ज, सातमा लघुथी थशे,
विपुला वक्त्रने विषे, एम चारे पदे वसे,
एक वर्ण पछी न स, वसु वर्ण विषे तजो,
विपुला वक्त्रना नि'म, सर्वे विपुलामां सजो.

१ चार-अक्षर पछी-पथ्यावक्त्रमां-सम चरणमां ज आवे-छे. युग्मविपुलामां सम चरणमां सातमो अक्षर लघु लाववो, एम जो-नियम करिये तो चार अक्षर पछी जगण मूकतां पण सातमो अक्षर लघु आवी जायछे, तेथी ए रूप पथ्यावक्त्र साथे मळी जायछे, माटे तेथी भिन्न रूप पाडवा सारु मात्र सम चरणने बदले चारे पदमां सातमो लघु आणवो ए नियम स्वीकारवो ठीक छे तेथी अमे तेनुं ग्रहण कर्युं छे.

२ विपुलामां युग्म (२-४) पदमां सातमो अक्षर लघु आवे-छे, माटे केटलाक, विपुलाने बदले युग्मविपुला नाम आपेछे. मंदारमरंदचम्पूमां आने युग्मविपुला कहेल छे.

विपुलानी रूपसंख्या कोहाडवानी रीति आं प्रमाणे छे:—

एनां मात्र सम चरणमांज सातमो अक्षर लघु आणवो, एम स्वीकारिये तो वक्त्रनां रूप प्रमाणे आनुं पण माप पेहेला त्रीजा पदमां वक्त्र प्रमाणे होतां, प्रथम चरणनां २४ रूप थाय; अने सम चरणना प्रथम स्थाननां २ रूप, त्यारपछी ६ गणनां ६ रूप, त्यारपछी अंत लघुवाळां (भ, न, त, ज,) चार रूपने उपर कहेला छेल्ला स्थाननां २ रूपे गुणतां एकंदर (२×६×४×२)=९६ रूप थायछे. एटले पूर्वार्द्धनां २४×९६=२,३०४ रूप थयां, तेटलांज रूप उत्तरार्द्धनां गणतां २३०४×२३०४=५३,०८,४१६ रूप थयां. परंतु आपणे चारे चरणमां सातमो-अक्षर लघु आणवा स्वीकार्यो छे, ते हिसाबे प्रत्येक चरणनां ९६ रूप थायछे एटले तेनो चतुर्घात करतां (९६×९६=९२१६×९२१६)=८,४९,३४,६५६ रूप थायछे.

२०४ भविपुला१. { विषमपादे चोथा अक्षर पछी भगण आवे,
सम पदमां भ न त के ज मांथी कोइ आवे.

विषमे तो चार पछी, भ थायछे पदे खरे;
भविपुलामां भ न त, या ज पादे समे धरे.

१ केटलाकनो मत एम पण छे के, प्रत्येक चरणमां चार अक्षर पछी भगण आणिये तो ते भविपुला केहेवाय, तेवीज रीते रविपुला, नविपुला तथा तविपुलामां पण प्रत्येक चरणमां चार अक्षर पछी जे नामनी विपुला होय ते गण आणवा. दरेक विपुलानी रूपसंख्यानो प्रकार उपर जे नियम बनाव्या छे तेथी समजी लेवो.

२०५ रविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी रगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार पूठे भा न ता के, ज मांथी को' धरे समे;
विपुला रमां र धार, चार पाछळ विषमे.

२०६ नविपुला. { विषमपदे चोथा अक्षर पछी नगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार धारी भ न त के, ज धरो ने पदे समे;
नविपुला विषममां, न धरीने रचो तमे.

२०७ तविपुला. { विषमपदे चोथा अक्षर पछी तगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार पूठे भा ना त के, ज समे तो करो तमे;
तविपुलामां थायछे, चार पूठे त विषमे.

महाकवियोना प्रयोगमां बे विषमपदने बदले गमे ते एकमां पण भगण आणेलो जोवामां आवेछे, ते उपरथी गमे ते विषम पदमां भगण आणिये तोपण चाले, अने आ विकल्प नियम त्रीजा गण नांखवाथी विपुलाने पण लागु पडेछे.

२०८ मविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी मगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

विपुला ममां आणो म, चारनी पछी विषमे;
भ न ता के जा मांथी तो, चार पूठे धरो समे.

२०९ यविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी यगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

यंविपुला य आण्येथी, विषमे पदे थायछे;
भ ना ता के जमांथी को, लावी समे रचायछे.

२१० सविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी सगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

सविपुला स धर्याथी, विषमे तो बने खरी;
भ किंवा न त ज मांथी, समे साचवीने धरी.

२११ जविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी जगण आवे, बाकी वक्त्र प्रमाणे.

जविपुला ज विषमे, चार पूठे धरी करो;
ज वा भ वा न के त ए, साचवीने समे धरो.

१ वक्त्रथी ते विपुला सुधीना छंदोना पदोनुं एक बीजामां मिश्रण थवाथी अनेक भेद थायछे. अने एवा संकीर्ण असंकीर्णमां चोथो अक्षर घणुं करीने गुरु मूकवानो आम्नाय छे.

अन्यदेशीय.

दक्षिणना छंद.

अभंग मुख्यत्वे बे प्रकारना छे. एक म्होटो अने बीजो न्हानो.

१ म्होटो अभंग.

१, २, ३ पादमां छ छ अक्षर.
४ पादमां चार अक्षर.

म्होटा अभंगना बे प्रकार छेः—

पेहेला प्रकारमां बीजी अने त्रीजी स्तडना प्रास मळे

षड अक्षर छे, पेंले बीजे त्रीजे;
चोथे चार कीजे, अभंगमां.

बीजा प्रकारमां त्रणे स्तडना प्रास मळे.

अक्षर छ गणे, चोथे चार गणे;
त्रणे प्रास भणे, अभंगमां.

२ न्हानो अभंग.

एना बे चरण थायछे. प्रति पदमां आठ अक्षर, क्वचित् छ अक्षर पण प्रथम पदमां आवेछे. बन्ने पदना अनुप्रास मळेछे.

न्हाना अभंगनो पेहेलो प्रकार.

वर्ण आठ आठ करो, एवां चरण बे धरो;
क्वचित छ पेंले थाय, एम अभंग रचाय.

न्हाना अभंगनो बीजो प्रकार.

पेहेला चरणमां आठ अक्षर, बीजा चरणमां सात अक्षर होयछे यमक आं

वर्ण आठ पेंले दले,
बीजे तो दीजे [illegible]

न्हाना अभंगनो त्रीजो प्रकार.

आठ अक्षरनां चार चरण तेमां प्रथम त्रणनी यमक मळे.

मात्र छेल्लो अक्षर मळे तोपण चाले

आठ वर्ण पदे थाय,
चार चरण रचाय;
त्रण प्रास मळी जाय,
तेने अभंग गणाय.

२ दिंडी.

१. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९
२. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९
३. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९
४. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९

पेहेली बीजीना प्रास मळे, त्रीजी चोथीना मळे, अथवा चारेना मळे.

कला त्रण खट त्रण, त्रिपर कर्ण आणो;
दिंडीमा विरति, नव दशमे जाणो.

४ साकी.

१. ४+४+४+४+४+४+२+ग=२८
२. ४+४+४+४+४+४+२+ग=२८

चोकलिया गण सात रचातां, तेमा गुरु धर छेले;
साकी द्विपदी छे सोहाती, अट्ठावीशने मेळे.

जुवो आज मागनो चोपाया पृष्ट ४६ अंक ११५ मे.

५ ओवी.

१. आठ अक्षर
२. आठ अक्षर
३. आठ अक्षर } प्रणेता प्राप्त मळे.
४. सात अक्षर

ओवीमां प्रथम अक्षर पर भार आवछे

चरणे वर्ण आठ आण,
चोथे पदे सात जाण,
त्रणी वर्णनु प्रमाण,
ओवीरेरा रागना

६ घनाक्षरी कवित.

चार ओवीनो एक छंद थायछे.

८,८,८,७=३१ अक्षरना चार चरण

चरणं कराने आठ अ ठ अक्षरनी चार चार मात्रा थवी जोइये
सात अक्षरनी ११ मात्रा पण करीने थवी जोइये एवा भाव नियम छे
आठ अक्षरना चरणे यतिना भाग पडे अने सात अक्षरवाळी छेल्ली ढळनों
चारे भाग पडे पृष्ठ ४१४ अंक १४८७ मे कवित-मनहरण साथे
सरखावा अवारा विचार घणुं महत्वपूर्ण छे

एकत्रिंश वर्ण आवे, यति तेमां सुग लावे,
प्रतिपदे एक भावे, ओवी रच आदरे,
आठ वर्णों गण चार, एक पछी एक धार.
पूर्ण सात वळी सार, पाद तणा पादरे.

आठतणी कला बार, साततणी अगियार,
एम बधी मळी धार, सुडतालीस खरे;
मात्रानो न निंम कांय, पण आवी रागमांय,
सर्वे प्रास मळे जांय, घनाक्षरी ते ठरे.

७ कटाव-कटिबंध.

कटाव रचना करवा काजे, आठ कला प्रति यति विराजे
बे यति चरणे चरणे लावो, अथवा फावे तेम बनावो;
यति यति केरा प्रासो मळता, लागट एक बीजाशुं भळता
करण घाटपर मधुर ज लागे, रणकारा प्रासोना वागे;
एवी रीते प्रीते प्रीते, प्रास धरीने खोज करीने;
मोज प्रमाणे टाणे टाणे, टूको मूको;
कटिबंधनो बंध बांधवा, बे छेडा सरखाज सांधवा;
प्रथम चरण ते ध्रुवपद जाणो, टेक नाम तेनेज प्रमाणो;
ते तो छेल्ले चरणे राजे, कटाव रचना करवा काजे.

सामान्य कटावनी रचना तो अमे उपर जणावी छे ते प्रमाणे छे. एमां आठ आठ मात्रानी टूको इच्छा पूर्वक वधारी शकाय छे. केटलाएक प्रारंभमां ध्रुवपद जूदां जूदां मूके छे. केटलाएक अमृतध्वनिनेज कटाव गणे छे, जुवो पृ. १४२ मात्रामेळ विषम जाति अंक १६, एमां प्रारंभमां एक दुहो अने पछी पण अष्टकलनुं २४ मात्रानुं सम चरण एवां चार चरण आवे छे. कवि दलपतरामे (जुवो दलपतकाव्य प्रथम आवृत्ति पृ. १२६मे)

"प्रभुस्तुति कटाव-अमृतध्वनि छंद" एम लख्युं छे, पण प्रारंभमां दुहाने बदले चौद चौद मात्रानां चार चरण मूकीने इच्छापूर्वक अष्टकलनी ढूको मूकी छे अने अंतमां टेकना अनुप्रास मेळववा माटे छेल्ला अष्टकल उपर बे गुरु वर्णनी चार मात्रा वधारी प्रारंभनो चौद मात्रावाळो चारे चरणनो टेक फरी मूक्यो छे. जेमके:—

प्रारंभ.

"जय जय जन अंतरजामी, निर्मळ गुणमय बहुनामी;
खुदमां न मळे कशी खामी, छो सकळ जगतनां स्वामी." टेक.

अन्त.

सदा स्वतंतर,-दलपत अंतरगामी;
जय जय (इत्यादि चारे चरण प्रारंभनां मूक्यां छे.)

कवि दयारामे टेकमां चौद चौद मात्रानां बे चरण मूक्यां छे (जुवो दयारामकाव्यसंग्रह त्रीजी आवृत्ति पृ. ९९६,) छेवट टेकने अनुसरतुं एक एक चरण आण्युं छे.

"श्री वृंदावन अस भैये, प्रीतम प्यारी रस पैये."
ए प्रमाणे प्रारंभमां टेक छे, अने अन्तमां
"कहो जु क्यां लग गैये, श्री वृंदावन अस भैये." इत्यादि

मराठी भाषामां अमृतरावना कटाव वधारे वखणायछे. (नवनीत बीजी आवृत्ति पृ. २२४,) एमां जूदा जूदा कटावमां नीचे प्रमाणे जदां जूदां ध्रुवपद अथवा टेक छे.